सदोम और अमोरा
खोए हुए समय की खोज में - खंड IV
मार्सेल प्राउस्ट

मूल शीर्षक:
मैदान के शहर
अतीत की यादें - खंड IV

अनुवादक: चार्ल्स केनेथ स्कॉट मोनक्रिफ़
चैटो एंड विंडस, लंदन, 1929

Table of Contents

अनुवादक का समर्पण

भाग ---- पहला

अध्याय 1

समाज में एम. डी चार्लस—एक चिकित्सक—श्रीमती डी वोगौबर्ट की विशिष्ट शारीरिक बनावट—श्रीमती डी अर्पाजोन, ह्यूबर्ट रॉबर्ट फव्वारा और ग्रैंड ड्यूक व्लादिमीर का उल्लास —श्रीमती डी अमोनकोर्ट, डी सिट्री, डी सेंट-यूवर्टे, आदि—स्वान और प्रिंस डी गुएरमेंटेस के बीच रोचक बातचीत—अल्बर्टाइन का टेलीफोन पर संवाद—बालबेक की मेरी दूसरी और अंतिम यात्रा से पहले के अंतराल में मेरा सामाजिक जीवन। बालबेक आगमन—दिल की धड़कनें रुक-रुक कर चलती रहती हैं।

अध्याय II

अध्याय III

एम. डी चार्लस के दुख—उनका दिखावटी द्वंद्वयुद्ध—'ट्रांसअटलांटिक' के पड़ाव—अल्बर्टीन से तंग आकर, मैंने उससे नाता तोड़ने का फैसला किया

अध्याय IV

अल्बर्टीन के प्रति अचानक घृणा का भाव जागा। सूर्योदय के समय तीव्र पीड़ा हुई। मैं तुरंत अल्बर्टीन के साथ पेरिस के लिए रवाना हो गया।

अनुवादक का समर्पण

रिचर्ड और मर्टल कर्ट को
और उनके निर्माता
पीसा, 1927

भाग ---- पहला

पेश हैं वे पुरुष-महिलाएं, जो सोडोम के उन निवासियों के वंशज हैं जिन्हें स्वर्ग से आई आग से बचा लिया गया था।

स्त्री को गोमोराह होगा और पुरुष को...

सोडोम। अल्फ्रेड डी विग्नी।

पाठक को याद होगा कि उस दिन (जिस शाम प्रिंसेस डी गुएरमांटेस अपनी पार्टी देने वाली थीं) ड्यूक और डचेस से मिलने जाने से बहुत पहले, जिसका मैंने अभी वर्णन किया है, मैं उनके लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था और अपनी निगरानी के दौरान मैंने एक ऐसी खोज की थी, जो हालांकि विशेष रूप से एम. डी चार्लस से संबंधित थी, अपने आप में इतनी महत्वपूर्ण थी कि मैंने अब तक, जब तक मैं इसे वह प्रमुखता और विस्तार नहीं दे सका, जिसकी यह मांग करती थी, इसका कोई विवरण नहीं दिया था। जैसा कि मैंने कहा है, मैंने घर के शीर्ष पर मेरे लिए बड़ी आराम से बनाए गए उस अद्‌भुत सुविधाजनक स्थान को छोड़ दिया था, जहाँ से होटल डी ब्रेक्विग्नी की ओर जाने वाली उबड़-खाबड़ और अनियमित ढलानें दिखाई देती थीं, और जो मार्क्विस डी फ्रेकोर्ट के अस्तबल के गुलाबी रंग के घंटाघर द्वारा इतालवी शैली में खूबसूरती से सजाई गई थी। जब मुझे लगा कि ड्यूक और डचेस लौटने ही वाले हैं, तो सीढ़ियों पर पहरा देना मुझे ज़्यादा सुविधाजनक लगा। मुझे अपने इस पहरे को छोड़ने का कुछ अफ़सोस हुआ। लेकिन दिन के उस समय, यानी दोपहर के भोजन के ठीक बाद, मुझे अफ़सोस करने का ज़्यादा कारण नहीं था, क्योंकि तब मैं सुबह की तरह ब्रेकिग्नी-ट्रेस्मेस परिवार के नौकरों को, जो दूरी के कारण किसी चित्र में छोटी आकृतियों जैसे लग रहे थे, बड़ी-बड़ी पारदर्शी अभ्रक की परतों के पीछे, जो उस चट्टान के लाल रंग के स्तंभों पर बड़ी खूबसूरती से उभरी हुई थीं, पंख-ब्रश हाथ में लिए, धीरे-धीरे खड़ी चट्टान पर चढ़ते हुए नहीं देख पाता। भूविज्ञानी के चिंतन क्षेत्र में असफल होने के बावजूद, मेरे पास कम से कम वनस्पति विज्ञानी का चिंतन क्षेत्र तो था ही, और मैं सीढ़ी की खिड़की के शटर से डचेस के छोटे से पेड़ और उस कीमती पौधे को देख रहा था, जिसे आँगन में उस ज़िद के साथ रखा गया था जिस ज़िद से माताएँ अपने विवाह योग्य बच्चों को बाहर लाती हैं, और मैं खुद से पूछ रहा था

कि क्या कोई असंभावित कीट संयोगवश उस उपेक्षित परागकोष पर आएगा। मेरी जिज्ञासा धीरे-धीरे बढ़ती गई, और मैं भूतल की खिड़की पर गया, जो अपने शटर खुले हुए थी। मैं जुपियन की आवाज़ स्पष्ट रूप से सुन सकता था, जब वह बाहर जाने की तैयारी कर रहा था, जो मुझे अपने पर्दे के पीछे नहीं देख सका, जहाँ मैं बिल्कुल स्थिर खड़ा था, जब तक कि मैं श्री डी चार्लस से बचने के लिए तेज़ी से एक तरफ नहीं हट गया, जो श्रीमती डी विलेपारिसिस से मिलने जा रहे थे और धीरे-धीरे आँगन पार कर रहे थे, एक दुबला-पतला व्यक्ति, तेज़ रोशनी से बूढ़ा, उसके बाल स्पष्ट रूप से भूरे हो गए थे। श्रीमती डी विलेपारिसिस की अस्वस्थता के अलावा और कुछ नहीं था। मार्क्विस डी फिएरबोइस की बीमारी के कारण, जिनसे उनकी व्यक्तिगत रूप से गहरी दुश्मनी थी, डी विलेपारिसिस ने एम. डी चार्लस को शायद उनके जीवन में पहली बार दिन के उस समय मिलने के लिए बुलाया होगा। क्योंकि गुएरमांटे परिवार की उस विलक्षणता के कारण, जो समाज के तौर-तरीकों का पालन करने के बजाय उन्हें अपनी निजी आदतों के अनुसार ढाल लेते थे (ऐसी आदतें जिन्हें वे सामाजिक नहीं मानते थे और इसलिए समाज जैसी तुच्छ वस्तु को अपने सामने नीचा दिखाने के योग्य समझते थे - इस प्रकार श्रीमती डी मार्संटेस का कोई नियमित 'दिन' नहीं था, बल्कि वे हर सुबह दस बजे से दोपहर बारह बजे के बीच अपने दोस्तों के घर पर रहती थीं), बैरन, उन घंटों को पढ़ने, पुरानी कलाकृतियों की खोज करने आदि के लिए आरक्षित रखते हुए, केवल शाम चार से छह बजे के बीच ही मिलने आते थे। छह बजे वे जॉकी क्लब जाते थे या जंगल में टहलने निकल जाते थे। एक क्षण बाद, मैं फिर से पीछे हट गई ताकि जुपियन मुझे देख न सके। उसके कार्यालय जाने का समय लगभग हो चुका था, जहाँ से वह केवल रात के खाने के लिए लौटता था, और पिछले सप्ताह के दौरान तो वह भी हमेशा नहीं लौटता था, क्योंकि उसकी भतीजी और उसकी प्रशिक्षुएँ एक ग्राहक के लिए एक पोशाक को पूरा करने के लिए गाँव गई हुई थीं। तब, यह महसूस करते हुए कि मुझे कोई नहीं देख रहा है, मैंने खुद को फिर से परेशान न होने देने का फैसला किया, इस डर से कि कहीं मैं उस चमत्कार को न चूक जाऊँ, जो भाग्य में लिखा था, यानी लगभग असंभव सी उम्मीदों के पार (दूरी, प्रतिकूल जोखिमों और खतरों की इतनी बाधाओं के बावजूद), उस कीट का आगमन, जिसे इतनी दूर से उस कुंवारी कन्या के दूत के रूप में भेजा गया था जो इतने लंबे समय से उसके प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रही थी। मैं

जानती थी कि यह प्रतीक्षा नर फूल की तरह निष्क्रिय नहीं थी, जिसके पुंकेसर अनायास ही मुड़ गए थे ताकि कीट आसानी से उनका उपहार ग्रहण कर सके; इसी प्रकार, यहाँ खड़ा मादा फूल, यदि कीट आता, तो नज़ाकत से अपनी कलियों को झुका लेता; और, उसके द्वारा अधिक प्रभावी ढंग से प्रवेश किए जाने के लिए, वह एक पाखंडी लेकिन उत्साही युवती की तरह, अगोचर रूप से उससे आधे रास्ते मिलने के लिए आगे बढ़ती। वनस्पति जगत के नियम स्वयं अन्य नियमों द्वारा शासित होते हैं, जो उत्तरोत्तर उन्नत होते जाते हैं। यदि किसी कीट का आगमन, अर्थात् एक फूल के बीज का परिवहन, आमतौर पर दूसरे फूल के निषेचन के लिए आवश्यक होता है, तो इसका कारण यह है कि स्व-निषेचन, अर्थात् फूल का स्वयं निषेचन, एक ही परिवार में अंतर्विवाहों की श्रृंखला की तरह, पतन और बांझपन की ओर ले जाएगा, जबकि कीटों द्वारा किया गया संकरण उसी प्रजाति की आने वाली पीढ़ियों को उनके पूर्वजों के लिए अज्ञात शक्ति प्रदान करता है। हालाँकि, यह शक्ति अत्यधिक सिद्ध हो सकती है, जिससे प्रजातियाँ अनुपातहीन रूप से विकसित हो सकती हैं; फिर, जैसे विषनाशक हमें रोगों से बचाता है, जैसे थायरॉइड ग्रंथि हमारे वसा को नियंत्रित करती है, जैसे हार अहंकार, थकान और भोग-विलास को दंडित करने आती है, और जैसे नींद थकान पर निर्भर करती है, वैसे ही स्व-प्रजनन की एक असाधारण प्रक्रिया एक निश्चित समय पर अपना प्रभाव डालती है, लगाम कसती है, और उस फूल को सामान्य सीमा में वापस लाती है जिसने अपनी सीमाओं का उल्लंघन किया है। मेरे चिंतन एक प्रवृत्ति का अनुसरण कर रहे थे जिसका वर्णन मैं उचित समय पर करूँगा, और मैंने फूलों की प्रत्यक्ष रणनीतियों से एक निष्कर्ष निकाला था जो साहित्यिक कार्य के एक संपूर्ण अचेतन तत्व से संबंधित था, तभी मैंने एम. डी चार्लस को मार्क्विज़ से दूर जाते देखा। शायद उन्होंने अपनी वृद्ध रिश्तेदार से, या केवल एक नौकर से, उनकी मामूली अस्वस्थता से हुए बड़े सुधार, या यूँ कहें कि पूर्ण स्वस्थ होने के बारे में सुना था। इस समय, जब उन्हें इस बात का ज़रा भी आशय नहीं था कि कोई उन्हें देख रहा है, सूर्य की किरणों से बचाव के लिए उनकी पलकें झुकी हुई थीं, श्री डी चार्लस ने अपने चेहरे का तनाव कम कर दिया था, उस कृत्रिम जीवंतता को मिटा दिया था, जो उनकी बातों की जीवंतता और उनकी इच्छाशक्ति से हमेशा बनी रहती थी। संगमरमर की तरह पीला पड़ा उनका चेहरा, उनकी नाक दृढ़ता से उभरी हुई थी, उनके सुंदर चेहरे के भाव अब जानबूझकर बदले गए

अर्थ से नहीं सुधर रहे थे, जो उनकी सुंदरता को बदल देता था; अब वे किसी गुरमांटेस की मूर्ति से ज़्यादा कुछ नहीं थे, मानो पत्थर में तराशे गए हों, मानो पंद्रहवें पलामेडे हों, कॉम्ब्रे स्थित उनके चैपल में। हालाँकि, श्री डी चार्लस के चेहरे पर पूरे परिवार की ये सामान्य विशेषताएँ एक अधिक आध्यात्मिक, और सबसे बढ़कर अधिक सौम्यता धारण कर लेती थीं। मुझे उनके लिए खेद था कि वे इतनी हिंसा, आपत्तिजनक विचित्रताओं, चुगली और कठोरता, संवेदनशीलता और अहंकार के साथ अपने व्यवहार को इतनी क्रूरता से दूषित करते थे कि वे उस सौम्यता और दयालुता को झूठी क्रूरता के नीचे छिपा लेते थे, जो श्रीमती के घर से निकलते समय उनके चेहरे पर दिखाई देती थी। डी विलेपारिसिस के चेहरे पर जो मासूमियत झलक रही थी, वह मुझे साफ दिखाई दे रही थी। धूप में पलकें झपकाते हुए, मानो वह मुस्कुरा रहे हों। उनके शांत और स्वाभाविक चेहरे पर मुझे कुछ ऐसा स्नेह और सहजता दिखी कि मैं सोचे बिना नहीं रह सकी कि अगर एम. डी चार्लस को पता होता कि उन्हें देखा जा रहा है, तो वे कितने क्रोधित होते। इस व्यक्ति को देखकर, जो इतना दृढ़ था, जो अपनी पौरुषता पर इतना गर्व करता था, जिसके सामने बाकी सभी पुरुष घृणित रूप से स्त्री जैसे लगते थे, मुझे अचानक एक स्त्री की याद आ गई, क्योंकि उसने क्षण भर के लिए उसके चेहरे के हाव-भाव, मुस्कान और चेहरे के भावों को अपना लिया था।

मैं अपनी जगह बदलने ही वाला था ताकि वो मुझे देख न सके; लेकिन मेरे पास ऐसा करने का न समय था और न ही ज़रूरत। मैंने क्या देखा? आमने-सामने, उस आँगन में जहाँ वे दोनों पहले कभी नहीं मिले थे (एम. डी चार्लस होटल डी गुएरमांटेस में केवल दोपहर में आते थे, उस समय जब जुपियन अपने दफ्तर में होता था), बैरन ने अचानक अपनी आधी बंद आँखें खोलीं और अपनी दुकान की दहलीज पर खड़े पूर्व दर्जी को असामान्य ध्यान से देखने लगे, जबकि दर्जी, एम. डी चार्लस के सामने अचानक जमीन पर गिर पड़ा, जैसे कोई पौधा जड़ जमा लेता है, और अधेड़ उम्र के बैरन के मोटे शरीर को विस्मय भरी निगाहों से निहार रहा था। लेकिन, इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह थी कि एम. डी चार्लस का हावभाव बदलते ही, जुपियन का हावभाव, मानो किसी रहस्यमयी कला के नियमों का पालन करते हुए, तुरंत उसके अनुरूप हो गया। बैरन, जो अब अपने ऊपर पड़े प्रभाव को छुपाने की कोशिश कर रहा था, और फिर भी, अपनी उदासीनता के दिखावे के बावजूद, अफसोस के बिना वहाँ

से जाने में असमर्थ प्रतीत हो रहा था, गया, आया, दूर कहीं धुंधली निगाहों से देखता रहा, जिस तरह से उसे लगता था कि उसकी आँखों की सुंदरता सबसे अधिक निखरती है, और एक आत्मसंतुष्ट, लापरवाह, मूर्ख भाव धारण कर लिया। इसी बीच, जुपियन ने, उस विनम्र, ईमानदार भाव को, जिसे मैंने हमेशा उससे जोड़ा था, त्याग दिया और बैरन के साथ पूर्ण समरूपता में, अपना सिर ऊपर उठाया, अपने शरीर को एक आकर्षक झुकाव दिया, अपने हाथ को एक विचित्र धृष्टता के साथ अपनी कमर पर रखा, अपनी पीठ को बाहर निकाला, और उस नखरे के साथ खुद को प्रस्तुत किया जैसे कोई ऑर्किड मधुमक्खी के आगमन पर अपनाता है। मैंने सोचा भी नहीं था कि वह इतना अप्रिय लग सकता है। लेकिन मुझे इस बात का भी अंदाजा नहीं था कि वह इस तरह के मूक अभिनय में अपनी भूमिका को तात्कालिक रूप से निभाने में सक्षम था, जो (भले ही वह पहली बार एम. डी चार्लस की उपस्थिति में था) लंबे समय से सावधानीपूर्वक पूर्वाभ्यास किया हुआ प्रतीत होता था; कोई भी व्यक्ति उस स्तर की पूर्णता तक अनायास ही नहीं पहुंचता, सिवाय इसके कि जब कोई किसी विदेशी देश में अपने ही देश के किसी व्यक्ति से मिलता है और फिर उसके साथ एक समझ विकसित हो जाती है, दोनों पक्ष एक ही भाषा बोलते हैं, भले ही उन्होंने पहले कभी एक-दूसरे को न देखा हो।

यह दृश्य पूरी तरह से हास्यपूर्ण नहीं था, बल्कि इसमें एक विचित्रता, या कहें तो एक सहजता थी, जिसकी सुंदरता लगातार बढ़ती जा रही थी। एम. डी. चार्लस सचमुच एक उदासीन भाव अपना सकते थे, अपनी पलकें झुका सकते थे; वे बीच-बीच में उन्हें उठाते और ऐसे क्षणों में जुपियन पर ध्यानपूर्वक दृष्टि डालते। लेकिन (निस्संदेह इसलिए कि उन्हें लगा कि इस स्थान पर ऐसा दृश्य अनिश्चित काल तक नहीं चल सकता, चाहे इसके कारण हमें बाद में पता चलेंगे, या शायद हर चीज की क्षणभंगुरता की उस भावना से जो हमें यह निर्धारित करने के लिए प्रेरित करती है कि हर प्रहार दिल को छूना चाहिए, और हर प्रकार के प्रेम के दृश्य को इतना मार्मिक बना देती है), हर बार जब एम. डी. चार्लस जुपियन को देखते थे, तो वे इस बात का ध्यान रखते थे कि उनकी नज़र के साथ एक शब्द भी हो, जो इसे उन नज़रों से बिल्कुल अलग बनाता था जो हम आमतौर पर किसी ऐसे व्यक्ति पर डालते हैं जिसे हम जानते हों या न जानते हों; वह जुपियन को उस अजीब सी एकाग्रता से घूर रहा था, मानो वह हमसे कहने ही वाला

हो: "माफ़ करना, मैं यह कहने की हिम्मत कर रहा हूँ, लेकिन तुम्हारी पीठ पर एक लंबा सफ़ेद धागा लटका हुआ है," या फिर: "ज़रूर मैं गलत नहीं हो सकता, तुम भी ज़्यूरिख़ से हो; मुझे यकीन है कि मैंने तुम्हें वहाँ अक्सर क्यूरियोसिटी शॉप में देखा होगा।" इस तरह, हर दूसरे पल, एम. डी चार्लस की घूरती निगाहों में जुपियन से वही सवाल बार-बार पूछा जा रहा था, मानो बीथोवेन के वो सवालिया वाक्य नियमित अंतराल पर बार-बार दोहराए जा रहे हों, और जिनका मकसद—पूरी तैयारी के साथ—एक नया विषय, लहजे में बदलाव, एक 'पुनः प्रवेश' पेश करना हो। दूसरी ओर, एम. डी चार्लस और जुपियन की एक-दूसरे को देखती निगाहों की सुंदरता ठीक इसी बात से पैदा हुई कि कम से कम उस पल तो ऐसा नहीं लग रहा था कि उनका मकसद आगे कुछ और होगा। यह सुंदरता, मैंने पहली बार बैरन और जुपियन को प्रदर्शित करते देखा था। उन दोनों की आँखों में मुझे ज्यूरिख का नहीं, बल्कि किसी पूर्वी शहर का आकाश दिखाई दे रहा था, जिसका नाम मुझे अभी तक पता नहीं था। एम. डी चार्लस और पूर्व दर्जी को जिस बात ने भी रोक रखा था, ऐसा लग रहा था कि उनका समझौता हो चुका है और ये अनावश्यक निगाहें महज़ रस्मों की औपचारिकताएँ थीं, ठीक वैसे ही जैसे लोग किसी तयशुदा शादी से पहले देते हैं। प्रकृति के और भी करीब—और इन उपमाओं की बहुलता अपने आप में और भी स्वाभाविक है क्योंकि वही व्यक्ति, यदि हम कुछ मिनटों के लिए उसका अवलोकन करें, तो बारी-बारी से एक मनुष्य, एक पक्षी-मनुष्य या एक कीट-मनुष्य आदि के रूप में प्रकट होता है—कोई उन्हें पक्षियों का एक जोड़ा कह सकता था, नर और मादा, नर पहल करने का प्रयास कर रहा था, मादा—जुपियन—इन प्रस्तावों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दे रही थी, बल्कि अपने नए मित्र को बिना किसी आश्चर्य के, एक उदासीन स्थिर दृष्टि से देख रही थी, जिसे वह निस्संदेह अधिक परेशान करने वाला और एकमात्र प्रभावी तरीका मानती थी, जब नर ने पहला कदम उठा लिया था और अपने पंखों को संवारने में लग गया था। अंततः जुपियन की उदासीनता अब उसके लिए पर्याप्त नहीं रही; इस जीत के विश्वास से, खुद को पीछा करने और वांछित होने के लिए प्रेरित करना अगला चरण था, और जुपियन ने अपने काम पर जाने का निर्णय लेकर गाड़ी के द्वार से बाहर निकल गया। हालांकि, दो-तीन बार सिर घुमाने के बाद ही वह गली में भाग निकला। बैरन, उसका पीछा करते हुए कांपते हुए (एक धुन गुनगुनाते हुए, और दरबान को 'शुभ दिन' कहना न भूलते हुए, जो खुद भी थोड़ा नशे में था

और अपने पिछले रसोईघर में कुछ दोस्तों को दावत दे रहा था, इसलिए उसने उसकी बात सुनी तक नहीं), तेजी से उसका पीछा करने के लिए दौड़ा। ठीक उसी क्षण, जैसे ही एम. डी चार्लस एक बड़े भौंरे की तरह गुनगुनाते हुए द्वार से गायब हुआ, एक और, इस बार एक असली मधुमक्खी, आंगन में आई। मुझे क्या पता, शायद यही वह मधुमक्खी थी जिसका ऑर्किड को लंबे समय से इंतजार था, जो उसे वह दुर्लभ पराग देने आ रही थी जिसके बिना उसे कुंवारी ही मरना पड़ता। लेकिन कुछ मिनटों बाद, मेरा ध्यान उस कीड़े की हरकतों पर केंद्रित हो गया, क्योंकि जुपियन (शायद कोई पार्सल लेने आया था, जिसे वह आखिरकार अपने साथ ले गया और शायद एम. डी चार्लस के दर्शन से उत्पन्न भावनाओं में बहकर भूल गया था, या शायद किसी स्वाभाविक कारण से) वापस आ गया। उसके पीछे बैरन भी थे। बैरन ने औपचारिकताओं को संक्षिप्त करते हुए दर्जी से माचिस मांगी, लेकिन तुरंत बोले: "मैं आपसे माचिस मांग रहा हूँ, लेकिन मुझे पता चला कि मैं अपनी सिगार घर पर ही भूल गया हूँ।" आतिथ्य सत्कार के नियम नखरे पर हावी हो गए। "अंदर आइए, आपको जो चाहिए वह सब मिल जाएगा," दर्जी ने कहा, जिसके चेहरे पर अब तिरस्कार की जगह खुशी झलक रही थी। दुकान का दरवाजा उनके पीछे बंद हो गया और मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया। मधुमक्खी मेरी नजरों से ओझल हो गई थी। मुझे नहीं पता था कि वह वही कीड़ा था जिसकी ऑर्किड को ज़रूरत थी, लेकिन एक अत्यंत दुर्लभ कीड़े और एक बंदी फूल के मामले में, उनके चमत्कारिक मिलन की संभावना के बारे में मुझे अब कोई संदेह नहीं था, जब एम. डी चार्लस (यह केवल ईश्वरीय संयोगों की तुलना है, चाहे वे कुछ भी हों, बिना किसी वैज्ञानिक दावे के कि कुछ नियमों और जिसे कभी-कभी, अत्यंत अनुपयुक्त रूप से, समलैंगिकता कहा जाता है, के बीच संबंध स्थापित किया जाए), जो पिछले कई वर्षों से जुपियन के घर पर न होने के अलावा कभी घर नहीं आया था, श्रीमती डी विलेपारिसिस की बीमारी के कारण संयोगवश उस दर्जी से मिला, और उसके साथ ही बैरन जैसे पुरुषों के लिए आरक्षित सौभाग्य भी प्राप्त हुआ, उन साथी प्राणियों में से एक द्वारा जो वास्तव में, जैसा कि हम देखेंगे, जुपियन से अनंत रूप से छोटे और अधिक सुंदर हो सकते हैं, वह व्यक्ति जो इस पृथ्वी पर कामुक सुख का अपना हिस्सा पाने के लिए अस्तित्व में आया है; वह व्यक्ति जो केवल वृद्ध सज्जनों की परवाह करता है।

मैंने अभी जो कुछ कहा, वह मुझे कई मिनट बीतने तक समझ नहीं आया; वास्तविकता इतनी अदृश्य होती है कि जब तक कोई आकस्मिक घटना उसे प्रकट नहीं कर देती, तब तक वह अदृश्य ही रहती है। खैर, फिलहाल मैं पूर्व दर्जी और बैरन के बीच की बातचीत न सुन पाने से बहुत परेशान था। तभी मुझे जुपियन की दुकान से अलग एक बेहद पतली दीवार से अलग खाली दुकान याद आई। वहाँ पहुँचने के लिए मुझे बस अपने फ्लैट में जाना था, रसोई से होकर गुजरना था, सेवा सीढ़ी से तहखाने में उतरना था, वहाँ से होते हुए ऊपर आँगन की चौड़ाई पार करनी थी, और सही जगह पर पहुँचने पर, जहाँ कुछ महीने पहले बढ़ई अपना लकड़ी का सामान रखता था और जहाँ जुपियन अपना कोयला रखने वाला था, वहाँ से दुकान के अंदर जाने वाली सीढ़ियाँ चढ़नी थीं। इस तरह मेरी पूरी यात्रा गुप्त रूप से होगी, मुझे कोई नहीं देख पाएगा। यही सबसे समझदारी भरा तरीका था। मैंने वह रास्ता नहीं चुना था, बल्कि दीवारों के करीब चलते हुए, मैंने आंगन की खुली हवा में चक्कर लगाया, इस कोशिश में कि कोई मुझे देख न सके। अगर मैं नहीं दिख पाया, तो मुझे पूरा यकीन है कि यह संयोग की वजह से हुआ, मेरी सूझबूझ की वजह से नहीं। और मैंने इतना नासमझी भरा रास्ता क्यों चुना, जबकि तहखाने वाला रास्ता इतना सुरक्षित था? इसके तीन संभावित कारण हो सकते हैं, अगर मेरे पास कोई वजह थी भी तो। पहला, मेरी अधीरता। दूसरा, शायद मोंटजोवेन के उस दृश्य की धुंधली सी याद, जब मैं मैडम विंटेइल की खिड़की के बाहर छिपा खड़ा था। निश्चित रूप से, इस तरह की घटनाएं, जिनका मैं गवाह रहा हूँ, हमेशा सबसे नासमझी भरे और सबसे कम संभावित माहौल में प्रस्तुत की गई हैं, मानो इस तरह के खुलासे किसी जोखिम भरे, भले ही कुछ हद तक गुप्त, काम का इनाम हों। अंत में, तीसरा कारण, जो मुझे पूरा यकीन है, अनजाने में ही निर्णायक था, बताना तो मेरी हिम्मत ही नहीं करता, क्योंकि यह इतना बचकाना लगता है। सेंट-लूप द्वारा प्रतिपादित सैन्य सिद्धांतों का पालन करने और उन पर होने वाले विवादों को देखने के लिए, मैंने बोअर युद्ध के घटनाक्रम का बारीकी से अध्ययन किया था। इसी से प्रेरित होकर मैंने खोज अभियानों और यात्रा वृत्तांतों के पुराने वृत्तांतों को फिर से पढ़ा। इन कहानियों ने मुझे उत्साहित किया और मैंने इन्हें अपने दैनिक जीवन की घटनाओं पर लागू करके अपना साहस बढ़ाया। जब बीमारी के कारण मुझे कई दिनों और रातों तक न केवल नींद नहीं आती थी, बल्कि लेटने की भी अनुमति नहीं होती थी, भोजन या पेय का स्वाद भी नहीं मिलता था,

और जब मेरा दर्द और थकावट इतनी तीव्र हो जाती थी कि मुझे लगता था कि मैं इससे कभी छुटकारा नहीं पा सकूंगा, तब मैं किसी ऐसे यात्री के बारे में सोचता था जो समुद्र तट पर पड़ा हुआ था, जहरीली जड़ी-बूटियों से जहर खा चुका था, खारे पानी से भीगे कपड़ों में बुखार से कांप रहा था, फिर भी एक-दो दिन में वह ठीक हो गया, उठा और बिना सोचे-समझे अपने रास्ते पर चल पड़ा, संभावित निवासियों की तलाश में, जो उसके पास पहुँचने पर नरभक्षी साबित हो सकते थे। उसका उदाहरण मेरे लिए एक टॉनिक की तरह काम करता था, मेरी आशा को बहाल करता था, और मुझे अपने क्षणिक हतोत्साह पर शर्म आती थी। बोअर्स के बारे में सोचते हुए, जो ब्रिटिश सेनाओं का सामना करते हुए भी, उस समय भी निडर होकर खुद को खतरे में डालने से नहीं डरे, जब उन्हें किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंचने के लिए खुले मैदान को पार करना पड़ा: "यह कितना अच्छा होता," मैंने मन ही मन सोचा, "अगर मैं उस समय कम साहस दिखाता जब युद्ध का मैदान केवल मानव हृदय होता है, और जब एकमात्र स्टील जिससे मुझे डरना होता है, वह पड़ोसियों की निगाहें होती हैं, जिनके पास आंगन में देखने के अलावा और भी काम होते हैं।"

लेकिन जब मैं दुकान के अंदर था, इस बात का पूरा ध्यान रखते हुए कि फर्श का कोई भी तख्ता जरा सी भी चरमराहट न करे, क्योंकि मैंने पाया कि जुपियन की दुकान में होने वाली हल्की सी भी आवाज दूसरी दुकान से सुनाई दे सकती थी, तो मैंने मन ही मन सोचा कि जुपियन और एम. डी चार्लस कितने जल्दबाज थे, और भाग्य ने उनका कितना अद्‌भुत साथ दिया था।

मैं हिलने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। गुरमांटेस के नौकर ने, शायद अपने मालिक की अनुपस्थिति का फायदा उठाते हुए, संयोगवश उस दुकान में एक सीढ़ी रख दी थी जहाँ मैं अब खड़ा था। यह सीढ़ी अब तक कोच-हाउस में रखी रहती थी, और अगर मैं इस पर चढ़ जाता तो ऊपर का वेंटिलेटर खोलकर उतनी ही अच्छी तरह सुन सकता था जितना कि जुपियन की दुकान में होने पर सुनता। लेकिन मुझे शोर मचाने का डर था। वैसे भी, शोर मचाना ज़रूरी नहीं था। मुझे दुकान में कई मिनट बीत जाने के बाद भी देर से आने का कोई अफसोस नहीं था। क्योंकि जुपियन की दुकान में मैंने जो पहले सुना, जो कि केवल अस्पष्ट आवाज़ों की एक श्रृंखला थी, उससे मुझे लगता है कि कुछ ही शब्द बोले गए होंगे। यह सच है कि ये आवाज़ें

इतनी तेज़ थीं कि अगर एक आवाज़ के बाद दूसरी आवाज़ एक सप्तक ऊँची होकर दूसरी आवाज़ में न आती, तो मुझे लग सकता था कि मेरे से कुछ ही फीट की दूरी पर एक व्यक्ति दूसरे का गला घोंट रहा है, और बाद में हत्यारा और उसका होश में आया शिकार अपराध के निशान मिटाने के लिए नहा रहे हैं। बाद में मैंने इससे यह निष्कर्ष निकाला कि दर्द के समान ही मुखर एक और चीज है, अर्थात् आनंद, विशेष रूप से तब जब उसमें—प्रसव के संभावित भय को छोड़कर, जो कि इस मामले में संभव नहीं था, भले ही गोल्डन लीजेंड में इसका उदाहरण बहुत ही कम विश्वसनीय है—सफाई का तत्काल विचार जुड़ जाता है। अंततः, लगभग आधे घंटे बाद (जिस दौरान मैं अपनी सीढ़ी पर दबे पांव चढ़कर वेंटिलेटर से झाँक रहा था, जिसे मैंने खोला नहीं), बातचीत शुरू हुई। जुपियन ने एम. डी चार्लस द्वारा उस पर दबाव डाले जा रहे पैसे को दृढ़तापूर्वक अस्वीकार कर दिया।

“तुमने अपनी ठुड्डी ऐसे क्यों मुंडवा रखी है?” उसने बैरन से प्यार भरे लहजे में पूछा। “दाढ़ी बहुत अच्छी लग रही है।” “उफ़! ये तो घिनौनी है,” बैरन ने जवाब दिया। इस बीच वह दहलीज पर ही रुका रहा और जुपियन से आस-पड़ोस के बारे में सवाल पूछता रहा। “तुम कोने पर शाहबलूत बेचने वाले के बारे में कुछ नहीं जानते, बाईं तरफ वाला नहीं, वो तो बहुत डरावना है, बल्कि दूसरी तरफ वाला, बड़ा, सांवला आदमी? और सामने वाली दवा की दुकान, उसका एक आकर्षक साइकिल चालक है जो उसके पार्सल पहुँचाता है।” इन सवालों से जुपियन ज़रूर परेशान हो गया होगा, क्योंकि एक त्यागी हुई महान वेश्या की तरह तिरस्कार से लथपथ होकर उसने जवाब दिया: “मैं देख सकता हूँ कि तुम बिल्कुल निर्दयी हो।” दर्द भरे, ठंडे और बनावटी स्वर में कही गई इस फटकार का असर एम. डी चार्लस पर ज़रूर पड़ा होगा। अपनी जिज्ञासा से बने बुरे प्रभाव को कम करने के लिए, उन्होंने जुपियन से इतनी धीमी आवाज़ में विनती की कि मैं उनके शब्द ठीक से समझ नहीं पाया। इस विनती को पूरा करने पर दुकान में उनका समय ज़रूर बढ़ जाता। इस विनती ने दर्जी को इतना प्रभावित किया कि वह अपनी झुंझलाहट भूल गए। उन्होंने बैरन के गोल-मटोल और लाल चेहरे को, जो उनके सफ़ेद बालों के नीचे था, ऐसे देखा जैसे उनका आत्मसम्मान अभी-अभी बहुत बढ़ गया हो। उन्होंने एम. डी चार्लस की विनती मान ली और कुछ असभ्य टिप्पणियाँ करने के बाद, जैसे

"तुम कितने शरारती हो!", मुस्कुराते हुए, भावुक, श्रेष्ठ और कृतज्ञ भाव से बैरन से कहा, "ठीक है, बड़े बच्चे, चलो!"

“अगर मैं ट्राम कंडक्टर के सवाल पर वापस जाऊं,” एम. डी चार्लस ने शांत भाव से आगे कहा, “तो इसका कारण यह है कि, अन्य बातों के अलावा, वह मुझे घर वापसी की यात्रा में कुछ मनोरंजन दे सकता है। क्योंकि कभी-कभी, उस खलीफा की तरह जो बगदाद की सड़कों पर एक आम व्यापारी के वेश में घूमता था, मुझे किसी विचित्र छोटे व्यक्ति का पीछा करने की कृपा करनी पड़ती है जिसका चेहरा मुझे भा जाता है।” इस बिंदु पर मैंने वही टिप्पणी की जो मैंने बर्गोट के बारे में की थी। यदि उसे कभी किसी न्यायाधीश के समक्ष पैरवी करनी पड़े, तो वह न्यायाधीशों को समझाने के लिए सोचे-समझे वाक्यों का प्रयोग नहीं करेगा, बल्कि बर्गोट शैली के ऐसे वाक्यों का प्रयोग करेगा जो उसके विशिष्ट साहित्यिक स्वभाव से प्रेरित होते हैं और जिन्हें प्रयोग करने में उसे आनंद आता है। इसी प्रकार, एम. डी चार्लस ने दर्जी से बातचीत करते समय उसी भाषा का प्रयोग किया जो वह अपने वर्ग के फैशनेबल लोगों के साथ करते थे, यहाँ तक कि उसकी विलक्षणताओं को भी बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया, शायद इसलिए कि जिस शर्म को वह दूर करने का प्रयास कर रहे थे, उसने उन्हें अत्यधिक अहंकार की ओर धकेल दिया या फिर, उन्हें खुद पर नियंत्रण रखने से रोकते हुए (क्योंकि हम हमेशा अपने से भिन्न व्यक्ति की संगति में कम सहज महसूस करते हैं), उन्हें अपने वास्तविक स्वभाव को उजागर करने के लिए मजबूर किया, जो वास्तव में अहंकारी और थोड़ा पागलपन भरा था, जैसा कि श्रीमती डी गुएरमांटेस ने टिप्पणी की थी। “पता न खोने के लिए,” वह आगे बोला, “मैं एक छोटे से दरबान की तरह, एक युवा और सुंदर डॉक्टर की तरह, उस छोटी सी महिला के साथ उसी डिब्बे में घुस जाता हूँ, जिसके बारे में हम व्याकरण के नियमों का पालन करने के लिए स्त्रीलिंग में बात करते हैं (जैसे हम किसी राजकुमार के बारे में कहते हैं, 'क्या महामहिम स्वस्थ हैं?')। अगर वह अपना डिब्बा बदलती है, तो मैं, शायद प्लेग के कीटाणुओं के साथ, उस अविश्वसनीय चीज़ को ले जाता हूँ जिसे 'स्थानांतरण' कहते हैं, एक नंबर, और वह नंबर, भले ही मुझे दिया जाता है, हमेशा नंबर एक नहीं होता! मैं इस तरह तीन या चार बार 'डिब्बा' बदलता हूँ, कभी-कभी रात के ग्यारह बजे ऑरलियन्स स्टेशन पर पहुँच जाता हूँ और घर लौटना पड़ता है। फिर भी, काश यह सिर्फ ऑरलियन्स स्टेशन ही होता! एक बार, मैं आपको

बताऊँ, बातचीत शुरू न कर पाने के कारण, मैं ऑरलियन्स तक चला गया, उन भयानक डिब्बों में से एक में जहाँ आँखों को टिकाने के लिए, 'स्ट्रिंग-वर्क' के नाम से जाने जाने वाले त्रिकोणों के बीच, प्रमुख वास्तुशिल्प की तस्वीरें लगी होती हैं। ट्रेन लाइन की खासियतें। केवल एक खाली सीट थी; मेरे सामने, एक ऐतिहासिक इमारत के रूप में, ऑरलियन्स कैथेड्रल का 'दृश्य' था, जो फ्रांस में सबसे बदसूरत है, और मेरी इच्छा के विरुद्ध उस तरह से उसे घूरना उतना ही थका देने वाला था मानो किसी ने मुझे जबरदस्ती उसके टावरों को उन ऑप्टिकल पेनहोल्डर्स में से किसी एक के लेंस में फोकस करने के लिए मजबूर किया हो जिनसे आंखों की रोशनी चली जाती है। मैं अपने साथी के साथ लेस औब्रेज़ स्टेशन पर ट्रेन से उतर गया, जिसके परिवार (जबकि मैंने कल्पना की थी कि उसमें परिवार न होने के अलावा हर कमी है) प्लेटफ़ॉर्म पर इंतज़ार कर रहे थे! पेरिस वापस जाने वाली ट्रेन का इंतज़ार करते हुए मेरा एकमात्र सहारा डायने डी पोइटियर्स का घर था। हो सकता है कि उसने मेरे किसी शाही पूर्वज को मोहित किया हो, लेकिन मैं किसी और जीवंत सुंदरता को पसंद करता। इसीलिए, अकेले घर लौटने की बोरियत से बचने के लिए, मैं किसी स्लीपिंग-कार अटेंडेंट या बस के कंडक्टर से दोस्ती करना चाहूंगा। अब, हैरान मत होना। बैरन ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, "यह सब वर्ग का मामला है। उदाहरण के लिए, जिन्हें आप 'युवक सज्जन' कहते हैं, उनके साथ मुझे वास्तव में कोई इच्छा नहीं होती, लेकिन जब तक मैं उन्हें छू न लूँ, तब तक मुझे तृप्ति नहीं होती। मेरा मतलब शारीरिक रूप से नहीं, बल्कि एक भावनात्मक तार को छूना है। जैसे ही कोई युवक मेरे पत्रों का उत्तर न देने के बजाय मुझे लगातार पत्र लिखने लगता है, जब वह नैतिक रूप से मेरे वश में होता है, तो मैं फिर से शांत हो जाता हूँ, या कम से कम शांत हो जाता अगर मैं तुरंत किसी और के आकर्षण में न फँस जाता। यह थोड़ा अजीब है, है ना? - 'युवक सज्जनों' की बात करें तो, जो यहाँ घर आते हैं, क्या आप उनमें से किसी को जानते हैं?" "नहीं, प्रिये। ओह, हाँ, मैं जानता हूँ, एक सांवला, बहुत लंबा, चश्मा लगाए हुए, जो मुस्कुराता रहता है और घूमता रहता है।" "मुझे नहीं पता कि आप किसके बारे में बात कर रहे हैं।" जुपियन ने चित्र को पूरा किया, लेकिन एम. डी चार्लस इसके विषय की पहचान करने में सफल नहीं हो सके, क्योंकि उन्हें यह नहीं पता था कि पूर्व दर्जी उन लोगों में से एक था, जो आम तौर पर जितना माना जाता है उससे कहीं अधिक आम हैं, जो अपरिचित लोगों के बालों का रंग कभी

याद नहीं रखते। लेकिन मुझे, जो जुपियन की इस कमजोरी से अवगत था और 'काले' के स्थान पर 'गोरा' शब्द का प्रयोग किया, वह चित्र ड्यूक डी चैटेलराउल्ट का सटीक वर्णन प्रतीत हुआ। "अब उन नौजवानों की बात पर आते हैं जो निम्न वर्ग के नहीं हैं," बैरन ने आगे कहा, "इस समय मेरा ध्यान एक अजीब से छोटे लड़के की ओर आकर्षित हो गया है, एक बुद्धिमान छोटा सा नागरिक जो मेरे प्रति शिष्टता की घोर कमी दिखाता है। उसे इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं है कि मैं कितना महान व्यक्ति हूँ और उसकी तुलना में वह कितना छोटा है। आखिरकार, इससे क्या फर्क पड़ता है, वह छोटा गधा मेरे आदरणीय बिशप के वस्त्र के सामने अपना सिर फोड़ ले।" "बिशप!" जुपियन चिल्ला उठा, जिसे एम. डी चार्लस की समापन टिप्पणी बिल्कुल समझ नहीं आई थी, लेकिन बिशप शब्द सुनकर वह पूरी तरह से स्तब्ध रह गया। "लेकिन इस तरह की बातें धर्म से मेल नहीं खातीं," उसने कहा। "मेरे परिवार में तीन पोप हैं," एम. डी चार्लस ने उत्तर दिया, "और कार्डिनल की उपाधि के कारण मुझे लाल वस्त्र धारण करने का अधिकार प्राप्त है। कार्डिनल की भतीजी होने के नाते, मेरे परदादा ने मेरे दादा को ड्यूक की उपाधि दी थी, जो इसके बदले में दी गई थी। हालांकि, मुझे लगता है कि यह उपमा आपको बहरा कर देती है और फ्रांसीसी इतिहास आपको उदासीन बना देती है। इसके अलावा," उन्होंने शायद निष्कर्ष के बजाय चेतावनी के रूप में कहा, "युवाओं के प्रति जो आकर्षण मैं महसूस करता हूँ, जो मुझसे डरते हैं, क्योंकि उनका स्वाभाविक सम्मान ही उन्हें मुझसे यह कहने से रोकता है कि वे मुझसे प्यार करते हैं, इसके लिए उनमें एक उत्कृष्ट सामाजिक स्थिति होनी चाहिए। और फिर, उनकी उदासीनता का दिखावा, इसके बावजूद, ठीक विपरीत प्रभाव पैदा कर सकता है। मूर्खतापूर्ण ढंग से लंबे समय तक चलने पर, यह मुझे बीमार कर देता है। एक ऐसे वर्ग का उदाहरण लें जिससे आप अधिक परिचित हैं, जब वे मेरे होटल का नवीनीकरण कर रहे थे, ताकि उन सभी डचेसों के बीच ईर्ष्या पैदा न हो जो यह कहने के सम्मान के लिए एक-दूसरे से होड़ कर रही थीं कि उन्होंने मुझे एक उपहार दिया है।" ठहरने के लिए, मैं कुछ दिनों के लिए एक 'होटल' में गया, जैसा कि आजकल सराय को कहते हैं। वहाँ के एक नौकर को मैं जानता था, मैंने उसे एक दिलचस्प छोटे से नौकर के बारे में बताया जो सामने का दरवाजा खोलता और बंद करता था, और जो मेरे प्रस्तावों को ठुकराता रहता था। आखिरकार, अपना आपा खोकर, उसे यह साबित करने के लिए कि मेरे

इरादे नेक थे, मैंने उसे सिर्फ ऊपर आकर मेरे कमरे में पाँच मिनट बात करने के लिए एक बहुत बड़ी रकम की पेशकश की। मैंने उसका इंतज़ार किया, लेकिन वह व्यर्थ था। फिर मुझे उससे इतनी नफरत हो गई कि मैं सेवा द्वार से बाहर जाने लगा ताकि दूसरे दरवाजे पर उसका वह घिनौना चेहरा न देखूँ। बाद में मुझे पता चला कि उसे मेरे कोई भी पत्र नहीं मिले थे, जो रोक लिए गए थे, पहला उस नौकर ने, जो ईर्ष्यालु था, दूसरा दिन के चौकीदार ने, जो नेक था, और तीसरा रात के चौकीदार ने, जो उस छोटे से नौकर से प्यार करता था, और डायना के उठने के समय उसके साथ सोता था। लेकिन मेरी घृणा फिर भी बनी रही, और अगर वे मुझे वह पेज, चांदी की थाली में रखे हिरण के मांस की तरह, मुझे उसे उल्टी आने के कारण दूर धकेल देना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि हमने गंभीर मामलों पर बात की थी, और अब हमारे बीच सब कुछ खत्म हो चुका है, जो मैं हासिल करना चाहता था, उसका कोई सवाल ही नहीं उठता। लेकिन आप मेरी बहुत मदद कर सकते हैं, मेरे प्रतिनिधि के रूप में काम कर सकते हैं; क्यों नहीं, ऐसी बात का ख्याल आते ही मेरी ऊर्जा वापस आ जाती है, और मैं देख सकता हूँ कि सब कुछ अभी खत्म नहीं हुआ है।

इस दृश्य की शुरुआत से ही, मेरी खुली आँखों के सामने, एम. डी चार्लस में एक क्रांति आ गई थी, इतनी पूर्ण और तात्कालिक मानो जैसे किसी जादूगर की छड़ी ने उन्हें छू लिया हो। तब तक, क्योंकि मैं समझ नहीं पाया था, मैंने देखा नहीं था। हममें से प्रत्येक का दुर्गुण (हम सुविधा के लिए इस शब्द का प्रयोग कर रहे हैं) जीवन भर उसके साथ रहता है, ठीक उसी तरह जैसे कोई परिचित प्रतिभा तब तक मनुष्यों के लिए अदृश्य रहती है जब तक वे उसकी उपस्थिति से अनभिज्ञ होते हैं। हमारी अच्छाई, हमारी नीचता, हमारा नाम, हमारे सामाजिक संबंध आँखों के सामने प्रकट नहीं होते, हम उन्हें अपने भीतर छिपाकर रखते हैं। यहाँ तक कि यूलिसिस ने भी एथेना को तुरंत नहीं पहचाना था। लेकिन देवता एक-दूसरे को तुरंत पहचान लेते हैं, जैसे एक समान व्यक्ति को, और एम. डी चार्लस भी जुपियन के लिए वैसे ही थे। उस क्षण तक, एम. डी चार्लस की उपस्थिति में, मैं एक ऐसे अनमने व्यक्ति की स्थिति में था, जो एक गर्भवती महिला के सामने खड़ा है, जिसका उभरा हुआ पेट वह देख नहीं पाया है, और जब वह महिला मुस्कुराते हुए दोहराती है, "हाँ, मैं अभी थोड़ी थकी हुई हूँ," तो वह उससे अविवेकी ढंग से पूछता रहता है, "अरे, आपको क्या हुआ है?" लेकिन जैसे ही कोई उससे कहता है, "वह

गर्भवती है," अचानक उसकी नज़र उसके पेट पर पड़ती है और वह कुछ और नहीं देख पाता। यही स्पष्टीकरण हमारी आँखें खोलता है; किसी भ्रम का निवारण हमें एक नया अर्थ देता है।

मेरे वे पाठक जो इस नियम के उदाहरण के लिए अपने परिचित श्रीमान चार्ल्स का ज़िक्र नहीं करना चाहते, जिन पर उन्होंने वर्षों तक कभी संदेह नहीं किया, जब तक कि एक दिन अचानक, हर किसी की तरह दिखने वाले उस व्यक्ति की चिकनी सतह पर, अब तक अदृश्य स्याही से उकेरे गए वे अक्षर दिखाई नहीं दिए, जो प्राचीन यूनानियों के प्रिय शब्द को बनाते हैं, उन्हें केवल यह यकीन दिलाने के लिए कि उनके आसपास की दुनिया उन्हें पहले नग्न दिखाई देती है, हजारों अलंकारों से रहित जो वह अधिक जानकार लोगों की आँखों को प्रदान करती है, उन्हें याद करना होगा कि अपने जीवन में कितनी बार वे गलती करने के कगार पर पहुँच चुके हैं। उस व्यक्ति के खाली, बिना किसी प्रमाण वाले चेहरे पर ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे वे यह अनुमान लगा सकें कि वह ठीक वही भाई, या होने वाला पति, या प्रेमी है जिसके बारे में वे अभी टिप्पणी करने वाले थे: "क्या औरत है!" लेकिन फिर, सौभाग्य से, पास खड़े किसी व्यक्ति द्वारा फुसफुसाए गए एक शब्द ने उनके होठों पर घातक भाव को रोक दिया। अचानक, मेने, टेकेल, उफर्सिन की तरह, ये शब्द प्रकट होते हैं: "उसकी सगाई हो चुकी है," या "वह उसका भाई है," या "वह उस स्त्री का प्रेमी है जिसका वर्णन हमें उसके सामने गाय की तरह नहीं करना चाहिए।" और यह एक नई धारणा, आंशिक धारणाओं का संपूर्ण पुनर्गठन कर देगी, कुछ को पीछे धकेल देगी, कुछ को आगे बढ़ा देगी, और इस तरह परिवार के बाकी सदस्यों के बारे में हमारे पास जो धारणा थी, वह पूर्ण रूप से सामने आ जाएगी। एम. डी चार्लस में शायद एक और प्राणी समाहित हो गया था जिसने उसे अन्य पुरुषों से उतना ही अलग बना दिया जितना घोड़ा सेंटॉर को अलग करता है, यह प्राणी शायद बैरन में समाहित हो गया था, मैंने कभी इसकी झलक नहीं देखी थी। अब अमूर्तता साकार हो चुकी थी, अंततः पहचाना गया प्राणी अपनी अदृश्यता खो चुका था, और एम. डी चार्लस का एक नए व्यक्ति में रूपांतरण इतना पूर्ण हो चुका था कि न केवल उनके चेहरे और आवाज के विरोधाभास, बल्कि पीछे मुड़कर देखने पर, मेरे साथ उनके संबंधों के उतार-चढ़ाव भी, वह सब कुछ जो अब तक मेरे मन में असंगत प्रतीत होता था, बोधगम्य हो गया, स्पष्ट हो गया, ठीक वैसे ही जैसे

एक वाक्य जिसका कोई अर्थ नहीं होता जब तक वह मेज पर बेतरतीब ढंग से बिखरे अक्षरों में टूटा रहता है, यदि इन अक्षरों को उचित क्रम में व्यवस्थित किया जाए, तो एक ऐसा विचार व्यक्त करता है जिसे कोई बाद में कभी नहीं भूल सकता।

अब मुझे यह भी समझ में आ गया कि दिन में पहले, जब मैंने उन्हें श्रीमती डी विलेपारिसिस के यहाँ से आते हुए देखा था, तो मैं इस निष्कर्ष पर कैसे पहुँच गया था कि श्री डी चार्लस एक स्त्री की तरह दिखते हैं: वे वास्तव में एक स्त्री ही थे! वे उस जाति के प्राणी थे, जो दिखने में जितने विरोधाभासी लगते हैं, उससे कहीं कम विरोधाभासी होते हैं, जिनका आदर्श पुरुषत्व है, क्योंकि उनका स्वभाव स्त्रीत्वपूर्ण है और जो अपने जीवन में केवल दिखावे के लिए ही अन्य पुरुषों के समान होते हैं; जहाँ हममें से प्रत्येक की आँखों में, जिनसे वह ब्रह्मांड की हर चीज को देखता है, पुतली की सतह पर एक मानवीय आकृति अंकित होती है, उनके लिए यह किसी अप्सरा की नहीं, बल्कि एक युवक की आकृति होती है। एक ऐसी जाति जिस पर अभिशाप का बोझ है और जिसे झूठ और झूठी गवाही के बीच जीना पड़ता है, क्योंकि वह जानती है कि दुनिया उसकी इच्छा को, जो प्रत्येक मनुष्य के लिए जीवन की सबसे बड़ी खुशी है, दंडनीय और निंदनीय, अस्वीकार्य मानती है; जो अपने ईश्वर को नकारने के लिए बाध्य है, क्योंकि यहाँ तक कि ईसाई भी, जब न्याय के कटघरे में पेश होते हैं और उन पर आरोप लगाए जाते हैं, तो उन्हें मसीह के सामने और उनके नाम पर अपना बचाव करना पड़ता है, मानो किसी झूठे आरोप से, उस आरोप से जो उनके लिए जीवन के समान है; ऐसे पुत्र जिनकी माँ नहीं है, जिनके प्रति वे जीवन भर और यहाँ तक कि उनकी मरणासन्न आँखों को बंद करने के क्षण में भी झूठ बोलने के लिए बाध्य हैं; ऐसे मित्र जिनकी कोई मित्रता नहीं है, उन सभी के बावजूद जिन्हें उनका आकर्षण, जिसे अक्सर पहचाना जाता है, प्रेरित करता है और उनके उदार हृदय, जो अक्सर उदार होते हैं, सहर्ष महसूस करना चाहते हैं; लेकिन क्या हम उन रिश्तों को मित्रता कह सकते हैं जो केवल झूठ के बल पर पनपते हैं और जिनसे विश्वास और ईमानदारी का पहला प्रदर्शन, जिसमें लिप्त होने का प्रलोभन हो सकता है, उन्हें घृणा के साथ निष्कासित कर देगा, जब तक कि वे एक निष्पक्ष, अर्थात् सहानुभूतिपूर्ण मन से व्यवहार नहीं कर रहे हों, जो हालांकि उस मामले में, उनके बारे में पारंपरिक मनोविज्ञान द्वारा गुमराह होकर, स्वीकार किए गए दोष से उस स्नेह को उत्पन्न मान लेगा जो उससे बिल्कुल विपरीत है, ठीक उसी तरह

जैसे कुछ न्यायाधीश मूल पाप और नस्लीय पूर्वनियति से उत्पन्न कारणों से समलैंगिकों में हत्या और यहूदियों में राजद्रोह को क्षमा करने के लिए अधिक इच्छुक होते हैं। और अंत में—कम से कम पहले सिद्धांत के अनुसार—जिसे मैंने उस समय संक्षेप में प्रस्तुत किया था और जिसे हम आगे कुछ संशोधनों के अधीन देखेंगे, एक ऐसा सिद्धांत जिसके अनुसार यह बात उन्हें सबसे अधिक क्रोधित करती, यदि यह विरोधाभास उनकी आँखों से उस भ्रम के कारण छिपा न होता जिसने उन्हें देखने और जीने के लिए प्रेरित किया—वे प्रेमी जिनसे उस प्रेम की संभावना हमेशा ही वर्जित रहती है जिसकी आशा उन्हें इतने जोखिम और इतने अकेलेपन को सहने की शक्ति देती है, क्योंकि वे ठीक उसी प्रकार के पुरुष से प्रेम करती हैं जिसमें स्त्रीत्व का कोई अंश नहीं होता, जो समलैंगिक नहीं होता और परिणामस्वरूप बदले में उनसे प्रेम नहीं कर सकता; परिणामस्वरूप उनकी इच्छा सदा अतृप्त रहती यदि उनका पैसा उन्हें सच्चे पुरुष न दिला पाता, और उनकी कल्पना उन्हें उन समलैंगिकों को ही सच्चा पुरुष मानने पर मजबूर कर देती जिनके साथ उन्होंने वेश्यावृत्ति की थी। उनका सम्मान अनिश्चित, उनकी स्वतंत्रता अस्थायी, केवल उनके अपराध के उजागर होने तक ही टिकती है; उनकी स्थिति अस्थिर है, ठीक उस कवि की तरह जिसे एक दिन लंदन के हर रेस्तरां में दावत दी जाती थी, हर जगह तालियाँ मिलती थीं, और अगले ही दिन उसे हर जगह से निकाल दिया जाता था, सिर रखने के लिए तकिया भी नहीं मिलता था, सैमसन की तरह चक्की चलाता हुआ और उसकी तरह कहता था: "दोनों लिंग मरेंगे, प्रत्येक अलग-अलग जगह पर!"; यहाँ तक कि, आम आपदा के दिनों को छोड़कर, जब अधिकांश लोग पीड़ित के चारों ओर उसी तरह इकट्ठा होते हैं जैसे यहूदी ड्रेफस के चारों ओर इकट्ठा हुए थे, उन्हें अपने साथियों की सहानुभूति से भी वंचित कर दिया जाता है—कभी-कभी उनके समाज से भी—जिनमें वे केवल घृणा उत्पन्न करते हैं क्योंकि वे खुद को उस दर्पण में चित्रित देखते हैं जो उनकी चापलूसी करना बंद कर देता है, और उनके द्वारा अनदेखा किए गए हर दोष को उजागर करता है, और उन्हें यह समझाता है कि जिसे वे अपना प्रेम कहते रहे हैं (एक ऐसी चीज जिसमें, शब्द पर खेलते हुए, उन्होंने कविता, चित्रकला, संगीत, वीरता, तपस्या द्वारा प्रेम में जोड़े गए सभी तत्वों को जोड़ दिया है) वह उनके द्वारा चुने गए सौंदर्य के आदर्श से नहीं बल्कि एक लाइलाज बीमारी से उत्पन्न होता है; यहूदियों की तरह ही (कुछ को छोड़कर जो केवल अपनी ही जाति के लोगों के

साथ मेलजोल रखते हैं और जिनके होठों पर हमेशा औपचारिक शब्द और पवित्र शिष्टाचार होते हैं), एक दूसरे से दूर रहते हैं, उन लोगों की तलाश करते हैं जो सीधे तौर पर उनके विपरीत हैं, जो उनकी संगति नहीं चाहते, उनके तिरस्कार को क्षमा करते हैं, उनकी कृपा से आनंदित होते हैं; लेकिन बहिष्कार और तिरस्कार के कारण, जो उन पर थोपा गया है, अंततः इज़राइल के समान उत्पीड़न के कारण, उन्हें एक ऐसी जाति की शारीरिक और नैतिक विशेषताओं से युक्त कर दिया गया है, जो कभी सुंदर तो कभी कुरूप होती है, और (उस सभी उपहास के बावजूद जो विरोधी जाति के साथ अधिक घनिष्ठ रूप से घुलमिलकर, बेहतर ढंग से आत्मसात होकर, अपेक्षाकृत कम विकृत दिखने वाला व्यक्ति, उस व्यक्ति पर करता है जो अधिक विकृत रहा है) उन्हें अपनी जाति के लोगों के साथ समय बिताने में राहत मिलती है, और यहां तक कि उनके अपने जीवन की कुछ पुष्टि भी मिलती है, इतनी अधिक कि, जबकि वे दृढ़ता से इस बात से इनकार करते हैं कि वे एक जाति हैं (जिसका नाम सबसे घिनौना अपमान है), जो लोग इस तथ्य को छिपाने में सफल होते हैं कि वे इससे संबंधित हैं, वे उन्हें नुकसान पहुंचाने के बजाय, हालांकि उन्हें इसमें कोई संकोच नहीं है, खुद को माफ करने के लिए आसानी से अपना असली चेहरा उजागर कर देते हैं; और, इतिहास में उलटफेर के मामलों की खोज में (जैसे एक डॉक्टर अपेंडिसाइटिस के मामलों की तलाश करता है), यह याद करके आनंद लेते हुए कि सुकरात उन्हीं में से एक थे, जैसे इज़राइली दावा करते हैं कि यीशु उन्हीं में से एक थे, इस बात पर विचार किए बिना कि जब समलैंगिकता सामान्य थी तब कोई असामान्य नहीं थे, ईसा मसीह से पहले कोई ईसाई विरोधी नहीं थे, कि केवल अपमान ही अपराध बनाता है क्योंकि इसने केवल उन्हीं को जीवित रहने दिया है जो हर चेतावनी, हर उदाहरण, हर दंड के प्रति हठी बने रहे, एक ऐसी विशिष्ट जन्मजात प्रवृत्ति के कारण जो अन्य मनुष्यों के लिए (भले ही यह उच्च नैतिक गुणों के साथ हो) कुछ अन्य दुर्गुणों की तुलना में अधिक घृणित है जो उन गुणों को बाहर करते हैं, जैसे चोरी, क्रूरता, विश्वासघात, ऐसे दुर्गुण जिन्हें आम तौर पर बेहतर समझा जाता है और इसलिए अधिक आसानी से माफ कर दिया जाता है; यह लॉज की तुलना में कहीं अधिक व्यापक, अधिक शक्तिशाली और कम संदिग्ध फ्रीमेसनरी का निर्माण करता है, क्योंकि यह समान रुचियों, आवश्यकताओं, आदतों, खतरों, प्रशिक्षण, ज्ञान, व्यापार, शब्दावली पर आधारित है, और एक ऐसी फ्रीमेसनरी है जिसमें सदस्य

स्वयं, जो एक-दूसरे को जानने का इरादा नहीं रखते हैं, प्राकृतिक या पारंपरिक, अनैच्छिक या जानबूझकर संकेतों द्वारा एक-दूसरे को तुरंत पहचान लेते हैं जो सड़क पर भीख मांगने वाले को, उस महान रईस को जिसकी गाड़ी का दरवाजा वह बंद कर रहा है, अपनी बेटी का हाथ मांगने वाले दूल्हे को, उपचार, क्षमा या बचाव चाहने वाले को, डॉक्टर, पुजारी, वकील, जिनसे उसने सहायता ली है, को अपने ही समुदाय के किसी सदस्य के रूप में इंगित करते हैं; उन सभी को अपने रहस्य की रक्षा करने के लिए बाध्य होना पड़ता है, लेकिन उनका हिस्सा एक ऐसे रहस्य में होता है जो दूसरों के साथ साझा किया जाता है, जिस पर बाकी मानवता को संदेह नहीं होता है और जिसका अर्थ है कि उनके लिए रोमांच की सबसे अविश्वसनीय कहानियाँ भी सच लगती हैं, क्योंकि इस रोमांटिक, कालभ्रमित जीवन में राजदूत अपराधी, राजकुमार का घनिष्ठ मित्र होता है, एक निश्चित स्वतंत्रता के साथ जो उसे उसके कुलीन पालन-पोषण ने प्रदान की है, और जिसकी कांपते हुए छोटे नागरिक में कमी होती है, डचेस के दल को छोड़कर गुंडे के साथ निजी तौर पर परामर्श करने चला जाता है; मानव समाज का एक पतित हिस्सा, लेकिन एक महत्वपूर्ण हिस्सा, जिस पर संदेह किया जाता है जहाँ उसका अस्तित्व नहीं है, खुद को प्रदर्शित करता है, उद्दंड और बिना दंड के, जहाँ उसके अस्तित्व का कभी अनुमान नहीं लगाया जाता है; लोगों के बीच, सेना में, चर्च में, जेल में, सिंहासन पर, हर जगह उसके अनुयायी हैं; संक्षेप में कहें तो, कम से कम काफी हद तक, दूसरी जाति के पुरुषों के साथ एक चंचल और खतरनाक घनिष्ठता में रहना, उन्हें उकसाना, उनकी बुराई को किसी पराई चीज के रूप में बताकर उनके साथ खेलना; एक ऐसा खेल जो दूसरों के अंधेपन या कपट के कारण आसान हो जाता है, एक ऐसा खेल जो वर्षों तक तब तक जारी रह सकता है जब तक कि वह दिन न आ जाए जब ये शेर-वश में करने वाले लोग बदनाम हो जाएं; तब तक, उन्हें अपने जीवन को गुप्त रखने के लिए मजबूर होना पड़ता है, उन चीजों से अपनी निगाहें फेर लेनी पड़ती हैं जिन पर वे स्वाभाविक रूप से नजर रखते हैं, और उन चीजों पर नजर रखनी पड़ती है जिनसे वे स्वाभाविक रूप से दूर रहना चाहते हैं, अपनी शब्दावली के कई शब्दों का लिंग बदल देना पड़ता है, एक सामाजिक बंधन, जो उस आंतरिक बंधन की तुलना में मामूली है जो उनकी बुराई, या जिसे अनुचित रूप से बुराई कहा जाता है, उन पर थोपती है, अब दूसरों के प्रति नहीं बल्कि स्वयं के प्रति, और इस तरह से कि उन्हें स्वयं यह बुराई प्रतीत

नहीं होती। लेकिन उनमें से कुछ अधिक व्यावहारिक, व्यस्त लोग जिनके पास जाकर अपने सौदे करने या सहयोग से जीवन को सरल बनाने और समय बचाने का समय नहीं है, उन्होंने दो समाज बनाए हैं जिनमें से दूसरा समाज विशेष रूप से उन्हीं के जैसे व्यक्तियों से बना है। यह उन गरीब लोगों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है जो ग्रामीण इलाकों से आए हैं, जिनके कोई मित्र नहीं हैं, जिनके पास एक दिन प्रसिद्ध डॉक्टर या वकील बनने की महत्वाकांक्षा के अलावा कुछ नहीं है, जिनका मन अभी भी विचारों से रहित है, जो शिष्टाचार से रहित हैं, जिसे वे जल्द से जल्द संवारना चाहते हैं, ठीक उसी तरह जैसे वे लैटिन क्वार्टर में अपने छोटे से अटारी के लिए फर्नीचर खरीदते हैं, उन लोगों से जो कुछ भी उन्होंने देखा है, उसकी नकल करते हुए जो पहले से ही उस उपयोगी और गंभीर पेशे में 'सफल' हो चुके हैं जिसमें वे भी खुद को स्थापित करना और प्रसिद्ध होना चाहते हैं; उनमें उनकी विशेष रुचि, अनजाने में विरासत में मिली है जैसे चित्रकारी, संगीत के प्रति कमजोरी, दृष्टि की कमजोरी, शायद एकमात्र जीवित और निरंकुश मौलिकता है - जो कुछ शामों को उन्हें उन लोगों के साथ अपनी करियर के लिए फायदेमंद किसी बैठक को छोड़ने के लिए मजबूर करती है, जिनके बोलने, सोचने, कपड़े पहनने, बाल संवारने के तौर-तरीकों को उन्होंने अन्य मामलों में अपना लिया है। अपने इलाके में, जहाँ वे आम तौर पर केवल अपने साथी छात्रों, शिक्षकों या किसी सफल साथी प्रांतीय व्यक्ति के साथ ही मिलते-जुलते हैं जो उनकी मदद कर सकता है, उन्होंने जल्दी ही ऐसे अन्य युवाओं को खोज लिया है जिन्हें उनकी समान विशेष रुचि आकर्षित करती है, जैसे किसी छोटे शहर में सहायक शिक्षक और वकील के बीच घनिष्ठता पनपती है, जो दोनों ही चैम्बर संगीत या मध्ययुगीन हाथीदांत की कलाकृतियों में रुचि रखते हैं; अपनी रुचियों के प्रति उसी व्यावहारिक प्रवृत्ति, उसी पेशेवर भावना को लागू करते हुए जो उन्हें उनके करियर में मार्गदर्शन करती है, वे इन युवाओं से उन सभाओं में मिलते हैं जिनमें किसी भी बाहरी व्यक्ति को प्रवेश की अनुमति नहीं होती, ठीक वैसे ही जैसे पुराने स्नफ़बॉक्स, जापानी प्रिंट या दुर्लभ फूलों के संग्रहकर्ताओं को इकट्ठा करने वाली सभाओं में होता है, और जहाँ जानकारी प्राप्त करने के आनंद, आदान-प्रदान के व्यावहारिक मूल्य और प्रतिस्पर्धा के भय के साथ-साथ, डाक टिकटों की नीलामी में विशेषज्ञों का घनिष्ठ सहयोग और संग्रहकर्ताओं की भयंकर प्रतिद्वंद्विता एक साथ व्याप्त होती है। जिस कैफे में उनकी मेज है, वहां किसी को भी नहीं पता

कि यह किसका जमावड़ा है, चाहे वह मछली पकड़ने वाले क्लब का हो, संपादकीय टीम का हो, या 'इन्द्रे के बेटों' का। उनका पहनावा इतना सलीकेदार है, उनका व्यवहार इतना ठंडा और संयमित है, और वे इतनी विनम्रता से फैशनपरस्त नौजवानों, उन नौजवान 'शेरों' की ओर केवल दबी निगाहों से देखते हैं, जो कुछ ही दूरी पर अपनी प्रेमिकाओं के बारे में शोर मचा रहे हैं। इनमें से जो लोग बिना आंखें उठाए उनकी प्रशंसा कर रहे हैं, उन्हें बीस साल बाद ही पता चलेगा, जब वे खुद अकादमी में प्रवेश की तैयारी में होंगे, और बाकी लोग क्लब की खिड़कियों में मध्यम आयु वर्ग के सज्जन होंगे, कि उनमें से सबसे आकर्षक, अब हट्टा-कट्टा और झुर्रियों वाला चार्लस, वास्तव में उन्हीं जैसा था, लेकिन अलग तरह से, एक दूसरी दुनिया में, अन्य बाहरी प्रतीकों के नीचे, विदेशी लेबलों के साथ, जिसकी विचित्रता ने उन्हें भ्रम में डाल दिया। लेकिन ये समूह उन्नति के विभिन्न चरणों में हैं; और, जिस प्रकार 'वामपंथी संघ' 'समाजवादी संघ' से या किसी मेंडेलसोहनियन संगीत क्लब और स्कोला कैंटोरम से भिन्न होता है, उसी प्रकार कुछ शामों को, एक अलग मेज पर, कुछ चरमपंथी होते हैं जो अपनी कलाई के नीचे से कंगन को नीचे खिसकने देते हैं, कभी-कभी कॉलर के गैप में हार को चमकने देते हैं, जो अपनी लगातार घूरती निगाहों, मीठी आवाज़ों, हँसी और आपसी स्पर्श से छात्रों के एक समूह को जल्दबाजी में वहाँ से जाने के लिए मजबूर कर देते हैं, और उन्हें एक ऐसे वेटर द्वारा शिष्टता से सेवा दी जाती है जिसके नीचे आक्रोश उबल रहा होता है, जो उन शामों की तरह जब उसे ड्रेफस समर्थकों की सेवा करनी पड़ती है, अगर उसे उनकी बख्शीश जेब में डालने में लाभ न होता तो पुलिस को बुलाने में आनंद पाता।

इन्हीं पेशेवर संगठनों के माध्यम से मन एकांतवासियों की रुचियों की तुलना करता है, और एक तरह से मतभेदों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किए बिना, क्योंकि यह केवल उन एकांतवासियों की नकल कर रहा होता है जो यह मानते हैं कि संगठित बुराई से सबसे अधिक भिन्न कुछ भी नहीं है, सिवाय उस चीज़ के जो उन्हें एक गलत समझी गई प्रेम लगती है। फिर भी, कुछ हद तक यह तुलना कठिन होती है, क्योंकि ये विभिन्न वर्ग, विभिन्न शारीरिक प्रकारों की तरह ही, किसी रोग संबंधी या मात्र सामाजिक विकास के क्रमिक चरणों के अनुरूप होते हैं। और वास्तव में, ऐसा बहुत कम ही होता है कि एक दिन एकांतवासी किसी न किसी ऐसे संगठन में शामिल न हो जाएं, कभी-कभी साधारण थकान के कारण, या सुविधा के लिए (ठीक वैसे ही

जैसे ऐसे नवाचारों का सबसे अधिक विरोध करने वाले लोग अंततः टेलीफोन लगवा लेते हैं, इना परिवार को अपनी पार्टियों में आमंत्रित करते हैं, या पोटिन से संपर्क करते हैं)। वहाँ उनका आम तौर पर बहुत दोस्ताना स्वागत नहीं होता, क्योंकि उनके अपेक्षाकृत पवित्र जीवन में अनुभव की कमी और सपनों में डूबे रहने के कारण, उनमें स्त्रीत्व के वे विशेष निशान और भी गहरे अंकित हो गए हैं जिन्हें पेशेवर मिटाने की कोशिश करते रहे हैं। और यह स्वीकार करना होगा कि इन नवागंतुकों में से कुछ में, स्त्री न केवल आंतरिक रूप से पुरुष से जुड़ी होती है, बल्कि भयावह रूप से दिखाई भी देती है; उन्हें देखकर ऐसा लगता है जैसे वे हिस्टीरिकल ऐंठन से व्याकुल हैं, एक तीखी हंसी से उनके घुटने और हाथ कांप रहे हैं; वे आम पुरुषों से उन बंदरों की तरह दिखते हैं जिनकी उदास, काली आँखें और पकड़ने वाले पैर होते हैं और जो डिनर जैकेट और काली टाई पहनते हैं; इसलिए इन नए रंगरूटों को, जो स्वयं कम पवित्र हैं, समझौतावादी साथी माना जाता है, और उनके प्रवेश में कठिनाइयाँ होती हैं। फिर भी, उन्हें स्वीकार कर लिया जाता है, और वे उन सुविधाओं से लाभान्वित होते हैं जिनके द्वारा वाणिज्य और बड़े-बड़े उपक्रमों ने व्यक्तियों के जीवन को बदल दिया है, और उनकी पहुँच में उन वस्तुओं को ला दिया है जो अब तक प्राप्त करना बहुत महंगा और वास्तव में खोजना मुश्किल था, जो अब उन्हें उन चीजों की बहुतायत में डुबो देती हैं जिन्हें वे घनी भीड़ के बीच भी स्वयं कभी नहीं खोज पाए थे। लेकिन, इन असंख्य अवसरों के बावजूद, सामाजिक बंधन का बोझ अभी भी कुछ लोगों के लिए बहुत भारी है, मुख्य रूप से उन लोगों में से जिन्होंने आत्म-संयम का अभ्यास नहीं किया है, और जो अभी भी प्रेम को उसकी वास्तविकता से कहीं अधिक दुर्लभ मानते हैं। आइए, उन लोगों को फिलहाल विचार से बाहर रखें जो अपनी असाधारण प्रवृत्तियों के कारण स्वयं को दूसरे लिंग से श्रेष्ठ समझते हैं, महिलाओं को नीचा देखते हैं, समलैंगिकता को महान प्रतिभाओं और इतिहास के गौरवशाली युगों का विशेषाधिकार मानते हैं, और जब वे अपनी पसंद दूसरों तक पहुँचाने का प्रयास करते हैं, तो उन लोगों के पास जाने की बजाय जो उन्हें इसके प्रति झुकाव रखते हुए प्रतीत होते हैं (जैसे मॉर्फिनोमेनिया का शिकार व्यक्ति मॉर्फिया के साथ करता है), बल्कि उन लोगों के पास जाते हैं जो उन्हें इसके योग्य प्रतीत होते हैं, धर्म प्रचार के उत्साह से, ठीक वैसे ही जैसे अन्य लोग ज़ायोनिज़्म, सैन्य सेवा के प्रति विवेकपूर्ण आपत्ति, सेंट-साइमनिज़्म, शाकाहार या अराजकता

का प्रचार करते हैं। यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है, जिसे यदि हम सुबह बिस्तर पर ही घेर लें, तो वह हमारे सामने एक अद्भुत स्त्री रूप प्रस्तुत करेगा, जिसकी अभिव्यक्ति इतनी व्यापक और समग्र रूप से लिंग का प्रतीक है; उसके बाल भी इसकी पुष्टि करते हैं, उनकी लहर इतनी स्त्रीत्वपूर्ण है; बिना कंघी किए, उसके लंबे बाल इतने स्वाभाविक रूप से गालों पर लहराते हैं कि कोई भी आश्चर्यचकित हो जाता है कि कैसे उस युवती, उस लड़की, उस गलातिया जैसी, जो अभी-अभी जीवन में आई है, उस पुरुष शरीर के अचेतन पिंड में, जिसमें वह कैद है, उसने बिना किसी के निर्देश के, अपनी कैद की दीवार के सबसे संकरे छिद्रों का उपयोग करके अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक चीज़ें पा ली हैं। निस्संदेह, इस आकर्षक सिर वाले युवक का यह कहना नहीं होगा: "मैं एक स्त्री हूँ।" भले ही—अनगिनत संभावित कारणों में से किसी एक कारण से—वह किसी स्त्री के साथ रहता हो, वह उससे यह इनकार कर सकता है कि वह स्वयं एक स्त्री है, उससे कसम खा सकता है कि उसने कभी पुरुषों के साथ यौन संबंध नहीं बनाए हैं। लेकिन उसे उसे उसी रूप में देखने दें जैसा हमने अभी दिखाया है, बिस्तर पर लेटा हुआ, पायजामा पहने, उसकी बाहें नंगी, उसका गला और गर्दन भी उसके बालों के घनेपन के नीचे नंगी। पायजामा जैकेट एक स्त्री की पोशाक बन जाती है, और उसका सिर एक सुंदर स्पेनिश लड़की का। मालकिन इन रहस्यों को सुनकर चकित रह जाती है, जो किसी भी कही हुई बात या किसी भी क्रिया से कहीं अधिक सच्चे हैं। उसके कर्म, यदि अभी तक नहीं हुए हैं, तो आगे चलकर निश्चित रूप से इनकी पुष्टि करेंगे, क्योंकि प्रत्येक प्राणी अपनी इच्छा का अनुसरण करता है, और यदि वह प्राणी बहुत दुष्ट नहीं है, तो वह अपनी इच्छा के पूरक लिंग में ही अपनी इच्छा की खोज करेगा। और व्यभिचारी के लिए, दुष्टता तब शुरू नहीं होती जब वह संबंध बनाता है (क्योंकि इसके कई कारण हो सकते हैं), बल्कि तब शुरू होती है जब वह स्त्रियों के साथ आनंद लेता है। जिस युवक का हम चित्रण करने का प्रयास कर रहे हैं, वह इतनी स्पष्ट रूप से स्त्री था कि जो स्त्रियाँ उसे लालसा भरी निगाहों से देखती थीं, वे (यदि उनमें विशेष रुचि न हो) उसी निराशा का शिकार होती थीं, जैसी शेक्सपियर के नाटकों में वे स्त्रियाँ होती हैं जो एक युवक के वेश में लड़की के झांसे में आ जाती हैं। यह धोखा दोनों ओर से है, व्यभिचारी स्वयं इससे अवगत है, वह उस निराशा का अनुमान लगाता है जो मुखौटा उतरने पर स्त्री को होगी, और वह समझता है कि लिंग के बारे में यह गलती किस हद तक

काव्यात्मक कल्पनाओं का स्रोत है। इसके अलावा, अपनी सख्त मिजाज प्रेमिका से भी वह यह बात छुपाने में नाकाम रहता है (अगर वह खुद गोमोराह की निवासी न हो): "मैं एक स्त्री हूँ!" जबकि उसके भीतर की अवचेतन लेकिन प्रत्यक्ष स्त्री हर समय कितनी चालाकी, कितनी फुर्ती और कितनी हठधर्मिता से, जैसे कोई लता चढ़ती है, पुरुष अंग की तलाश में रहती है। सफेद तकिए पर उसके घुंघराले बालों को देखकर ही हम समझ सकते हैं कि अगर शाम को यह युवक अपने रखवालों की पकड़ से बच निकलता है, चाहे वे उसे रोकने की कितनी भी कोशिश करें, तो वह स्त्रियों की तलाश में नहीं जाएगा। उसकी प्रेमिका उसे डांट सकती है, उसे कैद कर सकती है; अगले दिन, वह पुरुष-स्त्री किसी न किसी तरह किसी पुरुष से जुड़ ही जाएगा, जैसे कनखजूरा अपनी बेलें वहाँ फैलाता है जहाँ उसे कोई सुविधाजनक खंभा या रेक मिलता है। जब हम इस व्यक्ति के चेहरे में ऐसी कोमलता, ऐसा आकर्षण और सहज सौहार्द देखते हैं जो हमारे दिलों को छू लेता है, जो पुरुषों में नहीं पाया जाता, तो फिर यह जानकर हमें निराशा क्यों होती है कि यह युवक मुक्केबाजों के पीछे भागता है? ये एक ही वास्तविकता के अलग-अलग पहलू हैं। और वास्तव में, जो बात हमें विचलित करती है, वह सबसे मार्मिक है, कोमलता की किसी भी बारीकी से कहीं अधिक मार्मिक, क्योंकि यह प्रकृति की ओर से एक प्रशंसनीय, यद्यपि अचेतन प्रयास को दर्शाती है: यौन छल के बावजूद, स्वयं द्वारा उसके लिंग की पहचान स्पष्ट हो जाती है, स्वयं से उस ओर भागने का अनकहा प्रयास जिसे समाज की प्रारंभिक त्रुटि ने उससे अलग कर दिया है। कुछ लोग, जो निस्संदेह बचपन में सबसे संकोची रहे हैं, उन्हें प्राप्त होने वाले सुख के भौतिक स्वरूप से शायद ही कोई मतलब होता है, बशर्ते कि वे उसे एक पुरुष चेहरे से जोड़ सकें। जबकि अन्य, जिनकी कामुकता निस्संदेह अधिक तीव्र होती है, अपने भौतिक सुख को कुछ निश्चित सीमाओं के भीतर ही सीमित रखते हैं। ये लोग शायद शनि के प्रभाव में उतने एकाकी नहीं रहते, क्योंकि इनके लिए स्त्रियाँ पूरी तरह वर्जित नहीं होतीं, जैसा कि पहले प्रकार के लोगों के लिए होता है, जिनकी दृष्टि में स्त्रियों का अस्तित्व बातचीत, इश्कबाज़ी और हृदय के नहीं बल्कि मस्तिष्क के प्रेम के अलावा कुछ नहीं होता। लेकिन दूसरे प्रकार के लोग उन स्त्रियों की तलाश करते हैं जो दूसरी स्त्रियों से प्रेम करती हैं; जो उनके लिए एक युवक ला सकती हैं, और उसकी संगति में मिलने वाले आनंद को बढ़ा सकती हैं; इससे भी बेहतर, वे उसी तरह उन स्त्रियों के साथ भी वही

आनंद प्राप्त कर सकती हैं जो एक पुरुष के साथ। इसी कारण पहले प्रकार के लोगों से प्रेम करने वालों में ईर्ष्या उत्पन्न होती है, केवल उस आनंद से जो वे किसी पुरुष के साथ प्राप्त कर रही होती हैं, जो उनके प्रेमियों को विश्वासघात प्रतीत होता है, क्योंकि ये स्त्रियों के प्रेम में भागीदार नहीं होतीं, बल्कि इसे केवल एक आदत के रूप में अपनाती हैं, और भविष्य में विवाह की संभावना को सुरक्षित रखने के लिए, वे इस आनंद को इतना कम महत्व देती हैं कि उन्हें इस बात से कोई कष्ट नहीं होता कि जिसे वे प्यार करती हैं वह उस आनंद का अनुभव कर रहा है; जबकि दूसरे प्रकार के लोग अक्सर स्त्रियों के साथ अपने प्रेम-संबंधों से ईर्ष्या उत्पन्न करते हैं। क्योंकि, उसके साथ अपने संबंधों में, वे अपने ही लिंग से प्रेम करने वाली स्त्री के लिए एक अन्य स्त्री की भूमिका निभाते हैं, और वह उन्हें लगभग वही प्रदान करती है जो उन्हें अन्य पुरुषों में मिलता है, जिससे ईर्ष्यालु मित्र इस भावना से ग्रस्त हो जाता है कि जिसे वह प्यार करता है वह उस स्त्री से जकड़ा हुआ है जो उसके लिए लगभग एक पुरुष है, और साथ ही साथ महसूस करता है कि उसकी प्रेमिका उससे लगभग दूर जा रही है क्योंकि इन स्त्रियों के लिए वह कुछ ऐसा है जिसकी कल्पना प्रेमी स्वयं नहीं कर सकता, एक प्रकार की स्त्री। हमें यहां उन युवा मूर्खों पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है जो एक प्रकार के अवरुद्ध विकास के कारण, अपने मित्रों को चिढ़ाने या अपने परिवारों को चौंकाने के लिए, एक प्रकार के उन्माद में महिलाओं के वस्त्रों से मिलते-जुलते कपड़े चुनते हैं, अपने होंठों को लाल करते हैं और अपनी पलकों को काला करते हैं; हम इन्हें छोड़ सकते हैं, क्योंकि ये वे लोग हैं जिनसे हम बाद में मिलेंगे, जब वे अपने दिखावे की बेहद क्रूर सज़ा भुगत चुके होंगे, और अपना शेष जीवन कठोर प्रोटेस्टेंट व्यवहार से उस अन्याय को सुधारने के व्यर्थ प्रयासों में बिता देंगे जो उन्होंने स्वयं के साथ किया था, जब वे उसी शैतान के वश में आ गए थे जो फाउबर्ग सेंट-जर्मेन की युवतियों को अपमानजनक जीवन जीने, हर परंपरा का उल्लंघन करने, अपने रिश्तेदारों की विनतियों का उपहास करने के लिए उकसाता है, जब तक कि वे उस ढलान पर फिर से चढ़ने का दृढ़ प्रयास नहीं करते जिस पर फिसलना उन्हें बहुत मनोरंजक लगता था, जिस पर फिसलना उन्हें मनोरंजक लगा था, या यूँ कहें कि वे खुद को फिसलने से रोक नहीं पाए थे। अंत में, गोमोराह के साथ समझौता करने वाले पुरुषों के बारे में हम बाद के खंड में चर्चा करेंगे। हम उनके बारे में तब बात करेंगे जब एम. डी चार्लस उनसे परिचित होंगे। आइए,

फिलहाल उन सभी को छोड़ दें, जो बारी-बारी से सामने आएंगे, और इस विषय के पहले परिचय को समाप्त करने के लिए, आइए केवल उन्हीं लोगों के बारे में कुछ कहें जिनका हमने अभी ज़िक्र करना शुरू किया है, यानी एकाकी वर्ग। अपने इस दोष को उसकी असलियत से कहीं ज़्यादा असाधारण मानकर, वे उस दिन से एकांत में चले गए हैं जिस दिन उन्होंने इसे खोजा था, इसे लंबे समय तक अनजाने में अपने भीतर दबाए रखने के बाद, कुछ अन्य लोगों की तुलना में केवल अधिक समय तक। क्योंकि पहली नज़र में कोई नहीं बता सकता कि वह समलैंगिक है, कवि है, घमंडी है या बदमाश है। जो लड़का कामुक कविताएँ पढ़ रहा हो या अश्लील तस्वीरें देख रहा हो, अगर वह फिर अपने सहपाठी से सट जाए, तो वह खुद को केवल एक स्त्री के लिए समान इच्छा में उसके साथ संवाद करते हुए ही समझता है। वह कैसे सोच सकता है कि वह दूसरों से अलग है जब वह मैडम के बारे में पढ़कर जो महसूस करता है, उसके सार को पहचान लेता है? डी लाफायेट, रेसीन, बॉडेलेयर, वाल्टर स्कॉट, उस समय जब वह स्वयं को देखने में इतना कम सक्षम होता है कि वह इस बात पर ध्यान नहीं दे पाता कि उसने चित्र में अपने स्वयं के भंडार से क्या जोड़ा है, और यदि भावना समान हो तो वस्तु भिन्न होती है, कि वह रॉब रॉय चाहता है, डायना वर्नन नहीं? कई लोगों के साथ, बुद्धि की स्पष्ट दृष्टि से पहले आने वाली सहज प्रवृत्ति की रक्षात्मक विवेकशीलता के कारण, उनके शयनकक्ष का दर्पण और दीवारें अभिनेत्रियों के रंगीन चित्रों के बादल के नीचे गायब हो जाती हैं; वे इस प्रकार की कविताएँ रचते हैं:

मैं दुनिया में केवल क्लोई से ही प्यार करता हूँ।
क्योंकि क्लोई दिव्य है;
उसके सुनहरे बाल मधुरता से घुंघराले हैं।
मेरा दिल उसके लिए तड़पता है।

क्या इस आधार पर हमें ऐसे जीवन के आरंभिक चरण को एक ऐसा स्वाद दे देना चाहिए जो बाद में उनमें कभी नहीं मिलेगा, ठीक वैसे ही जैसे बच्चों के सिर पर सुनहरे घुंघराले बाल जो आगे चलकर गहरे भूरे रंग के हो जाते हैं? कौन कह सकता है कि महिलाओं की तस्वीरें पाखंड का पहला संकेत नहीं हैं, बल्कि अन्य विकृतियों के प्रति घृणा का पहला संकेत हैं? लेकिन एकांतप्रिय लोग ही वे होते हैं जिन्हें पाखंड सबसे अधिक पीड़ा देता है। संभवतः एक

अलग प्रकार की बस्ती के यहूदियों का उदाहरण भी, उनकी परवरिश के उन पर पड़ने वाले कमजोर प्रभाव या उस चालाकी को समझाने के लिए पर्याप्त नहीं है जिससे वे वापस उसी जीवन की ओर लौट जाते हैं (शायद किसी ऐसी भयावह चीज की ओर नहीं जैसे कि पागलों द्वारा की जाने वाली आत्महत्या, जिसके लिए चाहे कितनी भी सावधानी बरती जाए, वे लौट आते हैं और जिस नदी में वे कूद गए होते हैं, उससे निकाले जाने पर जहर खा लेते हैं, रिवॉल्वर प्राप्त कर लेते हैं, इत्यादि; बल्कि) एक ऐसे जीवन की ओर जिसे दूसरी जाति के लोग न केवल समझते नहीं हैं, कल्पना भी नहीं कर सकते, उसके मूलभूत सुखों से घृणा करते हैं और उसके लगातार खतरे और शाश्वत शर्म के विचार से भयभीत हो जाते हैं। शायद, इनकी एक तस्वीर बनाने के लिए, हमें उन जंगली जानवरों के बारे में नहीं सोचना चाहिए जो कभी पालतू नहीं बनते, उन शेर के बच्चों के बारे में नहीं सोचना चाहिए जिन्हें पालतू कहा जाता है लेकिन दिल से शेर ही होते हैं, या कम से कम उन नीग्रो लोगों के बारे में सोचना चाहिए जिन्हें गोरे आदमी का आरामदायक जीवन बेहद दुखी कर देता है और जो बर्बरता के जोखिम भरे जीवन और उसके अकल्पनीय सुखों को चुनते हैं। जब वह दिन आ जाता है जब उन्हें पता चलता है कि वे दूसरों से और खुद से झूठ बोलने में असमर्थ हैं, तो वे देहात में रहने चले जाते हैं, अपने ही लोगों (जिनकी संख्या वे कम मानते हैं) के समाज से विरक्ति या प्रलोभन के भय से दूर रहते हैं, और शर्म के कारण बाकी मानवता से भी दूर रहते हैं। सच्ची परिपक्वता कभी न पा सकने के कारण, निरंतर उदासी में डूबे हुए, कभी-कभी, किसी रविवार शाम को जब चाँद नहीं होता, वे अकेले टहलने निकल जाते हैं, एक चौराहे तक जहाँ, बिना एक शब्द बोले, उनके बचपन का एक दोस्त उनसे मिलने आ जाता है जो पड़ोस के एक घर में रहता है। और वे फिर से पुराने खेल शुरू कर देते हैं, घास पर, रात में, बिना एक शब्द बोले। सप्ताह के दौरान, वे अपने-अपने घरों में मिलते हैं, बिना किसी बात का जिक्र किए, मानो उन्होंने कुछ किया ही न हो और आगे कुछ करना भी न हो, सिवाय उनके रिश्तों में थोड़ी सी शीतलता, व्यंग्य, चिड़चिड़ापन और द्वेष, कभी-कभी नफरत के। फिर पड़ोसी घोड़े पर सवार होकर एक कठिन यात्रा पर निकल पड़ता है, और खच्चर पर सवार होकर पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ता है, बर्फ में सोता है; उसका मित्र, जो अपनी इस दुर्गुण को स्वभाव की कमजोरी, एकांत और संकोची जीवन से जोड़ता है, यह महसूस करता है कि अब उसके मुक्त मित्र में, जो समुद्र तल

से हजारों फीट ऊपर है, यह दुर्गुण नहीं रह सकता। और, निश्चित रूप से, दूसरा विवाह कर लेता है। फिर भी, त्यागा हुआ मित्र ठीक नहीं होता (उन मामलों के बावजूद जिनमें, जैसा कि हम आगे देखेंगे, यह दुर्गुण ठीक हो सकता है)। वह हर सुबह स्वयं रसोई में जाकर दूधवाले के लड़के से दूध लेने पर अड़ा रहता है, और उन शामों में जब उसकी इच्छाएं अत्यधिक प्रबल होती हैं, तो वह किसी शराबी को सही राह दिखाने या किसी अंधे व्यक्ति के कपड़े ठीक करने के लिए भी हर संभव प्रयास करता है। निस्संदेह, कुछ दुर्गुणों का जीवन कभी-कभी बदलता हुआ प्रतीत होता है, उनका दुर्गुण (जैसा कि इसे कहा जाता है) अब उनकी आदतों में स्पष्ट नहीं होता; लेकिन कुछ भी खोता नहीं; खोया हुआ रत्न फिर से मिल जाता है; जब किसी बीमार व्यक्ति के मूत्र की मात्रा कम हो जाती है, तो इसका कारण यह होता है कि उसे अधिक पसीना आ रहा है, लेकिन मल-मूत्र त्याग तो होना ही है। एक दिन इस समलैंगिक को अपने एक युवा चचेरे भाई की मृत्यु की खबर मिलती है, और उसके असहनीय शोक से हमें पता चलता है कि उसकी इच्छाएँ एक प्रकार से इसी प्रेम की ओर स्थानांतरित हो गई हैं, जो संभवतः पवित्र है और अधिकार प्राप्त करने की अपेक्षा सम्मान बनाए रखने के उद्देश्य से रची गई है, जैसे किसी बजट में, कुल राशि में बिना किसी परिवर्तन के, कुछ व्यय को किसी अन्य मद में डाल दिया जाता है। जैसे बीमार व्यक्तियों में पित्ती के अचानक हमले से उनकी पुरानी बीमारियाँ अस्थायी रूप से गायब हो जाती हैं, उसी प्रकार एक युवा रिश्तेदार के प्रति यह शुद्ध प्रेम, विपरीत रूप से, क्षण भर के लिए उन आदतों की जगह ले लेता है जो किसी न किसी दिन, ठीक हुई बीमारी की जगह फिर से ले लेंगी।

इसी बीच हमारे एकांतवासी की विवाहित पड़ोसी लौट आई है; जब उनके मित्र ने उन्हें रात के खाने पर आमंत्रित किया, तो युवा दुल्हन की सुंदरता और उसके पति के स्नेहपूर्ण व्यवहार को देखकर उसे अपने अतीत पर शर्मिंदगी महसूस हुई। पहले से ही एक दिलचस्प स्थिति में फंसी दुल्हन को अपने पति को छोड़कर जल्दी घर लौटना पड़ा; जब उसके भी घर लौटने का समय आया, तो उसने अपने मेज़बान से रास्ते में कुछ दूर तक साथ चलने का अनुरोध किया; पहले तो उसके मन में कोई संदेह नहीं आया, लेकिन चौराहे पर पहुँचने पर उसने खुद को घास पर गिरा हुआ पाया, बिना कुछ कहे, उस पर्वतीय व्यक्ति द्वारा जो जल्द ही पिता बनने वाला था। और उनकी मुलाकातें फिर से शुरू हो गईं, और तब तक जारी रहीं जब तक कि

उस युवती की एक चचेरी बहन पास में ही रहने नहीं आ गई, जिसके साथ उसका पति अब अक्सर देखा जाता था। और अगर दो बार ठुकराया गया मित्र शाम को आता है और उससे संपर्क करने की कोशिश करता है, तो वह क्रोधित हो जाता है, और उसे इस बात पर नाराज़गी जताते हुए दूर भगा देता है कि दूसरे ने उस घृणा का अनुमान लगाने की समझदारी नहीं दिखाई जो वह आगे उत्पन्न करेगा। एक बार, उसके बेवफा दोस्त द्वारा भेजा गया एक अजनबी प्रकट होता है; लेकिन उस समय व्यस्त होने के कारण, परित्यक्त व्यक्ति उसे देख नहीं पाता है, और बाद में ही उसे पता चलता है कि उसका आगंतुक किस उद्देश्य से आया था।

फिर वह अकेला व्यक्ति उदास होकर एकांतवास में डूब जाता है। उसके पास मनोरंजन का एकमात्र साधन पास के ही एक शराबखाने में जाकर वहाँ के किसी रेलवे कर्मचारी से कुछ न कुछ जानकारी माँगना होता है। लेकिन उस रेलवे कर्मचारी को पदोन्नति मिल गई है और उसका तबादला देश के दूसरे छोर पर हो गया है; एकाकी व्यक्ति अब जाकर उससे ट्रेनों का समय या प्रथम श्रेणी के टिकट की कीमत नहीं पूछ पाएगा, और सपने देखने के लिए सोने से पहले, ग्रिसेल्डा की तरह, अपने टावर में, समुद्र तट पर मंडराता रहता है, एक अजीब एंड्रोमेडा जिसे कोई आर्गोनॉट मुक्त करने नहीं आएगा, एक बांझ मेडुसा जिसे रेत पर मरना ही होगा, या फिर वह अपनी ट्रेन के चलने तक प्लेटफार्म पर निष्क्रिय खड़ा रहता है, यात्रियों की भीड़ पर एक ऐसी निगाह डालता है जो दूसरी जाति के लोगों को उदासीन, तिरस्कारपूर्ण या विचलित प्रतीत होगी, लेकिन, उस चमकदार चमक की तरह जिससे कुछ कीड़े अपनी प्रजाति के अन्य लोगों को आकर्षित करने के लिए खुद को सजाते हैं, या उस अमृत की तरह जो कुछ फूल उन कीड़ों को आकर्षित करने के लिए देते हैं जो उन्हें निषेचित करेंगे, उस लगभग अकल्पनीय आनंद के भागीदार को धोखा नहीं देगी जो बहुत ही विलक्षण है, जिसे परिभाषित करना बहुत कठिन है, जो उसे दिया जाता है, वह सहकर्मी जिसके साथ हमारा विशेषज्ञ आधी भूली हुई भाषा में बातचीत कर सकता है; अंत में, ज़्यादा से ज़्यादा, मंच पर बैठा कोई आवारा, फिजूलखर्ची करने वाला व्यक्ति दिलचस्पी दिखाने का नाटक करेगा, लेकिन सिर्फ़ पैसों के लिए, ठीक वैसे ही जैसे कॉलेज डी फ़्रांस में, उस कमरे में जहाँ संस्कृत के प्रोफ़ेसर बिना श्रोताओं के व्याख्यान देते हैं, वे लोग सिर्फ़ इसलिए उनका कोर्स अटेंड करते हैं क्योंकि कमरा

गर्म रहता है। मेडुसा! ऑर्किड! जब मैं सिर्फ़ अपनी अंतरात्मा की सुनता था, तो बालबेक में मेडुसा मुझे घृणास्पद लगती थी; लेकिन अगर मेरे पास मिशेलेट की तरह, प्राकृतिक इतिहास और सौंदर्यशास्त्र के नज़रिए से उसे देखने की दृष्टि होती, तो मुझे नीली लौ का एक सुंदर चक्र दिखाई देता। क्या वे, अपनी पारदर्शी मखमली पंखुड़ियों के साथ, मानो समुद्र के बैंगनी ऑर्किड नहीं हैं? पशु और वनस्पति जगत के अनेक प्राणियों की तरह, उस पौधे की तरह जो वेनिला पैदा करता है, लेकिन जिसकी संरचना में नर अंग मादा अंग से एक विभाजन द्वारा अलग होता है, वह तब तक बांझ रहता है जब तक कि हमिंगबर्ड या कुछ छोटी मधुमक्खियाँ पराग को एक से दूसरे तक न पहुँचाएँ, या मनुष्य कृत्रिम साधनों से उनका निषेचन न करे, एम. डी चार्लस (और यहाँ निषेचन शब्द को नैतिक अर्थ में समझा जाना चाहिए, क्योंकि शारीरिक अर्थ में नर का नर से मिलन बांझ होता है और होना ही चाहिए, लेकिन यह कोई छोटी बात नहीं है कि एक व्यक्ति उस एकमात्र आनंद का अनुभव कर सकता है जिसका वह आनंद लेने में सक्षम है, और यह कि प्रत्येक 'इस धरती पर प्राणी' किसी दूसरे को 'अपना संगीत, या अपनी सुगंध या अपनी लौ' प्रदान कर सकता है), एम. डी चार्लस उन असाधारण पुरुषों में से एक थे, क्योंकि चाहे वे कितने भी हों, दूसरों में इतनी आसानी से मिलने वाली उनकी यौन आवश्यकताओं की संतुष्टि बहुत सी परिस्थितियों के संयोग पर निर्भर करती है, और ऐसी परिस्थितियाँ जिन्हें सुनिश्चित करना बहुत कठिन है। एम. डी. चार्लस जैसे पुरुषों के लिए (इस कहानी के दौरान सामने आने वाले उन समझौतों को छोड़ दें, जिनका पाठक ने पहले ही अनुमान लगा लिया होगा, जो आंशिक स्वीकृति के लिए विवश आनंद की आवश्यकता से प्रेरित होते हैं), पारस्परिक प्रेम, आम आदमी के सामने आने वाली लगभग दुर्गम कठिनाइयों के अलावा, कुछ ऐसी असाधारण कठिनाइयाँ भी पैदा करता है कि जो सबके लिए हमेशा अत्यंत दुर्लभ होता है, उनके मामले में लगभग असंभव हो जाता है, और यदि उनके जीवन में कोई ऐसा संयोग घटित हो जो वास्तव में सौभाग्यशाली हो, या जिसे प्रकृति उनके लिए सौभाग्यशाली प्रतीत कराए, तो उनका सौभाग्य, सामान्य प्रेमी के सौभाग्य से कहीं अधिक, असाधारण, चयनात्मक और अत्यंत आवश्यक होता है। कैपुलेट और मोंटेग्यू परिवारों का झगड़ा उन तमाम बाधाओं के सामने कुछ भी नहीं था जिन्हें पार करना पड़ा होगा, प्रकृति द्वारा सहन की जाने वाली विशेष बाधाओं के सामने, उन असाधारण खतरों के सामने जो प्रेम को

जन्म देते हैं, जैसे कि एक सेवानिवृत्त दर्जी, जो अपने कार्यालय के लिए गंभीरता से रवाना होने वाला था, पचास साल के एक हट्टे-कट्टे आदमी के सामने परमानंद से कांप रहा है; रोमियो और जूलियट को यह मानने का पूरा अधिकार है कि उनका प्रेम क्षणिक सनक नहीं बल्कि एक सच्ची नियति है, जो उनके स्वभावों के सामंजस्य से तैयार हुई है, और न केवल उनके अपने व्यक्तिगत स्वभावों से बल्कि उनके पूर्वजों के स्वभावों से, उनकी दूरगामी वंशानुगत कड़ियों से, इतनी अधिक कि उनके साथ जुड़ा हुआ साथी प्राणी उनके जन्म से पहले से ही उनका है, जिसने उन्हें उस शक्ति से आकर्षित किया है जो उन दुनियाओं को नियंत्रित करती है जिन पर हमने अपना पिछला जीवन बिताया है। एम. डी चार्लस ने मेरा ध्यान इस बात से भटका दिया था कि क्या मधुमक्खी ऑर्किड के लिए वह पराग ला रही थी जिसका वह इतने लंबे समय से इंतज़ार कर रही थी, और जिसे पाने की कोई संभावना नहीं थी सिवाय किसी ऐसी असंभावित घटना के जिसे चमत्कार कहा जा सकता है। लेकिन जो मैंने अभी देखा वह भी एक चमत्कार ही था, लगभग उसी स्तर का और उतना ही अद्‌भुत। जैसे ही मैंने उनके मिलन को इस नज़रिए से देखा, मुझे उसमें सब कुछ सुंदरता से परिपूर्ण प्रतीत हुआ। प्रकृति ने फूलों के परागण को सुनिश्चित करने के लिए कीड़ों को विवश करने हेतु जो असाधारण युक्तियाँ ईजाद की हैं, वे मुझे उतनी ही अद्‌भुत लगीं जितनी कि बूढ़े हो रहे अकशेरुकी जीवों के लिए प्रेम के सुखों की गारंटी देने वाले अकशेरुकी जीवों का अस्तित्व: ऐसे जीव जो सभी अन्य जीवों से आकर्षित नहीं होते, बल्कि एक ऐसी समरूप और सामंजस्यपूर्ण प्रक्रिया से आकर्षित होते हैं जो लिथ्रम जैसे विषम शैली वाले त्रिरूपी फूलों के परागण से पहले होने वाली समरूपता और सामंजस्य से प्रेरित होती है। सैलिसोरिया—केवल अपने से काफी अधिक उम्र के पुरुषों द्वारा। इस उप-किस्म का एक उदाहरण जुपियन ने मुझे अभी दिया था, जो कुछ अन्य उदाहरणों की तुलना में कम प्रभावशाली था, जिन्हें मानव वनस्पति विज्ञान का प्रत्येक संग्रहकर्ता, प्रत्येक नैतिक वनस्पति विज्ञानी उनकी दुर्लभता के बावजूद देख सकता है, और जो एक नाजुक युवक को एक हट्टे-कट्टे और तोंद वाले पचास वर्षीय व्यक्ति के प्रस्ताव की प्रतीक्षा करते हुए प्रस्तुत करता है, जो अन्य युवकों के प्रति उतना ही उदासीन रहता है जितना कि छोटे स्टाइल वाले प्रिमूला वेरिस के उभयलिंगी फूल, जब तक कि वे केवल छोटे स्टाइल वाले अन्य प्रिमूला वेरिस द्वारा ही निषेचित होते हैं, जबकि वे लंबे स्टाइल वाले प्रिमूला वेरिस के

पराग का खुशी से स्वागत करते हैं। जहाँ तक एम. डी चार्लस की इस घटना में भूमिका का सवाल है, मैंने बाद में देखा कि उनके लिए विभिन्न प्रकार के संयोग थे, जिनमें से कुछ, अपनी बहुलता, लगभग अदृश्य गति और सबसे बढ़कर दोनों कर्ताओं के बीच संपर्क की अनुपस्थिति के कारण, उन फूलों की याद दिलाते हैं जो बगीचे में एक पड़ोसी फूल के पराग द्वारा निषेचित होते हैं, जिसे वे कभी स्पर्श नहीं कर सकते। वास्तव में कुछ ऐसे लोग थे जिन्हें अपने घर बुलाना और एक-दो घंटे तक अपनी बातों में बांधे रखना ही उनके लिए काफी था, ताकि किसी पूर्व मुलाकात से उत्पन्न उनकी इच्छा शांत हो सके। शब्दों के सरल प्रयोग से ही यह कार्य हो जाता था, ठीक वैसे ही सरलता से जैसे किसी जटिल वातावरण में हो सकता है। कभी-कभी, जैसा कि निस्संदेह मेरे साथ उस शाम हुआ था जब मुझे गुएरमांटेस के रात्रिभोज के बाद उन्होंने बुलाया था, बैरन द्वारा अपने आगंतुक के चेहरे पर किए गए एक जोरदार उद्गार से राहत मिलती थी, ठीक वैसे ही जैसे कुछ फूल, जिनमें एक छिपा हुआ स्रोत होता है, अनजाने में सहयोग कर रहे और विचलित कीट को बिखेर देते हैं। एम. डी चार्लस, पराजित से विजयी बनकर, अपनी बेचैनी से मुक्त और शांत महसूस करते हुए, उस आगंतुक को विदा कर देते थे जो उन्हें अब वांछनीय नहीं लगता था। अंततः, चूंकि व्युत्क्रमण स्वयं इस तथ्य से उत्पन्न होता है कि व्युत्क्रमण स्त्री के इतने निकट होता है कि उसके साथ कोई प्रभावी संबंध स्थापित करने में सक्षम नहीं होता, इसलिए यह एक उच्च नियम के अंतर्गत आता है जो यह निर्धारित करता है कि इतने सारे उभयलिंगी फूल बांझ रहेंगे, अर्थात् स्व-निषेचन की बांझपन का नियम। यह सत्य है कि व्युत्क्रमण, किसी पुरुष की खोज में, अक्सर अपने जैसे ही स्त्रीत्वपूर्ण अन्य व्युत्क्रमणों के साथ संबंध बना लेते हैं। लेकिन इतना ही पर्याप्त है कि वे स्त्रीलिंग नहीं हैं, जिनके भीतर एक भ्रूण होता है जिसका वे किसी उपयोगी उद्देश्य के लिए उपयोग नहीं कर सकते, जैसा कि हम इतने सारे उभयलिंगी फूलों में और यहां तक कि कुछ उभयलिंगी जानवरों में भी पाते हैं, जैसे कि घोंघा, जो स्वयं निषेचित नहीं हो सकता, लेकिन अन्य उभयलिंगियों द्वारा निषेचित हो सकता है। इस संदर्भ में, अकशेरुकी जीवों की वह प्रजाति, जो स्वयं को प्राच्य प्राचीनता या ग्रीस के स्वर्ण युग से जोड़ती है, का पता और भी पीछे, उन प्रयोगात्मक युगों तक लगाया जा सकता है, जिनमें न तो द्विलिंगी पौधे थे और न ही एकलिंगी जीव, उस प्रारंभिक उभयलिंगीता तक, जिसके कुछ मूल तत्व स्त्री के शरीर में और स्त्री के

शरीर में अभी भी मौजूद प्रतीत होते हैं। मुझे जुपियन और एम. डी. चार्लस का वह मूक अभिनय, जो मुझे पहले समझ में नहीं आया, उतना ही विचित्र लगा जितना कि डार्विन के अनुसार, कीड़ों को आकर्षित करने वाले वे मोहक इशारे, न केवल उन मिश्रित फूलों द्वारा, जो अपने शीर्षों की कलियों को इस प्रकार खड़ा करते हैं कि वे अधिक दूरी से दिखाई दें, जैसे कि एक विशेष विषमपरा जो अपने पुंकेसरों को पीछे की ओर मोड़कर कीड़े के लिए रास्ता खोलता है, या उसे स्नान प्रदान करता है, या, एक तात्कालिक उदाहरण के रूप में, फूलों की मधुर सुगंध और चमकीला रंग जो उस समय हमारे आंगन में कीड़ों को आकर्षित कर रहा था। उस दिन से एम. डी चार्लस ने श्रीमती डी विलेपारिसिस से मिलने का समय बदल दिया, ऐसा इसलिए नहीं था कि वे जुपियन से कहीं और अधिक सुविधापूर्वक नहीं मिल सकते थे, बल्कि इसलिए कि दोपहर की धूप और खिलते हुए पौधे, मेरी ही तरह, उनकी स्मृतियों में एक दूसरे से जुड़े हुए थे। इसके अलावा, उन्होंने जुपियन परिवार की सिफारिश केवल श्रीमती डी विलेपारिसिस, डचेस डी गुएरमांटेस और कई अन्य प्रतिष्ठित संरक्षकों को ही नहीं की, जो युवा दर्जी के प्रति और भी अधिक तत्पर हो गए थे, जब उन्होंने देखा कि कुछ महिलाएं जिन्होंने विरोध किया था, या केवल अपनी अधीनता में देरी की थी, उन्हें बैरन द्वारा सबसे कठोर प्रतिशोध का सामना करना पड़ा था, चाहे इसलिए कि वे एक उदाहरण के रूप में काम करें, या इसलिए कि उन्होंने उनके क्रोध को भड़काया था और उनके प्रभुत्व के प्रयास का विरोध किया था; उन्होंने जुपियन की स्थिति को और अधिक आकर्षक बना दिया, यहाँ तक कि उन्होंने उसे स्थायी रूप से अपना सचिव नियुक्त कर लिया और उसे उस स्थिति में स्थापित कर दिया जिसमें हम उसे बाद में देखेंगे। “अहा, अब! जुपियन तो वाकई एक खुशनसीब इंसान है,” फ्रांस्वा ने कहा, जिसकी आदत थी कि वह दूसरों की उदारता को कम या ज्यादा करके बताती थी, चाहे वह उदारता उस पर हो या उस पर। हालांकि, इस मामले में उसे बढ़ा-चढ़ाकर बताने की कोई ज़रूरत नहीं थी, और न ही उसे कोई ईर्ष्या थी, क्योंकि वह जुपियन को सचमुच पसंद करती थी। “ओह, बैरन तो कितना अच्छा आदमी है,” वह आगे बोली, “कितना सभ्य, धार्मिक और शिष्ट व्यक्ति है। अगर मेरी कोई बेटी होती और मैं खुद अमीर होती, तो मैं आँखें बंद करके उसकी शादी बैरन से करवा देती।” “लेकिन, फ्रांस्वा,” मेरी माँ ने धीरे से कहा, “तुम्हारी उस बेटी को तो बहुत सारे पति मिल जाएँगे। यह मत भूलो कि तुमने

उसकी शादी जुपियन से तय कर दी है।" "अरे वाह! ये तो कमाल है," फ्रांस्वा ने जवाब दिया, "एक और ऐसा आदमी है जो किसी भी औरत को खुश कर देगा। अमीर हो या गरीब, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, स्वभाव में कोई अंतर नहीं होता। बैरन और जुपियन, दोनों एक ही तरह के इंसान हैं।"

हालांकि, उस समय मैंने इस पहली अनुभूति के आधार पर, इतने सावधानीपूर्वक चुने गए संयोजन के चयनात्मक स्वरूप को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया था। यह सच है कि एम. डी. चार्लस जैसे प्रत्येक व्यक्ति एक असाधारण प्राणी है, क्योंकि यदि वह जीवन की संभावनाओं के प्रति कोई समझौता नहीं करता, तो वह अनिवार्य रूप से दूसरे वर्ग के पुरुष का प्रेम चाहता है, अर्थात् एक ऐसे पुरुष का जो स्त्रियों से प्रेम करता हो (और फलस्वरूप उससे प्रेम करने में असमर्थ हो); आंगन में मैंने जो कल्पना की थी, उसके विपरीत, जहाँ मैंने जुपियन को एम. डी. चार्लस की ओर इस प्रकार मुड़ते देखा था जैसे कोई ऑर्किड मधुमक्खी को निवेदन करा रहा हो, ये असाधारण प्राणी जिनके प्रति हम सहानुभूति व्यक्त करते हैं, एक विशाल समूह हैं, जैसा कि हम इस कार्य के दौरान देखेंगे, जिसका कारण केवल अंत में ही प्रकट होगा, और वे कम होने के बजाय अधिक होने पर सहानुभूति व्यक्त करते हैं। सदोम के द्वार पर तैनात दो स्वर्गदूतों को यह पता लगाने के लिए भेजा गया था कि क्या उसके निवासियों ने (उत्पत्ति के अनुसार) वास्तव में वे सभी काम किए थे जिनकी रिपोर्ट परमेश्वर के सिंहासन तक पहुँची थी। इस बात पर उनमें से एक को केवल प्रसन्नता ही हो सकती है कि परमेश्वर ने उन्हें अत्यंत अनुचित चुना था, क्योंकि उन्हें यह कार्य सदोमवासी के अलावा किसी और को नहीं सौंपना चाहिए था। ऐसे व्यक्ति के ये बहाने कि "मैं छह बच्चों का पिता हूँ - मैं दो रखैलें रखता हूँ," कभी भी उसे दयापूर्वक अपनी जलती हुई तलवार नीचे करने और दंड कम करने के लिए राजी नहीं कर सकते थे; परमेश्वर ने उत्तर दिया होता: "हाँ, और तुम्हारी पत्नी ईर्ष्या की पीड़ा में जी रही है। लेकिन जब इन स्त्रियों को तुमने गोमोराह से नहीं चुना है, तब भी तुम हेब्रोन में भेड़ों की रखैल के साथ रातें बिताते हो।" और परमेश्वर ने उसे तुरंत उस नगर की ओर वापस भेज दिया होता जिसे आग और गंधक की वर्षा से नष्ट होना था। इसके विपरीत, उन्होंने सभी लज्जित समलैंगिकों को भागने दिया, भले ही वे किसी लड़के को देखते ही लूत की पत्नी की तरह अपना सिर घुमा लेते थे, हालांकि इस कारण वे उसकी तरह नमक के खंभों में नहीं

परिवर्तित हुए। परिणामस्वरूप, उनकी एक बड़ी संतान उत्पन्न हुई, जिनमें यह हावभाव एक आदत बन गया है, ठीक वैसे ही जैसे दुराचारी स्त्रियाँ, दुकान की खिड़की में प्रदर्शित जूतों की पंक्ति को देखते हुए, गुजरते हुए छात्र पर नज़र रखने के लिए अपना सिर घुमा लेती हैं। समलैंगिकों के ये वंशज, जिनकी संख्या इतनी अधिक है कि हम उन पर उत्पत्ति की दूसरी आयत लागू कर सकते हैं: "यदि कोई मनुष्य पृथ्वी की धूल को गिन सकता है, तो तेरी संतान भी गिनी जाएगी," ने पूरे विश्व में अपना स्थान बना लिया है; उन्हें हर पेशे तक पहुँच प्राप्त है और वे इतनी आसानी से सबसे प्रतिष्ठित क्लबों में प्रवेश कर जाते हैं कि जब भी कोई समलैंगिक निर्वाचित नहीं हो पाता, तो ज्यादातर मामलों में अन्य समलैंगिक ही उसे अस्वीकार कर देते हैं, जो समलैंगिकता को दंडित करने के लिए उत्सुक हैं, क्योंकि उन्हें वह झूठ विरासत में मिला है जिसने उनके पूर्वजों को उस शापित शहर से भागने में सक्षम बनाया था। यह संभव है कि वे एक दिन वहाँ लौट जाएँ। निश्चित रूप से वे हर देश में एक पूर्वी बस्ती बसा लेते हैं, जो सुसंस्कृत, संगीतप्रिय और द्वेषपूर्ण होती है, जिसमें कुछ आकर्षक गुण और असहनीय दोष होते हैं। हम आने वाले पृष्ठों में इनका और अधिक गहन अध्ययन करेंगे; लेकिन मैंने यहाँ एक अस्थायी चेतावनी देना उचित समझा है कि (जिस प्रकार लोगों ने ज़ायोनी आंदोलन को प्रोत्साहित किया है) सोडोमी आंदोलन खड़ा करने और सोडोम का पुनर्निर्माण करने का प्रस्ताव रखना एक दुखद त्रुटि है। क्योंकि, जैसे ही वे वहाँ पहुँचेंगे, सोडोमी लोग शहर छोड़ देंगे ताकि वे वहाँ के निवासी न लगें, वे अन्य शहरों में पत्नियाँ और रखैलें रख लेंगे जहाँ उन्हें संयोगवश हर प्रकार का मनोरंजन मिल जाएगा। वे सोडोम केवल अत्यंत आवश्यकता के दिनों में ही लौटेंगे, जब उनका अपना शहर खाली होगा, उन मौसमों में जब भूख भेड़िये को जंगल से बाहर निकाल लाती है; दूसरे शब्दों में, सब कुछ वैसा ही चलता रहेगा जैसा आज लंदन, बर्लिन, रोम, पेट्रोग्राड या पेरिस में चलता है।

बहरहाल, उस दिन, डचेस से मिलने जाने से पहले, मैंने इतना आगे नहीं सोचा था, और मुझे यह जानकर दुख हुआ कि बृहस्पति-चार्ल्स के संयोजन में लीन होने के कारण, शायद मैं मधुमक्खी द्वारा फूल के परागण को देखने का अवसर चूक गया था।

भाग 2

अध्याय 1

समाज में एम. डी चार्लस—एक चिकित्सक—श्रीमती डी वोगौबर्ट की विशिष्ट शारीरिक बनावट—श्रीमती डी अर्पाजोन, ह्यूबर्ट रॉबर्ट फव्वारा और ग्रैंड ड्यूक व्लादिमीर का उल्लास—श्रीमती डी अमोनकोर्ट, डी सिट्री, डी सेंट-यूवर्टे, आदि—स्वान और प्रिंस डी गुएरमेंटेस के बीच रोचक बातचीत—अल्बर्टाइन का टेलीफोन पर संवाद—बालबेक की मेरी दूसरी और अंतिम यात्रा से पहले के अंतराल में मेरा सामाजिक जीवन। बालबेक आगमन—दिल की धड़कनें रुक-रुक कर चलती रहती हैं।

चूंकि मुझे गुएरमांटेस के घर पर होने वाली उस पार्टी में पहुंचने की कोई जल्दी नहीं थी, जिसके लिए मुझे पक्का पता नहीं था कि मुझे आमंत्रित किया गया है या नहीं, इसलिए मैं बाहर ही टहलता रहा; लेकिन गर्मी का दिन भी मेरी तरह ही उठने की जल्दी में नहीं था। हालांकि नौ बज चुके थे, फिर भी प्लेस डे ला कॉनकॉर्ड पर दिन का उजाला लक्सर के ओबिलिस्क को गुलाबी नूगा से बना हुआ दिखा रहा था। फिर उसने रंग को हल्का कर दिया और सतह को धातु जैसी बना दिया, जिससे ओबिलिस्क न केवल अधिक कीमती हो गया बल्कि अधिक पतला और लगभग लचीला भी प्रतीत हुआ। ऐसा लग रहा था मानो आप उसे अपनी उंगलियों में घुमा सकते हैं, शायद उसकी आकृति को थोड़ा सा बिगाड़ भी सकते हैं। चंद्रमा अब आकाश में संतरे के एक नाजुक छिलके की तरह था, हालांकि थोड़ा सा कुचला हुआ था। लेकिन जल्द ही उसे सबसे टिकाऊ सोने से बनाया जाना था। उसके पीछे अकेली शरण लिए, एक बेचारा छोटा तारा अकेली चाँदनी का इकलौता साथी बनकर खड़ा था, जबकि वह अपने दोस्त की रक्षा करते हुए, लेकिन और भी साहसी होकर आगे बढ़ते हुए, एक अजेय हथियार की तरह, एक प्राच्य प्रतीक की तरह, अपने सुनहरे रंग के विशाल और अद्भुत अर्धचंद्र को लहरा रही थी।

प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के महल के बाहर मेरी मुलाकात ड्यूक डी चैटेलराउल्ट से हुई; मुझे अब याद नहीं था कि आधे घंटे पहले तक मैं इस डर से ग्रस्त था—जो कि जल्द ही मुझे फिर से जकड़ने वाला था—कि कहीं मैं बिना बुलाए घर में प्रवेश न कर जाऊं। हम बेचैन हो जाते हैं, और कभी-कभी खतरे के समय के बहुत बाद, जिसे बाद में किसी और चीज़ में व्यस्त होने के कारण हम भूल जाते हैं, हमें अपनी बेचैनी याद आती है। मैंने युवा ड्यूक का अभिवादन किया और घर में प्रवेश किया। लेकिन यहाँ मुझे सबसे पहले एक छोटी सी घटना का उल्लेख करना होगा, जिससे हमें उस घटना को समझने में मदद मिलेगी जो अभी घटित होने वाली थी।

उस शाम, पिछली शामों की तरह, एक व्यक्ति ड्यूक डी चैटेलरोल्ट के बारे में बहुत सोच रहा था, हालांकि उसे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि वह कौन है: यह श्रीमती डी गुएरमांटेस का दरबारी (उस समय जिसे अबोयूर कहा जाता था) था। श्री डी चैटेलरोल्ट, राजकुमारी के घनिष्ठ मित्रों में से एक तो नहीं थे, हालांकि वे उनके चचेरे भाई थे, और उन्हें पहली बार उनके घर आमंत्रित किया गया था। उनके माता-पिता, जिनका पिछले दस वर्षों से राजकुमारी से कोई संपर्क नहीं था, पिछले पखवाड़े में उनसे सुलह कर चुके थे, और उस शाम पेरिस से बाहर होने के कारण, उन्होंने अपने बेटे से उनकी जगह आने का अनुरोध किया था। कुछ दिन पहले, राजकुमारी के दरबारी की मुलाकात चैंप्स-एलिसी में एक युवक से हुई थी, जो उन्हें आकर्षक लगा था, लेकिन जिसकी पहचान वे पता नहीं लगा पाए थे। ऐसा नहीं था कि उस युवक ने उदारता के साथ-साथ अपना सहयोग भी नहीं दिया था। दरबारी ने सोचा था कि उसे इतने युवा सज्जन पर जो भी कृपा करनी पड़ेगी, इसके विपरीत उन्हें वह सब प्राप्त हुआ। लेकिन एम. डी चैटेलराउल्ट जितने उतावले थे, उतने ही संकोची भी थे; उन्होंने अपना भेष छिपाने का और भी दृढ़ निश्चय कर लिया था क्योंकि उन्हें पता नहीं था कि वे किस तरह के व्यक्ति से मिल रहे हैं; अगर उन्हें पता होता, तो उनका डर कहीं अधिक होता, हालांकि वह निराधार ही होता। उन्होंने स्वयं को एक अंग्रेज के रूप में प्रस्तुत किया, और दरबारी द्वारा पूछे गए सभी भावुक प्रश्नों के जवाब में, जो उस व्यक्ति से दोबारा मिलने की इच्छा रखते थे, जिसके प्रति वे इतने सुख और इतने बड़े उपहार के लिए ऋणी थे, ड्यूक ने एवेन्यू गैब्रियल के एक छोर से दूसरे छोर तक बस इतना ही कहा: "मैं फ्रेंच नहीं बोलता।"

हालाँकि, इन सब बातों के बावजूद—अपने चचेरे भाई गिल्बर्ट के मातृ वंश को याद करते हुए —ड्यूक डी गुएरमांटेस ने राजकुमारी डी गुएरमांटेस-बाविएर के ड्राइंग रूम में कोर्टवॉइसियर की झलक पाने का दिखावा किया, लेकिन उस महिला की पहलशीलता और बौद्धिक श्रेष्ठता का सामान्य अनुमान एक ऐसे नवाचार पर आधारित था जो उनके समूह में कहीं और नहीं पाया जाता था। रात के खाने के बाद, चाहे आगे की पार्टी कितनी भी महत्वपूर्ण क्यों न हो, राजकुमारी डी गुएरमांटेस के घर में कुर्सियाँ इस तरह से लगाई जाती थीं कि छोटे-छोटे समूह बन जाएँ, जिनमें लोगों को एक-दूसरे की ओर पीठ करनी पड़ती थी। राजकुमारी ने तब अपनी सामाजिक समझ का प्रदर्शन करते हुए, मानो अपनी पसंद से, इनमें से एक समूह में बैठ गईं। ऐसा नहीं था कि वह दूसरे समूह के किसी सदस्य को चुनकर अपनी ओर आकर्षित करने से डरती थीं। उदाहरण के लिए, यदि उन्होंने एम. डिटेल से, जो स्वाभाविक रूप से उनसे सहमत थे, श्रीमती की सुंदरता के बारे में टिप्पणी की होती... डी विलेमुर की गर्दन, जिसका पीछे का दृश्य उस महिला के दूसरे समूह में होने के कारण दिखाई दे रहा था, को देखकर राजकुमारी ने बिना झिझक के अपनी आवाज़ बुलंद की: "मैडम डी विलेमुर, एम. डिटेल, अपनी अद्भुत चित्रकारी दृष्टि से, अभी-अभी आपकी गर्दन की प्रशंसा कर रहे थे।" श्रीमती डी विलेमुर ने इसे बातचीत में शामिल होने का सीधा निमंत्रण समझा; एक कुशल घुड़सवार की फुर्ती से, उन्होंने अपनी कुर्सी को धीरे-धीरे एक वृत्त के तीन चतुर्थांशों में घुमाया, और अपने पड़ोसियों को ज़रा भी परेशान किए बिना, लगभग राजकुमारी के सामने आकर रुक गईं। "आप एम. डिटेल को नहीं जानतीं?" मेज़बान ने हैरानी से कहा, जिनके लिए उनकी मेहमान का फुर्तीला और विनम्र टालमटोल पर्याप्त नहीं था। "मैं उन्हें नहीं जानती, लेकिन मैं उनका काम जानती हूँ," श्रीमती ने उत्तर दिया। डी विलेमुर ने आदरपूर्ण, आकर्षक अंदाज़ में और ऐसी तत्परता से, जिसकी कई दर्शक उनसे ईर्ष्या कर रहे थे, उस प्रसिद्ध चित्रकार को संबोधित किया, जिनसे औपचारिक परिचय कराने के लिए यह अभिवादन पर्याप्त नहीं था, और एक हल्का सा प्रणाम किया। राजकुमारी ने कहा, "आइए, महाशय डिटेल, मैं आपको श्रीमती डी विलेमुर से मिलवाती हूँ।" उस महिला ने तुरंत ही स्वप्न के रचयिता के लिए जगह बनाने में उतनी ही चतुराई दिखाई, जितनी कुछ क्षण पहले उनके सामने मुड़ने में दिखाई थी। और राजकुमारी ने अपने लिए एक कुर्सी आगे खींच ली; दरअसल, उन्होंने श्रीमती डी विलेमुर

को केवल पहले समूह को छोड़ने का बहाना बनाने के लिए ही आमंत्रित किया था, जिसमें उन्होंने निर्धारित दस मिनट बिताए थे, और दूसरे समूह को भी उतना ही समय देने के लिए। पौने घंटे में, सभी समूहों को उनके दर्शन का अवसर मिल चुका था, जो हर बार आवेग और पसंद से प्रेरित प्रतीत होता था, लेकिन जिसका सर्वोपरि उद्देश्य यह दिखाना था कि एक महान महिला कितनी सहजता से मेहमाननवाज़ी करना जानती है। लेकिन अब पार्टी के लिए मेहमान आने लगे थे, और घर की मालकिन दरवाजे से कुछ ही दूरी पर बैठी थी - अपनी अर्ध-शाही शान में सीधी और गर्व से भरी हुई, उसकी आँखें अपनी ही चमक से दमक रही थीं - दो अनाकर्षक राजघरानों और स्पेनिश राजदूत के बीच में।

मैं अपने से पहले आए कई मेहमानों के पीछे प्रतीक्षा कर रहा था। मेरे सामने राजकुमारी बैठी थीं, जिनकी सुंदरता शायद एकमात्र ऐसी चीज नहीं है, जो मुझे इस समारोह की याद दिलाती है, जबकि वहाँ कई सुंदरियाँ मौजूद थीं। लेकिन मेरी मेज़बान का चेहरा इतना परिपूर्ण था; मानो किसी सुंदर पदक पर अंकित हो, कि वह मेरे मन में एक यादगार छाप छोड़ गया है। राजकुमारी की आदत थी कि जब वह अपने किसी समारोह से एक-दो दिन पहले अपने मेहमानों से मिलती थीं, तो वह कहती थीं: "आप आएंगे, है ना?" मानो उन्हें उनसे बात करने की बहुत इच्छा हो। लेकिन वास्तव में, उनके पास उनसे बात करने के लिए कुछ नहीं होता था, इसलिए जब वे उनके सामने आते थे, तो वह बिना उठे, दोनों राजघरानों और राजदूत के साथ अपनी नीरस बातचीत को एक पल के लिए रोककर, उन्हें धन्यवाद देते हुए कहती थीं: "आपका आना कितना अच्छा लगा," ऐसा इसलिए नहीं कि वह सोचती थीं कि मेहमान ने आकर अपनी अच्छाई दिखाई है, बल्कि अपनी अच्छाई को और निखारने के लिए। फिर, उसे झट से नदी में वापस छोड़ते हुए, वह कहती: "आपको एम. डी गुएरमांटेस बगीचे के द्वार पर मिलेंगे," जिससे अतिथि अपने रास्ते चला जाता और उसे परेशान करना बंद कर देता। कुछ लोगों से तो वह कुछ भी नहीं कहती थी, बस उन्हें अपनी अद्भुत काली आँखों का प्रदर्शन करके संतुष्ट हो जाती थी, मानो वे केवल कीमती पत्थरों की प्रदर्शनी देखने आए हों।

मेरे ठीक सामने जो व्यक्ति थे, वे ड्यूक डी चैटेलराउल्ट थे।

ड्राइंग रूम के अंदर से आ रही सभी मुस्कुराहटों और अभिवादनों का जवाब देने में व्यस्त होने के कारण उन्होंने द्वारपाल पर ध्यान ही नहीं दिया था। लेकिन द्वारपाल ने उन्हें देखते ही

पहचान लिया था। इस अजनबी की पहचान, जिसे जानने के लिए वे इतने उत्सुक थे, अगले ही पल उन्हें पता चल जाएगी। जब उन्होंने पिछली शाम के अपने 'अंग्रेज़' से पूछा कि उन्हें कौन सा नाम बताना है, तो द्वारपाल न केवल उत्तेजित हुआ, बल्कि उसे लगा कि वह अविवेकी और असभ्य व्यवहार कर रहा है। उसे लगा कि वह पूरी दुनिया के सामने (हालांकि दुनिया को कुछ भी संदेह नहीं होगा) एक ऐसा रहस्य उजागर करने जा रहा है जिसे इस तरह सार्वजनिक रूप से प्रकट करना अपराध होगा। अतिथि का उत्तर सुनकर: "ड्यूक डी चैटेलरो", उसे इतना गर्व हुआ कि वह एक पल के लिए अवाक रह गया। ड्यूक ने उसे देखा, पहचाना, और खुद को बर्बाद होते हुए पाया। वहीं, नौकर, जिसने अपना संयम वापस पा लिया था और वंशावली का इतना जानकार था कि उसने अपने लिए एक बहुत ही मामूली उपाधि लिख दी, पेशेवर जोश और भावनात्मक कोमलता के साथ चिल्लाया: "महोदय, ड्यूक ऑफ चैटेलरोल्ट!" लेकिन अब मेरी बारी थी। मैं अपनी मेज़बान के बारे में सोच में डूबा हुआ था, जिसने मुझे अभी तक नहीं देखा था, और उस भूमिका के बारे में नहीं सोच रहा था - जो मेरे लिए भयानक थी, हालांकि मिस्टर डी चैटेलरोल्ट के लिए उतनी भयानक नहीं - उस दरबारी की, जो जल्लाद की तरह काले वस्त्र पहने हुए था, और उसके चारों ओर बेहद खुशमिजाज वर्दी पहने हुए नौकरों का एक समूह था, जो किसी घुसपैठिए को पकड़कर बाहर फेंकने के लिए तैयार थे। दरबारी ने मुझसे मेरा नाम पूछा, मैंने उसे उतनी ही सहजता से बताया जितनी सहजता से कोई कैदी फांसी के तख्ते पर बंधने के लिए तैयार होता है। तुरंत ही उसने अपना सिर शान से उठाया और इससे पहले कि मैं उससे विनती कर पाती कि वह मुझे धीमी आवाज़ में आमंत्रित करे ताकि अगर मुझे आमंत्रित न किया गया हो तो मेरी भावनाओं को ठेस न पहुंचे और अगर मुझे आमंत्रित किया गया हो तो प्रिंसेस डी गुएरमांटेस की भावनाओं को ठेस न पहुंचे, उसने छत गिरा देने वाली ताकत से परेशान करने वाले शब्द चिल्लाए।

प्रसिद्ध हक्सले (जिनके पोते आज अंग्रेजी साहित्य जगत में एक अभेद्य स्थान रखते हैं) बताते हैं कि उनकी एक मरीज समाज में जाने की हिम्मत नहीं करती थी क्योंकि अक्सर, जिस कुर्सी की ओर विनम्रतापूर्वक इशारा किया जाता था, उस पर उसे पहले से ही एक बुजुर्ग सज्जन बैठे दिखाई देते थे। उसे पूरा यकीन था कि या तो आमंत्रण का इशारा या उस बुजुर्ग सज्जन की उपस्थिति एक भ्रम थी, क्योंकि उसकी मेज़बान उसे पहले से भरी कुर्सी नहीं देती। और जब

हक्सले ने उसे ठीक करने के लिए समाज में फिर से जाने के लिए मजबूर किया, तो उसे एक पल के लिए पीड़ादायक झिझक हुई जब उसने खुद से पूछा कि क्या उसे दिया जा रहा वह दोस्ताना इशारा सचमुच था, या किसी काल्पनिक दृश्य के कारण वह सार्वजनिक रूप से किसी वास्तविक सज्जन की गोद में बैठने जा रही थी। उसकी यह संक्षिप्त अनिश्चितता पीड़ादायक थी। शायद मेरी तुलना में कम। जिस क्षण मैंने अपने नाम की ध्वनि सुनी, मानो किसी संभावित प्रलय की चेतावनी देने वाली गड़गड़ाहट हो, उसी क्षण से मैं किसी भी स्थिति में अपनी नेक नियति का दावा करने के लिए बाध्य था, और मानो मुझ पर कोई संदेह न हो, दृढ़ निश्चय के साथ राजकुमारी की ओर बढ़ने के लिए बाध्य था।

जब मैं उससे कुछ ही फीट दूर था, तभी उसकी नज़र मुझ पर पड़ी और (यह साबित करने के लिए कि मैं किसी साजिश का शिकार हूँ), अपने अन्य मेहमानों की तरह बैठी रहने के बजाय, वह उठी और मेरी ओर आई। एक पल बाद, मैं हक्सले के पात्र की तरह राहत की साँस ले सका, जब कुर्सी पर बैठने का मन बनाने के बाद, उसने उसे खाली पाया और महसूस किया कि वह बूढ़ा आदमी एक भ्रम था। राजकुमारी ने मुस्कुराते हुए मेरी ओर हाथ बढ़ाया था। वह कुछ क्षणों तक उसी आकर्षण के साथ खड़ी रही, जैसा कि माल्हेरबे की कविता में वर्णित है, जिसका अंत इस प्रकार होता है:

"उनका सम्मान करने के लिए सभी स्वर्गदूत उठते हैं।"

उसने माफी मांगी क्योंकि डचेस अभी तक नहीं आई थीं, मानो मैं उनके बिना वहां ऊब रहा होता। मुझे यह अभिवादन देने के लिए, उसने मेरा हाथ पकड़कर मेरे चारों ओर एक सुंदर घुमाव किया, जिसके चक्कर में मुझे लगा जैसे मैं अपने पैरों पर खड़ा नहीं रह पा रहा हूँ। मुझे लगभग उम्मीद थी कि वह मुझे किसी कॉटिलॉन की नेता की तरह हाथीदांत की छड़ी या घड़ी का कंगन भेंट करेगी। हालाँकि, उसने मुझे ऐसा कुछ नहीं दिया, और मानो बोस्टन नृत्य करने के बजाय, वह बीथोवेन के किसी पवित्र संगीत को सुन रही हो, जिसके मधुर स्वरों को बाधित करने से वह डर रही हो, उसने बातचीत वहीं समाप्त कर दी, या यूँ कहें कि शुरू ही नहीं की, और मुझे अंदर आते देखकर अभी भी प्रसन्न होकर, बस मुझे बताया कि राजकुमार कहाँ मिलेंगे।

मैं उससे दूर हट गया और दोबारा उसके पास जाने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि मुझे लगा कि उसके पास मुझसे कहने के लिए कुछ भी नहीं है। अपनी असीम दयालुता में डूबी यह महिला, जो बेहद लंबी और सुंदर थी, और उन कई महान महिलाओं की तरह ही महान थी जिन्होंने गर्व से फांसी के तख्ते पर कदम रखा था, मुझे शहद पिलाने के अलावा और कुछ नहीं कर सकती थी, सिवाय इसके कि वह वही बात दोहराए जो वह मुझसे पहले दो बार कह चुकी थी: "राजकुमार तुम्हें बगीचे में मिलेगा।" अब राजकुमार की तलाश में जाना मेरे संदेह को नए सिरे से जगाने जैसा था।

किसी भी हालत में मुझे किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढना ही पड़ेगा जो मेरा परिचय करा सके। बातचीत के शोरगुल के बीच भी, एम. डी चार्लस की अंतहीन बकबक सुनाई दे रही थी, जो एच. ई. ड्यूक ऑफ सिडोनिया से बात कर रहे थे, जिनसे उनकी अभी-अभी मुलाकात हुई थी। एक ही पेशे के लोग एक-दूसरे को पहचान लेते हैं, और यही बात एक आम बुराई के साथ भी होती है। एम. डी चार्लस और एम. डी सिडोनिया दोनों ने एक-दूसरे की बुराई को तुरंत पहचान लिया था, जो दोनों ही मामलों में समाज में अकेले में बात करने की आदत थी, और वे किसी भी रुकावट को बर्दाश्त नहीं कर पाते थे। एक प्रसिद्ध सॉनेट के शब्दों में, यह तय करते हुए कि 'कोई चारा नहीं' है, उन्होंने चुप न रहने का फैसला किया, बल्कि एक-दूसरे की बातों की परवाह किए बिना लगातार बोलते रहने का निश्चय किया। इसका परिणाम मोलियर की कॉमेडी में कई लोगों द्वारा एक साथ अलग-अलग बातें कहने से उत्पन्न होने वाली अव्यवस्थित बड़बड़ाहट में परिणत हुआ। बैरन, अपनी कान फाड़ देने वाली आवाज के साथ, एम. डी सिडोनिया की कमजोर आवाज को दबाने में पूरी तरह से आश्वस्त थे; लेकिन मैंने उन्हें हतोत्साहित नहीं किया, क्योंकि जब भी एम. डी चार्लस सांस लेने के लिए एक पल के लिए रुकते, तो स्पेन के ग्रैंडी की बड़बड़ाहट से वह अंतराल भर जाता, जो अविचलित होकर अपना भाषण जारी रखे हुए थे। मैं आसानी से एम. डी चार्लस से मुझे प्रिंस डी गुएरमांटेस से मिलवाने के लिए कह सकता था, लेकिन मुझे डर था (और यह डर जायज़ भी था) कि वे मुझसे नाराज़ हो सकते हैं। मैंने उनके प्रस्ताव को दूसरी बार अनसुना करके और उस शाम के बाद से जब उन्होंने मुझे इतने स्नेह से घर तक पहुँचाया था, तब से उन्हें अपनी उपस्थिति का कोई संकेत न देकर उनके साथ सबसे कृतघ्न व्यवहार किया था। फिर भी मैं यह बहाना नहीं बना

सकता था कि मैंने उस दृश्य की कल्पना पहले ही कर ली थी जो मैंने उसी दोपहर खुद और जुपियन द्वारा रचा गया देखा था। मुझे इस तरह की कोई आशंका नहीं थी। यह सच है कि इससे कुछ समय पहले, जब मेरे माता-पिता ने मुझे मेरी आलस्य और एम. डी चार्लस को एक पत्र न लिखने की जहमत न उठाने के लिए फटकारा था, तो मैंने उन्हें एक अपमानजनक प्रस्ताव स्वीकार करने की इच्छा रखने के लिए कड़ी फटकार लगाई थी। लेकिन सिर्फ गुस्से और उन्हें सबसे ज्यादा ठेस पहुंचाने वाले शब्दों का इस्तेमाल करने की चाहत ने ही मुझे यह झूठा जवाब देने के लिए मजबूर किया था। असल में, मैंने बैरन के प्रस्तावों में किसी भी तरह की कामुकता या भावुकता को नहीं समझा था। मैंने ये बात अपने माता-पिता से पूरी तरह गैरजिम्मेदाराना तरीके से कही थी। लेकिन कभी-कभी भविष्य हमारे भीतर अनजाने में ही छिपा होता है, और हमारे वे शब्द जिन्हें हम झूठा समझते हैं, एक आसन्न वास्तविकता का संकेत देते हैं।

श्री डी चार्लस शायद मेरी कृतज्ञता की कमी को माफ कर देते। लेकिन जिस बात ने उन्हें क्रोधित किया, वह यह थी कि आज शाम राजकुमारी डी गुएरमांटेस के घर पर मेरी उपस्थिति, और कुछ समय पहले उनकी चचेरी बहन के घर पर भी, उनके इस गंभीर कथन का उल्लंघन प्रतीत हो रही थी: "उन घरों में मेरे बिना प्रवेश वर्जित है।" एक गंभीर गलती, एक ऐसा अपराध जिसका शायद कभी प्रायश्चित न हो, कि मैंने पारंपरिक मार्ग का अनुसरण नहीं किया था। श्री डी चार्लस अच्छी तरह जानते थे कि उनके आदेशों का पालन न करने वालों या जिनसे उन्हें घृणा हो गई थी, उन पर बरसाए गए उनके कठोर प्रहार, चाहे वे कितने भी उग्र क्यों न हों, अब कई लोगों द्वारा मात्र खोखले माने जाने लगे थे और उनमें अब किसी को कहीं से भी निष्कासित करने की शक्ति नहीं बची थी। लेकिन शायद उन्हें विश्वास था कि उनकी कमज़ोर शक्ति, जो अभी भी काफी थी, मुझ जैसे नौसिखियों की नज़र में बरकरार थी। इसलिए मैंने ऐसी पार्टी में उनसे कोई एहसान मांगना उचित नहीं समझा, जहाँ मेरी उपस्थिति मात्र ही उनके दावों का एक व्यंग्यात्मक खंडन प्रतीत हो रही थी।

उसी क्षण एक साधारण से दिखने वाले व्यक्ति, प्रोफेसर ई—— ने मुझे रोक लिया। मुझे गुएरमांटेस के घर पर देखकर वे आश्चर्यचकित रह गए थे। मैं भी उन्हें वहाँ देखकर उतना ही आश्चर्यचकित था, क्योंकि राजकुमारी की पार्टियों में उनके जैसे व्यक्ति को पहले कभी नहीं

देखा गया था और न ही भविष्य में कभी देखा जाएगा। अंतिम संस्कार के बाद उन्होंने राजकुमार को सेप्टिक निमोनिया से ठीक कर दिया था, और श्रीमती डी गुएरमांटेस की उनके प्रति विशेष कृतज्ञता ही वह कारण था जिसके चलते उन्होंने परंपरा से हटकर उन्हें अपने घर आमंत्रित किया था। चूंकि वे कमरे में किसी को भी नहीं जानते थे और मृत्यु के दूत की तरह अकेले इधर-उधर नहीं भटक सकते थे, इसलिए मुझे पहचानकर उन्होंने अपने जीवन में पहली बार पाया कि उनके पास मुझसे कहने के लिए अनगिनत बातें हैं, जिससे वे शांत भाव से आगे बढ़े, और यही एक कारण था कि वे मेरे पास आए। एक और कारण भी था। वे अपने निदान में कभी गलती न करने को बहुत महत्व देते थे। अब उनका पत्राचार इतना अधिक था कि किसी मरीज को एक बार देखने के बाद भी उन्हें यह याद नहीं रहता था कि बीमारी ने वाकई वही रूप लिया है जो उन्होंने अनुमान लगाया था। पाठक को शायद याद होगा कि मेरी दादी को स्ट्रोक आने के तुरंत बाद, मैं उन्हें उनसे दिखाने ले गई थी, उसी दोपहर जब वे अपने कोट पर सारे पदक सिलवा रहे थे। इतने लंबे अंतराल के बाद, उन्हें उस समय भेजी गई औपचारिक सूचना याद नहीं थी। "तुम्हारी दादी का निधन हो गया है, है ना?" उन्होंने मुझसे एक ऐसी आवाज़ में कहा जिसमें थोड़ी सी आशंका के साथ-साथ कुछ हद तक निश्चितता भी थी। "अरे! जी हाँ! खैर, जिस क्षण मैंने उन्हें देखा था, मेरा अनुमान बेहद गंभीर था, मुझे यह अच्छी तरह याद है।"

इस प्रकार प्रोफेसर ई—— को मेरी दादी की मृत्यु का पता चला या उन्हें याद आया, और (मैं यह उनकी प्रशंसा में कहना चाहूंगा, जो कि समग्र रूप से चिकित्सा जगत की प्रशंसा है), उन्होंने शायद बिना किसी संतुष्टि का प्रदर्शन किए, या शायद बिना किसी अनुभूति के, अपनी बात रखी। डॉक्टरों की गलतियाँ अनगिनत हैं। वे उपचार के बारे में आशावाद और परिणाम के बारे में निराशावाद का सहारा लेते हैं। "शराब? सीमित मात्रा में, इससे कोई नुकसान नहीं होगा, यह हमेशा एक टॉनिक है... यौन सुख? आखिरकार यह एक प्राकृतिक क्रिया है। मैं आपको इसका उपयोग करने की अनुमति देता हूं, लेकिन इसका दुरुपयोग करने की नहीं, आप समझते हैं। किसी भी चीज की अति बुरी होती है।" एक पल में, रोगी के लिए पानी और पवित्रता, इन दो जीवनदायी चीजों को त्यागने का कितना बड़ा प्रलोभन होता है। दूसरी ओर, यदि उसे हृदय, रक्त शर्करा आदि से संबंधित कोई समस्या होती है, तो वह लंबे समय तक

नहीं टिकती। गंभीर लेकिन विशुद्ध रूप से कार्यात्मक विकारों को तुरंत एक काल्पनिक कैंसर का नाम दे दिया जाता है। एक लाइलाज बीमारी को दूर करने में असमर्थ डॉक्टरों के पास जाना व्यर्थ है। यदि रोगी को उसके हाल पर छोड़ दिया जाए, और वह कठोर उपचार के अधीन हो जाए, और समय के साथ ठीक हो जाए, या केवल जीवित ही रहे, तो वह डॉक्टर, जिसे वह एवेन्यू डे ल'ओपेरा में अपनी टोपी उतारकर अभिवादन करता है, जबकि डॉक्टर को लगता था कि वह लंबे समय से पेरे लाचाइज़ में पड़ा है, इस हावभाव को उद्दंडतापूर्ण अवज्ञा समझेगा। उसकी नाक और आदरणीय दाढ़ी के नीचे की गई एक साधारण सैर भी उस न्यायधीश के क्रोध को इतना भड़का नहीं सकती, जिसने दो साल पहले उस बदमाश को, जो अब उसे स्पष्ट रूप से छूट दे रहा है, मृत्युदंड सुनाया था। डॉक्टर (हम यहाँ सभी को शामिल नहीं कर रहे हैं, और कुछ प्रशंसनीय अपवादों को ध्यान में रखते हैं) आम तौर पर अपने फैसले के रद्द होने से उसकी क्रियाविधि से प्रसन्न होने की तुलना में अधिक असंतुष्ट और चिढ़ जाते हैं। यही कारण है कि प्रोफेसर ई——, इस तथ्य से बौद्धिक संतुष्टि प्राप्त करने के बावजूद कि वे गलत नहीं थे, मुझसे केवल हम पर आए इस आघात पर खेद व्यक्त कर सके। उन्हें बातचीत जल्दी खत्म करने की कोई जल्दी नहीं थी, जिससे उनका आत्मविश्वास बना रहा और उन्हें रुकने का एक कारण मिल गया। उन्होंने मुझे उस भीषण गर्मी के बारे में बताया जिससे हम गुजर रहे थे, लेकिन यद्यपि वे एक पढ़े-लिखे व्यक्ति थे और अच्छी फ्रेंच बोल सकते थे, फिर भी उन्होंने मुझसे कहा: "क्या इस अत्यधिक गर्मी से आपको कोई परेशानी नहीं हुई?" असल में, मोलियर के समय से चिकित्सा ज्ञान में थोड़ी प्रगति हुई है, लेकिन शब्दावली में कोई नहीं। मेरे साथी ने आगे कहा: "सबसे ज़रूरी बात यह है कि इस तरह के मौसम में, खासकर बहुत गर्म कमरों में, होने वाले पसीने से बचना चाहिए। घर जाकर प्यास लगने पर आप गर्मी का सेवन करके इसका इलाज कर सकते हैं" (जिससे उनका मतलब शायद गर्म पेय था)।

मेरी दादी की मृत्यु की परिस्थितियों के कारण, इस विषय में मेरी रुचि बढ़ी, और मैंने हाल ही में एक महान विशेषज्ञ की पुस्तक में पढ़ा था कि पसीना आना गुर्दों के लिए हानिकारक होता है, क्योंकि यह नमी को त्वचा से बाहर निकाल देता है जबकि उसका उचित निकास कहीं और होता है। मुझे अपनी दादी की मृत्यु के समय के उन भीषण गर्मी भरे दिनों की याद आई और मेरा मन हुआ कि मैं उन्हें ही इसके लिए जिम्मेदार ठहराऊँ। मैंने इस बारे में डॉ. ई—— से

बात नहीं की, लेकिन उन्होंने स्वयं मुझसे कहा: "इस भीषण गर्मी का, जिसमें बहुत पसीना आता है, लाभ यह है कि इससे गुर्दों को भी आराम मिलता है।" चिकित्सा कोई सटीक विज्ञान नहीं है।

मुझे बातचीत में मशगूल रखते हुए, प्रोफेसर ई— ने बस इतना ही कहा कि उन्हें मुझे छोड़कर जाने के लिए मजबूर न किया जाए। लेकिन मैंने अभी-अभी देखा था कि मार्क्विस डी वोगौबर्ट राजकुमारी डी गुएरमांटेस के दाएं और बाएं कई बार झुककर अभिवादन कर रहे थे और एक कदम पीछे हट रहे थे। एम. डी नॉरपोइस ने हाल ही में मेरा उनसे परिचय कराया था और मुझे उम्मीद थी कि शायद वे मुझे हमारे मेज़बान से मिलवाने में सक्षम व्यक्ति साबित हों। इस कार्य की विशालता के कारण मैं यहां यह नहीं बता सकता कि अपनी युवावस्था में एम. डी वोगौबर्ट किन घटनाओं के कारण समाज के उन गिने-चुने लोगों (संभवतः इकलौते व्यक्ति) में से एक थे, जिन्हें सोडोम में एम. डी चार्लस का "विश्वासपात्र" माना जाता था। लेकिन, अगर राजा थियोडोसियस के दरबार में हमारे मंत्री में बैरन के साथ कुछ समानताएं थीं, तो वे बहुत ही मामूली थीं। अत्यंत कोमल, भावुक और सरल रूप में ही उन्होंने स्नेह और घृणा के उन उतार-चढ़ावों को प्रदर्शित किया, जिनके माध्यम से बैरन ने आकर्षित करने की इच्छा और फिर तिरस्कृत न होने पर भी बेनकाब होने के काल्पनिक भय को दर्शाया। पवित्रता, एक 'प्लेटोनिकवाद' (जिसके लिए एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति के रूप में उन्होंने परीक्षा उत्तीर्ण करने के क्षण से ही सभी सुखों का त्याग कर दिया था), और विशेष रूप से अपनी बौद्धिक शून्यता के कारण हास्यास्पद लगने वाले इन उतार-चढ़ावों को एम. डी वोगुबर्ट ने फिर भी प्रदर्शित किया। लेकिन जहाँ एम. डी. चार्लस में अत्यधिक प्रशंसाएँ वाक्पटुता के एक सकारात्मक विस्फोट के साथ घोषित की जाती थीं, और सूक्ष्मतम, सबसे तीखे व्यंग्य से सजी होती थीं जो एक व्यक्ति की पहचान बन जाती थी, वहीं दूसरी ओर एम. डी. वोगुबर्ट में, स्नेह एक निम्नतम बुद्धि वाले व्यक्ति और एक सार्वजनिक अधिकारी की तुच्छता के साथ व्यक्त किया जाता था, और शिकायतें (आम तौर पर बैरन की तरह एक पूर्ण अभियोग में परिवर्तित) एक दुर्भावना के साथ व्यक्त की जाती थीं, जो निर्दयी होते हुए भी, साथ ही साथ निर्मम भी थी, और इसलिए और भी चौंकाने वाली थी क्योंकि यह हमेशा मंत्री द्वारा छह महीने पहले कही गई बातों का सीधा खंडन थी और संभवतः जल्द ही वही बात दोहरा सकती थी: परिवर्तन की एक नियमितता ने

एम. डी. वोगुबर्ट के जीवन के विभिन्न चरणों को लगभग खगोलीय कविता प्रदान की, हालाँकि इसके अलावा कोई भी कभी भी एक सितारे की तरह कम प्रतीत नहीं हुआ।

उन्होंने मुझे जो अभिवादन दिया, वह एम. डी. चार्लस से मिलने वाले अभिवादन से बिलकुल अलग था। एम. डी. वोगुबर्ट ने, शिष्टाचार और कूटनीति के प्रतीक माने जाने वाले हजारों दिखावटीपन के अलावा, इस अभिवादन में एक बेपरवाह, चुस्त और मुस्कुराता हुआ भाव भी जोड़ा, जिससे एक ओर तो वे जीवित होने की खुशी मनाते हुए प्रतीत होते थे—जबकि वे मन ही मन एक ऐसे करियर की निराशा से जूझ रहे थे जिसमें उन्नति की कोई संभावना नहीं थी और जबरन सेवानिवृत्ति का खतरा मंडरा रहा था—और दूसरी ओर युवा, जोशीले और आकर्षक भी, क्योंकि वे अपने चेहरे पर बढ़ती झुर्रियों को देख सकते थे और अब उन्हें आईने में देखने की हिम्मत भी नहीं करते थे, जिसे वे मोहक बनाए रखना चाहते थे। ऐसा नहीं था कि वे किसी को जीतने की उम्मीद रखते थे, जिसके बारे में सोचने मात्र से ही वे लोगों की बातों, घोटालों और ब्लैकमेल के डर से सहम जाते थे। लगभग बचकानी भ्रष्टता से निकलकर पूर्ण संयम की ओर बढ़ते हुए, जिस दिन से उसके विचार क्राई डी'ओर्से की ओर मुड़े और उसने अपने लिए एक महान करियर की योजना बनाना शुरू किया, तब से वह एक पिंजरे में बंद जानवर की तरह व्यवहार करने लगा था, हर दिशा में भय, लालसा और मूर्खता से भरी निगाहें डाल रहा था। यह मूर्खता इतनी गहरी थी कि उसे यह एहसास ही नहीं हुआ कि उसके बचपन के गली-मोहल्ले के लड़के अब नहीं रहे, और जब एक अखबार बेचने वाले ने उसके चेहरे पर चिल्लाकर कहा: "ला प्रेस!" तो वह लालसा से भी अधिक भय से कांप उठा, यह सोचकर कि कहीं उसे पहचान लिया गया हो और उसकी निंदा की गई हो।

लेकिन क्राई डी'ओर्से के कृतघ्नता के कारण त्यागे गए सुखों के अभाव में, एम. डी वोगौबर्ट—और इसी कारण से वह अब भी आकर्षित करने के लिए उत्सुक थे—अचानक हृदय-भ्रम के शिकार हो जाते थे। ईश्वर ही जानता है कि उन्होंने मंत्रालय को कितने पत्रों से अभिभूत कर दिया होगा (वे क्या-क्या व्यक्तिगत हथकंडे अपनाते, श्रीमती डी वोगौबर्ट के नाम पर कैसे-कैसे मसौदे बनाते, जो अपने मोटे शरीर, उच्च कुल में जन्म, मर्दाना स्वभाव और सबसे बढ़कर अपने पति की साधारणता के कारण असाधारण प्रतिभाओं से संपन्न मानी जाती थीं और व्यावहारिक रूप से स्वयं मंत्री थीं), बिना किसी ठोस कारण के एक योग्यताहीन युवक को

दूतावास के कर्मचारियों में नियुक्त करने के लिए। यह सच है कि कुछ महीनों या कुछ वर्षों बाद, मामूली से दिखने वाले उस दरबारी को, बिना किसी शत्रुतापूर्ण इरादे के, अपने मुखिया के प्रति उदासीनता के संकेत दिखाने मात्र से ही, मुखिया, खुद को अपमानित या विश्वासघातित समझकर, उसे दंडित करने में वही उन्मादी जोश दिखाने लगता था, जिस जोश से उसने अतीत में उस पर कृपा बरसाई थी। वह उसे वापस बुलाने के लिए हर संभव प्रयास करता और राजनीतिक मामलों के निदेशक को प्रतिदिन एक पत्र मिलता: "जल्दी करो और मुझे उस बदमाश से छुटकारा दिलाओ। उसके भले के लिए उसे सबक सिखाओ। उसे बस थोड़ी सी विनम्रता की जरूरत है।" इसी कारण राजा थियोडोसियस के दरबार में दरबारी का पद बिल्कुल भी सुखद नहीं था। लेकिन अन्य सभी मामलों में, एक अनुभवी और समझदार व्यक्ति होने के नाते, एम. डी वोगौबर्ट विदेशों में फ्रांसीसी सरकार के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधियों में से एक थे। जब बाद में एक ऐसे व्यक्ति ने, जिसे श्रेष्ठ माना जाता था, एक जैकोबिन नेता, जिसे सभी विषयों का विशेषज्ञ ज्ञान था, उसकी जगह ली, तो जल्द ही फ्रांस और उस देश के बीच युद्ध छिड़ गया जिस पर वह सम्राट शासन कर रहा था।

एम. डी वोगुबर्ट, एम. डी चार्लस की तरह, अभिवादन करने में पहले आगे आने की परवाह नहीं करते थे। दोनों ही 'जवाब देना' पसंद करते थे, क्योंकि उन्हें हमेशा इस बात का डर रहता था कि जिस व्यक्ति से वे हाथ मिलाते, उसने पिछली मुलाकात के बाद उनके बारे में अफवाहें न फैला दी हों। मेरे मामले में, एम. डी वोगुबर्ट को यह सवाल खुद से पूछने की ज़रूरत नहीं थी; दरअसल, मैं अपनी मर्ज़ी से ही उनका अभिवादन करने गया था, शायद हमारी उम्र के अंतर के कारण ही। उन्होंने आश्चर्य और खुशी के भाव से जवाब दिया, उनकी आँखें इधर-उधर भटकती रहीं, मानो मेरे दोनों ओर तिपतिया घास का एक टुकड़ा हो जिस पर उन्हें चरने की मनाही हो। मुझे लगा कि राजकुमार से परिचय कराने से पहले, जिसके बारे में मैंने बाद में उनसे बात न करने का फैसला किया था, उनसे मुझे श्रीमती डी वोगुबर्ट से मिलवाने के लिए कहना ज़्यादा उचित होगा। अपनी पत्नी से मेरा परिचय कराने का विचार उन्हें बहुत खुशी दे रहा था, अपने लिए भी और उनकी पत्नी के लिए भी, और वे मुझे गंभीर कदमों से मार्किज़ की ओर ले गए। उसके सामने आकर, उसने हाथ और आँखों से मेरी ओर इशारा किया, हर संभव सम्मान का भाव दिखाते हुए, फिर भी वह चुप रहा और कुछ क्षणों बाद तिरछे होकर चला

गया, मुझे अपनी पत्नी के साथ अकेला छोड़कर। उसने तुरंत मुझे अपना हाथ दिया, लेकिन यह जाने बिना कि मित्रता का यह प्रतीक किसके लिए था, क्योंकि मुझे एहसास हुआ कि एम. डी वोगौबर्ट मेरा नाम भूल गए थे, शायद मुझे पहचान भी नहीं पाए थे, और शिष्टाचारवश अपनी अनभिज्ञता स्वीकार न करने के कारण उन्होंने परिचय को केवल एक मूक अभिनय बना दिया था। और इस तरह मैं आगे नहीं बढ़ पाया; मैं उस महिला से अपने मेजबान से कैसे परिचय करवा सकता था जो मेरा नाम ही नहीं जानती थी? इससे भी बुरा यह था कि मुझे कुछ क्षणों के लिए श्रीमती डी वोगौबर्ट से बात करनी पड़ी। और इससे मुझे दो कारणों से चिढ़ हुई। मैं इस पार्टी में पूरी रात नहीं रुकना चाहता था, क्योंकि मैंने अल्बर्टीन से (मैंने उसे फ्रेड्रे के लिए एक बक्सा दिया था) आधी रात से कुछ देर पहले मुझसे मिलने आने की व्यवस्था की थी। निश्चित रूप से मैं उससे जरा भी प्यार नहीं करता था; आज शाम उसे अपने पास बुलाकर मैं पूरी तरह से कामुक इच्छा के आगे झुक रहा था, हालाँकि हम साल के उस उमस भरे दौर में थे जब कामुकता क्षीण होकर स्वाद इंद्रिय की ओर अधिक आकर्षित होती है और हर चीज़ से ऊपर शीतलता की तलाश करती है। किसी लड़की के चुंबन से भी ज़्यादा, यह संतरे के रस, ठंडे पानी से स्नान, या उस चमकीले और रसदार चाँद को निहारने के लिए तरसती है जो स्वर्ग की प्यास बुझा रहा था। हालाँकि, मुझे उम्मीद थी कि अल्बर्टीन की संगति में—जो मुझे समुद्र की शीतलता की याद दिलाती थी—मैं कई आकर्षक चेहरों के लिए अपने मन में उठने वाले अफ़सोस से छुटकारा पा लूँगा (क्योंकि राजकुमारी की पार्टी विवाहित महिलाओं के साथ-साथ लड़कियों के लिए भी थी। दूसरी ओर, प्रभावशाली, उदास और गंभीर श्रीमती डी वोगौबर्ट का चेहरा किसी भी तरह से आकर्षक नहीं था)।

मंत्रालय में लोगों ने बिना किसी दुर्भावना के कहा कि उनके घर में पति ही पेटीकोट पहनता था और पत्नी पतलून। इस कहावत में अनुमान से कहीं अधिक सच्चाई थी। श्रीमती डी वोगुबर्ट वास्तव में एक पुरुष थीं। चाहे वह हमेशा से पुरुष ही रही हों या बाद में ऐसी बन गईं हों, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि दोनों ही स्थिति में हम प्रकृति के सबसे मार्मिक चमत्कारों में से एक को देख रहे हैं, जो विशेष रूप से दूसरी स्थिति में, मानव जगत को फूलों के जगत के समान बना देता है। पहली परिकल्पना के अनुसार—यदि भावी श्रीमती डी वोगुबर्ट हमेशा से इतनी भद्दी पुरुष जैसी रही हों—प्रकृति एक शातिर और दयालु चाल से उस लड़की को पुरुष

का भ्रामक रूप प्रदान करती है। और वह युवक, जिसे स्त्रियों से प्रेम नहीं है और जो इस समस्या से छुटकारा पाना चाहता है, इस छल को खुशी से स्वीकार करता है, जिसमें उसे एक ऐसी दुल्हन मिलती है जो उसकी नजरों में एक बाजार कर्मचारी जैसी है। दूसरे मामले में, यदि स्त्री में जन्मजात ये मर्दाना गुण नहीं होते, तो वह अपने पति को प्रसन्न करने के लिए धीरे-धीरे इन्हें अपना लेती है, और यहाँ तक कि अनजाने में भी, उस तरह की नकल करके जैसे कुछ फूल उन कीड़ों का रूप धारण कर लेते हैं जिन्हें वे आकर्षित करना चाहते हैं। उसे इस बात का अफसोस होता है कि उसे प्यार नहीं मिलता, कि वह पुरुष नहीं है, और यही अफसोस उसे मर्दाना बना देता है। वास्तव में, जिस मामले पर हम अभी विचार कर रहे हैं, उससे अलग, किसने यह नहीं देखा कि कैसे सबसे सामान्य जोड़े भी अक्सर एक-दूसरे से मिलते-जुलते हो जाते हैं, कभी-कभी तो गुणों का आदान-प्रदान भी हो जाता है? जर्मनी के पूर्व चांसलर, प्रिंस वॉन बुलो ने एक इतालवी महिला से शादी की। समय बीतने के साथ, पिन्सियो पत्रिका में यह टिप्पणी की गई कि कैसे जर्मन पति ने इतालवी शिष्टाचार को आत्मसात कर लिया था, और इतालवी राजकुमारी ने जर्मन रूखेपन को। अब जिस विषय पर हम अभी चर्चा कर रहे हैं, उससे हटकर बात करें तो, एक प्रख्यात फ्रांसीसी राजनयिक को तो सभी जानते ही हैं, जिनकी उत्पत्ति का संकेत पहले केवल उनके नाम से ही मिलता था, जो पूर्व के सबसे प्रतिष्ठित राजनयिकों में से एक थे। जैसे-जैसे वह परिपक्व होता गया, जैसे-जैसे वह बूढ़ा होता गया, उसके भीतर एक ऐसा प्राच्य व्यक्तित्व प्रकट हुआ जिसकी किसी ने कभी कल्पना भी नहीं की थी, और अब जब हम उसे देखते हैं तो हमें उस टोपी की अनुपस्थिति का अफसोस होता है जो उसकी छवि को पूर्ण बनाती।

राजदूत की उन आदतों की ओर लौटना, जिनका वंशानुगत रूप से कठोर स्वरूप हमने अभी-अभी उल्लेख किया है, श्रीमती डी वोगुबर्ट ने अर्जित या पूर्वनियोजित स्वभाव को साकार किया, जिसका अमर उदाहरण राजकुमारी पैलेटाइन हैं, जो हमेशा घुड़सवारी की पोशाक में रहती थीं। उन्होंने अपने पति से केवल पौरुष ही नहीं, बल्कि और भी बहुत कुछ उधार लिया था। स्त्रियों की परवाह न करने वाले पुरुषों की कमियों का समर्थन करते हुए, वह अपने पारिवारिक पत्राचार में लुई 14वें दरबार के सभी महान रईसों के आपसी संबंधों का विवरण देती थीं। श्रीमती डी वोगुबर्ट जैसी स्त्रियों के मर्दाना स्वभाव को और भी अधिक बढ़ाने वाले

कारणों में से एक यह है कि पतियों द्वारा की गई उपेक्षा और उस उपेक्षा से उत्पन्न शर्मिंदगी धीरे-धीरे उनमें मौजूद हर स्त्रीत्व को नष्ट कर देती है। अंततः वे अपने पतियों में मौजूद अच्छे और बुरे दोनों गुणों को ग्रहण कर लेती हैं। उनके पति जितने अधिक चंचल, स्त्री-समान और अविवेकी होते हैं, वे उतनी ही अधिक आकर्षणहीन, उन गुणों की प्रतिरूप बन जाती हैं जिनका उनके पतियों को पालन करना चाहिए।

श्रीमती डी वोगौबर्ट के चेहरे पर अपमान, ऊब और आक्रोश के भाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। अफसोस, मुझे ऐसा लग रहा था कि वह मुझे दिलचस्पी और जिज्ञासा से देख रही हैं, मानो मैं उन नौजवानों में से एक हूँ जो श्रीमती डी वोगौबर्ट को आकर्षित करते हैं, और जिनके जैसा वह खुद बनना चाहती थीं, क्योंकि उनके पति बूढ़े हो रहे थे और अब युवाओं को ज़्यादा पसंद करते थे। वह मुझे उसी तल्लीनता से देख रही थीं जैसे देहाती महिलाएं किसी सचित्र कैटलॉग से तस्वीर में दिख रहे आकर्षक व्यक्ति के लिए बने दर्जी के वस्त्रों की नकल करती हैं (वास्तव में, हर पृष्ठ पर वही व्यक्ति होता है, लेकिन मुद्राओं के अंतर और पोशाकों की विविधता के कारण वह अलग-अलग रूपों में दिखाई देता है)। श्रीमती डी वोगौबर्ट का मेरे प्रति सहज आकर्षण इतना प्रबल था कि उन्होंने मुझे संतरे का जूस पिलाने के लिए मेरा हाथ पकड़ने तक की कोशिश की। लेकिन मैंने यह कहकर खुद को छुड़ा लिया कि मुझे अभी जाना है और अभी तक हमारे मेज़बान से परिचय नहीं कराया गया है।

मेरे और बगीचे के दरवाजे के बीच की दूरी बहुत ज़्यादा नहीं थी, जहाँ वह लोगों के एक समूह से बात कर रहा था। लेकिन इसने मुझे उससे कहीं ज़्यादा डरा दिया, जितना कि अगर मुझे उसे पार करने के लिए लगातार गोलियों की बौछार का सामना करना पड़ता।

कई महिलाएं, जिनसे मुझे परिचय मिलने की उम्मीद थी, बगीचे में मौजूद थीं। वे दिखावटी प्रशंसा जताते हुए भी निष्क्रिय थीं। इस तरह की पार्टियां आमतौर पर समय से पहले ही खत्म हो जाती हैं। अगले दिन तक इनका कोई महत्व नहीं रह जाता, जब तक कि ये उन लोगों का ध्यान आकर्षित नहीं कर लेतीं जिन्हें आमंत्रित नहीं किया गया था। एक सच्चा लेखक, जो कई साहित्यकारों के मूर्खतापूर्ण आत्म-सम्मान से रहित होता है, यदि वह किसी ऐसे आलोचक का लेख पढ़ता है जिसने हमेशा उसकी रचनाओं की अत्यधिक प्रशंसा की है, और उसमें कई निम्न स्तर के लेखकों के नाम देखता है, केवल अपना नाम नहीं, तो उसके पास रुककर इस बात

पर विचार करने का समय नहीं होता कि यह उसके लिए आश्चर्य की बात हो सकती है: उसकी पुस्तकें उसे पुकार रही हैं। लेकिन एक समाज की महिला के पास करने के लिए कुछ नहीं होता और फिगारो अखबार में यह देखकर कि "कल रात राजकुमार और राजकुमारी डी गुएरमांटेस ने एक बड़ी पार्टी दी," आदि, वह कहती है: "क्या! केवल तीन दिन पहले ही मैंने मैरी-गिल्बर्ट से एक घंटे बात की थी, और उसने इसके बारे में एक शब्द भी नहीं कहा!" और वह यह पता लगाने के लिए अपना दिमाग खपा रही थी कि उसने गुएरमांटे परिवार को कैसे नाराज़ किया होगा। यह कहना ज़रूरी है कि राजकुमारी की पार्टियों के मामले में, आमंत्रित लोगों और आमंत्रित न किए गए लोगों में कभी-कभी उतना ही आश्चर्य होता था। क्योंकि वे ऐसे समय पर अचानक प्रकट होते थे जब किसी को उनकी उम्मीद नहीं होती थी, और ऐसे लोगों को बुला लेते थे जिनके अस्तित्व को श्रीमती डी गुएरमांटे वर्षों से भूल चुकी थीं। और समाज में लगभग सभी लोग इतने महत्वहीन होते हैं कि उनके जैसे लोग उनका मूल्यांकन करते समय केवल उनकी सामाजिक सफलता को ही मापते हैं, आमंत्रित होने पर उनका सम्मान करते हैं, और आमंत्रित न किए जाने पर उनसे घृणा करते हैं। बाद वाले के बारे में, यदि यह सच था कि राजकुमारी अक्सर, यहाँ तक कि जब वे उनके मित्र थे, उन्हें आमंत्रित नहीं करती थीं, तो इसका कारण अक्सर 'पालामेडे' को नाराज़ करने का उनका डर था, जिसने उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया था। और इसलिए मुझे यकीन हो सकता है कि उन्होंने मेरे बारे में एम. डी चार्लस से बात नहीं की थी, अन्यथा मैं वहाँ नहीं होता। इस बीच, वह घर और बगीचे के बीच, जर्मन राजदूत के बगल में तैनात थे, बगीचे से घर की ओर जाने वाली विशाल सीढ़ी की रेलिंग पर झुके हुए थे, ताकि अन्य मेहमान, बैरन के चारों ओर जमा तीन-चार महिला प्रशंसकों के बावजूद, जो उन्हें लगभग छिपाए हुए थीं, गुजरते समय उनका अभिवादन करने के लिए बाध्य हों। उन्होंने बारी-बारी से उनका नाम लेकर जवाब दिया। और लगातार यही आवाज़ें सुनाई दे रही थीं: "शुभ संध्या, महाशय डू हज़े, शुभ संध्या, मैडम डे ला टूर डू पिन-वक्लाँज़, शुभ संध्या, मैडम डे ला टूर डू पिन-गवर्नट, शुभ संध्या, फिलिबर्ट, शुभ संध्या, मेरी प्रिय राजदूत," इत्यादि। इससे लगातार भौंकने की आवाज़ आती रही, जिसके बीच-बीच में दयालु सुझाव या पूछताछ सुनाई देती रही (जिनके जवाबों पर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया)। एम. डी चार्लस ने उन्हें नरम, बनावटी और सौम्य स्वर में संबोधित किया, ताकि उनकी उदासीनता झलकती रहे:

"ध्यान रखना, बच्चे को सर्दी न लग जाए, बगीचों में हमेशा नमी रहती है। शुभ संध्या, मैडम डी ब्रांटेस। शुभ संध्या, मैडम डी मेक्लेंबर्ग। क्या आप अपनी बेटी को लाई हैं? क्या उसने वह सुंदर गुलाबी फ्रॉक पहनी है? शुभ संध्या, सेंट-गेरान।" निश्चित रूप से उनके इस रवैये में गर्व का भाव था, क्योंकि एम. डी चार्लस जानते थे कि वे एक गुएरमांटेस हैं और इस पार्टी में उनका सर्वोच्च स्थान है। लेकिन इसमें गर्व से कहीं अधिक कुछ था, और 'फ़ेट' शब्द ही, कलात्मक प्रतिभा वाले उस व्यक्ति के मन में, उस विलासितापूर्ण और जिज्ञासापूर्ण भाव को जगाता था, जो तब उत्पन्न हो सकता था जब यह पार्टी समकालीन समाज के लोगों द्वारा नहीं, बल्कि कार्पैसिओ या वेरोनीज़ की किसी पेंटिंग में आयोजित की जा रही हो। यह अत्यंत संभव है कि जर्मन राजकुमार एम. डी चार्लस ने अपने मन में टैनहॉसर में होने वाले स्वागत की कल्पना की होगी, और स्वयं को मार्गेव के रूप में, वारबर्ग के प्रवेश द्वार पर अपने प्रत्येक अतिथि के लिए विनम्रतापूर्ण शब्दों के साथ खड़े देखा होगा, जबकि महल या पार्क में उनके जुलूस का स्वागत प्रसिद्ध मार्च के लंबे वाक्यांश के साथ सौ बार दोहराया जाता है।

लेकिन मुझे अपना मन बना ही लेना चाहिए। पेड़ों के नीचे मैं कई महिलाओं को पहचान सकती थी जिनसे मैं कमोबेश परिचित थी, लेकिन वे बदली हुई सी लग रही थीं क्योंकि वे राजकुमारी के घर थीं, उनकी चचेरी बहन के घर नहीं, और क्योंकि मैंने उन्हें ड्रेस्डेन चाइना की प्लेटों के सामने नहीं, बल्कि शाहबलूत के पेड़ की शाखाओं के नीचे बैठे देखा था। उनकी बैठने की जगह कितनी भी शानदार क्यों न हो, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर वह ओरियान के घर से कहीं कम शानदार होती, तो भी मुझे उतनी ही बेचैनी होती। जब हमारे ड्राइंग रूम की बिजली चली जाती है और हमें तेल के दीयों का इस्तेमाल करना पड़ता है, तो सब कुछ बदला हुआ सा लगता है। श्रीमती डी सौव्रे ने मेरी दुविधा दूर की। "शुभ संध्या," उन्होंने मेरे पास आते हुए कहा। "क्या आपने हाल ही में डचेस डी गुएरमांटेस को देखा है?" इस तरह के भाषणों में उनकी बोलने की शैली इतनी निपुण थी कि यह साबित हो जाता था कि वे ये बातें महज़ नादानी में नहीं कह रही थीं, उन लोगों की तरह नहीं जिन्हें बात करने का विषय नहीं सूझता और वे बार-बार आकर किसी मामूली जान-पहचान का ज़िक्र कर देते हैं। इसके विपरीत, उनकी नज़र में एक सूक्ष्म तार था जो यह दर्शाता था: "एक पल के लिए भी यह मत सोचो कि मैंने तुम्हें पहचाना नहीं है। तुम वही नौजवान हो जिससे मैं डचेस डी गुएरमांटेस

के यहाँ मिली थी। मुझे अच्छी तरह याद है।" दुर्भाग्य से, यह सुरक्षा, जो मुझे इस वाक्य से मिली थी, देखने में तो मूर्खतापूर्ण लेकिन इरादे में कोमल, अत्यंत नाजुक थी और जैसे ही मैंने इसका इस्तेमाल करने की कोशिश की, गायब हो गई। मैडम डी सौव्रे में यह कला थी कि यदि उन्हें किसी प्रभावशाली व्यक्ति से कोई अनुरोध करना होता, तो वे याचिकाकर्ता की नज़र में उसकी सिफ़ारिश करती हुई प्रतीत होतीं, जबकि प्रभावशाली व्यक्ति की नज़र में याचिकाकर्ता की सिफ़ारिश नहीं करतीं। इस तरह उनका यह अस्पष्ट इशारा याचिकाकर्ता के मन में कृतज्ञता का भाव पैदा कर देता था, और उन्हें किसी भी तरह से याचिकाकर्ता का ऋणी नहीं बनाता था। इस महिला के शिष्टाचार से प्रेरित होकर मैंने उनसे मुझे एम. डी गुएरमांटेस से मिलवाने का अनुरोध किया। मैंने पाया कि उन्होंने उस क्षण का लाभ उठाया जब हमारे मेज़बान हमारी ओर नहीं देख रहे थे, उन्होंने मेरे कंधे पर ममतामयी हाथ रखा और राजकुमार के दूसरी ओर मुड़े चेहरे पर मुस्कुराते हुए, दिखावटी सुरक्षा के इशारे से मुझे उनकी ओर धकेल दिया, जो जानबूझकर अप्रभावी था, और मुझे लगभग वहीं छोड़ दिया जहाँ से मैंने शुरुआत की थी। समाज में लोगों की यही कायरता है।

एक महिला जो मुझसे मिलने आई और मुझे मेरे नाम से पुकारा, उसकी यादें कहीं अधिक गहरी थीं। उससे बात करते हुए मैंने उसका नाम याद करने की कोशिश की; मुझे अच्छी तरह याद था कि हम रात के खाने पर मिले थे, मुझे उसकी कही बातें भी याद थीं। लेकिन मेरा ध्यान, जो उसके साथ बिताए उन यादों के अंतर्मन में केंद्रित था, उसका नाम खोजने में असमर्थ रहा। फिर भी, नाम वहाँ था। मेरे विचार उसके साथ एक तरह का खेल खेलने लगे, उसकी रूपरेखा, उसका पहला अक्षर, और अंत में पूरे नाम को समझने की कोशिश करने लगे। यह व्यर्थ का प्रयास था, मैं उसके आकार, उसके भार का कुछ हद तक अनुमान लगा सकता था, लेकिन उसके स्वरूपों की बात करें तो, अंतर्मन के अंधेरे में छिपे धुंधले कैदी के सामने उसका सामना करते हुए, मैंने खुद से कहा: "यह वह नहीं है।" निश्चित रूप से मेरा मन सबसे कठिन नामों को भी गढ़ने में सक्षम होता। दुर्भाग्य से, उसे गढ़ना नहीं था, बल्कि पुनरुत्पादन करना था। मन की हर क्रिया आसान होती है, यदि उसे वास्तविकता की कसौटी पर न परखा जाए। यहाँ, मुझे अपनी हार स्वीकार करनी पड़ी। अंततः, एक पल में, मुझे पूरा नाम याद आ गया: 'मैडम डी'अर्पाजोन।' यह कहना गलत होगा कि यह अचानक आया, क्योंकि मुझे नहीं लगता

कि यह स्वतः प्रकट हुआ। मुझे यह भी नहीं लगता कि वे कई धुंधली यादें जो मुझे उस महिला से जोड़ती थीं, और जिनसे मैं मदद के लिए बार-बार गुहार लगाता रहा (जैसे कि: "अरे, यह वही महिला है जो श्रीमती डी सौव्रे की मित्र हैं, जो विक्टर ह्यूगो के लिए इतनी भोली प्रशंसा रखती हैं, जिसमें इतना भय और डर भी मिला हुआ है")—मुझे विश्वास नहीं है कि ये सभी यादें, जो मेरे और उनके नाम के बीच मंडरा रही थीं, किसी भी तरह से इसे सामने लाने में सहायक रहीं। हमारी स्मृति में नाम को याद करने के लिए खेले जाने वाले उस लुका-छिपी के खेल में, धीरे-धीरे नाम के करीब आने की कोई प्रक्रिया नहीं होती। हमें कुछ दिखाई नहीं देता, फिर अचानक नाम अपने सटीक रूप में प्रकट होता है और उससे बहुत अलग होता है जैसा हमने सोचा था। यह वह नाम नहीं है जो हमें याद आया है। नहीं, मेरा मानना है कि जैसे-जैसे हम जीते हैं, हम अपना समय उस क्षेत्र से दूर रहने में बिताते हैं जहाँ नाम स्पष्ट होता है, और यह मेरी इच्छाशक्ति और एकाग्रता के अभ्यास से ही संभव हुआ जिसने मेरी अंतर्दृष्टि की तीक्ष्णता को बढ़ाया और अचानक ही मैंने अर्ध-अंधकार को भेदकर दिन का उजाला देख लिया। किसी भी स्थिति में, यदि विस्मृति और स्मृति के बीच संक्रमण होते हैं, तो ये संक्रमण अचेतन होते हैं। क्योंकि जिन मध्यवर्ती नामों से हम वास्तविक नाम पाने से पहले गुजरते हैं, वे स्वयं झूठे होते हैं और हमें उसके निकट कहीं नहीं लाते। वास्तव में, वे नाम भी नहीं होते, बल्कि अक्सर केवल व्यंजन होते हैं जो पुनः प्राप्त नाम में नहीं मिलते। फिर भी, मन की यह क्रिया, शून्य से वास्तविकता की ओर, इतनी रहस्यमय है कि यह संभव है कि ये झूठे व्यंजन वास्तव में सहारे हों, जो हमें सही नाम पकड़ने में सक्षम बनाने के लिए अटपटे ढंग से आगे बढ़ाए गए हों। पाठक शायद कहेंगे, "यह सब हमें उस महिला की अनिच्छा के बारे में कुछ नहीं बताता; लेकिन चूंकि आपने इतना लंबा विषयांतर कर दिया है, तो मुझे, प्रिय लेखक, आपका एक और क्षण बर्बाद करने दीजिए, यह बताने के लिए कि यह अफ़सोस की बात है कि आपकी कम उम्र में (या आपके नायक की, यदि वह आप स्वयं नहीं हैं), आपकी स्मृति इतनी कमज़ोर थी कि आप उस महिला का नाम भी याद नहीं कर पाए जिसे आप अच्छी तरह जानते थे।" यह सचमुच अफ़सोस की बात है, प्रिय पाठक। और यह आपके विचार से भी कहीं अधिक दुखद है जब व्यक्ति उस समय को निकट आते हुए महसूस करता है जब नाम और शब्द चेतना के स्पष्ट क्षेत्र से गायब हो जाएंगे, और जब व्यक्ति को उन लोगों के नाम याद रखना हमेशा के

लिए बंद करना पड़ेगा जिन्हें वह सबसे घनिष्ठ रूप से जानता था। यह सचमुच अफ़सोस की बात है कि किसी को कम उम्र में ही उन नामों को याद करने के लिए इतना प्रयास करना पड़ता है जिन्हें वह अच्छी तरह जानता है। लेकिन अगर यह कमज़ोरी केवल उन नामों के मामले में होती जिन्हें मुश्किल से जाना जाता है, स्वाभाविक रूप से भुला दिया जाता है, ऐसे नाम जिन्हें याद रखने की कोई परवाह नहीं करता, तो इस कमज़ोरी के अपने फायदे भी होते। "और वे क्या हैं, क्या मैं पूछ सकता हूँ?" जी हाँ, महोदय, यह बीमारी ही हमें सोचने और समझने पर मजबूर करती है, और हमें उस प्रक्रिया का विश्लेषण करने का अवसर देती है जिसके बारे में अन्यथा हम कुछ भी नहीं जान पाते। एक ऐसा व्यक्ति जो रात-रात भर बिस्तर पर सीसे के लोथड़े की तरह गिर पड़ता है, और जब तक जागकर उठता नहीं, तब तक उसे कोई जीवन का अनुभव नहीं होता, क्या ऐसा व्यक्ति कभी नींद पर, मैं यह नहीं कह रहा कि बड़ी खोजें, बल्कि सूक्ष्म अवलोकन करने का सपना भी देख सकता है? उसे तो यह भी मुश्किल से पता होता है कि वह सोता है। थोड़ी सी अनिद्रा भी नींद का महत्व समझने में हमारी मदद करती है, उस अंधकार पर प्रकाश डालती है। त्रुटिरहित स्मृति, स्मृति की घटनाओं का अध्ययन करने के लिए कोई बहुत मजबूत प्रेरणा नहीं है। "संक्षेप में, क्या श्रीमती डी'अर्पाजोन ने आपका परिचय राजकुमार से कराया था?" नहीं, लेकिन चुप रहिए और मुझे अपनी कहानी जारी रखने दीजिए।

श्रीमती डी अर्पाजोन, श्रीमती डी सौव्रे से भी अधिक कायर थीं, लेकिन उनकी कायरता का एक और कारण था। वह जानती थीं कि समाज में उनका प्रभाव हमेशा से ही बहुत कम रहा है। ड्यूक डी गुएरमांटेस के साथ उनके संबंध ने उनके प्रभाव को और भी कम कर दिया था; उनके द्वारा उन्हें छोड़ दिए जाने ने इसे अंतिम झटका दिया। राजकुमार से मेरा परिचय कराने के मेरे अनुरोध पर उनके मन में जो आक्रोश था, उससे ऐसी चुप्पी छा गई, जिसे उन्होंने भोली-भाली होने के कारण यह मान लिया कि उन्होंने मेरी बात सुनी ही नहीं। उन्हें इस बात का भी एहसास नहीं था कि वह गुस्से से अपनी भौंहें सिकोड़ रही थीं। शायद, दूसरी ओर, उन्हें इसका एहसास था, उन्होंने इस विरोधाभास की परवाह नहीं की, और इसका उपयोग उस सबक के लिए किया जो वह मुझे बिना किसी अनुचित अभद्रता के सिखा सकीं; मेरा मतलब है एक मौन सबक, लेकिन फिर भी उतना ही प्रभावशाली।

इसके अलावा, श्रीमती डी'अर्पाजोन बेहद नाराज़ थीं; कई निगाहें एक पुनर्जागरणकालीन बालकनी की ओर उठीं, जिसके कोने पर, उस दौर में अक्सर सजावट के तौर पर इस्तेमाल होने वाली विशाल मूर्तियों के बजाय, उन्हीं मूर्तियों से कम सुंदर नहीं, भव्य मार्क्विज़ डी सर्जिस-ले-ड्यूक की प्रतिमा टिकी हुई थी, जिन्होंने हाल ही में बेसिन डी गुएरमांटेस के केंद्र में श्रीमती डी'अर्पाजोन का स्थान लिया था। ठंडी रात की हवा से उन्हें बचाने वाले पतले सफेद ट्यूल के नीचे, एक पंखदार विजय की कोमल आकृति दिखाई दे रही थी। मेरे पास एम. डी चार्लस के अलावा कोई चारा नहीं बचा था, जो नीचे के एक कमरे में चले गए थे, जिसका मुख बगीचे की ओर था। मेरे पास काफी समय था (क्योंकि वह व्हिस्ट के एक काल्पनिक खेल में मग्न होने का नाटक कर रहा था, जिससे वह लोगों को अनदेखा करता हुआ प्रतीत हो रहा था) उसके शाम के कोट की जानबूझकर बनाई गई, कलात्मक सादगी की प्रशंसा करने के लिए, जिसमें दर्जी की नज़र से ही पकड़ी जा सकने वाली छोटी-छोटी बारीकियों से व्हिस्लर की 'हार्मनी इन ब्लैक एंड व्हाइट' की झलक मिल रही थी; बल्कि काला, सफेद और लाल, क्योंकि एम. डी चार्लस ने अपने कोट के लैपल पर पिन किए गए एक चौड़े रिबन से माल्टा के धार्मिक आदेश के एक नाइट का क्रॉस लटका रखा था, जो सफेद, काले और लाल एनामेल से बना था। उसी क्षण बैरन का खेल श्रीमती डी गैलार्डन द्वारा बाधित हुआ, जो अपने भतीजे, विस्काउंट डी कौरवॉइसियर को लेकर आई थीं, जो एक आकर्षक चेहरे और उद्दंड स्वभाव वाला युवक था। "चचेरे भाई," श्रीमती डी गैलार्डन ने कहा, "मुझे अपने भतीजे एडलबर्ट से मिलवाने की अनुमति दें। एडलबर्ट, आपको प्रसिद्ध पलामेडे याद होगा, जिसके बारे में आपने बहुत कुछ सुना है।" “शुभ संध्या, मैडम डी गैलार्डन,” एम. डी चार्लस ने उत्तर दिया। और उन्होंने युवक की ओर देखे बिना ही कहा: “शुभ संध्या, महोदय,” एक उग्र भाव से और इतने असभ्य लहजे में कि कमरे में मौजूद हर कोई स्तब्ध रह गया। शायद एम. डी चार्लस, यह जानते हुए कि मैडम डी गैलार्डन को उनके नैतिक मूल्यों पर संदेह था और यह अनुमान लगाते हुए कि वह पहली बार उन पर टिप्पणी करने के प्रलोभन का विरोध नहीं कर पाई थीं, अपने भतीजे के मैत्रीपूर्ण स्वागत पर किसी भी संभावित कलंक को जड़ से खत्म करने के लिए दृढ़ थे, साथ ही साथ आम तौर पर युवकों के प्रति उदासीनता का जोरदार प्रदर्शन भी कर रहे थे; शायद उन्होंने यह नहीं सोचा था कि उक्त एडलबर्ट ने अपनी चाची के भाषण का पर्याप्त

सम्मानजनक तरीके से जवाब दिया था; शायद, आने वाले समय में अपनी इतनी आकर्षक चचेरी बहन के साथ संबंध मजबूत करने की इच्छा से, उन्होंने प्रारंभिक हमले का लाभ उठाने का विकल्प चुना, ठीक वैसे ही जैसे वे सम्राट करते हैं जो कूटनीतिक कार्रवाई में संलग्न होने से पहले युद्ध की कार्रवाई से इसे मजबूत करते हैं।

मुझे लगा था कि एम. डी चार्लस को प्रिंस डी गुएरमांटेस से मिलवाने के मेरे अनुरोध के लिए राजी करना उतना मुश्किल नहीं था जितना मैंने सोचा था। एक तो यह कि पिछले बीस वर्षों में, इस डॉन क्विक्सोट ने इतने सारे लोगों से लड़ाई लड़ी थी (अक्सर वे रिश्तेदार थे जिनके बारे में उसे लगता था कि उन्होंने उसके साथ बुरा बर्ताव किया है), उसने इतनी बार लोगों को 'घर में रखना असंभव' कहकर गुएरमांटेस परिवार के विभिन्न पुरुष या महिला सदस्यों के निमंत्रण से मना किया था कि वे अपने सभी परिचितों और पसंद के लोगों से झगड़ा करने से डरने लगे थे, और उन नए लोगों की संगति से जीवन भर वंचित रहने से डरने लगे थे जिनसे वे मिलने के लिए उत्सुक थे, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं वे अपने साले या चचेरे भाई की भयंकर लेकिन अस्पष्ट दुश्मनी को न अपना लें, जो उनसे अपने लिए पत्नी, भाई, बच्चों को छोड़ने की उम्मीद करता था। अन्य गुएरमांटे भाइयों की तुलना में अधिक बुद्धिमान, एम. डी चार्लस ने महसूस किया कि लोग उनके वीटो पर लगभग ध्यान देना बंद कर चुके थे, सिवाय कभी-कभार ही। भविष्य को देखते हुए, इस डर से कि कहीं एक दिन उनकी ही संगति न हो जाए, उन्होंने रियायतें देना शुरू कर दिया था, यानी अपनी शर्तों को कम करना शुरू कर दिया था। इसके अलावा, यदि उनमें किसी घृणित व्यक्ति को महीनों, वर्षों तक एक समान जीवन देने की क्षमता होती, तो वे ऐसे व्यक्ति को निमंत्रण भेजना भी बर्दाश्त नहीं करते, बल्कि एक सैनिक की तरह रानी से लड़ते, क्योंकि उनके रास्ते में आने वाले व्यक्ति का दर्जा उनकी नज़रों में कोई मायने नहीं रखता था। दूसरी ओर, उनके क्रोध के विस्फोट इतने बार-बार होते थे कि वे कुछ हद तक खंडित ही रहते थे। “वह मूर्ख, वह बदमाश! हमें उसे उसकी औकात दिखानी होगी, उसे नाली में फेंकना होगा, जहाँ दुर्भाग्य से वह शहर के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक साबित होगा,” वह चिल्लाता था, यहाँ तक कि जब वह अपने कमरे में अकेला होता था, कोई ऐसा पत्र पढ़ते हुए जिसे वह अपमानजनक समझता था, या किसी ऐसी टिप्पणी को याद करते हुए जो उसे दोहराई गई थी। लेकिन दूसरे मूर्ख के खिलाफ एक नए गुस्से ने पहले वाले को

बेअसर कर दिया, और पहले पीड़ित को केवल उस संकट के प्रति उचित सम्मान दिखाना पड़ा जिसे उसने पैदा किया था ताकि उसे भुला दिया जाए, क्योंकि यह इतना लंबा नहीं चला था कि नफरत की नींव बन सके जिस पर वह पनप सके। और इसलिए, शायद—मेरे प्रति उनके चिड़चिड़े स्वभाव के बावजूद—मैं सफल हो जाती जब मैंने उनसे राजकुमार से मेरा परिचय कराने के लिए कहा, यदि मैंने अंतरात्मा की झिझक के चलते और यह न सोचती कि मैं बिना सोचे-समझे उनके घर में प्रवेश कर रही हूँ और वहाँ रहने के लिए उन पर निर्भर हूँ, तो मैंने यह न कहा होता: "आप जानते हैं कि मैं उन्हें अच्छी तरह जानती हूँ, राजकुमारी मेरे प्रति बहुत दयालु रही हैं।" "ठीक है, अगर आप उन्हें जानती हैं, तो आपको मुझसे परिचय कराने की क्या ज़रूरत है?" उन्होंने तीखे स्वर में उत्तर दिया, और पीठ फेरकर नुनसियो, जर्मन राजदूत और एक अन्य व्यक्ति के साथ अपना काल्पनिक खेल फिर से शुरू कर दिया, जिसे मैं पहचानती नहीं थी।

फिर, उन उद्यानों की गहराई से, जहाँ अतीत में ड्यूक डी'आइगुइलन दुर्लभ पशुओं का पालन-पोषण किया करते थे, विशाल, खुले दरवाजों से मेरे कानों में एक सूंघती हुई नाक की आवाज़ आई, जो उन सभी बारीकियों का स्वाद ले रही थी और उनमें से किसी को भी चूकना नहीं चाहती थी। आवाज़ पास आई, मैं हिम्मत करके उसकी दिशा में बढ़ा, और परिणामस्वरूप एम. डी ब्रेउटे ने मेरे कान में 'शुभ संध्या' फुसफुसाया, जो किसी पत्थर पर धार तेज किए जा रहे चाकू की जंग लगी धातु जैसी आवाज़ नहीं थी, न ही खेतों को तबाह करने वाले जंगली सूअर की चीख थी, बल्कि किसी संभावित उद्धारकर्ता की आवाज़ थी।

श्रीमती डी सौव्रे की तुलना में कम प्रभावशाली, लेकिन उनकी तरह आज्ञाकारी न होने की अक्षमता से कम ग्रस्त, श्रीमती डी अर्पाजोन की तुलना में राजकुमार के साथ कहीं अधिक सहज, शायद गुएरमांटेस समूह में मेरी स्थिति के बारे में कुछ भ्रम पाल रहे थे, या शायद मुझसे अधिक जानते थे, फिर भी पहले कुछ क्षणों के लिए मुझे उनका ध्यान आकर्षित करने में कुछ कठिनाई हुई, क्योंकि फड़फड़ाते, फूले हुए नथुनों के साथ, वे हर दिशा में घूम रहे थे, जिज्ञासा से अपना एक चश्मा बाहर निकाल रहे थे, मानो वे स्वयं को कला की पाँच सौ अद्वितीय कृतियों के सामने पा रहे हों। लेकिन, मेरा अनुरोध सुनकर, उन्होंने इसे संतुष्टिपूर्वक स्वीकार किया, मुझे राजकुमार के पास ले गए और मुझे बड़े ही आनंदमय, औपचारिक, अशिष्ट भाव से उनके

सामने पेश किया, मानो वे प्रशंसा के शब्दों के साथ उन्हें केक की थाली सौंप रहे हों। जिस प्रकार ड्यूक डी गुएरमांटेस का अभिवादन, जब वे चाहें, मैत्रीपूर्ण, सौहार्दपूर्ण और आत्मीय होता था, ठीक उसी प्रकार मैंने राजकुमार का अभिवादन कठोर, गंभीर और अभिमानी पाया। उन्होंने मुश्किल से ही मेरी ओर मुस्कुराया, मुझे गंभीरता से 'सर' कहकर संबोधित किया। मैंने अक्सर ड्यूक को अपने चचेरे भाई की कठोरता का मज़ाक उड़ाते सुना था। लेकिन उनके द्वारा मुझसे कहे गए पहले शब्दों से ही, जो अपने ठंडे और गंभीर स्वर से बेसिन की भाषा के बिल्कुल विपरीत थे, मुझे तुरंत एहसास हो गया कि मूल रूप से तिरस्कारपूर्ण व्यक्ति ड्यूक थे, जो आपसे पहली मुलाकात में 'एक आदमी से दूसरे आदमी' की तरह बात करते थे, और दोनों चचेरे भाइयों में से, वास्तव में सरल व्यक्ति राजकुमार थे। मैंने उनके संयम में एक मजबूत भावना पाई, मैं समानता की भावना नहीं कहूँगा, क्योंकि यह उनके लिए अकल्पनीय होता, लेकिन कम से कम उस सम्मान की भावना जो एक निम्न व्यक्ति के प्रति दिखाई जा सकती है, जैसा कि सभी सुदृढ़ पदानुक्रमित समाजों में पाया जाता है; उदाहरण के लिए, विधि न्यायालयों में, किसी संकाय में, जहाँ एक लोक अभियोजक या डीन, अपने उच्च दायित्व के प्रति सचेत रहते हुए, शायद अधिक वास्तविक सरलता और, जब आप उन्हें बेहतर तरीके से जान लेते हैं, तो अधिक दयालुता, सच्ची सादगी और सौहार्द को अपने पारंपरिक अलगाव के नीचे छुपाते हैं, जबकि आधुनिक समकक्ष अपने सौहार्दपूर्ण दिखावे के पीछे ऐसा नहीं कर पाते। "क्या आप अपने पिता, महाशय, के पेशे का अनुसरण करना चाहते हैं?" उन्होंने मुझसे एक दूरी भरे लेकिन रुचिपूर्ण लहजे में कहा। मैंने उनके प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर दिया, यह समझते हुए कि उन्होंने यह केवल शिष्टाचारवश पूछा था, और उन्हें नए आने वालों का अभिवादन करने के लिए जगह देने के लिए एक तरफ हट गया।

मैंने स्वान को देखा और उससे बात करने का इरादा किया, लेकिन उसी क्षण मैंने देखा कि प्रिंस डी गुएरमांटेस, ओडेट के पति का अभिवादन स्वीकार करने के लिए जहाँ वह था, वहाँ प्रतीक्षा करने के बजाय, तुरंत एक सक्शन पंप की ताकत से उसे बगीचे के दूसरे छोर पर ले गया, ताकि, जैसा कि कुछ लोगों ने कहा, 'उसे बाहर का रास्ता दिखा सके।'

मैं उस समूह में इतना मग्न था कि मुझे दो दिन बाद अखबारों से पता चला कि पूरी शाम एक चेक ऑर्केस्ट्रा बज रहा था और बंगाल लाइटें लगातार जल रही थीं। ह्यूबर्ट रॉबर्ट के प्रसिद्ध फव्वारे को देखने जाने के विचार से मेरी ध्यान शक्ति कुछ हद तक वापस लौटी।

सुंदर वृक्षों से घिरे एक एकांत स्थान पर स्थित, जहाँ कई वृक्ष स्वयं के समान ही पुराने थे, यह आकाश दूर से दिखाई देता था। पतला, स्थिर, कठोर, हवा के झोंकों से केवल इसके हल्के और कांपते हुए जलप्रपात को ही हिला पाता था। अठारहवीं शताब्दी ने इसकी रेखाओं की सुंदरता को निखारा था, लेकिन जलप्रपात की शैली को स्थिर करके मानो इसका जीवन अवरुद्ध कर दिया था; इतनी दूरी से देखने पर यह जल के निष्कर्ष के रूप में किसी कलाकृति का आभास देता था। इसके शिखर पर निरंतर एकत्रित होता नम बादल उस काल की विशेषता को उसी प्रकार संरक्षित रखता था जैसे वर्साय के महलों के चारों ओर आकाश में एकत्रित बादल। परन्तु निकट से देखने पर यह बोध होता था कि यद्यपि यह किसी प्राचीन महल के पत्थरों की तरह पूर्व-निर्धारित डिजाइन का सम्मान करता था, परन्तु यह जल की एक निरंतर बदलती धारा थी जो ऊपर की ओर उछलती हुई और वास्तुकार के पारंपरिक निर्देशों का पालन करने का प्रयास करती हुई, उन्हें अक्षरशः तो पूरा करती थी, पर ऐसा प्रतीत होता था मानो उनका उल्लंघन कर रही हो। इसकी हजारों अलग-अलग धाराएँ दूर से देखने पर ही एक ही प्रवाह का आभास देती थीं। वास्तव में यह उतनी ही बार बाधित हो रहा था जितनी बार पानी का बिखरना, जबकि दूर से देखने पर यह मुझे अडिग, ठोस और निरंतर प्रतीत हो रहा था। थोड़ा और पास से देखने पर पता चला कि यह निरंतरता, जो देखने में पूर्ण प्रतीत हो रही थी, जलधारा के ऊपर उठने के हर बिंदु पर सुनिश्चित थी, जहाँ अन्यथा यह टूट सकती थी, वहाँ एक समानांतर जलधारा के पार्श्व समावेशन द्वारा, जो पहली जलधारा से अधिक ऊँचाई पर उठती थी और स्वयं अधिक ऊँचाई पर होने के कारण, अपनी सहनशक्ति पर दबाव डाल रही थी, एक तीसरी जलधारा द्वारा राहत प्रदान की जा रही थी। पास से देखने पर, शक्तिहीन बूँदें जल स्तंभ से वापस गिरती थीं, रास्ते में अपनी ऊपर चढ़ती बहनों को पार करती थीं और कभी-कभी, रात की हवा के भंवर में फंसकर, इस निरंतर प्रवाह से विचलित होकर, कुछ देर तैरती रहती थीं, फिर बेसिन में डूब जाती थीं। वे अपनी झिझक से, विपरीत दिशा में अपने प्रवाह से चिढ़ा रहे थे, और अपनी कोमल वाष्प से उस तने के ऊर्ध्वाधर तनाव को धुंधला कर

रहे थे, जो हजारों छोटी-छोटी बूंदों से बने एक आयताकार बादल को ऊपर उठाए हुए था, लेकिन मानो एक अपरिवर्तनीय, सुनहरे भूरे रंग में रंगा हुआ था, जो अटूट, स्थिर, तीव्र और तेज़ी से ऊपर उठकर आकाश के बादलों में मिल गया। दुर्भाग्य से, हवा का एक झोंका ही उसे तिरछे जमीन पर बिखेरने के लिए काफी था; कई बार तो एक अकेली बत्ती अपने आदेश का उल्लंघन करते हुए मुड़ जाती थी और यदि वे सम्मानजनक दूरी न बनाए रखते, तो लापरवाह दर्शकों की पूरी भीड़ भीग जाती।

इन छोटी-मोटी दुर्घटनाओं में से एक, जो हवा के क्षणिक रूप से चलने पर ही घटित हो सकती थी, बेहद अप्रिय थी। किसी ने श्रीमती डी'अर्पाजोन को बताया था कि ड्यूक डी गुएरमांटेस, जो वास्तव में अभी तक नहीं आए थे, श्रीमती डी सर्जिस के साथ गुलाबी संगमरमर की उन दीर्घाओं में से एक में थे, जहाँ तक पहुँचने के लिए दीवार में खोखली की गई दोहरी स्तंभों वाली सीढ़ी से जाना पड़ता था, जो फव्वारे के किनारे से ऊपर उठती थी। अब, जैसे ही श्रीमती डी'अर्पाजोन इन सीढ़ियों में से एक की ओर बढ़ रही थीं, गर्म हवा के एक तेज़ झोंके ने पानी की धार को मोड़ दिया और सुंदर महिला को इस कदर भिगो दिया कि, उनके खुले सीने से पानी उनकी पोशाक के अंदर बह रहा था, और वह इस तरह भीग गईं मानो उन्हें किसी स्नानघर में डुबो दिया गया हो। इसके बाद, कुछ ही फीट की दूरी पर, एक लयबद्ध गर्जना गूंजी, जो पूरी सेना को सुनाई देने जितनी तेज़ थी, और साथ ही रुक-रुक कर लंबी होती जा रही थी, मानो यह पूरी सेना को नहीं बल्कि बारी-बारी से प्रत्येक इकाई को संबोधित हो रही हो; यह ग्रैंड ड्यूक व्लादिमीर थे, जो श्रीमती डी'अर्पाजोन के जलमग्न होने को देखकर दिल खोलकर हंस रहे थे, जो उनके जीवन के सबसे मज़ेदार दृश्यों में से एक था, जैसा कि वे बाद में बार-बार दोहराते रहे। कुछ दयालु लोगों ने मॉस्कोवासी को सुझाव दिया कि शायद उनकी ओर से सहानुभूति के कुछ शब्द उचित होंगे और इससे उस महिला को प्रसन्नता होगी जो चालीस सर्दियों की अपनी पूरी कहानी सुनाने के बावजूद, बिना किसी से मदद मांगे, अपने दुपट्टे से खुद को पोंछते हुए, बेसिन के किनारे से लगातार बहते पानी के बावजूद आगे बढ़ रही थी। दयालु हृदय वाले ग्रैंड ड्यूक ने उचित समय पर कुछ कहना उचित समझा, और उनकी हंसी की आखिरी गड़गड़ाहट पूरी तरह शांत होने से पहले ही, एक नई गर्जना सुनाई दी, जो पिछली गर्जना से भी अधिक मुखर थी। "शाबाश, बूढ़ी औरत!" उन्होंने थिएटर में ताली बजाते

हुए कहा। श्रीमती डी'अर्पाजोन को यह बिल्कुल भी पसंद नहीं आया कि उनकी युवावस्था की कीमत पर उनकी कुशलता की प्रशंसा की जा रही है। और जब किसी ने पानी की गर्जना में दबी हुई आवाज में, जिस पर राजसी गर्जना गूंज रही थी, उनसे कहा: "मुझे लगता है कि महामहिम ने आपसे कुछ कहा है।" "नहीं! यह श्रीमती डी सौव्रे के लिए था," उन्होंने जवाब दिया।

मैं बगीचों से गुज़रा और सीढ़ियों से वापस लौटा। राजकुमार, जो स्वान के साथ गायब हो गए थे, की अनुपस्थिति के कारण एम. डी चार्लस के चारों ओर मेहमानों की भीड़ बढ़ गई थी, ठीक वैसे ही जैसे लुई XIV के वर्साय में न होने पर उनके भाई महाशय के यहाँ अधिक संख्या में लोग आते थे। रास्ते में बैरन ने मुझे रोक लिया, जबकि मेरे पीछे दो महिलाएं और एक युवक उनका अभिवादन करने के लिए आए।

"आपको यहाँ देखकर अच्छा लगा," उन्होंने हाथ बढ़ाते हुए मुझसे कहा। "शुभ संध्या, मैडम डे ला ट्रेमोइल, शुभ संध्या, मेरी प्यारी हर्मिनी।" लेकिन निस्संदेह, होटल गुएरमांटेस में अपनी सर्वोच्च स्थिति के बारे में उन्होंने मुझसे जो कहा था, उसकी याद ने उन्हें यह दिखाने के लिए प्रेरित किया कि जिस बात ने उन्हें परेशान किया था, लेकिन जिसे वे रोक नहीं पाए थे, उसके प्रति उन्हें संतुष्टि महसूस हो रही है। उनकी इस संतुष्टि को उनकी अक्खड़ और उग्र उद्दंडता ने अतिरंजित व्यंग्य के आवरण में लपेट दिया। "अच्छा है," उन्होंने दोहराया, "लेकिन यह वास्तव में बहुत अजीब है।" और वे ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगे, जो उनकी खुशी और उसे व्यक्त करने में मानवीय भाषा की अपर्याप्तता दोनों को एक साथ दर्शा रहा था। इस बीच, कुछ लोग, जो जानते थे कि उनसे मिलना कितना मुश्किल है और वे कितने उद्दंड जवाब देने के आदी हैं, जिज्ञासावश हमारी ओर आकर्षित हुए और लगभग अभद्र जल्दबाजी में वहां से भाग गए। "अरे, नाराज़ मत हो," उन्होंने मेरे कंधे पर धीरे से थपथपाते हुए कहा, "तुम जानते हो कि मैं तुम्हारा दोस्त हूँ। शुभ संध्या, एंटिओक, शुभ संध्या, लुई-रेने। क्या तुम फव्वारा देखने गए थे?" उन्होंने मुझसे सवालिया लहजे के बजाय सकारात्मक लहजे में पूछा। "यह बहुत सुंदर है, है ना? यह अद्भुत है। अगर इसमें से कुछ चीज़ें हटा दी जाएँ तो यह और भी बेहतर हो सकता है, और फिर फ्रांस में इसके जैसा कुछ नहीं होगा। लेकिन अभी भी यह सबसे बेहतरीन चीज़ों में से एक है। ब्रेओटे आपको बताएंगे कि इसके चारों ओर लैंप लगाना एक गलती थी, ताकि

लोग यह भूल जाएँ कि यह बेतुका विचार उन्हीं का था। लेकिन आखिरकार उन्होंने इसे थोड़ा सा ही बिगाड़ा है। एक महान कलाकृति को बिगाड़ना उसे बनाने से कहीं ज़्यादा मुश्किल है। ऐसा नहीं है कि हमें हमेशा से यह हल्का सा शक नहीं था कि ब्रेओटे, ह्यूबर्ट रॉबर्ट के मुकाबले उतने अच्छे नहीं थे।"

मैं घर में प्रवेश कर रहे मेहमानों की भीड़ में वापस शामिल हो गया। "क्या आपने मेरी प्यारी चचेरी बहन ओरियान को हाल ही में देखा है?" मुझसे राजकुमारी ने पूछा, जो अब दरवाजे पर अपनी जगह छोड़कर मेरे साथ कमरों की ओर जा रही थी। "वह आज रात ज़रूर यहाँ होगी, मैंने उसे आज दोपहर देखा था," मेरी मेज़बान ने आगे कहा। "उसने आने का वादा किया है। मुझे लगता है कि आप गुरुवार को दूतावास में इटली की रानी से मिलने के लिए हम दोनों के साथ भोजन करेंगे। वहाँ सभी शाही लोग मौजूद होंगे, यह बहुत ही चौंकाने वाला होगा।" वे राजकुमारी डी गुएरमांटेस को ज़रा भी नहीं चौंका सकते थे, जिनके कमरे मेहमानों से भरे रहते थे, और जो 'मेरे छोटे कोबर्ग्स' कहती थीं, जैसे कि वह 'मेरे छोटे कुत्ते' कहती हों। और इसलिए श्रीमती डी गुएरमांटेस ने सरासर मूर्खता के कारण कहा: "यह बहुत ही चौंकाने वाला होगा," जो समाज के लोगों में उनके घमंड को भी पीछे छोड़ देती है। अपने वंश के बारे में, उन्हें इतिहास का ज़रा भी ज्ञान नहीं था। अपने करीबी लोगों के बारे में, वह यह दिखाना पसंद करती थी कि उसे उनके उपनाम पता हैं। मुझसे यह पूछने पर कि क्या मैं अगले सप्ताह मार्क्विज़ डे ला पोमेलियर के साथ भोजन कर रहा हूँ, जिन्हें अक्सर 'ला पोम्मे' कहा जाता था, राजकुमारी ने नकारात्मक उत्तर मिलने पर कुछ क्षण मौन रहीं। फिर, सहज ज्ञान, सामान्यता और प्रचलित भावना के अनुरूप व्यवहार का जानबूझकर प्रदर्शन करने के अलावा, उन्होंने कहा: "वह कोई बुरी औरत नहीं है, पोम्मे!"

जब राजकुमारी मुझसे बात कर रही थीं, तभी संयोगवश ड्यूक और डचेस डी गुएरमांटेस ने प्रवेश किया। लेकिन मैं तुरंत उनसे मिलने नहीं जा सकी, क्योंकि मुझे तुर्की की राजदूत ने रोक लिया। उन्होंने मेरी मेज़बान की ओर इशारा करते हुए, जिनसे मैं अभी-अभी मिली थी, मेरा हाथ पकड़ते हुए कहा: "आह! राजकुमारी कितनी सुंदर स्त्री हैं! कितनी श्रेष्ठ हैं! मुझे पूरा यकीन है कि अगर मैं पुरुष होती," उन्होंने पूर्वी लज्जा और कामुकता के साथ आगे कहा, "तो मैं इस दिव्य प्राणी के लिए अपनी जान दे देती।" मैंने जवाब दिया कि मुझे वह वाकई आकर्षक

लगीं, लेकिन मैं उनकी चचेरी बहन, डचेस को बेहतर जानती हूँ। "लेकिन कोई तुलना ही नहीं है," राजदूत ने कहा। "ओरियान एक आकर्षक सामाजिक महिला हैं, जो मेमे और बाबल से अपनी बुद्धि प्राप्त करती हैं, जबकि मैरी-गिल्बर्ट एक विशिष्ट व्यक्तित्व हैं।"

मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं आता कि मुझे बिना जवाब देने का मौका दिए इस तरह से बताया जाए कि मुझे अपने जान-पहचान के लोगों के बारे में क्या सोचना चाहिए। और ऐसा कोई कारण नहीं था कि तुर्की की राजदूत, डचेस डी गुएरमांटेस की योग्यता का आकलन करने के लिए मुझसे किसी भी तरह से बेहतर योग्य हों।

दूसरी ओर (और इसी से राजदूत के प्रति मेरी झुंझलाहट भी स्पष्ट होती है), एक मात्र परिचित, और यहाँ तक कि एक मित्र की कमियाँ भी हमारे लिए वास्तविक विष के समान होती हैं, जिनके विरुद्ध हम सौभाग्यवश 'मिथ्रीडेटेड' होते हैं।

लेकिन, वैज्ञानिक तुलना के किसी भी मानक को लागू किए बिना और एनाफिलेक्सिस की बात किए बिना, आइए हम यह कहें कि हमारे मैत्रीपूर्ण या विशुद्ध सामाजिक संबंधों के मूल में एक शत्रुता छिपी होती है जो क्षण भर के लिए शांत हो जाती है लेकिन बार-बार उभरती रहती है। आमतौर पर, जब तक लोग 'स्वाभाविक' होते हैं, हम इन जहरों से कम ही प्रभावित होते हैं। जिन लोगों से वह परिचित नहीं थीं, उन्हें इंगित करने के लिए 'बाबल' और 'मेमे' कहकर, तुर्की राजदूत ने उस 'मिथ्रिडैटिज्म' के प्रभाव को कुछ समय के लिए रोक दिया, जिसके कारण मैं आमतौर पर उन्हें सहनशील पाता था। उन्होंने मुझे चिढ़ाया, जो और भी अनुचित था, क्योंकि उन्होंने ऐसा इसलिए नहीं कहा था कि मुझे लगे कि वह 'मेमे' की घनिष्ठ मित्र हैं, बल्कि इसलिए कि उनकी शिक्षा बहुत तेजी से हुई थी और उन्होंने इन रईसों के नाम देश के रीति-रिवाजों के अनुसार लिए थे। उन्होंने अपना पाठ्यक्रम कुछ ही महीनों में पूरा कर लिया था और नियमों को नहीं सीखा था। लेकिन, इस पर विचार करने पर मुझे राजदूत के साथ रहने की अनिच्छा का एक और कारण मिला। कुछ ही समय पहले, ओरियान के यहाँ, इसी राजनयिक ने मुझसे गंभीर और दृढ़ स्वर में कहा था कि उन्हें राजकुमारी डी गुएरमांटेस बिल्कुल नापसंद हैं। मुझे लगा कि इस बदले हुए रवैये पर विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है: आज शाम की पार्टी के निमंत्रण ने ही यह सब कर दिया था। राजदूत ने जब मुझसे कहा कि राजकुमारी डी गुएरमांटेस एक महान व्यक्तित्व हैं, तो वह पूरी तरह ईमानदार थीं। वह हमेशा से ऐसा ही

सोचती थीं। लेकिन, राजकुमारी के घर पहले कभी आमंत्रित न किए जाने के कारण, उन्होंने इस निमंत्रण को जानबूझकर सैद्धांतिक रूप से अस्वीकार करने का दिखावा किया था। अब जब उन्हें आमंत्रित किया गया था, और संभवतः भविष्य में भी आमंत्रित किया जाता रहेगा, तो वे अपने विचारों को खुलकर व्यक्त कर सकती थीं। अन्य लोगों के बारे में हमारे तीन-चौथाई विचारों को समझाने के लिए, तिरस्कृत प्रेम या सार्वजनिक पद से बहिष्कार जैसी बातों पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है। हमारा निर्णय अनिश्चित बना हुआ है: निमंत्रण देना या न देना ही इसे निर्धारित करता है। खैर, जैसा कि बैरोनेस डी गुएरमांटेस ने मेरे साथ कमरों का निरीक्षण करते हुए टिप्पणी की, तुर्की की राजदूत 'ठीक थीं'। सबसे बढ़कर, वह बेहद उपयोगी थीं। समाज के असली सितारे वहाँ दिखने से थक चुके हैं। जो उन्हें निहारने के लिए उत्सुक होता है, उसे अक्सर किसी दूसरे गोलार्ध में जाना पड़ता है, जहाँ वे लगभग अकेली होती हैं। लेकिन ओटोमन राजदूत जैसी महिलाएं, जो हाल ही में समाज में शामिल हुई हैं, वहाँ चमकने से कभी नहीं थकतीं, और एक तरह से कहें तो, हर जगह एक साथ चमकती हैं। वे सोइरी या राउट जैसे मनोरंजन कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिनमें वे अपनी मृत्युशय्या से भी घसीटकर जाना पसंद करेंगी, बजाय इसके कि वे एक भी कार्यक्रम में शामिल न हों। वे वे खास मेहमान होती हैं जिन पर एक मेजबान हमेशा भरोसा कर सकती है, जो कभी भी पार्टी में जाना नहीं भूलतीं। और इसलिए, मूर्ख नौजवान, इस बात से अनजान कि वे दिखावटी सितारे हैं, उन्हें फैशन की रानी समझ लेते हैं, जबकि उन्हें यह समझाने के लिए एक औपचारिक व्याख्यान की आवश्यकता होगी कि किन कारणों से मैडम... स्टैंडिश, जिसके अस्तित्व से वे अनजान हैं और जो दुनिया से दूर रहकर कुशन पेंट करती है, कम से कम डचेस डी डूडोविल जितनी ही महान महिला है।

सामान्य जीवन में, डचेस डी गुएरमांटेस की आँखें कुछ उदास और गुमसुम रहती थीं; वे केवल तभी अपनी आँखों में हास्य की चमक लाती थीं जब उन्हें किसी मित्र से हालचाल पूछना होता था; ठीक वैसे ही जैसे वह मित्र कोई हास्यपूर्ण टिप्पणी, कोई मनमोहक स्पर्श, या नाज़ुक स्वाद के लिए कोई स्वादिष्ट व्यंजन हो, जिसका स्वाद पारखी के चेहरे पर परिष्कृत आनंद की अभिव्यक्ति ला देता हो। लेकिन खास शामों में, जब उन्हें बहुतों को अभिवादन करना होता था, तो वे सोचती थीं कि हर बार अभिवादन के बाद बत्ती बंद करना थका देने वाला होगा।

ठीक वैसे ही जैसे एक उत्साही पाठक, जब रंगमंच के किसी उस्ताद की नई रचना देखने थिएटर जाता है, तो अपने इस विश्वास को पुष्ट करता है कि उसकी शाम नीरस नहीं बीतेगी, जब वह अपना हैट और कोट परिचारक को सौंपता है, तो उसके होंठ एक बुद्धिमान मुस्कान के लिए तैयार होते हैं, और उसकी आँखें व्यंग्यपूर्ण स्वीकृति के लिए चमक उठती हैं; ठीक उसी तरह, डचेस के आगमन के क्षण से ही उनका चेहरा पूरी शाम के लिए जगमगा उठा। और जब वह अपना शानदार लाल रंग का शाम का लबादा सौंप रही थीं, जिसमें उनके गले में जड़ा माणिकों का विशाल हार दिखाई दे रहा था, और उन्होंने अपने गाउन पर अंतिम, सूक्ष्म और गहन नज़र डाली, जो एक अनुभवी महिला की भी होती है, तब ओरियान ने यह सुनिश्चित किया कि उनकी आँखें, उनके अन्य गहनों की तरह, चमक रही हों। एम. डी. जानविल जैसे कई 'दयालु मित्रों' ने ड्यूक को अंदर आने से रोकने के लिए उन पर दबाव डाला, लेकिन यह व्यर्थ था: "लेकिन क्या आप नहीं जानते कि बेचारे मामा अपनी अंतिम साँसें ले रहे हैं? उन्होंने संस्कार ग्रहण कर लिए हैं।" "मुझे पता है, मुझे पता है," एम. डी. गुएरमांटेस ने उस थकाऊ व्यक्ति को एक तरफ धकेलते हुए कमरे में प्रवेश किया। "प्रसव का फल शानदार रहा है," उन्होंने राजकुमार की पार्टी के बाद होने वाले उस बॉल के बारे में सोचकर खुशी से मुस्कुराते हुए कहा, जिसे वह किसी भी कीमत पर छोड़ना नहीं चाहते थे। "हम नहीं चाहते थे कि लोगों को पता चले कि हम वापस आ गए हैं," डचेस ने मुझसे कहा। उन्हें ज़रा भी शक नहीं था कि राजकुमारी ने पहले ही इस बात को गलत साबित कर दिया था, क्योंकि उन्होंने मुझे बताया था कि उनकी चचेरी बहन से उनकी एक झलक मिली थी, जिसने आने का वादा किया था। ड्यूक ने पाँच मिनट तक अपनी पत्नी को घूरते हुए, मानो उन्हें बुरी तरह से परेशान कर रहे हों, फिर कहा: "मैंने ओरियान को तुम्हारी आशंकाओं के बारे में बता दिया है।" अब जब उन्हें पता चल गया था कि उनकी आशंकाएँ निराधार हैं, और उन्हें खुद उन्हें दूर करने के लिए कुछ करने की ज़रूरत नहीं है, तो उन्होंने उन्हें बेतुका बताया और मुझे चिढ़ाती रहीं। "यह सोचना कि तुम्हें आमंत्रित नहीं किया गया था! और, क्या मैं वहाँ नहीं थी? क्या तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हें अपनी चचेरी बहन के घर का निमंत्रण नहीं दिलवा सकती थी?" मुझे मानना पड़ेगा कि इसके बाद उन्होंने मेरे लिए कई बार ऐसे काम किए जो कहीं ज़्यादा मुश्किल थे; फिर भी, मैंने उनके शब्दों का यह अर्थ नहीं निकाला कि मैं बहुत ज़्यादा विनम्र थी। मैं धीरे-धीरे कुलीन वर्ग की

सौहार्दता की भाषा, चाहे वह बोली जाए या मौन, का सही मूल्य समझने लगा था। यह सौहार्दता उन लोगों में हीनता की भावना को शांत करने का काम करती है, जिनके प्रति यह निर्देशित होती है, हालांकि उस भावना को पूरी तरह से मिटा नहीं देती, क्योंकि उस स्थिति में इसके अस्तित्व का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता। "लेकिन आप हमारे बराबर हैं, अगर हमसे श्रेष्ठ नहीं तो," गुएरमांटे परिवार अपने हर कार्य में यही कहता प्रतीत होता था; और वे इसे अत्यंत विनम्रता से कहते थे, ताकि उन्हें प्यार और प्रशंसा मिले, लेकिन उन पर विश्वास न किया जाए; इस सौहार्दता के बनावटी स्वरूप को पहचानना ही वे शिष्टाचार कहते थे; इसे वास्तविक मानना अपुष्टता का संकेत था। संयोगवश, इसके कुछ ही समय बाद मुझे एक ऐसा सबक मिला जिसने मुझे कुलीन वर्ग की सौहार्दता के कुछ रूपों की सीमा और विस्तार की पूर्ण समझ प्रदान की। यह इंग्लैंड की रानी से मिलने के लिए डचेस डी मोंटमोरेंसी द्वारा आयोजित एक दोपहर की पार्टी में हुआ था। बुफे की ओर एक शाही जुलूस जैसा कुछ निकल रहा था, जिसके आगे महारानी ड्यूक डी गुएरमांटेस का हाथ थामे चल रही थीं। मैं ठीक उसी समय वहाँ पहुँचा। ड्यूक ने लगभग पचास गज की दूरी से अपने खाली हाथ से मुझे दोस्ती भरे निमंत्रण के हज़ार इशारे किए, जिनका मतलब यह प्रतीत होता था कि मुझे पास आने से डरने की ज़रूरत नहीं है, कि मुझे सैंडविच की जगह ज़िंदा नहीं खा लिया जाएगा। लेकिन मैं, जो दरबार की भाषा में पारंगत होता जा रहा था, एक कदम भी पास जाने के बजाय, पचास गज की दूरी बनाए रखते हुए, बिना मुस्कुराए एक गहरी 'हाउ' की मुद्रा में झुक गया, ठीक वैसे ही जैसे मैं किसी अनजान व्यक्ति को झुककर प्रणाम करता, और फिर विपरीत दिशा में चल पड़ा। अगर मैंने कोई उत्कृष्ट रचना भी लिखी होती, तो गुएरमांटेस मुझे उस प्रणाम से कहीं कम श्रेय देते। ड्यूक की नज़र से यह न केवल नहीं छूटा, हालाँकि उस दिन उन्हें पाँच सौ से अधिक लोगों के अभिवादन स्वीकार करने थे, बल्कि डचेस की नज़र भी इस पर पड़ी, जो संयोगवश मेरी माँ से मिलीं और उन्होंने इसके बारे में उन्हें बताया। उन्होंने यह सुझाव देने के बजाय कि मैंने कुछ गलत किया था या मुझे उनके पास जाना चाहिए था, कहा कि उनके पति मेरे प्रणाम की प्रशंसा में खो गए थे और किसी के लिए भी इससे अधिक प्रणाम करना असंभव था। उन्होंने उस प्रणाम में हर संभव गुण खोजना बंद नहीं किया, हालाँकि उन्होंने उस गुण का उल्लेख नहीं किया जो सबसे अनमोल प्रतीत होता था, अर्थात् वह विवेकपूर्ण था। उन्होंने मुझे

प्रशंसा देना भी बंद नहीं किया, जिसे मैं अतीत के लिए पुरस्कार से अधिक भविष्य के लिए एक संकेत समझता था, ठीक उसी तरह जैसे एक स्कूल का प्रधानाध्यापक अपने छात्रों को सूक्ष्मता से संकेत देता है: "मेरे बच्चों, यह मत भूलो कि ये पुरस्कार तुम्हारे लिए नहीं बल्कि तुम्हारे माता-पिता के लिए हैं, ताकि वे तुम्हें अगले सत्र में वापस भेज सकें।" इस प्रकार, श्रीमती... जब कोई अलग दुनिया का व्यक्ति उनके दायरे में आता था, तो डी मार्संटेस उसके सामने उन विवेकशील लोगों की प्रशंसा करती थीं, जिन्हें "जब आप उनसे मिलने जाते हैं तो आप घर पर पाते हैं, और जो अन्य समय में आपको उनके अस्तित्व को भुला देते हैं," जैसे कोई अप्रिय गंध वाले नौकर को अप्रत्यक्ष संकेत देकर चेतावनी देता है कि स्नान करने का अभ्यास स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है।

प्रवेश कक्ष से निकलने से पहले ही, जब मैं श्रीमती डी गुएरमांटेस से बात कर रहा था, तभी मुझे एक ऐसी आवाज़ सुनाई दी जिसे मैं भविष्य में बिना किसी गलती के पहचान सकूँगा। उस विशेष क्षण में, वह आवाज़ श्री डी वोगुबर्ट की थी जो श्री डी चार्लस से बात कर रहे थे। एक कुशल चिकित्सक को अपने मरीज़ से कमीज़ के बटन खुलवाने या उसकी साँसों की जाँच करने की भी ज़रूरत नहीं होती, केवल उसकी आवाज़ ही काफ़ी होती है। आगे चलकर कितनी ही बार मेरा ध्यान ड्राइंग रूम में किसी ऐसे व्यक्ति के लहजे या हँसी पर गया, जो अपने पेशे की भाषा या अपने वर्ग के तौर-तरीकों की हूबहू नकल कर रहा था, कभी कठोर अलगाव तो कभी रूखापन दिखा रहा था, लेकिन जिसकी बनावटी आवाज़ मेरे प्रशिक्षित कान के लिए यह बताने के लिए काफ़ी थी: 'वह एक चार्लस है', जैसे किसी वाद्य यंत्र की ध्वनि। उसी क्षण, एक दूतावास का पूरा स्टाफ वहाँ से गुज़रा और श्री डी चार्लस का अभिवादन करने के लिए रुका। हालांकि मुझे इस तरह की बीमारी का पता उसी दोपहर चला (जब मैंने जुपियन के साथ एम. डी चार्लस को चौंका दिया था), फिर भी निदान देने से पहले मुझे सवाल पूछने या जांच करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। लेकिन एम. डी वोगुबर्ट, एम. डी चार्लस से बात करते समय अनिश्चित लग रहे थे। फिर भी, किशोरावस्था के संदेह के बाद माहौल में क्या चल रहा था, यह उन्हें ज़रूर पता होगा। व्यभिचारी व्यक्ति खुद को ब्रह्मांड में अपनी तरह का इकलौता मानता है; बाद के वर्षों में ही वह यह कल्पना करता है—एक और अतिशयोक्ति—कि एकमात्र अपवाद सामान्य व्यक्ति है। लेकिन महत्वाकांक्षी और डरपोक होने के कारण, एम.

डी वोगुबर्ट ने कई वर्षों तक खुद को उस चीज़ के हवाले नहीं किया था जो उनके लिए सुख का अर्थ होता। कूटनीति के करियर का उनके जीवन पर वही प्रभाव पड़ा था जो एक मठवासी जीवन का। राजनीति विज्ञान संकाय में उनकी नियमित उपस्थिति के साथ, इसने उन्हें बीस वर्ष की आयु से ही एक सच्चे ईसाई की तरह पवित्रता का पालन करने के लिए बाध्य कर दिया था। और इस प्रकार, जैसे हमारी प्रत्येक इंद्रिय अपनी शक्ति और जीवंतता खो देती है, अनुपयोग के कारण निष्क्रिय हो जाती है, उसी प्रकार एम. डी वोगुबर्ट, ठीक उसी प्रकार जैसे सभ्य मनुष्य गुफावासी के समान शक्ति और श्रवण शक्ति खो देता है, एम. डी चार्लस में पाई जाने वाली वह विशेष तीक्ष्ण बुद्धि खो बैठे थे; और आधिकारिक भोजों में, चाहे पेरिस में हों या विदेश में, पूर्णाधिकार प्राप्त मंत्री उन लोगों को पहचानने में असमर्थ हो गए थे जो वर्दी के आवरण में उनके समरूप थे। एम. डी चार्लस द्वारा उल्लिखित कुछ नाम, जो अपनी विशिष्टताओं के लिए खुद का उल्लेख किए जाने पर नाराज़ हो जाते थे, लेकिन दूसरों की विशिष्टताओं का खुलासा करने में हमेशा प्रसन्न होते थे, एम. डी वोगुबर्ट को अत्यंत आश्चर्यचकित कर देते थे। ऐसा नहीं था कि इतने वर्षों बाद उन्हें किसी अप्रत्याशित लाभ की आशा थी। लेकिन ये त्वरित खुलासे, जो रैसीन की त्रासदियों में अथली और अबनेर को यह बताते हैं कि योआस दाऊद के वंश का है, और बैंगनी वस्त्रों में सजी एस्तेर यहूदी मूल की है, दूतावास या विदेश मंत्रालय के किसी विभाग का स्वरूप बदल देते हैं, उन महलों को, अतीत में, यरूशलेम के मंदिर या सूसा के सिंहासन कक्ष की तरह रहस्यमय बना देते हैं। जब दूतावास के युवा कर्मचारी एम. डी. चार्लस से हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़े, तो एम. डी. वोगौबर्ट ने एस्तेर में एलिसे की तरह विस्मित भाव धारण कर लिया और कहा, "हे भगवान! चारों ओर से भोली-भाली सुंदरियों का झुंड मेरी निगाहों के सामने आ रहा है! उनके चेहरों पर कितनी मनमोहक विनम्रता झलक रही है!" फिर, अधिक निश्चित जानकारी की प्यास में, उन्होंने एम. डी. चार्लस पर एक मुस्कुराती हुई, मूर्खतापूर्ण प्रश्नवाचक और कामुक दृष्टि डाली। “क्यों, बिल्कुल हैं,” एम. डी चार्लस ने एक अज्ञानी से बात करते हुए विद्वान के भाव से कहा। उसी क्षण से एम. डी वोगुबर्ट (एम. डी चार्लस की झुंझलाहट के बावजूद) उन युवा सचिवों से अपनी निगाहें नहीं हटा सके, जिन्हें फ्रांस में पूर्व राजदूत, एक अनुभवी व्यक्ति, ने आँखें बंद करके नहीं चुना था। एम. डी वोगुबर्ट चुप रहे, मैं केवल उनकी आँखों को देखता रहा। लेकिन,

बचपन से ही, यहाँ तक कि मौन को भी, शास्त्रीय भाषा में व्यक्त करने की आदत होने के कारण, मैंने एम. डी वोगुबर्ट की आँखों को उन पंक्तियों को दोहराने के लिए मजबूर कर दिया जिनमें एस्तेर एलिस को समझाती है कि मार्दोशी ने अपने धर्म के प्रति अत्यधिक निष्ठा के कारण यह नियम बना दिया है कि केवल उन्हीं युवतियों को रानी की सेवा में नियुक्त किया जाएगा जो धर्म का पालन करती हैं। और अब राष्ट्र के प्रति उनके प्रेम ने इस महल को सियोन की पुत्रियों से भर दिया है, भाग्य द्वारा लाई गई युवा और कोमल फूलों जैसी, जो मेरी ही तरह एक विदेशी आकाश के नीचे रोपित की गई हैं। अपवित्र दृष्टियों से दूर एक स्थान पर, वे (योग्य राजदूत) उन्हें संवारने में अपना कौशल और श्रम लगाते हैं।

अंततः एम. डी वोगुबर्ट ने अपनी आँखों के इशारे के बजाय, बिना किसी और इशारे के बात की। उन्होंने उदास होकर कहा, "कौन जानता है कि मेरे देश में भी ऐसा ही होता हो?" एम. डी चार्लस ने उत्तर दिया, "संभव है, राजा थियोडोसियस से शुरू करते हुए, हालाँकि मुझे उनके बारे में कुछ भी निश्चित रूप से पता नहीं है।" "अरे नहीं! ऐसा कुछ भी नहीं है!" "तो फिर उन्हें इतना स्पष्ट दिखने का कोई अधिकार नहीं है। इसके अलावा, उनके पास सारी छोटी-छोटी चालें हैं। उनका वह 'मेरी प्रिय' वाला अंदाज़ है, जिससे मुझे दुनिया में सबसे ज़्यादा नफ़रत है। मैं उनके साथ सड़क पर चलने की हिम्मत कभी नहीं करूँगी। खैर, आप तो जानते ही होंगे कि वह क्या हैं, सब उन्हें 'सफेद भेड़िया' कहते हैं।" "आप उनके बारे में पूरी तरह से गलत हैं। वह फिर भी बहुत आकर्षक हैं। जिस दिन फ्रांस के साथ समझौता हुआ था, राजा ने मुझे चूमा था। मैं इतनी भावुक कभी नहीं हुई थी।" "यही वह क्षण था जब आपको उन्हें बताना चाहिए था कि आप क्या चाहती हैं।" "अरे बाप रे! क्या विचार है! अगर उन्हें ज़रा भी शक हुआ तो! लेकिन मुझे इस बात का कोई डर नहीं है।" मैं पास ही खड़ा था, इसलिए मुझे वह बातचीत सुनाई दे रही थी, जिसने मुझे बार-बार यह कहने पर मजबूर कर दिया: "राजा आज तक नहीं जानता कि मैं कौन हूँ, और इस रहस्य ने मेरी ज़बान को जकड़ रखा है।"

यह संवाद, आधा मौन, आधा मौखिक, कुछ ही क्षणों तक चला था, और मैं डचेस डी गुएरमांटेस के साथ पहले ड्राइंग-रूम में मुश्किल से ही दाखिल हुआ था कि एक छोटी, सांवली, बेहद खूबसूरत महिला ने उन्हें रोक दिया।

"मैं तुम्हें हर जगह ढूंढ रही थी। डी'अनुंजियो ने तुम्हें थिएटर के एक बॉक्स से देखा था, उसने प्रिंसेस डी टी—— को एक पत्र लिखा है जिसमें उसने कहा है कि उसने कभी इतनी सुंदर चीज नहीं देखी। वह तुमसे दस मिनट बात करने के लिए अपनी जान भी दे देगा। खैर, चाहे तुम आ न सको या आना न चाहो, पत्र मेरे पास है। तुम्हें मुझसे मिलने के लिए एक दिन तय करना होगा। कुछ राज़ हैं जो मैं तुम्हें यहाँ नहीं बता सकती। मुझे लगता है कि तुम्हें मैं याद नहीं हूँ," उसने मेरी ओर मुड़ते हुए कहा; "मैं तुमसे प्रिंसेस डी पार्म के यहाँ मिली थी" (जहाँ मैं कभी नहीं गई थी)। "रूस के सम्राट आपके पिता को पीटर्सबर्ग भेजने के लिए उत्सुक हैं। अगर आप सोमवार को आ सकें, तो स्वयं इस्वोल्स्की वहाँ होंगे, वे आपसे इस बारे में बात करेंगे। प्रिय, मेरे पास आपके लिए एक उपहार है," वह डचेस के पास लौटते हुए बोली, "जो मैं आपके अलावा किसी और को देने के बारे में सोच भी नहीं सकती। इब्सन के तीन नाटकों की पांडुलिपियाँ, जो उन्होंने अपने पुराने सेवक के माध्यम से मुझे भेजी थीं। मैं एक अपने पास रखूँगी और बाकी दो आपको दे दूँगी।"

ड्यूक डी गुएरमांटेस इन प्रस्तावों से खुश नहीं थे। उन्हें यह भी पता नहीं था कि इब्सन और डी'अनुंजियो जीवित हैं या मर चुके हैं, लेकिन उनके मन में लेखकों और नाटककारों का एक समूह उनकी पत्नी से मिलने और उन्हें अपनी रचनाओं में शामिल करने की कल्पना थी। समाज में लोग अक्सर किताब को एक घन की तरह समझते हैं जिसका एक किनारा हटा दिया गया हो, ताकि लेखक उसमें अपने जीवन के पात्रों को शामिल कर सके। यह स्पष्ट रूप से विश्वासघात है, और लेखक तो एक निम्न वर्ग के माने जाते हैं। बेशक, कभी-कभार उनसे मिलना बुरा नहीं होगा, क्योंकि उन्हीं की बदौलत कोई किताब या लेख पढ़ते समय 'छिपे हुए अर्थ' को समझ सकता है, पात्रों का पर्दाफाश कर सकता है। लेकिन अंततः, सबसे समझदारी की बात तो यही है कि मृत लेखकों की रचनाओं को ही पढ़ा जाए। श्री डी गुएरमांटेस को केवल वही सज्जन 'ठीक-ठाक' लगे जो गॉलॉइस अखबार में अंतिम संस्कार की सूचनाएँ प्रकाशित करते थे। उन्होंने किसी भी हालत में, ड्यूक द्वारा दिए गए अंत्येष्टि समारोहों में उपस्थित 'प्रमुख उपस्थिति' वाले लोगों में एम. डी गुएरमांटेस का नाम शामिल करने तक ही सीमित रखा। जब ड्यूक चाहते थे कि उनका नाम प्रकाशित न हो, तो नाम देने के बजाय उन्होंने मृतक के परिजनों को शोक पत्र भेजा और उन्हें अपनी गहरी और हार्दिक सहानुभूति

का आश्वासन दिया। यदि परिवार ने अखबार को लिखा, "प्राप्त पत्रों में, हम ड्यूक डी गुएरमांटेस के पत्र का उल्लेख कर सकते हैं," इत्यादि, तो यह गलती अखबार छापने वाले की नहीं, बल्कि मृतक के बेटे, भाई या पिता की थी, जिन्हें ड्यूक ने तब 'नवागंतुक' बताया और जिनसे उन्होंने भविष्य में कोई संबंध न रखने का निश्चय किया (जिसे वे, ऐसे मुहावरों का अर्थ अच्छी तरह से न समझने के कारण, 'अपनी गलती का फल भोगना' कहते थे)। बहरहाल, इब्सन और डी'अनुंजियो के नाम और उनके जीवित होने को लेकर ड्यूक की अनिश्चितता ने उनके माथे पर शिकन ला दी। ड्यूक हमसे इतनी दूर नहीं थे कि श्रीमती टिमोलेओन डी'अमोनकोर्ट की तरह-तरह की मीठी-मीठी बातें न सुन सकें। वह एक आकर्षक महिला थीं, उनकी बुद्धिमत्ता और सुंदरता दोनों ही इतनी मोहक थीं कि उनमें से कोई भी एक गुण उन्हें चमका सकता था। लेकिन, जिस दुनिया में वह अब जी रही थीं, उससे बाहर जन्मीं, पहले तो उन्होंने केवल एक साहित्यिक गोष्ठी में जगह बनाने की इच्छा रखी, फिर वह हर महान लेखक की मित्र बनीं—और केवल एक मित्र ही, क्योंकि उनके नैतिक मूल्य बेदाग थे—और केवल उन्हीं महान लेखकों की मित्र रहीं, जिन्होंने उन्हें अपनी सभी पांडुलिपियाँ दीं, उनके लिए किताबें लिखीं, और संयोग से एक बार उन्हें फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में ले जाया गया। ये साहित्यिक विशेषाधिकार वहाँ उनके लिए उपयोगी साबित हुए। अब उनकी एक स्थापित स्थिति थी, और उन्हें अपनी उपस्थिति से मिलने वाली खूबियों के अलावा किसी और शिष्टाचार की आवश्यकता नहीं थी। लेकिन, अतीत में मध्यस्थ की भूमिका निभाने और सेवाएं प्रदान करने की आदी होने के कारण, वह उन कार्यों में तब भी लगी रही जब उनकी आवश्यकता नहीं रह गई थी। उसके पास हमेशा आपको बताने के लिए कोई न कोई राजकीय रहस्य होता था, कोई शक्तिशाली व्यक्ति होता था जिससे आपको मिलना होता था, या किसी उस्ताद की कोई जलरंग कृति होती थी जिसे वह आपको दिखाना चाहती थी। इन सभी अनावश्यक आकर्षणों में थोड़ी सी बनावटीपन अवश्य थी, लेकिन इन्हीं ने उसके जीवन को जटिलताओं से भरपूर एक हास्यप्रद कहानी बना दिया था, और यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वह प्रान्तियों और सेनापतियों की नियुक्ति करती थी।

मेरे बगल में टहलते हुए, डचेस डी गुएरमांटेस ने अपनी नीली आँखों की चमक को अपने सामने अस्पष्ट रूप से तैरने दिया, ताकि उन लोगों से बच सकें जिनसे वह संबंध नहीं रखना

चाहती थीं, जिनकी उपस्थिति उन्हें कभी-कभी दूर से किसी खतरनाक चट्टान की तरह दिखाई देती थी। हम मेहमानों की दोहरी बाड़ के बीच से आगे बढ़े, जो यह जानते हुए कि वे 'ओरियान' को कभी नहीं जान पाएंगे, कम से कम उन्हें एक जिज्ञासा के रूप में अपनी पत्नियों को दिखाने के लिए उत्सुक थे: "जल्दी करो, उर्सुले, आओ और देखो मैडम डी गुएरमांटेस उस युवक से बात कर रही हैं।" और ऐसा लग रहा था कि अगले ही पल वे बेहतर नज़ारा पाने के लिए कुर्सियों पर चढ़ जाएंगे, जैसे 14 जुलाई को सैन्य परेड या ग्रैंड प्रिक्स में होता है। ऐसा नहीं था कि डचेस डी गुएरमांटेस का सैलून उनकी चचेरी बहन से अधिक कुलीन था। उनके सैलून में ऐसे लोग आते थे जिन्हें उनकी चचेरी बहन अपने पति के कारण कभी आमंत्रित नहीं करना चाहती थीं। वह श्रीमती अल्फोंस डी रोथ्सचाइल्ड के घर में कभी सहज महसूस नहीं करतीं, जो श्रीमती डी ला ट्रेमोइल और श्रीमती डी सागन की घनिष्ठ मित्र थीं, और ओरियान स्वयं भी उनकी मित्र थीं। ओरियान को अक्सर श्रीमती डी सागन के घर में देखा जाता था। बैरन हिर्श के साथ भी यही स्थिति थी, जिन्हें वेल्स के राजकुमार उनसे मिलने लाए थे, लेकिन राजकुमारी उन्हें पसंद नहीं करतीं। इसी तरह, कुछ कुख्यात बोनापार्टिस्टों या यहां तक कि रिपब्लिकनों के साथ भी ऐसा ही था, जिनमें डचेस को रुचि तो थी, लेकिन एक कट्टर राजभक्त राजकुमार उन्हें अपने घर में प्रवेश नहीं देते। उनका यहूदी-विरोध भी सैद्धांतिक था और किसी भी सामाजिक भेद के आगे नहीं झुकता था, चाहे वह कितना भी प्रबल क्यों न हो। यदि वे स्वान के प्रति सहज थे, जिनके वे बचपन से मित्र थे, और गुएरमांटे परिवार में एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जो उन्हें चार्ल्स के बजाय स्वान कहकर संबोधित करते थे, तो इसका कारण यह था कि वे जानते थे कि स्वान की दादी, एक प्रोटेस्टेंट जो एक यहूदी से विवाहित थीं, ड्यूक डी बेरी की प्रेमिका थीं। इसलिए वे समय-समय पर उस किंवदंती पर विश्वास करने का प्रयास करते थे जिसमें स्वान के पिता को उस राजकुमार का नाजायज पुत्र बताया गया था। इस परिकल्पना के अनुसार, जो संयोगवश गलत थी, स्वान, जो एक कैथोलिक पिता के पुत्र थे और स्वयं एक कैथोलिक माता से बॉर्बन वंश के पुत्र थे, पूर्णतः ईसाई थे।

"क्या, आप इन शानदार चीज़ों से परिचित नहीं हैं?" डचेस ने उन कमरों की ओर इशारा करते हुए कहा जिनसे हम गुज़र रहे थे। लेकिन, अपनी चचेरी बहन के 'महल' की उचित प्रशंसा करने के बाद, उन्होंने तुरंत कहा कि उन्हें अपना 'साधारण सा कमरा' हज़ार गुना ज़्यादा पसंद

है। "यह एक प्रशंसनीय घर है, देखने लायक। लेकिन अगर मुझे यहाँ रुककर उन कमरों में सोना पड़े, जो इतनी ऐतिहासिक घटनाओं के गवाह रहे हैं, तो मैं दुख से मर जाऊँगी। मुझे ऐसा लगेगा जैसे मैं बंद होने के बाद, ब्लोइस के महल, फॉन्टेनब्लू या यहाँ तक कि लूव्र में भुला दी गई हूँ, और मेरे अवसाद का कोई इलाज नहीं है सिवाय इसके कि मैं खुद को याद दिलाऊँ कि मैं उस कमरे में हूँ जहाँ मोनाल्डेस्की की हत्या हुई थी। एक शांतिदायक उपाय के रूप में, यह काफी नहीं है। अरे, देखिए, श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे आ रही हैं। हमने अभी उनके साथ भोजन किया है। चूंकि वह कल अपनी भव्य वार्षिक बीन पार्टी दे रही हैं, मुझे लगा था कि वह सीधे बिस्तर पर जाएँगी। लेकिन वह कभी भी पार्टी में जाना नहीं भूलतीं। अगर यह पार्टी गाँव में होती, तो वह इसमें न जाने के बजाय ट्रक पर सवार हो जातीं।"

दरअसल, मैडम डी सेंट-यूवर्टे आज शाम किसी और की पार्टी में शामिल होने की खुशी से ज़्यादा अपनी पार्टी की सफलता सुनिश्चित करने, अपनी लिस्ट में नए लोगों को जोड़ने और कल अपनी गार्डन पार्टी में शानदार प्रदर्शन करने वाले मेहमानों का अंतिम समय में जायज़ा लेने आई थीं। दरअसल, वर्षों के दौरान सेंट-यूवर्टे की पार्टियों में आने वाले मेहमान लगभग पूरी तरह बदल चुके थे। गुएरमांटेस की दुनिया की मशहूर महिलाएँ, जो पहले बहुत कम ही नज़र आती थीं, अपनी मेज़बान के विशेष ध्यान से धीरे-धीरे अपने दोस्तों को लाने लगी थीं। उसी समय, एक और प्रगतिशील प्रयास से, लेकिन विपरीत दिशा में, मैडम डी सेंट-यूवर्टे ने फैशन की दुनिया से अनजान लोगों की संख्या साल दर साल कम कर दी थी। अब आप उनमें से पहले एक को, फिर दूसरे को देखना बंद कर देते थे। कुछ समय तक 'बैच' प्रणाली लागू रही, जिसने उन्हें, उन पार्टियों के माध्यम से जिन पर गोपनीयता का पर्दा डाला जाता था, अयोग्य लोगों को अलग से बुलाकर एक-दूसरे का मनोरंजन करने में सक्षम बनाया, जिससे उन्हें अच्छे लोगों के साथ उन्हें आमंत्रित करने की आवश्यकता नहीं पड़ी। उन्हें शिकायत का क्या कारण था? क्या उन्हें हल्का जलपान और एक चुनिंदा संगीत कार्यक्रम नहीं दिया गया था? और इसलिए, दो निर्वासित डचेसों के साथ एक प्रकार की समरूपता में, जिन्हें पिछले वर्षों में, जब सेंट-यूवर्ट सैलून अभी शुरू ही हुआ था, तब कैरिएटाइड्स की एक जोड़ी की तरह, इसके अस्थिर शिखर को थामे हुए देखा जाता था, इन बाद के वर्षों में, फैशनेबल भीड़ में घुलमिलकर, केवल दो भिन्न व्यक्तियों को ही पहचाना जा सकता था: बूढ़ी श्रीमती डी कैम्ब्रेमर

और एक सुरीली आवाज वाली वास्तुकार की पत्नी, जिन्हें हमेशा गाने के लिए कहना पड़ता था। लेकिन, श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के यहाँ अब किसी को न जानने के कारण... सेंट-यूवर्टे के अनुयायी, अपने बिछड़े साथियों के गम में डूबे हुए, खुद को बाधा समझते हुए, एकदम बेजान भाव से खड़े रहे, मानो दो अबाबील पक्षी समय पर अपना प्रवास न कर पाए हों। इसलिए, अगले साल उन्हें आमंत्रित नहीं किया गया; श्रीमती डी फ्रैंकेटोट ने अपनी चचेरी बहन की ओर से, जो संगीत की बहुत शौकीन थीं, कोशिश की। लेकिन उन्हें इससे ज़्यादा स्पष्ट जवाब नहीं मिला कि: "लोग चाहें तो कभी भी आकर संगीत सुन सकते हैं; इसमें कोई बुराई नहीं है!" श्रीमती डी कैम्ब्रेमर को निमंत्रण इतना ज़रूरी नहीं लगा और उन्होंने आने से मना कर दिया।
श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे द्वारा किए गए इस परिवर्तन के बाद, एक कुष्ठ रोगी आश्रम से यह भव्य महिलाओं के जमावड़े में बदल गया (जो उस समय फैशन के चरम पर था)। ऐसे में यह अजीब लग सकता है कि जिस व्यक्ति को अगले दिन सीज़न की सबसे शानदार पार्टी देनी थी, उसे अपनी टोली को अंतिम आदेश देने के लिए रातोंरात प्रकट होना पड़ा। लेकिन सच्चाई यह थी कि श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे के ड्राइंग रूम की श्रेष्ठता केवल उन लोगों के लिए थी जिनका सामाजिक जीवन केवल गॉलॉइस या फिगारो में दोपहर और शाम की पार्टियों के विवरण पढ़ने तक ही सीमित था, बिना कभी ऐसी किसी पार्टी में शामिल हुए। दुनिया को केवल अखबारों में छपी खबरों के रूप में देखने वाले इन सांसारिक लोगों के लिए, ब्रिटिश, ऑस्ट्रियाई आदि राजदूतों, डचेस डी'उज़ेस, डी ला ट्रेमोइल आदि की सूची ही यह कल्पना करने के लिए काफी थी कि सेंट-यूवर्टे का ड्राइंग रूम पेरिस का पहला ड्राइंग रूम था, जबकि वास्तव में यह आखिरी ड्राइंग रूमों में से एक था। ऐसा नहीं था कि ये खबरें झूठी थीं। उल्लेखित अधिकांश व्यक्ति वास्तव में उपस्थित थे। लेकिन उनमें से प्रत्येक व्यक्ति अनुरोधों, शिष्टाचार, सेवाओं और श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे के प्रति असीम सम्मान की भावना से आया था। ऐसे ड्राइंग रूम, जिनकी लोग तलाश करने के बजाय उनसे दूर रहते हैं, और जिनमें लोग एक तरह से बंधे होते हैं, केवल 'सोसाइटी' कॉलम के पाठकों को ही धोखा देते हैं। वे एक बेहद शानदार पार्टी को नज़रअंदाज़ कर देते हैं, ऐसी पार्टी जिसमें मेज़बान, जिसके पास दुनिया की सभी डचेसें हो सकती थीं, क्योंकि वे सभी 'चुने हुए लोगों में गिने जाने' के लिए बेताब थीं, केवल दो या तीन को ही आमंत्रित करती है और अपने मेहमानों की कोई सूची अखबारों को नहीं

भेजती। और इसलिए ये मेज़बानें, जो आज के समय में प्रचार की शक्ति से अनभिज्ञ या उसका तिरस्कार करती हैं, स्पेन की रानी द्वारा फैशनेबल मानी जाती हैं, लेकिन भीड़ द्वारा अनदेखी कर दी जाती हैं, क्योंकि रानी उन्हें जानती है और भीड़ उन्हें नहीं जानती।

श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे इन महिलाओं में से नहीं थीं, और अवसर की तलाश में, कल के लिए आमंत्रित सभी लोगों को इकट्ठा करने आई थीं। श्री डी चार्लस इनमें शामिल नहीं थे, उन्होंने हमेशा उनके घर जाने से इनकार कर दिया था। लेकिन उनका इतने लोगों से झगड़ा हुआ था कि श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे ने इसे उनके स्वभाव का ही हिस्सा मान लिया।

निःसंदेह, यदि केवल ओरियान ही होतीं, तो श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे को इतनी परेशानी उठाने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि निमंत्रण मौखिक रूप से दिया गया था, और उससे भी बढ़कर, उस मनमोहक, छलावरणपूर्ण शालीनता के साथ स्वीकार किया गया था, जिसमें उन शिक्षाविदों का कोई सानी नहीं है जिनके द्वार से उम्मीदवार पिघलते दिल के साथ निकलता है, और उसे कभी संदेह नहीं होता कि वह उनके समर्थन पर भरोसा कर सकता है। लेकिन अन्य लोग भी थे। क्या प्रिंस डी'एग्रीजेंटे आएंगे? और श्रीमती डी ड्यूरफोर्ट? और इसलिए, व्यवसाय को ध्यान में रखते हुए, श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे ने स्वयं उपस्थित होना उचित समझा। कुछ लोगों के साथ इशारों में, दूसरों के साथ आदेशात्मक लहजे में, उन्होंने सभी को एक समान रूप से अकल्पनीय आकर्षणों की ओर संकेत किया, जो कहीं और देखने को नहीं मिलेंगे, और प्रत्येक से वादा किया कि उन्हें उनकी पार्टी में वह व्यक्ति मिलेगा जिसे वे सबसे अधिक चाहते हैं, या वह शख्सियत जिससे वे मिलना चाहते हैं। और साल के एक दिन के लिए उसे जो यह ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी—जैसे प्राचीन काल में कुछ सार्वजनिक पद होते थे—कि अगले दिन उसे सीज़न की सबसे बड़ी गार्डन पार्टी देनी है—उसने उसे क्षणिक अधिकार प्रदान कर दिया था। उसकी सूचियाँ तैयार थीं और अंतिम रूप से भरी हुई थीं, इसलिए जब वह राजकुमारी के कमरों में धीरे-धीरे घूमते हुए एक-एक करके लोगों के कानों में फुसफुसा रही थी: "कल आप मुझे नहीं भूलेंगी," तो उसे क्षणिक गौरव प्राप्त था कि अगर उसकी नज़र किसी ऐसे भयानक प्राणी पर पड़ती जिससे बचना ज़रूरी था या किसी ऐसे ज़मींदार पर पड़ती जिसकी स्कूली दोस्ती ने उसे गिल्बर्ट के यहाँ प्रवेश दिला दिया था, और जिसकी उपस्थिति उसकी गार्डन पार्टी में कोई लाभ नहीं पहुँचाएगी, तो वह मुस्कुराती हुई अपनी नज़रें फेर लेती थी। वह उससे

बात न करना ही बेहतर समझती थी, ताकि बाद में कह सके: "मैंने आपको मौखिक रूप से निमंत्रण दिया था, और दुर्भाग्य से मैंने आपको कहीं नहीं देखा।" और इस तरह, एक साधारण सी दिखने वाली वह महिला, अपनी पैनी नज़रों से राजकुमारी की पार्टी के मेहमानों में से चुन-चुन कर आने लगी। और ऐसा करते हुए, उसने खुद को पूरी तरह से डचेस डी गुएरमांटेस के रूप में कल्पना की।

यह मानना पड़ेगा कि दूसरी महिला को भी, चाहे कोई कुछ भी सोचे, अपने अभिवादन और मुस्कान का असीमित उपयोग करने का अधिकार नहीं था। कुछ हद तक, निस्संदेह, जब वह उन्हें रोकती थी, तो यह जानबूझकर होता था। "लेकिन वह महिला मुझे इतना ऊबा देती है कि मेरी आँखों में आंसू आ जाते हैं," वह कहती थी, "क्या मुझसे यह उम्मीद की जाती है कि मैं अगले एक घंटे तक उससे उसकी पार्टी के बारे में बात करती रहूँ?"

सांवले रंग की एक डचेस वहां से गुजरी, जिसे उसकी कुरूपता, मूर्खता और व्यवहार की कुछ अनियमितताओं के कारण पूरे समाज से तो नहीं, लेकिन कुछ चुनिंदा और प्रतिष्ठित मंडलों से बहिष्कृत कर दिया गया था। "आह!" श्रीमती डी गुएरमांटेस ने एक पारखी की तरह तीखी और अचूक दृष्टि से बुदबुदाया, "तो क्या यहां इस तरह की महिलाएं भी हैं?" तिलों से भरे और काले बालों से उगे इस अधमरी महिला को देखते ही श्रीमती डी गुएरमांटेस ने इस समूह के महत्वहीन होने का अंदाजा लगा लिया। वे साथ पली-बढ़ी थीं, लेकिन उन्होंने उस महिला से सारे संबंध तोड़ लिए थे; और उनके अभिवादन का जवाब उन्होंने केवल एक छोटे से इशारे से दिया। "मुझे समझ नहीं आता," उसने मुझसे कहा, "मैरी-गिल्बर्ट हमें इतने सारे बदमाशों के साथ कैसे आमंत्रित कर सकती है। ऐसा लग रहा था मानो हर पैरिश से गरीबों का प्रतिनिधिमंडल आया हो। मेलानी पोर्टालेस ने व्यवस्था कहीं बेहतर की थी। अगर वह चाहती तो अपने घर में होली सिनोड और ओरेटोयर चैपल दोनों आयोजित कर सकती थी, लेकिन कम से कम उसने हमें एक ही दिन आमंत्रित तो नहीं किया।" लेकिन, कई मामलों में, यह झिझक, अपने पति के साथ किसी अनहोनी के डर से था, जो नहीं चाहते थे कि वह कलाकारों और ऐसे लोगों का मनोरंजन करे (मैरी-गिल्बर्ट ने उनमें से दर्जनों में रुचि दिखाई, आपको सावधान रहना पड़ता था कि कोई प्रसिद्ध जर्मन गायिका आपसे उलझ न जाए), राष्ट्रवादी भावना के संबंध में कुछ आशंकाओं से भी था, जिसे, एम. डी चार्लस की तरह, गुएरमांटेस की

बुद्धि से संपन्न होने के कारण, वह सामाजिक दृष्टिकोण से तुच्छ समझती थी (लोग अब जनरल स्टाफ की अधिक प्रतिष्ठा के लिए, कुछ ड्यूकों के सामने रात्रिभोज में एक आम आदमी जनरल को भेज रहे थे), लेकिन फिर भी, चूंकि वह जानती थी कि उसके विचारों को गलत माना जाता है, उसने उदारतापूर्वक रियायतें दीं, यहां तक कि इन यहूदी-विरोधी परिवेश में स्वान को अपना हाथ देने की संभावना से भी डरती थी। इस संबंध में, उसका मन जल्द ही शांत हो गया, क्योंकि उसे पता चला कि राजकुमार ने स्वान को घर में रखने से इनकार कर दिया था और उसके साथ 'एक तरह की कहा-सुनी' हुई थी। अब उसे 'बेचारे चार्ल्स' से सार्वजनिक रूप से बात करने का कोई खतरा नहीं था, जिसे वह निजी तौर पर ही प्यार करना पसंद करती थी।

"और ये कौन है?" मैडम डी गुएरमांटेस ने हैरानी से कहा, जब उन्होंने एक छोटी सी महिला को देखा, जो थोड़ी खोई-खोई सी लग रही थी और काले रंग का इतना साधारण गाउन पहने थी कि उसे देखकर कोई भी उसे कंगाल समझ सकता था। वह महिला और उसके पति दोनों ने झुककर उनका अभिवादन किया। मैडम डी गुएरमांटेस उस महिला को पहचान नहीं पाईं और अपने अभद्र अंदाज़ में नाराज़ होकर खड़ी हो गईं और बिना कुछ बोले उन्हें घूरने लगीं। "ये कौन है, बेसिन?" उन्होंने आश्चर्य से पूछा, जबकि मिस्टर डी गुएरमांटेस, ओरियान की बदतमीज़ी का प्रायश्चित करते हुए, उस महिला को झुककर प्रणाम कर रहे थे और उनके पति से हाथ मिला रहे थे। "अरे, ये तो मैडम डी चौसेपियर हैं, आप बहुत बदतमीज़ थीं।" "मैंने चौसेपियर नाम के किसी व्यक्ति का नाम कभी नहीं सुना।" "बूढ़ी मां चानलिवॉल्ट का भतीजा।" "मुझे ज़रा भी समझ नहीं आ रहा कि आप क्या कह रही हैं। ये महिला कौन है, और ये मुझे क्यों झुककर प्रणाम कर रही है?" "लेकिन आप उन्हें अच्छी तरह जानती हैं, वह श्रीमती डी चार्लेवल की बेटी, हेनरीएट मोंटमोरेंसी हैं।" "ओह, लेकिन मैं उनकी माँ को अच्छी तरह जानती थी, वह आकर्षक और बेहद बुद्धिमान थीं। उन्होंने उन सभी लोगों से शादी क्यों की जिनके बारे में मैंने कभी सुना भी नहीं? आप कहती हैं कि वह खुद को श्रीमती डी चौसेपियर कहती हैं?" उन्होंने नाम के प्रत्येक अक्षर को प्रश्नवाचक स्वर में अलग करते हुए कहा, मानो उन्हें कोई गलती करने का डर हो। "खुद को चौसेपियर कहना उतना हास्यास्पद नहीं है जितना आप सोच रही हैं! पुराने चौसेपियर, उपर्युक्त चानलिवॉल्ट, श्रीमती डी सेनेकोर और

विस्काउंटेस डी मर्लेरॉल्ट के भाई थे। वे एक प्रतिष्ठित परिवार हैं।" "ओह, बस करो," डचेस चिल्लाईं, जो शेर को काबू करने वाले की तरह, कभी भी जानवर की तीखी निगाहों से डरने की परवाह नहीं करती थीं। "बेसिन, तुम मेरी ज़िंदगी की खुशी हो। मुझे समझ नहीं आता कि तुमने ये नाम कहाँ से चुने, लेकिन मैं तुम्हें बधाई देती हूँ। अगर मैं चौसेपियर को नहीं जानती, तो कम से कम बाल्ज़ाक को तो पढ़ा ही है, तुम अकेली नहीं हो, और मैंने लैबिचे को भी पढ़ा है। मैं चानलिवॉल्ट की सराहना करती हूँ, मुझे चार्लेवल से कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन मुझे मानना पड़ेगा कि मर्लेरॉल्ट एक उत्कृष्ट रचना है। खैर, यह भी मानना पड़ेगा कि चौसेपियर भी बुरा नहीं है। तुमने इन्हें इकट्ठा करने में काफ़ी मेहनत की होगी, ये मुमकिन नहीं है। तुम किताब लिखने जा रही हो," वह मेरी तरफ मुड़ी, "तुम्हें चार्लेवल और मर्लेरॉल्ट का ज़िक्र ज़रूर करना चाहिए। तुम्हें इससे बेहतर कुछ नहीं मिलेगा।" "वह कटघरे में खड़ा होगा और जेल जाएगा; तुम उसे बहुत बुरी सलाह दे रही हो, ओरियान।" "मुझे उम्मीद है, उसकी भलाई के लिए, कि अगर वह बुरी सलाह लेना चाहे, तो उसके पास मुझसे कम उम्र के लोग हों; खासकर अगर वह उस पर अमल करने का इरादा रखता हो। लेकिन अगर उसका इरादा किताब लिखने से ज़्यादा कुछ बुरा करने का न हो!" हमसे कुछ दूरी पर, हीरे और ट्यूल से सजी सफेद पोशाक में एक खूबसूरत, गर्वित युवती भीड़ से अलग खड़ी थी। मैडम डी गुएरमांटेस उसे लोगों के एक समूह से बात करते हुए देख रही थीं, जो उसकी सुंदरता से मंत्रमुग्ध थे। "आपकी बहन हमेशा की तरह पार्टी की शान है; वह आज रात बेहद आकर्षक लग रही है," उन्होंने पास से गुजर रहे प्रिंस डी चिमे से कहा और एक कुर्सी पर बैठ गईं। कर्नल डी फ्रॉबरविले (उसी नाम के जनरल उनके चाचा थे) आकर हमारे पास बैठ गए, और एम. डी ब्रेउटे भी बैठ गए। वहीं, एम. डी वोगुबर्ट हमारे आसपास मंडराते रहे (उनकी अत्यधिक विनम्रता के कारण, जो वे टेनिस खेलते समय भी बनाए रखते थे, जब गेंद मारने से पहले उपस्थित प्रतिष्ठित व्यक्तियों से अनुमति मांगने के कारण वे हमेशा अपने साथी को हरा देते थे)। फिर वे एम. डी चार्लस के पास लौट आए (जो उस क्षण तक कॉम्टेस मोले के विशाल स्कर्ट में लगभग छिपे हुए थे, जिनकी वे अन्य सभी महिलाओं से अधिक प्रशंसा करते थे)। संयोग से, उसी समय पेरिस में आए नवीनतम राजनयिक मिशन के कई सदस्य बैरन का अभिवादन कर रहे थे। एक बेहद बुद्धिमान दिखने वाले युवा सचिव को देखकर, एम. डी

वोगुबर्ट ने एम. डी चार्लस पर एक ऐसी मुस्कान बिखेरी, जिस पर स्पष्ट रूप से केवल एक ही प्रश्न झलक रहा था। एम. डी चार्लस निस्संदेह किसी और को आसानी से फंसा सकते थे, लेकिन दूसरे के होठों पर बनी इस मुस्कान से खुद को फंसा हुआ महसूस करना, जिसका एक ही अर्थ हो सकता था, उन्हें स्तब्ध कर दिया। "मुझे इस मामले में बिल्कुल कुछ नहीं पता, मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि अपनी जिज्ञासा अपने तक ही सीमित रखें। इससे मुझे बहुत गुस्सा आ रहा है। इसके अलावा, इस मामले में आप बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं। मेरा मानना है कि यह युवक बिल्कुल इसके विपरीत है।" यहां एम. डी चार्लस, एक मूर्ख द्वारा इस तरह उजागर किए जाने से चिढ़कर, सच नहीं बोल रहे थे। यदि बैरन सही होते, तो सचिव उनके दूतावास के नियम का अपवाद होते। वास्तव में, यह दूतावास बहुत अलग-अलग व्यक्तित्वों से बना था, जिनमें से कई बेहद घटिया थे, इसलिए यदि कोई यह पता लगाने की कोशिश करे कि उन्हें एक साथ लाने के पीछे क्या मकसद हो सकता है, तो एकमात्र संभव कारण उलटा ही प्रतीत होता है। इस छोटे से कूटनीतिक सोडोम के मुखिया के रूप में एक ऐसे राजदूत को नियुक्त करके, जो इसके विपरीत, किसी पुराने नाटक के मजाकिया कलाकार की तरह महिलाओं के पीछे भागता था और अपने पुरुष प्रतिरूपकों की बटालियन को नियंत्रण में रखता था, अधिकारियों ने मानो विरोधाभास के नियम का पालन किया था। अपनी नाक के नीचे सब कुछ होते हुए भी, वह उलटफेर में विश्वास नहीं करता था। उसने अपनी बहन का विवाह एक ऐसे चार्ज डी'अफेयर्स से करवाकर इसका तत्काल प्रमाण दिया, जिसे वह पूरी तरह से गलत तरीके से अय्याश समझता था। इसके बाद वह एक उपद्रवी बन गया और जल्द ही उसकी जगह एक नए महामहिम को नियुक्त किया गया, जिसने दल की एकरूपता सुनिश्चित की। अन्य दूतावासों ने इस दूतावास से प्रतिस्पर्धा करने की कोशिश की, लेकिन वे कभी भी शीर्ष स्थान हासिल नहीं कर सके (जैसे मैट्रिकुलेशन परीक्षाओं में, जहाँ एक निश्चित स्कूल हमेशा शीर्ष पर रहता है), और दस वर्षों से अधिक समय बीतने के बाद, इस अति परिपूर्ण व्यवस्था में विभिन्न पृष्ठभूमि के राजदूतों को शामिल किया गया, तब जाकर अंततः किसी अन्य ने इस कठोर ट्रॉफी को छीनकर शीर्ष स्थान प्राप्त किया।

स्वान से बात करने के अपने डर से आश्वस्त होकर, श्रीमती डी गुएरमांटेस अब केवल इस बात को लेकर उत्सुक थीं कि उनके मेज़बान के साथ उनकी बातचीत किस विषय पर हुई थी।

"क्या आपको पता है कि यह किस बारे में थी?" ड्यूक ने एम. डी ब्रेउटे से पूछा। "मैंने सुना है," दूसरे ने उत्तर दिया, "कि यह एक छोटे से नाटक के बारे में था जिसे लेखक बर्गोट ने उनके घर पर प्रस्तुत किया था। यह एक बहुत ही मनोरंजक शो था। लेकिन ऐसा लगता है कि गिल्बर्ट का किरदार निभाने वाले अभिनेता को, संयोग से, मास्टर बर्गोट हटाना चाहते थे।" "ओह, मुझे गिल्बर्ट को हटाते हुए देखना बहुत अच्छा लगता," डचेस ने एक स्वप्निल मुस्कान के साथ कहा। "इस छोटे से प्रदर्शन के बारे में," एम. डी ब्रेउटे ने अपना नुकीला जबड़ा आगे बढ़ाते हुए कहा, "गिल्बर्ट ने स्वान से स्पष्टीकरण मांगा, जिसने केवल वही उत्तर दिया जिसे सभी ने बहुत ही मजाकिया समझा: 'अरे, बिलकुल नहीं, यह आपके जैसा बिल्कुल नहीं था, आप कहीं ज्यादा मजेदार हैं!'" “ऐसा लगता है,” एम. डी ब्रेउटे ने आगे कहा, “कि वह छोटा नाटक काफी मनोरंजक था। श्रीमती मोले वहाँ थीं, उन्हें बहुत मज़ा आया।” “क्या, श्रीमती मोले वहाँ जाती हैं?” डचेस ने आश्चर्य से कहा। “अरे! यह तो श्रीमती मोले की ही करतूत होगी। ऐसे घरों में अंत में हमेशा यही होता है। एक दिन अचानक सब लोग वहाँ आने लगते हैं, और मैं, जो सिद्धांतवश हमेशा अलग-थलग रही हूँ, अपने कोने में अकेली उदास बैठी रह जाती हूँ।” एम. डी ब्रेउटे के भाषण के बाद से ही, डचेस डी गुएरमांटेस (यदि स्वान के घर के बारे में नहीं, तो कम से कम किसी भी क्षण उससे मिलने की संभावना के बारे में) ने, जैसा कि हम देखते हैं, एक नया दृष्टिकोण अपना लिया था। "आपने जो स्पष्टीकरण दिया है," कर्नल डी फ्रोबरविले ने एम. डी ब्रेउटे से कहा, "वह पूरी तरह निराधार है। मुझे यह जानने का पुख्ता कारण है। राजकुमार ने स्वान को बस फटकार लगाई और उसे यह बताना चाहा, जैसा कि हमारे पूर्वज कहा करते थे, कि वह अपने विचारों को जिस तरह से प्रदर्शित करता है, उसे देखते हुए उसे फिर कभी इस सदन में अपना चेहरा नहीं दिखाना चाहिए। और, मेरी राय में, मेरे चाचा गिल्बर्ट बिल्कुल सही थे, न केवल स्वान को खरी-खोटी सुनाने में, बल्कि उन्हें छह महीने पहले ही उसे पूरी तरह से ड्रेफसार्ड की तरह खत्म कर देना चाहिए था।"

बेचारे एम. डी वोगौबर्ट, जो अब एक अति सतर्क टेनिस खिलाड़ी से बदलकर एक निष्क्रिय टेनिस गेंद बन गए थे, जिसे बिना किसी संकोच के इधर-उधर उछाला जा रहा था, खुद को डचेस डी गुएरमांटेस की ओर प्रत्यर्पित पाया, जिनके सामने उन्होंने झुककर प्रणाम किया।

उनका स्वागत कुछ खास नहीं हुआ, ओरियान इस धारणा में जी रही थी कि उसकी दुनिया के सभी राजनयिक—या राजनेता—मूर्ख हैं।

एम. डी फ्रॉबरविले को हाल ही में सैन्य अधिकारियों को दिए गए सामाजिक विशेषाधिकारों से बहुत लाभ हुआ था। दुर्भाग्य से, यदि उनकी पत्नी गुएरमांटे परिवार की वास्तविक रिश्तेदार थीं, तो वे अत्यंत गरीब भी थीं, और चूंकि उन्होंने स्वयं अपनी संपत्ति खो दी थी, इसलिए वे शायद ही कहीं जाते थे, और ऐसे लोग थे जिन्हें अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता था, सिवाय बड़े अवसरों के, जब उन्हें किसी रिश्तेदार का अंतिम संस्कार करने या शादी करने का सौभाग्य प्राप्त होता था। तब, वे वास्तव में फैशन की दुनिया से जुड़ते थे, उन नाममात्र के कैथोलिकों की तरह जो साल में केवल एक बार ही चर्च जाते हैं। उनकी आर्थिक स्थिति वास्तव में दयनीय होती यदि श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे, दिवंगत जनरल डी फ्रॉबरविले के प्रति अपने स्नेह के कारण, घर की मदद के लिए हर संभव प्रयास न करतीं, दोनों लड़कियों के लिए फ्रॉक और मनोरंजन की व्यवस्था न करतीं। लेकिन कर्नल, हालांकि आम तौर पर एक अच्छे व्यक्ति माने जाते थे, उनमें कृतज्ञता की भावना नहीं थी। वे उस परोपकारी महिला की शान-ओ-शान से ईर्ष्या करते थे जो बिना किसी रोक-टोक के उनकी प्रशंसा करती थी। उनके, उनकी पत्नी और बच्चों के लिए वार्षिक उद्यान उत्सव एक अद्भुत आनंद था, जिसे वे दुनिया के सारे सोने के बदले भी नहीं छोड़ते, लेकिन श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे को इससे मिलने वाले गर्व और संतुष्टि के विचार ने इस आनंद को धूमिल कर दिया था। अखबारों में इस उद्यान उत्सव के बारे में छपने वाले लेख, जो विस्तृत रिपोर्ट देने के बाद चालाकी से कहते थे: "हम इस शानदार आयोजन का फिर से जिक्र करेंगे," महिलाओं की पोशाकों के पूरक विवरण, जो कई दिनों तक लगातार छपते रहते थे, फ्रोबरविल परिवार को इतने अप्रिय लगते थे कि अधिकांश सुखों से वंचित और यह जानते हुए कि वे केवल इस एक दोपहर के आनंद पर ही निर्भर रह सकते हैं, वे हर साल खराब मौसम के कारण उत्सव के सफल न होने की कामना करते थे, बैरोमीटर देखते थे और उस तूफान की आशंका से उत्साहित होते थे जो सब कुछ बर्बाद कर सकता था।

"मैं आपसे राजनीति पर चर्चा नहीं करूँगा, फ्रॉबरविले," एम. डी गुएरमांटेस ने कहा, "लेकिन जहाँ तक स्वान का सवाल है, मैं आपको स्पष्ट रूप से बता सकता हूँ कि हमारे प्रति उनका व्यवहार शब्दों से परे रहा है। अतीत में, ड्यूक डी चार्ट्रेस द्वारा, हमने उन्हें समाज में शामिल

किया था, लेकिन अब मुझे बताया जा रहा है कि वह खुलेआम ड्रेफस समर्थक हैं। मैं उन पर कभी विश्वास नहीं कर सकता था, एक शौकीन, व्यावहारिक विवेक वाला व्यक्ति, एक संग्रहकर्ता, जिसे पुरानी किताबें पसंद हैं, जॉकी का सदस्य, एक ऐसा व्यक्ति जिसे जानने वाले सभी लोग सम्मान देते हैं, जो सभी अच्छे पते जानता है, और जो हमें पीने के लिए सबसे अच्छी पोर्ट वाइन भेजा करता था, एक शौकिया, एक परिवार का मुखिया। ओह! मुझे बहुत बड़ा धोखा हुआ है। मैं अपने लिए शिकायत नहीं कर रहा हूँ, यह समझा जाता है कि मैं केवल एक बूढ़ा मूर्ख हूँ, जिसकी राय का कोई महत्व नहीं है, बस एक फटेहाल और निकम्मा आदमी हूँ, लेकिन केवल ओरियान के लिए ही सही, उन्हें यहूदियों और उनके समर्थकों को खुलेआम अस्वीकार कर देना चाहिए था।" वह व्यक्ति ड्रेफस था।

“हाँ, मेरी पत्नी ने हमेशा उसके प्रति जो मित्रता दिखाई है,” ड्यूक ने आगे कहा, जो स्पष्ट रूप से यह मानते थे कि ड्रेफस को राजद्रोह का दोषी ठहराना, चाहे किसी की अंतरात्मा में उसके अपराध के बारे में कोई भी राय हो, फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में मिले स्वागत के लिए एक तरह का धन्यवाद था। “उसे खुद को उससे अलग कर लेना चाहिए था। क्योंकि, आप ओरियान से पूछ सकते हैं, उसकी उससे सच्ची मित्रता थी।” डचेस ने सोचा कि एक सरल, शांत लहजा उनके शब्दों को अधिक नाटकीय और ईमानदार बना देगा, इसलिए उन्होंने एक स्कूली छात्रा की तरह आवाज़ में कहा, मानो वह बस अपने होठों से सच उगल रही हों, बस अपनी आँखों में थोड़ी उदासी लाते हुए: “यह बिल्कुल सच है, मुझे यह तथ्य छिपाने का कोई कारण नहीं है कि मुझे चार्ल्स के लिए सच्चा स्नेह था!” “देखा, मुझे उससे यह कहलवाने की ज़रूरत नहीं है। और उसके बाद, वह अपनी कृतघ्नता को ड्रेफस के कट्टर समर्थक की हद तक ले जाता है!”

मैंने कहा, "ड्रेफसार्ड्स की बात करें तो, ऐसा लगता है कि प्रिंस वॉन भी उनमें से एक हैं।"

"आह, मुझे खुशी है कि आपने मुझे उसकी याद दिला दी," एम. डी गुएरमांटेस ने कहा, "मैं भूल ही गया था कि उसने मुझे सोमवार को अपने साथ भोजन करने के लिए कहा था। लेकिन वह ड्रेफस समर्थक है या नहीं, यह पूरी तरह से अप्रासंगिक है, क्योंकि वह एक विदेशी है। मुझे उसकी राय की कोई परवाह नहीं है। एक फ्रांसीसी के साथ मामला अलग है। यह सच है कि स्वान एक यहूदी है। लेकिन, आज तक—मुझे क्षमा करें, फ्रोबरविले—मैं हमेशा इतना मूर्ख रहा हूँ कि यह मानता रहा हूँ कि एक यहूदी फ्रांसीसी हो सकता है, यानी एक सम्मानित यहूदी,

एक दुनियादार आदमी। अब, स्वान शब्द के हर अर्थ में ऐसा ही था। आह, अच्छा! वह मुझे यह स्वीकार करने पर मजबूर करता है कि मैं गलत था, क्योंकि उसने इस ड्रेफस (जो दोषी हो या न हो, कभी उसकी दुनिया में नहीं गया, वह उससे कभी नहीं मिला होगा) का पक्ष लिया है, उस समाज के खिलाफ जिसने उसे अपनाया था, उसे अपने जैसा माना था। कहने की जरूरत नहीं है, हम सभी गवाही देने के लिए तैयार थे।" स्वान के लिए, मैं उसकी देशभक्ति का उतना ही समर्थन करता जितना अपनी। आह! वह हमें बहुत बुरी तरह से पुरस्कृत कर रहा है: मुझे स्वीकार करना होगा कि मैंने उससे ऐसी उम्मीद कभी नहीं की थी। मैंने उसके बारे में बेहतर सोचा था। वह बुद्धिमान व्यक्ति था (अपने क्षेत्र में, बेशक)। मुझे पता है कि उसने पहले ही वह पागलपन भरा, शर्मनाक विवाह कर लिया था। इस बात को ध्यान में रखते हुए, क्या मैं आपको किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में बताऊँ जो स्वान के विवाह से वास्तव में आहत हुआ था: मेरी पत्नी। ओरियान अक्सर, जिसे मैं संवेदनहीनता का दिखावा कह सकता हूँ, करती है। लेकिन दिल से वह चीजों को असाधारण तीव्रता से महसूस करती है।" श्रीमती डी गुएरमांटेस, अपने चरित्र के इस विश्लेषण से प्रसन्न होकर, इसे विनम्रता से सुनती रहीं, लेकिन एक शब्द भी नहीं बोलीं, क्योंकि वह इसमें शामिल होने से हिचकिचा रही थीं, लेकिन मुख्य रूप से इसे बीच में ही रोकने के डर से। श्रीमती डी गुएरमांटेस इस विषय पर एक घंटे तक बात कर सकती थीं, वह उतनी ही शांत बैठी रहतीं, या उससे भी अधिक शांत जैसे संगीत सुन रही हों। "बहुत खूब! मुझे याद है, जब उसने स्वान की शादी के बारे में सुना, तो उसे बहुत दुख हुआ था; उसे लगा कि जिस व्यक्ति से हमने इतनी गहरी दोस्ती की थी, उसके साथ ऐसा करना गलत है। वह स्वान को बहुत पसंद करती थी; उसे बहुत गहरा दुख हुआ था। क्या मैं सही नहीं कह रही, ओरियान?" श्रीमती डी गुएरमांटेस को लगा कि उन्हें इस सीधे सवाल का जवाब तथ्य के आधार पर देना चाहिए, जिससे वह चुपचाप उस सम्मान की पुष्टि कर सकें जो उनके अनुसार अब समाप्त हो चुका था। शर्मीले और सरल स्वर में, और इस बनावटी अंदाज़ में कि वह सच्ची 'भावना' दिखाना चाहती थीं, उन्होंने विनम्रता से कहा, "यह सच है, बेसिन बिल्कुल सही कह रही हैं।" फिर भी, यह बिल्कुल वैसा नहीं था। आखिरकार, प्यार तो प्यार होता है, हालांकि, मेरी राय में, इसे कुछ सीमाओं के भीतर ही रहना चाहिए। मैं एक नौजवान, एक लड़के को, मोह में पड़ जाने के लिए माफ कर सकता हूँ। लेकिन स्वान, एक बुद्धिमान व्यक्ति, सिद्ध

परिष्कार का धनी, चित्रों का अच्छा पारखी, ड्यूक डी चार्ट्रेस का घनिष्ठ मित्र, स्वयं गिल्बर्ट का मित्र! एम. डी गुएरमांटेस ने जिस लहजे में यह कहा, वह काफी सौम्य था, उसमें उस अशिष्टता का जरा भी अंश नहीं था जो वह अक्सर दिखाते थे। उन्होंने थोड़ी सी आक्रोशित उदासी के साथ बात की, लेकिन उनके व्यक्तित्व में वह सौम्य गंभीरता झलकती थी जो रेम्ब्रांट के कुछ चित्रों, जैसे कि बर्गरमास्टर सिक्स के चित्र, के व्यापक और आकर्षक आकर्षण का निर्माण करती है। ऐसा लगता था कि 'इस मामले' के संबंध में स्वान के आचरण की अनैतिकता का प्रश्न ड्यूक के सामने कभी आया ही नहीं, क्योंकि वह उत्तर को लेकर इतने आश्वस्त थे। इससे उन्हें उस पिता का गहरा दुःख हुआ, जिसने अपने उस बेटे को देखा हो, जिसकी शिक्षा के लिए उन्होंने तमाम बलिदान दिए हों, कि वह जानबूझकर उस गौरवशाली पद को बर्बाद कर रहा है जो उन्होंने उसके लिए बनाया था और अपने परिवार के सिद्धांतों या पूर्वाग्रहों के विरुद्ध शरारतों से एक सम्मानित नाम को कलंकित कर रहा है। यह सच है कि जब एम. डी. गुएरमांटेस को पता चला कि सेंट-लूप एक ड्रेफसार्ड है, तो उन्होंने इतना गहरा और पीड़ादायक आश्चर्य नहीं दिखाया था। लेकिन, एक बात तो यह थी कि वे अपने भतीजे को एक भटके हुए युवक के रूप में देखते थे, जिसके लिए, जब तक वह अपने रास्ते नहीं सुधारता, कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं हो सकता था, जबकि स्वान को एम. डी. गुएरमांटेस 'एक प्रभावशाली व्यक्ति, एक अग्रणी पद पर आसीन व्यक्ति' कहते थे। इसके अलावा, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि काफी समय बीत चुका था, जिसके दौरान, यदि ऐतिहासिक दृष्टिकोण से, घटनाएँ कुछ हद तक ड्रेफसार्ड के तर्क को सही ठहराती प्रतीत होती थीं, तो ड्रेफसार्ड विरोधी विरोध ने अपनी हिंसा को दोगुना कर दिया था, और विशुद्ध रूप से राजनीतिक होने के बजाय सामाजिक हो गया था। अब सवाल सैन्यवाद और देशभक्ति का था, और समाज में भड़की क्रोध की लहरों को वह बल प्राप्त करने का समय मिल गया था जो किसी तूफान की शुरुआत में कभी नहीं मिलता। "क्या आप नहीं देखते," एम. डी गुएरमांटेस ने आगे कहा, "यहाँ तक कि अपने प्रिय यहूदियों के दृष्टिकोण से भी, क्योंकि वह उनके साथ खड़े रहने के लिए पूरी तरह दृढ़ हैं, स्वान ने एक बहुत बड़ी गलती की है। उन्होंने यह दिखा दिया है कि वे किसी हद तक अपनी ही जाति के किसी भी व्यक्ति को अपना समर्थन देने के लिए विवश हैं, भले ही वे उसे व्यक्तिगत रूप से न जानते हों। यह एक सार्वजनिक खतरा है।

हम स्पष्ट रूप से बहुत लापरवाह रहे हैं, और स्वान की यह गलती और भी अधिक हलचल पैदा करेगी क्योंकि उनका सम्मान किया जाता था, बल्कि उन्हें स्वीकार किया जाता था, और वह लगभग एकमात्र यहूदी थे जिन्हें हर कोई जानता था। लोग कहेंगे: Ab uno disce omnes।" (सही समय पर, अपनी स्मृति में, इतने उपयुक्त उद्धरण को पाकर उनकी संतुष्टि ने अकेले ही विश्वासघात के प्रति सचेत महान रईस की उदासी को एक गर्व भरी मुस्कान से रोशन कर दिया।)

मैं यह जानने के लिए बेताब था कि राजकुमार और स्वान के बीच वास्तव में क्या हुआ था, और अगर स्वान घर नहीं गया था तो उससे मिलना चाहता था। जब मैंने डचेस से अपनी इस इच्छा के बारे में बात की, तो उन्होंने उत्तर दिया, "मुझे आपको यह बताने में कोई आपत्ति नहीं है कि मैं उनसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक नहीं हूँ, क्योंकि अभी-अभी मुझे मैडम डी सेंट-यूवर्टे के यहाँ जो बताया गया, उससे ऐसा लगता है कि मरने से पहले वह चाहते हैं कि मैं उनकी पत्नी और बेटी से मिलवा दूँ। हे भगवान, मुझे बहुत दुख है कि वह बीमार हैं, लेकिन मुझे कहना होगा कि मुझे उम्मीद है कि यह इतना गंभीर नहीं है। और वैसे भी, यह कोई बहाना भी नहीं है, क्योंकि अगर होता तो यह बहुत ही बचकाना और सरल होता। एक प्रतिभाहीन लेखक को बस इतना कहना होता: 'अकादमी में मेरे लिए वोट करें क्योंकि मेरी पत्नी मर रही है और मैं उसे यह अंतिम खुशी देना चाहता हूँ।'" अगर सभी मरते हुए लोगों से दोस्ती करना अनिवार्य हो जाए तो इससे ज्यादा मनोरंजक कुछ नहीं रह जाएगा। मेरा कोचवान मुझसे कह सकता है: 'मेरी बेटी गंभीर रूप से बीमार है, मुझे प्रिंसेस डी पार्म के यहाँ का निमंत्रण दिलवा दीजिए।' मैं चार्ल्स को बहुत पसंद करती हूँ, और मुझे उन्हें मना करना बिल्कुल अच्छा नहीं लगेगा, इसलिए मैं उनके मुझसे ऐसा अनुरोध करने के जोखिम से बचना चाहती हूँ। मैं दिल से उम्मीद करती हूँ कि वह मर नहीं रहे हैं, जैसा कि वह कहते हैं, लेकिन सच में, अगर ऐसा होना ही है, तो यह मेरे लिए उन दो प्राणियों से जान-पहचान करने का समय नहीं होगा जिन्होंने पिछले पंद्रह वर्षों से मेरे सबसे मनोरंजक मित्र को मुझसे छीन लिया है, और साथ ही यह अतिरिक्त नुकसान भी होगा कि मैं उनके साथ रहकर भी चार्ल्स से मिल नहीं पाऊँगी, क्योंकि तब तक तो वह मर चुके होंगे!

इस बीच, एम. डी ब्रेउटे कर्नल डी फ्रोबेरविले द्वारा बताई गई अपनी कहानी के विरोधाभास पर विचार करना बंद नहीं कर पाए थे। उन्होंने कहा, "मेरे प्रिय मित्र, मैं आपके संस्करण की सटीकता पर सवाल नहीं उठाता, लेकिन मुझे यह विश्वसनीय स्रोत से पता चला था। यह जानकारी मुझे प्रिंस डी ला टूर डी औवेर्गने ने दी थी।"

"मुझे आश्चर्य है कि आप जैसे शिक्षित व्यक्ति अभी भी उन्हें 'प्रिंस डे ला टूर डी औवेर्गने' कहते हैं," ड्यूक डे गुएरमांटेस ने बीच में ही कहा, "आप जानते हैं कि उनका कोई वजूद नहीं है। उस परिवार का केवल एक ही सदस्य बचा है। ओरियान के चाचा, ड्यूक डे बौइलन।"

“श्रीमती डी विलेपारिसिस के भाई?” मैंने पूछा, मुझे याद आया कि वे श्रीमती डी बौइलन थीं।

“बिल्कुल। ओरियान, श्रीमती डी लैम्ब्रेसाक आपको प्रणाम कर रही हैं।” और सचमुच, कुछ क्षणों के लिए डचेस डी लैम्ब्रेसाक के चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान उभरती और फिर टूटते तारे की तरह गायब हो जाती थी, जो उन्होंने किसी पहचाने हुए व्यक्ति की ओर बनाई थी। लेकिन यह मुस्कान, एक स्पष्ट लेकिन मौन भाषा में, एक सक्रिय पुष्टि का रूप लेने के बजाय, लगभग तुरंत ही एक प्रकार के आदर्श परमानंद में डूब गई, जिसने कुछ भी व्यक्त नहीं किया, जबकि उनका सिर आनंदमय आशीर्वाद के भाव में झुक गया, मानो किसी कुछ बूढ़े धर्माधिकारी का सिर भक्तों की भीड़ की ओर झुका हुआ हो। श्रीमती डी लैम्ब्रेसाक में बुढ़ापे का जरा सा भी निशान नहीं था। लेकिन मैं इस विशेष प्रकार के पुराने जमाने के भेद से पहले से ही परिचित थी। कॉम्ब्रे और पेरिस में, मेरी दादी की सभी सहेलियाँ सामाजिक समारोहों में एक-दूसरे का अभिवादन इस तरह करती थीं मानो उन्होंने किसी परिचित को चर्च में, प्रार्थना के समय या किसी अंत्येष्टि के दौरान देखा हो, और उन्हें मधुर 'शुभ प्रभात' कह रही हों, जो प्रार्थना के साथ समाप्त होता था। इसी समय एम. डी गुएरमांटेस की एक टिप्पणी ने मेरे द्वारा खोजी जा रही समानता को पूर्ण कर दिया। उन्होंने मुझसे कहा, "लेकिन आपने ड्यूक डी बौइलन को देखा है। आज दोपहर जब आप अंदर आईं, तो वह मेरी लाइब्रेरी से बाहर जा रहे थे, एक छोटे कद के व्यक्ति जिनके बाल सफेद थे।" यह वही व्यक्ति था जिसे मैंने कॉम्ब्रे का कोई व्यापारी समझा था, और फिर भी, अब जब मैंने इस पर विचार किया, तो मुझे श्रीमती डी विलेपारिसिस से समानता दिखाई दी। डचेस डी लैम्ब्रेसाक और मेरी दादी की सहेलियों के क्षणभंगुर अभिवादनों में समानता ने सबसे पहले मेरी रुचि जगाई थी। इसने मुझे दिखाया कि

कैसे सभी संकीर्ण और विशिष्ट समाजों में, चाहे वे छोटे कुलीन वर्ग के हों या बड़े कुलीन वर्ग के, पुराने शिष्टाचार कायम रहते हैं, जिससे हम एक पुरातत्वविद् की तरह यह जान पाते हैं कि विस्काउंट डी'आर्लिनकोर्ट और लोइसा पुगेट के समय में पालन-पोषण का स्तर और जीवन का वह पहलू क्या रहा होगा जो इसे प्रतिबिंबित करता है। अब तो और भी बेहतर, कॉम्ब्रे के एक व्यापारी और ड्यूक डी बौइलन के बीच शक्ल-सूरत में पूर्ण समानता ने मुझे उस बात की याद दिला दी जो मुझे पहले ही बहुत गहराई से झकझोर चुकी थी जब मैंने सेंट-लूप के नाना, ड्यूक डी ला रोशेफौकॉल्ड को एक डैगरेोफोटो में देखा था, जिसमें वे पहनावे, हाव-भाव और तौर-तरीकों में मेरे परदादा से हूबहू मिलते-जुलते थे। इससे पता चलता है कि जब किसी युग की एकरूपता में दूर से देखा जाता है तो सामाजिक और यहां तक कि व्यक्तिगत अंतर भी विलीन हो जाते हैं। सच्चाई यह है कि पहनावे की समानता, और साथ ही किसी व्यक्ति के चेहरे से झलकने वाली उसके युग की भावना, उसकी जाति की तुलना में कहीं अधिक महत्व रखती है, जो कि केवल उसके आत्मसम्मान और अन्य लोगों की कल्पना में ही अधिक मायने रखती है। इसलिए यह जानने के लिए कि लुई फिलिप के समय का एक महान रईस, लुई फिलिप के समय के एक आम नागरिक से लुई XV के समय के एक महान रईस की तुलना में कम भिन्न है, लूव्र संग्रहालयों का दौरा करना आवश्यक नहीं है।

उसी क्षण, लंबे बालों वाला एक बवेरियन संगीतकार, जिसे प्रिंसेस डी गुएरमांटेस ने संरक्षण दिया था, ओरियान के सामने झुक गया। ओरियान ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, लेकिन ड्यूक, अपनी पत्नी को एक ऐसे व्यक्ति के सामने झुकते देख क्रोधित हो गया जिसे वह नहीं जानता था, जिसका अंदाज़ विचित्र था, और जहाँ तक एम. डी गुएरमांटेस समझती थीं, जिसकी प्रतिष्ठा बेहद खराब थी। ड्यूक ने अपनी पत्नी की ओर एक भयानक पूछताछ भरे लहजे में मुड़ते हुए पूछा, मानो पूछ रहा हो: "आखिर वह ओस्ट्रोगोथ कौन है?" बेचारी श्रीमती डी गुएरमांटेस की स्थिति पहले से ही बेहद जटिल थी, और अगर उस संगीतकार को इस पीड़ित पत्नी पर थोड़ी सी भी दया आ जाती, तो वह जितनी जल्दी हो सके वहाँ से भाग जाता। लेकिन, चाहे सार्वजनिक रूप से ड्यूक के सबसे पुराने और घनिष्ठ मित्रों की आँखों के सामने हुए अपमान से बचने की इच्छा से, जिनकी उपस्थिति शायद उनके मौन प्रणाम का कुछ हद तक कारण थी, और यह दिखाने के लिए कि उन्होंने डचेस डी गुएरमांटेस का अभिवादन उचित कारण से

किया था, न कि उन्हें पहले से जाने-पहचाने बिना, या फिर किसी अस्पष्ट लेकिन अनियंत्रित आवेग के कारण, जिसने उन्हें उस समय कानून के अक्षरशः पालन करने के लिए प्रेरित किया जब उन्हें अपने विवेक पर भरोसा करना चाहिए था, संगीतकार श्रीमती डी गुएरमांटेस के करीब आए और उनसे कहा: "मैडम ला डचेस, मैं ड्यूक से परिचय कराने का सम्मान चाहता/चाहती हूँ।" श्रीमती डी गुएरमांटेस वास्तव में दुविधा में थीं। लेकिन आखिरकार, भले ही वह एक परित्यक्त पत्नी थी, फिर भी वह डचेस डी गुएरमांटेस थी और अपने पति से अपने परिचितों का परिचय कराने का अधिकार खो देने का दिखावा नहीं कर सकती थी। "बेसिन," उसने कहा, "मुझे आपसे श्री डी'हेरवेक का परिचय कराने की अनुमति दें।"

"मुझे यह पूछने की ज़रूरत नहीं है कि आप कल मैडम डी सेंट-यूवर्टे के यहाँ जा रही हैं या नहीं," कर्नल डी फ्रोबरविले ने श्रीमती डी गुएरमांटेस से कहा, ताकि एम. डी'हर्वेक के बेसमय के अनुरोध से उत्पन्न अप्रिय धारणा को दूर किया जा सके। "पूरा पेरिस वहाँ होगा।" इसी बीच, ड्यूक डी गुएरमांटेस, एक ही झटके में और मानो किसी ठोस पत्थर से तराशे गए हों, उस अविवेकी संगीतकार की ओर मुड़े और अपने विनम्र, विशालकाय, मूक, क्रोधित, बृहस्पति टोनन्स के समान, सामने खड़े होकर कुछ सेकंड तक स्थिर रहे, उनकी आँखें क्रोध और आश्चर्य से धधक रही थीं, उनके लहराते बाल किसी गड्ढे से निकलते प्रतीत हो रहे थे। फिर, मानो किसी आवेग से प्रेरित होकर, जिसने उन्हें अपेक्षित शिष्टाचार निभाने में सक्षम बनाया, और अपने अवज्ञापूर्ण रवैये से मानो पूरी मंडली को यह गवाही देने के लिए चुनौती दे रहे हों कि वे बवेरियन संगीतकार को नहीं जानते, अपने सफेद दस्ताने वाले हाथों को पीठ के पीछे बांधकर, उन्होंने अपना शरीर आगे की ओर झटका दिया और संगीतकार को इतना गहरा, इतना विस्मयकारी और क्रोध से भरा, इतना अचानक और इतना हिंसक प्रणाम किया कि कांपता हुआ कलाकार पीछे हट गया, झुकते हुए ताकि उसके पेट पर ज़ोरदार चोट न लगे।

"खैर, बात यह है कि मैं पेरिस में नहीं रहूंगी," डचेस ने कर्नल डी फ्रोबरविले को उत्तर दिया। "मैं आपको बता भी देती हूँ (हालाँकि मुझे ऐसी बात स्वीकार करने में शर्म आनी चाहिए) कि मैंने इतने वर्षों तक मॉन्टफोर्ट-ल'अमौरी की खिड़कियाँ नहीं देखी हैं। यह चौंकाने वाला है, लेकिन यही सच है। और इसलिए, अपनी शर्मनाक अज्ञानता का प्रायश्चित करने के लिए, मैंने कल जाकर उन्हें देखने का फैसला किया है।" एम. डी ब्रेउटे ने हल्की सी मुस्कान दी। वे भली-

भांति समझते थे कि यदि डचेस इतने वर्षों तक मॉन्टफोर्ट-ल'अमौरी की खिड़कियाँ देखे बिना रह सकीं, तो यह कलात्मक यात्रा अचानक से किसी अत्यावश्यक अभियान का रूप नहीं ले सकती थी और पच्चीस वर्षों से अधिक समय तक टलने के बाद, बिना किसी खतरे के चौबीस घंटे के लिए टाली जा सकती थी। डचेस की योजना वास्तव में गुएरमांटेस का यह फरमान जारी करने का तरीका था कि सेंट-यूवर्टे का घर निश्चित रूप से कोई 'वास्तव में शानदार' घर नहीं था, बल्कि एक ऐसा घर था जहाँ आपको आमंत्रित किया जाता था ताकि बाद में आपका उपयोग गॉलॉइस के खाते में किया जा सके, एक ऐसा घर जो उन लोगों पर, या कम से कम उन पर (यदि कोई एक ही हो) जो वहाँ नहीं जाते, सर्वोच्च शान-शौकत की मुहर लगा देता। एम. डी ब्रेउटे का सूक्ष्म मनोरंजन, उस काव्यात्मक आनंद से और भी बढ़ गया जो समाज के लोग श्रीमती को देखकर महसूस करते थे। डी गुएरमांटेस ऐसे काम करते हैं जिनकी नकल करने की अनुमति उनकी निम्न स्थिति ने उन्हें नहीं दी थी, लेकिन जिन्हें देखकर उनके होठों पर एक किसान की मुस्कान आ जाती थी, जो अपने से अधिक स्वतंत्र और भाग्यशाली लोगों को अपने सिर के ऊपर से गुजरते हुए देखकर मिट्टी में सिमट जाता है। इस नाजुक आनंद की तुलना किसी भी तरह से उस छिपे हुए लेकिन उन्मत्त परमानंद से नहीं की जा सकती थी जिसे एम. डी फ्रोबरविले ने तुरंत महसूस किया था।

इस सज्जन ने अपनी हंसी को लोगों से छिपाने के लिए इतने प्रयास किए कि उनका चेहरा मुर्गे की तरह लाल हो गया। फिर भी, खुशी के मारे हिचकियों के बीच रुक-रुक कर आते हुए उन्होंने दया भरे स्वर में कहा, "ओह! बेचारी आंटी सेंट-यूवर्टे, अब तो बिस्तर पर ही पड़ेंगी! नहीं! उस अभागी महिला को उनकी डचेस नहीं मिलेंगी, कितना बड़ा झटका है, अरे, ये तो उन्हें मार डालने के लिए काफी है!" वे हंसते-हंसते लोटपोट हो गए। और अपनी खुशी में वे पैर पटकने और हाथ मलने से खुद को रोक नहीं पाए। एक आंख से मुस्कुराते हुए और होठों के कोने से एम. डी फ्रोबरविले की ओर देखते हुए, जिनकी सौम्य मंशा की वे सराहना तो करती थीं, लेकिन उनकी संगति की जानलेवा बोरियत को असहनीय पाते हुए, श्रीमती डी गुएरमांटेस ने अंततः उन्हें छोड़ने का फैसला किया।

"सुनो, मुझे तुम्हें शुभ रात्रि कहना पड़ेगा," उसने उदास भाव से उठते हुए उससे कहा, मानो यह उसके लिए एक गहरा दुख हो। उसकी नीली आँखों के जादू के नीचे उसकी मधुर आवाज़

किसी परी के काव्यात्मक विलाप की याद दिलाती थी। "बेसिन चाहता है कि मैं जाकर मैरी से थोड़ी देर बात करूँ।" वास्तव में, वह फ्रोबरविले की बातें सुनते-सुनते थक चुकी थी, जो मोंटफोर्ट-ल'अमौरी जाने पर उससे ईर्ष्या करता रहता था, जबकि वह अच्छी तरह जानती थी कि उसने अपने जीवन में कभी भी उन खिड़कियों के बारे में नहीं सुना था, और न ही वह दुनिया में किसी भी कीमत पर सेंट-यूवर्ट पार्टी में जाना छोड़ना चाहता था। "अलविदा, मैंने तुमसे मुश्किल से एक शब्द भी कहा है, पार्टियों में हमेशा ऐसा ही होता है, हम लोगों को देख नहीं पाते, हम वो बातें नहीं कह पाते जो हम कहना चाहते हैं, लेकिन इस जीवन में हर जगह यही हाल है। उम्मीद है कि मरने के बाद सब कुछ बेहतर होगा। खैर, हमें हमेशा छोटे कपड़े तो नहीं पहनने पड़ेंगे। फिर भी, कौन जाने। शायद हमें बड़े मौकों पर अपनी हड्डियाँ और कीड़े-मकोड़े दिखाने पड़ें। क्यों नहीं? देखो, वो बूढ़ी रैम्पिलॉन जा रही है, क्या तुम्हें उसमें और खुले कपड़े पहने कंकाल में कोई बड़ा अंतर दिखता है? यह सच है कि उसे ऐसा दिखने का पूरा अधिकार है, क्योंकि उसकी उम्र कम से कम सौ साल तो होगी ही। जब मैंने पहली बार समाज में कदम रखा था, तब वह उन पवित्र राक्षसों में से एक थी जिनके सामने मैंने घुटने टेकने से इनकार कर दिया था। मुझे लगा था कि वह सालों पहले मर चुकी है; और यही उसके इस तमाशे का एकमात्र संभावित स्पष्टीकरण होगा। यह प्रभावशाली और धार्मिक है; बिलकुल कैम्पोसेंटो जैसा!" डचेस फ्रोबरविले से दूर चली गई थी; वह उसके पीछे आया: "तुम्हारे कान में बस एक बात।" थोड़ी झुंझलाहट के साथ: "अच्छा, अब क्या बात है?" उसने उससे कड़े स्वर में कहा। और वह, इस डर से कि कहीं आखिरी क्षण में वह मॉन्टफोर्ट-ल'अमौरी के बारे में अपना विचार न बदल दे, बोला: "मैंने श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे के लिए इसका ज़िक्र नहीं किया, ताकि उन्हें परेशानी न हो, लेकिन चूंकि आप वहां नहीं जा रही हैं, तो मैं आपको बता सकता हूं कि मुझे आपकी खातिर खुशी है, क्योंकि घर में उन्हें खसरा हो गया है!" "अरे बाप रे!" ओरियान बोली, जिसे बीमारियों से बहुत डर लगता था। "लेकिन इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, मुझे तो पहले ही हो चुका है। दो बार नहीं हो सकता।" "डॉक्टर भी यही कहते हैं; मैं ऐसे लोगों को जानता हूं जिन्हें चार बार खसरा हुआ है। खैर, आपको चेतावनी दी जा रही है।" जहाँ तक उसकी बात है, अगर ये काल्पनिक खसरा उसे सचमुच हो जाता और उसे बिस्तर से बांध देता, तब जाकर वह सेंट-यूवर्टे की पार्टी में न जाने के लिए तैयार होता, जिसका वह कई

महीनों से इंतज़ार कर रहा था। वहाँ इतने सारे बुद्धिमान लोगों को देखकर उन्हें बहुत खुशी होगी! उससे भी अधिक खुशी इस बात की होगी कि कुछ चीजें गलत हो गई थीं, और उससे भी कहीं अधिक खुशी इस बात की होगी कि वे लंबे समय तक इस बात का दावा कर सकेंगे कि वे पहले वाले लोगों के साथ घुल-मिल गए थे और बाद वाले लोगों की गलतियों को बढ़ा-चढ़ाकर या मनगढ़ंत तरीके से बताकर उनकी निंदा कर सकेंगे।

मैंने डचेस के उठने का फायदा उठाकर स्मोकिंग रूम की ओर जाने का फैसला किया ताकि स्वान के बारे में सच्चाई का पता लगा सकूँ। "बाबल ने हमें जो कुछ भी बताया है, उस पर ज़रा भी विश्वास मत करो," उसने मुझसे कहा। "छोटा मोल कभी भी ऐसी जगह पर दखल नहीं देगा। वे हमें लुभाने के लिए ऐसा कहते हैं। कोई भी उनके पास नहीं जाता और न ही उन्हें कहीं बुलाया जाता है। वह खुद मानता है: 'हम शामें अकेले अपने चूल्हे के पास बिताते हैं।' जैसा कि वह हमेशा 'हम' कहता है, राजघराने की तरह नहीं, बल्कि अपनी पत्नी को शामिल करने के लिए, मैं उस पर दबाव नहीं डालती। लेकिन मुझे इसके बारे में सब पता है," डचेस ने आगे कहा। हम दो युवकों के पास से गुज़रे जिनकी असाधारण और भिन्न सुंदरता एक ही महिला से उपजी थी। वे ड्यूक डी गुएरमेंटेस की नवीनतम प्रेमिका, श्रीमती डी सर्जिस के दो बेटे थे। दोनों अपनी माँ की खूबियों से परिपूर्ण थे, लेकिन हर एक अपने तरीके से। एक में, एक बलवान शरीर में, श्रीमती की शाही उपस्थिति की लहर दौड़ रही थी। डी सर्जिस और वही पीलापन, प्रज्वलित, लालिमा लिए हुए और पवित्र, माता-पिता दोनों के संगमरमरी गालों पर छाया हुआ था; लेकिन उनके भाई को यूनानी माथा, उत्तम नाक, प्रतिमानुमा गला और असीम गहराई वाली आंखें मिली थीं; इस प्रकार देवी द्वारा उनके बीच साझा किए गए अलग-अलग उपहारों से निर्मित, उनकी दोहरी सुंदरता ने यह सोचकर अमूर्त आनंद प्रदान किया कि उस सुंदरता का कारण कुछ और ही था; कोई कह सकता था कि उनकी माता के प्रमुख गुण दो अलग-अलग शरीरों में समाहित थे; कि एक युवक अपनी माता के कद और रंग-रूप का था, दूसरे की दृष्टि का, उन दिव्य प्राणियों की तरह जो बृहस्पति या मिनर्वा की शक्ति और सुंदरता से अधिक कुछ नहीं थे। एम. डी गुएरमांटेस के प्रति सम्मान से भरे हुए, जिनके बारे में उन्होंने कहा: "वह हमारे माता-पिता के एक महान मित्र हैं," फिर भी बड़े भाई ने सोचा कि डचेस से मिलने और अभिवादन करने के लिए आगे न आना ही बुद्धिमानी होगी, जिसकी उनकी माता

के प्रति शत्रुता के बारे में उन्हें जानकारी थी, हालांकि शायद इसके कारण को समझे बिना, और हमें देखते ही उन्होंने अपना सिर थोड़ा झुका लिया। छोटा भाई, जो हर बात में अपने भाई की नकल करता था, क्योंकि मूर्ख और दूरदर्शी न होने के कारण वह अपनी कोई राय रखने का साहस नहीं करता था, उसने भी अपना सिर उसी कोण पर झुकाया, और दोनों एक के पीछे एक, प्रतीकात्मक आकृतियों की एक जोड़ी की तरह, हमारे पास से कार्ड-रूम की ओर निकल गए।

जैसे ही मैं इस कमरे में पहुँचा, मार्क्विज़ डी सिट्री ने मुझे रोक लिया। वह अब भी सुंदर थीं, लेकिन गुस्से से आग बबूला हो रही थीं। अच्छे खानदान से ताल्लुक रखने वाली मार्क्विज़ ने एम. डी सिट्री से शादी करके एक शानदार रिश्ता बनाया था, जिनकी परदादी औमाले-लोरेन थीं। लेकिन इस खुशी का स्वाद चखते ही, उनके स्वभाविक चिड़चिड़ेपन ने समाज के लोगों के प्रति उनके मन में घृणा पैदा कर दी, जिसने उन्हें सामाजिक जीवन से पूरी तरह अलग नहीं किया। किसी पार्टी में तो वह न केवल वहाँ मौजूद सभी लोगों का मज़ाक उड़ाती थीं, बल्कि उनका मज़ाक इतना तीखा होता था कि सिर्फ़ हँसी काफ़ी नहीं होती थी, बल्कि वह एक कर्कश फुफकार में बदल जाती थी। "आह!" उन्होंने मेरी ओर इशारा करते हुए डचेस डी गुएरमांटेस से कहा, जो अब मेरे पास से हटकर काफ़ी दूर जा चुकी थीं, "मुझे समझ नहीं आता कि वह इस तरह का जीवन कैसे जी सकती हैं।" क्या यह किसी धर्मपरायण संत का भाषण था, जो इस बात से चकित था कि गैर-यहूदी स्वेच्छा से सत्य को जानने के लिए क्यों नहीं आए, या किसी अराजकतावादी का, जो नरसंहार के लिए तड़प रहा था? किसी भी स्थिति में, इस संबोधन का कोई औचित्य नहीं हो सकता। पहली बात तो यह है कि श्रीमती डी गुएरमांटेस का जीवन (क्रोध को छोड़कर) श्रीमती डी सिट्री के जीवन से शायद ही भिन्न था। श्रीमती डी सिट्री उस समय स्तब्ध रह गईं जब उन्होंने डचेस को वह घातक बलिदान करते देखा: मैरी-गिल्बर्ट की पार्टियों में से एक में शामिल होना। इस विशेष संदर्भ में यह कहना आवश्यक है कि श्रीमती डी सिट्री राजकुमारी से वास्तव में स्नेह करती थीं, जो वास्तव में अत्यंत दयालु महिला थीं, और जानती थीं कि उनकी पार्टी में शामिल होकर वह उन्हें अत्यंत प्रसन्नता प्रदान कर रही हैं। इसलिए उन्होंने पार्टी में आने के लिए उस नर्तकी को टाल दिया, जिसे वह प्रतिभावान मानती थीं और जो उन्हें रूसी नृत्यकला के रहस्यों से परिचित कराने वाली थी।

एक और कारण जिसने श्रीमती डी सिट्री के उस तीव्र क्रोध को कुछ हद तक कम कर दिया, जो उन्हें ओरियान को किसी न किसी अतिथि का अभिवादन करते देखकर उमड़ रहा था, वह यह था कि श्रीमती डी गुएरमांटेस, यद्यपि काफी कम अवस्था में थीं, फिर भी उसी बीमारी के लक्षण दिखा रही थीं जो श्रीमती डी सिट्री को जकड़ रही थी। इसके अलावा, हमने देखा है कि वह जन्म से ही इसके बीज लिए हुए थीं। वास्तव में, श्रीमती डी सिट्री से अधिक बुद्धिमान होने के कारण, श्रीमती डी गुएरमांटेस को इस शून्यवाद (जो केवल सामाजिक नहीं था) का उनसे कहीं अधिक अधिकार था, लेकिन यह सच है कि कुछ अच्छे गुण हमें अपने पड़ोसी की कमियों को सहन करने में मदद करते हैं, न कि उनसे पीड़ित होने में; और एक महान प्रतिभा वाला व्यक्ति आमतौर पर दूसरों की मूर्खता पर उतना ध्यान नहीं देता जितना एक मूर्ख देता है। हमने डचेस की हास्य-व्यंग्य शैली का पर्याप्त विस्तार से वर्णन किया है, जिससे पाठक आश्वस्त हो जाएगा कि यदि उसमें महान बुद्धि का कोई अंश नहीं था, तो कम से कम वह हास्य-व्यंग्य तो थी ही, एक ऐसी हास्य-व्यंग्य शैली जो (अनुवादक की तरह) विभिन्न व्याकरणिक रूपों का कुशलतापूर्वक उपयोग करती थी। अब, इस प्रकार की कोई भी बात श्रीमती डी सिट्री को उन गुणों को नीचा दिखाने का अधिकार नहीं देती थी जो उनके स्वयं के इतने निकट थे। वह सभी को मूर्ख समझती थीं, लेकिन अपनी बातचीत और पत्रों में, वह स्वयं को उन लोगों से स्पष्ट रूप से हीन प्रदर्शित करती थीं, जिनके प्रति वह इतना तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करती थीं। इसके अलावा, उनमें विनाश की ऐसी प्यास थी कि जब उन्होंने लगभग समाज त्याग दिया था, तो जिन सुखों की वह तलाश कर रही थीं, वे एक-एक करके उनकी भयानक विघटनकारी शक्ति के अधीन हो गए। जब उन्होंने पार्टियों को छोड़कर संगीत संध्याओं का सहारा लिया, तो वह कहा करती थीं: "तुम्हें इस तरह की चीज़ें, संगीत सुनना पसंद है? हे भगवान, यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि वह क्या है। यह बिल्कुल घातक हो सकता है! ओह! बीथोवेन! कितना उबाऊ!" वैगनर के साथ, फिर फ्रैंक के साथ, डेबुसी के साथ, उन्होंने बार्बे शब्द का उच्चारण करने की भी जहमत नहीं उठाई, बल्कि केवल अपने चेहरे पर हाथ फेरते हुए एक मुंडनकारी का इशारा किया।

कुछ ही पलों में सब कुछ उबाऊ हो गया। "सुंदर चीज़ें भी कितनी उबाऊ होती हैं! ओह! तस्वीरें! ये तो किसी को पागल कर सकती हैं। आप बिल्कुल सही कह रही हैं, चिट्ठियाँ लिखना

कितना उबाऊ होता है!" अंत में उसने जीवन को ही उबाऊ घोषित कर दिया, जिससे श्रोता सोचने पर मजबूर हो गए कि उसने यह शब्द कहाँ प्रयोग किया।

मुझे नहीं पता कि यह डचेस डी गुएरमांटेस की उस बात का असर था जो उन्होंने उस शाम कही थी जब मैंने पहली बार उनके घर भोजन किया था, लेकिन कार्ड रूम—या स्मोकिंग रूम—अपने चित्रमय फर्श, तिपाई, देवी-देवताओं और जानवरों की आकृतियों से जो आपको घूरती रहती थीं, कुर्सियों की भुजाओं पर फैले स्फिंक्स और सबसे बढ़कर संगमरमर या एनामेल्ड मोज़ेक से बनी विशाल मेज, जिस पर एट्रस्कन और मिस्र की कला से मिलते-जुलते प्रतीकात्मक चिह्न बने थे, ने मुझे किसी जादूगर के कक्ष का आभास कराया। और, उस चमकदार, शुभ मेज के पास लगी कुर्सी पर, स्वयं एम. डी चार्लस, बिना किसी कार्ड को छुए, अपने आस-पास क्या हो रहा है उससे बेखबर, मेरे कमरे में प्रवेश करने से अनभिज्ञ, बिल्कुल एक जादूगर की तरह लग रहे थे जो अपनी इच्छाशक्ति और तर्कशक्ति का पूरा इस्तेमाल कुंडली बनाने में कर रहे हों। इतना ही नहीं, बल्कि जैसे किसी पाइथियन की तिपाई पर टिकी आंखें, उसकी आंखें उसके सिर से ही निकल रही थीं, और ताकि कोई भी चीज़ उसे उन कामों से विचलित न कर सके जिनमें सबसे सरल गतिविधियों को रोकना आवश्यक था, उसने (एक कैलकुलेटर की तरह जो अपनी समस्या हल होने तक कुछ नहीं करेगा) अपने होठों के बीच पकड़ी हुई सिगार को अपने पास रख दिया था, जिसे वह पहले अपने होठों के बीच पकड़े हुए था, लेकिन अब उसके पास धूम्रपान के बारे में सोचने के लिए आवश्यक एकाग्रता नहीं थी। उसके सामने रखी कुर्सी की भुजाओं पर बैठे दो झुके हुए देवताओं को देखकर कोई सोच सकता था कि बैरन स्फिंक्स की पहेली को सुलझाने का प्रयास कर रहा है, लेकिन वास्तव में वह एक युवा और जीवित ओडिपस था, जो उसी कुर्सी पर बैठा था, जहाँ वह खेल में शामिल होने आया था। अब, जिस आकृति पर एम. डी. चार्लस अपनी सारी मानसिक शक्ति लगाकर एकाग्रता से काम कर रहे थे, और जो सच कहें तो, आम तौर पर ज्यामितीय रूप से अध्ययन की जाने वाली आकृतियों जैसी नहीं थी, वह युवा कॉम्टे डी. सर्जिस के चेहरे की बनावट द्वारा निर्धारित प्रश्न थी; एम. डी. चार्लस की तल्लीनता इतनी गहरी थी कि ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो यह कोई पहेली, कोई बीजगणितीय समस्या हो, जिसका रहस्य सुलझाने या सूत्र निकालने का उन्हें प्रयास करना होगा। उनके सामने विधि की उस तालिका पर अंकित

रहस्यमय चिह्न और आकृतियाँ ऐसी लग रही थीं मानो वे व्याकरण की वह किताब हों जो उस अनुभवी जादूगर को यह बताने में सक्षम बनाएँगी कि उस युवक का भाग्य किस दिशा में मुड़ रहा है। अचानक उन्हें एहसास हुआ कि मैं उन्हें देख रहा हूँ, उन्होंने अपना सिर ऐसे उठाया जैसे वे किसी सपने से जाग रहे हों, मेरी ओर मुस्कुराए और शरमा गए। उसी क्षण श्रीमती डी. सर्जिस का दूसरा बेटा खेलने वाले बेटे के पीछे आकर उसके पत्ते देखने लगा। जब एम. डी चार्लस को मुझसे पता चला कि वे भाई हैं, तो उनके चेहरे पर उस परिवार के प्रति प्रशंसा के भाव स्पष्ट रूप से झलक रहे थे, जिसने इतनी शानदार और विविध कृतियों का सृजन किया। बैरन का उत्साह इस बात से और भी बढ़ गया कि श्रीमती डी सर्जिस-ले-ड्यूक के दोनों पुत्र न केवल एक ही माता के थे, बल्कि एक ही पिता की संतान भी थे। बृहस्पति की संतानें भिन्न-भिन्न होती हैं, क्योंकि उन्होंने पहले मेटिस से विवाह किया, जिनका भाग्य बुद्धिमान संतानों को जन्म देना था, फिर थेमिस से, और उनके बाद यूरिनोम, मेमोसिन, लेटो से, और अंत में जूनो से। लेकिन श्रीमती डी सर्जिस ने एक ही पिता से इन दो पुत्रों को जन्म दिया, जिन्हें उनसे सौंदर्य तो प्राप्त हुआ, लेकिन एक अलग ही सौंदर्य।

अंततः मुझे स्वान को इस विशाल कमरे में आते देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, इतना विशाल कि उसने मुझे पहली नज़र में देखा ही नहीं। यह सौभाग्य और दुःख का मिश्रण था, एक ऐसा दुःख जो शायद अन्य मेहमानों को महसूस नहीं हुआ, उनका भाव तो मृत्यु के विचित्र और अप्रत्याशित स्वरूपों के प्रति एक विशेष आकर्षण था, एक ऐसी मृत्यु जो आम कहावत के अनुसार, मनुष्य के चेहरे पर लिखी होती है। और लगभग अपमानजनक स्तब्धता के साथ, जिसमें अविवेकी जिज्ञासा, क्रूरता और एक साथ शांत और चिंतित निगाहें समाई हुई थीं (रॉबर्ट इसे सौम्यता और क्षणभंगुरता का मिश्रण कहते), सभी की निगाहें उस चेहरे पर टिकी थीं, जिसके गाल रोग से इतने मुरझा गए थे, जैसे घटता हुआ चंद्रमा, कि एक विशेष कोण को छोड़कर, जिस कोण से स्वान ने स्वयं को देखा होगा, वे एक नाजुक दृश्यावली की तरह रुक गईं, जिसे केवल एक प्रकाशीय भ्रम ही ठोसता का आभास दे सकता है। चाहे गालों के अभाव के कारण, जो अब चेहरे को संवारने के लिए मौजूद नहीं थे, या धमनीकाठिन्य (जो एक प्रकार का नशा भी है) के कारण, जिसने इसे शराब की तरह लाल कर दिया था या मॉर्फिन की तरह विकृत कर दिया था, स्वान की नुकीली नाक, जो वर्षों से एक आकर्षक चेहरे में समाई हुई थी,

अब विशाल, सूजी हुई, लाल रंग की लग रही थी, किसी शौकिया वालोइस की नाक के बजाय किसी बूढ़े यहूदी की नाक जैसी। शायद इन अंतिम दिनों में, उनमें भी, यह नस्ल अपनी विशिष्ट शारीरिक बनावट को और अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट कर रही थी, साथ ही शेष यहूदियों के साथ नैतिक एकजुटता की भावना को भी, एक ऐसी एकजुटता जिसे स्वान अपने जीवन भर भूल गए थे, और जिसे उनकी जानलेवा बीमारी, ड्रेफस मामले और यहूदी-विरोधी प्रचार ने एक-एक करके पुनर्जीवित कर दिया था। कुछ ऐसे इस्राएली भी हैं, जो श्रेष्ठ लोग और दुनियादारी के परिष्कृत पुरुष हैं, जिनके भीतर एक नाटक की तरह, जीवन के किसी भी मोड़ पर एक शरारती और एक नबी का रूप छिपा रहता है। स्वान पैगंबर की उम्र में पहुँच चुके थे। बेशक, उनके चेहरे का, जो उनकी बीमारी के कारण कई हिस्सों से गायब हो चुका था, जैसे बर्फ का टुकड़ा पिघलकर अलग हो जाता है, वे बहुत बदल गए थे। लेकिन मैं इस बात से दंग रह गया कि मेरे प्रति उनका व्यवहार कितना बदल गया था। यह उत्कृष्ट, सुसंस्कृत व्यक्ति, जिनसे मिलकर मुझे ज़रा भी असुविधा नहीं हुई, मैं समझ नहीं पा रहा था कि मैंने उन्हें इतने लंबे समय पहले इतना रहस्यमय क्यों मान लिया था कि शैंप्स-एलिसी में उनकी उपस्थिति से मेरा दिल इतनी ज़ोर से धड़कने लगता था कि मैं उनके रेशम से सजे लबादे के पास जाने से भी डरता था, और जिस फ्लैट में वे रहते थे, उसके दरवाजे पर घंटी बजाने से पहले ही मैं असीम भावनाओं और घबराहट से भर जाता था; यह सब न केवल उनके घर से, बल्कि उनके व्यक्तित्व से भी गायब हो गया था, और उनसे बात करने का विचार मुझे सुखद लगे या न लगे, पर मेरे मन पर इसका कोई असर नहीं हुआ।

और इसके अलावा, उस दोपहर से, जब मैं उससे मिला था—आखिरकार, कुछ ही घंटे पहले —ड्यूक डी गुएरमांटेस के अध्ययन कक्ष में—उसमें कितना बदलाव आ गया था। क्या सचमुच राजकुमार के साथ उसका झगड़ा हुआ था, और क्या इससे वह बुरी तरह टूट गया था? यह अनुमान लगाना ज़रूरी नहीं था। एक बहुत बीमार व्यक्ति से थोड़ी सी भी मेहनत की उम्मीद करना उसके लिए बहुत ज़्यादा तनाव बन जाता है। पहले से ही थके हुए व्यक्ति को भीड़ भरे ड्राइंग रूम की गर्मी में बस एक बार रख देने से ही उसका चेहरा सड़ने लगता है और नीला पड़ जाता है, जैसे कुछ ही घंटों में ज़्यादा पके नाशपाती या खराब होने वाले दूध का हो जाता है। इसके अलावा, स्वान के बाल जगह-जगह से पतले हो गए थे, और जैसा कि

श्रीमती डी गुएरमांटेस ने कहा, उन्हें फरियर से देखभाल की ज़रूरत थी, ऐसा लग रहा था जैसे उन पर कपूर छिड़का गया हो, और वह भी बुरी तरह से। मैं स्वान से बात करने के लिए कमरे के उस पार ही जा रहा था कि दुर्भाग्य से किसी का हाथ मेरे कंधे पर पड़ा।

"हैलो, दोस्त, मैं अड़तालीस घंटे के लिए पेरिस में हूँ। मैं आपके घर आया था, उन्होंने मुझे बताया कि आप यहाँ हैं, इसलिए मेरी चाची अपनी पार्टी में मुझे आमंत्रित करने के लिए आपकी आभारी हैं।" यह सेंट-लूप थे। मैंने उन्हें बताया कि मुझे उनका घर कितना पसंद आया। "हाँ, यह वाकई एक ऐतिहासिक इमारत है। व्यक्तिगत रूप से, मुझे यह बहुत ही घिनौनी लगती है। हमें अपने चाचा पलामेडे के पास नहीं जाना चाहिए, वरना हम पकड़े जाएँगे। अब जब श्रीमती मोले चली गई हैं (क्योंकि अभी वही सब कुछ संभाल रही हैं), तो वह बिल्कुल खाली बैठे हैं। ऐसा लगता है जैसे यह एक नाटक था, उन्होंने उन्हें एक पल के लिए भी अपनी नज़रों से ओझल नहीं होने दिया, और उन्हें तभी छोड़ा जब उन्होंने उन्हें सुरक्षित रूप से उनकी गाड़ी में बिठा दिया। मुझे अपने चाचा से कोई दुर्भावना नहीं है, बस मुझे यह अजीब लगता है कि मेरी पारिवारिक परिषद, जो हमेशा मेरे प्रति इतनी कठोर रही है, उन्हीं लोगों से बनी है जिन्होंने खुद बेफिक्री भरी जिंदगी जी है, जिनमें सबसे बेफिक्र मेरे चाचा चार्लस हैं, जो मेरे आधिकारिक संरक्षक हैं, जिनके पास डॉन जुआन से भी ज़्यादा औरतें रही हैं, और अपनी उम्र के बावजूद अभी भी मौज-मस्ती कर रहे हैं। एक समय मुझे दरबार का संरक्षण देने की बात चल रही थी। मुझे यकीन है, जब वे सभी मौज-मस्ती करने वाले बूढ़े लोग इस सवाल पर विचार करने के लिए मिले, और मुझे उपदेश देने और यह बताने के लिए बुलाया कि मैं मेरी माँ का दिल तोड़ते हुए, वे हँसी के डर से एक-दूसरे की ओर देखने की हिम्मत भी नहीं करते थे। ज़रा उन लोगों के बारे में सोचो जिन्होंने परिषद बनाई थी, तुम्हें लगेगा कि उन्होंने जानबूझकर सबसे बड़े अय्याशों को चुना था। एम. डी चार्लस को छोड़ दें, जिनके बारे में मेरे दोस्त का आश्चर्य अब मुझे उचित नहीं लग रहा था, लेकिन अलग कारणों से, और वे कारण जो बाद में मेरे मन में बदल गए, रॉबर्ट को यह मानना बिल्कुल गलत था कि सांसारिक ज्ञान की शिक्षा एक नौजवान को उन लोगों द्वारा दी जानी चाहिए जिन्होंने मूर्खतापूर्ण काम किए थे, या अभी भी कर रहे थे।

यदि हम केवल वंशानुगत प्रवृत्तियों, पारिवारिक समानताओं को ही ध्यान में रखें, तो यह अपरिहार्य है कि उपदेश देने वाले चाचा में कमोबेश वही दोष होंगे जो उनके भतीजे में हैं, जिन्हें डांटने का काम उन्हें सौंपा गया है। ऐसा करने में चाचा जरा भी पाखंडी नहीं हैं, क्योंकि वे उस प्रवृत्ति से प्रभावित हैं जिसमें लोग हर नए अनुभव को 'बिल्कुल अलग' मान लेते हैं। यह प्रवृत्ति उन्हें कलात्मक, राजनीतिक और अन्य गलतियों को अपनाने की अनुमति देती है, बिना यह समझे कि ये वही गलतियाँ हैं जिन्हें उन्होंने दस साल पहले चित्रकारों के एक अन्य समूह में उजागर किया था, जिनकी उन्होंने निंदा की थी, एक अन्य राजनीतिक मामले में, जिसे वे घृणा के योग्य मानते थे, लेकिन अब उन्हें वह घृणा महसूस नहीं होती। वे इन गलतियों को नए रूप में पहचाने बिना ही अपना लेते हैं। इसके अलावा, भले ही चाचा के दोष भतीजे से भिन्न हों, फिर भी वंशानुक्रम इसका कारण हो सकता है, क्योंकि परिणाम हमेशा कारण के समान नहीं होता, जैसे प्रतिलिपि अपने मूल के समान होती है, और भले ही चाचा के दोष अधिक गंभीर हों, वे आसानी से उन्हें कम गंभीर मान सकते हैं।

जब एम. डी चार्लस ने रॉबर्ट को, जो अपने चाचा की वास्तविक इच्छाओं से अनभिज्ञ था, उस समय आक्रोशपूर्वक फटकार लगाई, और वास्तव में यदि वह समय अभी भी ऐसा होता जब बैरन अपनी इच्छाओं का त्याग किया करते थे, तो एक अनुभवी व्यक्ति के दृष्टिकोण से यह मानना पूरी तरह से उचित हो सकता था कि रॉबर्ट उनसे कहीं अधिक दोषी था। क्या रॉबर्ट, ठीक उसी क्षण जब उसके चाचा को उसे समझाने के लिए भेजा गया था, समाज से बहिष्कृत होने के कगार पर नहीं आ गया था, क्या वह जॉकी में लगभग बहिष्कृत नहीं हो गया था, क्या उसने निम्न कोटि की महिला पर भारी रकम लुटाकर, लेखकों, अभिनेताओं, यहूदियों जैसे लोगों से दोस्ती करके, देशद्रोहियों के समान अपने विचारों से, और अपने सभी रिश्तेदारों को दुख पहुँचाकर खुद को सार्वजनिक हंसी का पात्र नहीं बना लिया था? इस निंदनीय जीवन की तुलना एम. डी चार्लस के जीवन से किस लिहाज से की जा सकती है, जिन्होंने अब तक न केवल गुएरमांटे परिवार में अपनी स्थिति को बरकरार रखा था, बल्कि उसे और भी मजबूत किया था; समाज में वे एक अत्यंत विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्ति थे, जिनकी सबसे विशिष्ट मंडलों में मांग थी, प्रशंसा की जाती थी, और एक प्रतिष्ठित बोर्बन राजकुमारी से शादी करके उन्होंने उनकी खुशी सुनिश्चित की थी, उनकी स्मृति के प्रति समाज में प्रचलित प्रथा से कहीं अधिक

भावुक और ईमानदार समर्पण दिखाया था, और इस प्रकार एक अच्छे पति के रूप में वे एक अच्छे बेटे साबित हुए थे!

"लेकिन क्या आपको यकीन है कि एम. डी चार्लस की इतनी सारी रखैलें थीं?" मैंने पूछा, ज़ाहिर है, रॉबर्ट को अपना रहस्य बताने के किसी शैतानी इरादे से नहीं, बल्कि उनकी इस गलत धारणा को इतने यकीन और आत्मविश्वास से पेश करते सुनकर चिढ़कर। उन्होंने मेरी बात को भोलापन समझकर बस कंधे उचका दिए। "मैं उन्हें ज़रा भी दोष नहीं देता, मुझे लगता है कि वे बिल्कुल सही हैं।" और फिर उन्होंने आचरण के एक ऐसे सिद्धांत की रूपरेखा तैयार करना शुरू किया जो बालबेक में उन्हें दहला देता (जहाँ वे सिर्फ़ बहकाने वालों की निंदा करने से संतुष्ट नहीं थे, बल्कि उनके अपराध के लिए मौत ही एकमात्र उचित सज़ा लगती थी)। लेकिन तब वे प्रेम में डूबे हुए थे और ईर्ष्यालु भी। उन्होंने तो यहाँ तक कह दिया कि वे गुप्तचरों की तारीफ़ करते हैं। "ये एकमात्र ऐसी जगहें हैं जहाँ आपको अपने लिए सही जूता मिल सकता है, और जैसा कि हम रेजिमेंट में कहते हैं, आप अपना हथियार म्यान में रख सकते हैं।" बालबेक में जब मैंने ऐसी जगहों का ज़िक्र किया था, तब उनके मन में जो घृणा पैदा हुई थी, अब उनके मन में वैसी घृणा नहीं रही। उनकी बातें सुनकर मैंने उन्हें बताया कि ब्लोच ने मुझे ऐसी ही एक जगह से परिचित कराया था। लेकिन रॉबर्ट ने जवाब दिया कि ब्लोच जिस जगह पर अक्सर जाता होगा, वह "बेहद मिलीभगत वाली होगी, गरीबों का स्वर्ग!—वैसे, यह सब इस बात पर निर्भर करता है: वह कहाँ है?" मैं अपनी बात को घुमा-फिराकर कहती रही, क्योंकि मुझे अभी-अभी याद आया था कि यह वही घर था जहाँ कभी राहेल नाम की एक लड़की रहती थी, जिससे रॉबर्ट को इतना प्यार था। "खैर, मैं तुम्हें कुछ और भी बेहतर जगहों पर ले जा सकता हूँ, जहाँ बेहद खूबसूरत औरतें होंगी।" मेरी यह इच्छा सुनकर कि वह मुझे जल्द से जल्द उन जगहों पर ले जाएँ जिन्हें वह जानते हैं, जो निश्चित रूप से ब्लोच द्वारा ले जाए गए घर से कहीं बेहतर होंगी, उन्होंने खेद व्यक्त किया कि इस बार वह ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि उन्हें अगले दिन पेरिस छोड़ना होगा। "इसके लिए मुझे अपनी अगली छुट्टी लेनी होगी," उन्होंने कहा। “देखो, वहाँ जवान लड़कियाँ भी हैं,” उन्होंने रहस्यमयी लहजे में कहा। “एक छोटी सी मैडमोजेल डी... मुझे लगता है उसका नाम डी'ऑर्गेविल है, मैं तुम्हें सही नाम बता सकता हूँ, जो बहुत ही ऊँचे खानदान की बेटी है; उसकी माँ ला क्रोइक्स-ल'एवेक परिवार

से थी, और वे सचमुच एक सभ्य परिवार हैं, वास्तव में अगर मैं गलत नहीं हूँ तो वे मेरी चाची ओरियान से कुछ हद तक रिश्तेदार हैं। खैर, तुम्हें बस उस बच्ची को देखना है, तुम तुरंत समझ जाओगे कि वह अच्छे खानदान की है" (रॉबर्ट की आवाज़ पर एक पल के लिए मुझे गुएरमांटे परिवार की प्रतिभा की झलक दिखाई दी, जो एक बादल की तरह गुज़री, लेकिन बहुत ऊँचाई पर और बिना रुके)। "मुझे लगता है कि इसमें अद्भुत विकास की उम्मीद है। माता-पिता हमेशा बीमार रहते हैं और उसकी देखभाल नहीं कर सकते। हे भगवान, बच्ची के लिए कुछ मनोरंजन तो होना ही चाहिए, और मैं इसके लिए तुम पर भरोसा करता हूँ!" "ओह! तुम कब वापस आ रहे हो?" मुझे नहीं पता, अगर आप डचेस शब्द पर बिल्कुल जोर नहीं देते हैं (अभिजात वर्ग में डचेस एकमात्र उपाधि है जो एक विशेष रूप से शानदार पद को दर्शाती है, क्योंकि निचले वर्ग के लोग 'राजकुमारी' की बात करते हैं), तो "एक अलग श्रेणी की वस्तु में, श्रीमती पुटबस की नौकरानी है।"

इसी क्षण, श्रीमती डी सर्जिस अपने बेटों की तलाश में कमरे में दाखिल हुईं। उन्हें देखते ही श्री डी चार्लस उनके पास ऐसे सौहार्दपूर्ण ढंग से गए कि मार्क्विज़ को सुखद आश्चर्य हुआ, क्योंकि उन्होंने बैरन से एक बर्फीली और ठंडी प्रतिक्रिया की उम्मीद की थी, जो हमेशा ओरियान के रक्षक के रूप में खुद को पेश करते थे और परिवार में अकेले ऐसे थे - बाकी सभी ड्यूक की पदवी और डचेस के प्रति उनकी ईर्ष्या के कारण उनकी अनियमितताओं को अक्सर माफ कर देते थे - जो अपने भाई की रखेलों से निर्दयतापूर्वक दूरी बनाए रखते थे। इसलिए श्रीमती डी सर्जिस बैरन के उस रवैये के पीछे के कारणों को पूरी तरह समझ गई थीं, जिसका उन्हें डर था, लेकिन उन्हें जरा भी संदेह नहीं था कि बैरन ने उनका इतना अलग स्वागत किया। उन्होंने जैक्वेट द्वारा वर्षों पहले बनाए गए उनके चित्र की प्रशंसा करते हुए उनसे बात की। यह प्रशंसा उत्साह में तब्दील हो गई, जो अगर आंशिक रूप से जानबूझकर की गई हो, यानी मार्क्विज़ को जाने से रोकने के उद्देश्य से, उन्हें 'फंसाने' के लिए, जैसा कि रॉबर्ट दुश्मन सेनाओं के बारे में कहा करते थे जब आप उनकी प्रभावी शक्ति को एक बिंदु पर उलझाए रखना चाहते हैं, तो यह सच्ची भी हो सकती है। क्योंकि, यदि हर कोई उनके बेटों में श्रीमती डी सर्जिस के शाही आभा और आँखों की प्रशंसा करने में प्रसन्न था, तो बैरन को माँ में उन आकर्षणों का संयोजन देखकर विपरीत, लेकिन उतना ही तीव्र आनंद प्राप्त हुआ, जैसे किसी चित्र में जो स्वयं इच्छा

को उत्तेजित नहीं करता, बल्कि उस सौंदर्यपरक प्रशंसा से पोषित होता है जो उन इच्छाओं को पुनर्जीवित करती है। अब, पीछे मुड़कर देखने पर, ये आकर्षण जैकेट के चित्र को ही मोहक बना देते हैं, और उस समय बैरन खुशी-खुशी इसे खरीद लेते ताकि इसकी सतह पर दोनों युवा सर्जिस के शारीरिक बनावट का अध्ययन कर सकें।

“देखो, मैं बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बोल रहा था,” रॉबर्ट ने मेरे कान में फुसफुसाया। “बस देखो मेरे चाचा किस तरह मैडम डी सर्जिस के पीछे भाग रहे हैं। हालांकि मुझे यह देखकर हैरानी होती है। अगर ओरियान को पता चलता, तो वह बहुत गुस्सा होती। सच में, दुनिया में पहले से ही बहुत सी औरतें हैं, उन्हें उस एक के पीछे पड़ने की क्या ज़रूरत है,” वह आगे बोला; हर उस व्यक्ति की तरह जो प्यार में नहीं है, वह सोचता था कि कोई अपने प्यार करने वाले को बहुत सोच-विचार और कई गुणों व खूबियों के आधार पर चुनता है। इसके अलावा, अपने चाचा के बारे में पूरी तरह गलत होने के बावजूद, जिन्हें वह औरतों के प्रति समर्पित समझता था, रॉबर्ट ने गुस्से में आकर एम. डी चार्लस के बारे में बहुत हल्के में बात की। हम हमेशा किसी के भतीजे होने से बच नहीं सकते। अक्सर उन्हीं के ज़रिए कोई खानदानी आदत हमें देर-सवेर मिल जाती है। हम चाहें तो जर्मन कॉमेडी की तरह ‘चाचा और भतीजा’ नाम से चित्रों की एक पूरी गैलरी बना सकते हैं, जिसमें हम चाचा को ईर्ष्या से, भले ही अनजाने में, अपने भतीजे को अपने जैसा बनते हुए देख सकते हैं।

मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि यह गैलरी अधूरी होगी यदि इसमें उन चाचाओं को शामिल न किया जाए जिनका खून का रिश्ता नहीं है, बल्कि वे अपने भतीजों की पत्नियों के चाचा हैं। श्रीमान चार्लस को वास्तव में इतना यकीन होता है कि वे ही एकमात्र अच्छे पति हैं, और तो और वे एकमात्र ऐसे पति हैं जिनसे उनकी पत्नियाँ ईर्ष्या नहीं करतीं, कि आम तौर पर अपनी भतीजी के स्नेह में वे उसकी शादी किसी दूसरे चार्लस से करवा देते हैं। इससे पारिवारिक समानताओं का जाल और भी उलझ जाता है। और भतीजी के प्रति स्नेह के साथ-साथ कभी-कभी उसके मंगेतर के प्रति भी स्नेह जुड़ जाता है। ऐसे विवाह असामान्य नहीं हैं, और अक्सर इन्हें सुखी विवाह कहा जाता है।

"हम किस बारे में बात कर रहे थे? ओह हाँ, वो बड़ी, गोरी लड़की, मैडम पुटबस की नौकरानी। वो औरतों के साथ भी रहती है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि आपको इससे कोई

आपत्ति होगी, मैं आपको साफ-साफ बता दूँ, मैंने ऐसी खूबसूरत लड़की कभी नहीं देखी।" "मुझे लगता है वो जियोर्जियोन जैसी है?" "बिल्कुल जियोर्जियोन जैसी! ओह, काश मुझे पेरिस में थोड़ा समय मिल जाता, वहाँ करने के लिए कितनी अद्भुत चीजें हैं! और फिर, एक के बाद एक। क्योंकि प्यार तो सब बकवास है, ध्यान रहे, मैंने उससे नाता तोड़ लिया है।" मुझे जल्द ही आश्चर्य हुआ कि उसने साहित्य से भी नाता तोड़ लिया था, जबकि पिछली मुलाकात में मुझे लगा था कि वह सिर्फ साहित्यकारों से ही निराश था। ("वे सब लगभग बदमाश हैं," उसने मुझसे कहा था, और यह बात राहेल के कुछ दोस्तों के प्रति उसके जायज़ गुस्से से समझाई जा सकती है। उन्होंने राहेल को यह यकीन दिला दिया था कि अगर वह 'विदेशी नस्ल के रॉबर्ट' को अपने ऊपर हावी होने देगी तो उसमें कभी कोई प्रतिभा नहीं आएगी, और वे उसके साथ मिलकर, उसके सामने ही, उन भोजों में उसका मज़ाक उड़ाते थे जिनमें वह उन्हें आमंत्रित करता था।) लेकिन असल में रॉबर्ट का साहित्य के प्रति प्रेम किसी भी मायने में गहरा नहीं था, यह उसके सच्चे स्वभाव से नहीं उपजा था, बल्कि राहेल के प्रति उसके प्रेम का एक उप-उत्पाद मात्र था, और उसने इसे उसी समय त्याग दिया था, जैसे उसने भोग-विलासियों के प्रति अपनी घृणा और स्त्रियों के सद्गुण के प्रति अपने धार्मिक सम्मान को त्याग दिया था।

“उन दोनों युवकों में कुछ बहुत ही अजीब बात है। देखिए, मार्किज़, जुए के प्रति उनका वह अनोखा जुनून,” एम. डी चार्लस ने श्रीमती डी सर्जिस का ध्यान उनके बेटों की ओर खींचते हुए कहा, मानो उन्हें उनकी पहचान का बिल्कुल भी पता न हो। “वे दोनों पूर्वी मूल के ही होंगे, उनमें कुछ खास लक्षण हैं, शायद वे तुर्क हैं,” उन्होंने अपनी बेगुनाही के दिखावे को और पुख्ता करने के लिए और एक अस्पष्ट घृणा प्रदर्शित करने के लिए आगे कहा, जो समय आने पर सौहार्द में बदल गई और यह साबित कर दिया कि यह घृणा केवल श्रीमती डी सर्जिस के पुत्र होने के नाते ही उन युवकों के प्रति थी, और यह घृणा तभी शुरू हुई जब बैरन को उनकी पहचान का पता चला। शायद एम. डी चार्लस, जिनकी धृष्टता एक स्वाभाविक प्रतिभा थी और जिसका प्रयोग करने में उन्हें आनंद आता था, ने उन कुछ पलों का फायदा उठाया जब यह माना जा रहा था कि वे उन दोनों युवकों का नाम नहीं जानते, ताकि वे श्रीमती डी सर्जिस का थोड़ा मज़ाक उड़ा सकें। डी सर्जिस के खर्चे पर, और अपनी आदत के अनुसार व्यंग्य करने के लिए, स्कैपिन अपने मालिक के भेष का फायदा उठाकर उसे जमकर पीटता है।

"ये मेरे बेटे हैं," श्रीमती डी सर्जिस ने शर्म से कहा। अगर वह अधिक समझदार होतीं, तो शायद उनके गालों पर यह लालिमा न आती, और न ही वह अधिक गुणी होतीं। तब वह समझ जातीं कि श्री डी चार्लस का किसी युवक के प्रति पूर्ण उदासीनता या व्यंग्य का भाव उतना ही असत्य था जितना किसी स्त्री के प्रति उनका सतही प्रेम, और यह उनके वास्तविक स्वभाव को नहीं दर्शाता था। जिस स्त्री की वह अनिश्चित काल तक प्रशंसा करते रहते थे, वह शायद उस नज़र से ईर्ष्या करती, जो वह उससे बात करते समय उस पुरुष पर डालते थे जिसे वह बाद में अनदेखा करने का नाटक करते थे। क्योंकि वह नज़र वैसी नहीं थी जैसी श्री डी चार्लस केवल स्त्रियों के लिए रखते थे; एक विशेष नज़र, जो गहराई से निकलती थी, और किसी पार्टी में भी अनजाने में उन युवकों की ओर भटक जाती थी, ठीक वैसे ही जैसे किसी दर्जी की नज़र आपके कपड़ों पर टिककर उसके पेशे का खुलासा कर देती है।

"अरे, ये तो बहुत अजीब बात है!" एम. डी चार्लस ने कुछ अक्खड़पन के साथ जवाब दिया, मानो उनके दिमाग को उस वास्तविकता तक पहुँचने में लंबा सफर तय करना पड़ा हो जो उनके अनुमान से बिल्कुल अलग थी। "लेकिन मैं उन्हें नहीं जानता!" उन्होंने आगे कहा, कहीं ऐसा न हो कि उन्होंने अपनी घृणा को व्यक्त करने में कुछ ज़्यादा ही कह दिया हो और इस तरह मार्किज़ का उनसे परिचय कराने का इरादा ही खत्म हो जाए। "क्या आप मुझे उनसे आपका परिचय कराने की अनुमति देंगे?" श्रीमती डी सर्जिस ने झिझकते हुए पूछा। "क्यों, बिल्कुल जैसा आप चाहें, मुझे खुशी होगी, शायद मैं इन युवाओं के लिए बहुत अच्छी संगति नहीं हूँ," एम. डी चार्लस ने झिझक और ठंडेपन के साथ कहा, मानो उन्हें शिष्टाचार निभाने के लिए मजबूर किया जा रहा हो।

"अर्नुलफे, विक्टर्नियन, तुरंत यहाँ आओ," श्रीमती डी सर्जिस ने कहा। विक्टर्नियन दृढ़ निश्चय के साथ उठ खड़ा हुआ। अर्नुलफे, यद्यपि वह देख नहीं पा रहा था कि उसका भाई कहाँ जा रहा है, फिर भी विनम्रतापूर्वक उसके पीछे-पीछे चल दिया।

"अब बेटों की बारी है," सेंट-लूप ने बुदबुदाते हुए कहा। "इतना हंसते-हंसते पेट में दर्द हो जाता है। वो हर किसी को खुश करने की कोशिश करता है, यहां तक कि आंगन में बैठे कुत्ते को भी। और ये और भी मजेदार है क्योंकि मेरे चाचा को सुंदर लड़के बिलकुल पसंद नहीं हैं। और देखो, वो कितनी गंभीरता से उनकी बातें सुन रहा है। अगर मैंने उन्हें उससे मिलवाने की

कोशिश की होती, तो वो मुझे खूब खरी-खोटी सुनाता। सुनो, मुझे ओरियान से मिलने जाना है। मेरे पास पेरिस में बहुत कम समय है, इसलिए मैं यहां उन सभी लोगों से मिलना चाहता हूं जिनके लिए मुझे कार्ड छोड़ने चाहिए।"

“उनका व्यवहार कितना सभ्य है, उनके तौर-तरीके कितने मनमोहक हैं,” एम. डी चार्लस कह रहे थे। “क्या आपको ऐसा लगता है?” श्रीमती डी सर्जिस ने अत्यंत प्रसन्नता से उत्तर दिया।

स्वान ने मुझे देखते ही सेंट-लूप और मेरे पास आकर कहा। उनकी यहूदी प्रसन्नता, एक अनुभवी व्यक्ति के रूप में उनके चुटकुलों से कहीं अधिक परिष्कृत थी। उन्होंने हमसे कहा, "शुभ संध्या! हे भगवान! हम तीनों को एक साथ देखकर लोग सोचेंगे कि यह सिंडिकेट की बैठक है। एक मिनट में ही वे तिजोरी ढूंढने लगेंगे!" उन्होंने ध्यान नहीं दिया था कि एम. डी मॉन्सरफ्यूइल ठीक उनके पीछे खड़े थे और उनकी बातें सुन सकते थे। जनरल को अपना चेहरा सिकोड़ने से रोकना मुश्किल हो रहा था। हमने अपने ठीक बगल में एम. डी चार्लस की आवाज़ सुनी: "क्या, आपका नाम विक्टोरियन है, कैबिनेट डेस एंटिक्स के नाम पर?" बैरन दोनों युवकों से अपनी बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए कह रहे थे। "बाल्ज़ाक की कसम, हाँ," बड़े सर्जिस ने उत्तर दिया, जिन्होंने उस उपन्यासकार की एक पंक्ति भी नहीं पढ़ी थी, लेकिन जिनके शिक्षक ने कुछ दिन पहले उनके ईसाई नाम और डी'एस्ग्रिग्नन के नाम की समानता पर टिप्पणी की थी। डी सर्जिस अपने बेटे को प्रतिभाशाली देखकर और एम. डी चार्लस को ज्ञान के ऐसे प्रदर्शन के सामने आनंदित देखकर प्रसन्न हुई।

"ऐसा लगता है कि लुबेट पूरी तरह से हमारे पक्ष में है, मुझे यह जानकारी एक बिल्कुल विश्वसनीय सूत्र से मिली है," स्वान ने सेंट-लूप को बताया, लेकिन इस बार धीमी आवाज़ में ताकि जनरल उसे सुन न लें। ड्रेफस मामला अब स्वान की सबसे बड़ी चिंता बन गया था, इसलिए उसे अपनी पत्नी के रिपब्लिकन संबंधों में ज़्यादा दिलचस्पी होने लगी थी। "मैं आपको यह इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि मुझे पता है कि आपका दिल हमारे साथ है।"

“इतनी हद तक नहीं; आप पूरी तरह गलत हैं,” रॉबर्ट ने जवाब दिया। “यह एक बुरा मामला है, और मुझे खेद है कि मैं इसमें कभी शामिल हुआ। यह मेरा मामला नहीं था। अगर यह फिर से शुरू होता, तो मैं इससे पूरी तरह दूर रहता। मैं एक सैनिक हूँ, और मेरा पहला कर्तव्य सेना का समर्थन करना है। अगर आप थोड़ी देर के लिए एम. स्वान के साथ रुकें, तो मैं अभी वापस

आता हूँ, मुझे अपनी चाची से बात करने जाना है।" लेकिन मैंने देखा कि वह मैडम डी'अम्ब्रेसैक से बात करने गए थे, और यह सोचकर मुझे दुख हुआ कि उन्होंने सगाई की संभावना के बारे में मुझसे झूठ बोला था। मेरा मन तब शांत हुआ जब मुझे पता चला कि आधे घंटे पहले मैडम डी मार्सैंट्स ने उन्हें उनसे मिलवाया था, जो शादी के लिए उत्सुक थीं, क्योंकि अम्ब्रेसैक परिवार बेहद अमीर था।

"आखिरकार," एम. डी चार्लस ने श्रीमती डी सर्जिस से कहा, "मुझे एक शिक्षित, पढ़ा-लिखा नौजवान मिल गया है, जो बाल्ज़ाक का अर्थ समझता है। और मुझे उससे और भी अधिक खुशी हो रही है कि मैं उससे ऐसी जगह मिल रहा हूँ जहाँ इस तरह की चीजें बहुत कम देखने को मिलती हैं, मेरे ही समकक्ष, हमारे ही परिवार के एक सदस्य के घर में," उन्होंने शब्दों पर जोर देते हुए कहा। गुएरमांटे परिवार के लिए सभी मनुष्यों को समान मानना तो ठीक था; लेकिन जब भी वे किसी बड़े अवसर पर ऐसे लोगों के बीच होते, जो 'कुलीन' होते, विशेषकर यदि वे उनके जितने कुलीन न होते, जिनकी वे चापलूसी करने के लिए उत्सुक और सक्षम होते, तो वे पुराने पारिवारिक संस्मरण सुनाने में जरा भी संकोच नहीं करते थे। "एक ज़माने में," बैरन ने आगे कहा, "अभिजात वर्ग शब्द का अर्थ बुद्धि और हृदय से सर्वश्रेष्ठ लोग होता था। अब, हमारे बीच मुझे यह पहला व्यक्ति मिला है जिसने विक्टर्नियन डी'एस्प्रिग्नन के बारे में सुना है। हालाँकि, मैं यह कहने में गलत हूँ कि वह पहला है। पोलिग्नैक और मोंटेस्क्यू भी हैं," एम. डी चार्लस ने कहा, जो जानते थे कि यह दोहरा संबंध मार्किज़ को ज़रूर रोमांचित करेगा। "हालाँकि, आपके बेटों के पास विद्वान होने का पूरा कारण है, उनके नाना के पास अठारहवीं सदी की वस्तुओं का एक प्रसिद्ध संग्रह था। अगर आप एक दिन मेरे साथ दोपहर के भोजन पर आने की कृपा करें, तो मैं आपको अपना संग्रह दिखाऊँगा," उन्होंने युवा विक्टर्नियन से कहा। "मैं आपको कैबिनेट डेस एंटिक्स का एक दिलचस्प संस्करण दिखा सकता हूँ जिसमें बाल्ज़ाक के अपने हाथ से किए गए संशोधन हैं। मुझे दोनों विक्टर्नियनों को आमने-सामने लाने में बहुत खुशी होगी।"

मैं स्वान को छोड़कर जाने का मन नहीं बना पा रहा था। वह इतनी बुरी तरह थक चुका था कि एक बीमार व्यक्ति का शरीर मानो एक भट्टी बन जाता है जिसमें हम रासायनिक अभिक्रियाओं का अध्ययन करते हैं। उसका चेहरा प्रशियन ब्लू के छोटे-छोटे धब्बों से भरा

हुआ था, जो मानो किसी जीवित प्राणी के नहीं थे, और उससे ऐसी गंध आ रही थी जो स्कूल में 'प्रयोगों' के बाद 'विज्ञान' की कक्षा में रहना असहनीय बना देती है। मैंने उससे पूछा कि क्या उसकी प्रिंस डी गुएरमांटेस से लंबी बातचीत हुई थी और क्या वह मुझे बता सकता है कि बातचीत किस बारे में थी। "हाँ," उसने कहा, "लेकिन पहले आप एम. डी चार्लस और मैडम डी सर्जिस से थोड़ी देर बात कर लीजिए, मैं आपका यहीं इंतज़ार करूँगा।"

दरअसल, एम. डी चार्लस ने श्रीमती डी सर्जिस को सुझाव दिया कि उन्हें यह कमरा छोड़ देना चाहिए क्योंकि यह बहुत गर्म था और थोड़ी देर के लिए दूसरे कमरे में जाकर बैठना चाहिए। उन्होंने दोनों बेटों को उनकी माँ के साथ आने के लिए आमंत्रित नहीं किया, बल्कि मुझे आमंत्रित किया। इस तरह उन्होंने दोनों युवकों को अपने जाल में फंसाने के बाद यह दिखाने की कोशिश की कि उन्हें उनमें कोई दिलचस्पी नहीं रही। इसके अलावा, श्रीमती डी सर्जिस से काफी दुर्गंध आ रही थी, इसलिए वे मुझे एक तरह से मुफ्त में सम्मान दे रहे थे।

दुर्भाग्य से, जैसे ही हम एक ऐसी जगह पर बैठे जहाँ से निकलना नामुमकिन था, तभी बैरन के ताने-बाने का निशाना बनीं श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे वहाँ से गुज़रीं। शायद उन्होंने एम. डी चार्लस के मन में पैदा हुई दुर्भावना को छुपाने या खुलेआम दिखाने के लिए, और सबसे बढ़कर यह जताने के लिए कि वह उस महिला से घनिष्ठ संबंध रखती हैं जो उनसे इतनी आत्मीयता से बात कर रही थी, उस प्रसिद्ध सुंदरी को तिरस्कारपूर्ण दोस्ताना अभिवादन किया। एम. डी चार्लस ने भी तिरछी नज़र से एम. डी चार्लस को एक व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ देखते हुए अभिवादन स्वीकार किया। लेकिन वह जगह इतनी तंग थी कि जब श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे ने हमारी पीठ पीछे अगले दिन के मेहमानों के बारे में बात करने की कोशिश की, तो वह वहीं फँस गईं और उन्हें निकलने में काफ़ी मुश्किल हुई। एम. डी चार्लस, जो दोनों युवकों की माँ के सामने अपनी धूर्तता और हाज़िरजवाबी को चमकने देना चाहते थे, इस अनमोल पल को हाथ से जाने नहीं देना चाहते थे। मैंने बिना किसी दुर्भावना के उनसे एक मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूछा था, जिसने उन्हें विजयगान गाने का अवसर दिया, जिसे सुनकर हमारे पीछे लगभग स्थिर खड़े बेचारे सेंट-यूवर्टे एक शब्द भी नहीं चूक सके। "क्या आप विश्वास करेंगे, यह उद्दंड युवक," उन्होंने मुझे श्रीमती की ओर इशारा करते हुए कहा। डी सर्जिस ने अभी-अभी मुझसे पूछा, बिना किसी झिझक के, जो हमें ऐसी बातों को गुप्त रखने के लिए प्रेरित करती है, कि क्या मैं श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे के

घर जा रहा हूँ, यानी, मेरा मानना है कि क्या मुझे पेट दर्द हो रहा है। मैं किसी भी हालत में, उस व्यक्ति के घर से ज़्यादा आरामदायक जगह पर शौच करने की कोशिश करूँगा, जो, अगर मेरी याददाश्त सही है, तो उस समय अपनी शताब्दी मना रही थीं जब मैंने पहली बार शहर में घूमना शुरू किया था, हालाँकि, ज़ाहिर है, उनके घर नहीं। और फिर भी, सुनने के लिए इससे ज़्यादा दिलचस्प कौन हो सकता है? प्रथम साम्राज्य और पुनर्स्थापना के दिनों में देखी और जी गई ऐतिहासिक यादों का कितना भंडार, और गुप्त इतिहास भी, जिसमें निश्चित रूप से 'संत' जैसा कुछ नहीं हो सकता, लेकिन अगर हम उस बूढ़े घोड़े की टांगों में बची हुई ऊर्जा को देखें तो यह निश्चित रूप से 'जीवंत' होना चाहिए। उन भावुक समयों के बारे में उनसे सवाल करने से मुझे जो चीज़ रोक रही है, वह है मेरी सूंघने की तीव्र क्षमता। उस महिला की निकटता ही काफ़ी है। मैं एक पल में खुद से कहता हूँ: ओह, हे भगवान! किसी ने मेरे गंदे नाले का ढक्कन तोड़ दिया है, जबकि असल में मार्किज़ ने अपना मुँह खोलकर कोई निमंत्रण दिया है। और आप समझ सकते हैं कि अगर मेरी बदकिस्मती से मैं उसके घर चला गया, तो वह गंदा नाला एक भयानक सीवेज-गाड़ी में बदल जाएगा। हालाँकि उसका नाम रहस्यमय है, जिसने मुझे हमेशा खुशी से भर दिया है, हालाँकि उसकी जयंती तो कब की बीत चुकी है, उस मूर्खतापूर्ण कविता की पंक्ति की याद दिला दी है जिसे 'पिघलना' कहते हैं: 'आह, हरा, उस दिन मेरी आत्मा कितनी हरी थी...' लेकिन मुझे एक साफ-सुथरी हरियाली चाहिए। लोग कहते हैं कि वह अथक बूढ़ी वेश्या 'गार्डन-पार्टी' देती है, मुझे तो उन्हें 'सीवरों की खोज के निमंत्रण' कहना चाहिए। "क्या तुम वहाँ लोटने जा रहे हो?" उसने मैडम डी सर्जिस से पूछा, जो इस बार नाराज़ थीं। बैरन को खुश करने के लिए यह दिखावा करते हुए कि वह नहीं जा रही है, और यह जानते हुए कि वह सेंट-यूवर्ट पार्टी में शामिल होने से चूकने के बजाय अपने जीवन के कई दिन दे देगी, उसने बीच का रास्ता अपनाकर, यानी अनिश्चितता का सहारा लेकर, इससे बचने का रास्ता निकाला। यह अनिश्चितता इतनी भद्दी और अनुभवहीन, इतनी घटिया और भौतिकवादी थी कि एम. डी चार्लस, श्रीमती डी सर्जिस को नाराज़ करने के डर के बिना, जिन्हें वह खुश करने के लिए उत्सुक थे, यह दिखाने के लिए हंसने लगे कि 'उन पर इसका कोई असर नहीं हुआ।'

उन्होंने कहा, "मैं हमेशा योजना बनाने वाले लोगों की प्रशंसा करती हूं; मैं अक्सर आखिरी क्षण में अपनी योजना बदल देती हूं। एक गर्मियों की फ्रॉक का मामला है जो सब कुछ बदल सकता है। मैं उस क्षण की प्रेरणा के अनुसार कार्य करूंगी।"

मैं तो श्रीमान डी चार्लस के उस घिनौने भाषण से बेहद क्रोधित था। मेरा मन तो बगीचे में पार्टियां आयोजित करने वाले पर आशीर्वाद बरसाने का कर रहा था। दुर्भाग्यवश, सामाजिक और राजनीतिक जगत में पीड़ित इतने कायर होते हैं कि उनके उत्पीड़कों पर लंबे समय तक आक्रोश बनाए रखना संभव नहीं होता। श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे, जो उस आले से निकलने में सफल हो गई थीं, जहाँ हमने प्रवेश रोक रखा था, बैरन से अनजाने में टकरा गईं और अपने सारे क्रोध को मिटाते हुए, शायद कोई अवसर पाने की उम्मीद में, जो कि पहली कोशिश नहीं हो सकती थी, उन्होंने घमंड भरे अंदाज़ में कहा: "ओह! क्षमा करें, श्रीमान डी चार्लस, आशा है मैंने आपको चोट नहीं पहुँचाई होगी," मानो वह अपने स्वामी के सामने घुटने टेक रही हों। बाद वाले ने एक चौड़ी व्यंग्यात्मक मुस्कान के अलावा कोई जवाब देना उचित नहीं समझा, और केवल "शुभ संध्या" कहा, जो ऐसा लग रहा था मानो मार्क्विज़ के अभिवादन के बाद ही उन्हें उनकी उपस्थिति का पता चला हो, और यह और भी अपमानजनक था। अंत में, अत्यंत निर्मम भाव से, जिससे मुझे उनके लिए बहुत दुख हुआ, श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे मेरे पास आईं और मुझे एक तरफ खींचकर मेरे कान में बोलीं: "बताइए, मैंने एम. डी चार्लस को नाराज करने के लिए क्या किया है? लोग कहते हैं कि वह मुझे अपने लायक नहीं समझते," उन्होंने जोर-जोर से हंसते हुए कहा। मैं गंभीर बना रहा। एक तो मुझे यह मूर्खतापूर्ण लगा कि वह यह मानती हैं या चाहती हैं कि दूसरे लोग भी यह मानें कि वास्तव में कोई भी उनके जितना बुद्धिमान नहीं है। दूसरा, जो लोग अपनी कही हुई बात पर इतनी जोर से हंसते हैं, जबकि वह हास्यास्पद नहीं होती, वे हमें भी हंसी में शामिल होने से रोककर हमें उसी के अनुरूप सजा देते हैं।

"दूसरे लोग मुझे बताते हैं कि वह नाराज़ है क्योंकि मैंने उसे आमंत्रित नहीं किया। लेकिन वह मुझे ज़्यादा प्रोत्साहन नहीं देता। ऐसा लगता है जैसे वह मुझसे बच रहा हो।" (यह बात मुझे अपर्याप्त लगी।) "पता लगाने की कोशिश करो और कल आकर मुझे बताओ। और अगर उसे पछतावा हो और वह आना चाहे, तो उसे भी ले आना। मैं माफ़ कर दूंगी और भूल

जाऊंगी। वास्तव में, मुझे उसे देखकर बहुत खुशी होगी, क्योंकि इससे श्रीमती डी सर्जिस को गुस्सा आएगा। मैं तुम्हें पूरी छूट देती हूं। इन मामलों में तुम्हारा विवेक सर्वोत्तम है और मैं अपने मेहमानों से आने की भीख मांगती हुई नहीं दिखना चाहती। वैसे भी, मैं तुम पर पूरी तरह भरोसा करती हूं।"

मुझे लगा कि स्वान मेरा इंतज़ार करते-करते थक गया होगा। इसके अलावा, मैं अल्बर्टीन की वजह से घर लौटने में देर नहीं करना चाहता था, इसलिए श्रीमती डी सर्जिस और श्री डी चार्लस से विदा लेकर मैं ताश खेलने के कमरे में अपने बीमार साथी को ढूंढने चला गया। मैंने उससे पूछा कि क्या बगीचे में राजकुमार से हुई बातचीत में उसने जो कहा था, वह सचमुच वही था जो श्री डी ब्रेउटे (जिनका मैंने नाम नहीं लिया) ने हमें बर्गोट के एक छोटे नाटक के बारे में बताया था। वह ज़ोर से हँस पड़ा: "इसमें एक शब्द भी सच नहीं है, बिलकुल भी नहीं। यह पूरी तरह से मनगढ़ंत है और ऐसा कहना सरासर बेवकूफी होती। सचमुच, झूठ का इस तरह से अचानक पैदा होना तो बिल्कुल अनसुना है। मैं यह नहीं पूछ रहा कि तुम्हें यह किसने बताया, लेकिन इस सीमित क्षेत्र में, एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक जाकर यह पता लगाना बहुत दिलचस्प होगा कि यह कहानी कैसे शुरू हुई। खैर, राजकुमार ने मुझसे जो कहा, उससे दूसरों को क्या लेना-देना? लोग बहुत जिज्ञासु होते हैं। मैं कभी जिज्ञासु नहीं रही, सिवाय तब जब मैं प्यार में थी और जब मैं ईर्ष्यालु थी। और तब मैंने बहुत कुछ सीखा! क्या तुम ईर्ष्यालु हो?" मैंने स्वान से कहा कि मैंने कभी ईर्ष्या का अनुभव नहीं किया, मुझे तो यह भी नहीं पता कि यह क्या होती है। "सचमुच! मैं आपको बधाई देता हूँ। थोड़ी सी ईर्ष्या दो दृष्टिकोणों से बिल्कुल भी बुरी बात नहीं है। एक तो इसलिए कि यह उन लोगों को, जो जिज्ञासु नहीं होते, दूसरों के जीवन में, या कम से कम एक-दूसरे के जीवन में, रुचि लेने में सक्षम बनाती है। और इसके अलावा, यह अधिकार का सुख, किसी स्त्री के साथ गाड़ी में बैठने का सुख, उसे अकेले घूमने न देने का सुख प्रदान करती है। लेकिन ऐसा केवल बीमारी के शुरुआती चरणों में, या जब इलाज लगभग पूरा हो चुका होता है, तभी होता है। बीच के अंतराल में, यह सबसे कष्टदायक पीड़ा होती है। हालाँकि, मैंने जिन दो सुखों का उल्लेख किया है, मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने उनका बहुत कम अनुभव किया है: पहला, मेरे अपने स्वभाव की त्रुटि के कारण, जो निरंतर चिंतन करने में असमर्थ है; दूसरा, परिस्थितियों के कारण, उस स्त्री की त्रुटि के कारण,

या यूँ कहूँ कि उन स्त्रियों की त्रुटि के कारण, जिनसे मुझे ईर्ष्या हुई है। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। भले ही अब किसी चीज़ में रुचि न हो, फिर भी उनमें रुचि रखना कुछ न कुछ होता ही है; क्योंकि यह हमेशा उन कारणों से होता था जिन्हें दूसरे लोग नहीं समझ पाते थे। उन भावनाओं की स्मृति..." हमें लगता है कि यह केवल हमारे भीतर ही पाया जा सकता है; इसका अध्ययन करने के लिए हमें अपने भीतर झांकना होगा। इस आदर्शवादी भाषा पर हंसना मत, मेरा कहने का तात्पर्य यह है कि मुझे जीवन और कला से बहुत प्रेम रहा है। बहुत खूब! अब जब मैं दूसरों के साथ रहने से थोड़ा ऊब गया हूँ, तो वे पुरानी भावनाएँ, जो इतनी निजी और व्यक्तिगत थीं, जो मैंने अतीत में महसूस की थीं, मुझे—यह सभी संग्राहकों का जुनून होता है—बहुत कीमती लगती हैं। मैं अपने दिल को एक प्रदर्शनी की तरह खोलता हूँ, और एक-एक करके उन अनगिनत प्रेम प्रसंगों की जाँच करता हूँ जिनके बारे में बाकी दुनिया को कुछ भी पता नहीं हो सकता। और इस संग्रह के बारे में, जिससे अब मैं अपने अन्य संग्रहों से भी अधिक जुड़ा हुआ हूँ, मैं अपने आप से कहता हूँ, ठीक उसी तरह जैसे मजारिन ने अपने पुस्तकालय के बारे में कहा था, लेकिन फिर भी बिना किसी गहरे अफसोस के, कि इसे छोड़ना बहुत कष्टदायक होगा। लेकिन, राजकुमार के साथ अपनी बातचीत पर वापस आते हुए, मैं इसे केवल एक ही व्यक्ति से दोहराऊंगा, और वह व्यक्ति आप ही होंगे। मेरा ध्यान एम. डी चार्लस की बातचीत में भटक गया, जो कार्ड रूम में लौट आए थे और हमारे ठीक बगल में अनिश्चित काल तक बातचीत को खींच रहे थे। "और क्या आप भी पढ़ते हैं? आप क्या करते हैं?" उन्होंने कॉम्टे अर्नुल्फ़ से पूछा, जिन्होंने बाल्ज़ाक का नाम तक कभी नहीं सुना था। लेकिन उनकी कमज़ोर दृष्टि के कारण, क्योंकि उन्हें सब कुछ बहुत छोटा दिखाई देता था, ऐसा लगता था मानो वे बहुत दूर तक देख रहे हों, मानो किसी तराशे हुए यूनानी देवता में दुर्लभ कविता छिपी हो, और उनकी पुतलियों पर दूर के रहस्यमय तारे खुदे हुए हों।

"मान लीजिए, हम बगीचे में एक चक्कर लगाते हैं, महोदय," मैंने स्वान से कहा, जबकि कॉम्टे अर्नुल्फ़ ने तुतलाती हुई आवाज़ में, जिससे ऐसा प्रतीत होता था कि कम से कम मानसिक रूप से उनका विकास अधूरा था, एम. डी चार्लस को सरलतापूर्वक और सटीक ढंग से उत्तर दिया: "ओह, मुझे मुख्य रूप से गोल्फ़ पसंद है, टेनिस, फ़ुटबॉल, दौड़ना, पोलो तो मुझे बहुत पसंद है।" इस प्रकार, मिनर्वा, उपविभाजित होकर, कुछ शहरों में ज्ञान की देवी नहीं रहीं, और

उन्होंने अपने एक अंश को विशुद्ध रूप से खेल-कूद और अश्व-प्रेमी देवी, एथेन हिप्पिया के रूप में अवतरित किया। और वह सेंट मोरित्ज़ भी स्कीइंग के लिए गए, क्योंकि पल्लास ट्रिलोजीनिया ऊँची चोटियों पर अक्सर जाती हैं और तेज़ घुड़सवारों को भी पीछे छोड़ देती हैं। "आह!" एम. डी चार्लस ने एक ऐसे बुद्धिजीवी की उत्कृष्ट मुस्कान के साथ उत्तर दिया, जो अपने उपहास को छुपाने की भी जहमत नहीं उठाता, बल्कि स्वयं को अन्य लोगों से इतना श्रेष्ठ समझता है और उन लोगों की बुद्धि को इतना तुच्छ समझता है जो कम से कम मूर्ख हैं, कि वह उनमें और सबसे मूर्खों में शायद ही कोई अंतर कर पाता है, जब वे किसी अन्य तरीके से उसे आकर्षित कर सकते हैं। अर्नुलफे से बात करते हुए, एम. डी चार्लस को लगा कि केवल उससे बात करने मात्र से ही वह उसे एक ऐसी श्रेष्ठता प्रदान कर रहा है जिसे हर किसी को पहचानना और ईर्ष्या करना चाहिए। "नहीं," स्वान ने उत्तर दिया, "मैं चलने के लिए बहुत थक गया हूँ, चलो कहीं कोने में बैठ जाते हैं, मैं अब और खड़ा नहीं रह सकता।" यह सच था, फिर भी बात शुरू करने से ही उसे एक तरह की जीवंतता वापस मिल गई थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि सबसे वास्तविक थकावट में, विशेष रूप से न्यूरोटिक लोगों में, एक ऐसा तत्व होता है जो उनका ध्यान आकर्षित करने पर निर्भर करता है और केवल स्मृति के सहारे ही चलता रहता है। जैसे ही हमें थकान महसूस होने का डर सताने लगता है, हम तुरंत थक जाते हैं, और अपनी थकान को दूर करने के लिए, बस उसे भूल जाना ही काफी होता है। बेशक, स्वान उन अथक बीमारों में से नहीं थे जो थके-हारे और गिरने की कगार पर कमरे में प्रवेश करते ही बातचीत में पानी में खिले फूल की तरह तरोताज़ा हो जाते हैं और घंटों तक अपने शब्दों से ऐसी ऊर्जा का भंडार समेटे रहते हैं जिसे वे अपने श्रोताओं तक नहीं पहुंचा पाते, जो वक्ता के फिर से जीवंत होने के साथ-साथ और भी थके हुए प्रतीत होते हैं। लेकिन स्वान उस मजबूत यहूदी जाति से थे, जिसकी जीवन शक्ति और मृत्यु के प्रति प्रतिरोधक क्षमता में उसके सभी सदस्य समान रूप से निहित प्रतीत होते हैं। जिस प्रकार यह स्वयं उत्पीड़न से ग्रस्त है, उसी प्रकार वे भी अपनी-अपनी बीमारियों से ग्रस्त होकर, उस भयानक पीड़ा के विरुद्ध अनिश्चित काल तक संघर्ष करते रहते हैं जो हर संभव सीमा से परे लंबी खिंच सकती है, जबकि अनुष्ठानिक प्रार्थनाओं का समय आने से पहले और दूर के रिश्तेदारों का समयबद्ध जुलूस यांत्रिक गति से आगे बढ़ने से पहले, मानो किसी असीरियन भित्तिचित्र पर चित्रित हो, केवल

एक पैगंबर की दाढ़ी दिखाई देती है जिसके ऊपर एक विशाल नाक है जो अपनी अंतिम सांस लेने के लिए फैलती है।

हम बैठने ही वाले थे कि एम. डी चार्लस, दो युवा सर्जिस और उनकी माँ के समूह से अलग होने से पहले ही, स्वान खुद को उस महिला के सीने पर एक पारखी की धीमी, विस्तृत, कामुक निगाहें गड़ाने से रोक नहीं पाए। बेहतर देखने के लिए उन्होंने अपना मोनोकल ऊपर उठाया और मुझसे बात करते हुए भी बार-बार उस महिला की ओर देखते रहे। जब हम बैठ गए, तो उन्होंने मुझसे कहा, "यह शब्दशः वही बातचीत है जो मैंने राजकुमार से की थी, और अगर आपको याद हो कि मैंने अभी आपसे क्या कहा था, तो आप समझ जाएँगे कि मैंने आपको अपना विश्वासपात्र क्यों चुना है। इसका एक और कारण भी है, जो आपको एक दिन पता चलेगा।" - राजकुमार डी गुएरमांटेस ने मुझसे कहा, "मेरे प्रिय स्वान, अगर मैं कुछ समय से आपसे बचता हुआ प्रतीत हुआ हूँ, तो मुझे क्षमा करें।" (मैंने तो इस पर कभी ध्यान भी नहीं दिया था, क्योंकि मैं खुद बीमार था और समाज से दूर रहता था।) 'सबसे पहले तो मैंने सुना था कि, जैसा कि मुझे पूरी उम्मीद थी, देश को दो हिस्सों में बांटने वाले इस दुर्भाग्यपूर्ण मामले में आपके विचार मेरे विचारों से बिलकुल विपरीत थे। अब, आपके द्वारा उन्हें व्यक्त करते हुए सुनना मेरे लिए बेहद कष्टदायक होता। मेरी भावनाएँ इतनी संवेदनशील थीं कि जब दो साल पहले राजकुमारी ने अपने बहनोई, हेस्से के ग्रैंड ड्यूक को यह कहते सुना कि ड्रेफस निर्दोष है, तो वह केवल इस बात को नकारने से संतुष्ट नहीं हुईं, बल्कि मुझे परेशान न करने के लिए उन्होंने मुझसे यह बात दोहराई भी नहीं। लगभग उसी समय, स्वीडन के युवराज पेरिस आए और शायद किसी से यह सुनकर कि महारानी यूजेनी ड्रेफस समर्थक थीं, उन्होंने उन्हें राजकुमारी समझ लिया (आप मानेंगे कि यह एक अजीब भ्रम था, मेरी पत्नी के पद की महिला और एक स्पेनिश महिला के बीच, जो लोगों के अनुमान से कहीं कम कुलीन थी और एक साधारण बोनापार्ट से विवाहित थी), और उनसे कहा: राजकुमारी, मुझे दुगनी खुशी है आपसे मिलकर मुझे खुशी हुई, क्योंकि मैं जानती हूँ कि ड्रेफस मामले पर आपकी राय मुझसे मिलती-जुलती है, और इसमें मुझे कोई आश्चर्य नहीं है क्योंकि महाराज बवेरियाई हैं। इस पर राजकुमार ने जवाब दिया: "महोदय, मैं अब केवल एक फ्रांसीसी राजकुमारी हूँ, और मैं अपने सभी देशवासियों के विचारों से सहमत हूँ। अब, मेरे प्रिय स्वान, लगभग अठारह महीने पहले,

जनरल डी ब्यूसरफ्यूइल के साथ हुई मेरी बातचीत ने मुझे यह संदेह दिलाया कि मुकदमे की प्रक्रिया में कोई गलती नहीं, बल्कि गंभीर गैरकानूनी काम किए गए थे।"

हमारी बातचीत में तभी एम. डी चार्लस की आवाज़ से खलल पड़ा (स्वान नहीं चाहते थे कि कोई उनकी कहानी सुने) जो (बिना हमारी ओर ज़रा भी ध्यान दिए) श्रीमती डी सर्जिस के साथ आए और उन्हें कुछ देर और रोकने की उम्मीद में रुक गए, चाहे उनके बेटों की वजह से हो या फिर गुएरमांटे परिवार के सभी सदस्यों की किसी भी बात को खत्म करने की अनिच्छा के कारण, जिसने उन्हें एक तरह की बेचैन निष्क्रियता में डुबो रखा था। इस संदर्भ में, स्वान ने मुझे थोड़ी देर बाद एक ऐसी बात बताई जिसने मेरे लिए सर्जिस-ले-ड्यूक नाम से जुड़ी सारी कविता को छीन लिया। मार्क्विज़ डी सर्जिस-ले-ड्यूक का सामाजिक दर्जा कहीं अधिक ऊँचा था, उनके चचेरे भाई कॉम्टे डी सर्जिस की तुलना में उनके वैवाहिक संबंध कहीं अधिक बेहतर थे, जिनके पास धन नहीं था और वे देश में अपनी जागीर में रहते थे। लेकिन उनके नाम के अंत में आने वाले शब्द "ले ड्यूक" का वह मूल बिल्कुल नहीं था जो मैंने उनके बारे में सोचा था और जिसके कारण मैंने इसे बोर्ग-ल'एब्बे, बोइस-ले-रोई आदि से जोड़ दिया था। दरअसल, पुनर्स्थापना काल के दौरान एक कॉम्टे डी सर्जिस ने एक अत्यंत धनी उद्योगपति, एम. लेडुक या ले ड्यूक की पुत्री से विवाह किया था। ले डुक स्वयं एक रसायन निर्माता के पुत्र थे, जो अपने समय के सबसे धनी व्यक्ति और फ्रांस के एक कुलीन व्यक्ति थे। राजा चार्ल्स X ने इस विवाह से जन्मे पुत्र के लिए सर्जिस-ले-ड्यूक की मार्क्विस उपाधि सृजित की, जो पहले से ही परिवार में विद्यमान थी। इस उपनाम के जुड़ने से इस शाखा को अपनी अपार संपत्ति के बल पर राज्य के शीर्ष परिवारों के साथ संबंध स्थापित करने में कोई बाधा नहीं आई। और वर्तमान मार्क्विस डी सर्जिस-ले-ड्यूक, जो स्वयं उच्च कुल की थीं, संभवतः उच्च कोटि के लोगों के बीच विचरण करती थीं। विकृति के एक राक्षस ने उसे अपने लिए बने-बनाए पद को ठुकराकर वैवाहिक जीवन से भागने और खुलेआम बदनामी भरी जिंदगी जीने के लिए मजबूर कर दिया था। जिस दुनिया को उसने बीस साल की उम्र में, जब वह उसके कदमों में थी, ठुकरा दिया था, उसी दुनिया ने तीस साल की उम्र में उसे बेरहमी से धोखा दिया, जब दस साल बाद कुछ वफादार दोस्तों को छोड़कर बाकी सबने उसके सामने झुकना छोड़ दिया था। तब उसने

मेहनत से, धीरे-धीरे, उस चीज़ को फिर से हासिल करने का बीड़ा उठाया, जिसे वह जन्मसिद्ध अधिकार मानती थी। (यह एक ऐसी यात्रा है जो आम है।)

जहाँ तक उन महान रईसों, उसके रिश्तेदारों की बात है, जिन्हें उसने अतीत में त्याग दिया था और जिन्होंने अब उसे त्याग दिया था, तो उसने बचपन की यादों में उन्हें फिर से गले लगाने की खुशी का बहाना ढूंढ लिया। और ऐसा कहकर, अपने घमंड को छुपाने के लिए, शायद वह उतनी झूठी नहीं थी जितना उसने सोचा था। "बेसिन ही मेरा पूरा बचपन है!" उसने उस दिन कहा जब वह उसके पास वापस आया। और वास्तव में इस कथन में कुछ सच्चाई भी थी। लेकिन उसे अपना प्रेमी चुनकर उसने गलती की थी। क्योंकि डचेस डी गुएरमांटेस की सभी महिला मित्र उसके चारों ओर इकट्ठा होने वाली थीं, और इसलिए श्रीमती डी सर्जिस को दूसरी बार उस ढलान से नीचे उतरना पड़ा जिस पर वह इतनी मेहनत से चढ़ी थीं। "अच्छा!" एम. डी चार्लस उससे बातचीत को आगे बढ़ाने की कोशिश में कह रहे थे। "तुम मेरी भेंट उस सुंदर चित्र के चरणों में रखोगी। वह कैसा है? उसका क्या हाल है?" “क्यों,” श्रीमती डी सर्जिस ने उत्तर दिया, “आप जानती हैं कि अब यह मेरे पास नहीं है; मेरे पति इससे खुश नहीं थे।” “नाखुश नहीं! हमारे समय की सबसे महान कलाकृतियों में से एक, जो नैटियर की डचेस डी शैतोरोक्स के बराबर है, और उससे भी बढ़कर, एक ऐसी ही राजसी और हृदयविदारक देवी को अमर बनाती है। ओह! वह छोटा सा ब्लू कॉलर! मैं कसम खाती हूँ, वर्मीर ने भी इतनी कुशलता से कभी कोई कपड़ा चित्रित नहीं किया, लेकिन हमें यह बात ज़ोर से नहीं कहनी चाहिए वरना स्वान अपने प्रिय चित्रकार, डेल्फ़्ट के उस्ताद का बदला लेने के लिए हम पर टूट पड़ेगा।” मार्क्विज़ ने मुड़कर मुस्कुराते हुए स्वान की ओर हाथ बढ़ाया, जो उनका अभिवादन करने के लिए उठ खड़ा हुआ था। लेकिन लगभग बिना छिपाए, चाहे अपने ढलते दिनों में उन्होंने राय की परवाह न करते हुए छिपाने की सारी इच्छा खो दी हो, या अपनी इच्छा की उत्तेजना और उसे छिपाने में मदद करने वाले नियंत्रण के कमजोर होने के कारण शारीरिक शक्ति खो दी हो, जैसे ही स्वान ने मार्क्विज़ का हाथ थामते ही, ऊपर से और करीब से उनके सीने को देखा, उनकी चोली के भीतरी हिस्से में एक चौकस, गंभीर, तल्लीन, लगभग चिंतित निगाह गड़ा दी, और महिला के इत्र से मदहोश उनकी नाकें एक तितली के पंखों की तरह कांप उठीं जो आधे छिपे हुए फूल पर बैठने वाली हो। खाई के किनारे पर पहुँचकर उन्होंने

खुद को अचानक रोक लिया, और श्रीमती डी सर्जिस ने, हालांकि नाराज़ थीं, एक गहरी आह दबा ली, क्योंकि इच्छा कभी-कभी इतनी संक्रामक साबित हो सकती है। उन्होंने एम. डी चार्लस से कहा, "चित्रकार नाराज़ था और उसने इसे वापस ले लिया। मैंने सुना है कि यह अब डायने डी सेंट-यूवर्टे के पास है।" बैरन ने कहा, "मैं यह मानने से इनकार करता हूं कि एक महान फिल्म में इतनी खराब रुचि हो सकती है।"

“वह उससे उसके चित्र के बारे में बात कर रहा है। मैं भी चार्लस की तरह ही उससे उस चित्र के बारे में बात कर सकता हूँ,” स्वान ने धीमी, बोलचाल की भाषा में कहा और जाते हुए जोड़े को घूरता रहा। “और मुझे चार्लस से ज़्यादा उस चित्र के बारे में बात करने में मज़ा आएगा,” उसने आगे कहा। मैंने उससे पूछा कि क्या एम. डी चार्लस के बारे में कही गई बातें सच थीं, ऐसा कहकर मैं दो बार झूठ बोल रहा था, क्योंकि अगर मेरे पास इस बात का कोई सबूत नहीं था कि किसी ने कुछ कहा भी था, तो दूसरी तरफ मुझे कुछ घंटों से पूरी तरह पता था कि मैं जिस बात की ओर इशारा कर रहा था वह सच थी। स्वान ने कंधे उचका दिए, मानो मैंने कोई बेतुकी बात कह दी हो। "यह बिल्कुल सच है कि वह एक आकर्षक मित्र है। लेकिन, क्या मुझे यह कहने की ज़रूरत है कि उसकी दोस्ती पूरी तरह से प्लेटोनिक है। वह अन्य पुरुषों की तुलना में अधिक भावुक है, बस इतना ही; दूसरी ओर, चूंकि वह महिलाओं के साथ कभी ज्यादा आगे नहीं बढ़ता, इससे उन बेतुकी अफवाहों को कुछ हद तक विश्वसनीयता मिल गई है जिनका आप जिक्र कर रहे हैं। चार्लस शायद अपने पुरुष मित्रों से बहुत जुड़ा हुआ है, लेकिन आप पूरी तरह से निश्चित हो सकते हैं कि यह लगाव केवल उसके दिमाग और दिल में है। आखिरकार, शायद हमें कुछ पल के लिए शांति मिल सकती है। खैर, प्रिंस डी गुएरमांटेस ने आगे कहा: 'मैं आपको यह बताने में संकोच नहीं करता कि मुकदमे की प्रक्रिया में संभावित गैरकानूनी होने का यह विचार मेरे लिए अत्यंत पीड़ादायक था, क्योंकि जैसा कि आप जानते हैं, मैंने हमेशा सेना का सम्मान किया है; मैंने इस मामले पर जनरल के साथ फिर से चर्चा की, और, अफसोस, इस पर कोई दो राय नहीं हो सकती थी। मैं आपको खुलकर यह बताने में संकोच नहीं करता कि इतने समय तक, यह विचार कि एक निर्दोष व्यक्ति को सबसे अपमानजनक सजा भुगतनी पड़ सकती है, मेरे मन में कभी आया ही नहीं था। लेकिन, इस विचार से शुरू करते हुए..." गैरकानूनीपन के बारे में जानने के लिए, मैंने उन चीजों का

अध्ययन करना शुरू किया जिन्हें मैं हमेशा पढ़ने से मना करता रहा था, और फिर इस बार गैरकानूनी प्रक्रिया की नहीं, बल्कि कैदी की निर्दोषता की संभावना मुझे सताने लगी। मुझे नहीं लगता था कि मैं इस बारे में राजकुमारी से बात कर सकता हूँ। ईश्वर जानता है कि वह भी मेरी तरह ही फ्रांसीसी बन चुकी हैं। आप जो चाहें कहें, हमारी शादी के दिन से ही, मुझे उन्हें अपने देश की सारी सुंदरता दिखाने में इतना गर्व होता था, और मेरे लिए इसमें सबसे शानदार चीज, हमारी सेना, कि मेरे लिए उन्हें अपने संदेह के बारे में बताना बहुत कष्टदायक होता, जिसमें, यह सच है, केवल कुछ अधिकारी ही शामिल थे। लेकिन मैं सैनिकों के परिवार से आता हूँ, मुझे यह सोचना अच्छा नहीं लगता था कि अधिकारी भी गलती कर सकते हैं। मैंने ब्यूसरफ्यूइल के साथ इस मामले पर फिर से चर्चा की, उन्होंने स्वीकार किया कि कुछ साजिशें हुई थीं, कि बॉर्डरौ संभवतः ड्रेफस के लेखन में नहीं था, लेकिन उनके अपराध का एक पुख्ता सबूत मौजूद था। यह हेनरी का दस्तावेज़ था। और, कुछ दिनों बाद, हमें पता चला कि यह जाली था। उसके बाद, राजकुमारी को बिना दिखाए, मैंने प्रतिदिन सिएकल और ऑरोर पढ़ना शुरू कर दिया; जल्द ही मुझे यकीन नहीं था कि मैं इस धर्म से विमुख हो गया था, क्योंकि यह मुझे रात भर जगाए रखता था। मैंने अपनी परेशानी अपने मित्र, एब्बे पोइरे को बताई, और मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वे भी वही विश्वास रखते थे। मैंने उनसे ड्रेफस, उनकी अभागी पत्नी और उनके बच्चों के लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया। इसी बीच, एक सुबह जब मैं राजकुमारी के कमरे में जा रहा था, तो मैंने उनकी दासी को अपने हाथ में कुछ छुपाने की कोशिश करते देखा। मैंने उससे चिढ़कर पूछा कि वह क्या है, वह शरमा गई और मुझे बताने से इनकार कर दिया। मुझे अपनी पत्नी पर पूरा भरोसा था, लेकिन इस घटना ने मुझे बहुत परेशान कर दिया (और राजकुमारी को भी, निस्संदेह, जिन्होंने इसके बारे में अपनी दासी से सुना होगा), क्योंकि मेरी प्यारी मैरी ने उस दिन दोपहर के भोजन पर मुझसे मुश्किल से एक शब्द भी कहा। मैंने एब्बे पोइरे से पूछा कि क्या वे अगली सुबह ड्रेफस के लिए मेरी प्रार्थना कर सकते हैं... और बस! स्वान ने अपनी कहानी रोकते हुए कहा। मैंने ऊपर देखा और ड्यूक डी गुएरमांटेस को हमारी ओर आते हुए पाया। "माफ़ करना, लड़कों, मैं आपको बीच में टोकना चाहता हूँ। मेरे दोस्त," उन्होंने मुझसे कहा, "मुझे ओरियान का संदेश देने का निर्देश मिला है। मैरी और गिल्बर्ट ने उसे अपने यहाँ रुकने और पाँच-छह अन्य लोगों के साथ रात का

खाना खाने के लिए कहा है: हेस्से की राजकुमारी, श्रीमती डी लिग्ने, श्रीमती डी टैरेंटे, श्रीमती डी शेवरूज़ और डचेस डी'अरेनबर्ग। दुर्भाग्य से, हम इंतज़ार नहीं कर सकते, हमें एक छोटे से भोज में जाना है।" मैं सुन रहा था, लेकिन जब भी हमें किसी निश्चित समय पर कोई काम करना होता है, तो हम किसी ऐसे व्यक्ति को नियुक्त करते हैं जो उस तरह के काम का आदी हो, ताकि वह समय पर नज़र रखे और हमें समय पर सूचित करे। इस नौकर ने मुझे याद दिलाया, जैसा कि मैंने कुछ घंटे पहले उससे याद दिलाने को कहा था, कि अल्बर्टीन, जो उस समय मेरे विचारों से परे थी, थिएटर के तुरंत बाद मुझसे मिलने आने वाली थी। इसलिए मैंने रात के खाने का निमंत्रण अस्वीकार कर दिया। इसका यह अर्थ नहीं है कि मैं प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के यहाँ आनंद नहीं ले रहा था। सच तो यह है कि मनुष्य कई प्रकार के सुखों का अनुभव कर सकता है। सच्चा सुख वह है जिसके लिए वह दूसरे को त्याग देता है। लेकिन यदि यह स्पष्ट हो, या यूँ कहें कि केवल यही स्पष्ट हो, तो यह लोगों को दूसरे की ओर ध्यान न देने के लिए प्रेरित कर सकता है, ईर्ष्यालु लोगों को आश्वस्त या गुमराह कर सकता है, और एक गलत धारणा पैदा कर सकता है। फिर भी, हमें इसे दूसरे के लिए त्यागने के लिए बस थोड़ी सी खुशी या थोड़ा सा दुख ही काफी होता है। कभी-कभी सुखों का एक तीसरा स्तर, जो अधिक गंभीर लेकिन अधिक आवश्यक होता है, हमारे लिए अभी अस्तित्व में नहीं होता, जिसके संभावित अस्तित्व का संकेत केवल उसके द्वारा उत्पन्न होने वाले पछतावे और निराशा से मिलता है। फिर भी, आने वाले समय में हम इन्हीं सुखों के लिए स्वयं को समर्पित करेंगे। एक मामूली उदाहरण देने के लिए, शांति के समय में एक सैनिक प्रेम के लिए सामाजिक जीवन का त्याग कर देता है, लेकिन युद्ध की घोषणा होते ही (और देशभक्ति के कर्तव्य की बात किए बिना), वह प्रेम से भी प्रबल, लड़ने के जुनून के लिए प्रेम का त्याग कर देता है। स्वान का यह कहना तो ठीक था कि उन्हें अपनी कहानी सुनाने में आनंद आया, लेकिन मैं महसूस कर सकता था कि देर रात होने और स्वयं उनकी बीमारी के कारण, उनकी बातचीत उन थकानों में से एक थी, जो देर रात तक जागकर, अत्यधिक परिश्रम करके खुद को नुकसान पहुँचाने वाले लोगों को घर लौटने पर महसूस होती हैं। ये वैसी ही पीड़ा होती है जैसी उन फिजूलखर्चों को होती है जो कल भी पैसे लुटाने से खुद को नहीं रोक पाते। एक निश्चित स्तर की दुर्बलता के बाद, चाहे वह उम्र के कारण हो या खराब स्वास्थ्य के कारण, नींद की कीमत पर मिलने वाला हर सुख,

हमारी आदतों से हटकर, नियमों का हर उल्लंघन एक परेशानी बन जाता है। बात करने वाला व्यक्ति शिष्टाचारवश, उत्साहवश, बोलता रहता है, परन्तु वह जानता है कि सोने का समय बीत चुका है, और वह यह भी जानता है कि अनिद्रा और थकान के कारण वह स्वयं को कितना कोसेगा। इसके अलावा, क्षणिक आनंद भी समाप्त हो चुका है, शरीर और मस्तिष्क इतनी शक्तिहीन हो चुके हैं कि दूसरे व्यक्ति को जो मनोरंजक लग रहा है, उसका सहर्ष स्वागत नहीं कर सकते। वे किसी यात्रा या स्थानांतरण से पहले की सुबह के घर की तरह हैं, जहाँ आगंतुक एक पूर्ण विपत्ति बन जाते हैं, जिन्हें बंद संदूकों पर बैठाकर, घड़ी पर निगाहें गड़ाए रखा जाता है। "अंततः हम अकेले हैं," उसने कहा; "मैं तो भूल ही गया कि मैं कहाँ था। ओह हाँ, मैंने अभी आपको बताया था ना कि राजकुमार ने एब्बे पोइरे से पूछा था कि क्या वे अगले दिन ड्रेफस के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। 'नहीं, एब्बे ने मुझे बताया' (मैं आपसे 'मुझे' कह रहा हूँ," स्वान ने मुझे समझाया, "क्योंकि राजकुमार बोल रहे हैं, आप समझ रहे हैं?), 'क्योंकि मुझे उनके लिए कल भी एक और प्रार्थना करनी है।' - मैंने उनसे कहा, क्या मेरे अलावा कोई और कैथोलिक भी है जो उनकी निर्दोषता के प्रति आश्वस्त है? - ऐसा लगता है। - लेकिन इस दूसरे समर्थक का विश्वास मेरे मुकाबले हाल ही का होना चाहिए। - शायद, लेकिन यह दूसरा व्यक्ति मुझसे तब प्रार्थना करवा रहा था जब आप अभी भी ड्रेफस को दोषी मानते थे। - आह, मैं देख सकता हूँ कि यह हमारे समाज का कोई व्यक्ति नहीं है। - इसके विपरीत! - बिल्कुल! हमारे बीच ड्रेफस के समर्थक हैं, है ना? आप मुझे उत्सुक कर रहे हैं; अगर मैं इस अनोखे व्यक्ति को जानता हूँ तो मैं उससे अपने दिल की बात कहना चाहूँगा। - आप मैं उन्हें जानता हूँ। उनका नाम? प्रिंसेस डी गुएरमांटेस। जहाँ मैं अपनी प्यारी पत्नी के राष्ट्रवादी विचारों और फ्रांसीसी आस्था को ठेस पहुँचाने से डरता था, वहीं वह मेरे धार्मिक विचारों और देशभक्ति की भावनाओं को आहत करने से डरती थी। लेकिन निजी तौर पर वह भी मेरी ही तरह सोच रही थी, हालाँकि मुझसे कहीं ज़्यादा समय से। और जो उसकी नौकरानी उसके कमरे में जाते समय छुपाती थी, जो वह हर सुबह उसके लिए खरीदने जाती थी, वह थी ऑरोर। मेरे प्यारे स्वान, उसी क्षण से मैंने उस खुशी के बारे में सोचा जो मुझे आपको यह बताने पर होगी कि इस मामले पर मेरे विचार आपके विचारों से कितने मिलते-जुलते हैं; मुझे माफ़ कर दीजिए कि मैंने ऐसा पहले क्यों नहीं किया। अगर आपको याद हो कि मैंने राजकुमारी से कभी एक शब्द भी नहीं कहा था, तो

आपको यह जानकर आश्चर्य नहीं होगा कि उस समय आपके जैसा सोचना ही मुझे आपसे अलग सोचने से ज़्यादा दूर रखता था। क्योंकि यह मेरे लिए एक बेहद दर्दनाक विषय था। जितना ज़्यादा मुझे विश्वास होता है कि कोई गलती हुई है, यहाँ तक कि अपराध भी हुए हैं, उतना ही मेरा दिल सेना के लिए दुखता है। मुझे कभी यह ख्याल नहीं आया था कि मेरे जैसे विचार शायद आपको भी ऐसा ही दर्द हो सकता था, लेकिन मुझे कुछ दिन पहले पता चला कि आप सेना के अपमान और ड्रेफसवादियों के खिलाफ़ ज़ोरदार विरोध कर रहे हैं, जिन्होंने सेना का अपमान करने वालों के साथ गठबंधन कर लिया है। बस, बात पक्की हो गई। मैं मानता हूँ कि कुछ अधिकारियों के बारे में अपने विचार आपसे साझा करना मेरे लिए बहुत कष्टदायक रहा है, सौभाग्य से उनकी संख्या कम है, लेकिन अब आपसे दूरी न बनाए रखना मेरे लिए राहत की बात है, और खासकर यह जानकर कि आप यह अच्छी तरह समझते हैं कि अगर मैं कुछ और विचार रख पाया, तो इसका कारण यह था कि मुझे फैसले की सत्यता पर ज़रा भी संदेह नहीं था। जैसे ही मेरे मन में संदेह पैदा हुआ, मैं बस यही चाहता था कि गलती को सुधारा जाए। मुझे आपको बताना होगा कि प्रिंस डी गुएरमांटेस के इस भाषण ने मुझे बहुत प्रभावित किया। अगर आप उन्हें मेरी तरह जानते, अगर आप समझ पाते कि उन्हें अपनी वर्तमान स्थिति तक पहुँचने के लिए कितनी लंबी दूरी तय करनी पड़ी है, तो आप उनकी उतनी ही प्रशंसा करते जितनी वे हकदार हैं। ऐसा नहीं है कि उनकी राय से मुझे आश्चर्य हुआ, उनका स्वभाव तो इतना सीधा-सादा है! स्वान यह भूल रहे थे कि दोपहर में उन्होंने इसके विपरीत मुझसे कहा था कि ड्रेफस मामले के बारे में लोगों की राय पूर्वकल्पित सोच से प्रभावित थी। ज़्यादा से ज़्यादा उन्होंने बुद्धि के पक्ष में एक अपवाद बनाया था, क्योंकि सेंट-लूप मामले में बुद्धि ने पूर्वकल्पित सोच पर विजय प्राप्त कर ली थी और उन्हें ड्रेफस समर्थक बना दिया था। अब उन्होंने देखा कि यह जीत अल्पकालिक थी और सेंट-लूप मामला विरोधी खेमे में चला गया था। इसलिए अब उन्होंने उस भूमिका को, जो पहले बुद्धि को सौंपी गई थी, स्पष्टवादिता को सौंप दिया। वास्तव में, हम हमेशा बाद में पाते हैं कि हमारे विरोधियों के उस पक्ष में होने का एक कारण था जिसका उस पक्ष में मौजूद किसी भी सत्य तत्व से कोई लेना-देना नहीं था, और जो लोग हमारी तरह सोचते हैं वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि उनकी बुद्धि, यदि उनका

नैतिक स्वभाव इतना नीच है कि उसका सहारा नहीं लिया जा सकता, या उनकी स्पष्टवादिता, यदि उनकी अंतर्दृष्टि कमज़ोर है, ने उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर किया है।

अब स्वान को अपने विचारों से सहमत समान रूप से बुद्धिमान व्यक्ति मिल गए, जिनमें उनके पुराने मित्र प्रिंस डी गुएरमेंटेस और मेरे सहपाठी ब्लोच शामिल थे, जिनसे वे पहले बचते रहे थे, लेकिन अब उन्होंने उन्हें दोपहर के भोजन पर आमंत्रित किया। स्वान ने ब्लोच को यह बताकर काफी दिलचस्पी दिखाई कि प्रिंस डी गुएरमेंटेस एक ड्रेफुसार्ड थे। "हमें उनसे पिक्कार्ट के लिए हमारी अपील पर हस्ताक्षर करने के लिए कहना चाहिए; उनके जैसे नाम का बहुत बड़ा प्रभाव होगा।" लेकिन स्वान ने, एक इस्राइली के रूप में अपने प्रबल विश्वास के साथ-साथ एक अनुभवी व्यक्ति की कूटनीतिक संयमिता को भी अपनाते हुए, ब्लोच को प्रिंस को हस्ताक्षर के लिए परिपत्र भेजने की अनुमति देने से इनकार कर दिया, भले ही यह उनकी अपनी पहल पर ही क्यों न हो। "वे ऐसा नहीं कर सकते, हमें असंभव की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए," स्वान ने दोहराया। "यह एक आकर्षक व्यक्ति है जिसने हज़ारों मील का सफर तय करके हमारा साथ दिया है। वह हमारे लिए बहुत उपयोगी साबित हो सकता है। अगर वह आपकी सूची पर हस्ताक्षर कर दे, तो वह अपने ही लोगों के साथ समझौता कर लेगा, हमारी वजह से उसे कष्ट सहना पड़ेगा, हो सकता है कि वह अपने भरोसे पर पछताए और फिर कभी हम पर भरोसा न करे।" बात यहीं खत्म नहीं हुई, स्वान ने अपने हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। उसे लगा कि उसका नाम इतना हिब्रू है कि इससे बुरा असर पड़ सकता है। इसके अलावा, भले ही वह नए सिरे से मुकदमा चलाने के सभी प्रयासों का समर्थन करता हो, लेकिन वह किसी भी तरह से सैन्य-विरोधी अभियान में शामिल नहीं होना चाहता था। उसने, जो उसने पहले कभी नहीं किया था, वह पदक पहना जो उसने 1970 में एक युवा सैनिक के रूप में जीता था, और अपनी वसीयत में एक परिशिष्ट जोड़ा जिसमें उसने अनुरोध किया कि, अपनी पिछली इच्छाओं के विपरीत, उसे लीजन ऑफ ऑनर के शेवेलियर के पद के अनुसार सैन्य सम्मान के साथ दफनाया जाए। एक अनुरोध जिसने कॉम्ब्रे के गिरजाघर के चारों ओर उन सैनिकों की पूरी टुकड़ी को इकट्ठा कर दिया, जिनके भाग्य पर फ्रांस्वा युद्ध की आशंका से रोया करती थीं। संक्षेप में, स्वान ने ब्लोच के परिपत्र पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया,

जिसके परिणामस्वरूप, यदि कई लोगों की नज़र में वह एक कट्टर ड्रेफस समर्थक थे, तो मेरे मित्र ने उन्हें उदासीन, राष्ट्रवाद से ग्रस्त और एक सैन्यवादी पाया।

स्वान ने मुझसे हाथ मिलाए बिना ही विदा ले ली ताकि उसके दोस्तों से भरे इस कमरे में मुझे सबके सामने विदाई न देनी पड़े, लेकिन उसने मुझसे कहा: "तुम्हें अपनी दोस्त गिल्बर्ट से मिलने आना चाहिए। वह अब सचमुच बड़ी हो गई है और बदल गई है, तुम उसे पहचान ही नहीं पाओगी। वह बहुत खुश होगी!" मैं अब गिल्बर्ट से प्यार नहीं करता था। वह मेरे लिए एक मृत व्यक्ति की तरह थी जिसके लिए लंबे समय तक शोक मनाया गया हो, फिर विस्मृति आ गई हो, और अगर उसे पुनर्जीवित भी किया जाए, तो उसे उस जीवन में कोई स्थान नहीं मिलेगा जो अब उसके लिए नहीं बना है। अब मुझे उससे मिलने की कोई इच्छा नहीं थी, यहाँ तक कि उसे यह दिखाने की भी इच्छा नहीं थी कि मैं उससे नहीं मिलना चाहता, जबकि जब मैं उससे प्यार करता था, तब हर दिन मैं खुद से वादा करता था कि जब मैं उससे प्यार करना छोड़ दूंगा, तब मैं यह बात उसके सामने खुलकर कहूँगा।

और इसलिए, गिलबर्ट की नज़रों में, मैं बस यही दिखाना चाहता था कि मैं उससे दोबारा मिलने के लिए दिल से तरस रहा था और कुछ ऐसी परिस्थितियों के कारण नहीं मिल पाया जिन्हें "हमारे बस में नहीं" कहा जाता है, हालाँकि ऐसी परिस्थितियाँ तभी घटित होती हैं जब हम उन्हें रोकने के लिए कुछ नहीं करते। स्वान का निमंत्रण संकोच से स्वीकार करने के बजाय, मैंने उसे तब तक जाने नहीं दिया जब तक उसने अपनी बेटी को उन सभी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के बारे में विस्तार से बताने का वादा नहीं कर दिया, जिनके कारण मैं उससे मिलने नहीं जा पा रहा था और आगे भी नहीं जा पाऊँगा। मैंने आगे कहा, "खैर, मैं घर पहुँचते ही उसे पत्र लिखूँगा। लेकिन उसे बता देना कि यह एक धमकी भरा पत्र होगा, क्योंकि एक-दो महीने में मैं पूरी तरह से आज़ाद हो जाऊँगा, और फिर उसे डर लगना, क्योंकि मैं तुम्हारे घर पहले की तरह नियमित रूप से आता रहूँगा।"

स्वान से विदा लेने से पहले मैंने उनसे उनके स्वास्थ्य के बारे में कुछ कहा। उन्होंने कहा, "नहीं, मेरी सेहत इतनी खराब नहीं है। फिर भी, जैसा कि मैं कह रहा था, मैं काफी थका हुआ हूँ, और जो भी मेरे लिए होना तय है, मैं उसे स्वीकार करता हूँ। बस, मुझे यह कहना है कि ड्रेफस मामले के निपटारे से पहले मर जाना बहुत निराशाजनक होगा। उन बदमाशों के पास कई

चालें हैं। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि अंत में वे हार जाएँगे, लेकिन फिर भी वे बहुत शक्तिशाली हैं, उनके समर्थक हर जगह हैं। जब सब कुछ शानदार ढंग से चल रहा होता है, तो सब कुछ ढह जाता है। मैं इतना जीना चाहूँगा कि ड्रेफस का पुनर्वास हो जाए और पिक्कार्ट कर्नल बन जाए।"

स्वान के जाने के बाद, मैं उस विशाल ड्राइंग रूम में लौट आया जहाँ राजकुमारी डी गुएरमांटेस मौजूद थीं, जिनके साथ मेरा उस समय इतना घनिष्ठ संबंध होने का अनुमान नहीं था। एम. डी चार्लस के प्रति उनका प्रेम मुझे पहले तो पता नहीं चला। मैंने केवल इतना देखा कि एक निश्चित समय के बाद, बैरन ने राजकुमारी डी गुएरमांटेस के प्रति अचानक नापसंदगी का भाव नहीं दिखाया, जो उनके लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, बल्कि उनके प्रति उनका स्नेह पहले जैसा ही, शायद पहले से भी अधिक, बना रहा, और जब भी कोई उनका नाम लेता तो वे चिंतित और चिढ़ जाते थे। अब वे रात के खाने पर मिलने वाले लोगों की सूची में उनका नाम कभी शामिल नहीं करते थे।

यह सच है कि इससे पहले मैंने शहर के एक बेहद द्वेषपूर्ण व्यक्ति को यह कहते सुना था कि राजकुमारी पूरी तरह बदल गई हैं, कि उन्हें एम. डी चार्लस से प्रेम हो गया है, लेकिन यह अफवाह मुझे बेतुकी लगी और मुझे गुस्सा आया। मैंने वास्तव में आश्चर्य से देखा था कि जब मैं उन्हें अपने बारे में कुछ बता रहा होता था, और अगर बीच में एम. डी चार्लस का नाम आ जाता था, तो राजकुमारी तुरंत अपना ध्यान उस संकीर्ण सोच पर केंद्रित कर लेती थीं, जो एक बीमार व्यक्ति की होती है, जो हमारी बातों को सुनकर, और परिणामस्वरूप लापरवाही और विचलित होकर सुनता है, अचानक समझ जाता है कि हमने जिस नाम का जिक्र किया है, वह उस बीमारी का नाम है जिससे वह पीड़ित है, और यह बात उसे तुरंत रुचिकर और प्रसन्न कर देती है। इसलिए, अगर मैं उनसे कहता: "अरे, एम. डी चार्लस ने मुझे बताया...", तो राजकुमारी तुरंत अपना ध्यान वापस केंद्रित कर लेती थीं। एक बार मैंने राजकुमारी के सामने कहा था कि एम. डी. चार्लस उस समय किसी खास व्यक्ति के प्रति स्नेह रखते हैं। यह देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया कि राजकुमारी की आँखों में क्षणिक रंग परिवर्तन आ गया, मानो पुतली में दरार की रेखा हो। यह परिवर्तन उस विचार के कारण होता है जो हमारे शब्दों ने अनजाने में उस व्यक्ति के मन में जगा दिया हो जिससे हम बात कर रहे थे। यह एक गुप्त विचार होता

है जो शब्दों में व्यक्त नहीं हो पाता, बल्कि उस गहराई से उभरता है जिसे हमने जगाया है—एक पल के लिए परिवर्तित होकर—उसकी दृष्टि में। लेकिन अगर मेरी इस टिप्पणी ने राजकुमारी को प्रभावित किया भी था, तो मुझे उस समय यह अंदाजा नहीं था कि किस तरह से।

बहरहाल, इसके कुछ ही समय बाद, वह मुझसे एम. डी चार्लस के बारे में बात करने लगीं, और लगभग बिना किसी अस्पष्टता के। अगर उन्होंने बैरन के बारे में इधर-उधर कुछ लोगों द्वारा फैलाई जा रही अफवाहों का ज़िक्र किया भी, तो वह मानो बेतुकी और निंदनीय मनगढ़ंत बातें थीं। लेकिन दूसरी ओर, उन्होंने कहा: "मुझे लगता है कि जो भी स्त्री पलामेडे जैसे अनमोल पुरुष से प्रेम करती है, उसमें इतनी व्यापक बुद्धि और समर्पण होना चाहिए कि वह उसे समग्र रूप से स्वीकार करे और समझे, उसके व्यक्तित्व का सम्मान करे, उसकी इच्छाओं का ध्यान रखे, केवल उसकी कठिनाइयों को दूर करने और उसके दुखों में उसे सांत्वना देने का प्रयास करे।" अब, इस तरह के अस्पष्ट भाषण से ही, प्रिंसेस डी गुएरमांटेस ने उस चरित्र की कमजोरी को उजागर कर दिया जिसकी वह प्रशंसा करने की कोशिश कर रही थीं, ठीक वैसे ही जैसे एम. डी चार्लस ने स्वयं कई बार किया था। क्या मैंने उसे बार-बार उन लोगों से यह कहते नहीं सुना है, जो तब तक इस बात को लेकर अनिश्चित थे कि उस पर झूठे आरोप लगाए जा रहे हैं या नहीं: "मैं, जिसने अपने जीवन में अनेक पहाड़ चढ़े हैं और अनेक घाटियाँ पार की हैं, जिसने हर तरह के लोगों को जाना है, चोरों से लेकर राजाओं तक, और वास्तव में, मुझे स्वीकार करना होगा, चोरों के प्रति थोड़ी अधिक रुचि के साथ, जिसने सुंदरता के हर रूप का पीछा किया है," इत्यादि; और इन शब्दों से, जिन्हें वह चतुराई से इस्तेमाल करता था, और उन अफवाहों का खंडन करते हुए, जिनके प्रचलन का किसी को संदेह नहीं था (या अपनी प्रवृत्ति, संयम, सटीकता के प्रेम के कारण, सत्य का एक अंश शामिल करते हुए, जिसे वह अकेला महत्वहीन मानता था), उसने अपने कुछ श्रोताओं के अंतिम संदेह को दूर कर दिया, और दूसरों को, जिन्होंने अभी तक उस पर संदेह करना शुरू नहीं किया था, अपना पहला संदेह पैदा कर दिया। क्योंकि छिपाने के सभी रूपों में सबसे खतरनाक है अपराध को स्वयं दोषी के मन में छिपाना। इस बात की निरंतर चेतना उसे यह कल्पना करने से रोकती है कि यह बात कितनी आम है, एक झूठ को कितनी आसानी से स्वीकार कर लिया जाएगा, और दूसरी ओर,

वह यह भी नहीं समझ पाता कि जिन शब्दों को वह निर्दोष मानता है, उनमें भी दूसरे लोग किस हद तक सच्चाई का पता लगा लेंगे। ऐसा नहीं है कि इसे दबाने की कोशिश में वह पूरी तरह गलत होगा, क्योंकि ऐसा कोई दुराचार नहीं है जिसे समाज में आसानी से समर्थन न मिले, और एक बार तो ऐसा भी देखा गया है कि एक हवेली को उलट-पुलट कर दिया गया ताकि दो बहनें अगल-बगल के कमरों में सो सकें, जैसे ही उनकी मालकिन को पता चला कि उनका रिश्ता बहन से कहीं बढ़कर है। लेकिन जिस बात ने मुझे अचानक राजकुमारी के प्रेम का एहसास कराया, वह एक मामूली घटना थी, जिसका जिक्र मैं यहाँ नहीं करूँगा, क्योंकि यह एक बिल्कुल अलग कहानी का हिस्सा है, जिसमें एम. डी चार्लस ने एक रानी को मरने दिया, बजाय इसके कि वह उस नाई से मिलने का समय चूक जाए जो एक बस कंडक्टर के लिए उसके बाल जलाने वाला था, जिसने उसे डरा दिया था। खैर, राजकुमारी के प्रेम की बात यहीं खत्म करते हुए, आइए उस मामूली घटना के बारे में बात करते हैं जिसने मेरी आँखें खोल दीं। उस दिन मैं उसके साथ उसकी गाड़ी में अकेला था। जब हम एक डाकघर के पास से गुज़र रहे थे, तो उसने कोचवान को रोक दिया। वह बिना नौकर के आई थी। उसने अपने मफ से आधा पत्र निकाला और उसे बॉक्स में डालने के लिए गाड़ी से उतरने की तैयारी कर रही थी। मैंने उसे रोकने की कोशिश की, उसने विरोध का नाटक किया, और हम दोनों को एहसास हुआ कि हमारी सहज हरकतें गलत थीं - उसकी, जो एक रहस्य को छुपाने का दिखावा कर रही थी, और मेरी, जो उस सुरक्षा घेरे को पार करने की कोशिश थी, वह नासमझी थी। सबसे पहले वह संभली। अचानक उसका चेहरा लाल हो गया और उसने मुझे पत्र दे दिया। अब मेरे पास उसे लेने से मना करने की हिम्मत नहीं थी, लेकिन जैसे ही मैंने उसे बॉक्स में डाला, मेरी नज़र उस पर पड़ी कि वह एम. डी चार्लस को संबोधित थी।

राजकुमारी डी गुएरमांटेस के यहाँ उस पहली शाम की बात करें तो, मैं उन्हें शुभ रात्रि कहने गया था, क्योंकि उनके चचेरे भाई-बहन, जिन्होंने मुझे घर छोड़ने का वादा किया था, जल्दी में थे। हालाँकि, श्री डी गुएरमांटेस अपने भाई को अलविदा कहना चाहते थे, और श्रीमती डी सर्जिस ने जाते समय ड्यूक से कहा कि श्री डी चार्लस उनके और उनके बेटों के प्रति बहुत ही विनम्र थे। अपने भाई की ओर से दिखाई गई इस महान विनम्रता ने, जो उस परिवार में उनकी पहली विनम्रता थी, बेसिन को बहुत प्रभावित किया और उनके मन में पुराने पारिवारिक भावों

को जगा दिया, जो कभी शांत नहीं रहते। जिस क्षण हम राजकुमारी को विदाई दे रहे थे, ड्यूक ने श्री डी चार्लस को धन्यवाद दिए बिना ही उनके प्रति अपना स्नेह प्रकट करने का प्रयास किया, चाहे इसलिए कि वे वास्तव में अपने स्नेह को नियंत्रित नहीं कर पा रहे थे या इसलिए कि बैरन को याद रहे कि आज शाम उन्होंने जो कुछ किया है, वह एक भाई की नज़रों से नहीं बच पाया, ठीक वैसे ही जैसे भविष्य में सुखद यादों की एक श्रृंखला बनाने के उद्देश्य से हम किसी करतब पूरा करने वाले कुत्ते को चीनी देते हैं। "वाह, छोटे भाई!" ड्यूक ने श्री डी चार्लस को रोकते हुए और प्यार से उनका हाथ पकड़ते हुए कहा, "तो इस तरह से कोई अपने बड़ों और श्रेष्ठों के सामने से बिना एक शब्द कहे निकल जाता है। अब मैं तुम्हें कभी नहीं देखता, दादी, और तुम सोच भी नहीं सकते कि मैं तुम्हें कितना याद करता हूँ। मैं अभी कुछ पुराने पत्र पलट रहा था और मुझे बेचारी माँ के कुछ पत्र मिले, जो तुम्हारे लिए प्यार से भरे हुए हैं।" "धन्यवाद, बेसिन," श्री डी चार्लस ने टूटी हुई आवाज़ में उत्तर दिया, क्योंकि वे अपनी माँ के बारे में बिना भावुक हुए कभी नहीं बोल सकते थे। "आपको यह तय करना होगा कि मैं आपके लिए गुएरमांटेस में कुंवारे लोगों के लिए कमरे का इंतजाम कर दूं," ड्यूक ने आगे कहा। "दोनों भाइयों को एक-दूसरे के प्रति इतना स्नेहपूर्ण देखकर अच्छा लगा," राजकुमारी ने ओरियान से कहा। "जी हाँ, बिल्कुल! मुझे नहीं लगता कि आपको ऐसे भाई बहुत कम मिलेंगे। मैं आपको उनसे मिलने के लिए आमंत्रित करूंगी," उन्होंने मुझसे वादा किया। "आपने उनसे झगड़ा तो नहीं किया?...लेकिन वे किस बारे में बात कर रहे होंगे?" उन्होंने चिंतित स्वर में पूछा, क्योंकि उन्हें उनकी बातों का कुछ ही शब्द समझ आ रहा था। उन्हें हमेशा से ही एम. डी गुएरमांटेस को अपने भाई से अतीत के बारे में बात करने में जो आनंद मिलता था, उससे एक तरह की ईर्ष्या होती थी, क्योंकि वह अपनी पत्नी को उससे दूर रखना चाहते थे। उन्हें लगता था कि जब वे इस तरह साथ रहकर खुश होते थे, और वह अपनी उत्सुकता को रोक नहीं पाती थीं और उनके साथ शामिल हो जाती थीं, तो उनके आने से उनकी खुशी में कोई इज़ाफ़ा नहीं होता था। लेकिन आज शाम, उनकी यह ईर्ष्या एक और कारण से और बढ़ गई। क्योंकि अगर मैडम... डी सर्जिस ने एम. डी गुएरमांटेस को बताया था कि उनके भाई ने उनके प्रति कितनी दयालुता दिखाई थी, ताकि ड्यूक अपने भाई को धन्यवाद दे सकें। उसी समय, गुएरमांटेस दंपति की कुछ समर्पित महिला मित्रों ने डचेस को यह बताना अपना कर्तव्य समझा कि उनके

पति की प्रेमिका को उनके भाई के साथ अंतरंग बातचीत करते देखा गया था। और यह जानकारी श्रीमती डी गुएरमांटेस के लिए किसी यातना से कम नहीं थी। ड्यूक ने आगे कहा, "सोचो, गुएरमांटेस में हम कितने मज़े करते थे। अगर तुम कभी गर्मियों में यहाँ आ जाओ, तो हम अपना पुराना जीवन फिर से जी सकते हैं। क्या तुम्हें पुराने फादर कौरवो याद हैं: 'पास्कल क्यों परेशान कर रहा है? क्योंकि वह चिड़चिड़ा है... चिड़चिड़ा है...'" "सच कहा!" एम. डी चार्लस ने बीच में कहा, मानो वह अभी भी अपने शिक्षक के प्रश्न का उत्तर दे रहे हों। "और पास्कल क्यों परेशान है; क्योंकि वह चिड़चिड़ा है... क्योंकि वह चिड़चिड़ा है... गाओ! बहुत अच्छा, तुम पास हो जाओगे, तुम्हारा नाम ज़रूर लिया जाएगा, और मैडम ला डचेस तुम्हें एक चीनी शब्दकोश देंगी।" "मुझे सब कुछ याद आ रहा है, युवा मेमे, और वो पुराना चीनी मिट्टी का फूलदान जो हर्वी तुम्हारे लिए सेंट-डेनिस से लाया था, अब मैं सब देख सकता हूँ। तुम हमें धमकी देते थे कि तुम जाकर अपना जीवन चीन में बिताओगे, तुम्हें उस देश से इतना लगाव था; तब भी तुम्हें रात भर घूमना पसंद था। आह! तुम एक अनोखे इंसान थे, क्योंकि मैं ईमानदारी से कह सकता हूँ कि किसी भी चीज़ में तुम्हारी पसंद दूसरों से अलग थी...।" लेकिन जैसे ही उसने ये शब्द कहे, ड्यूक भड़क उठा, जैसा कि कहावत है, क्योंकि वह अपने भाई की प्रतिष्ठा से तो वाकिफ था, भले ही उसकी आदतों से नहीं। चूंकि उसने अपने भाई के सामने कभी भी उनका ज़िक्र नहीं किया था, इसलिए उन्हें इस बात का और भी ज़्यादा गुस्सा आया कि उन्होंने कुछ ऐसा कह दिया जिसे उनकी आदतों से जोड़ा जा सकता था, और अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करने पर तो और भी ज़्यादा। कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद: "कौन जानता है," उन्होंने अपने पिछले भाषण के प्रभाव को कम करने के लिए कहा, "शायद आप इतनी सारी गोरी लड़कियों से प्रेम करने और उनका दिल जीतने से पहले किसी चीनी लड़की से प्रेम करते थे, अगर मैं उस महिला के बारे में कहूँ जिसे आपने आज शाम बात करके बहुत प्रसन्न किया है। वह आपसे बहुत खुश थी।" ड्यूक ने कसम खाई थी कि वह श्रीमती डी सर्जिस का ज़िक्र नहीं करेंगे, लेकिन अपनी पिछली गलती से उत्पन्न भ्रम में उन्होंने जो पहला शब्द सोचा, वही बोल दिया, जो बातचीत में नहीं आना चाहिए था, हालाँकि उसी से बातचीत शुरू हुई थी। लेकिन एम. डी चार्लस ने अपने भाई के चेहरे पर आई शर्म को देख लिया था। और, उन दोषी व्यक्तियों की तरह जो यह नहीं चाहते कि आप उनके सामने उस अपराध की बात करें जो

उन्होंने नहीं किया है और उन्हें लगता है कि उन्हें इस खतरनाक बातचीत को लंबा खींचना चाहिए: "यह सुनकर मुझे खुशी हुई," उन्होंने उत्तर दिया, "लेकिन मैं आपकी पिछली बात पर वापस जाना चाहूंगा, जो मुझे बहुत सच लगी। आप कह रहे थे कि मेरे विचार कभी दूसरों जैसे नहीं होते, आप कितने सही हैं, आपने कहा कि मेरी पसंद अजीब है।" "नहीं," एम. डी गुएरमांटेस ने विरोध किया, जिन्होंने वास्तव में उन शब्दों का प्रयोग नहीं किया था, और शायद उन्हें विश्वास नहीं था कि उनका अर्थ उनके भाई पर लागू होता है। इसके अलावा, उन्हें उन सनक के बारे में उन्हें धमकाने का क्या अधिकार था जो किसी भी तरह से इतनी अस्पष्ट या गुप्त थीं कि बैरन की समाज में जबरदस्त स्थिति को किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुंचा सकती थीं? इतना ही नहीं, यह महसूस करते हुए कि उनके भाई की स्थिति के संसाधन उनकी रखेलों की सेवा में लगाए जाने वाले हैं, ड्यूक ने खुद से कहा कि इसके बदले में थोड़ी सहनशीलता दिखाना उचित है; यदि उस समय ड्यूक को अपने भाई की किसी "अजीब" अंतरंगता के बारे में पता होता, तो दूसरे से मिलने वाले समर्थन की उम्मीद में वह इसे अनदेखा कर देता, आँखें बंद कर लेता और ज़रूरत पड़ने पर मदद भी करता। "चलो, बेसिन; शुभ रात्रि, पलामेडे," डचेस ने कहा, जो क्रोध और जिज्ञासा से व्याकुल थी और अब और सहन नहीं कर सकती थी, "यदि तुमने यहाँ रात बिताने का मन बना लिया है, तो हम रात के खाने तक रुक सकते थे। तुमने मुझे और मैरी को पिछले आधे घंटे से जगाए रखा है।" ड्यूक ने अपने भाई से हाथ का ज़ोरदार दबाव डालकर विदा ली, और हम तीनों राजकुमारी के घर की विशाल सीढ़ियों से नीचे उतरने लगे।

हमारे दोनों ओर, सबसे ऊपरी सीढ़ियों पर, बिखरे हुए जोड़े अपनी गाड़ियों के दरवाजे तक आने का इंतजार कर रहे थे। सीधी खड़ी, अकेली, अपने पति और मेरे साथ, डचेस सीढ़ियों के बाईं ओर खड़ी थीं, पहले से ही अपने टिएपोलो लबादे में लिपटी हुई थीं, उनका गला माणिक्यों से जड़ी पट्टी से जकड़ा हुआ था, और महिलाओं और पुरुषों की निगाहें उन पर टिकी थीं, जो उनकी सुंदरता और विशिष्टता के रहस्य को जानने की कोशिश कर रहे थे। श्रीमती डी गुएरमांटेस के समान सीढ़ी पर, लेकिन उसके विपरीत दिशा में, अपनी गाड़ी का इंतजार कर रही श्रीमती डी गैलार्डन, जिन्होंने अपनी चचेरी बहन से मिलने की सारी उम्मीदें छोड़ दी थीं, ने अपनी पीठ इस तरह मोड़ ली ताकि ऐसा न लगे कि उन्होंने उन्हें देखा है, और इससे भी

महत्वपूर्ण बात यह थी कि इस बात का कोई सबूत न मिले कि दूसरी ने उनका अभिवादन नहीं किया। डी गैलार्डन बेहद गुस्से में थीं क्योंकि उनकी संगति में बैठे कुछ सज्जनों ने ओरियान के बारे में उनसे बात करना अपने ऊपर ले लिया था: "मुझे उससे मिलने की ज़रा भी इच्छा नहीं है," उन्होंने जवाब दिया, "दरअसल, मैंने उसे अभी-अभी देखा है, उस पर बुढ़ापे का असर दिखने लगा है; लगता है वह इससे उबर नहीं पा रही है। बेसिन खुद ऐसा कहता है। और, हे भगवान, मैं यह समझ सकती हूँ, क्योंकि उसमें अक्ल नहीं है, वह एक कीड़े की तरह शरारती है, और उसके तौर-तरीके बहुत खराब हैं, वह अच्छी तरह जानती होगी कि एक बार उसकी सुंदरता चली जाए, तो उसके पास सहारा लेने के लिए कुछ भी नहीं बचेगा।"
मैंने अपना ओवरकोट पहन रखा था, जिसके लिए एम. डी गुएरमांटेस, जिन्हें ठंड से बहुत डर लगता था, ने मुझे नीचे जाते समय फटकारा, क्योंकि अंदर का वातावरण गर्म था। और रईसों की वह पीढ़ी जो कमोबेश मोनसिग्नोर डुपानलूप के हाथों से गुजरी है, इतनी खराब फ्रेंच बोलती है (कैस्टेलन भाइयों को छोड़कर) कि ड्यूक ने अपने मन की बात इस प्रकार कही: "कम से कम सामान्य नियम के तौर पर, घर से बाहर निकलने से पहले ओवरकोट न पहनना ही बेहतर है।" अब मुझे वह सारा विदा होता हुआ समूह दिखाई दे रहा है, मुझे वह तस्वीर भी दिखाई दे रही है, अगर मैं उसे उस सीढ़ी पर पहचानने में गलत नहीं हूँ, जो फ्रेम से अलग हो चुकी है, राजकुमार डी सागन, जिनकी समाज में यह आखिरी उपस्थिति रही होगी, डचेस को सम्मान देने के लिए अपना सिर झुकाए हुए, अपने सफेद दस्ताने वाले हाथ में अपनी लंबी टोपी को इतनी जोरदार तरीके से घुमाते हुए (जो उनके बटनहोल में लगे गार्डेनिया फूल से मेल खा रही थी), कि देखकर आश्चर्य होता है कि यह पुराने जमाने की पंखों वाली फेल्ट टोपी तो नहीं थी, जिसके कई पूर्वजों के चेहरे इस महान सज्जन के चेहरे में हूबहू प्रतिबिंबित हो रहे थे। वह उनके सामने बस कुछ ही पल के लिए रुके, लेकिन उनकी क्षणिक मुद्रा भी एक पूर्ण जीवंत दृश्य, और मानो एक ऐतिहासिक दृश्य, रचने के लिए पर्याप्त थी। इसके अलावा, चूंकि उनका निधन हो चुका है, और चूंकि मैंने उनके जीवनकाल में उन्हें बस एक झलक ही देखा था, इसलिए वह मेरे लिए इतिहास का, कम से कम सामाजिक इतिहास का, एक पात्र बन गए हैं, और यह सोचकर मुझे आश्चर्य होता है कि एक महिला और एक पुरुष जिन्हें मैं जानता हूँ, उनकी बहन और भतीजा हैं।

जब हम नीचे जा रहे थे, तभी एक महिला ऊपर आई, जो अपने चेहरे पर एक खास तरह की थकावट लिए खड़ी थी। वह लगभग चालीस वर्ष की लग रही थी, लेकिन वास्तव में उससे कहीं अधिक उम्र की थी। ये प्रिंसेस डी'ऑर्विलर्स थीं, जिनके बारे में कहा जाता था कि वे परमा के ड्यूक की नाजायज बेटी थीं। उनकी मधुर आवाज में ऑस्ट्रियाई लहजे की हल्की सी झलक थी। वह लंबी, झुकी हुई, सफेद फूलों वाले रेशमी गाउन में आगे बढ़ीं, हीरे और नीलम से जड़े उनके खूबसूरत, धड़कते, सुडौल सीने में उभार था। मोतियों की बेहिसाब कीमती लेकिन भारी डोरी से शरमाए शाही घोड़े की तरह सिर हिलाते हुए, उन्होंने बीच-बीच में अपनी कोमल, मनमोहक निगाहें बिखेरीं। उनकी नीली आंखें, जो समय के साथ फीकी पड़ने लगी थीं, पहले से कहीं अधिक कोमल हो गईं, और उन्होंने विदा होने वाले अधिकांश मेहमानों का दोस्ताना अंदाज में अभिवादन किया। डचेस ने कहा, "आपने आने के लिए अच्छा समय चुना है, पाउलेट!" "जी हाँ, मुझे बहुत अफ़सोस है! लेकिन सचमुच यह शारीरिक रूप से असंभव था," प्रिंसेस डी'ऑर्विलर्स ने उत्तर दिया। उन्होंने इस तरह का भाव डचेस डी गुएरमांटेस से सीखा था, लेकिन इसमें अपनी स्वाभाविक मधुरता और कोमल स्वर में छिपे जर्मन लहजे से झलकने वाली ईमानदारी को भी जोड़ दिया था। ऐसा लग रहा था कि वह जीवन की उन जटिलताओं की ओर इशारा कर रही थीं जिन्हें बयान करना मुश्किल था, न कि केवल शाम की पार्टियों की ओर, हालाँकि वह अभी-अभी कई पार्टियों से लौटी थीं। लेकिन ये पार्टियां ही उनके देर से आने का कारण नहीं थीं। चूंकि प्रिंस डी गुएरमांटेस ने कई वर्षों तक अपनी पत्नी को श्रीमती डी'ऑर्विलर्स से मिलने से मना किया था, इसलिए प्रतिबंध हटने के बाद, वह एक-दूसरे के निमंत्रणों का जवाब केवल कार्ड छोड़कर ही देती थीं, ताकि ऐसा न लगे कि वह उनके लिए बेताब हैं। इस तरीके को दो-तीन साल तक अपनाने के बाद, वह स्वयं आईं, लेकिन बहुत देर से, मानो थिएटर से लौटकर आई हों। इस तरह उसने ऐसा दिखाया मानो उसे पार्टी की कोई परवाह नहीं है, न ही उसमें शामिल होने की, बल्कि वह केवल राजकुमार और राजकुमारी से मिलने आई है, उनके लिए, क्योंकि वह उन्हें पसंद करती है, ऐसे समय में जब उनके अधिकांश मेहमान पहले ही जा चुके थे, ताकि वह "उन्हें अधिक समय तक अपने लिए रख सके।"

"ओरियान सचमुच बहुत गिरी हुई है," श्रीमती डी गैलार्डन ने बुदबुदाते हुए कहा। "मुझे समझ नहीं आता कि बेसिन ने उसे श्रीमती डी'ऑर्विलर्स से बात करने की अनुमति कैसे दी। मुझे यकीन है कि श्री डी गैलार्डन मुझे कभी इसकी अनुमति नहीं देते।" जहाँ तक मेरी बात है, मैंने श्रीमती डी'ऑर्विलर्स में उस महिला को पहचान लिया था जो होटल गुएरमांटेस के बाहर मुझे उदास निगाहों से देखती, मुड़कर रुकती और दुकानों की खिड़कियों में झाँकती रहती थी। श्रीमती डी गुएरमांटेस ने मेरा परिचय कराया, श्रीमती डी'ऑर्विलर्स आकर्षक थीं, न तो बहुत दोस्ताना और न ही नाराज़। उन्होंने अपनी कोमल आँखों से मुझे और बाकी सभी को देखा... लेकिन जब भी मैं उनसे दोबारा मिली, मुझे उनसे वैसी कोई पेशकश नहीं मिली जैसी वह पहले करती हुई प्रतीत होती थीं। एक खास तरह की निगाह होती है, जो देखने में पहचान की झलक जैसी लगती है, लेकिन एक युवक को कुछ खास महिलाओं से—और न ही कुछ खास पुरुषों से—उस दिन के बाद कभी नहीं मिलती, जिस दिन वे उससे परिचित हो चुकी होती हैं और उन्हें पता चल जाता है कि वह उन लोगों का दोस्त है जिनसे वे भी घनिष्ठ रूप से परिचित हैं।

हमें बताया गया कि गाड़ी दरवाजे पर खड़ी है। श्रीमती डी गुएरमांटेस ने अपनी लाल स्कर्ट समेटी, मानो नीचे जाकर गाड़ी में बैठने वाली हों, लेकिन शायद पश्चाताप से, या किसी को प्रसन्न करने की इच्छा से, और सबसे बढ़कर इस उबाऊ काम को लंबा खींचने में आ रही भौतिक बाधा का फायदा उठाने के लिए, उन्होंने श्रीमती डी गैलार्डन की ओर देखा; फिर, मानो उन्हें अभी-अभी देखा हो, अचानक किसी प्रेरणा से प्रेरित होकर, नीचे जाने से पहले ही सीढ़ी की पूरी चौड़ाई पार कर गईं और अपनी प्रसन्न चचेरी बहन के पास पहुँचकर अपना हाथ बढ़ाया। "इतनी देर," डचेस ने कहा, और फिर, इस बात के लिए कि उन्हें अपने सारे पछतावे और जायज़ बहाने न बनाने पड़ें, घबराहट भरी नज़र से ड्यूक की ओर मुड़ीं, जो वास्तव में मेरे साथ गाड़ी तक नीचे गए थे, और जब उन्होंने देखा कि उनकी पत्नी श्रीमती डी गैलार्डन के पास चली गई हैं और पीछे गाड़ियों के काफिले को रोक रही हैं, तो वे गुस्से से आग बबूला हो रहे थे। “आखिरकार, ओरियान अब भी बहुत खूबसूरत है!” श्रीमती डी गैलार्डन ने कहा। “लोग मुझे हंसाते हैं जब वे कहते हैं कि हमारा झगड़ा हुआ है; हम (जिन कारणों को हमें दूसरों को बताने की ज़रूरत नहीं है) सालों तक एक-दूसरे को देखे बिना रह सकते हैं,

हमारे पास इतनी यादें हैं जो हम साझा करते हैं कि हम कभी अलग नहीं हो सकते, और अपने दिल में वह जानती होगी कि वह मुझसे उन सभी लोगों से कहीं ज़्यादा प्यार करती है जिन्हें वह हर दिन देखती है और जो उसके स्तर के नहीं हैं।" श्रीमती डी गैलार्डन वास्तव में उन ठुकराए हुए प्रेमियों की तरह थीं जो लोगों को यह विश्वास दिलाने की पूरी कोशिश करते हैं कि उन्हें उन लोगों से ज़्यादा प्यार किया जाता है जिन्हें उनका प्रिय मानता है। और (अपनी कही हुई बातों के विपरीत, डचेस डी गुएरमांटेस की प्रशंसा करते हुए) उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से यह साबित कर दिया कि दूसरी महिला उन सिद्धांतों से भलीभांति परिचित थी जो एक फैशनपरस्त महिला के जीवन में मार्गदर्शक होने चाहिए, जो ठीक उसी समय जब उसका सबसे शानदार गाउन ईर्ष्या से भरी प्रशंसा बटोर रहा हो, उसे आकर्षक बनाने के लिए पूरी सीढ़ी पार करने में सक्षम हो। "कम से कम अपने जूते गीले न होने दें" (बारिश की एक हल्की लेकिन तेज बौछार हुई थी), ड्यूक ने कहा, जो इंतजार कराए जाने से अभी भी क्रोधित थे।
घर लौटते समय, कूपे की तंग जगह में, लाल जूते मजबूरीवश मेरे जूतों के बहुत करीब थे, और श्रीमती डी गुएरमांटेस को डर था कि कहीं उन्होंने मुझे छू न लिया हो, इसलिए उन्होंने ड्यूक से कहा: "इस युवक को मुझसे कार्टून में दिखाए गए व्यक्ति की तरह कहना होगा: 'मैडम, मुझे तुरंत बता दीजिए कि आप मुझसे प्यार करती हैं, लेकिन मेरे पैरों पर इस तरह पैर मत रखिए।'" हालांकि, मेरे विचार श्रीमती डी गुएरमांटेस से बिल्कुल अलग थे। जब से सेंट-लूप ने मुझसे एक अच्छे परिवार की युवती के बारे में बात की थी जो एक बदनाम अड्डे पर अक्सर जाती थी, और बैरोनेस पुटबस की नौकरानी के बारे में, तब से इन दोनों व्यक्तियों में ही मेरे भीतर दिन-प्रतिदिन अनगिनत सुंदरियों द्वारा जगाई जाने वाली इच्छाएँ समाहित और मूर्त रूप धारण कर ली थीं - दो वर्गों की सुंदरियाँ, एक ओर तो आम और भव्य, बड़े घरों की राजसी नौकरानियाँ, जो गर्व से भरी होती थीं और डचेस के बारे में बात करते समय 'हम' कहती थीं, दूसरी ओर वे लड़कियाँ जिनके लिए कभी-कभी, उन्हें गाड़ी में या पैदल गुजरते हुए देखे बिना भी, किसी बॉल के विवरण में उनके नाम पढ़कर ही मुझे उनसे प्यार हो जाता था और मैं गर्मियों में उनके द्वारा बिताए गए ग्रामीण घरों को खोजने के लिए वार्षिक पुस्तिका को पूरी लगन से देखता था (अक्सर नामों की समानता से बहक जाता था), और बारी-बारी से पश्चिम के मैदानों, उत्तर के रेतीले टीलों, दक्षिण के चीड़ के जंगलों के बीच रहने का सपना देखता था।

लेकिन सेंट-लूप द्वारा मेरे लिए तैयार की गई आदर्श रूपरेखा के अनुसार, सहज स्वभाव वाली युवती और श्रीमती पुटबस की दासी की रचना करने के लिए, मैं अपने सभी उत्कृष्ट शारीरिक गुणों को मिलाकर भी व्यर्थ ही प्रयास करता रहा। मेरी दो मनमोहक सुंदरियों में अभी भी वह कमी थी जो मुझे उन्हें देखे बिना कभी पता नहीं चल सकती थी: उनका व्यक्तिगत चरित्र। जिन महीनों में मैं एक महिला की दासी को प्राथमिकता देता, उन महीनों में मैंने श्रीमती पुटबस की दासी की मानसिक छवि बनाने का प्रयास करते-करते खुद को थका दिया। लेकिन उन सभी क्षणभंगुर प्राणियों के लिए, जिनके नाम तक मैं अक्सर नहीं जानता था, जिन्हें फिर से ढूंढना वैसे भी बहुत मुश्किल था, उनसे परिचित होना और भी कठिन था, शायद उन्हें मोहित करना असंभव था, अपनी बेचैन इच्छाओं से लगातार परेशान रहने के बाद, उस बिखरी हुई, क्षणभंगुर, गुमनाम सुंदरता में से दो चुनिंदा नमूनों को अलग करना कितना सुकून भरा था, जिन्हें मैं कम से कम अपनी इच्छा अनुसार प्राप्त करने के बारे में निश्चित था। मैं इस दोहरे सुख के लिए समय निकालने को टालता रहा, जैसे काम शुरू करने को टालता था। लेकिन जब भी मैं चाहूँ, यह सुख प्राप्त कर लूँगा, इस निश्चितता ने मुझे इसे लेने की आवश्यकता से लगभग मुक्त कर दिया, ठीक वैसे ही जैसे नींद की गोलियाँ जिन्हें हाथ में रखने मात्र से ही नींद आ जाती है। पूरे ब्रह्मांड में मेरी केवल दो ही इच्छाएँ थीं, जिनके चेहरों की कोई छवि मेरे मन में नहीं बन पा रही थी, लेकिन जिनके नाम सेंट-लूप ने मुझे बताए थे और उनकी सहमति की गारंटी दी थी। इसलिए, यदि उन्होंने आज शाम जो कहा था, उससे मेरी कल्पना पर भारी बोझ पड़ा था, तो साथ ही साथ उन्होंने मेरी इच्छाशक्ति को काफी आराम और लंबा विश्राम भी प्रदान किया था।

“अच्छा!” डचेस ने मुझसे कहा, “तुम्हारे बॉल्स के अलावा, क्या मैं तुम्हारे किसी काम आ सकती हूँ? क्या तुम्हें कोई ऐसा घर मिला है जहाँ तुम मुझे मिलवाना चाहोगे?” मैंने जवाब दिया कि मुझे डर है कि जो एकमात्र घर मुझे लुभा रहा है, वह शायद उनके लिए उतना फैशनेबल नहीं है। “वह किसका है?” उन्होंने कर्कश और धमकी भरी आवाज़ में पूछा, लगभग अपने होंठ खोले बिना। “बैरोनेस पुटबस।” इस बार उन्होंने सचमुच गुस्से का नाटक किया। नहीं, ऐसा नहीं! मुझे लगता है कि तुम मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहे हो। मुझे तो यह भी नहीं पता कि मैंने उस औरत का नाम कैसे सुना। लेकिन वह समाज की सबसे नीच औरत है।

ऐसा लगता है जैसे तुम मुझसे मेरी टोपी बनाने वाली से परिचय करवाने को कह रहे हो। और उससे भी बुरा, क्योंकि मेरी टोपी बनाने वाली तो बहुत ही आकर्षक है। तुम थोड़े सनकी हो गए हो, मेरे बेचारे लड़के। खैर, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि जिन लोगों से मैंने तुम्हारा परिचय करवाया है, उनसे विनम्रता से पेश आना, उनके लिए कार्ड छोड़ देना और जाकर उनसे मिलना, और उनसे बैरोनेस पुटबस के बारे में बात मत करना, जिनके बारे में उन्होंने कभी सुना भी नहीं है। मैंने पूछा कि क्या मैडम डी'ऑर्विलर्स चंचल स्वभाव की तो नहीं हैं? "अरे, बिलकुल नहीं, तुम किसी और के बारे में सोच रहे हो, अरे, वह तो काफी संस्कारी हैं। है ना, बेसिन?" "हाँ, वैसे भी मुझे नहीं लगता कि उनके बारे में कभी कुछ कहा गया है," ड्यूक ने कहा।

“क्या तुम हमारे साथ पार्टी में नहीं आओगे?” उसने मुझसे पूछा। “मैं तुम्हें एक वेनिस का चोला दे सकता हूँ और मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो तुम्हें वहाँ देखकर बहुत खुश होगा—ओरियान, यह कहने की ज़रूरत नहीं—लेकिन प्रिंसेस डी पार्म। वह तुम्हारी तारीफ करते-करते कभी नहीं थकती और सिर्फ़ तुम पर ही भरोसा करती है। तुम्हारे लिए यह सौभाग्य की बात है—क्योंकि वह थोड़ी समझदार है—कि वह सदाचार की आदर्श है। नहीं तो वह तुम्हें ज़रूर अपना नौकर बना लेती, जैसा कि मेरे बचपन में कहा जाता था, एक तरह का नौकर।”

मुझे नृत्य-प्रदर्शन में नहीं, बल्कि अल्बर्टीन से अपनी मुलाकात में दिलचस्पी थी। इसलिए मैंने मना कर दिया। गाड़ी रुक गई थी, नौकर दरवाज़ा खोलने के लिए चिल्ला रहा था, घोड़े ज़मीन पर तब तक खुर मारते रहे जब तक कि दरवाज़ा खुल नहीं गया और गाड़ी आँगन में चली गई। "फिर मिलेंगे," ड्यूक ने कहा। "कभी-कभी मुझे मैरी के इतने करीब रहने का अफ़सोस होता है," डचेस ने मुझसे कहा, "क्योंकि मैं उससे बहुत प्यार करती हूँ, लेकिन उसकी संगति मुझे उतनी पसंद नहीं है। लेकिन आज रात जितना अफ़सोस मुझे पहले कभी नहीं हुआ, क्योंकि इसकी वजह से मुझे तुम्हारी संगति बहुत कम मिली है।" "आओ, ओरियन, भाषणबाज़ी बंद करो।" डचेस चाहती थीं कि मैं एक मिनट के लिए अंदर आ जाऊँ। जब मैंने कहा कि मैं नहीं आ सकती क्योंकि किसी भी क्षण एक लड़की आने वाली है, तो वह और ड्यूक दोनों ज़ोर से हँसे। "मेहमानों से मिलने के लिए तुमने अजीब समय चुना है," उन्होंने मुझसे कहा।

“चलो, मेरी बच्ची, समय बर्बाद करने का समय नहीं है,” एम. डी गुएरमांटेस ने अपनी पत्नी से कहा। “पौने बारह बज चुके हैं, और हमें तैयार हो जाना चाहिए...” वे अपने घर के सामने, जिसकी वे दोनों सख्ती से रखवाली कर रहे थे, उन दो छड़ियों वाली महिलाओं से टकरा गए, जो किसी बदनामी को रोकने के लिए आधी रात को पहाड़ की चोटी से नीचे उतरने से नहीं डरी थीं। “बेसिन, हमें लगा कि आपको चेतावनी देना ज़रूरी है, कहीं आप उस पार्टी में न दिखें: बेचारे अमानियन का अभी एक घंटा पहले निधन हो गया है।” ड्यूक को एक पल के लिए घबराहट हुई। जैसे ही इन अभागी पर्वतारोहियों ने उन्हें एम. डी'ऑसमंड की मृत्यु की सूचना दी, उन्हें लगा कि उस मशहूर पार्टी का आनंद उनसे छीन लिया गया है। लेकिन उन्होंने जल्दी ही खुद को संभाला और अपनी चचेरी बहनों को करारा जवाब दिया, जिसमें उन्होंने एक आनंद को न छोड़ने के अपने दृढ़ संकल्प के साथ-साथ फ्रांसीसी भाषा की बारीकियों को ठीक से न समझने की अपनी अक्षमता को भी शामिल कर लिया: “वह मर गया है! नहीं, नहीं, वे बढ़ा-चढ़ाकर बोल रहे हैं, वे बढ़ा-चढ़ाकर बोल रहे हैं!” और अपने उन दो रिश्तेदारों के बारे में एक पल भी सोचे बिना, जो अपने लट्टू लेकर रात में चढ़ाई करने की तैयारी कर रहे थे, उन्होंने अपने नौकर से सवालों की झड़ी लगा दी:

"क्या आपको यकीन है कि मेरा हेलमेट आ गया है?" "जी हां, महाशय।" "क्या आपको यकीन है कि इसमें सांस लेने के लिए छेद है? मैं घुटन महसूस नहीं करना चाहता, धिक्कार है!" "जी हां, महाशय।" "हे भगवान, यह तो मनहूस शाम है। ओरियान, मैं बाबल से पूछना भूल गया कि नुकीले पंजों वाले जूते तुम्हारे लिए हैं या नहीं!" "लेकिन, मेरे प्यारे, ओपेरा-कॉमिक का ड्रेसर यहां है, वह हमें बता देगा। मुझे नहीं लगता कि ये जूते तुम्हारे स्पर्स के साथ अच्छे लगेंगे।" "चलो जाकर ड्रेसर को ढूंढते हैं," ड्यूक ने कहा। "अलविदा, मेरे बच्चे, मैं तुम्हें जूते पहनते समय अंदर आने के लिए कहूंगा, इससे तुम्हारा मनोरंजन होगा। लेकिन हमें सिर्फ बातें करके समय बर्बाद करना चाहिए, लगभग आधी रात हो चुकी है और हमें वहां पहुंचने में देर नहीं करनी चाहिए वरना सारा सेट खराब हो जाएगा।"

मैं भी श्रीमान और श्रीमती डी गुएरमांटेस से जल्द से जल्द दूर जाना चाहता था। फ्रेड्रे का काम लगभग साढ़े ग्यारह बजे खत्म हुआ। अल्बर्टीन अब तक आ चुकी होंगी। मैं सीधे फ्रांस्वा के पास गया: "क्या श्रीमती अल्बर्टीन घर पर हैं?" "किसी ने फोन नहीं किया।"

हे भगवान! इसका मतलब तो यह था कि कोई फोन नहीं करेगा! मैं बहुत परेशान थी, अल्बर्टीन का आना अब मुझे और भी ज्यादा वांछनीय लग रहा था, क्योंकि अब इसकी संभावना कम होती जा रही थी।

फ्रांस्वा भी नाराज़ थी, लेकिन बिल्कुल अलग वजह से। उसने अभी-अभी अपनी बेटी को स्वादिष्ट भोजन के लिए मेज पर बिठाया था। लेकिन, मुझे अंदर आते देख और यह देखकर कि बर्तनों को झटपट हटाने और सुई-धागा निकालने का समय नहीं था, मानो यह कोई काम की पार्टी हो, न कि खाने की पार्टी: "उसने अभी-अभी एक चम्मच सूप लिया है," फ्रांस्वा ने मुझे समझाया, "मैंने उसे हड्डी का एक टुकड़ा चबाने के लिए मजबूर किया," इस तरह अपनी बेटी के खाने को कम कर दिया, मानो अपराध खाने की अधिकता में ही हो। दोपहर या रात के खाने के समय भी, अगर मैं गलती से रसोई में चला जाता, तो फ्रांस्वा ऐसा दिखावा करती कि खाना खत्म हो चुका है, और यहाँ तक कि "मुझे बस थोड़ा सा खाने का मन हुआ" या "एक निवाला" कहकर अपना बचाव करती। लेकिन मेज पर रखी प्लेटों की भरमार देखकर मुझे तुरंत तसल्ली हो गई, जिन्हें फ्रांस्वा, मेरे अचानक प्रवेश से चौंककर, रात के अंधेरे में चोर की तरह (हालांकि वह चोर नहीं थी), नज़रों से ओझल करने का समय ही नहीं पा सकी थी। फिर उसने कहा, "अब जाओ अपने बिस्तर पर, आज तुमने बहुत काम कर लिया है" (क्योंकि वह यह दिखाना चाहती थी कि उसकी बेटी पर हमारा कोई खर्चा नहीं है, वह अभावों में जी रही है, और सचमुच हमारी सेवा में जी-तोड़ मेहनत कर रही है)। "तुम रसोई में जगह घेर रही हो और मालिक को परेशान कर रही हो, जो किसी मेहमान का इंतज़ार कर रहे हैं। जाओ, ऊपर जाओ," उसने दोहराया, मानो उसे अपनी बेटी को बिस्तर पर भेजने के लिए अपने अधिकार का इस्तेमाल करना ही पड़े, जो खाना न मिलने पर दिखावे के लिए ही रसोई में रुकी रही, और अगर मैं पाँच मिनट और रुकता तो वह खुद ही चली जाती। और मेरी ओर मुड़कर, अपनी उस प्यारी, सरल और फिर भी, किसी तरह से निजी फ्रेंच में, जो उसकी बोलने की भाषा थी, बोली: "मालिक को नहीं दिख रहा कि नींद की कमी से उसका चेहरा फटा हुआ है।" मैं वहीं रुका रहा, फ्रांकोइस की बेटी से बात न करनी पड़े इस बात से खुश था।

मैंने कहा है कि वह एक छोटे से गाँव से आई थी जो उसकी माँ के गाँव के काफी करीब था, फिर भी मिट्टी की प्रकृति, खेती, बोली और सबसे बढ़कर निवासियों की कुछ विशेषताओं के

कारण उससे अलग था। इस प्रकार 'कसाई' और फ्रांस्वा की भतीजी का आपस में बिल्कुल भी मेलजोल नहीं था, लेकिन उनमें यह बात समान थी कि जब वे किसी काम से बाहर जातीं, तो वे 'बहन' या 'चचेरी बहन' के घर घंटों रुक जातीं, क्योंकि वे खुद बातचीत पूरी करने में असमर्थ होतीं, जिसके दौरान वे जिस उद्देश्य से निकली थीं, वह उनके दिमाग से पूरी तरह से गायब हो जाता था, यहाँ तक कि अगर हम उनके लौटने पर उनसे कहते:
"अच्छा! क्या श्रीमान मार्किस डी नॉरपोइस सवा छह बजे घर पर होंगे?" वे माथे पर शिकन डालकर यह भी नहीं कहते थे: "अरे, मैं तो भूल ही गई थी," बल्कि "अरे! मुझे समझ नहीं आया कि मालिक यह जानना चाहते हैं, मुझे लगा कि मुझे बस जाकर उन्हें शुभ दिन कहना है।" अगर वे एक घंटे पहले कही गई बात पर इस तरह भड़क उठते थे, तो दूसरी ओर, बहन या चचेरी बहन द्वारा कही गई बात को वे कभी नहीं भूल पाते थे। उदाहरण के लिए, अगर कसाई ने सुना होता कि अंग्रेजों ने 1970 में प्रशियाई लोगों के साथ ही हम पर युद्ध किया था, और मैंने उसे यह समझाते-समझाते थक गई होती कि ऐसा नहीं था, तो भी हर तीन हफ्ते में कसाई बातचीत के दौरान मुझसे दोहराती: "यह सब उस युद्ध की वजह से है जो अंग्रेजों ने 1970 में प्रशियाई लोगों के साथ मिलकर हम पर किया था।" “लेकिन मैंने तुम्हें सौ बार कहा है कि तुम गलत हो।”—फिर वह जवाब देती, मानो उसका विश्वास ज़रा भी नहीं डिगा था: “खैर, इसका मतलब यह नहीं कि हम उन्हें कोई नुकसान पहुँचाना चाहें। 70 के बाद से बहुत कुछ बदल चुका है,” और इसी तरह की बातें। एक और मौके पर, इंग्लैंड के साथ युद्ध की वकालत करते हुए, जिसका मैंने विरोध किया, उसने कहा: “निश्चित रूप से, युद्ध न करना हमेशा बेहतर होता है; लेकिन जब ज़रूरी हो, तो तुरंत करना ही सबसे अच्छा है। जैसा कि सिस्टर अभी समझा रही थी, 70 में अंग्रेजों द्वारा हम पर किए गए उस युद्ध के बाद से, व्यापारिक संधियों ने हमें बर्बाद कर दिया है। उन्हें हराने के बाद, हम किसी भी अंग्रेज को फ्रांस में प्रवेश नहीं करने देंगे, जब तक कि वह प्रवेश के लिए तीन सौ फ्रैंक का भुगतान न करे, जैसा कि हमें अब इंग्लैंड में उतरने के लिए भुगतान करना पड़ता है।”
इस छोटे से गाँव के निवासियों का चरित्र, जो अपने शाहबलूत के पेड़ों, विलो वृक्षों और आलू और चुकंदर के खेतों के बीच बसा हुआ है, अत्यंत ईमानदारी और बोलते समय किसी भी तरह की रुकावट को बर्दाश्त न करने के हठ के साथ-साथ, बीस बार उस बिंदु पर वापस

लौटना था जहाँ उन्हें रोका गया था, जिससे अंततः उनकी बातचीत को बाख के फ्यूग की तरह अटूट दृढ़ता प्राप्त हुई।

दूसरी ओर, फ्रांस्वा की बेटी (खुद को पुरानी रूढ़ियों से बाहर निकली एक आधुनिक महिला मानते हुए) पेरिस की बोलचाल की भाषा बोलती थी और उस समय के सभी चुटकुलों से भलीभांति परिचित थी। फ्रांस्वा ने उसे बताया कि मैं एक राजकुमारी के घर से आया हूँ: "ओह, सच में! मुझे लगता है, ब्राज़ील की राजकुमारी, जहाँ से मेवे आते हैं।" यह देखकर कि मैं किसी मेहमान का इंतज़ार कर रहा था, उसने यह दिखावा किया कि मेरा नाम चार्ल्स है। मैंने मासूमियत से जवाब दिया कि ऐसा नहीं है, जिससे उसे बात करने का मौका मिल गया: "ओह, मुझे लगा कि यही है! और मैं मन ही मन कह रही थी, चार्ल्स (धोखेबाज़) ध्यान दे।" यह बात अच्छी नहीं लगी। लेकिन जब अल्बर्टीन के देर से आने पर मुझे सांत्वना देते हुए उसने मुझसे कहा, "मुझे लगता है कि तुम कयामत तक इंतज़ार करते रहोगे। वह कभी नहीं आएगी। ओह! ये आधुनिक लड़कियाँ!" तो मैं और भी ज़्यादा प्रभावित हुआ।

और इस तरह उसकी बोली उसकी माँ से अलग थी; लेकिन, इससे भी अधिक रोचक बात यह थी कि उसकी माँ की बोली उसकी नानी की बोली से बिल्कुल अलग थी, जो बैलेउ-ले-पिन की मूल निवासी थीं, जो फ्रैंचाइज़ के गाँव के बहुत करीब था। फिर भी, बोलियों में थोड़ा-बहुत अंतर था, ठीक वैसे ही जैसे आसपास का नजारा अलग था। फ्रैंचाइज़ की माँ का गाँव, एक गहरी खाई में ढलान पर बसा हुआ था, विलो के पेड़ों से भरा हुआ था। और, इन दोनों से मीलों दूर, इसके विपरीत, फ्रांस का एक छोटा सा जिला था जहाँ के लोग लगभग वही बोली बोलते थे जो मेसेग्लिस में बोली जाती थी। मुझे यह खोज तो हुई, लेकिन इसके नुकसान भी महसूस हुए। दरअसल, एक बार मैंने फ्रैंचाइज़ को एक पड़ोसी की नौकरानी से उत्सुकता से बात करते हुए देखा, जो इसी गाँव की थी और यहीं की बोली बोलती थी। वे एक-दूसरे को लगभग समझ लेती थीं, मुझे एक शब्द भी समझ नहीं आता था। वे यह जानती थीं, फिर भी उन्होंने मेरे सामने इस अजीब भाषा में बात करना बंद नहीं किया (उन्हें लगता था कि दूर-दूर जन्म लेने के बावजूद एक ही देश की होने की खुशी के कारण वे ऐसा कर रही थीं), मानो वे समझे ही न जाना चाहती हों। भाषाई भूगोल और सहभागिता के ये मनमोहक प्रदर्शन नीचे रसोई में हर हफ्ते जारी रहते थे, और मुझे उनमें कोई आनंद नहीं मिलता था।

जब भी बाहरी द्वार खुलता, द्वारपाल एक बिजली का बटन दबाता जिससे सीढ़ियाँ रोशन हो जातीं, और इमारत के सभी निवासी पहले ही अंदर आ चुके होते, इसलिए मैं तुरंत रसोई छोड़कर हॉल में जाकर बैठ गया और निगरानी करने लगा। मैं उस जगह पर बैठा था जहाँ बाहरी दरवाजे के शीशे पर पर्दे पूरी तरह से नहीं मिलते थे, जिससे सीढ़ी पर अर्ध-अंधेरे की एक ऊर्ध्वाधर पट्टी दिखाई दे रही थी। अगर अचानक यह पट्टी सुनहरे पीले रंग की हो जाती, तो इसका मतलब होता कि अल्बर्टीन अभी-अभी इमारत में दाखिल हुई है और एक मिनट में मेरे पास आ जाएगी; रात के उस समय कोई और नहीं आ सकता था। और मैं वहाँ बैठा रहा, उस पट्टी से अपनी नज़रें नहीं हटा पा रहा था जो लगातार अंधेरी बनी हुई थी; मैंने किसी भी बदलाव को देखने के लिए अपना पूरा शरीर आगे झुकाया; लेकिन, मेरी हर इच्छा के बावजूद, वह ऊर्ध्वाधर काली पट्टी मुझे वह मदहोश कर देने वाला आनंद नहीं दे पाई जो मुझे तब मिलता जब वह अचानक किसी चमत्कार से सुनहरे रंग की चमकदार पट्टी में बदल जाती। यह अल्बर्टाइन के बारे में बताने का एक शानदार मौका था, जिसके बारे में मैंने गुएरमांटेस पार्टी के दौरान तीन मिनट तक भी नहीं सोचा था! लेकिन, अतीत में जब दूसरी लड़कियों, खासकर गिलबर्टे ने मुझे आने में देरी की थी, तो उस समय की यादें ताजा हो गईं। एक साधारण शारीरिक सुख से वंचित रहने की संभावना ने मुझे तीव्र मानसिक पीड़ा दी।

मुझे मजबूर होकर अपने कमरे में जाना पड़ा। फ्रांस्वा मेरे पीछे आई। उसे लगा कि चूंकि मैं अपनी पार्टी से अलग होकर आई थी, इसलिए मेरे बटनहोल में लगा गुलाब रखने का कोई मतलब नहीं था, और वह उसे मुझसे लेने के लिए आगे बढ़ी। उसके इस काम ने मुझे याद दिलाया कि शायद अल्बर्टीन नहीं आ रही है, और मुझे यह भी स्वीकार करने पर मजबूर कर दिया कि मैं उसके लिए अच्छे कपड़े पहनना चाहती थी। इससे मुझे गुस्सा आया, और यह गुस्सा तब और बढ़ गया जब मैंने खुद को छुड़ाने की कोशिश में फूल को कुचल दिया। फ्रांस्वा ने मुझसे कहा, "अच्छा होता कि तुम मुझे ही दे देतीं, बजाय इसके कि जाकर इसे खराब कर दो।" लेकिन उसकी हर बात मुझे और भी चिढ़ा देती थी। जब हमें किसी के इंतज़ार में रखा जाता है, तो हम उस व्यक्ति की अनुपस्थिति से इतना दुखी होते हैं जिसके लिए हम तरस रहे होते हैं कि हम किसी और की मौजूदगी बर्दाश्त नहीं कर पाते।

जब फ्रांस्वा मेरे कमरे से चली गई, तो मुझे लगा कि अगर इसका मतलब सिर्फ इतना है कि अब मैं अल्बर्टीन के सामने सबसे अच्छा दिखना चाहता हूँ, तो यह दुख की बात है कि मैंने कितनी बार उसे बिना शेव किए, कई दिनों की बढ़ी हुई दाढ़ी के साथ, उन शामों में देखा था जब मैं उसे हमारे प्यार भरे स्पर्श को ताज़ा करने के लिए अंदर आने देता था। मुझे लगा कि वह मुझमें कोई दिलचस्पी नहीं ले रही है और मुझे नज़रअंदाज़ कर रही है। अपने कमरे को थोड़ा रोशन करने के लिए, इस उम्मीद में कि अल्बर्टीन फिर भी आ सकती है, और क्योंकि यह मेरी सबसे खूबसूरत चीज़ों में से एक थी, मैंने सालों बाद पहली बार अपने बिस्तर के पास वाली मेज पर, उस फ़िरोज़ी जड़े हुए कवर को रखा, जिसे गिल्बर्ट ने मेरे लिए बर्गोट के पैम्फलेट को रखने के लिए बनवाया था, और जिसे मैं इतने लंबे समय से सोते समय अपने पास रखने पर ज़ोर देता रहा था, साथ ही अगेट मार्बल को भी। इसके अलावा, शायद अल्बर्टीन की तरह ही, जो अभी तक नहीं आई थी, उस समय उसकी मौजूदगी, एक ऐसे बहाने के रूप में जिसे उसने स्पष्ट रूप से अधिक आकर्षक पाया था और जिसके बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था, ने मुझे एक पीड़ादायक अनुभूति दी। हालाँकि मैंने लगभग एक घंटे पहले स्वान से ईर्ष्या न करने की अपनी अक्षमता के बारे में कहा था, अगर मैं अपनी सहेली से कम अंतराल पर मिलती, तो यह अनुभूति इस चिंता में बदल सकती थी कि वह कहाँ, किसके साथ समय बिता रही है। मैंने अल्बर्टीन के घर फोन करने की हिम्मत नहीं की, बहुत देर हो चुकी थी, लेकिन इस उम्मीद में कि शायद किसी कैफे में कुछ अन्य लड़कियों के साथ रात का खाना खाते हुए, वह मुझे फोन करने का सोच लेगी, मैंने स्विच बंद कर दिया और अपने कमरे में कनेक्शन बहाल करते हुए, डाकघर और चौकीदार के कमरे के बीच का कनेक्शन काट दिया, जहाँ आमतौर पर उस समय कनेक्शन लगा रहता था। फ्रांस्वा के कमरे की ओर जाने वाले छोटे से गलियारे में रिसीवर लगाना आसान, कम असुविधाजनक होता, लेकिन बेकार होता। सभ्यता के विकास से हममें से प्रत्येक व्यक्ति में कुछ अनपेक्षित गुण या नए दोष प्रकट होते हैं, जो उसे अपने मित्रों के लिए और भी प्रिय या असहनीय बना देते हैं। इसी प्रकार, डॉ. बेल के आविष्कार ने फ्रांस्वा को एक और दोष प्रदान कर दिया था, और वह दोष था टेलीफोन का उपयोग करने से इनकार करना, चाहे अवसर कितना भी महत्वपूर्ण या कितना भी जरूरी क्यों न हो। जब भी कोई उसे टेलीफोन चलाना सिखाने वाला होता, वह गायब हो जाती, ठीक

वैसे ही जैसे लोग टीकाकरण के समय गायब हो जाते हैं। और इस प्रकार मेरे शयनकक्ष में टेलीफोन लगा दिया गया, और ताकि मेरे माता-पिता को परेशानी न हो, घंटी की जगह एक खड़खड़ाहट लगा दी गई। मैं हिल भी नहीं रहा था, इस डर से कि कहीं उसकी आवाज़ न सुनाई दे। मैं इतना स्थिर रहा कि महीनों में पहली बार मुझे घड़ी की टिक-टिक सुनाई दी। फ्रांस्वा कमरा साफ करने आई। उसने मुझसे बात करना शुरू किया, लेकिन मुझे उसकी बातें बिल्कुल पसंद नहीं थीं, जिसकी नीरस निरंतरता के नीचे मेरी भावनाएँ पल-पल बदल रही थीं, डर से चिंता में; चिंता से पूर्ण निराशा में। मैंने उससे जो अस्पष्ट संतुष्टि के शब्द कहे, उन्हें मैं अपना कर्तव्य समझकर कह रहा था, लेकिन असल में मेरा चेहरा इतना दयनीय था कि मैंने गठिया का बहाना किया, ताकि मेरी बनावटी उदासीनता और मेरे उदास भाव के बीच के अंतर को छिपा सकूँ; इसके अलावा, मुझे डर था कि उसकी बातें, जो वैसे तो फ्रांस्वा दबी आवाज़ में कर रही थी (अल्बर्टीन की वजह से नहीं, क्योंकि उसे लगता था कि उसके आने की सारी संभावना खत्म हो चुकी है), कहीं मुझे उस मुक्तिदायक पुकार को सुनने से न रोक दें जो अब सुनाई नहीं देगी। आखिरकार फ्रांस्वा सोने चली गई; मैंने उसे अचानक और विनम्रता से विदा किया, ताकि कमरे से निकलते समय उसकी आवाज़ टेलीफोन की आवाज़ को दबा न दे। और मैं फिर से सुनने, सहने के लिए बैठ गया; जब हमें प्रतीक्षा करनी पड़ती है, कानों से, जो ध्वनियों को ग्रहण करते हैं, मन तक, जो उनका विश्लेषण करता है, और मन से हृदय तक, जिसे वह अपने परिणाम भेजता है, यह दोहरी यात्रा इतनी तीव्र होती है कि हम इसके मार्ग का पता भी नहीं लगा पाते हैं, और कल्पना करते हैं कि हम सीधे अपने हृदय से सुन रहे हैं।

मेरी बेचैनी लगातार बढ़ती जा रही थी, एक पुकार की आवाज़ सुनने की मेरी चाहत कभी पूरी नहीं होने वाली थी; मैं अपने अकेलेपन के दर्द के भंवर में फँसते हुए एक कठिन चढ़ाई के चरम पर पहुँच गया था। भीड़भाड़ वाले, रात के समय जगमगाते पेरिस के दिल से, जो अचानक मेरे करीब आ गया था, वहीं मेरी किताबों की अलमारी के पास, मैंने अचानक एक यंत्रवत और उदात्त आवाज़ सुनी, जैसे ट्रिस्टन में फड़फड़ाता घूंघट या चरवाहे की बांसुरी, टेलीफोन की धीमी आवाज़। मैं झट से फोन की ओर भागा, यह अल्बर्टीन थी। "क्या मैं आपको इस समय फोन करके परेशान तो नहीं कर रही?" "बिल्कुल नहीं..." मैंने अपनी खुशी को रोकते हुए कहा, क्योंकि देर रात के बारे में उसकी टिप्पणी शायद आने में देरी के लिए माफी

माँगने के तौर पर थी, और इसका मतलब यह नहीं था कि वह नहीं आ रही थी। "क्या आप आ रही हैं?" मैंने उदासीनता भरे स्वर में पूछा। "क्यों... नहीं, जब तक कि आपको मुझसे मिलना बहुत ज़रूरी न हो।"

मेरा एक हिस्सा, जिससे दूसरा हिस्सा जुड़ना चाहता था, अल्बर्टीन में था। उसका आना ज़रूरी था, लेकिन मैंने उसे पहले नहीं बताया; अब जब हम संपर्क में थे, तो मैंने मन ही मन सोचा कि मैं आखिरी क्षण में उसे मना लूँगा, या तो वह मेरे पास आए या मैं उसके पास जल्दी पहुँच जाऊँ। "हाँ, मैं घर के पास ही हूँ," उसने कहा, "और तुमसे मीलों दूर; मैंने तुम्हारा पत्र ठीक से नहीं पढ़ा था। मुझे अभी-अभी वह फिर से मिला है और मुझे डर था कि तुम मेरा इंतज़ार कर रहे होगे।" मुझे पूरा यकीन था कि वह झूठ बोल रही है, और अब, गुस्से में, उसे देखने की इच्छा से ज़्यादा उसकी योजनाओं को बिगाड़ने की इच्छा से, मैंने उसे बुलाने का निश्चय किया। लेकिन मुझे लगा कि जो कुछ ही पलों में मैं उससे पाने की कोशिश करने वाला था, उसे पहले मना करना बेहतर होगा। लेकिन वह कहाँ थी? उसकी आवाज़ के साथ-साथ अन्य ध्वनियाँ भी घुलमिल गईं: एक साइकिल सवार के हॉर्न की आवाज़, एक महिला के गाने की आवाज़, दूर से आती पीतल के बैंड की आवाज़, ये सभी ध्वनियाँ उसकी प्रियतमा की आवाज़ की तरह स्पष्ट रूप से सुनाई दे रही थीं, मानो मुझे यह दर्शाने के लिए कि वास्तव में अल्बर्टीन ही अपने वास्तविक परिवेश में उस क्षण मेरे पास थी, जैसे मिट्टी का एक ढेला जिस पर उगने वाली सारी घास हम अपने साथ बहा ले गए हों। वही ध्वनियाँ जो मैंने सुनीं, उसके कानों तक भी पहुँच रही थीं और उसका ध्यान भटका रही थीं: सत्य के वे विवरण, चर्चा के विषय से असंबंधित, अपने आप में महत्वहीन, फिर भी चमत्कार को समझने के लिए और भी आवश्यक; पेरिस की किसी गली का वर्णन करने वाले शांत और मनमोहक तत्व, किसी अज्ञात उत्सव के हृदयविदारक और क्रूर तत्व भी, जिसने फ्रेड्रे से दूर जाने के बाद अल्बर्टीन को मेरे पास आने से रोक दिया था। "सबसे पहले तो मैं आपको चेतावनी देना चाहती हूँ कि मैं बिल्कुल नहीं चाहती कि आप आएँ, क्योंकि रात के इस समय यह बहुत बड़ी परेशानी होगी..." मैंने उससे कहा, "मुझे नींद आ रही है। इसके अलावा, खैर, बहुत सारी उलझनें हैं। मुझे कहना ही पड़ेगा कि मेरे पत्र को लेकर आपकी गलतफहमी की कोई गुंजाइश नहीं थी। आपने जवाब दिया था कि सब ठीक है। ठीक है, अगर आप नहीं समझीं, तो आपका क्या मतलब था?" "मैंने कहा था कि सब ठीक

है, बस मुझे ठीक से याद नहीं आ रहा था कि हमने क्या तय किया था। लेकिन मुझे लगता है कि आप मुझसे नाराज़ हैं, मुझे खेद है। काश मैं फ्रेड्रे न गई होती। अगर मुझे पता होता कि इस बारे में इतना हंगामा होगा..." वह बोलती रही, जैसा कि लोग अक्सर करते हैं जब एक बात में गलती होने पर वे दूसरी बात का दोष अपने ऊपर मढ़ लेते हैं। "मैं फ्रेड्रे को लेकर ज़रा भी नाराज़ नहीं हूँ, क्योंकि मैंने ही आपको वहाँ जाने के लिए कहा था।" "तो तुम मुझसे नाराज़ हो; इतनी देर हो गई है, ये तो झंझट है, वरना मैं तुम्हारे पास आ जाती, पर मैं कल या परसों आ जाऊंगी और बात पक्की कर लूंगी।" "ओह, अल्बर्टीन, मैं तुमसे विनती करती हूं कि ऐसा मत करो, मेरी पूरी शाम बर्बाद करने के बाद, कम से कम अगले कुछ दिनों के लिए मुझे चैन से रहने दो। मैं पखवाड़े भर या तीन हफ़्तों तक खाली नहीं रहूंगी। सुनो, अगर तुम्हें ये सोचकर बुरा लग रहा है कि हम गुस्से में अलग हो रहे हैं, और शायद तुम सही भी हो, तो मैं यही चाहूंगी कि तुम तुरंत आ जाओ, क्योंकि मैं इतने समय से तुम्हारा इंतज़ार कर रही हूं और तुम अभी तक घर नहीं गई हो। मैं एक कप कॉफ़ी पी लूंगी ताकि नींद न आए।" "क्या तुम इसे कल तक टाल नहीं सकतीं? क्योंकि दिक्कत ये है कि..." जब मैंने ये निंदा भरे शब्द सुने, मानो वो आने का इरादा ही न रखती हो, तो मुझे ऐसा लगा कि उस मखमली खिले चेहरे को फिर से देखने की तड़प के साथ, जो अतीत में बालबेक में मेरे जीवन के हर दिन को उस पल की ओर इशारा करता था जब सितंबर के बैंगनी समुद्र के किनारे मैं उस गुलाबी फूल के साथ चलूँगी, एक बिल्कुल अलग भावना दर्दनाक रूप से जुड़ने की कोशिश कर रही थी। किसी व्यक्ति की इस भयानक ज़रूरत को मैंने कॉम्ब्रे में अपनी माँ के मामले में जाना था, और उस हद तक कि अगर वो फ्रांस्वा के ज़रिए मुझे यह संदेश भेजती कि वो ऊपर नहीं आ सकती, तो मैं मर जाना चाहती थी। पुरानी भावना का यह प्रयास, दूसरे, नए, कामुक तत्व के साथ मिलकर एक नया रूप देने का, जिसका मोहक लक्ष्य केवल रंगीन सतह, समुद्र तट के फूल का गुलाबी रंग था, अक्सर केवल एक नए शरीर के निर्माण में परिणत होता है, जो कुछ ही क्षणों तक टिक सकता है। कम से कम आज शाम और उसके काफी बाद तक, ये दोनों तत्व अलग-अलग ही रहे। लेकिन टेलीफोन पर मुझे जो आखिरी शब्द मिले थे, उनसे ही मुझे यह समझ आने लगा था कि अल्बर्टीन का जीवन (भौतिक रूप से नहीं, बेशक) मेरे जीवन से इतनी दूरी पर स्थित था कि मुझे उस तक पहुँचने से पहले हमेशा एक कठिन खोज करनी पड़ेगी, और उससे भी बढ़कर,

यह एक मिट्टी के टीले की तरह व्यवस्थित था, और अधिक सुरक्षा के लिए, उस तरीके से व्यवस्थित था जिसे बाद में हमने छलावरण कहना सीखा। दरअसल, अल्बर्टीन सामाजिक रूप से थोड़े ऊंचे दर्जे की होने के बावजूद, उस वर्ग से ताल्लुक रखती थी, जिनके द्वारपाल ने आपके संदेशवाहक से वादा किया था कि वह अंदर आते ही आपका पत्र पहुंचा देगी (जब तक कि आपको यह एहसास न हो जाए कि वह वही है, जिससे आप बाहर मिले थे और जिसे आपने पत्र लिखने की अनुमति दी थी, जो वास्तव में एक निजी वेश्यालय का पता है, जहां द्वारपाल दलाल का काम करती है)। या फिर वह किसी ऐसे घर का पता देती है जहां उसके कुछ साथी उसे जानते हैं और उसका राज़ आपको नहीं बताएंगे, जहां से आपके पत्र उसे भेजे जाएंगे, लेकिन जहां वह रहती नहीं है और बस कुछ ही शौचालय का सामान रखती है। जीवन पांच या छह रक्षापंक्ति के पीछे इस कदर जमे होते हैं कि जब आप उस महिला को देखने या उसके बारे में जानने की कोशिश करते हैं, तो आप हमेशा या तो बहुत दाईं ओर या बाईं ओर, या बहुत जल्दी या बहुत देर से पहुँच जाते हैं, और महीनों, यहाँ तक कि वर्षों तक कुछ भी न जान पाने की स्थिति में रह जाते हैं। अल्बर्टीन के बारे में मुझे लगता था कि मैं कभी कुछ नहीं जान पाऊँगा, कि तथ्यों और झूठ के उस उलझे हुए जाल में से मैं कभी सच्चाई को उजागर नहीं कर पाऊँगा: और ऐसा हमेशा रहेगा, जब तक कि मैं उसे अंत तक कैद न कर दूँ (लेकिन कैदी तो भाग ही जाते हैं)। आज शाम, इस दृढ़ विश्वास ने मुझे केवल एक अस्पष्ट बेचैनी दी, जिसमें मुझे आने वाले लंबे समय तक कष्ट सहने की एक कंपकंपी भरी आशंका महसूस हुई। “नहीं,” मैंने जवाब दिया, “मैंने अभी थोड़ी देर पहले ही कहा था कि मैं अगले तीन हफ़्तों तक खाली नहीं रहूँगी—कल भी नहीं, किसी और दिन भी नहीं।” “ठीक है, तो फिर...मैं अभी इसी वक्त आ जाऊँगी...यह झंझट है, क्योंकि मैं एक दोस्त के घर पर हूँ, और वो...” मैंने देखा कि उसे यकीन नहीं था कि मैं उसके आने का प्रस्ताव मान लूँगी, इसलिए उसका प्रस्ताव सच्चा नहीं था, और मैंने उसे मजबूर करने का फैसला किया। “तुम्हें क्या लगता है कि मुझे तुम्हारी दोस्त की क्या परवाह है, आना या न आना, ये तुम्हारा फैसला है, मैंने तुम्हें आने के लिए नहीं कहा था, तुमने ही मुझे सुझाव दिया था।” “मुझसे नाराज़ मत होइए, मैं अभी टैक्सी में बैठ रही हूँ और दस मिनट में आपके पास पहुँच जाऊँगी।” और इस प्रकार उस पेरिस से, जिसकी धुंधली गहराइयों से, एक अनुपस्थित व्यक्ति के कार्यक्षेत्र को सीमित करते हुए, मेरे कमरे तक

एक आवाज़ आ चुकी थी, जो अब इस प्रारंभिक घोषणा के बाद उभरने और प्रकट होने वाली थी, वह अल्बर्टीन थी जिसे मैं बहुत पहले बालबेक के आकाश के नीचे जानता था, जब ग्रैंड होटल के वेटर मेजें लगाते समय डूबते सूरज की चमक से चकाचौंध हो रहे थे, जब सभी खिड़कियों से शीशे हटा दिए गए थे, शाम की हर हल्की सी भी फुसफुसाहट उस समुद्र तट से, जहाँ अभी भी टहलने वाले अंतिम जोड़े ठहरे हुए थे, उस विशाल भोजन कक्ष में, जहाँ पहले भोजन करने वाले अभी तक अपनी जगह नहीं ले पाए थे, स्वतंत्र रूप से गुजर रही थी, और कैशियर के डेस्क के पीछे रखे दर्पण के पार, पतवार का लाल प्रतिबिंब गुजर रहा था, और उसके बाद रिवेबेल के लिए अंतिम स्टीमर के धुएं का धूसर प्रतिबिंब लंबे समय तक मंडरा रहा था। मैंने अब खुद से यह सवाल नहीं किया कि अल्बर्टीन को देर क्यों हुई होगी, और जब फ्रांस्वा मेरे कमरे में आकर मुझे यह बताने आई: "मैडम अल्बर्टीन यहाँ हैं," तो अगर मैंने बिना सिर घुमाए ही जवाब दिया, तो यह केवल अपनी भावनाओं को छिपाने के लिए था: "आखिर मैडम अल्बर्टीन इतनी रात को क्यों आई हैं!" लेकिन फिर, फ्रांस्वा की ओर देखते हुए, मानो उत्सुकता से उसका जवाब सुनने के लिए, जो मेरे प्रश्न की स्पष्ट सत्यता की पुष्टि करेगा, मैंने प्रशंसा और क्रोध के साथ देखा कि निर्जीव वस्त्रों और चेहरे की रेखाओं को भी वाणी देने की कला में स्वयं बर्मा को टक्कर देने में सक्षम, फ्रांस्वा ने अपने चोली, अपने बालों को - जिनके सबसे सफेद रेशे सतह पर आ गए थे, एक जन्म प्रमाण पत्र की तरह प्रदर्शित हो रहे थे - थकान और आज्ञाकारिता से झुकी हुई उसकी गर्दन को - यही काम करना सिखा दिया था। उन्होंने अल्बर्टीन के प्रति सहानुभूति जताई कि आधी रात को, इतनी उम्र में, उसे नींद से और अपने गर्म बिस्तर से घसीटकर जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने पड़े, निमोनिया होने के खतरे के बावजूद। इसलिए, मुझे डर था कि कहीं मैं अल्बर्टीन के देर से आने के लिए माफी न माँग रही हूँ: "खैर, मुझे बहुत खुशी है कि वह आ गई है, मैं यही चाहती थी," और मैंने अपनी अपार खुशी का खुलकर इज़हार किया। मेरी खुशी ज़्यादा देर तक शांत नहीं रही, जब मैंने फ्रांस्वा का जवाब सुना। बिना एक शब्द भी शिकायत किए, मानो वह अपनी अनियंत्रित खांसी को दबाने की पूरी कोशिश कर रही हो, और ठंड लगने के बहाने अपने सीने पर शॉल लपेटे हुए, उसने मुझे वह सब कुछ बताना शुरू किया जो उसने अल्बर्टीन से कहा था, जिससे वह अपनी चाची के स्वास्थ्य के बारे में पूछना नहीं भूली थी। "मैं बस यही कह रही थी कि महोदय को ज़रूर डर

रहा होगा कि मैडमोजेल नहीं आ रही हैं, क्योंकि ये मिलने आने का समय नहीं है, लगभग सुबह हो चुकी है। लेकिन वो ज़रूर किसी ऐसी जगह पर रही होंगी जहाँ उन्हें मज़ा आ रहा होगा, क्योंकि उन्होंने ज़रा भी अफ़सोस नहीं जताया कि उन्होंने महोदय को इंतज़ार करवाया, उन्होंने मुझे बेपरवाही से जवाब दिया, 'देर से आना, पर आना तो है!'" और फ़्रांस्वा ने आगे कहा, ऐसे शब्दों में जो मेरे दिल को छू गए: "जब उन्होंने इस तरह बात की तो उन्होंने अपनी असलियत ज़ाहिर कर दी। शायद वो अपने मन की बात छुपाना चाहती होंगी, लेकिन..."
मुझे आश्चर्य का कोई कारण नहीं था। मैंने कुछ पन्ने पहले कहा था कि जब फ्रांस्वा को कोई संदेश देकर भेजा जाता था, तो वह शायद ही कभी ध्यान देती थी, भले ही वह खुद की कही बातों पर ध्यान न दे, जिन्हें वह खुशी-खुशी विस्तार से बताती थी, कम से कम उस उत्तर पर तो ज़रूर ध्यान देती थी जिसका हम इंतज़ार कर रहे थे। लेकिन अगर कभी, अपवाद स्वरूप, वह हमारे दोस्तों की कही बातें, चाहे वे कितनी भी संक्षिप्त क्यों न हों, हमें दोहराती थी, तो वह आम तौर पर ज़रूरत पड़ने पर, उन शब्दों के भाव और लहजे का इस्तेमाल करके, उन्हें किसी न किसी तरह से आहत करने की कोशिश करती थी। ज़रूरत पड़ने पर, वह उस अपमान (शायद पूरी तरह से काल्पनिक) के सामने भी सिर झुका लेती थी जो उसे उस व्यापारी से मिला था जिसके पास हमने उसे भेजा था, बशर्ते कि वह अपमान उसे हमारे प्रतिनिधि के रूप में संबोधित किया गया हो, जो हमारे नाम पर बोल रही थी, और इससे अप्रत्यक्ष रूप से हमें चोट पहुँच सकती हो। बस उसे यह बताना काफी होता कि उसने उस आदमी को गलत समझा है, वह उत्पीड़न के डर से पागल हो रही है और दुकानदार उसके खिलाफ बिल्कुल भी साजिश नहीं रच रहे हैं। हालांकि, उनकी भावनाओं का मुझ पर ज़रा भी असर नहीं हुआ। अल्बर्टीन की भावनाएँ बिल्कुल अलग थीं। और जैसे ही उसने व्यंग्यात्मक शब्दों को दोहराया: "देर से ही सही, लेकिन अच्छा है!" फ्रांस्वा ने मुझे तुरंत उन दोस्तों की याद दिला दी जिनके साथ अल्बर्टीन ने शाम बिताई थी, और इसलिए मेरी संगति को तरजीह दी थी। "वह एक हास्यास्पद दृश्य है, उसने एक छोटी सी चपटी टोपी पहन रखी है, उसकी बड़ी-बड़ी आँखों के साथ, वह वाकई मज़ेदार लगती है, खासकर उस लबादे के साथ जिसे उसे मरम्मत के लिए भेज देना चाहिए था, क्योंकि उसमें जगह-जगह छेद हैं। वह मुझे हंसाती है," फ्रांस्वा ने अल्बर्टीन पर हंसते हुए कहा, जो शायद ही कभी मेरे विचारों से सहमत होती थी, लेकिन अपने

विचार व्यक्त करना ज़रूरी समझ रही थी। मैंने यह दिखाने से भी इनकार कर दिया कि यह हंसी तिरस्कार का संकेत थी, लेकिन जैसे को तैसा जवाब देते हुए, हालांकि मैंने वह छोटी टोपी कभी नहीं देखी थी जिसका उसने ज़िक्र किया था: "जिसे तुम 'छोटी चपटी टोपी' कहती हो, वह तो बस एक प्यारी सी चीज़ है..." "कहना है, यह तो बिलकुल कुछ भी नहीं है," फ्रांस्वा ने इस बार खुलकर अपनी सच्ची अवहेलना ज़ाहिर करते हुए कहा। फिर (नरम और आरामदेह लहजे में, ताकि मेरा झूठा जवाब मेरे गुस्से की नहीं, बल्कि सच्चाई की अभिव्यक्ति लगे), अल्बर्टीन को इंतज़ार न कराते हुए, मैंने फ्रांस्वा पर ये कठोर शब्द बरसाए: "तुम बहुत अच्छी हो," मैंने मीठी आवाज़ में उससे कहा, "तुम दयालु हो, तुममें हज़ार गुण हैं, लेकिन जब से तुम पहली बार पेरिस आई हो, तुमने न तो महिलाओं के कपड़ों के बारे में कुछ सीखा है और न ही शब्दों का सही उच्चारण करने के बारे में।" और यह फटकार विशेष रूप से मूर्खतापूर्ण थी, क्योंकि जिन फ्रांसीसी शब्दों का सही उच्चारण करने पर हमें इतना गर्व है, वे स्वयं फ्रांसीसी लोगों की गलतियाँ हैं जिन्होंने लैटिन या सैक्सन का गलत उच्चारण किया था, हमारी भाषा तो बस कई अन्य भाषाओं के उच्चारण का बिगड़ा हुआ रूप है।

भाषा की जीवंत प्रतिभा, फ्रांसीसी भाषा का भविष्य और अतीत, यही वो बात थी जिसने मुझे फ्रांस्वा की गलतियों में दिलचस्पी लेनी चाहिए थी। 'mender' की जगह उसका 'amender' लिखना उतना अजीब नहीं था जितना कि व्हेल या जिराफ जैसे प्राचीन काल से जीवित रहने वाले जानवर, जो हमें पशु जीवन के विभिन्न चरणों को दिखाते हैं। "और," मैंने आगे कहा, "चूंकि तुम इतने सालों में सीख नहीं पाई हो, तो कभी सीखोगी भी नहीं। लेकिन इससे परेशान मत हो, इससे तुम्हें एक अच्छी आत्मा होने और मसालेदार गोमांस को जेली के साथ उत्तम रूप से बनाने और कई अन्य चीजें बनाने से कोई नहीं रोक सकता। जिस टोपी को तुम इतना साधारण समझती हो, वह प्रिंसेस डी गुएरमांटेस की टोपी की नकल है, जिसकी कीमत पाँच सौ फ्रैंक थी। हालांकि, मैं मैडम अल्बर्टीन को बहुत जल्द इससे भी बेहतर टोपी देने वाला हूँ।" मैं जानता था कि फ्रांस्वा को सबसे ज्यादा इस बात से गुस्सा आएगा कि मैं उन लोगों पर पैसे खर्च कर रहा हूँ जिन्हें वह नापसंद करती है। उसने मुझे कुछ शब्दों में उत्तर दिया, जो अचानक सांस फूलने के कारण लगभग समझ से बाहर हो गए थे। बाद में जब मुझे पता चला कि उसका दिल कमजोर है, तो मुझे कितना पछतावा हुआ कि मैंने कभी भी उसके भाषणों

का जवाब देने के इस तीखे और निरर्थक आनंद से खुद को वंचित नहीं किया। इसके अलावा, फ्रांस्वा अल्बर्टीन से नफरत करती थी, क्योंकि गरीब होने के कारण अल्बर्टीन मेरी उस श्रेष्ठ स्थिति को और मजबूत नहीं कर सकती थी जिसे फ्रांस्वा बेहतर मानती थी। जब भी मुझे श्रीमती डी विलेपारिसिस द्वारा आमंत्रित किया जाता था, वह दयालुता से मुस्कुराती थी। दूसरी ओर, वह इस बात से नाराज थी कि अल्बर्टीन बदले में कुछ नहीं देती थी। मुझे ऐसे काल्पनिक उपहार गढ़ने पड़े जो उसने मुझे दिए थे, जिन पर फ्रांस्वा ने कभी एक पल के लिए भी विश्वास नहीं किया। खाने के मामले में बदले में कुछ न देने की यह कमी उसे सबसे ज्यादा चौंकाती थी। जब हमें श्रीमती डी विलेपारिसिस के यहाँ आमंत्रित नहीं किया जाता था, तब भी अल्बर्टीन का माँ के यहाँ भोजन स्वीकार करना उसे बहुत बुरा लगता था। बोंटेम्प्स (जो वैसे तो अपना आधा समय पेरिस से बाहर ही बिताती थीं, उनके पति पुराने दिनों की तरह 'पद' स्वीकार करते थे जब वे मंत्रालय से तंग आ जाते थे) को मेरी दोस्त की ओर से यह एक अभद्रता लगी, जिसका उन्होंने कॉम्ब्रे में प्रचलित एक कहावत को दोहराकर अप्रत्यक्ष रूप से खंडन किया:
"चलो मेरी रोटी खाओ।"
"वाह, यही तो चाहिए था।"
"चलो तुम्हारी रोटी खाते हैं।"
"मैंने बहुत किया।"
मैंने बहाना बनाया कि मुझे पत्र लिखना ही है। "तुम किसे लिख रही हो?" अल्बर्टीन ने कमरे में आते ही मुझसे पूछा। "मेरी एक प्यारी सी दोस्त, गिल्बर्ट स्वान को। क्या तुम उसे नहीं जानती?" "नहीं।" मैंने अल्बर्टीन से यह न पूछने का फैसला किया कि उसने शाम कैसे बिताई, मुझे लगा कि मैं केवल उसकी कमियाँ ही निकालूँगी और इतनी देर हो जाने के कारण हमारे पास इतना समय नहीं बचेगा कि हम आपस में सुलह करके चुंबन और दुलार तक पहुँच सकें। और इसलिए मैंने पहले ही पल से इन्हीं से शुरुआत करने का फैसला किया। इसके अलावा, अगर मैं थोड़ी शांत भी होती, तो भी मैं खुश नहीं होती। प्रतीक्षा करते समय जो दिशाहीनता और भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती है, वह प्रतीक्षित व्यक्ति के आने के बाद भी बनी रहती है, और हमारे भीतर उस शांत मन की जगह ले लेती है जिसमें हम उसके आने को एक बड़ी खुशी के रूप में देख रहे थे, और हमें उससे कोई आनंद नहीं मिलने देती। अल्बर्टीन

कमरे में थी: मेरी बेचैन नसें, जो अब भी फड़फड़ा रही थीं, अब भी उसका इंतजार कर रही थीं। "मुझे एक प्यारी सी चुंबन चाहिए, अल्बर्टीन।" "जितनी चाहो," उसने बड़े ही प्यार से मुझसे कहा। मैंने उसे इतना सुंदर पहले कभी नहीं देखा था। "एक और?" "अरे, तुम्हें पता है, यह मेरे लिए बहुत बड़ी खुशी है।" "और मेरे लिए तो हज़ार गुना ज़्यादा," उसने जवाब दिया। "ओह! तुम्हारा किताब का कवर कितना सुंदर है!" "इसे ले लो, मैं इसे तुम्हें यादगार के तौर पर देती हूँ।" "आप बहुत दयालु हैं..." अगर लोग अपनी प्रेमिका के बारे में सोचते हुए यह ठान लें कि जब वे उससे प्यार करना छोड़ देंगे, तो वे वैसे ही इंसान बनेंगे जैसे वे उस समय होंगे, तो वे हमेशा के लिए रोमांटिकता से मुक्त हो जाएँगे। गिल्बर्ट की किताब का कवर, उसका अगेट मार्बल, अतीत में शायद किसी आंतरिक विशिष्टता के कारण ही महत्वपूर्ण रहे होंगे, क्योंकि अब वे मेरे लिए एक किताब का कवर, किसी भी दूसरे मार्बल की तरह ही थे।

मैंने अल्बर्टीन से पूछा कि क्या वह कुछ पीना चाहेगी। उसने कहा, "मुझे वहाँ संतरे और पानी दिख रहे हैं। यह बिल्कुल ठीक रहेगा।" इस तरह मैं उसके चुंबनों के साथ उस ताज़गी भरी ठंडक का स्वाद चख सका, जो मुझे प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के यहाँ मिली ठंडक से कहीं बेहतर लगी थी। और जैसे-जैसे मैं पानी पीता गया, पानी में निचोड़ा हुआ संतरा मुझे अपने पकने के गुप्त जीवन, उस मानव शरीर की कुछ अवस्थाओं पर उसके लाभकारी प्रभाव, उस शरीर को जीवित रखने में उसकी असमर्थता, लेकिन दूसरी ओर उस सिंचाई प्रक्रिया का एहसास कराता हुआ प्रतीत हुआ, जिसके द्वारा वह उसे लाभ पहुँचाने में सक्षम था। फल ने मेरी इंद्रियों से सौ रहस्य छुपा रखे थे, लेकिन मेरी बुद्धि से नहीं।

जब अल्बर्टीन चली गई, तो मुझे याद आया कि मैंने स्वान से वादा किया था कि मैं गिल्बर्ट को पत्र लिखूंगा, और मुझे लगा कि शिष्टाचार के नाते मुझे ऐसा तुरंत करना चाहिए। बिना किसी भावना के, मानो किसी उबाऊ स्कूली निबंध के अंत में एक रेखा खींच रहा हो, मैंने लिफाफे पर गिल्बर्ट स्वान का नाम लिखा, जिससे मैं कभी अपनी अभ्यास पुस्तिकाओं को ढककर खुद को यह भ्रम देता था कि मैं उससे पत्र व्यवहार कर रहा हूं। क्योंकि अगर पहले यह नाम मैंने लिखा होता, तो अब यह काम हैबिट ने अपने कई सचिवों में से एक को सौंप दिया था। वह गिल्बर्ट का नाम और भी शांत भाव से लिख सका, क्योंकि हैबिट ने उसे हाल ही में मेरे पास रखा था, वह अभी-अभी मेरी सेवा में आया था, इसलिए वह गिल्बर्ट को जानता नहीं था, और

शब्दों को कोई वास्तविकता दिए बिना, केवल इतना जानता था क्योंकि उसने मुझे उसके बारे में बात करते सुना था, कि वह एक लड़की थी जिससे मुझे कभी प्यार था।
मैं उस पर कठोरता का आरोप नहीं लगा सकती थी। उसके साथ मेरा जो रिश्ता था, वह इस बात का सबसे स्पष्ट प्रमाण था कि वह स्वयं कैसी थी: किताब का आवरण, अगेट मार्बल मेरे लिए अल्बर्टीन के संबंध में वही बन गए थे जो गिल्बर्ट के लिए थे, और जो किसी भी ऐसे व्यक्ति के लिए होते जिसने उनमें आंतरिक लौ की चमक न डाली होती। लेकिन अब मुझे एक नई बेचैनी महसूस हुई जिसने बदले में वस्तुओं और शब्दों की वास्तविक शक्ति को नष्ट कर दिया। और जब अल्बर्टीन ने कृतज्ञता के एक और आवेग में मुझसे कहा: "मुझे फ़िरोज़ा बहुत पसंद हैं!" तो मैंने उसे उत्तर दिया: "इन्हें मरने मत दो," जैसे किसी अनमोल रत्न को हमारी दोस्ती का भविष्य सौंपते हुए, जो कि अल्बर्टीन में कोई भावना जगाने में उतनी ही असमर्थ थी जितनी कि अतीत में मुझे गिल्बर्ट से जोड़ने वाली भावना को बनाए रखने में।
इसी समय एक ऐसी घटना घटी जिसका उल्लेख करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि यह इतिहास के हर महत्वपूर्ण कालखंड में दोहराई जाती है। ठीक उसी समय जब मैं गिल्बर्ट को लिख रहा था, एम. डी गुएरमांटेस, जो अभी-अभी अपने बॉल से लौटे थे और अभी भी अपना हेलमेट पहने हुए थे, सोच रहे थे कि अगले दिन उन्हें औपचारिक शोक में जाना होगा, और उन्होंने आदेशित उपचार के लिए एक सप्ताह पहले ही जाने का निर्णय लिया। तीन सप्ताह बाद जब वह वहाँ से लौटे (थोड़ी देर के लिए, क्योंकि मैं अभी भी गिल्बर्ट को अपना पत्र पूरा कर रहा हूँ), तो ड्यूक के वे मित्र, जिन्होंने उन्हें शुरुआत में इतना उदासीन देखा था, अचानक एक उग्र ड्रेफसार्ड-विरोधी में बदलते हुए देखा था, यह सुनकर अचंभित रह गए कि उन्होंने (जैसे कि इलाज का असर केवल उनके मूत्राशय तक ही सीमित न रहा हो) जवाब दिया: "ओह, ठीक है, एक नया मुकदमा चलेगा और वह बरी हो जाएगा; आप किसी को बिना किसी सबूत के सज़ा नहीं दे सकते। क्या आपने कभी फोर्शेविल जैसा कोई पागल देखा है? एक अधिकारी, फ्रांसीसी लोगों को बर्बादी की ओर ले जा रहा है, सीधे युद्ध की ओर। हम अजीब समय में जी रहे हैं।" दरअसल, इस बीच ड्यूक स्पा में तीन आकर्षक महिलाओं (एक इतालवी राजकुमारी और उनकी दो भाभी) से मिले थे। उनकी पढ़ी जा रही किताबों और कैसिनो में चल रहे एक नाटक के बारे में कुछ टिप्पणियाँ सुनकर ड्यूक तुरंत समझ गए कि वे उन

महिलाओं से मिल रहे हैं जो उनसे कहीं अधिक बुद्धिमान हैं, और जैसा कि उन्होंने कहा, वे पहले ही दौर में उन्हें हरा देंगी। राजकुमारी द्वारा ब्रिज खेलने के लिए आमंत्रित किए जाने पर वे और भी प्रसन्न हुए। लेकिन जैसे ही वे राजकुमारी के बैठक कक्ष में दाखिल हुए और अपने कट्टर ड्रेफस-विरोधी रवैये के जोश में कहने लगे, "खैर, हम अब प्रसिद्ध ड्रेफस और उनकी लोकप्रियता के बारे में ज्यादा नहीं सुनते हैं," तभी राजकुमारी और उनकी भाभी को यह कहते हुए सुनकर वे दंग रह गए: "यह बात हर दिन और भी पक्की होती जा रही है। वे किसी ऐसे व्यक्ति को जेल में नहीं रख सकते जिसने कुछ भी गलत नहीं किया हो।" "क्या? क्या?" ड्यूक पहले तो चौंक गए, मानो उन्हें इस परिवार में उस व्यक्ति का मज़ाक उड़ाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक अजीब उपनाम पता चला हो जिसे वे हमेशा बुद्धिमान मानते थे। लेकिन कुछ दिनों बाद, जैसे कायरता और नकल की भावना से प्रेरित होकर हम बिना सोचे-समझे किसी महान कलाकार को 'हैलो, जोजोत्ते' कहकर पुकारते हैं, जिसे घर के बाकी लोग इसी तरह संबोधित करते हैं, ड्यूक, जो इस रवैये की नवीनता से अभी भी बहुत शर्मिंदा था, फिर भी कहने लगा: "आखिरकार, अगर उसके खिलाफ कोई सबूत नहीं है तो क्या होगा?" तीनों आकर्षक महिलाओं ने तय किया कि वह तेजी से प्रगति नहीं कर रहा है और उसे धमकाने लगीं: "लेकिन सच में, थोड़ी सी भी बुद्धि वाला कोई भी व्यक्ति एक पल के लिए भी यह विश्वास नहीं कर सकता था कि कुछ भी था।" जब भी ड्रेफस के खिलाफ कोई ऐसी बात सामने आती जो उसे 'दोषी' साबित करती, और ड्यूक, यह सोचकर कि अब वह तीनों आकर्षक महिलाओं को अपनी ओर आकर्षित कर लेगा, उन्हें बताने आता, तो वे जोर से हंस पड़तीं और बड़ी चतुराई से उसे यह साबित कर देतीं कि उसका तर्क बेकार और बिल्कुल बेतुका है। ड्यूक एक उन्मादी ड्रेफस समर्थक बनकर पेरिस लौट आया था। और निश्चित रूप से हम यह नहीं कह रहे हैं कि इस मामले में तीनों आकर्षक महिलाएं सत्य की संदेशवाहक नहीं थीं। लेकिन यह ध्यान देने योग्य है कि लगभग हर दस साल में, जब हम किसी ऐसे व्यक्ति को छोड़ते हैं जो किसी दृढ़ विश्वास से ओतप्रोत होता है, तो ऐसा होता है कि कोई बुद्धिमान दंपत्ति या कोई आकर्षक महिला उसके संपर्क में आती है और कुछ महीनों बाद वह विपरीत खेमे में शामिल हो जाता है। और इस मामले में ऐसे कई देश हैं जो उस सच्चे व्यक्ति की तरह व्यवहार करते

हैं, ऐसे कई देश हैं जिन्हें हमने दूसरी नस्ल के प्रति घृणा से भरा हुआ छोड़ा है, और जो छह महीने बाद अपना रवैया बदल लेते हैं और अपने सभी गठबंधन तोड़ देते हैं।
मैंने कुछ समय के लिए अल्बर्टीन से मिलना बंद कर दिया, लेकिन श्रीमती डी गुएरमांटेस से न मिल पाने के कारण, जो अब मेरी कल्पना में कोई भाव नहीं रखती थीं, मैं अन्य परियों और उनके निवासों का दौरा करता रहा, जो स्वयं से उतने ही अविभाज्य थे जितना कि उस घोंघे से जिसने इसे बनाया है और जिसके भीतर मोतीनुमा या तामचीनी वाल्व या कंगूरेदार बुर्ज स्थित है। मैं इन देवियों को वर्गीकृत नहीं कर पाता, कठिनाई यह थी कि समस्या इतनी अस्पष्ट थी कि न केवल हल करना बल्कि उसे परिभाषित करना भी असंभव था। उस महिला तक पहुँचने से पहले, पहले परी महल तक पहुँचना पड़ता था। अब, चूंकि गर्मियों के महीनों में दोपहर के भोजन के बाद उनमें से एक हमेशा घर पर होती थी, इसलिए उसके घर पहुँचने से पहले ही मुझे अपनी कैब का हुड बंद करना पड़ा, क्योंकि सूरज की किरणें इतनी चिलचिलाती थीं, जिसकी याद, बिना मुझे एहसास हुए, मेरे समग्र अनुभव में समा गई। मुझे लगा कि मैं केवल कोर्स-ला-रीन जा रहा हूँ; वास्तव में, उस सभा में पहुँचने से पहले, जिसे शायद अधिक अनुभवी व्यक्ति तुच्छ समझता, मुझे ऐसा आनंद मिला मानो मैं इटली की यात्रा पर हूँ। यह आनंदमय अनुभूति मेरे मन से कभी नहीं हटी, और वह घर मेरी स्मृति में हमेशा के लिए बस गया। इतना ही नहीं, मौसम की गर्मी और समय को देखते हुए, उस महिला ने भूतल पर बने विशाल आयताकार कमरों के शटर कसकर बंद कर रखे थे, जहाँ वह अपने मित्रों का मनोरंजन करती थी। पहले तो मुझे अपनी मेज़बान और उसके मेहमानों को पहचानने में कठिनाई हुई, यहाँ तक कि डचेस डी गुएरमांटेस को भी, जिन्होंने अपनी कर्कश आवाज़ में मुझे अपने पास बैठने के लिए कहा, एक बोवेस आर्मचेयर पर, जिस पर यूरोपा के बलात्कार का चित्रण था। फिर मुझे दीवारों पर अठारहवीं शताब्दी की विशाल टेपेस्ट्री दिखाई देने लगीं, जिन पर जहाजों को दर्शाया गया था जिनके मस्तूल खिले हुए हॉलीहॉक थे। उनके नीचे मैं ऐसे बैठा था मानो सीन नदी के महल में नहीं, बल्कि नेपच्यून के महल में, ओशनस नदी के किनारे पर, जहाँ डचेस डी गुएरमांटेस जल की देवी जैसी लग रही थीं। अगर मैं ड्राइंग रूम के सभी प्रकारों का वर्णन करने लगूँ तो कभी रुक ही नहीं पाऊँगा। यह उदाहरण यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि मैंने अपने सामाजिक निर्णयों में काव्यात्मक भावों को शामिल कर लिया था,

जिन्हें मैंने अंतिम आकलन करते समय कभी ध्यान में नहीं रखा, इसलिए ड्राइंग रूम के महत्व का आकलन करते समय मेरा कुल योग कभी सही नहीं होता था।

निश्चित रूप से, ये त्रुटि के एकमात्र स्रोत नहीं थे, लेकिन बालबेक के लिए प्रस्थान करने से पहले (जहाँ मुझे खेद है कि मैं दूसरी बार ठहरूँगा और यह मेरा अंतिम प्रवास भी होगा) मेरे पास समाज के चित्रों की एक श्रृंखला शुरू करने का समय नहीं है, जिन्हें उचित समय पर स्थान मिलेगा। मुझे यहाँ केवल इतना कहना है कि गिलबर्ट को लिखे मेरे पत्र और स्वान परिवार के साथ उस सुलह के लिए, जिसका संकेत पत्र दे रहा था, ओडेट ने भी उतनी ही त्रुटिपूर्ण ढंग से एक और त्रुटिपूर्ण कारण जोड़ा होगा (मेरा अपेक्षाकृत तुच्छ जीवन, जिसके कारण लोग यह मानते थे कि मुझे समाज से लगाव है)। मैंने अब तक सामाजिक जगत के विभिन्न पहलुओं को केवल इस कल्पना के आधार पर प्रस्तुत किया है कि यदि कोई महिला, जो कुछ दिन पहले तक किसी से परिचित नहीं थी, अब हर जगह जाती है, और दूसरी, जो एक प्रभावशाली पद पर थी, समाज से बहिष्कृत हो जाती है, तो इन परिवर्तनों को केवल भाग्य के उन व्यक्तिगत उतार-चढ़ावों के रूप में देखा जा सकता है जो समय-समय पर समाज के किसी विशेष वर्ग में, शेयर बाजार में अटकलों के परिणामस्वरूप, घोर पतन या लालच की कल्पना से परे धन-संपत्ति लाते हैं। लेकिन इसमें इससे कहीं अधिक है। कुछ हद तक सामाजिक अभिव्यक्तियाँ (कलात्मक आंदोलनों, राजनीतिक संकटों, सार्वजनिक रुचि के विकास की तुलना में कहीं कम महत्वपूर्ण, जो विचारों के रंगमंच, फिर प्रभाववादी चित्रकला, फिर जटिल जर्मन संगीत, फिर सरल रूसी संगीत, या सामाजिक सेवा, न्याय, धार्मिक प्रतिक्रिया, देशभक्ति के उद्गारों जैसे विचारों की ओर ले जाती हैं) फिर भी उनकी प्रतिध्वनि हैं, दूरस्थ, खंडित, अनिश्चित, अशांत, परिवर्तनशील। इसलिए, ड्राइंग रूम को भी उस स्थिर गतिहीनता में चित्रित नहीं किया जा सकता है जिसका उपयोग अब तक चरित्रों के अध्ययन के लिए परंपरागत रूप से किया जाता रहा है, हालांकि इन्हें भी लगभग एक ऐतिहासिक प्रवाह में आगे बढ़ना चाहिए। नवीनता की प्यास, जो बौद्धिक विकास के बारे में जानकारी प्राप्त करने के इच्छुक दुनिया के लोगों को उन मंडलों में जाने के लिए प्रेरित करती है जहाँ वे इसके विकास का पता लगा सकते हैं, उन्हें आमतौर पर किसी ऐसी अनजानी मेज़बान को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित करती है जो अभी भी अपनी ताजगी में उस श्रेष्ठ संस्कृति की

आशाओं का प्रतिनिधित्व करती है जो उन महिलाओं में फीकी और धूमिल हो गई है जिन्होंने लंबे समय तक सामाजिक सत्ता संभाली है और जिनके पास इन पुरुषों से कोई रहस्य नहीं है, इसलिए वे अब उनकी कल्पना को आकर्षित नहीं करती हैं। और प्रत्येक युग स्वयं को इस प्रकार नई महिलाओं में, महिलाओं के एक नए समूह में व्यक्त पाता है, जो उस समय रुचि के नवीनतम विषय का बारीकी से पालन करते हुए, अपने पहनावे में, उस क्षण अपनी पहली सार्वजनिक उपस्थिति दर्ज कराती हुई प्रतीत होती हैं, जैसे कि अंतिम प्रलय से जन्मी एक अज्ञात प्रजाति, प्रत्येक नए वाणिज्य दूतावास, प्रत्येक नए निदेशालय की अप्रतिरोध्य सुंदरियाँ। लेकिन अक्सर नई मेज़बान कुछ ऐसे राजनेताओं की तरह होती है जो शायद पहली बार पद पर हों, लेकिन पिछले चालीस वर्षों से हर दरवाजे पर दस्तक दे रहे हों, लेकिन कोई दरवाजा खुला न देखकर, ऐसी महिलाएं जो समाज में जानी-मानी न हों, फिर भी वर्षों से, और इससे बेहतर कुछ न मिलने पर, समाज के कुछ 'चुने हुए मित्रों' का स्वागत करती रही हों। बेशक, ऐसा हमेशा नहीं होता, और जब रूसी बैले के अद्भुत विकास के साथ, एक के बाद एक बक्स्त, निजिंस्की, बेनोइस्ट, स्ट्राविंस्की की प्रतिभा सामने आई, तो इन सभी नए महान पुरुषों की युवा संरक्षक राजकुमारी योरबेलेटिफ अपने सिर पर एक विशाल, कांपते हुए बगुले को लिए हुए प्रकट हुईं, जो पेरिस की महिलाओं के लिए अज्ञात था, जिसकी वे सभी नकल करना चाहती थीं, तब कोई यह मान सकता था कि इस अद्भुत प्राणी को रूसी नर्तकों द्वारा उनके असंख्य सामानों में, और उनके सबसे अनमोल खजाने के रूप में आयात किया गया था; लेकिन जब हम अभी, उनके बगल में, उनके स्टेज बॉक्स में, 'रशियन्स' के हर प्रदर्शन में, एक सच्ची परी की तरह बैठी, अभिजात वर्ग के लिए उस क्षण तक अज्ञात, श्रीमती वर्दुरिन को देखते हैं, तो हम समाज के उन लोगों को बता पाएंगे जो स्वाभाविक रूप से मानते थे कि श्रीमती वर्दुरिन हाल ही में डियागिलेफ की मंडली के साथ देश में आई थीं, कि यह महिला पहले भी कई युगों में अस्तित्व में रह चुकी हैं, और विभिन्न अवतारों से गुज़री हैं, जिनमें से यह केवल इसलिए उल्लेखनीय है कि यह पहला अवतार है जो अंततः, निश्चित रूप से, और तेज़ी से, उस सफलता को प्राप्त कर रहा है जिसका मालकिन लंबे समय से इंतज़ार कर रही थीं। श्रीमती स्वान के मामले में, यह सच है कि उनके द्वारा प्रस्तुत नवीनता का सामूहिक स्वरूप वैसा नहीं था। उनका ड्राइंग रूम एक ऐसे व्यक्ति के इर्द-गिर्द केंद्रित था, एक मरते हुए व्यक्ति

के, जो अपनी प्रतिभा के समाप्त होने के क्षण में, लगभग पल भर में गुमनामी से यश की चमक में पहुँच गया था। बर्गोट की रचनाओं के प्रति जुनून असीम था। वह सारा दिन मैडम स्वान के यहाँ दिखावे के लिए बिताता था, जो किसी प्रभावशाली व्यक्ति से फुसफुसाकर कहती थीं: "मैं उससे एक बात कह दूँगी, वह तुम्हारे लिए एक लेख लिख देगा।" वास्तव में, वह ऐसा करने में पूरी तरह सक्षम था और मैडम स्वान के लिए एक छोटा नाटक भी लिख सकता था। मृत्यु के करीब पहुँचकर भी वह उतना कमजोर नहीं था जितना उस समय था जब वह मेरी दादी का हालचाल पूछने आता था। इसका कारण यह था कि तीव्र शारीरिक पीड़ा ने उस पर एक नियम लागू कर दिया था। बीमारी वह डॉक्टर है जिसकी हम सबसे अधिक परवाह करते हैं: दया और ज्ञान के प्रति हम केवल वादे करते हैं; दर्द का हम पालन करते हैं।

यह सच है कि उस समय वर्दुरिन परिवार और उनके छोटे से कबीले का हित, श्रीमती स्वान के ड्राइंग रूम की तुलना में कहीं अधिक महत्वपूर्ण था, जो कुछ हद तक राष्ट्रवादी, अधिक स्पष्ट रूप से साहित्यिक और सर्वोत्कृष्ट रूप से बर्गोटिक शैली का था। वास्तव में, यह छोटा सा कबीला एक लंबे राजनीतिक संकट का सक्रिय केंद्र था, जो अपने चरम पर पहुँच चुका था: ड्रेफ़सवाद। लेकिन समाज के अधिकांश लोग इस अपील के इतने उग्र विरोधी थे कि उनके लिए एक ड्रेफ़सवादी घर उतना ही अकल्पनीय प्रतीत होता था जितना कि पहले के समय में एक कम्यूनार्ड घर। प्रिंसेसा डि कैप्रारोला, जिन्होंने श्रीमती स्वान को... वर्दुरिन की मुलाकात एक बड़ी प्रदर्शनी के सिलसिले में हुई थी, जिसे उन्होंने खुद आयोजित किया था। दरअसल, उनका मकसद उनसे लंबी मुलाकात करना था, इस उम्मीद में कि वे उस छोटे से परिवार के कुछ दिलचस्प सदस्यों को अपने साथ शामिल कर लेंगी और उन्हें अपने ड्राइंग रूम में जगह देंगी। इस मुलाकात के दौरान राजकुमारी (जो डचेस डी गुएरमांटेस का छोटा रूप थीं) ने प्रचलित विचारों का विरोध किया और कहा कि उनकी दुनिया के लोग मूर्ख हैं। श्रीमती वर्दुरिन ने सोचा कि यह सब बड़ी हिम्मत की बात है। लेकिन बाद में यह हिम्मत इतनी नहीं थी कि वे राष्ट्रवादी महिलाओं की तीखी निगाहों के बीच बालबेक रेस में श्रीमती वर्दुरिन के सामने झुकने का साहस दिखा सकें। दूसरी ओर, श्रीमती स्वान के मामले में, ड्रेफस विरोधी लोगों ने उन्हें 'समझदार' बताया, जो एक यहूदी से विवाहित महिला के लिए दुगनी प्रशंसा की बात थी। फिर भी, जो लोग कभी उनके घर नहीं गए थे, वे उन्हें केवल कुछ गुमनाम इजरायली और बर्गोट के

शिष्यों द्वारा ही आने वाली महिला मानते थे। इस तरह हम श्रीमती स्वान से कहीं अधिक उत्कृष्ट महिलाओं को सामाजिक सीढ़ी के सबसे निचले पायदान पर रख देते हैं, चाहे इसका कारण उनकी पृष्ठभूमि हो, या इसलिए कि वे उन रात्रिभोज और समारोहों की परवाह नहीं करतीं जिनमें हम उन्हें कभी नहीं देखते, और हम गलत तरीके से यह मान लेते हैं कि ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्हें आमंत्रित नहीं किया गया था, या इसलिए कि वे अपने सामाजिक संबंधों के बारे में कभी बात नहीं करतीं, बल्कि केवल साहित्य और कला की बात करती हैं, या इसलिए कि लोग इस तथ्य को छिपाते हैं कि वे उनके घरों में जाती हैं, या वे अन्य लोगों के प्रति असभ्यता से बचने के लिए इस तथ्य को छिपाती हैं कि वे इन लोगों के लिए अपने दरवाजे खोलती हैं, संक्षेप में, हजारों कारणों से, जो सब मिलकर, उनमें से किसी एक को कुछ लोगों की नजरों में उस तरह की महिला बना देते हैं जिसे कोई नहीं जानता। ओडेट के साथ भी ऐसा ही था। श्रीमती डी'एपिनॉय, 'पैट्री फ्रांसेज़' के लिए चंदा इकट्ठा करने में व्यस्त थीं, और उन्हें अपनी दर्जी के पास जाने की तरह ही उनसे मिलने जाना पड़ा था। उन्हें पूरा विश्वास था कि उन्हें वहाँ केवल कुछ ऐसे चेहरे मिलेंगे जो न केवल असंभव बल्कि पूरी तरह से अपरिचित होंगे। लेकिन जब दरवाजा खुला तो वह जमीन पर जड़वत खड़ी रह गईं, क्योंकि दरवाजा उनके कल्पना किए गए ड्राइंग-रूम में नहीं बल्कि एक जादुई हॉल में खुला, जिसमें, मानो किसी मूक अभिनय के रूपांतरण दृश्य में, उन्होंने चकाचौंध भरे समूह में, सोफे पर आधे लेटे हुए, आरामकुर्सियों पर बैठे हुए, अपनी मेज़बान को उनके ईसाई नाम से संबोधित करते हुए, शाही परिवार की महिलाओं, डचेस को पहचाना, जिन्हें राजकुमारी डी'एपिनॉय को अपने ड्राइंग-रूम में लाने में बहुत कठिनाई हुई थी, और जिन्हें उस समय, ओडेट की दयालु निगाहों के नीचे, मार्किस डू लाउ, कॉम्टे लुई डी ट्यूरेन, प्रिंस बोर्गेस, ड्यूक डी'एस्ट्रेस, संतरे का रस और केक लिए हुए, कपधारक और सहायक के रूप में सेवा कर रहे थे। राजकुमारी डी एपिनॉय, जो सहज रूप से लोगों के सामाजिक मूल्य को उनमें निहित मानती थीं, श्रीमती स्वान को निराकार रूप में प्रस्तुत करने और उन्हें एक फैशनेबल महिला के रूप में पुनर्जीवित करने के लिए बाध्य थीं। समाचार पत्रों में प्रचार न करने वाली महिलाओं के वास्तविक जीवन के प्रति हमारी अज्ञानता कुछ स्थितियों पर रहस्य का पर्दा डाल देती है (जिससे एक घर दूसरे से अलग करने में मदद मिलती है)। ओडेट के मामले में, शुरुआत में, उच्च समाज के कुछ

पुरुष, बर्गोट से मिलने के लिए उत्सुक होकर, चुपचाप उनके घर भोजन करने गए थे। ओडेट ने हाल ही में यह चतुराई सीखी थी कि वे उनकी उपस्थिति का प्रचार न करें। जब वे वहाँ पहुँचे, तो उन्हें शायद उस छोटे समूह की याद आई, जिसकी परंपराओं को ओडेट ने विभाजन के बावजूद संरक्षित रखा था, उनके लिए मेज पर जगह रखी गई थी, इत्यादि। ओडेट उन्हें और बर्गोट (जिनका इन भ्रमणों ने संयोगवश अंत कर दिया) को कुछ दिलचस्प पहली रातों में ले गईं। उन्होंने अपने ही समाज की विभिन्न महिलाओं से, जो इस तरह की नवीनता में रुचि रखने में सक्षम थीं, ओडेट के बारे में बात की। इन महिलाओं को पूरा विश्वास था कि बर्गोट की घनिष्ठ मित्र ओडेट ने उनके कार्यों में कमोबेश सहयोग किया था, और वे उन्हें फाउबर्ग की सबसे उत्कृष्ट महिलाओं की तुलना में हज़ार गुना अधिक बुद्धिमान मानती थीं। यही कारण था कि उन्होंने अपनी सारी राजनीतिक आस्था एम. डूमर और एम. डेसचनेल जैसे दक्षिणपंथी रिपब्लिकन नेताओं पर टिका दी थी, जबकि उनका मानना था कि यदि फ्रांस का भाग्य उन राजशाही पुरुषों के हाथों में सौंप दिया जाए जो उनके साथ भोजन करने के आदी थे, जैसे कि चारेट या डूडौविल, तो फ्रांस का विनाश निश्चित है। ओडेट की स्थिति में यह परिवर्तन, जहाँ तक उसका संबंध था, इस तरह से विवेकपूर्ण ढंग से किया गया कि यह अधिक सुरक्षित और तीव्र हो गया, लेकिन जनता तक किसी भी प्रकार का संदेह नहीं पहुँचा, जो किसी भी परिवार की उन्नति या पतन के प्रमाण के लिए गॉलॉइस के सामाजिक स्तंभों का सहारा लेने के लिए प्रवृत्त रहती है। परिणामस्वरूप, एक दिन, एक चैरिटी के लिए आयोजित सबसे प्रतिष्ठित थिएटरों में से एक में बर्गोट के एक नाटक के रिहर्सल के दौरान, वास्तव में नाटकीय क्षण तब आया जब लोगों ने लेखक के लिए आरक्षित बॉक्स में प्रवेश करते हुए और मैडम स्वान, मैडम डी मार्सेंट्स और उनके बगल में बैठते हुए देखा, जो डचेस डी गुएरमांटेस (प्रसिद्धि से तृप्त होकर और आगे बढ़ने की परेशानी से बचने के लिए सेवानिवृत्त होकर) के धीरे-धीरे आत्म-विलुप्त होने के कारण, शेरनी, युग की रानी, कोम्टेस मोले बनने की राह पर थी। जब लोगों ने कोम्टेस मोल को ओडेट के बक्से में प्रवेश करते देखा, तो उन्होंने कहा, "हमने कभी सोचा भी नहीं था कि उसने चढ़ना शुरू कर दिया होगा, और देखो, वह सीढ़ी के शीर्ष पर पहुंच गई है।" ताकि श्रीमती स्वान को यह लगे कि मैं उनकी बेटी के साथ दोबारा संबंध बनाने का कारण उनका घमंड था।

अपने शानदार अंगरक्षकों के बावजूद, ओडेट नाटक को बड़े ध्यान से सुन रही थी, मानो वह केवल इसे देखने के लिए ही आई हो, ठीक वैसे ही जैसे पहले वह अपनी सेहत के लिए व्यायाम के तौर पर बोइस (जंगल) पर टहलने जाया करती थी। जो पुरुष पहले उसमें कम रुचि दिखाते थे, वे भी पूरी ऑडियंस को डिस्टर्ब करते हुए, उसके हाथ को छूने और उसके चारों ओर बने भव्य घेरे के करीब आने के लिए बॉक्स के किनारे तक आ गए। व्यंग्य से भी अधिक मैत्रीपूर्ण मुस्कान के साथ, उसने धैर्यपूर्वक उनके सवालों का जवाब दिया, उम्मीद से कहीं अधिक शांत भाव से, एक ऐसी शांति जो शायद सच्ची थी, क्योंकि यह प्रदर्शन केवल एक आदत बन चुकी और गुप्त रूप से छिपी हुई घनिष्ठता का देर से प्रकट होना था। इन तीन महिलाओं के पीछे, जिन पर सबकी निगाहें टिकी थीं, बर्गोट, प्रिंस डी'एग्रीजेंट, कॉम्टे लुई डी ट्यूरेन और मार्क्विस डी ब्रेओटे बैठे थे। और यह समझना आसान है कि, उन पुरुषों के लिए जिनका हर जगह स्वागत होता था और जो मौलिक शोध के पुरस्कार के अलावा किसी और उन्नति की उम्मीद नहीं कर सकते थे, अपनी योग्यता का यह प्रदर्शन, जिसे वे एक ऐसी मेज़बान के सामने आत्मसमर्पण करने में कर रहे थे, जिसकी बौद्धिकता की गहरी प्रतिष्ठा थी और जिसके घर में वे उस समय के सभी नाटककारों और उपन्यासकारों से मिलने की उम्मीद करते थे, प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के घर की उन शामों की तुलना में कहीं अधिक रोमांचक और जीवंत था, जो बिना किसी कार्यक्रम परिवर्तन या नए आकर्षण के, साल दर साल चलती आ रही थीं, कमोबेश वैसी ही जैसी हमने इतने विस्तार से वर्णित की है। उस उच्च कोटि के गुएरमांटेस के क्षेत्र में, जिसमें लोगों की रुचि कम होने लगी थी, नवीनतम बौद्धिक रुझान उनके अनुरूप बनाए गए मनोरंजनों में साकार नहीं होते थे, जैसे कि वे रेखाचित्र जो बर्गोट मैडम स्वान के लिए लिखा करते थे, या सार्वजनिक सुरक्षा की वे सकारात्मक समितियाँ (यदि समाज ड्रेफस मामले में रुचि लेने में सक्षम होता) जिनमें, मैडम के घर में, वर्दुरिन का ड्राइंग रूम, जिसका उपयोग पिक्कार्ट, क्लेमेंसो, ज़ोला, रीनाच और लेबोरी को एक साथ लाने के लिए किया जाता था।

गिलबर्ट ने भी अपनी माँ की स्थिति को मजबूत करने में मदद की, क्योंकि स्वान के एक चाचा ने लड़की के लिए लगभग चौबीस मिलियन फ़्रैंक छोड़े थे, जिसका मतलब था कि फ़ॉबूर्ग सेंट-जर्मेन उस पर ध्यान देने लगा था। सिक्के का दूसरा पहलू यह था कि स्वान (जो हालांकि

मरणासन्न थे) ड्रेफ़ुसार्ड विचारधारा रखते थे, हालांकि वास्तव में इससे उनकी पत्नी को कोई नुकसान नहीं हुआ, बल्कि यह उनके लिए फायदेमंद साबित हुआ। इससे उन्हें नुकसान इसलिए नहीं हुआ क्योंकि लोग कहते थे: "वह सनकी है, उसका दिमाग पूरी तरह से खराब हो गया है, कोई उस पर ध्यान नहीं देता, उसकी पत्नी ही उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण है और वह आकर्षक है।" लेकिन स्वान का ड्रेफ़ुसवाद भी ओडेट के लिए उपयोगी था। अगर उसे अकेला छोड़ दिया जाता, तो वह शायद फैशनेबल महिलाओं के साथ संबंध बनाने की कोशिश करती, जो उसके लिए विनाशकारी साबित होता। जबकि जिन शामों को वह अपने पति को फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में भोजन के लिए ले जाती थी, स्वान अपने कोने में उदास बैठा रहता था और अगर वह ओडेट को किसी राष्ट्रवादी महिला से परिचय कराने की कोशिश करते देखता, तो वह ज़ोर से चिल्लाने में ज़रा भी संकोच नहीं करता था: "सच में, ओडेट, तुम पागल हो गई हो। तुम अपने आप को क्यों नहीं संभाल सकती? यहूदी-विरोधियों से परिचय कराना तुम्हारी मूर्खता है, मैं तुम्हें मना करता हूँ।" समाज में जिन लोगों के पीछे हर कोई भागता फिरता है, वे न तो ऐसे घमंड के आदी होते हैं और न ही ऐसे बदतमीज़ी के। पहली बार उन्होंने किसी ऐसे व्यक्ति को देखा जो खुद को उनसे 'श्रेष्ठ' समझता था। स्वान की बड़बड़ाहट दूर-दूर तक फैल गई और ओडेट पर ताश के पत्तों की बौछार होने लगी। जब वह श्रीमती डी'अर्पाजोन से मिलने आई, तो एक दोस्ताना जिज्ञासा भरी हलचल हुई। श्रीमती डी'अर्पाजोन ने कहा, "आपको बुरा नहीं लगा कि मैंने आपका उससे परिचय कराया।" “वह बहुत अच्छी हैं। मुझे उनके बारे में मैरी डी मार्सैंट्स ने बताया था।” “नहीं, बिलकुल नहीं, मैंने सुना है कि वह बहुत ही बुद्धिमान और आकर्षक हैं। मैं उनसे मिलने के लिए तरस रही थी; कृपया मुझे बताइए कि वह कहाँ रहती हैं।” श्रीमती डी अर्पाजोन ने श्रीमती स्वान को बताया कि पिछली शाम उन्होंने उनके घर पर खूब आनंद लिया और श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे को छोड़कर खुशी-खुशी उनके साथ चली गईं। और यह सच भी था, क्योंकि श्रीमती स्वान को प्राथमिकता देना बुद्धिमत्ता का प्रमाण था, जैसे चाय पार्टियों के बजाय संगीत कार्यक्रमों में जाना। लेकिन जब श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे और ओडेट एक ही समय पर श्रीमती डी अर्पाजोन के घर आईं, तो चूंकि श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे बहुत ही संभ्रांत थीं और श्रीमती डी अर्पाजोन, हालांकि उन्होंने उनका औपचारिक स्वागत नहीं किया, लेकिन उनके निमंत्रणों का सम्मान करती थीं, इसलिए उन्होंने ओडेट का परिचय नहीं

कराया, ताकि श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे को पता न चले कि वह कौन हैं। मार्क्विज़ ने सोचा कि यह कोई राजकुमारी होगी जो कहीं जाती ही नहीं होगी, क्योंकि उसने उसे पहले कभी नहीं देखा था। उसने ओडेट की बातों का अप्रत्यक्ष रूप से जवाब देते हुए अपनी पुकार को लंबा खींच दिया, लेकिन श्रीमती डी'अर्पाजोन अपनी बात पर अड़ी रहीं। और जब श्रीमती सेंट-यूवर्टे ने हार मानकर विदा ली, तो उनकी मेज़बान ने ओडेट से कहा, "मैंने तुम्हारा परिचय इसलिए नहीं कराया क्योंकि लोग उसकी पार्टियों में जाना पसंद नहीं करते और वह हमेशा किसी न किसी पार्टी का आयोजन करती रहती है; तुम उसके बारे में सुनना कभी बंद नहीं करोगी।" ओडेट ने थोड़ी निराशा के साथ कहा, "ओह, ठीक है।" लेकिन उसके मन में यह विचार बना रहा कि लोग श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे की पार्टी में जाना पसंद नहीं करते, जो कुछ हद तक सच भी था, और उसने निष्कर्ष निकाला कि समाज में उसकी स्थिति श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे से कहीं बेहतर है, हालांकि वह महिला बहुत ऊंचे पद पर थी, और ओडेट की अभी तक कोई स्थिति नहीं थी।

इससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ा, और यद्यपि श्रीमती डी गुएरमांटेस की सभी सहेलियाँ श्रीमती डी अर्पाजोन की भी सहेलियाँ थीं, जब भी बाद वाली श्रीमती स्वान को आमंत्रित करतीं, ओडेट संकोच भरे लहजे में कहतीं: "मैं श्रीमती डी अर्पाजोन के घर जा रही हूँ; मुझे पता है आप मुझे बहुत पुराने ख्यालों वाली समझेंगी, लेकिन मुझे श्रीमती डी गुएरमांटेस के लिए जाना अच्छा नहीं लगता" (जिनसे संयोगवश, वह कभी मिली भी नहीं थीं)। प्रतिष्ठित पुरुषों का मानना था कि श्रीमती स्वान का समाज में शायद ही किसी को जानना यह दर्शाता है कि वह एक श्रेष्ठ महिला होंगी, संभवतः एक महान संगीतकार, और उनके घर जाना एक तरह का अतिरिक्त सम्मान होगा, जैसे किसी ड्यूक के लिए विज्ञान में डॉक्टरेट होना। पूरी तरह से नासमझ महिलाएं ओडेट की ओर बिल्कुल विपरीत कारण से आकर्षित थीं; यह सुनकर कि वह कोलोन के संगीत कार्यक्रमों में भाग लेती थी और खुद को वैगनरियन मानती थी, उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि वह 'काफी चंचल' होगी और उससे मिलने के विचार से वे बहुत उत्साहित हो गए। लेकिन, चूंकि वे खुद भी बहुत अच्छी तरह से स्थापित नहीं थे, इसलिए उन्हें डर था कि अगर वे ओडेट के साथ दोस्ताना व्यवहार करते हुए दिखाई दिए तो सार्वजनिक रूप से उनकी छवि खराब हो जाएगी, और अगर किसी चैरिटी संगीत कार्यक्रम में उनकी

नज़र मैडम स्वान पर पड़ी तो वे अपना सिर दूसरी तरफ मोड़ लेंगे, क्योंकि वे मैडम डी रोशेचौआर्ट के सामने झुकना असंभव समझते थे, क्योंकि वह महिला बेयरुथ जा चुकी थी, जिसका मतलब था कि वह किसी भी बात से पीछे नहीं हटेगी। हर कोई दूसरे के घर में प्रवेश करने पर बदल जाता है। परियों के महलों में, मैडम स्वान में इस तरह हुए अद्भुत कायापलट की तो बात ही क्या! स्वान के ड्राइंग रूम में, एम. डी ब्रेउटे, अपने आसपास के लोगों की अनुपस्थिति से अचानक महत्वपूर्ण हो गए, उनके वहाँ होने पर उनमें एक संतुष्टि का भाव था, मानो वे किसी पार्टी में जाने के बजाय चश्मा लगाकर अपने अध्ययन कक्ष में बंद होकर रेव्यू डेस ड्यूक्स मोंडेस पढ़ रहे हों। ओडेट से मिलने आने में वे जो रहस्यमयी अनुष्ठान कर रहे थे, उससे एम. डी ब्रेउटे स्वयं एक अलग ही व्यक्ति प्रतीत हो रहे थे। मैं यह देखने के लिए कुछ भी देने को तैयार था कि इस नए वातावरण में डचेस डी मोंटमोरेंसी-लक्ज़मबर्ग में क्या परिवर्तन आएंगे। लेकिन वह उन लोगों में से थीं जिन्हें ओडेट से मिलने के लिए कभी राजी नहीं किया जा सका। श्रीमती डी मोंटमोरेंसी, जो ओरियन के प्रति ओरियन की तुलना में कहीं अधिक दयालु थीं, ने श्रीमती के बारे में कुछ कहकर मुझे बहुत आश्चर्यचकित किया। डी गुएरमांटेस: "वह कुछ बहुत ही चतुर लोगों को जानती है, हर कोई उसे पसंद करता है, मेरा मानना है कि अगर उसका दिमाग थोड़ा और समझदार होता, तो वह एक सैलून खोलने में सफल हो जाती। असल में, उसने कभी इस बारे में परवाह नहीं की, वह बिल्कुल सही है, वह जैसी है वैसी ही बहुत अच्छी स्थिति में है, हर कोई उसके पीछे भागता रहता है।" अगर श्रीमती डी गुएरमांटेस का कोई 'सैलून' नहीं होता, तो भला 'सैलून' क्या होता? इस भाषण ने मुझे जिस स्तब्ध कर दिया, वह उससे कहीं अधिक नहीं था जितना मैंने श्रीमती डी गुएरमांटेस को तब किया जब मैंने उनसे कहा कि मैं श्रीमती डी मोंटमोरेंसी के यहाँ आमंत्रित होना चाहूँगा। ओरियान उसे एक बूढ़ी मूर्ख समझती थी। "मैं वहाँ जाती हूँ," उसने कहा, "क्योंकि मुझे मजबूर किया जाता है, वह मेरी चाची है, लेकिन तुम! उसे तो यह भी नहीं पता कि अच्छे लोगों को अपने घर कैसे बुलाया जाए।" डी गुएरमांटेस को यह एहसास नहीं था कि अच्छे लोग मुझे प्रभावित नहीं करते, कि जब वह मुझसे अर्पाजोन के ड्राइंग रूम के बारे में बात करती थी तो मुझे एक पीली तितली दिखाई देती थी, और स्वान के ड्राइंग रूम (श्रीमती स्वान सर्दियों के महीनों में शाम 6 से 7 बजे के बीच घर पर रहती थीं) में मुझे एक काली तितली दिखाई देती थी, जिसके पंख

बर्फ से ढके होते थे। यहाँ तक कि यह आखिरी ड्राइंग रूम, जो बिल्कुल भी 'सैलून' नहीं था, वह अपने लिए वर्जित मानती थी, लेकिन मेरे लिए स्वीकार्य मानती थी, क्योंकि वहाँ 'प्रतिभाशाली लोग' मौजूद होते थे। लेकिन श्रीमती डी लक्ज़मबर्ग! अगर मैंने पहले से ही कुछ ऐसा बनाया होता जिसने ध्यान आकर्षित किया होता, तो वह यह निष्कर्ष निकालतीं कि प्रतिभा के साथ-साथ दिखावटीपन भी हो सकता है। लेकिन मैंने उनके भ्रम को अंतिम रूप दिया; मैंने उनसे स्वीकार किया कि मैं श्रीमती डी मोंटमोरेंसी के यहाँ (जैसा कि उन्होंने सोचा था) 'नोट्स लेने' और 'अध्ययन करने' नहीं गया था। इस संदर्भ में डी गुएरमांटेस उन सामाजिक उपन्यासकारों से ज़्यादा गलत नहीं थे जो किसी अभिमानी या कथित अभिमानी के कार्यों का निर्मम विश्लेषण तो करते हैं, लेकिन कभी खुद को उसकी जगह पर नहीं रखते, उस क्षण में जब उनकी कल्पना में एक पूरा सामाजिक वसंत खिल रहा होता है। मैं स्वयं, जब यह जानने की कोशिश कर रहा था कि मुझे श्रीमती डी मोंटमोरेंसी के घर जाने में इतना आनंद क्यों मिलता था, तो मैं थोड़ा आश्चर्यचकित रह गया। वह फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में एक पुराने महल में रहती थीं, जो कई छोटे-छोटे बगीचों से अलग किए गए मंडपों में बंटा हुआ था। बाहरी हॉल में फाल्कनेट द्वारा बनाई गई एक छोटी सी मूर्ति थी, जो एक झरने का प्रतिनिधित्व करती थी, जिससे सचमुच निरंतर नमी निकलती रहती थी। थोड़ा आगे द्वारपाल, जिसकी आँखें हमेशा लाल रहती थीं, चाहे दुख से हों या तंत्रिका संबंधी विकार से, सिरदर्द से हों या सर्दी से, कभी आपके सवालों का जवाब नहीं देती थी, बस अपना हाथ अस्पष्ट रूप से हिलाकर यह संकेत देती थी कि डचेस घर पर हैं, और अपनी पलकों से एक-दो बूँदें फॉरगेट-मी-नॉट फूलों से भरे कटोरे में गिरा देती थी। उस छोटी मूर्ति को देखकर मुझे जो आनंद आया, क्योंकि वह मुझे कॉम्ब्रे के बगीचों में से एक में खड़ी प्लास्टर की बनी 'छोटे माली' की याद दिला रही थी, वह उस विशाल सीढ़ी को देखकर मिलने वाले आनंद के आगे कुछ भी नहीं था। वह सीढ़ी नम और गूंजती हुई थी, प्रतिध्वनियों से भरी हुई थी, ठीक वैसे ही जैसे कुछ पुराने जमाने के स्नानघरों की सीढ़ियाँ होती हैं। प्रवेश कक्ष में नीले रंग के फूलों से भरे गुलदस्ते रखे थे, और सबसे बढ़कर घंटी की झंकार थी, जो बिल्कुल यूलाली के कमरे की घंटी जैसी थी। इस झंकार ने मेरे उत्साह को चरम पर पहुंचा दिया, लेकिन मुझे लगा कि यह इतनी मामूली बात है कि मैं

इसे श्रीमती डी मोंटमोरेंसी को समझा नहीं पाऊंगा। नतीजा यह हुआ कि वह मुझे हमेशा एक ऐसी आनंदित अवस्था में देखती थीं जिसका कारण वह कभी समझ नहीं पाती थीं।

हृदय के विराम

बालबेक में मेरा दूसरा आगमन पहले से बिल्कुल अलग था। प्रबंधक स्वयं मुझसे पोंट-ए-कूलेउवर में मिलने आए थे और उन्होंने फिर से दोहराया कि वे अपने प्रतिष्ठित मेहमानों का कितना सम्मान करते हैं। इससे मुझे डर लगा कि कहीं उन्होंने मुझे भी कोई विशेष दर्जा तो नहीं दे दिया, लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि व्याकरण की दृष्टि से उनकी अस्पष्ट स्मृति में, titré का मतलब केवल attitré या मान्यता प्राप्त था। वास्तव में, जितनी अधिक नई भाषाएँ वे सीखते थे, उतनी ही बुरी तरह वे बाकी भाषाएँ बोल पाते थे। उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने मुझे होटल के सबसे ऊंचे दर्जे पर रखा है। “मुझे उम्मीद है,” उन्होंने कहा, “कि आप इसे अभद्रता नहीं समझेंगे। मुझे आपको ऐसा कमरा देने का खेद है जिसके आप लायक नहीं हैं, लेकिन मैंने ऐसा शोर के कारण किया, क्योंकि उस कमरे में आपके सिर के ऊपर कोई नहीं होगा जो आपके कान के पर्दे (टिम्पेनम) को परेशान करे। चिंता मत कीजिए, मैं खिड़कियाँ बंद करवा दूँगा ताकि वे ज़ोर से न बजें। इस मामले में मैं बिल्कुल सख्त हूँ” (अंतिम शब्द उनके अपने विचार को व्यक्त नहीं करता, जो यह था कि वे इस मामले में हमेशा कठोर ही रहेंगे, बल्कि संभवतः उनके अधीनस्थों के विचारों को व्यक्त करता है)। जैसा कि बाद में पता चला, कमरे वही थे जो हमारे पास पहले थे। वे कोई मामूली नहीं थे, लेकिन प्रबंधक की नज़र में मेरा सम्मान बढ़ गया था। मैं चाहूँ तो आग जला सकता था (क्योंकि डॉक्टरों के आदेशानुसार मैं ईस्टर पर पेरिस छोड़ चुका था), लेकिन उन्हें डर था कि छत में कुछ फँसा हुआ हो सकता है। "हमेशा ध्यान रखें कि आग जलाने से पहले पिछली आग के पूरी तरह बुझ जाने तक प्रतीक्षा करें।" "महत्वपूर्ण बात यह है कि चिमनी में आग लगने से बचें, खासकर इसलिए कि माहौल को थोड़ा खुशनुमा बनाने के लिए मैंने मेंटलपीस पर एक पुराना चीनी मिट्टी का बर्तन रखा है जिसका बीमा कराया जा सकता है।"

उन्होंने मुझे बड़े दुख के साथ चेरबर्ग बार के नेता के निधन की सूचना दी। उन्होंने कहा, "वह एक पुराने वफादार थे" (संभवतः उनका अर्थ 'अभियानकर्ता' था) और मुझे बताया कि उनके जीवन की तेज़ी से, या कहें कि अचानक हुई क्षणिक मृत्यु ने उनके अंत को शीघ्र कर दिया।

"कुछ समय से मैंने देखा था कि भोजन के बाद वह वाचनालय में झपकी लेते थे" (शायद झपकी लेते थे)। "आखिरी बार, वह इतने बदल गए थे कि अगर आप उन्हें पहचान न पाते, तो उन्हें देखकर पहचानना मुश्किल था" (संभवतः, पहचानना मुश्किल था)।

एक सुखद मुआवज़ा: केन के मुख्य मजिस्ट्रेट को अभी-अभी लीजन ऑफ ऑनर के कमांडर के रूप में उनका बैज मिला था। "सचमुच, उनमें क्षमता तो है, लेकिन लगता है कि उन्हें यह मुख्य रूप से उनकी सामान्य 'कमजोरी' के कारण दिया गया है।" संयोग से, इस सम्मान का उल्लेख पिछले दिन के 'इको डे पेरिस' में था, जिसका प्रबंधक अभी तक केवल 'पहला पैराग्राफ' ही पढ़ पाया था। अखबार ने एम. कैलाक्स की नीति का बहुत अच्छे से विश्लेषण किया था। "मुझे लगता है, वे बिल्कुल सही हैं," उन्होंने कहा। "वह हमें जर्मनी के इशारों पर बहुत ज्यादा झुका रहे हैं।" होटल मालिक के साथ इस तरह के विषय पर चर्चा मुझे उबाऊ लग रही थी, इसलिए मैंने सुनना बंद कर दिया। मैंने उन दृश्यों के बारे में सोचा जिन्होंने मुझे बालबेक लौटने का फैसला करने के लिए प्रेरित किया था। वे पहले के दृश्यों से बहुत अलग थे, जिस दृष्टि की तलाश में मैं आया था वह उतनी ही स्पष्ट थी जितनी पहले की धुंधली थी; फिर भी वे भ्रामक साबित हुए। स्मृति द्वारा चुनी गई छवियाँ उतनी ही मनमानी, उतनी ही संकीर्ण और उतनी ही अमूर्त होती हैं जितनी कि कल्पना द्वारा निर्मित और वास्तविकता द्वारा नष्ट की गई छवियाँ। कोई कारण नहीं है कि हमारे बाहर विद्यमान एक वास्तविक स्थान हमारे सपनों की छवियों के बजाय हमारी स्मृति में मौजूद छवियों के अनुरूप हो। और इसके अलावा, एक नई वास्तविकता शायद हमें उन इच्छाओं को भुला दे, यहाँ तक कि उनसे घृणा भी करवा दे, जिन्होंने हमें हमारी यात्रा पर प्रेरित किया था।

बालबेक जाने के मेरे इरादे का कुछ अंश इस खोज से उपजा कि वर्दुरिन परिवार (जिनके निमंत्रणों को मैं हमेशा ठुकराता रहा था, और जो मुझे देखकर बहुत प्रसन्न होते अगर मैं पेरिस में उनसे न मिल पाने की क्षमा मांगते हुए उनसे गाँव में मिलने जाता), यह जानते हुए कि उनके कई श्रद्धालु छुट्टियाँ तट के उस हिस्से में बिता रहे होंगे, और इसी कारण से उन्होंने पूरे मौसम के लिए एम. डी कैम्ब्रेमर के घरों में से एक (ला रास्पेलियर) को किराए पर लिया था, श्रीमती पुटबस को अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित किया था। जिस शाम मुझे यह बात पता चली (पेरिस में), मैं पूरी तरह आपा खो बैठा और अपने युवा नौकर को यह पता लगाने के लिए

भेजा कि क्या वह महिला अपनी अबीगैल को अपने साथ बालबेक ले जा रही है। ग्यारह बज रहे थे। उनके दरबान को सामने का दरवाजा खोलने में बहुत देर लगी, और आश्चर्य की बात यह है कि उसने मेरे संदेशवाहक को भगाया नहीं, पुलिस को नहीं बुलाया, बल्कि उसे थोड़ी डांट लगाई, और साथ ही मुझे वह जानकारी भी दे दी जो मैं चाहता था। उन्होंने कहा कि मुख्य महिला की नौकरानी सचमुच अपनी मालकिन के साथ सबसे पहले जर्मनी के समुद्र तट पर, फिर बियारित्ज़ और सीज़न के अंत में श्रीमती वर्दुरिन के यहाँ जाएगी। उस क्षण से मेरा मन शांत हो गया और इस अवसर के मिलने से मैं प्रसन्न था। मैं गलियों में घूमने-फिरने से बच गया था, जहाँ मुझे उन सुंदरियों से परिचय कराने का कोई ज़रिया नहीं था जिनसे मैं मिलता था, जबकि 'जियोर्जियोन' से मिलने का ज़रिया मुझे उसी शाम वर्दुरिन के यहाँ उसकी मालकिन के साथ भोजन करने के कारण मिल गया था। इसके अलावा, शायद वह मेरे बारे में और भी अच्छी राय बनाएगी जब उसे पता चलेगा कि मैं न केवल ला रास्पेलियर के मध्यम वर्गीय किरायेदारों को जानता हूँ, बल्कि उसके मालिकों को भी, और विशेष रूप से सेंट-लूप को, जो नौकरानी (जो उन्हें नाम से नहीं जानती थी) से मेरी व्यक्तिगत रूप से सिफारिश करने में असमर्थ होने के कारण, कैम्ब्रेमर्स को मेरे बारे में एक उत्साहपूर्ण पत्र लिखा था। उनका मानना था कि वे मुझे जो भी सेवाएँ दे सकते हैं, उनके अलावा, श्रीमती वर्दुरिन... लेग्रैंडिन की बहू, डी कैम्ब्रेमर, अपनी बातचीत से मुझे बहुत आकर्षित करती थीं। उन्होंने मुझे आश्वस्त करते हुए कहा था, "वह एक बुद्धिमान महिला हैं। वह कोई भी बात अंतिम रूप से नहीं कहतीं" (रॉबर्ट के लिए, 'अंतिम' शब्द उदात्त बातों का स्थान ले चुका था, जो हर पांच-छह साल में अपने कुछ पसंदीदा भावों को थोड़ा बदल देते थे, जबकि अधिक महत्वपूर्ण बातों को अपरिवर्तित रखते थे), "लेकिन उनका स्वभाव रोचक है, उनमें व्यक्तित्व है, अंतर्ज्ञान है; उनके पास हर बात के लिए सही शब्द होता है। कभी-कभी वह परेशान कर देती हैं, जानबूझकर मूर्खतापूर्ण बातें कहती हैं, ताकि वह होशियार दिखें, जो और भी हास्यास्पद है क्योंकि कैम्ब्रेमर परिवार से कम होशियार कोई नहीं हो सकता। वह हमेशा चर्चा में नहीं रहतीं, लेकिन कुल मिलाकर, वह उन लोगों में से एक हैं जिनसे बात करना लगभग संभव है।"

रॉबर्ट का परिचय पत्र पहुंचते ही कैम्ब्रेमर परिवार ने, चाहे सेंट-लूप को अप्रत्यक्ष रूप से ही सही, उपकार करने की उत्सुकता से प्रेरित होकर, या डोनसिएरेस में उनके एक भतीजे के

लिए सेंट-लूप द्वारा किए गए कार्य के प्रति कृतज्ञता से, या (संभवतः) दयालु हृदय और आतिथ्य सत्कार की परंपराओं से प्रेरित होकर, मुझे अपने साथ ठहरने के लिए लंबे-लंबे पत्र लिखे, और यदि मैं अधिक स्वतंत्र रहना पसंद करता, तो मेरे लिए आवास की व्यवस्था करने की पेशकश की। जब सेंट-लूप ने बताया कि मुझे बालबेक के ग्रैंड होटल में ठहरना चाहिए, तो उन्होंने जवाब दिया कि कम से कम वे मेरे पहुंचते ही मुझसे मिलने की उम्मीद करेंगे और यदि मैं नहीं आया, तो वे मुझे ढूंढने और अपने बगीचे की पार्टियों में आमंत्रित करने के लिए अवश्य आएंगे।

इसमें कोई संदेह नहीं कि श्रीमती पुटबस की नौकरानी और बालबेक के आसपास के ग्रामीण इलाकों के बीच कोई मूलभूत संबंध नहीं था; वह मेरे लिए उस किसान लड़की जैसी नहीं थी, जिसे मैं मेसेग्लिस मार्ग पर अकेले भटकते हुए, अपनी पूरी इच्छाशक्ति के साथ अक्सर व्यर्थ ही याद करने की कोशिश करता था।

लेकिन मैंने किसी स्त्री से उसकी अनभिज्ञता का सार निकालने की कोशिश करना बहुत पहले ही छोड़ दिया था, जिसका रहस्य महज परिचय से ही सुलझ जाता था। खैर, बालबेक में, जहाँ मैं बहुत समय से नहीं गया था, मुझे यह लाभ था कि उस स्थान और उस विशेष स्त्री के बीच जो आवश्यक संबंध नहीं था, उसके अभाव में मेरी वास्तविकता की भावना परिचितता से नष्ट नहीं होगी, जैसा कि पेरिस में होता था, जहाँ चाहे मैं अपने घर में रहूँ या किसी ऐसे शयनकक्ष में जिसे मैं पहले से जानता था, किसी स्त्री के साथ आनंद लेने से मुझे रोजमर्रा के परिवेश में एक पल के लिए भी यह भ्रम नहीं होता था कि यह मेरे लिए एक नए जीवन का द्वार खोल रहा है। (क्योंकि यदि आदत हमारी दूसरी प्रकृति बन जाती है, तो यह हमें हमारी मूल प्रकृति को जानने से रोकती है, जिसकी क्रूरता और आकर्षण दोनों ही इसमें अनुपस्थित होते हैं।) अब यह भ्रम शायद मुझे किसी अजनबी जगह पर महसूस हो सकता था, जहाँ सूरज की एक किरण से संवेदनशीलता फिर से जागृत हो जाती, और जहाँ मेरी चाहत उस महिला की दासी के कारण चरम पर पहुँच जाती जिसे मैं चाहता था: हम घटनाक्रम में देखेंगे कि न केवल वह महिला बालबेक नहीं आई, बल्कि मुझे उसके आने की संभावना से इतना डर लगता था कि मेरे अभियान का मुख्य उद्देश्य न तो प्राप्त हुआ और न ही पूरा हुआ। यह सच था कि श्रीमती पुटबस मौसम की शुरुआत में ही वर्दुरिन के यहाँ नहीं आने वाली थीं; लेकिन ये सुख जिन्हें

हमने पहले से चुन लिया है, दूर के हो सकते हैं, यदि उनका आना सुनिश्चित हो, और यदि प्रतीक्षा के अंतराल में, हम प्रेम करने में असमर्थ होते हुए, आकर्षण की तलाश में समय बिता सकें। इसके अलावा, मैं पहले की तरह व्यावहारिक मानसिकता के साथ बालबेक नहीं जा रहा था; शुद्ध कल्पना में स्मरण की तुलना में अहंकार हमेशा कम होता है; और मैं जानता था कि मैं खुद को उन्हीं जगहों में से एक में पाऊंगा जहाँ सुंदर अजनबी सबसे अधिक संख्या में होते हैं; एक समुद्र तट उन्हें उतनी ही संख्या में प्रस्तुत करता है जितनी कि एक बॉलरूम, और मैं होटल के बाहर, सामने की ओर, उसी आनंद के साथ टहलने के लिए उत्सुक था जैसा कि श्रीमती डी गुएरमांटेस मुझे दिलातीं यदि उन्होंने मुझे शानदार डिनर पार्टियों में आमंत्रित करने के बजाय, नृत्य प्रस्तुत करने वाली महिलाओं के लिए मेरे नाम को उनके पार्टनर की सूची में अधिक बार शामिल किया होता। बालबेक में महिला परिचित बनाना अब मेरे लिए उतना ही आसान होगा जितना पहले कठिन था, क्योंकि अब मेरे पास वहाँ उतने ही मित्र और संसाधन थे जितने पिछली यात्रा में मेरे पास नहीं थे।

मैं अपने विचारों से प्रबंधक की आवाज़ से जागा, जिसकी राजनीतिक बातों पर मेरा ध्यान नहीं था। विषय बदलते हुए, उसने मुझे बताया कि मुख्य मजिस्ट्रेट मेरे आने की खबर सुनकर कितने प्रसन्न हुए हैं और वे उसी शाम मेरे कमरे में मुझसे मिलने आ रहे हैं। इस मुलाकात के विचार से मैं इतना घबरा गया (क्योंकि मुझे थकान महसूस होने लगी थी) कि मैंने उनसे इसे रोकने की विनती की (जिसका उन्होंने वादा किया और एहतियात के तौर पर, पहली रात मेरे बरामदे पर अपने कर्मचारियों को पहरा देने के लिए तैनात करने को कहा)। वह अपने कर्मचारियों को ज़्यादा पसंद नहीं करते थे। "मुझे हर समय उनके पीछे भागना पड़ता है क्योंकि उनमें आलस्य की कमी है। अगर मैं वहाँ न होता तो वे कभी हिलते-डुलते ही नहीं। मैं लिफ्ट-बॉय को आपके दरवाजे के बाहर पहरा देने के लिए तैनात कर दूँगा।" मैंने उनसे पूछा कि क्या वह लड़का अभी 'मुख्य पृष्ठ' बन गया है। उत्तर था, "वह अभी उस पद के लिए योग्य नहीं है।" "उसके साथी उससे उम्र में बड़े हैं। इससे हंगामा मच जाएगा। हमें हर चीज़ में बारीकी से काम लेना होगा। मैं मानता हूँ कि लिफ्ट के दरवाज़े पर उसका रवैया अच्छा है। लेकिन ऐसे पदों के लिए वह अभी थोड़ा कम उम्र का है। अगर उसकी जगह पर ज़्यादा अनुभवी लोग हों, तो यह एक विरोधाभास पैदा करेगा। उसमें गंभीरता की थोड़ी कमी है, जो

कि सबसे बुनियादी गुण है।" "उसे थोड़ा और मज़बूती से जकड़ने की ज़रूरत है।" (मेरे सूचना देने वाले का मतलब था उसका सिर।" "खैर, वह सब कुछ मुझ पर छोड़ सकता है। मुझे पता है मैं क्या कर रहा हूँ। ग्रैंड होटल के मैनेजर के रूप में अपनी पहचान बनाने से पहले, मैंने एम. पायलार्ड के नेतृत्व में बारूद की गंध महसूस की थी।" मैं इस उपमा से प्रभावित हुआ और मैनेजर को पोंट-ए-कूलेउव्रे तक व्यक्तिगत रूप से आने के लिए धन्यवाद दिया। "अरे, यह तो कुछ भी नहीं है! समय की बर्बादी तो न के बराबर रही है।" इसी बीच हम पहुँच चुके थे।

पूर्ण शारीरिक पतन। पहली रात, जब मैं हृदय गति रुकने से व्याकुल थी, अपने दर्द को सहने की कोशिश कर रही थी, तो मैंने धीरे-धीरे और सावधानी से अपने जूते उतारने के लिए झुकी। लेकिन जैसे ही मैंने सबसे ऊपरी बटन को छुआ, मेरा हृदय एक अज्ञात, एक दिव्य उपस्थिति से भर उठा, मैं सिसकियों से कांप उठी, मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। वह व्यक्ति जो मेरी सहायता के लिए आया, जिसने मुझे आत्मा के बंजरपन से बचाया, वही था जो वर्षों पहले, ऐसे ही दुख और अकेलेपन के क्षण में, उस क्षण में जब मैं पूरी तरह से स्वयं नहीं थी, आया था और मुझे स्वयं को लौटाया था, क्योंकि वह व्यक्ति स्वयं मैं ही था और मुझसे भी बढ़कर था (वह पात्र जो अपनी सामग्री से कहीं अधिक विशाल है, जिसे वह मेरे लिए ला रहा था)। मेरी स्मृति में, थकान से झुकते हुए, मुझे अपनी दादी का कोमल, चिंतित और उदास चेहरा दिखाई दिया, जैसा कि हमारे आगमन की उस पहली शाम को था। यह उस दादी का चेहरा नहीं था, जिसके लिए मैं आश्चर्यचकित थी—और खुद को कोसती थी—कि मुझे उसका कितना कम अफ़सोस था और जो अब सिर्फ़ उसका नाम बनकर रह गई थी, बल्कि यह मेरी अपनी सच्ची दादी का चेहरा था, जिसकी जीवंत छवि को मैंने, शैंप्स-एलिसी में उस दोपहर के बाद, जब उन्हें स्ट्रोक आया था, पहली बार सहज और पूर्ण स्मरण क्रिया द्वारा पुनः प्राप्त किया। वह वास्तविकता हमारे लिए तब तक अस्तित्वहीन है, जब तक कि उसे हमारे मन द्वारा नए सिरे से निर्मित नहीं किया जाता (अन्यथा टाइटैनिक जैसे संघर्ष में लगे सभी लोग महान महाकाव्य कवि होते); और इसलिए, उसके आलिंगन में खुद को झोंक देने की मेरी बेतहाशा इच्छा में, उसके दफ़नाने के एक साल से भी ज़्यादा समय बाद, उस कालभ्रम के कारण जो अक्सर तथ्यों के कैलेंडर को हमारी भावनाओं के कैलेंडर से मेल खाने से रोकता है, मुझे इस बात का एहसास

हुआ कि वह मर चुकी है। इस बीच मैंने अक्सर उसके बारे में बात की थी और उसके बारे में सोचा भी था, लेकिन मेरे शब्दों और विचारों के पीछे, एक कृतघ्न, स्वार्थी, क्रूर नौजवान के विचारों में, मेरी दादी जैसा कुछ भी नहीं था, क्योंकि मेरी चंचलता, सुख-सुविधाओं के प्रति मेरे प्रेम और उसकी खराब सेहत के तमाशे से मेरी परिचितता के कारण, मैंने उसकी याद को केवल एक संभावित अवस्था में ही संजो कर रखा था। हम चाहे जिस क्षण इसका आकलन करें, हमारी आध्यात्मिक प्रकृति का कुल मूल्य कमोबेश काल्पनिक ही होता है, भले ही इसके खजानों की सूची कितनी भी लंबी क्यों न हो, क्योंकि कभी कोई एक, कभी कोई दूसरा, अवास्तविक होता है, चाहे हम वास्तविक खजानों की बात कर रहे हों या कल्पना के खजानों की। और मेरे मामले में, गुएरमांटेस के प्राचीन नाम की तरह ही, यह दूसरा, कहीं अधिक महत्वपूर्ण तत्व, मेरी दादी की मेरी वास्तविक स्मृति भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। क्योंकि स्मृति की परेशानियों से हृदय की क्षणभंगुरताएँ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं। निस्संदेह, हमारे शरीर का अस्तित्व, जिसकी तुलना हम अपनी आध्यात्मिक प्रकृति को धारण करने वाले एक पात्र से कर सकते हैं, हमें यह मानने पर मजबूर करता है कि हमारी सारी आंतरिक संपत्ति, हमारे अतीत के सुख, हमारे सारे दुख, सदा हमारे पास ही रहते हैं। शायद यह मानना भी उतना ही गलत है कि वे खो जाते हैं या लौट आते हैं। बहरहाल, अगर वे हमारे भीतर बने रहते हैं, तो अधिकतर समय वे एक अज्ञात क्षेत्र में रहते हैं जहाँ वे हमारे किसी काम के नहीं होते, और जहाँ साधारण से साधारण भी अलग तरह की यादों से दब जाते हैं, जो उन्हें हमारी चेतना में एक साथ घटित होने से रोकती हैं। लेकिन अगर उन संवेदनाओं के परिवेश को पुनः प्राप्त कर लिया जाए जिनमें वे संरक्षित हैं, तो वे बदले में उन सभी चीजों को बाहर निकालने की वही शक्ति प्राप्त कर लेते हैं जो उनसे असंगत हैं, और केवल उसी आत्मा को हममें स्थापित कर देते हैं जिसने मूल रूप से उन्हें जिया था। अब, चूंकि वह आत्मा जो मैं अभी अचानक फिर से बन गया था, उस शाम के बाद से अस्तित्व में नहीं थी जब मेरी दादी ने बालबेक पहुँचने के बाद मुझे निर्वस्त्र किया था, इसलिए यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि बीते हुए दिन के अंत में नहीं, जिसके बारे में उस आत्मा को कुछ भी पता नहीं था, बल्कि—जैसे कि समय में अलग-अलग और समानांतर श्रृंखलाएँ हों—बिना निरंतरता खोए, बालबेक में उस पहली शाम के तुरंत बाद, जब मेरी दादी मेरे ऊपर झुकी थीं। मैं जो उस समय था, जो इतने लंबे समय से लुप्त हो चुका

था, वह एक बार फिर मेरे इतने करीब आ गया था कि मुझे ऐसा लग रहा था मानो अभी-अभी बोले गए शब्द मुझे सुनाई दे रहे हों, हालांकि अब वे केवल एक भ्रम मात्र थे, ठीक वैसे ही जैसे कोई अधजाना व्यक्ति अपने दूर होते सपने की आवाज़ों को सुन पाता है। मैं अब बस वही व्यक्ति था जो अपनी दादी की बाहों में शरण लेता था, उन्हें चुंबन देकर अपने कष्टों के निशान मिटाने की कोशिश करता था। मैं वही व्यक्ति था जिसकी कल्पना करना मेरे लिए उतना ही कठिन होता जब मैं उन व्यक्तियों में से एक था जो मैं कुछ समय से बारी-बारी से रहा था, जितना कि उन प्रयासों का, जो किसी भी हालत में निष्फल होने वाले थे, जो मुझे अब उन इच्छाओं और खुशियों को महसूस करने के लिए करने पड़ते, जो कम से कम कुछ समय के लिए मैं नहीं रहा था। मैंने खुद को याद दिलाया कि कैसे, उस पल से एक घंटा पहले जब मेरी दादी ने अपने ड्रेसिंग गाउन में झुककर मेरे जूते खोले थे, जब मैं घुटन भरी गर्म सड़क पर पेस्ट्री बनाने वाले की दुकान के पास से गुजर रहा था, तब मुझे लगा था कि उनकी बाहों में लिपटे होने की मेरी तीव्र इच्छा में, मैं उनके बिना बिताए उस एक घंटे को कभी नहीं जी पाऊंगा। और अब जब वही इच्छा मुझमें फिर से जागृत हो रही थी, मैं जानता था कि मैं घंटों इंतजार कर सकता हूं, कि वह फिर कभी मेरे साथ नहीं होंगी। मुझे यह अभी-अभी पता चला था क्योंकि मैंने अभी-अभी, उन्हें पहली बार जीवित, वास्तविक रूप में महसूस किया था, जिससे मेरा दिल खुशी से भर गया था, अंततः उन्हें पाकर, मुझे पता चला कि मैंने उन्हें हमेशा के लिए खो दिया है। हमेशा के लिए खो दिया; मैं समझ नहीं पा रहा था और इस विरोधाभास की पीड़ा को सहने के लिए संघर्ष कर रहा था: एक ओर एक अस्तित्व, एक स्नेह, मुझमें उसी रूप में जीवित था जैसा मैंने उन्हें जाना था, अर्थात् मेरे लिए सृजित किया गया था, एक ऐसा प्रेम जिसकी दृष्टि में सब कुछ मुझमें पूरी तरह से अपना पूरक, अपना लक्ष्य, अपना निरंतर मार्गदर्शक तारा पाता था, कि महान पुरुषों की प्रतिभा, संसार के आरंभ से अस्तित्व में रही सभी प्रतिभाएँ मेरी दादी के लिए मेरी एक भी कमी से कम मूल्यवान होतीं; और दूसरी ओर, जैसे ही मैंने उस आनंद को पुनः अनुभव किया, मानो वह वर्तमान में मौजूद हो, उस निश्चितता से ग्रस्त महसूस करते हुए, एक शारीरिक पीड़ा की तरह धड़कते हुए, उस विनाश का जिसने उस स्नेह की मेरी छवि को मिटा दिया था, उस अस्तित्व को नष्ट कर दिया था, हमारे परस्पर जुड़े हुए भाग्य को समाप्त कर दिया था, जो मेरी दादी में उस क्षण बना था जब मैंने उन्हें दर्पण

में पुनः पाया, एक मात्र अजनबी जिसे संयोग से कुछ वर्ष मेरे साथ बिताने का अवसर मिला था, जैसा कि किसी और के साथ भी हो सकता था, लेकिन जिनके लिए, उन वर्षों से पहले और बाद में, मैं कुछ भी नहीं था, मैं कुछ भी नहीं हो सकता था।

हाल ही में मुझे जो सुख मिल रहे थे, उनके बजाय उस समय मेरे लिए एकमात्र सुख यही संभव था कि मैं अतीत को बदलकर अपनी दादी के जीवन के दुखों और पीड़ाओं को कम कर सकूँ। अब, मुझे उनकी याद केवल उस गाउन में ही नहीं आ रही थी, जो इतना उपयुक्त था कि मानो उनके द्वारा मेरे लिए किए गए परिश्रम का प्रतीक बन गया था, जो निस्संदेह मूर्खतापूर्ण थे लेकिन इतने प्यारे भी थे। धीरे-धीरे मुझे वे सभी अवसर याद आने लगे जब मैंने उन्हें अपनी पीड़ाओं का एहसास कराकर, और यदि आवश्यक हो तो उन्हें बढ़ा-चढ़ाकर बताकर, उन्हें ऐसा दुख पहुँचाया था जिसे मैंने अपने चुंबनों से तुरंत मिटा दिया था, मानो मेरा स्नेह मेरी खुशी की तरह ही उनकी खुशी पैदा करने में सक्षम था। और, इससे भी बुरी बात यह थी कि मैं, जिसे अब उस चेहरे की आकृति में आनंद की झलक पाने के अलावा कोई और खुशी नहीं सूझती थी, जो प्रेम से ढला और झुका हुआ था, अतीत में उसके सबसे मामूली सुखों को भी नष्ट करने के लिए बेताब कोशिशें करता रहा था, जैसे उस दिन जब सेंट-लूप ने मेरी दादी की तस्वीर ली थी और मैं, उनके सामने अपनी उस बचकानी अदा को छुपा नहीं पाया था, जिस तरह से उन्होंने चौड़ी किनारी वाली टोपी पहनकर, मनमोहक हल्की रोशनी में उनके लिए पोज़ दिया था, और मैंने कुछ अधीर, चोट पहुँचाने वाले शब्द बुदबुदा दिए थे, जिन्हें मैंने उनके चेहरे के भावों में आए संकुचन से महसूस किया था, कि वे उन तक पहुँचे थे, उन्हें भेद गए थे; अब तो मेरा ही दिल टूट रहा था क्योंकि अब कभी भी हज़ार चुम्बनों का दिलासा भी संभव नहीं था।

लेकिन मैं कभी भी उसके चेहरे की उस पीड़ा, उसके हृदय की उस व्यथा, या यूँ कहूँ कि अपनी ही उस पीड़ा को अपनी स्मृति से मिटा नहीं पाऊँगी: क्योंकि जैसे मृत आत्माएँ केवल हमारे भीतर ही विद्यमान होती हैं, वैसे ही हम स्वयं को ही निरंतर आघात पहुँचाते हैं जब हम उन्हें दिए गए आघातों को याद करते रहते हैं। इन दुखों से, चाहे वे कितने भी क्रूर क्यों न हों, मैं पूरी शक्ति से चिपकी रही, क्योंकि मुझे एहसास हुआ कि ये मेरी दादी की स्मृति का परिणाम थे, इस बात का प्रमाण थे कि उनकी यह स्मृति वास्तव में मेरे भीतर विद्यमान थी। मुझे लगा कि मैं वास्तव में उन्हें केवल दुःख के कारण ही याद कर पा रही थी और चाहती थी कि वे कीलें जो

उनकी स्मृति को मेरी चेतना से बाँधे हुए थीं, और भी गहराई से मेरे भीतर धँस जाएँ। मैंने अपने दुख को कम करने, उसे छिपाने, यह दिखावा करने की कोशिश नहीं की कि मेरी दादी कहीं और हैं और क्षण भर के लिए अदृश्य हैं, उनकी तस्वीर (सेंट-लूप द्वारा ली गई, जो मेरे पास थी) को शब्दों और प्रार्थनाओं से संबोधित करके, मानो वह व्यक्ति जो हमसे अलग हो गया है, लेकिन अपने व्यक्तित्व को बनाए रखते हुए, हमें जानता है और एक अटूट सामंजस्य से हमसे जुड़ा हुआ है। मैंने ऐसा कभी नहीं किया, क्योंकि मैं न केवल पीड़ा सहने के लिए दृढ़ था, बल्कि अपनी पीड़ा के मूल स्वरूप का सम्मान करने के लिए भी दृढ़ था, जो अचानक मुझ पर अप्रत्याशित रूप से आ पड़ी थी, और मैं इसे इसके अपने नियमों के अनुसार महसूस करता रहना चाहता था, जब भी अस्तित्व और विनाश की वे विचित्र विरोधाभासी भावनाएँ मेरे मन में फिर से टकराती थीं। मैं जानता था कि यह पीड़ादायक और उस समय समझ से परे भावना थी —यह निश्चित रूप से नहीं कि मैं एक दिन इससे सत्य का एक अंश निकाल पाऊँगा—लेकिन यदि मैं कभी सत्य का वह अंश निकालने में सफल हुआ, तो वह केवल इसी से, इस विलक्षण, इस सहज भावना से ही संभव था, जिसे न तो मेरी बुद्धि ने खोजा था और न ही मेरी कायरता ने कम किया था, बल्कि मृत्यु ने स्वयं, मृत्यु के अचानक प्रकटीकरण ने, बिजली की एक चमक की तरह, मुझ पर एक अलौकिक, अमानवीय मार्ग से दोहरी और रहस्यमय रेखा खींच दी थी। (मेरी दादी की विस्मृति की उस अवस्था का, जिसमें मैं उस क्षण तक जी रहा था, मैं उससे सत्य निकालने के बारे में सोच भी नहीं सकता था; क्योंकि वह अपने आप में एक नकार मात्र थी, मन की एक दुर्बलता थी जो जीवन के वास्तविक क्षण को पुनः सृजित करने में असमर्थ थी और उसके स्थान पर पारंपरिक और तटस्थ छवियों को प्रतिस्थापित करने के लिए विवश थी।) शायद, यद्यपि संरक्षण की प्रवृत्ति, दुःख से हमें बचाने में मन की चतुराई, अभी भी सुलगते हुए खंडहरों पर निर्माण करना शुरू कर चुकी थी, अपनी उपयोगी और अशुभ संरचना की पहली परतें बिछा रही थी, इसलिए मैंने अपनी प्रियतमा के इस या उस विचार को याद करने के आनंद का अत्यधिक आनंद लिया, उन्हें इस प्रकार याद किया मानो वह उन्हें अभी भी धारण कर सकती हो, मानो वह अस्तित्व में हो, मानो मैं उसके लिए अस्तित्व में रहूँ। लेकिन जैसे ही मैं सो पाया, उस अधिक सत्यपूर्ण क्षण में जब मेरी आँखें बाहरी दुनिया की चीजों से विमुख हो गईं, नींद की दुनिया (जिसकी सीमा पर बुद्धि और इच्छाशक्ति, क्षण भर के लिए पंगु होकर,

मुझे मेरे वास्तविक अनुभवों की क्रूरता से बचाने का प्रयास नहीं कर सकती थी) ने मेरे अंगों के रहस्यमय ढंग से प्रकाशित अंधकार में अस्तित्व और विनाश के पीड़ादायक संश्लेषण को प्रतिबिंबित और अपवर्तित किया। नींद की दुनिया जिसमें हमारी आंतरिक चेतना, हमारे अंगों की गड़बड़ी के बंधन में, हृदय या श्वास की लय को तेज कर देती है क्योंकि आतंक, दुःख, पश्चाताप की एक समान खुराक सौ गुना अधिक शक्ति के साथ कार्य करती है यदि इसे इस प्रकार हमारी नसों में डाला जाता है; जैसे ही, भूमिगत शहर की धमनियों को पार करते हुए, हम अपने ही रक्त की अंधेरी धारा पर एक आंतरिक लेथे की तरह छह गुना घुमावदार धारा पर सवार होते हैं, विशाल गंभीर रूप हमारे सामने प्रकट होते हैं, आते हैं और चले जाते हैं, हमें आँसुओं में छोड़ जाते हैं। जब मैं उन अंधकारमय द्वारों के नीचे किनारे पर उतरा था, तब मैंने अपनी दादी के रूप को व्यर्थ ही खोजा था; मुझे पता था कि वह अब भी जीवित है, लेकिन उसकी जीवंतता क्षीण हो चुकी है, स्मृति की तरह धुंधली; अंधेरा और हवा बढ़ती जा रही थी; मेरे पिता, जिन्हें मुझे वहाँ ले जाना था जहाँ वह थीं, नहीं आए। अचानक मेरी साँस रुक गई, मेरा दिल पत्थर का हो गया; मुझे अभी याद आया कि मैं हफ्तों से अपनी दादी को पत्र लिखना भूल गई थी। वह मेरे बारे में क्या सोच रही होंगी? हे भगवान! मैंने मन ही मन कहा, "उस छोटे से कमरे में वह कितनी दयनीय स्थिति में होगी जो उसके लिए लिया गया है, जो किसी बूढ़े नौकर के कमरे से भी छोटा है, जहाँ वह उस नर्स के साथ बिल्कुल अकेली है जिसे उसकी देखभाल के लिए रखा गया है, और जहाँ से वह हिल भी नहीं सकती, क्योंकि वह अभी भी थोड़ी लकवाग्रस्त है और हमेशा से बिस्तर से उठने से इनकार करती रही है। वह सोच रही होगी कि अब जब वह मर चुकी है तो मैं उसे भूल गई हूँ; वह कितना अकेलापन महसूस कर रही होगी, कितना परित्यक्त! ओह, मुझे उससे मिलने दौड़ना चाहिए, मुझे एक मिनट भी बर्बाद नहीं करना चाहिए, मुझे अपने पिता के आने का भी इंतजार नहीं करना चाहिए— लेकिन वह कहाँ है, मैं पता कैसे भूल गई, क्या वह मुझे फिर से पहचान पाएगी, मुझे आश्चर्य है? मैं इन सभी महीनों में उसे कैसे भूल गई?" इतना अंधेरा है, मैं उसे नहीं ढूंढ पाऊँगी; हवा मुझे रोक रही है; लेकिन देखो, मेरे पिता मेरे आगे चल रहे हैं; मैं उन्हें पुकारती हूँ: "दादी कहाँ हैं? मुझे उनका पता बताइए। क्या वह ठीक हैं? क्या आपको पूरा यकीन है कि उनके पास वह सब कुछ है जो वह चाहती हैं?" “क्यों,” मेरे पिता ने कहा, “चिंता मत करो। उसकी नर्स अच्छी

तरह प्रशिक्षित है। हम उसे समय-समय पर थोड़ी-बहुत चीजें भेजते रहते हैं, ताकि वह तुम्हारी दादी के लिए ज़रूरत की हर चीज़ ला सके। वह कभी-कभी पूछती है कि तुम कैसे हो। उसे पता चला कि तुम एक किताब लिखने वाले हो। वह खुश लग रही थी। उसने एक आंसू पोंछा।" और फिर मुझे याद आया कि उसकी मृत्यु के कुछ समय बाद, मेरी दादी ने मुझसे रोते हुए, विनम्र भाव से कहा था, जैसे कोई बूढ़ा नौकर जिसे जाने का नोटिस दिया गया हो, मानो कोई अजनबी हो: "तुम मुझे कभी-कभार मिलने दोगे, है ना? मुझसे मिलने आए बिना बहुत साल मत गुज़ार देना। याद रखना कि तुम कभी मेरे पोते थे, और दादी कभी नहीं भूलतीं।" और उस शांत, उदास, कोमल चेहरे को फिर से देखकर, जो उनका चेहरा था, मेरा मन किया कि मैं तुरंत उनके पास दौड़कर जाऊं और उनसे वही कहूं जो मुझे उस समय कहना चाहिए था: "दादी, आप मुझसे जितनी बार चाहें मिल सकती हैं, इस दुनिया में सिर्फ आप ही हैं, मैं आपको कभी छोड़कर नहीं जाऊंगी।" उन सभी महीनों में जब मैं उस जगह नहीं गई जहां वह लेटी हैं, मेरी चुप्पी ने उन्हें कितना रुलाया होगा, वह मेरे बारे में मन ही मन क्या कह रही होंगी? और आँसुओं से रुंधी हुई आवाज़ में मैं भी अपने पिता को पुकारती हूं: "जल्दी, जल्दी, उनका पता बताओ, मुझे उनके पास ले चलो।" लेकिन वह कहते हैं: "अच्छा... मुझे नहीं पता कि तुम उनसे मिल पाओगी या नहीं। वैसे भी, वह अब बहुत कमज़ोर हो गई हैं, बहुत कमज़ोर, वह बिल्कुल भी पहले जैसी नहीं हैं, मुझे डर है कि तुम्हें यह बहुत कष्टदायक लगेगा। और मुझे रास्ते का नंबर भी ठीक से नहीं पता।" "परन्तु मुझे बताओ, तुम जो जानते हो, यह सच नहीं है कि मरे हुए लोग मर जाते हैं। यह सच हो ही नहीं सकता, चाहे लोग कुछ भी कहें, क्योंकि दादी तो अब भी जीवित हैं।" मेरे पिता ने उदास मुस्कान के साथ कहा: "अरे, बिलकुल भी नहीं, बिलकुल भी नहीं। मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि तुम न जाओ। उनके पास वह सब कुछ है जो उन्हें चाहिए। वे आकर उनके लिए जगह साफ़ रखते हैं।" "परन्तु उन्हें अक्सर अकेला छोड़ दिया जाता है?" "हाँ, पर यही उनके लिए बेहतर है। उनके लिए न सोचना बेहतर है, क्योंकि सोचना उनके लिए बुरा ही हो सकता है। जब वह सोचने की कोशिश करती हैं तो अक्सर उन्हें तकलीफ़ होती है। इसके अलावा, तुम जानते हो, अब वह बिल्कुल बेजान हैं। मैं पता लिख दूँगा ताकि तुम उनके पास जा सको; पर मुझे नहीं लगता कि वहाँ जाकर तुम कुछ अच्छा कर पाओगे, और मुझे नहीं लगता कि नर्स तुम्हें उनसे मिलने देगी।" "तुम अच्छी तरह जानते हो कि

मैं हमेशा उनके पास रहूँगा, प्रिय, प्रिय, प्रिय, फ्रांसिस जैम्स, फोर्क।" लेकिन मैं पहले ही नदी के अंधेरे घुमावदार रास्तों पर लौट चुका था, उस सतह पर आ चुका था जहाँ जीवित लोगों की दुनिया खुलती है, इसलिए अगर मैं फिर भी दोहराता: "फ्रांसिस जैम्स, डियर, डियर," तो इन शब्दों का क्रम अब मुझे वह स्पष्ट अर्थ और तर्क नहीं दे रहा था जो उन्होंने मुझे एक क्षण पहले इतनी सहजता से व्यक्त किया था और जिसे मैं अब याद नहीं कर सकता था। मैं यह भी नहीं समझ पा रहा था कि मेरे पिता ने अभी-अभी मुझसे जो शब्द 'ऐयास' कहा था, उसका तुरंत यह अर्थ कैसे हो गया: "ध्यान रखना, कहीं सर्दी न लग जाए," बिना किसी संदेह के। मैं खिड़कियाँ बंद करना भूल गया था, और शायद इसीलिए दिन के उजाले ने मुझे जगा दिया था। लेकिन मैं समुद्र की उन लहरों को अपनी आँखों के सामने सहन नहीं कर पा रहा था जिन्हें मेरी दादी घंटों तक निहारती रहती थीं; उनकी बेपरवाह सुंदरता की ताज़ा छवि के साथ ही यह विचार भी जुड़ गया कि वह उन्हें नहीं देख पाती थीं; मैं उनके शोर से अपने कान बंद करना चाहता था, क्योंकि अब समुद्र तट की चमकदार प्रचुरता ने मेरे दिल में एक खालीपन पैदा कर दिया था; ऐसा लग रहा था मानो सब कुछ मुझसे कह रहा हो, जैसे किसी सार्वजनिक उद्यान के वे रास्ते और मैदान जहाँ मैंने उसे बहुत पहले, बचपन में खो दिया था: "हमने उसे नहीं देखा है," और आकाश के धुंधले गुंबद के नीचे, मैं खुद को एक विशाल नीले कांच की घंटी के नीचे कुचला हुआ महसूस कर रहा था, जिसके भीतर एक ऐसा क्षितिज था जहाँ मेरी दादी नहीं थीं। उससे बचने के लिए, मैं दीवार की ओर मुड़ा, लेकिन अफसोस, अब मेरे सामने वह दीवार थी जो सुबह के संदेशवाहक का काम करती थी, वह दीवार जो वायलिन की तरह हर सूक्ष्म भाव को व्यक्त करती थी, और मेरी दादी को मेरे डर के बारे में इतनी सटीकता से बताती थी कि कहीं मैं उन्हें जगा न दूं और अगर वे पहले से ही जाग रही हों, तो मुझे उनकी आवाज सुनाई न दे और इसलिए वे न आएं, फिर तुरंत, जैसे कोई दूसरा वाद्य यंत्र धुन को आगे बढ़ाता है, मुझे सूचित करती थी कि वे आ रही हैं और मुझे शांत रहने को कहती थी। मैं उस दीवार पर हाथ बढ़ाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था, ठीक वैसे ही जैसे उस पियानो पर जिस पर मेरी दादी ने बजाया था और जो अब भी उनके स्पर्श से स्पंदित था। मुझे पता था कि मैं अब और भी ज़ोर से दस्तक दूँ, तो भी कोई जवाब नहीं मिलेगा, और मेरी दादी फिर कभी नहीं आएंगी। और अगर स्वर्ग जैसी कोई जगह है, तो मैं ईश्वर से इससे बेहतर कुछ नहीं माँग सकता कि मैं वहाँ उस

दीवार पर तीन धीमी दस्तकें दे सकूँ, जिन्हें मेरी दादी हज़ारों दस्तकों में भी पहचान लेंगी, और जिनका जवाब वो दूसरी दस्तकों से देंगी, जो कहेंगी: "घबराओ मत, नन्हे चूहे, मुझे पता है तुम बेचैन हो, पर मैं आ ही रही हूँ," और ईश्वर मुझे अनंत काल तक उनके साथ रहने दें, जो हमारे लिए बहुत लंबा समय नहीं होगा।

मैनेजर मुझसे पूछने आया कि क्या मैं नीचे आना चाहूँगी। उसने डाइनिंग रूम में मेरी 'जगह' पर बहुत ध्यान रखा था। चूंकि उसे मेरा कोई अता-पता नहीं था, इसलिए उसे डर था कि कहीं मुझे फिर से घुटन का दौरा न पड़ गया हो। उसे उम्मीद थी कि शायद यह सिर्फ थोड़ा सा 'गला खराब' हो और उसने मुझे भरोसा दिलाया कि उसने सुना है कि इसे 'कैलिप्टस' नामक चीज़ से आराम मिल सकता है।

वह मेरे लिए अल्बर्टीन का संदेश लेकर आया। उसे उस साल बालबेक नहीं आना था, लेकिन योजना बदलने के कारण वह पिछले तीन दिनों से बालबेक में नहीं, बल्कि पास के ही एक बार में थी, जहाँ से ट्राम से दस मिनट की दूरी पर था। उसे डर था कि यात्रा के बाद मैं थका हुआ होऊँगा, इसलिए वह पहली शाम को नहीं आई, लेकिन अब उसने संदेश भेजा है कि मैं उससे कब मिल सकता हूँ। मैंने पूछा कि क्या वह मुझसे मिलने आई थी, इसलिए नहीं कि मैं उससे मिलना चाहता था, बल्कि इसलिए कि मैं उससे न मिलने का इंतज़ाम कर सकूँ। "हाँ," प्रबंधक ने उत्तर दिया। "लेकिन वह चाहती है कि यह जल्द से जल्द हो, जब तक कि आपके पास कोई बहुत ज़रूरी कारण न हो। देखिए," उसने बात खत्म करते हुए कहा, "यहाँ हर कोई आपसे मिलना चाहता है।" लेकिन मैं तो किसी से भी नहीं मिलना चाहता था।

फिर भी, एक दिन पहले, अपने आगमन पर, मैंने खुद को समुद्र किनारे के आलसी जीवन के आकर्षण में फिर से खोया हुआ पाया था। वही शांत लिफ्टकर्मी, इस बार तिरस्कार से नहीं बल्कि सम्मान से चुप, और आनंद से चमकता हुआ, लिफ्ट चला रहा था। जैसे ही मैं ऊपर चढ़ते हुए स्तंभ पर चढ़ा, मैं एक बार फिर उस रहस्यमय होटल से गुज़रा, जो पहले मेरे लिए एक अनजान होटल जैसा था। जहाँ जब आप पहुँचते हैं, एक असुरक्षित पर्यटक, जहाँ कोई सुरक्षा या पद नहीं होता, तो हर बूढ़ा निवासी अपने कमरे में लौट जाता है, हर नौकरानी एक अजीब से गलियारे से गुज़रती है, और साथ ही अमेरिका की एक युवती अपने साथी के साथ रात के खाने के लिए नीचे जा रही होती है, और ये सब आपको ऐसी नज़र से देखते हैं जिसमें

आप कुछ भी ऐसा नहीं देख पाते जो आप देखना चाहते हों। इस बार इसके विपरीत, मुझे एक ऐसे होटल से गुज़रने का पूर्ण सुख मिला जिसे मैं जानता था, जहाँ मुझे घर जैसा महसूस हुआ, जहाँ मैंने एक बार फिर वह क्रिया की जिसे हमें हमेशा नए सिरे से शुरू करना पड़ता है, पलक झपकाने से भी ज़्यादा लंबी और कठिन, जिसमें हम चीजों को उनकी अपनी आत्मा के बजाय उस आत्मा से भर देते हैं जो हमें परिचित होती है, न कि उस आत्मा से जो हमें डरावनी लगती है। मैंने खुद से पूछा था, मुझे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि मेरा मूड अचानक बदल जाएगा, क्या मुझे हमेशा उन अजनबी होटलों में जाना होगा जहाँ मैं पहली बार खाना खाऊँगी, जहाँ आदत ने अभी तक हर कदम पर, हर दरवाजे के बाहर, उस भयानक अजगर को नहीं मारा होगा जो एक जादुई जीवन पर नजर रखता हुआ प्रतीत होता है, जहाँ मुझे उन अजनबी महिलाओं के पास जाना होगा जिन्हें फैशनेबल होटल, कैसिनो, बार एक साथ लाते हैं और उन्हें एक सामान्य जीवन प्रदान करते हैं।

मुझे इस बात से भी खुशी मिली कि उबाऊ मुख्य मजिस्ट्रेट मुझसे मिलने के लिए इतने उत्सुक थे। उस पहली शाम को, मैं लहरों, समुद्र की नीली पर्वत श्रृंखलाओं, उसके ग्लेशियरों और झरनों, उसकी ऊँचाई और उसकी बेपरवाह भव्यता को देख पा रहा था—इतने लंबे अंतराल के बाद पहली बार हाथ धोते समय, ग्रैंड होटल के अत्यधिक सुगंधित साबुनों की उस खास गंध को सूंघते ही—जो मानो वर्तमान क्षण और मेरी पिछली यात्रा दोनों से जुड़ी हुई थी, उनके बीच ऐसे तैर रही थी जैसे किसी खास तरह के जीवन का असली आकर्षण हो, जहाँ कोई सिर्फ अपनी टाई बदलने के लिए लौटता है। मेरे बिस्तर की चादरें, बहुत महीन, बहुत हल्की, बहुत बड़ी, जिन्हें ठीक से समेटना या अपनी जगह पर रखना असंभव था, जो कंबल के नीचे से लहराती हुई घूमती हुई लहरों की तरह बाहर निकल रही थीं, पहले मुझे परेशान करती थीं। अब वे अपनी बेढंगी, फूलती हुई पाल जैसी आकृति पर मेरी पहली सुबह की आशाओं से भरी शानदार सूर्योदय को थामे हुए थीं। लेकिन उस सूरज को प्रकट होने का समय नहीं मिला। आधी रात के सन्नाटे में, वह भयानक, दैवीय उपस्थिति फिर से जीवित हो उठी थी। मैंने प्रबंधक से मुझे अकेला छोड़ने और यह आदेश देने को कहा कि कोई भी मेरे कमरे में प्रवेश न करे। मैंने उससे कहा कि मैं बिस्तर पर ही रहूँगी और उत्कृष्ट दवा लाने के लिए केमिस्ट के पास भेजने के उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया। वह मेरे इनकार से प्रसन्न हुआ क्योंकि उसे डर

था कि अन्य आगंतुक 'कैलिप्टस' की गंध से परेशान हो सकते हैं। इस पर मुझे यह प्रशंसा मिली: "आप आंदोलन में हैं" (उसका मतलब था: 'सही रास्ते पर'), और यह चेतावनी: "ध्यान रखना, दरवाजे पर खुद को अपवित्र मत करना, मैंने ताले को तेल से 'चमकाया' है; अगर कोई भी नौकर तुम्हारे दरवाजे पर दस्तक देने की हिम्मत करता है, तो उसकी बुरी तरह पिटाई होगी। और वे मेरी बात याद रखें, क्योंकि मैं एक ही बात को बार-बार नहीं दोहराता" (स्पष्ट रूप से इसका मतलब था कि उसने एक भी बात दोबारा नहीं कही)। "लेकिन क्या आप थोड़ी सी पुरानी शराब पीना चाहेंगे, बस शुरुआत के लिए? मेरे पास नीचे एक बड़ा सा गत्ता रखा है।" (संभवतः हॉग्सहेड)। "मैं इसे आपके लिए जोनाथन के सिर की तरह चांदी की थाली में नहीं लाऊंगा, और मैं आपको पहले ही बता दूं कि यह शैतो-लाफिट नहीं है, लेकिन लगभग उसी के बराबर है।" (लगभग उसी के बराबर)। "और क्योंकि यह काफी हल्की है, वे आपके लिए थोड़ी सी सोल मछली तल सकते हैं।" मैंने सब कुछ मना कर दिया, लेकिन मछली (सोल) का नाम इस्राएल के राजा शाऊल के नाम की तरह उच्चारित होते सुनकर आश्चर्यचकित रह गया, जबकि उस व्यक्ति ने अपने जीवन में ऐसी कई मछलियाँ मंगाई होंगी।

मैनेजर के वादों के बावजूद, वे थोड़ी देर बाद मुझे मार्क्विज़ डी कैम्ब्रेमर का अस्वीकृत कार्ड लेकर आए। मुझसे मिलने आई उस बुज़ुर्ग महिला ने यह पता लगाने के लिए संदेश भेजा था कि क्या मैं वहाँ हूँ, और जब उन्हें पता चला कि मैं एक दिन पहले ही आया हूँ और मेरी तबीयत ठीक नहीं है, तो उन्होंने ज़ोर नहीं दिया, बल्कि (निश्चित रूप से केमिस्ट या कपड़े की दुकान पर रुके बिना नहीं, जबकि नौकर बॉक्स से नीचे उतरकर बिल चुकाने या कोई ऑर्डर देने के लिए अंदर गया) अपने पुराने आठ स्प्रिंग वाले बग्घी में, जिसे दो घोड़े खींच रहे थे, वापस फेटेर्न चली गईं। बालबेक की गलियों और बालबेक और फेटेर्न के बीच तट के किनारे के कई अन्य छोटे-छोटे स्थानों पर अक्सर इस बग्घी की गड़गड़ाहट सुनाई देती थी और लोग इसकी शान-शौकत देखकर मंत्रमुग्ध हो जाते थे। ऐसा नहीं था कि दुकानों के बाहर ये ठहराव इन यात्राओं का उद्देश्य थे। इसके विपरीत, यह किसी जमींदार या पदाधिकारी के घर पर चाय पार्टी या गार्डन पार्टी होती थी, जो सामाजिक रूप से मार्क्विज़ के लिए बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं थी। लेकिन वह, हालांकि अपने जन्म और धन के बल पर जिले के छोटे-मोटे कुलीनों पर पूरी तरह हावी थीं, फिर भी अपने पूर्ण अच्छे स्वभाव और सरल हृदय के कारण किसी को भी निराश

करने से इतना डरती थीं कि वे आस-पड़ोस के सभी छोटे-मोटे सामाजिक समारोहों में भी शामिल हो जाती थीं। निश्चित रूप से, इतनी दूर यात्रा करके एक छोटे से ड्राइंग रूम की घुटन भरी गर्मी में एक ऐसे गायक को सुनने के बजाय, जिसकी आवाज़ आमतौर पर बेसुरी होती थी और जिसे ग्रामीण क्षेत्र की उदार महिला और एक प्रसिद्ध संगीतकार होने के नाते बाद में अतिशयोक्तिपूर्ण बधाई देनी पड़ती, श्रीमती डी कैम्ब्रेमर शायद ड्राइव पर जाना या फेटेर्न में अपने अद्भुत बगीचों में रहना पसंद करतीं, जहाँ एक छोटी खाड़ी का सुस्त पानी फूलों के बीच आकर ठहर जाता था। लेकिन वह जानती थीं कि उनके आने की संभावना मेजबान द्वारा घोषित कर दी गई थी, चाहे वह कोई कुलीन व्यक्ति हो या मेनविले-ला टिंटुरिएर या चैटनकोर्ट-ल'ऑर्ग्यूइलक्स का कोई स्वतंत्र नागरिक। और अगर श्रीमती... डी कैम्ब्रेमर उस दोपहर पार्टी में औपचारिक रूप से उपस्थित हुए बिना ही चली गई थीं। तट के किनारे बसे छोटे-छोटे कस्बों से आए मेहमानों में से किसी ने भी मार्क्विज़ की बग्घी देखी या सुनी होगी, जिससे उनका यह बहाना खत्म हो जाता कि वे फेटेर्न से नहीं निकल पाई थीं। दूसरी ओर, मेजबानों ने श्रीमती डी कैम्ब्रेमर को बार-बार ऐसे घरों में आयोजित संगीत कार्यक्रमों में देखा होगा, जिन्हें वे उनके लिए उपयुक्त स्थान नहीं मानते थे। उनकी नज़र में, अत्यधिक विनम्र मार्क्विज़ की प्रतिष्ठा में जो थोड़ी सी गिरावट आई थी, वह जैसे ही उन्हें मेहमाननवाज़ी का मौका मिला, गायब हो गई और वे बड़ी बेचैनी से खुद से पूछते रहे कि क्या वे उन्हें अपनी 'छोटी पार्टी' में आमंत्रित कर पाएंगे या नहीं। अगर घर की बेटी या पड़ोस में छुट्टी पर आए किसी शौकिया गायक द्वारा पहला गीत गाए जाने के बाद, मेहमानों में से कोई एक (जो इस बात का अचूक संकेत था कि मार्क्विज़ पार्टी में आ रही हैं) यह घोषणा कर दे कि उसने प्रसिद्ध बग्घी और घोड़ों की जोड़ी को घड़ीसाज़ या दवाखाने के बाहर खड़ा देखा है, तो दिनों के संदेह और भय का कितना बड़ा निवारण होगा! इसके बाद श्रीमती डी कैम्ब्रेमर (जो वास्तव में कुछ ही देर में अपनी बहू और उस समय उनके साथ ठहरे हुए मेहमानों के साथ प्रवेश करने वाली थीं, जिन्हें लाने की उन्होंने बड़ी खुशी से अनुमति मांगी थी) अपने मेज़बान और मेज़बानी करने वाली की नज़रों में एक बार फिर उसी चमक के साथ दमक उठीं। शायद उनके आने का अपेक्षित इनाम ही एक महीने पहले लिए गए उनके अनकहे फैसले का निर्णायक कारण था: दोपहर की पार्टी की परेशानी और खर्च उठाने का फैसला। मार्क्विज़ को अपने समारोह में देखकर, उन्हें अब अपने

कम योग्य पड़ोसियों द्वारा दी जाने वाली पार्टियों में उनकी तत्परता याद नहीं रही, बल्कि उनके परिवार की प्राचीनता, उनके घर की भव्यता और उनकी बहू, लेग्रैंडिन की अशिष्टता याद आ गई, जिसने अपने अहंकार से विधवा के थोड़े फीके स्वभाव को और भी उजागर कर दिया था। वे पहले से ही अपने मन में गॉलॉइस के सामाजिक कॉलम में वह पैराग्राफ देख सकते थे, जिसे वे परिवार के दायरे में, सभी दरवाजे बंद करके, खुद लिखेंगे, 'ब्रिटनी के उस छोटे से कोने के बारे में जो इस समय उल्लास से भरा है, वह चुनिंदा पार्टी जिससे मेहमान मुश्किल से ही खुद को अलग कर पाते हैं, अपने प्यारे मेज़बान और मेज़बानी करने वाली को जल्द ही उनसे दोबारा मिलने का वादा करते हैं।' वे दिन-ब-दिन अखबार के आने का इंतजार करते रहे, इस चिंता में कि उन्हें अभी तक अपनी पार्टी के बारे में उसमें कोई सूचना नहीं मिली है, और इस डर से कि कहीं मैडम डी कैम्ब्रेमर केवल उनके अन्य मेहमानों में से एक न हों, न कि पूरी पाठक जनता के लिए। अंततः वह शुभ दिन आ ही गया: "इस वर्ष बालबेक में मौसम असाधारण रूप से शानदार है। दोपहर के छोटे संगीत कार्यक्रम खूब चलन में हैं...।" ईश्वर की कृपा से, श्रीमती डी कैम्ब्रेमर का नाम सही ढंग से लिखा गया था, और 'अन्य लोगों के साथ जिनका हम उल्लेख कर सकते हैं' में उनका नाम सूची के शीर्ष पर शामिल था। अब बस इतना ही बचा था कि वे इस पत्रकारिता की चूक पर नाराज़गी जताएँ, जिससे उन लोगों के साथ परेशानी हो सकती थी जिन्हें वे आमंत्रित नहीं कर पाए थे, और श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के सामने पाखंडी ढंग से पूछें कि किसने इतनी विश्वासघाती हरकत की होगी कि यह सूचना भेजी। इस पर मार्क्विज़, जो पूरी तरह से उदार महिला थीं, ने कहा: "मैं आपकी नाराज़गी समझ सकती हूँ, लेकिन मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि लोगों को पता चला कि मैं आपकी पार्टी में थी।"

मुझे जो कार्ड दिया गया था, उस पर श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने लिखा था कि वह 'परसों' दोपहर की पार्टी दे रही हैं। सच कहूँ तो, परसों तक, सामाजिक कार्यक्रमों की भागदौड़ से थकी होने के बावजूद, उस पार्टी में शामिल होना मेरे लिए सचमुच एक सुखद अनुभव होता। यह पार्टी उन बगीचों के बीच आयोजित होती, जहाँ खुले आसमान के नीचे, फेटेर्न की धूप के कारण, अंजीर के पेड़, ताड़ के पेड़ और गुलाब की झाड़ियाँ उगती थीं, जो भूमध्य सागर की तरह नीले और शांत समुद्र तक फैली हुई थीं। पार्टी शुरू होने से पहले, मेज़बान की छोटी नौका खाड़ी

के दूसरी ओर से सबसे महत्वपूर्ण मेहमानों को लाने के लिए तेज़ी से आती थी, और पार्टी के बाद, धूप से बचने के लिए शामियाने फैलाकर, एक खुले हवादार जलपान कक्ष के रूप में परोसी जाती थी, और शाम को अपने मेहमानों को वापस ले जाने के लिए फिर से रवाना हो जाती थी। एक आकर्षक विलासिता, लेकिन इतनी महँगी कि इसके खर्चों को पूरा करने के लिए ही श्रीमती डी कैम्ब्रेमर को कुछ अतिरिक्त खर्च करने पड़े थे। डी कैम्ब्रेमर ने अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए कई तरीके अपनाए थे, और खास तौर पर पहली बार अपनी एक ऐसी संपत्ति किराए पर दी थी जो फेटेर्न से बिल्कुल अलग थी: ला रास्पेलियर। हाँ, दो दिन पहले तक, पेरिस की 'शानदार ज़िंदगी' से अलग, ऐसी पार्टी, जिसमें मेरे लिए अनजान छोटे-मोटे रईस भरे हों, मेरे लिए कितनी सुखद होती। लेकिन अब मेरे लिए सुख-सुविधाओं का कोई मतलब नहीं रह गया था। इसलिए मैंने श्रीमती डी कैम्ब्रेमर को मना करने के लिए लिखा, ठीक वैसे ही जैसे एक घंटे पहले मैंने अल्बर्टाइन को टाल दिया था: दुख ने मुझमें इच्छा की संभावना को उसी तरह पूरी तरह से नष्ट कर दिया था जैसे तेज बुखार भूख को छीन लेता है... मेरी माँ कल आने वाली थीं। मुझे लगा कि अब मैं उनके साथ रहने के लिए कम अयोग्य हूँ, कि मैं उन्हें बेहतर समझ पाऊँगी, क्योंकि एक अजनबी और अपमानजनक जीवन की जगह अब उन दिल दहला देने वाली यादों ने ले ली थी जो मेरी आत्मा को, उनकी आत्मा की तरह, कांटों के ताज से सजाकर उसे गौरवान्वित कर रही थीं। मैंने ऐसा ही सोचा था: वास्तव में, मेरी माँ के जैसे सच्चे शोक, जो किसी प्रियजन को खोने पर वर्षों तक, शायद हमेशा के लिए, हमारे जीवन को तहस-नहस कर देते हैं, और उन अन्य शोकों में, जो क्षणिक होते हैं, जैसे मेरा शोक, जो जितनी तेज़ी से आते हैं उतनी ही तेज़ी से चले जाते हैं, जिनका एहसास हमें घटना के बहुत समय बाद तक नहीं होता, क्योंकि उन्हें महसूस करने के लिए हमें पहले उन्हें समझना पड़ता है; ऐसे शोक जो बहुत से लोग अनुभव करते हैं, और जो शोक मुझे इस समय पीड़ा दे रहा था, वह इससे केवल इतना ही भिन्न था कि वह अचेतन स्मृति का रूप धारण कर लेता था।

इस वृत्तांत में आगे चलकर हमें पता चलेगा कि एक दिन मुझे भी अपनी माँ के समान गहरे दुःख का अनुभव करना पड़ेगा, लेकिन न तो मैंने तब ऐसा सोचा था और न ही इस रूप में। फिर भी, एक ऐसे मुख्य अभिनेता की तरह, जिसे अपना किरदार बहुत पहले सीख लेना चाहिए था और अपनी जगह पर होना चाहिए था, लेकिन वह अंतिम क्षण में ही आता है और

अपने संवादों को केवल एक बार पढ़कर, जब उसका बोलने का समय आता है तो इतनी कुशलता से चुप हो जाता है कि किसी को उसकी देरी का पता ही नहीं चलता, मेरे नए दुःख ने मुझे, जब मेरी माँ आईं, तो उनसे इस प्रकार बात करने में सक्षम बनाया मानो वह दुःख हमेशा से मेरे भीतर रहा हो। उन्होंने केवल यही सोचा कि जिन स्थानों पर मैं अपनी दादी के साथ गई थी (जो बिल्कुल भी सच नहीं था), उन्हें देखकर मेरा दुःख फिर से जाग उठा है। तब पहली बार, और क्योंकि मैंने एक ऐसे दुःख का अनुभव किया जो उनके दुःख के मुकाबले कुछ भी नहीं था, लेकिन जिसने मेरी आँखें खोल दीं, मुझे एहसास हुआ और यह सोचकर मैं भयभीत हो गई कि वह क्या पीड़ा सह रही होंगी। पहली बार मुझे समझ आया कि मेरी दादी की मृत्यु के बाद से उसकी स्थिर और आँसूहीन निगाहें (जिसके कारण फ्रांस्वा ने अपनी सहानुभूति रोक रखी थी) स्मृति और अस्तित्वहीनता के उस अकल्पनीय विरोधाभास में उलझ गई थीं। इसके अलावा, हालांकि वह अभी भी गहरे शोक में थी, इस अजनबी जगह पर वह अधिक फैशनेबल कपड़े पहने हुए थी, इसलिए उसके परिवर्तन ने मुझे और भी अधिक प्रभावित किया। यह कहना पर्याप्त नहीं होगा कि उसने अपनी सारी प्रसन्नता खो दी थी; एक तरह की विनती भरी छवि में पिघलकर जम गई, वह अचानक किसी हरकत या ऊँची आवाज़ से उस दुख भरी उपस्थिति को ठेस पहुँचाने से डरती हुई प्रतीत होती थी जो कभी उससे अलग नहीं हुई थी। लेकिन, जब मैंने उसका क्रेप का लबादा देखा, तो मुझे सबसे अधिक आश्चर्य हुआ - जो मुझे पेरिस में कभी नहीं सूझा था - कि मेरे सामने अब मेरी माँ नहीं, बल्कि मेरी दादी थीं। जैसे राजपरिवारों में मुखिया की मृत्यु के बाद उनका पुत्र उनकी उपाधि धारण करता है और ड्यूक डी'ऑरलियन्स, प्रिंस डी टैरेंटे या प्रिंस डेस लाउम्स से फ्रांस का राजा, ड्यूक डी ला ट्रेमोइल या ड्यूक डी गुएरमेंटेस बन जाता है, उसी प्रकार एक भिन्न श्रेणी और अधिक दूर के वंश के उत्तराधिकार द्वारा, मृत व्यक्ति जीवित व्यक्ति पर अधिकार कर लेता है, जो उसकी छवि और उत्तराधिकारी बनकर उसके अधूरे जीवन को आगे बढ़ाता है। शायद माँ जैसी पुत्री के लिए, अपनी माँ की मृत्यु के बाद का गहरा दुःख केवल उसके भीतर के भ्रम को थोड़ा जल्दी तोड़ देता है, रूपांतरण को गति देता है और उस व्यक्ति के प्रकट होने में मदद करता है जिसे हम अपने भीतर धारण करते हैं और जो समय और स्थान को नष्ट करने वाले इस संकट के कारण ही धीरे-धीरे प्रकट नहीं हुआ होता। शायद, जो अब हमारे बीच नहीं हैं, उनके शोक में एक

प्रकार का आत्म-सुझाव होता है जो अंततः हमारे चेहरे पर उन समानताओं को उजागर करता है जो संभवतः हममें पहले से ही मौजूद थीं, और सबसे बढ़कर हमारी सबसे विशिष्ट व्यक्तिगत गतिविधियों (मेरी माँ में, उनकी समझदारी, उनके पिता से विरासत में मिली व्यंग्यात्मक प्रसन्नता) का रुक जाना, जिन्हें हम प्रियतम के जीवित रहते हुए, उनके कष्टों के बावजूद भी, करने से नहीं हिचकिचाते थे, और जो उन गुणों को संतुलित करती थीं जो हमें विशेष रूप से उनसे प्राप्त हुए थे। उनके चले जाने के बाद, हमें अलग होने में संकोच होना चाहिए, हम केवल उनकी छवि की प्रशंसा करने लगते हैं, जो हम स्वयं पहले से ही थे, बस किसी और चीज़ के साथ मिश्रित, और जो हम भविष्य में विशेष रूप से होंगे। इसी अर्थ में (और उस दूसरे, इतने अस्पष्ट, इतने झूठे अर्थ में नहीं, जिसमें इस वाक्यांश का आमतौर पर प्रयोग किया जाता है) हम कह सकते हैं कि मृत्यु व्यर्थ नहीं है, कि मृत व्यक्ति हम पर अपना प्रभाव बनाए रखता है। वह जीवित व्यक्ति से भी अधिक प्रतिक्रिया करता है क्योंकि, सच्ची वास्तविकता केवल मन द्वारा ही खोजी जा सकती है, जो एक आध्यात्मिक क्रिया का विषय है, इसलिए हम केवल उन्हीं चीजों का सच्चा ज्ञान प्राप्त करते हैं जिन्हें हमें विचार द्वारा नए सिरे से सृजित करना पड़ता है, वे चीजें जो रोजमर्रा की जिंदगी में हमसे छिपी रहती हैं... अंत में, अपने मृतकों के शोक में हम उन चीजों की अंधभक्ति करते हैं जो उन्हें पसंद थीं। मेरी माँ न केवल मेरी दादी के थैले से अलग नहीं हो सकती थीं, जो नीलम और हीरे जड़े होने से भी अधिक कीमती था, न ही उनके मफ से, न ही उन सभी वस्त्रों से जो उनकी व्यक्तिगत समानता को बढ़ाते थे, बल्कि श्रीमती डी सेविग्ने की उन पुस्तकों से भी अलग नहीं हो सकती थीं जिन्हें मेरी दादी हर जगह अपने साथ ले जाती थीं, जिनकी प्रतियाँ मेरी माँ पत्रों की मूल पांडुलिपि के बदले भी नहीं देतीं। वह अक्सर मेरी दादी को चिढ़ाती थीं जो श्रीमती डी सेविग्ने या श्रीमती डी ब्यूसेर्जेंट के किसी वाक्य का उल्लेख किए बिना उन्हें कभी पत्र नहीं लिखती थीं। बालबेक पहुँचने से पहले माँ से मुझे जो तीन पत्र मिले, उनमें से प्रत्येक में उन्होंने श्रीमती डी सेविग्ने के कथन उद्धृत किए थे, मानो वे तीनों पत्र उन्होंने मुझे नहीं बल्कि मेरी दादी ने उन्हें लिखे हों। उन्हें तुरंत मोर्चे पर जाना था ताकि वे उस समुद्र तट को देख सकें जिसका ज़िक्र मेरी दादी रोज़ अपने पत्रों में करती थीं। अपनी माँ की छाता लिए, मैंने उन्हें अपनी खिड़की से आगे बढ़ते देखा, एक सांवली आकृति, दबे हुए, श्रद्धापूर्ण कदमों से, उस रेत पर जिस पर उनके प्रियजनों के पैर पहले पड़ चुके थे,

और ऐसा लग रहा था मानो वे किसी शव को खोजने जा रही हों जिसे लहरें उनके पैरों के पास फेंक देंगी। ताकि उन्हें अकेले भोजन न करना पड़े, मुझे उनके साथ नीचे जाना था। मुख्य मजिस्ट्रेट और बैरिस्टर की विधवा ने उनसे परिचय कराने का अनुरोध किया। मेरी दादी से जुड़ी हर चीज़ उनके लिए इतनी अनमोल थी कि वे बहुत भावुक हो गईं और मुख्य मजिस्ट्रेट की कही बातों को हमेशा कृतज्ञता के साथ याद करती रहीं। साथ ही, उन्हें इस बात का दुख और गुस्सा भी था कि वकील की पत्नी ने मृत व्यक्ति की याद में एक शब्द भी नहीं कहा। वास्तव में, मुख्य मजिस्ट्रेट को भी मेरी दादी की उतनी ही परवाह नहीं थी जितनी वकील की पत्नी को। एक के भावपूर्ण शब्द और दूसरे की चुप्पी, भले ही मेरी माँ को उनमें कितना भी अंतर लगता हो, मृतकों के प्रति हमारी उदासीनता को व्यक्त करने के दो अलग-अलग तरीके थे। लेकिन मुझे लगता है कि मेरी माँ को सबसे ज़्यादा सुकून उन शब्दों से मिला जिनमें मैंने अनजाने में ही अपने कुछ दुखों को उनके सामने प्रकट किया था। इससे माँ को खुशी मिली (भले ही उन्हें मुझसे कितना भी स्नेह था), ठीक वैसे ही जैसे हर उस चीज़ से जो हमारी दादी को हमारे दिलों में ज़िंदा रखती थी। इसके बाद मेरी माँ रोज़ नीचे जाकर समुद्र तट पर बैठ जातीं, ठीक वही करतीं जो उनकी माँ करती थीं, और अपनी माँ की दो पसंदीदा किताबें पढ़तीं: मैडम डी ब्यूसेर्जेंट के संस्मरण और मैडम डी सेविग्ने के पत्र। हम सभी की तरह, उन्हें भी मैडम डी सेविग्ने को 'स्पिरिचुअल मार्क्विज़' कहलाना उतना ही असहनीय लगता था जितना ला फॉन्टेन को 'ले बोनहोम' कहलाना। लेकिन जब पत्रों को पढ़ते हुए उनकी नज़र 'मेरी बेटी' शब्दों पर पड़ी, तो ऐसा लगा मानो वह अपनी माँ की आवाज़ सुन रही हों।

दुर्भाग्यवश, अपनी ऐसी ही एक तीर्थयात्रा के दौरान, जिसमें उन्हें कोई परेशान न करे, उनकी मुलाकात समुद्र तट पर कॉम्ब्रे की एक महिला से हुई, जो अपनी बेटियों के साथ आई थीं। उनका नाम, मुझे लगता है, मैडम पौसिन था। लेकिन हम सब उन्हें हमेशा 'सुंदर मछली का बर्तन' कहकर पुकारते थे, क्योंकि इसी मुहावरे को बार-बार दोहराकर वे अपनी बेटियों को आने वाली मुसीबतों के बारे में आगाह करती थीं। उदाहरण के लिए, अगर उनमें से कोई अपनी आँखें मल रही होती, तो वे कहतीं, "जब तुम्हें आँखों की बीमारी हो जाएगी, तो वह सचमुच एक बड़ी मुसीबत होगी।" उन्होंने दूर से ही मेरी माँ को धीरे-धीरे और उदास भाव से प्रणाम किया, जो संवेदना का नहीं, बल्कि उनके सामाजिक व्यवहार का प्रतीक था। हम

अपनी दादी को कभी खोते ही नहीं, या हमारे पास खुश रहने के अलावा और कोई कारण नहीं होता। कॉम्ब्रे में अपने बड़े बगीचे की चारदीवारी के भीतर अपेक्षाकृत एकांत जीवन जीते हुए, उन्हें कभी भी कुछ भी इतना नरम नहीं लगता था जितना उन्हें पसंद हो, और उन्होंने फ्रांसीसी भाषा के शब्दों और यहाँ तक कि उचित नामों को भी नरम बनाने की कोशिश की। उन्हें लगा कि चाशनी नापने वाले चांदी के चम्मच के लिए 'चम्मच' शब्द थोड़ा कठोर है, इसलिए उन्होंने 'स्पून' कहा। उन्हें डर था कि टेलीमाक के मधुर गायक बर्ट्रेंड डी फेनेलोन को सीधे-सीधे फेनेलोन कहकर उनकी भावनाओं को ठेस न पहुँचे—जैसा कि मैंने स्वयं स्पष्ट अंतरात्मा से कहा था, क्योंकि मेरा एक प्रिय और बुद्धिमान मित्र था, जो नेक और वीर था, जिसे जानने वाला कोई भी कभी नहीं भूल सकता—और मैंने हमेशा 'फेनेलोन' के अलावा कुछ नहीं कहा, क्योंकि मुझे लगता था कि तीखे उच्चारण से एक खास कोमलता आती है। मैडम पौसिन के दामाद, जिनका नाम मैं भूल गया हूँ, जो कॉम्ब्रे में वकील थे, तिजोरी का सारा सामान लेकर भाग गए और मेरे चाचा समेत कई लोगों से काफी बड़ी रकम लूट ली। लेकिन कॉम्ब्रे के अधिकांश लोग परिवार के बाकी सदस्यों के साथ इतने दोस्ताना थे कि कोई मनमुटाव नहीं हुआ और उनके पड़ोसियों ने केवल मैडम पौसिन के लिए खेद व्यक्त किया। वह कभी मेहमानों का स्वागत नहीं करती थी, लेकिन जब भी कोई उसकी बाड़ के पास से गुजरता, तो वे उसके पेड़ों की मनमोहक छाया को निहारने के लिए रुक जाते, जो वहाँ दिखाई देने वाली एकमात्र चीज़ थी। बालबेक में उसने हमें कोई परेशानी नहीं दी, जहाँ मेरी उससे केवल एक बार मुलाकात हुई, उस समय जब वह अपनी बेटी से, जो अपने नाखून चबा रही थी, कह रही थी: "जब ये सड़ने लगेंगे, तब तो बड़ी मुसीबत खड़ी हो जाएगी।"

जब माँ समुद्र तट पर बैठकर पढ़ रही थीं, मैं अपने कमरे में अकेला बैठा रहा। मुझे अपनी दादी के जीवन के अंतिम सप्ताह और उनसे जुड़ी हर बात याद आ रही थी, फ्लैट का वह बाहरी दरवाज़ा जो तब खुला रखा गया था जब मैं आखिरी बार उनके साथ बाहर गया था। इन सबके विपरीत, बाकी दुनिया लगभग अवास्तविक सी लग रही थी और मेरी पीड़ा ने उसमें मौजूद हर चीज़ को ज़हर बना दिया था। आखिरकार मेरी माँ ने मुझे बाहर जाने के लिए ज़ोर दिया। लेकिन हर कदम पर, कैसीनो का कोई भूला हुआ दृश्य, उस गली का दृश्य जिस पर, उनके तैयार होने का इंतज़ार करते हुए, उस पहली शाम को मैं डुगुए-ट्रूइन स्मारक तक चला

गया था, मुझे आगे बढ़ने से रोक रहा था, जैसे कोई तेज़ हवा जिससे लड़ना नामुमकिन हो; मैंने नज़रें नीचे कर लीं ताकि कुछ देख न सकूँ। और थोड़ी सी हिम्मत जुटाने के बाद मैं होटल की ओर वापस मुड़ा, उस होटल की ओर जहाँ मुझे पता था कि अब चाहे मैं कितना भी इंतज़ार कर लूँ, मुझे मेरी दादी नहीं मिलेंगी, जिन्हें मैंने वहाँ हमारे आने की शाम को पाया था। चूंकि मैं पहली बार घर से बाहर निकला था, इसलिए कई नौकर, जिन्हें मैंने अभी तक नहीं देखा था, मुझे उत्सुकता से देख रहे थे। होटल के प्रवेश द्वार पर ही एक युवा सेवक ने मेरा अभिवादन करने के लिए अपनी टोपी उतारी और तुरंत फिर से पहन ली। मैंने सोचा कि ऐमे ने, उनके ही शब्दों में, उसे मेरे साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करने का 'जिम्मेदारी सौंपा' था। लेकिन थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि जैसे ही कोई और होटल में दाखिल हुआ, उसने फिर से टोपी उतार दी। असल बात यह थी कि इस युवक का जीवन में टोपी उतारने और पहनने के अलावा कोई और काम नहीं था, और वह इसे बखूबी करता था। यह महसूस करने के बाद कि वह कुछ और करने में असमर्थ है और इस कला में निपुण है, उसने प्रतिदिन यथासंभव अभ्यास किया, जिससे उसे आगंतुकों से एक विवेकपूर्ण लेकिन व्यापक सम्मान प्राप्त हुआ, साथ ही हॉल के पोर्टर से भी उसे बहुत सम्मान मिला, जिस पर लड़कों को काम पर लगाने का कर्तव्य था और जिसने इस विलक्षण प्रतिभा वाले लड़के के आने से पहले कभी भी ऐसा कोई लड़का नहीं पाया था जिसे एक सप्ताह के भीतर सूचना न मिली हो, जिससे ऐमे बहुत आश्चर्यचकित होता था और अक्सर कहता था: "आखिरकार, उस काम में उन्हें केवल विनम्र होना होता है, जो इतना मुश्किल नहीं हो सकता।" प्रबंधक ने इसके अतिरिक्त यह भी अपेक्षा की कि उनमें वह हो जिसे वह 'अच्छी उपस्थिति' कहता था, जिसका अर्थ था कि वे अपने पदों से अनुपस्थित न रहें, या शायद उसने 'उपस्थिति' शब्द को व्यक्तिगत रूप-रंग के संदर्भ में सुना था। होटल के पीछे के लॉन का रूप बदल गया था। वहाँ कई फूलों की क्यारियाँ बना दी गई थीं और एक विदेशी झाड़ी के साथ-साथ उस सेवक को भी हटा दिया गया था, जो मेरी पिछली यात्रा के समय अपने सुडौल शरीर और अनोखे रंग के बालों के साथ होटल की शोभा बढ़ाता था। वह एक पोलिश काउंटेस के साथ चला गया था, जिसने उसे अपना सचिव बना लिया था। उसने अपने दो बड़े भाइयों और उनकी टाइपिस्ट बहन का अनुसरण किया था, जिन्हें अलग-अलग जाति और लिंग के लोगों ने होटल से निकाल दिया था, जो उनके आकर्षण से प्रभावित थे। अब

केवल सबसे छोटा भाई ही बचा था, जिसे कोई नहीं चाहता था, क्योंकि उसकी आँखें तिरछी थीं। जब पोलिश काउंटेस या अन्य दो भाइयों के संरक्षक बालबेक के होटल में आते थे, तो वह बहुत प्रसन्न होता था। हालाँकि वह अपने भाइयों से ईर्ष्या करता था, फिर भी वह उनसे स्नेह करता था और इस तरह साल में कुछ हफ्तों के लिए अपने पारिवारिक स्नेह को बनाए रख सकता था। क्या फॉन्टेव्रॉल्ट की मठाध्यक्षा, इस अवसर पर अपनी ननों को छोड़कर, लुई XIV द्वारा अपनी प्रेमिका, मैडम डी मोंटेस्पैन को दी जाने वाली आतिथ्य सत्कार में शामिल होने की आदी नहीं थीं? लड़का अभी बालबेक में प्रथम वर्ष में ही था; वह मुझे अभी तक नहीं जानता था, लेकिन अपने पुराने साथियों को मुझे संबोधित करते समय मेरे उपनाम के साथ 'महाशय' शब्द का प्रयोग करते हुए सुनकर, उसने भी शुरू से ही संतुष्टि के भाव से उनका अनुकरण किया, चाहे वह किसी ऐसे व्यक्ति से अपनी परिचितता प्रदर्शित कर रहा हो जिसे वह सुप्रसिद्ध समझता था, या उस रिवाज का पालन कर रहा हो जिसके बारे में उसने पाँच मिनट पहले तक कभी नहीं सुना था, लेकिन जिसे वह अनिवार्य रूप से निभाना आवश्यक समझता था। मैं अच्छी तरह समझ सकता था कि इस विशाल 'महल' में कुछ लोगों के लिए कितना आकर्षण हो सकता है। यह एक रंगमंच की तरह सजा हुआ था, और कलाकारों की एक बड़ी टीम ने इसे जीवंतता से भर दिया था। यद्यपि आगंतुक मात्र एक दर्शक मात्र था, फिर भी वह निरंतर प्रदर्शन में भाग ले रहा था, और यह उन रंगमंचों की तरह नहीं था जहाँ अभिनेता दर्शकों के बीच नाटक प्रस्तुत करते हैं, बल्कि ऐसा लग रहा था मानो दर्शक का जीवन मंच की भव्य साज-सज्जा के बीच चल रहा हो। लॉन-टेनिस खिलाड़ी सफेद फलालैन ब्लेज़र पहने आ सकता था, और कुली उसे पत्र सौंपने से पहले चांदी की कढ़ाई वाला नीला फ्रॉक कोट पहन लेता। यदि यह लॉन-टेनिस खिलाड़ी ऊपर जाने का विकल्प नहीं चुनता, तो भी वह अभिनेताओं के साथ उतना ही शामिल होता, क्योंकि उसके बगल में लिफ्ट को चलाने के लिए उसका परिचारक भी उतना ही भव्य वस्त्रों में सज-धज कर खड़ा होता था। प्रत्येक मंजिल के गलियारे अप्सरा जैसी सुंदर सेविकाओं के एक समूह को घेरे रहते थे, जो समुद्र के किनारे सुंदर दृश्यों की तरह दिखती थीं, और जिनके सादे कमरों में नारी सौंदर्य के प्रशंसक चालाकी से घूमते-फिरते पहुँचते थे। नीचे के तल पर, पुरुष प्रधानता हावी थी और नौकरों की अत्यधिक और सहज युवावस्था को देखते हुए, यह होटल एक प्रकार की यहूदी-ईसाई त्रासदी जैसा लग

रहा था जिसे मूर्त रूप दिया गया हो और जो निरंतर प्रदर्शित होती रहती हो। इसलिए जब मैंने उन्हें देखा, तो मैं स्वयं से ये पंक्तियाँ दोहराने से खुद को रोक नहीं पाया: प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के यहाँ एम. डी वोगुबर्ट के समय मेरे मन में आई रेसीन की पंक्तियाँ नहीं, बल्कि रेसीन की अन्य पंक्तियाँ, जो इस बार एस्तेर से नहीं बल्कि अथाली से ली गई थीं: क्योंकि हॉल के द्वार पर, जिसे सत्रहवीं शताब्दी में पोर्टिको कहा जाता था, युवा सेवकों की 'एक समृद्ध जाति' विशेष रूप से चाय के समय, रेसीन के गायन मंडलों के युवा इस्राएलियों की तरह एकत्रित होती थी। लेकिन मुझे विश्वास नहीं होता कि उनमें से कोई भी वह अस्पष्ट उत्तर दे सकता था जो जोआस अथाली को संतुष्ट करने के लिए देता है जब वह शिशु राजकुमार से पूछती है: "तो आपका पद क्या है?" क्योंकि उनके पास कुछ भी नहीं था। ज़्यादा से ज़्यादा, अगर उनमें से किसी से, जैसे कि नई रानी से, पूछा जाता: "लेकिन ये सारी जाति, इस जगह कैद होकर क्या करती है?" तो शायद वह कहता: "मैं भव्य समारोह देखता हूँ और अपना हिस्सा निभाता हूँ।" कभी-कभार कोई युवा साथी किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के पास जाता, फिर यह सुंदर युवती समूह में शामिल हो जाती, और जब तक चिंतनशील विश्राम का क्षण न होता, वे अपने व्यर्थ, श्रद्धापूर्ण, सजावटी, दैनिक अनुष्ठानों में लगे रहते। क्योंकि, अपने 'छुट्टी के दिन' को छोड़कर, 'दुनिया से अलग-थलग' पाले-पोसे गए और कभी दहलीज पार न करने वाले, वे अथाली के लेवियों के समान ही धार्मिक जीवन व्यतीत करते थे, और जब मैंने भव्य कालीनों से ढकी सीढ़ियों के नीचे खेल रहे उस 'युवा और वफादार समूह' को देखा, तो मेरा मन हुआ कि मैं खुद से पूछूँ कि क्या मैं बालबेक के ग्रैंड होटल में प्रवेश कर रहा हूँ या सुलेमान के मंदिर में।

मैं सीधे अपने कमरे में चली गई। मेरे विचार लगातार मेरी दादी की बीमारी के आखिरी दिनों की ओर लौट रहे थे, उनके कष्टों की ओर जिन्हें मैं फिर से जी रही थी, और उन्हें उस तत्व से और भी तीव्र कर रही थी जो दूसरों के कष्टों से भी अधिक असहनीय होता है, और जो हमारी निर्मम दया से और भी बढ़ जाता है; जब हम सोचते हैं कि हम केवल एक प्रिय मित्र के दर्द को फिर से जीवित कर रहे हैं, तो हमारी दया उन्हें बढ़ा देती है; लेकिन शायद हमारी दया ही सही है, पीड़ित की अपने कष्टों के प्रति स्वयं की चेतना से कहीं अधिक, क्योंकि वे अपने अस्तित्व की उस त्रासदी से अनजान होते हैं जिसे दया देखती है और शोक व्यक्त करती है। निश्चित रूप से मेरी दया को नई शक्ति मिलती और वह मेरी दादी के कष्टों से कहीं अधिक होती यदि

मुझे तब पता होता जो मुझे बहुत बाद में पता चला, कि मेरी दादी ने अपनी मृत्यु की पूर्व संध्या पर, एक क्षण के लिए होश में आकर और यह सुनिश्चित करने के बाद कि मैं कमरे में नहीं हूँ, माँ का हाथ पकड़ा था, और अपने बुखार से तर होंठों को उस पर रखकर कहा था: "अलविदा, मेरी बच्ची, हमेशा के लिए अलविदा।" और शायद यही वह स्मृति थी जिस पर मेरी माँ की निगाहें टिकी रहती थीं। फिर कुछ सुखद यादें मेरे मन में लौट आईं। वह मेरी दादी थीं और मैं उनका पोता। उनके चेहरे के भाव मानो किसी ऐसी भाषा में लिखे गए थे जो सिर्फ मेरे लिए थी; वह मेरे जीवन में सब कुछ थीं, बाकी लोग सिर्फ उनके साथ, उनके द्वारा दिए जाने वाले फैसले के साथ ही अस्तित्व में थे; लेकिन नहीं, हमारा रिश्ता इतना क्षणभंगुर था कि वह महज़ संयोग ही था। वह अब मुझे नहीं पहचानती थीं, मैं उन्हें फिर कभी नहीं देख पाऊँगा। हम सिर्फ एक-दूसरे के लिए नहीं बने थे, वह मेरे लिए एक अजनबी थीं। यह अजनबी उस समय मेरी आँखों के सामने सेंट-लूप द्वारा खींची गई उनकी तस्वीर में थी। माँ, जो अल्बर्टीन से मिल चुकी थीं, ने मुझसे उनसे मिलने की ज़िद की, क्योंकि उन्होंने मेरी दादी और मेरे बारे में अच्छी बातें कही थीं। इसलिए मैंने उनसे मिलने का समय तय किया। मैंने मैनेजर को बताया कि वह आ रही हैं, और उनसे कहा कि उन्हें ड्राइंग रूम में मेरा इंतज़ार करने दें। उन्होंने मुझे बताया कि वे उसे और उसकी सहेलियों को सालों से जानते थे, उनके 'शुद्धिकरण की उम्र' तक पहुँचने से बहुत पहले से, लेकिन होटल के बारे में उनके द्वारा कही गई कुछ बातों से वे नाराज़ थे। "अगर वे इस तरह बात करती हैं तो वे 'सभ्य' नहीं हो सकतीं। जब तक कि किसी ने उनकी बदनामी न की हो।" मुझे यह समझने में कोई कठिनाई नहीं हुई कि यहाँ 'शुद्धिकरण' का अर्थ 'किशोरावस्था' था। जब मैं नीचे जाकर अल्बर्टीन से मिलने का इंतज़ार कर रहा था, तो मेरी नज़रें उस तस्वीर पर टिकी हुई थीं, जैसे किसी तस्वीर को लगातार देखते रहने से वह धुंधली हो जाती है, सेंट-लूप द्वारा खींची गई उस तस्वीर पर, तभी अचानक मेरे मन में फिर से ख्याल आया: "यह दादी हैं, मैं उनका पोता हूँ" जैसे कोई खोया हुआ व्यक्ति अपना नाम याद करता है, जैसे कोई बीमार व्यक्ति अपना व्यक्तित्व बदल लेता है। फ्रांस्वा ने आकर मुझे बताया कि अल्बर्टीन वहाँ थी, और तस्वीर देखते ही बोली: "बेचारी मैडम; ये बिल्कुल उनकी छवि है, गाल पर तिल तक दिख रहा है; जिस दिन मार्क्विस ने उनकी तस्वीर ली थी, उस दिन उनकी तबीयत बहुत खराब थी, दो बार उनकी तबीयत बिगड़ चुकी थी। 'फ्रांस्वा, चाहे कुछ भी हो जाए,'

उन्होंने कहा, 'मेरे पोते को कभी मत बताना।' और उन्होंने ये बात अपने तक ही रखी, वो हमेशा दूसरों के साथ खुशमिजाज रहती थीं। हालाँकि, जब वो अकेली होती थीं, तो मुझे लगता था कि वो कभी-कभी थोड़ी उदास सी हो जाती थीं। लेकिन वो उदासी जल्दी ही दूर हो जाती थी। और फिर उन्होंने मुझसे कहा, 'अगर मुझे कुछ हो जाए, तो उनके पास मेरी एक तस्वीर होनी चाहिए। और मैंने अपनी जिंदगी में कभी कोई तस्वीर नहीं खिंचवाई।'" तो फिर उसने मुझे मार्किस के पास संदेश के साथ भेजा, और उसे यह बात किसी को नहीं बतानी थी कि यह उसी ने उससे पूछा था कि क्या वह उसकी तस्वीर खींच सकता है। लेकिन जब मैं वापस आया और उसे बताया कि वह तस्वीर खींच देगा, तो उसने अपना इरादा फिर से बदल दिया, क्योंकि वह बहुत बीमार लग रही थी। उसने मुझसे कहा, 'यह तो बिल्कुल तस्वीर न खिंचवाने से भी बदतर होगा।' लेकिन वह बहुत चतुर थी, और अंत में उसने उस बड़ी सी टोपी को इतनी अच्छी तरह से ढक लिया कि धूप से बाहर निकलने पर वह बिल्कुल भी दिखाई नहीं देती थी। वह उस तस्वीर को पाकर बहुत खुश थी, क्योंकि उस समय उसे नहीं लगता था कि वह बालबेक से कभी ज़िंदा वापस लौट पाएगी। मेरे उसे यह कहने का कोई फायदा नहीं था: 'मैडम, इस तरह बात करना ठीक नहीं है, मुझे मैडम को इस तरह बात करते सुनना पसंद नहीं है,' क्योंकि यह बात उसके दिमाग में बैठ चुकी थी। और, भगवान, कई दिन ऐसे भी थे जब वह कुछ भी नहीं खा पाती थी। इसीलिए वह महाशय को एम. ले मार्किस के साथ गाँव में भोजन करने के लिए भेजती थी। फिर, भोजन करने के बजाय, वह किताब पढ़ने का नाटक करती थी, और जैसे ही मार्किस की गाड़ी चलती, वह उठकर बिस्तर पर चली जाती थी। कुछ दिन वह मैडम को संदेश भेजना चाहती थी, कि वह समय पर आकर उससे मिल लें। और फिर उसे डर लगता था कि कहीं वह घबरा न जाएँ, क्योंकि उसने इस बारे में उनसे कुछ नहीं कहा था। 'यह उनके लिए बेहतर होगा' अपने पति के साथ रहने के लिए, क्या तुम नहीं समझ रही हो, फ्रांस्वा?' मेरी आँखों में देखते हुए, फ्रांस्वा ने अचानक मुझसे पूछा कि क्या मैं अस्वस्थ महसूस कर रही हूँ। मैंने कहा कि मैं अस्वस्थ नहीं हूँ; इस पर उसने कहा: "और तुम मुझसे बात करके मेरा समय बर्बाद कर रही हो। तुम्हारी मेहमान तो यहाँ काफी देर से है। मुझे नीचे जाकर उसे बताना होगा। वह यहाँ रहने लायक नहीं है। अरे, ऐसी चालाक औरत, वह अब तक चली गई होगी। उसे इंतज़ार करना पसंद नहीं है। अरे, आजकल, मैडमोजेल अल्बर्टीन,

वह तो बहुत ही शिष्ट है!" "तुम बिल्कुल गलत हो, वह बहुत ही सम्मानित महिला है, इस जगह के लिए बहुत ही सम्मानित। लेकिन जाओ और उसे बता दो कि मैं आज उससे नहीं मिल पाऊँगी।"

अगर फ्रांस्वा मुझे रोते हुए देख लेती तो वह कितनी करुणा भरी बातें कहती। मैंने खुद को उससे छिपा लिया। वरना वह भी मुझे सहानुभूति देती। लेकिन मैंने उसे अपनी सहानुभूति दी। हम खुद को उन बेचारी नौकरानियों की जगह पर नहीं रख पाते जो हमें रोते हुए नहीं देख सकतीं, मानो रोना हमारे लिए बुरा हो; या शायद उनके लिए बुरा हो, क्योंकि फ्रांस्वा बचपन में मुझसे कहा करती थी: "ऐसे मत रोओ, मुझे तुम्हें रोते हुए देखना अच्छा नहीं लगता।" हम आडंबरपूर्ण भाषा और अभिमानपूर्ण बातों को नापसंद करते हैं, हम गलत हैं, हम ग्रामीण जीवन की करुणा के प्रति अपने दिल बंद कर लेते हैं, उस कहानी के प्रति जो उस बेचारी नौकरानी ने सुनाई, जिसे शायद अन्यायपूर्वक चोरी के आरोप में निकाल दिया गया था, जो मौत की तरह पीली पड़ गई थी, अचानक इतनी विनम्र हो गई थी मानो आरोप लगना ही अपराध हो, अपने पिता की ईमानदारी, अपनी माँ के सिद्धांतों और अपनी दादी की सलाह का हवाला देते हुए। यह सच है कि वही नौकरानियाँ जो हमारे आँसू नहीं सह सकतीं, हमें निमोनिया होने देने में ज़रा भी संकोच नहीं करेंगी, क्योंकि नीचे वाली नौकरानी को ठंडी हवा पसंद है और खिड़कियाँ बंद करना उसके लिए उचित नहीं होगा। क्योंकि यह ज़रूरी है कि जो सही हैं, जैसे कि फ्रांस्वा, वे भी कभी-कभी गलत हों, ताकि न्याय असंभव हो जाए। नौकरानियों के मामूली सुख भी उनके मालिकों द्वारा या तो अस्वीकार कर दिए जाते हैं या उनका मज़ाक उड़ाया जाता है। क्योंकि यह हमेशा तुच्छ, मूर्खतापूर्ण भावुकतापूर्ण और अस्वच्छ होता है। और इसलिए, वे यह कहने की स्थिति में होते हैं: "ऐसा कैसे हो सकता है कि मैं पूरे साल में केवल यही एक चीज़ माँगती हूँ, और मुझे वह भी नहीं मिलती?" फिर भी मालिक उन्हें कुछ ऐसा करने की अनुमति दे देते हैं जो कहीं अधिक कठिन होता है, जो नौकरानियों के लिए - या उनके लिए - मूर्खतापूर्ण और खतरनाक नहीं होता। निश्चित रूप से, काँपती हुई, बेबस नौकरानी की विनम्रता, जो उस अपराध को स्वीकार करने के लिए तैयार है जो उसने नहीं किया है, यह कहते हुए कि "अगर आप चाहें तो मैं आज रात चली जाऊँगी," एक ऐसी चीज़ है जिसका कोई विरोध नहीं कर सकता। लेकिन हमें यह भी सीखना होगा कि

हम अपनी बातों की गंभीरता, भयावह मूर्खता, अपनी मातृवंश और परिवार के 'कैलयार्ड' की गरिमा के बावजूद, उस बूढ़ी रसोइया के सामने अविचलित न रहें, जो अपने जीवन और अपने पूर्वजों के सम्मान से सजी है, झाड़ू को राजदंड की तरह थामे, दुख भरी जूती पहने, सिसकियों से अपनी वाणी को दबाते हुए, गरिमा के साथ खड़ी है। उस दोपहर, मुझे इस तरह के दृश्य याद आए या मैंने कल्पना की, जिन्हें मैं हमारी बूढ़ी नौकरानी से जोड़ती थी, और तब से, अल्बर्टीन को वह जो भी नुकसान पहुंचा सकती थी, उसके बावजूद, मैंने फ्रांस्वा को स्नेह से प्यार किया, जो बेशक रुक-रुक कर होता था, लेकिन अत्यंत मजबूत प्रकार का था, वह प्रकार जो दया पर आधारित था।

सच कहूँ तो, उस दिन मैं अपनी दादी की तस्वीर को निहारते हुए बहुत पीड़ा में था। इसने मुझे बहुत परेशान किया। लेकिन शाम को मैनेजर के आने से जो तकलीफ हुई, वो उससे कहीं ज़्यादा थी। दादी के बारे में उनसे बात करने और उनके फिर से शोक व्यक्त करने के बाद, मैंने उन्हें कहते सुना (क्योंकि उन्हें गलत उच्चारण वाले शब्दों का इस्तेमाल करने में मज़ा आता था): "जैसे उस दिन हुआ था जब आपकी दादी को बेहोशी के दौरे पड़े थे, मैं आपको इसके बारे में बताना चाहता था, क्योंकि दूसरे मेहमानों की वजह से, आपको पता है, इससे इस जगह की बदनामी हो सकती थी। उन्हें उस शाम ही चले जाना चाहिए था। लेकिन उन्होंने मुझसे विनती की कि मैं इसके बारे में किसी को न बताऊँ और वादा किया कि उन्हें दोबारा बेहोशी के दौरे नहीं पड़ेंगे, या अगर पहली बार ऐसा हुआ तो वो चली जाएँगी। वेटर ने मुझे बताया कि उन्हें दोबारा बेहोशी के दौरे पड़े थे। लेकिन, भगवान, आप पुराने दोस्त थे जिन्हें हम खुश रखने की कोशिश करते हैं, और जब तक कोई शिकायत न करे।" और इस तरह मेरी दादी को बेहोशी के दौरे पड़ते थे जिनके बारे में उन्होंने मुझे कभी नहीं बताया था। शायद ठीक उसी क्षण जब मैं उसके साथ सबसे क्रूर व्यवहार कर रहा था, जब वह अपने दर्द के बीच भी अपना आपा बनाए रखने के लिए विवश थी, ताकि मुझे क्रोधित न करे, और अपनी नज़रें भी संजोए रखे, ताकि उसे होटल से बाहर न निकाल दिया जाए। 'सिंकप' एक ऐसा शब्द था, जिसे इस तरह उच्चारित करने पर मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी, जो शायद दूसरों पर लागू होने पर मुझे हास्यास्पद लगता, लेकिन अपनी विचित्र ध्वनिपूर्ण नवीनता में, एक मौलिक

बेमेल की तरह, इसने लंबे समय तक मुझमें सबसे दर्दनाक संवेदनाओं को जगाने की क्षमता बनाए रखी।

अगले दिन, माँ के कहने पर, मैं थोड़ी देर के लिए रेत पर, या यूँ कहें कि टीलों के बीच लेट गई, जहाँ रेत की परतों में छिपकर आराम मिलता है। मुझे पता था कि अल्बर्टीन और उसकी सहेलियाँ मुझे ढूँढ़ नहीं पाएँगी। मेरी झुकी हुई पलकों से बस एक ही तरह की रोशनी अंदर आ रही थी, गुलाबी रंग की, आँखों की भीतरी दीवारों की रोशनी। फिर वे पूरी तरह बंद हो गईं। तभी मेरी दादी मुझे एक कुर्सी पर बैठी दिखाई दीं। वे इतनी कमज़ोर थीं कि मानो किसी और से कमज़ोर लग रही हों। फिर भी मैं उनकी साँसें सुन सकती थी; बीच-बीच में वे इशारे करती थीं जिससे पता चलता था कि वे हमारी बातें समझ रही हैं, मेरे पिताजी और मेरी। लेकिन उन्हें बाहों में लेने की मेरी कोशिश बेकार गई, मैं उनकी आँखों में स्नेह की एक चिंगारी भी नहीं जगा सकी, उनके गालों पर लाली भी नहीं ला सकी। मानो वे खुद से ही बेखबर थीं, मानो वे मुझसे प्यार नहीं करतीं, मुझे जानती ही नहीं, शायद मुझे देखती भी नहीं। मैं उनकी उदासीनता, उनकी उदासी, उनके मौन आक्रोश के रहस्य को समझ नहीं पाई। मैंने अपने पिता को एक तरफ बुलाया। मैंने उनसे कहा, "आप देख सकते हैं, इसमें कोई शक नहीं कि वह सब कुछ पूरी तरह समझती है। यह जीवन की हूबहू नकल है। अगर आपकी चचेरी बहन यहाँ होती, जो मानती है कि मरे हुए लोग जीवित नहीं रहते। अरे, उसे मरे हुए एक साल से ज़्यादा हो गया है, और वह अभी भी जीवित है। लेकिन वह मुझे चुंबन क्यों नहीं दे रही?" "देखो, उसका सिर फिर से झुक गया है।" "लेकिन वह अभी चैंप्स-एलिसी जाना चाहती है।" "यह तो पागलपन है!" "क्या तुम्हें सच में लगता है कि इससे उसे कोई नुकसान हो सकता है, कि वह और मर सकती है? यह मुमकिन नहीं है कि वह अब मुझसे प्यार न करे। मैं उसे गले लगाता रहता हूँ, क्या वह कभी मुझ पर मुस्कुराएगी नहीं?" "आप क्या उम्मीद कर सकते हैं, जब लोग मर जाते हैं तो वे मर जाते हैं।"

कुछ दिनों बाद मैं सेंट-लूप द्वारा ली गई उनकी तस्वीर को देखकर प्रसन्न हुआ; इससे मुझे फ्रांस्वा द्वारा बताई गई बातें याद नहीं आईं, क्योंकि वह याद मेरे मन से कभी नहीं निकली थी और मैं उससे अभ्यस्त हो रहा था। लेकिन उस दिन उनके स्वास्थ्य की जो स्थिति मेरे मन में थी —इतनी गंभीर, इतनी कष्टदायक—उस तस्वीर में, मेरी दादी द्वारा अपनाई गई उन चालों का

लाभ उठाते हुए, जो मुझे उनके बारे में पता चलने के बाद भी धोखा देने में सफल रहीं, मुझे वह टोपी के नीचे, जिसने उनके चेहरे को आंशिक रूप से छिपा रखा था, इतनी चुस्त-दुरुस्त और बेफिक्र दिखाई दीं कि मुझे वह मेरी कल्पना से कम दुखी और बेहतर स्वास्थ्य में दिखीं। फिर भी, उनके गालों पर अनजाने में ही एक अलग ही भाव आ गया था, पीलापन लिए, मुरझाया हुआ, मानो किसी जानवर का चेहरा ऐसा हो जैसे उसे वध के लिए चुन लिया गया हो। मेरी दादी के चेहरे पर मानो मृत्युदंड का भाव था, एक अनैच्छिक उदासी, एक अनजाने में दुखद भाव, जो मुझसे अनसुना रह गया, लेकिन जिसने माँ को उस तस्वीर को कभी देखने से रोक दिया, वह तस्वीर जो उन्हें अपनी माँ की नहीं, बल्कि उनकी बीमारी की तस्वीर लगती थी, उस अपमान की तस्वीर जो बीमारी मेरी दादी के बेरहमी से पीड़ित चेहरे पर कर रही थी।

फिर एक दिन मैंने अल्बर्टीन को यह संदेश भेजने का निश्चय किया कि मैं उससे जल्द ही मिलूंगा। ऐसा इसलिए था क्योंकि भीषण और असमय गर्मी की एक सुबह, खेलते बच्चों की अनगिनत चीखें, नहाते लोगों की मस्ती, अखबार बेचने वालों की आवाजें, और अखबार विक्रेताओं की आवाजों ने मेरे लिए आग की लकीरों में, घूमती हुई, आपस में गुंथी हुई चमक में, उस झुलसा देने वाले समुद्र तट का चित्र बना दिया था, जिस पर छोटी-छोटी लहरें एक के बाद एक आकर अपनी ठंडक बिखेर रही थीं; फिर पानी की छप-छप के साथ एक संगीतमय संगीत शुरू हो गया, जिसके बीच वायलिन मधुमक्खियों के झुंड की तरह बज रहे थे जो समुद्र पर भटक गए हों। मुझे तुरंत अल्बर्टीन की हंसी फिर से सुनने, उसकी सहेलियों को देखने की तीव्र इच्छा हुई, लहरों के बीच उन लड़कियों को देखने की, जो मेरी स्मृति में बालबेक के अविभाज्य आकर्षण, उसकी विशिष्ट वनस्पति के रूप में बसी हुई थीं; मैंने अल्बर्टीन को फ्रांस्वा की एक चिट्ठी भेजने का निश्चय कर लिया था और अगले सप्ताह मिलने का समय तय कर लिया था। धीरे-धीरे उठती हुई समुद्र की लहरें, हर लहर के खुलने के साथ, क्रिस्टल की परतों में उस धुन को पूरी तरह से ढक लेती थीं, जिसके वाक्यांश एक-दूसरे से अलग प्रतीत होते थे, मानो इटली के गिरजाघर की छत पर नीले पोर्फिरी और झागदार जैस्पर की चोटियों के बीच वे देवदूत वीणा वादक हों। लेकिन जिस दिन अल्बर्टीन आई, मौसम फिर से उदास और ठंडा हो गया था, और तो और मुझे उसकी हंसी सुनने का भी मौका नहीं मिला; वह बहुत चिड़चिड़ी थी। उसने मुझसे कहा, "इस साल बालबेक बेहद नीरस है। मैं यहाँ ज़रूरत से

ज़्यादा नहीं रुकना चाहती। तुम्हें पता है, मैं ईस्टर से यहाँ हूँ, यानी एक महीने से ज़्यादा। यहाँ कोई नहीं है। तुम कल्पना कर सकते हो कि कितना मज़ा आ रहा है।" हाल ही में हुई बारिश और पल-पल बदलते आसमान के बावजूद, अल्बर्टीन को एप्रेविल तक छोड़ने के बाद (क्योंकि वह, उनके शब्दों में कहें तो, उस छोटे से तालाब, जहाँ श्रीमती बोंटेम्प्स का विला था, और पारविल, जहाँ रोज़मोंडे के परिवार ने उन्हें पेंशन पर रखा था, के बीच भाग-दौड़ कर रही थीं), मैं अकेले उस मुख्य सड़क की ओर चल पड़ा, जिस पर श्रीमती डी विलेपारिसिस की गाड़ी तब गई थी जब हम अपनी दादी के साथ घूमने गए थे; सूरज की तेज़ रोशनी के बावजूद, पानी के गड्ढे ज़मीन को दलदल बना रहे थे, और मुझे अपनी दादी की याद आ गई, जो पुराने दिनों में कीचड़ से सने बिना एक कदम भी नहीं चल पाती थीं। लेकिन सड़क पर पहुँचते ही मुझे एक अद्भुत नज़ारा देखने को मिला। अगस्त के महीने में जहाँ मैंने अपनी दादी के साथ केवल सेब के पेड़ों की हरी पत्तियाँ और उनका शांत स्वरूप देखा था, वहाँ दूर-दूर तक वे पूरी तरह खिले हुए थे, अपनी भव्यता में अद्भुत, उनके फूल कीचड़ में डूबे हुए थे, मानो वे अपने सबसे खूबसूरत गुलाबी रेशमी आवरण को खराब होने से बचाने की कोई परवाह नहीं कर रहे थे, जो सूरज की रोशनी में चमक रहा था; दूर क्षितिज पर स्थित समुद्र ने पेड़ों को जापानी प्रिंट जैसा दृश्य प्रदान किया; यदि मैं फूलों के बीच से आकाश को देखने के लिए अपना सिर उठाता, तो उसका शांत नीला रंग लगभग उग्र प्रतीत होता, ऐसा लगता जैसे पेड़ अपने स्वर्ग की विशालता को प्रकट करने के लिए अलग हो रहे हों। उस नीले आकाश के नीचे एक हल्की लेकिन ठंडी हवा गुलाबी फूलों के गुच्छों को धीरे से हिला रही थी। नीली चिड़ियाएँ आकर शाखाओं पर बैठ गईं और फूलों के बीच मंडराने लगीं, मानो किसी कला और रंगों के पारखी ने इस जीवंत सुंदरता को कृत्रिम रूप से बनाया हो। लेकिन इसे देखकर मन भर आता था कि कलाकार ने अपनी रचना को कितना भी निखारने की कोशिश की हो, ऐसा लगता था मानो ये सेब के पेड़ देश के मध्य में, किसानों की तरह, फ्रांस की किसी ऊँची सड़क पर स्वाभाविक रूप से मौजूद हों। फिर अचानक सूरज की किरणें बारिश की किरणों में तब्दील हो गईं; उन्होंने पूरे क्षितिज पर लकीरें बना दीं और सेब के पेड़ों की कतार को अपनी धूसर चादर में जकड़ लिया। लेकिन वे अपनी सुंदरता को, गुलाबी और खिले हुए, उस हवा में थामे रहे जो मूसलाधार बारिश के कारण बर्फीली हो गई थी: यह बसंत का एक दिन था।

अध्याय II

अल्बर्टीन के रहस्य—वे लड़कियाँ जिन्हें वह शीशे में प्रतिबिंबित देखती है—दूसरी महिला—लिफ्ट-बॉय—मैडम डी कैम्ब्रेमर—एम. निस्सिम बर्नार्ड के सुख—मोरेल के विचित्र चरित्र की रूपरेखा—एम. डी चार्लस वर्दुरिन परिवार के साथ भोजन करते हैं।

मुझे डर था कि इस एकांत यात्रा में मुझे जो आनंद मिला, वह मेरी दादी की यादों को धुंधला न कर दे, इसलिए मैंने उनके द्वारा झेली गई किसी बड़ी मानसिक पीड़ा के बारे में सोचकर उस स्मृति को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया; मेरी इस अपील के जवाब में, उस पीड़ा ने मेरे हृदय में स्वयं को स्थापित करने का प्रयास किया, वहाँ विशाल स्तंभ खड़े कर दिए; लेकिन मेरा हृदय निस्संदेह इसके लिए बहुत छोटा था, मुझमें इतना बड़ा दुख सहने की शक्ति नहीं थी, मेरा ध्यान उस क्षण भटक गया जब वह पूर्णता के करीब पहुँच रहा था, और उसके मेहराब आपस में जुड़ने से पहले ही ढह गए, जैसे समुद्र की लहरें अपनी पूर्ण वक्रता प्राप्त करने से पहले ही लड़खड़ाकर टूट जाती हैं।

फिर भी, सोते समय देखे गए सपनों से ही मुझे यह पता चल सकता था कि दादी की मृत्यु का मेरा दुख कम हो रहा था, क्योंकि सपनों में वे मेरे मन में उनके अस्तित्वहीन होने के विचार से कम दुखी दिखाई देती थीं। मैं उन्हें अभी भी बीमार देखती थी, लेकिन स्वास्थ्य लाभ की ओर अग्रसर, और उन्हें बेहतर स्वास्थ्य में पाती थी। और अगर वे अपने कष्टों का ज़िक्र भी करतीं, तो मैं उन्हें चूमकर चुप करा देती और उन्हें आश्वस्त करती कि वे अब पूरी तरह से ठीक हो चुकी हैं। मैं संशयवादियों को यह गवाही देना चाहती थी कि मृत्यु वास्तव में एक ऐसी बीमारी है जिससे इंसान ठीक हो जाता है। लेकिन, अब मुझे दादी में पुराने समय की वह भरपूर सहजता नहीं दिखाई देती थी। उनके शब्द एक कमज़ोर, विनम्र प्रतिक्रिया मात्र थे, लगभग मेरे शब्दों की प्रतिध्वनि मात्र; वे मेरे अपने विचारों का प्रतिबिंब मात्र थीं।

मुझमें अभी भी किसी भी तरह की नई शारीरिक इच्छा जागृत नहीं हो रही थी, फिर भी अल्बर्टीन मुझमें खुशी की चाह जगाने लगी थी। साझा स्नेह के कुछ सपने, जो हमेशा हमारे मन में तैरते रहते हैं, उस स्त्री की यादों से जुड़ जाते हैं (बशर्ते कि वे यादें थोड़ी धुंधली हो गई हों) जिसके साथ हमने सुख का अनुभव किया था। इस भावना ने मुझे अल्बर्टीन के चेहरे के कुछ

पहलू याद दिला दिए, जो अधिक सौम्य, कम चंचल और शारीरिक इच्छा से उत्पन्न होने वाले भावों से बिल्कुल अलग थे; और चूंकि यह इच्छा उस चाहत से कम तीव्र थी, इसलिए मैं खुशी-खुशी इसे अगली सर्दियों तक टाल देता, अल्बर्टीन के जाने से पहले बालबेक में उससे दोबारा मिलने की कोशिश किए बिना। लेकिन तीव्र शोक के बीच भी शारीरिक इच्छा फिर से जाग उठती है। अपने बिस्तर से, जहाँ मुझे हर दिन घंटों आराम करना पड़ता था, मैं अल्बर्टीन के आने और हमारे पुराने मनोरंजन को फिर से शुरू करने के लिए तरस रहा था। क्या हम नहीं देखते कि जिस कमरे में उन्होंने अपना बच्चा खोया है, उसी कमरे में उसके माता-पिता जल्द ही फिर से एक साथ आकर उस नन्हे फरिश्ते को एक छोटा भाई देते हैं? मैंने उस दिन के समुद्र को देखने के लिए खिड़की पर जाकर इस इच्छा से अपना ध्यान हटाने की कोशिश की। पिछले वर्ष की तरह, समुद्र एक दिन से दूसरे दिन तक शायद ही कभी एक जैसे होते थे। हालाँकि, वे उस पहले वर्ष के समुद्रों से बिल्कुल भी मिलते-जुलते नहीं थे, चाहे इसका कारण यह हो कि अब वसंत ऋतु थी जिसमें तूफान आते थे, या फिर इसलिए कि भले ही मैं पहले की तरह उसी समय आया होता, अलग और अधिक परिवर्तनशील मौसम ने शायद मुझे इस तट पर कुछ ऐसे समुद्रों को देखने से हतोत्साहित किया होता, जो सुस्त, धुंधले और नाजुक थे, जिन्हें मैंने लंबे, झुलसा देने वाले दिनों में समुद्र तट पर सोए हुए देखा था, उनके नीले रंग के सीने केवल हल्की सी धड़कन के साथ हिलते हुए, या जैसा कि सबसे अधिक संभावना थी, क्योंकि मेरी आँखें, जिन्हें एल्स्टिर ने उन तत्वों को ठीक से धारण करना सिखाया था जिन्हें मैंने पहले जानबूझकर अस्वीकार कर दिया था, अब घंटों तक उन चीजों को निहारती रहती थीं जिन्हें वे पिछले वर्ष देखने में असमर्थ थीं। वह अंतर जो तब मुझे श्रीमती के साथ की जाने वाली ग्रामीण यात्राओं के बीच इतनी तीव्रता से प्रभावित करता था... डी विलेपारिसिस और उस शाश्वत सागर की यह निकटता, जो तरल, दुर्गम और पौराणिक थी, मेरे लिए अब अस्तित्वहीन हो गई थी। और अब ऐसे दिन भी आते थे जब इसके विपरीत, समुद्र स्वयं लगभग ग्रामीण जैसा प्रतीत होता था। जब कभी-कभार ही मौसम सुहावना होता था, तो गर्मी से पानी पर धूल भरी सफेद लकीर बन जाती थी, मानो किसी ग्रामीण इलाके में हो, जिसके अंत में एक मछली पकड़ने वाली नाव का नुकीला मस्तूल किसी गाँव के शिखर की तरह खड़ा होता था। दूर एक टगबोट, जिसका केवल चिमनी ही दिखाई देता था, खेतों के बीच किसी कारखाने की तरह

धुआँ छोड़ रही थी, जबकि क्षितिज के सामने सफेद रंग का एक उभरा हुआ धब्बा, जो शायद किसी पाल से बना हो, लेकिन देखने में ठोस प्लास्टर वाली सतह जैसा लगता था, किसी एकांत इमारत, जैसे अस्पताल या स्कूल की धूप से जगमगाती दीवार की याद दिलाता था। और जिन दिनों बादल और हवा सूरज के साथ होते थे, वे अगर निर्णय की त्रुटि को नहीं तो कम से कम पहली नज़र के भ्रम को, कल्पना में उत्पन्न होने वाले सुझाव को पूरा कर देते थे। देश में विभिन्न फसलों की निकटता से उत्पन्न होने वाले स्पष्ट रूप से परिभाषित रंग के धब्बों की तरह, समुद्र की सतह की खुरदरी, पीली, लगभग मैली अनियमितताएँ, तट, ढलानें जहाँ एक जहाज़ छिपा रहता था जिस पर फुर्तीले नाविकों का दल फसल काट रहा प्रतीत होता था - तूफानी दिनों में यह सब मिलकर समुद्र को उतना ही विविध, उतना ही ठोस, उतना ही खंडित, उतना ही जीवंत और उतना ही सभ्य बना देता था जितना कि पृथ्वी, जिस पर मैं अपनी उन सड़कों पर यात्रा करता था और जल्द ही फिर से करने वाला था। और एक बार, अपनी इच्छा को और रोक न पाने के कारण, बिस्तर पर वापस जाने के बजाय मैंने अपने कपड़े पहने और अल्बर्टीन को खोजने के लिए इनकार्विल की ओर चल पड़ा। मैं उससे डौविल चलने के लिए कहूँगा, जहाँ मैं फेटेर्न में श्रीमती डी कैम्ब्रेमर और ला रास्पेलियर में श्रीमती वर्दुरिन से मिलूँगा। इस बीच अल्बर्टीन समुद्र तट पर मेरा इंतज़ार करेगी और हम अंधेरा होने के बाद साथ लौटेंगे। मैं स्थानीय लाइट रेलगाड़ी में सफर करने गया, जिसके बारे में मैंने पिछली बार अल्बर्टीन और उसकी सहेलियों से जिले में प्रचलित सभी उपनाम जान लिए थे। इसे अनगिनत घुमावों के कारण ट्विस्टर, ट्रेन के न रुकने के कारण क्रॉलर, लोगों को पटरी से हटाने के लिए बजने वाले भयानक सायरन के कारण ट्रांसअटलांटिक, और डेकाविल और फनी (हालांकि यह कोई फनिक्युलर नहीं थी, लेकिन चट्टान पर चढ़ती थी, और हालांकि यह सख्ती से डेकाविल नहीं थी, लेकिन इसका गेज 60 सेंटीमीटर था), एंगरविल होते हुए बालबेक और ग्रेटेवास्ट के बीच चलने के कारण बी.ए.जी., और दक्षिणी नॉर्मंडी ट्रामवे की एक शाखा होने के कारण ट्राम और टी.एस.एन. के नाम से जाना जाता था। मैं एक ऐसे डिब्बे में बैठ गया जिसमें मैं अकेला था; वह दिन शानदार धूप से भरा था, लेकिन उमस भरी गर्मी थी; मैंने नीले पर्दे को नीचे खींच लिया जिससे सूरज की रोशनी की एक किरण को छोड़कर बाकी सब कुछ रुक गया। लेकिन तभी मुझे मेरी दादी की छवि दिखाई दी, ठीक वैसे ही जैसे वह पेरिस से बालबेक जाते समय ट्रेन में

बैठी थीं, जब मुझे बीयर पीते देख वह दुखी थीं और उन्होंने मेरी तरफ न देखकर, आंखें बंद करके सोने का नाटक किया था। मैं, जो बचपन में अपने दादाजी को ब्रांडी पीते देखकर उनकी पीड़ा सहन नहीं कर पाता था, मैंने उन्हें यह पीड़ा दी थी, न केवल इसलिए कि उन्होंने मुझे किसी और के कहने पर वह पेय स्वीकार करते देखा जिसे वह मेरे लिए हानिकारक मानती थीं, बल्कि इसलिए भी कि मैंने उन्हें मजबूर कर दिया था कि मुझे जी भरकर पीने दें। इससे भी बुरा यह था कि अपने आवेश और घुटन भरे दौरों से मैंने उन्हें मजबूर कर दिया था कि वे मेरी मदद करें, मुझे ऐसा करने की सलाह दें, उस परम समर्पण के साथ जिसकी मूक, निराश छवि अब मेरी स्मृति में है, उनकी आंखें उस दृश्य को भुलाने के लिए बंद थीं। इतनी जीवंत स्मृति ने, मानो किसी जादुई छड़ी के स्पर्श से, उस मनोदशा को वापस ला दिया जिसे मैं कुछ समय से धीरे-धीरे खोता जा रहा था; रोज़मोंडे से मेरा क्या लेना-देना था जब मेरे होंठ एक मृत स्त्री को चूमने की तीव्र इच्छा से व्याकुल थे, कैम्ब्रेमर्स और वर्दुरिन्स से मेरा क्या कहना था जब मेरा दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था क्योंकि हर पल उसमें मेरी दादी के दर्द की गूंज उठ रही थी। मैं डिब्बे में नहीं रह सकती थी। जैसे ही ट्रेन मेनविले-ला-टिंटुरिएर में रुकी, मैंने अपनी सारी योजनाएँ त्याग दीं और उतर गई। मेनविले ने हाल ही में काफी महत्व और अपनी एक अलग ही प्रतिष्ठा हासिल कर ली थी, क्योंकि कई कैसीनो के एक निदेशक, जो एक अय्याशी का धंधा चलाते थे, ने इसके ठीक बाहर, एक ऐसी भव्य और भद्दी शैली की दुकान खोली थी जो किसी भी अच्छे होटल को टक्कर दे सकती थी, एक ऐसा प्रतिष्ठान जिसके बारे में हम बाद में बात करेंगे, और संक्षेप में कहें तो, यह फ्रांस के तट पर 'विशिष्ट' लोगों के लिए बनाया गया पहला वेश्यालय था। यह इकलौता था। यह सच है कि हर बंदरगाह का अपना एक अड्डा होता है, लेकिन वह केवल नाविकों के लिए होता है, और उन लोगों के लिए जो प्राकृतिक दृश्यों के शौकीन हैं, यह देखना मनोरंजक होता है कि प्राचीन पल्ली गिरजाघर के ठीक बगल में, लगभग उतनी ही प्राचीन, पूजनीय और काई से ढकी हुई वेश्या, अपने बदनाम दरवाजे के बाहर खड़ी होकर मछली पकड़ने वाले बेड़े के लौटने की प्रतीक्षा कर रही है।

परिवारों के मुखियाओं के मेयर से किए गए विरोध के बावजूद, वहाँ बेशर्मी से बनाए गए उस चकाचौंध भरे 'मनोरंजन' के घर के पास से तेज़ी से गुज़रते हुए, मैं चट्टान पर पहुँचा और बालबेक की दिशा में उसके घुमावदार रास्तों पर चल पड़ा। मैंने काँटेदार झाड़ियों की पुकार

सुनी, पर बिना कोई प्रतिक्रिया दिए। फलते-फूलते सेब के पेड़ों के पड़ोसी, जो कमज़ोर आर्थिक स्थिति में थे, उन्हें ये झाड़ियाँ भद्दी लगती थीं, हालाँकि वे उन धनी शराब बनाने वालों की गुलाबी पंखुड़ियों वाली बेटियों के ताज़े रंग-रूप की तारीफ़ किए बिना नहीं रह सकते थे। वे जानते थे कि कम दहेज के साथ भी उनकी ज़्यादा माँग होती है, और वे अपने फटे-पुराने सफेद रंग में भी काफ़ी आकर्षक थीं।

मेरी वापसी पर, होटल के पोर्टर ने मुझे काले बॉर्डर वाला एक पत्र सौंपा, जिसमें मार्क्विस और मार्क्विसे डी गोनेविले, विस्काउंट और विस्काउंटेस डी एमफ्रेविले, कॉम्टे और कॉम्टेस डी बर्नेविले, मार्क्विस और मार्क्विसे डी ग्रेनकोर्ट, कॉम्टे डी अमेनोनकोर्ट, कॉम्टेस डी मेनविले, कॉम्टे और कॉम्टेस डी फ्रैंकेटोट, कॉम्टेस डी चावर्नी नी डी एगलेविले ने घोषणा करने का अनुरोध किया था, और जिससे मुझे अंततः समझ में आया कि इसे मुझे क्यों भेजा गया था जब मैंने मार्क्विसे डी कैम्ब्रेमर नी डू मेस निल ला गुइचार्ड, मार्क्विस और मार्क्विसे डी कैम्ब्रेमर के नाम देखे, और पाया कि मृतक, कैम्ब्रेमर परिवार की एक चचेरी बहन, का नाम एलियोनोर-यूफ्रेसी-हम्बर्टाइन डी कैम्ब्रेमर, कॉम्टेस डी क्रिकेटोट था। इस प्रांतीय परिवार के पूरे इतिहास में, जिसकी सूची घनी छपी पंक्तियों में भरी हुई थी, एक भी आम आदमी नहीं था, और न ही कोई ऐसा व्यक्ति था जिसके पास कोई ज्ञात उपाधि हो, बल्कि इस क्षेत्र के उन सभी कुलीनों की पूरी सूची थी जिन्होंने अपना नाम रोशन किया—और आस-पास के सभी रोचक स्थानों का नाम भी—अपने गाँव में, दरबार में, कभी-कभी थोड़े नीरस अंदाज़ में (कुल मिलाकर) अपने आनंदमय अंत की गूंज में गूंजाते हुए। अपने महल की छत की टाइलों या अपने पैरिश चर्च के खुरदुरे प्लास्टर वाले वस्त्रों में सजे, उनके झुके हुए सिर मुश्किल से मुख्य हॉल या भोज कक्ष की छत के ऊपर पहुँचते थे, और फिर केवल नॉर्मन लालटेन या काली मिर्च के डिब्बे जैसे बुर्ज के कबूतरखाने से खुद को ढकने के लिए, वे ऐसा आभास देते थे मानो उन्होंने पचास मील के दायरे में बिखरे या फैले सभी आकर्षक गाँवों को एकजुट होने का आह्वान किया हो, और उन्हें बिना किसी अनुपस्थिति या घुसपैठिए के, काले रंग से किनारी वाले कुलीन पत्र के संक्षिप्त, आयताकार प्रारूप पर एक सामूहिक गठन में प्रदर्शित किया हो।

मेरी माँ मैडम डी सेविग्ने के इस वाक्य पर विचार करते हुए अपने कमरे में ऊपर चली गई थीं: "मुझे उन लोगों में से कुछ भी नहीं दिखता जो मुझे तुमसे विचलित करने की कोशिश कर रहे

हैं; सच्चाई तो यह है कि वे मुझे तुम्हारे बारे में सोचने से रोकना चाहते हैं, और यह बात मुझे परेशान करती है।"—क्योंकि मुख्य मजिस्ट्रेट ने उनसे कहा था कि उन्हें कुछ और काम में व्यस्त रहना चाहिए। उन्होंने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा: "वह प्रिंसेस डी पार्म हैं!" जब मैंने देखा कि मजिस्ट्रेट ने जिस महिला की ओर मेरा ध्यान दिलाया था, वह महारानी से ज़रा भी मिलती-जुलती नहीं थी, तो मेरा डर दूर हो गया। लेकिन चूंकि उन्होंने मैडम डी लक्ज़मबर्ग से मिलने के बाद रात बिताने के लिए एक कमरा किराए पर लिया था, इसलिए उनके आने की खबर से कई लोग हर नए आने वाले को प्रिंसेस डी पार्म समझने लगे—और मुझ पर इसका ऐसा असर हुआ कि मैं जाकर अपने अटारी में खुद को बंद कर लिया।

मैं वहां अकेले नहीं रहना चाहती थी। अभी मुश्किल से चार बजे थे। मैंने फ्रांस्वा से कहा कि वह जाकर अल्बर्टीन को ढूंढ लाए, ताकि वह मेरे साथ बाकी दोपहर बिता सके।

मुझे लगता है कि यह कहना असत्य होगा कि अल्बर्टीन ने मुझमें जो पीड़ादायक और निरंतर अविश्वास पैदा किया, उसके लक्षण पहले से ही मौजूद थे, और उस अविश्वास का विशेष स्वरूप, जो स्पष्ट रूप से गोमोरन जैसा था, उसका उल्लेख करना भी अनुचित होगा। निश्चित रूप से, उस दोपहर भी—लेकिन यह पहली बार नहीं था—मैं प्रतीक्षा करते-करते चिंतित हो गया। फ्रांस्वा ने एक बार बोलना शुरू किया तो वह इतनी देर तक रुकी रही कि मैं निराश होने लगा। मैंने दीपक नहीं जलाया था। दिन का उजाला लगभग समाप्त हो चुका था। हवा से कैसीनो के ऊपर लगा झंडा फड़फड़ा रहा था। और, समुद्र तट की खामोशी में, जिस पर ज्वार चढ़ रहा था, और भी धीमी आवाज़ में, और इस बेचैन, अस्वाभाविक समय की परेशान करने वाली खालीपन को व्यक्त और बढ़ा रही एक आवाज़ की तरह, होटल के बाहर रुका हुआ एक छोटा सा बैरल ऑर्गन वियना वाल्ट्ज़ बजा रहा था। अंततः फ्रांस्वा आ गई, लेकिन उसके साथ कोई नहीं था। "मैंने पूरी जल्दी की, लेकिन वह नहीं आई क्योंकि उसे लगा कि वह उतनी सज-धज नहीं रही है। अगर उसे मेकअप और पाउडर लगाने में पाँच मिनट लगते, तो घड़ी के हिसाब से उसे एक घंटा लग जाता। यहाँ तो मानो इत्र की दुकान ही लग जाएगी। वह आ रही है, वह शीशे के पास खुद को संवारने के लिए रुक गई। मुझे लगा कि वह यहीं मिलेगी।" अल्बर्टीन के आने में अभी काफी समय था। लेकिन इस बार उसने जो खुशी और आकर्षण दिखाया, उससे मेरा दुख दूर हो गया। उसने मुझे बताया (जो उसने पिछले दिन कहा था,

उसके विपरीत) कि वह पूरे सीज़न के लिए यहीं रहेगी और मुझसे पूछा कि क्या हम पिछले साल की तरह रोज़ मिलने का इंतज़ाम नहीं कर सकते। मैंने उससे कहा कि इस समय मैं बहुत उदास हूँ और मैं उसे पेरिस की तरह आखिरी समय में बुलाना ज़्यादा पसंद करूँगा। "अगर कभी आपको चिंता हो या आपको मेरी ज़रूरत महसूस हो, तो मुझे बुलाने में संकोच न करें," उसने मुझसे कहा, "मैं तुरंत आ जाऊँगी, और अगर आपको होटल में हंगामा होने का डर न हो, तो मैं आपकी इच्छानुसार जितनी देर चाहूँ, रुकूँगी।" फ्रांस्वा, उसे मेरे पास लाते समय, उसी प्रसन्नता भरे भाव में थी जो वह तब दिखाती थी जब वह मुझे खुश करने के लिए हर संभव प्रयास करती थी और सफल हो जाती थी। लेकिन अल्बर्टीन ने उसकी खुशी में कोई योगदान नहीं दिया, और अगले ही दिन फ्रांस्वा ने मुझसे इस गंभीर टिप्पणी के साथ मुलाकात की: "महाशय, उस युवती से न मिलें। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि वह किस तरह की है, वह आपको मुसीबत में डाल देगी।" जब मैं अल्बर्टीन को दरवाजे तक छोड़ने गया, तो मैंने रोशन भोजन कक्ष में प्रिंसेस डी पार्म को देखा। मैंने बस एक नज़र उन पर डाली, इस बात का ध्यान रखते हुए कि कोई मुझे देख न ले। लेकिन मुझे कहना होगा कि मुझे उस शाही शिष्टाचार में एक खास शान नज़र आई जिसने मुझे गुएरमांटे परिवार के प्रति मुस्कुराने पर मजबूर कर दिया था। यह एक मूलभूत नियम है कि संप्रभु राजकुमार जहाँ भी हों, उन्हें घर जैसा ही लगता है, और यह नियम कुछ अप्रचलित और निरर्थक रीति-रिवाजों में भी झलकता है, जैसे कि मेज़बान को अपने घर में भी अपनी टोपी हाथ में लेकर चलना पड़ता है, यह दर्शाने के लिए कि वह अपने घर में नहीं बल्कि राजकुमार के घर में है। अब, प्रिंसेस डी पार्म ने शायद स्वयं यह विचार नहीं बनाया होगा, लेकिन वह इससे इतनी प्रभावित थीं कि उनके सभी कार्य, जो परिस्थितियों के अनुसार सहज रूप से किए गए थे, इसी ओर इशारा करते थे। जब वह मेज़ से उठीं, तो उन्होंने ऐमे को एक बड़ी टिप दी, मानो वह केवल उनके लिए ही वहाँ आए हों और एक देहाती घर छोड़ने से पहले, उस नौकर को पुरस्कृत कर रही हों जिसे उनकी सेवा के लिए नियुक्त किया गया था। वह केवल टिप तक ही नहीं रुकीं, बल्कि एक प्यारी सी मुस्कान के साथ उन्होंने ऐमे को कुछ दोस्ताना और प्रशंसा भरे शब्द कहे, जो उनकी माँ ने उन्हें दिए थे। एक पल और, और वह उन्हें बता देतीं कि जिस प्रकार होटल का प्रबंधन उत्तम था, उसी प्रकार नॉर्मंडी गुलाबों का बगीचा है और वह दुनिया के किसी भी अन्य देश की तुलना में फ्रांस

को अधिक पसंद करती हैं। राजकुमारी की उंगलियों से एक और सिक्का फिसल गया, जो उन्होंने शराब परोसने वाले वेटर को दिया। उन्होंने उसी को भेजा था और निरीक्षण के बाद सेनापति की तरह उससे अपनी संतुष्टि व्यक्त की। उसी क्षण लिफ्ट वाला लड़का उनके लिए एक संदेश लेकर ऊपर आया; उसे भी एक छोटा सा भाषण, एक मुस्कान और एक टिप मिली, ये सब उत्साहवर्धक और विनम्र शब्दों से भरा हुआ था, जिसका उद्देश्य उन्हें यह साबित करना था कि वह उन्हीं में से एक हैं। ऐमे, शराब परोसने वाले वेटर, लिफ्ट वाले लड़के और बाकी सभी को लगा कि जो व्यक्ति उन पर मुस्कुरा रहा है, उस पर मुस्कुराए बिना रहना असभ्य होगा, इसलिए वह तुरंत नौकरों के एक समूह से घिर गईं और उनसे सौहार्दपूर्ण ढंग से बातचीत करने लगीं; आलीशान होटलों में इस तरह का व्यवहार अपरिचित होने के कारण, वहाँ से गुजरने वाले लोग, उन्हें न जानते हुए, यह सोच रहे थे कि वे बालबेक की एक स्थायी निवासी को देख रहे हैं, जो अपनी साधारण पृष्ठभूमि या पेशेवर कारणों से (शायद वह शैंपेन के किसी एजेंट की पत्नी थीं) नौकरों से ज्यादा आलीशान मेहमानों से अलग नहीं थीं। मुझे परमा के महल की याद आई, उस राजकुमारी को दी जाने वाली सलाहों की याद आई, जो आंशिक रूप से धार्मिक और आंशिक रूप से राजनीतिक थीं। वह निम्न वर्गों के साथ ऐसा व्यवहार करती थी मानो उन्हें प्रसन्न करना उसका कर्तव्य हो ताकि एक दिन वह उन पर शासन कर सके। बल्कि ऐसा लगता था मानो वह पहले से ही शासन कर रही हो।

मैं फिर से ऊपर अपने कमरे में गया, लेकिन वहाँ मैं अकेला नहीं था। मुझे किसी के धीरे-धीरे शुमान का संगीत बजाने की आवाज़ सुनाई दी। बेशक, कभी-कभी ऐसा होता है कि लोग, यहाँ तक कि जिन्हें हम सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं, हमारे भीतर से निकलने वाली उदासी या चिड़चिड़ाहट से भर जाते हैं। फिर भी, एक निर्जीव वस्तु ऐसी है जो झुंझलाहट पैदा करने की ऐसी शक्ति रखती है जो किसी भी इंसान में कभी नहीं होगी: वह है पियानो।

अल्बर्टीन ने मुझे उन तारीखों का नोट बनाने को कहा था जब वह कुछ दिनों के लिए अपनी सहेलियों से मिलने जाती थी, और उनके पते भी लिखवा लिए थे, ताकि अगर मुझे किसी शाम उससे मिलने की ज़रूरत पड़े तो मैं उससे संपर्क कर सकूँ, क्योंकि उनमें से कोई भी बहुत दूर नहीं रहती थी। इसका मतलब यह था कि जब मैं उसे ढूंढने की कोशिश करता, एक सहेली से दूसरी सहेली के पास जाता, तो वह फूलों की मालाओं में और भी उलझती जाती। मुझे यह

स्वीकार करना होगा कि उसकी कई सहेलियों ने—मैं तब तक उससे प्यार नहीं करता था—मुझे अलग-अलग जगहों पर खुशी के पल दिए। ये मददगार सहेलियाँ मुझे बहुत ज़्यादा नहीं लगती थीं। लेकिन हाल ही में मैंने इस बारे में सोचा, उनके नाम मुझे याद आ गए। मैंने गिना कि उस एक मौसम में, एक दर्जन ने मुझे अपना क्षणिक स्नेह दिया। एक नाम बाद में मुझे याद आया, जिससे तेरह हो गए। तब, लगभग एक बच्चे जैसी क्रूरता में आनंद के साथ, मैं उस संख्या पर विचार करने लगा। अफसोस, मुझे एहसास हुआ कि मैं उन सभी में से पहली, अल्बर्टाइन को भूल गया था, जो अब अस्तित्व में नहीं थी और जिसने चौदहवीं को बनाया था। अपनी कहानी को आगे बढ़ाते हुए, मैंने उन लड़कियों के नाम और पते लिख लिए थे जिनके साथ मैं उसे उन दिनों में पा सकता था जब वह इनकार्विल में नहीं होती थी, लेकिन मन ही मन मैंने तय कर लिया था कि मैं उन दिनों को श्रीमती वर्दुरिन से मिलने में बिताऊँगा। वैसे भी, अलग-अलग महिलाओं के लिए हमारी चाहत की तीव्रता बदलती रहती है। एक शाम हम किसी महिला को अपनी नज़रों से ओझल नहीं होने दे सकते, और उसके बाद अगले एक-दो महीने तक वह हमारे मन में कभी नहीं आती। फिर बदलाव का नियम भी है, जिसके अध्ययन के लिए यह जगह उपयुक्त नहीं है, जिसके अनुसार, शारीरिक वासना के अत्यधिक उपयोग के बाद, जिस महिला की छवि हमारी क्षणिक बुढ़ापे की उदासी में बसी रहती है, उसे हम माथे पर एक चुंबन से ज़्यादा कुछ नहीं देते। जहाँ तक अल्बर्टीन की बात है, मैं उससे बहुत कम मिलता था, और केवल उन कुछ ही शामों में जब मुझे लगता था कि मैं उसके बिना नहीं रह सकता। जब फ्रांस्वा बालबेक से इतनी दूर होती कि वह उसे लेने नहीं जा सकती, तब मुझे उससे मिलने की इच्छा होती थी। ऐसे में मैं लिफ्ट वाले को एग्रेविले, ला सोन्ने, सेंट-फ्रिचॉक्स भेज देता था और उससे कहता था कि वह अपना काम थोड़ा जल्दी खत्म कर ले। वह मेरे कमरे में आता, लेकिन दरवाजा खुला छोड़ देता, क्योंकि हालांकि वह अपने काम के प्रति ईमानदार था, जो काफी कठिन था और जिसमें सुबह पांच बजे से लगातार सफाई करनी पड़ती थी, फिर भी वह कभी दरवाजा बंद करने की जहमत नहीं उठाता था। अगर कोई उससे कहता कि दरवाजा खुला है, तो वह वापस मुड़कर अपनी पूरी ताकत लगाकर उसे हल्के से धक्का दे देता था। अपने लोकतांत्रिक गौरव के साथ, जो उनमें कूटबद्ध था - एक ऐसा गौरव जो अधिक उदार पेशे में रहने वाले, इतने विशाल पेशे के सदस्यों को कभी नहीं मिलता

- जहाँ वकील, डॉक्टर और साहित्यकार अपने साथी वकील, डॉक्टर या साहित्यकार को केवल 'भाई' कहकर संबोधित करते हैं - वे, अकादमी जैसे सीमित संगठनों में प्रयुक्त होने वाले एक शब्द का प्रयोग करते हुए, लिफ्ट की देखरेख करने वाले एक सहायक के बारे में मुझसे कहते थे, "मैं अपने साथी को अपनी जगह काम पर लगा दूँगा।" इस गौरव ने उन्हें अपने 'वेतन' को बढ़ाने के उद्देश्य से छोटे-मोटे कामों के लिए पारिश्रमिक लेने से नहीं रोका, एक ऐसा तथ्य जिसके कारण फ्रांस्वा उनसे नाराज़ हो गई थी: "हाँ, पहली बार देखने पर तो आप बिना स्वीकारोक्ति के ही उन्हें धार्मिक संस्कार दे देंगे, लेकिन कुछ दिन ऐसे भी होते हैं जब उनकी ज़बान जेल के दरवाजे की तरह चिकनी हो जाती है। उन्हें बस आपके पैसे चाहिए।" यह वही श्रेणी थी जिसमें वह अक्सर यूलाली को शामिल करती थी, और अफसोस (जब मैं उस सारी मुसीबत के बारे में सोचती हूँ जो एक दिन इससे होने वाली थी), उसने अल्बर्टीन को भी उसी श्रेणी में डाल दिया था, क्योंकि उसने मुझे अक्सर अपनी गरीब दोस्त की तरफ से माँ से गहने और अन्य छोटे-मोटे उपहार माँगते देखा था, जिसे फ्रांस्वा ने अनुचित माना क्योंकि मैडम बोंटेम्प्स के पास केवल एक साधारण नौकरानी थी। कुछ ही देर बाद लिफ्ट-बॉय, जिसे मैं उसकी वर्दी कहती और वह अपनी कमीज़ कहता था, उतारकर, एक भूसे की टोपी पहने, हाथ में छड़ी लिए, एकदम सीधा खड़ा दिखाई दिया, क्योंकि उसकी माँ ने उसे कभी भी 'मजदूर वर्ग' या 'पेज बॉय' का पहनावा न अपनाने की चेतावनी दी थी। जैसे किताबों की बदौलत एक मेहनतकश आदमी के लिए सारा ज्ञान सुलभ हो जाता है, और काम खत्म होने पर वह मेहनतकश नहीं रह जाता, वैसे ही एक टोपी और दस्तानों की बदौलत लिफ्ट में सजगता का एहसास उस लिफ्टवाले को भी मिल गया, जिसने शाम को यात्रियों को ऊपर ले जाना बंद कर दिया था। वह खुद को एक ऐसे नौजवान सर्जन की तरह समझ रहा था जिसने अपना ओवरऑल उतार दिया हो, या वर्दी उतारे हुए सार्जेंट सेंट-लूप की तरह, शहर का एक आम नौजवान। वैसे तो उसमें महत्वाकांक्षा की कमी नहीं थी, न ही अपनी लिफ्ट चलाने की कला की, और वह आपको दो मंजिलों के बीच में रुकने नहीं देता था। लेकिन उसकी शब्दावली अधूरी थी। मैंने उसे महत्वाकांक्षी इसलिए माना क्योंकि उसने अपने नौकर के बारे में बात करते हुए, जिसके अधीन वह काम करता था, कहा: "मेरा नौकर," ठीक उसी लहजे में जैसे पेरिस में किसी ऐसे व्यक्ति ने कहा हो जिसका कोई निजी घर हो। लिफ्ट वाले

लड़के की शब्दावली की बात करें तो, यह अजीब बात है कि जो लड़का दिन में पचास बार लोगों को 'लिफ्ट' कहते सुनता है, वह खुद उसे 'लेफ्ट' के अलावा कभी कुछ और क्यों नहीं कहता। इस लड़के की कुछ आदतें मुझे बेहद परेशान करती थीं: मैं उससे जो भी कह रहा होता, वह बीच में ही टोकते हुए कहता, "मुझे तो ऐसा ही लगता है!" या "मैं कहता हूँ!" जिससे ऐसा लगता था कि या तो वह मेरी बात को इतना स्पष्ट बता रहा है कि कोई भी इसके बारे में सोच सकता था, या फिर वह सारा श्रेय खुद लेना चाहता है, मानो वही मेरा ध्यान इस विषय की ओर खींच रहा हो। "मुझे तो ऐसा ही लगता है!" या "मैं कहता हूँ!" ये शब्द उसके मुँह से हर दूसरे मिनट ज़ोर-ज़ोर से निकलते थे, उन बातों पर भी जिनके बारे में उसने कभी सोचा भी नहीं था। इस हरकत से मुझे इतना गुस्सा आता था कि मैं तुरंत उसे यह दिखाने के लिए उल्टा बोलने लगता था कि उसे इसके बारे में कुछ भी नहीं पता। लेकिन मेरे दूसरे कथन पर, जो पहले से मेल नहीं खाता था, उसने फिर भी उतने ही दृढ़ता से जवाब दिया, "मुझे तो ऐसा ही लगता है!" "मैं कहता हूँ!" मानो ये शब्द अनिवार्य ही हों। मुझे उसकी इस तरकीब को माफ़ करना भी मुश्किल लगा कि वह अपने पेशे से जुड़े कुछ शब्दों का इस्तेमाल करता था, जो शाब्दिक अर्थ में तो बिल्कुल सही लगते थे, लेकिन लाक्षणिक अर्थ में उनका इस्तेमाल एक कमज़ोर हास्य जैसा लगता था, जैसे कि 'पैडल मारना'। जब भी वह साइकिल से कहीं जाता, तो वह कभी इसका इस्तेमाल नहीं करता था। लेकिन अगर वह पैदल कहीं समय पर पहुँचने की जल्दी में होता, तो अपनी तेज़ चाल दिखाने के लिए वह कहता, "मैं कहूँगा कि मैंने तो पूरा पैडल मारा!" लिफ्ट देने वाला लड़का कद में छोटा, बेढंगा और दिखने में बिल्कुल भी अच्छा नहीं था। लेकिन जब भी कोई उससे किसी लंबे, पतले, सुंदर युवक के बारे में बात करता, तो वह कहता, "ओह, हाँ, मैं जानता हूँ, एक लड़का जो बिल्कुल मेरी ही लंबाई का है।" और एक दिन जब मैं उससे किसी संदेश का उत्तर लाने की उम्मीद कर रही थी, तभी ऊपर किसी के आने की आवाज़ सुनकर, मैंने अधीरता में अपने कमरे का दरवाज़ा खोल दिया और एंडिमियन की तरह सुंदर, अविश्वसनीय रूप से परिपूर्ण चेहरे वाले एक सेवक को देखा, जो एक ऐसी महिला के लिए संदेश ला रहा था जिसे मैं नहीं जानती थी। जब लिफ्ट वाला लौटा, तो मैंने उसे बताया कि मैं कितनी बेसब्री से उत्तर का इंतज़ार कर रही थी, और यह भी बताया कि मुझे लगा था कि मैंने उसे ऊपर आते सुना है, लेकिन वह होटल डी नॉर्मंडी का एक सेवक

निकला। "ओह, हाँ, मुझे पता है," उसने कहा, "उनके पास केवल एक ही है, मेरे कद-काठी का एक लड़का। उसका चेहरा भी बिल्कुल मेरे जैसा है, इसलिए हम अक्सर एक-दूसरे को पहचानने में गलती कर बैठते हैं; कोई भी सोचेगा कि वह मेरा भाई है।" अंत में, वह हमेशा ऐसा दिखाना चाहता था कि वह आपको पहली ही नज़र में पूरी तरह समझ गया है, जिसका मतलब था कि जैसे ही आप उससे कुछ करने को कहते, वह कहता: "हाँ, हाँ, हाँ, हाँ, मैं सब समझ गया," एक ऐसी सटीकता और बुद्धिमत्तापूर्ण लहजे में जिसने मुझे कुछ समय तक धोखा दिया; लेकिन जैसे-जैसे हम दूसरे लोगों को जानते हैं, वे तेजाब में डूबी धातु की तरह होते हैं, और हम देखते हैं कि वे धीरे-धीरे अपने अच्छे गुण (और कभी-कभी बुरे गुण भी) खो देते हैं। उसे निर्देश देने से पहले, मैंने देखा कि उसने दरवाज़ा खुला छोड़ दिया था; मैंने उसे इस ओर इशारा किया, मुझे डर था कि लोग हमारी बातें सुन लेंगे; उसने मेरी बात मान ली और दरवाज़े का गैप कम करके वापस आ गया। "आपकी मदद के लिए कुछ भी। लेकिन इस मंज़िल पर हम दोनों के अलावा कोई नहीं है।" तुरंत ही मैंने एक, फिर दूसरे, फिर तीसरे व्यक्ति को जाते हुए सुना। इससे मुझे थोड़ी झुंझलाहट हुई, एक तो इसलिए कि कहीं कोई हमारी बातें न सुन ले, और उससे भी ज़्यादा इसलिए कि मैंने देखा कि उसे ज़रा भी हैरानी नहीं हुई और यह एक बिल्कुल सामान्य घटना थी। "हाँ, बगल वाले कमरे की नौकरानी अपना सामान लेने जा रही होगी। अरे, इसकी कोई ज़रूरत नहीं है, बोतल भरने वाला अपनी चाबियाँ रख रहा है। नहीं, नहीं, कुछ नहीं है, आप जो चाहें कह सकते हैं, मेरा सहकर्मी बस ड्यूटी पर जा रहा है।" फिर, इन सभी लोगों के आने-जाने के जो कारण थे, उनसे मेरी यह आशंका कम नहीं हुई कि कहीं वे मेरी बातें सुन न लें। इसलिए, मेरे औपचारिक आदेश पर वह गया, दरवाज़ा बंद करने के लिए नहीं, जो इस साइकिल सवार के बस की बात नहीं थी, जिसे 'मोटर' की चाह थी, बल्कि उसे थोड़ा और पास धकेलने के लिए। "अब हम बिल्कुल शांत रहेंगे।" हम इतने शांत थे कि एक अमेरिकी महिला अंदर आ गई और अपने कमरे का नंबर गलत बताने के लिए माफ़ी मांगते हुए चली गई। "आपको इस युवती को अपने साथ वापस लाना है," मैंने उससे कहा, पहले जाकर पूरी ताकत से दरवाज़ा खटखटाने के बाद (जिससे एक और नौकर यह देखने आया कि कहीं कोई खिड़की तो नहीं खुली रह गई)। "आपको नाम याद है ना: मैडम अल्बर्टीन सिमोनट। खैर, यह लिफाफे पर लिखा है। आपको बस उनसे कहना है कि

यह मेरी तरफ से है। उन्हें आने में बहुत खुशी होगी," मैंने उन्हें प्रोत्साहित करने और अपने आत्मसम्मान को थोड़ा बचाने के लिए कहा। "मुझे भी यही लगता है!" "बिल्कुल नहीं, ऐसा मानने का ज़रा भी कारण नहीं है कि वह आने में खुश होगी। बर्नेविले से यहाँ आना बहुत झंझट भरा है।" "मैं समझता हूँ!" "तुम उसे अपने साथ आने के लिए कहोगे।" "जी हाँ, जी हाँ, जी हाँ, मैं पूरी तरह समझता हूँ," उसने उसी तीखे, सटीक लहजे में जवाब दिया, जो अब मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं आता था क्योंकि मैं जानता था कि वह लगभग मशीनी था और अपनी स्पष्टता के पीछे बहुत सारी अनिश्चितता और मूर्खता छुपाए हुए था। "तुम कब वापस आओगे?" "मेरे पास ज़्यादा समय नहीं है," लिफ्ट-बॉय ने कहा, जिसने क्रिया से पहले व्यक्तिगत सर्वनामों के दोहराव को रोकने वाले व्याकरणिक नियम का घोर उल्लंघन करते हुए सर्वनाम को पूरी तरह से छोड़ दिया। "मैं वहाँ ठीक से जा सकता हूँ। आज दोपहर छुट्टी रद्द कर दी गई थी, क्योंकि दोपहर के भोजन में बीस लोगों के लिए डिनर था। और आज मेरी ड्यूटी की छुट्टी थी। इसलिए अगर मैं आज शाम थोड़ा बाहर जाऊँ तो कोई बात नहीं। मैं अपनी साइकिल साथ ले जा रहा हूँ। मैं तुरंत पहुँच जाऊँगा।" एक घंटे बाद वह फिर प्रकट हुआ और बोला: "महाशय को इंतज़ार करना पड़ा, लेकिन युवती मेरे साथ आई है। वह नीचे है।" "ओह, बहुत-बहुत धन्यवाद; क्या चौकीदार मुझसे नाराज़ नहीं होगा?" "महाशय पॉल? उन्हें तो पता भी नहीं कि मैं कहाँ था। द्वारपाल खुद एक शब्द भी नहीं बोल सकता।" लेकिन एक बार, जब मैंने उससे कहा: "तुम्हें उसे अपने साथ ज़रूर लाना चाहिए," तो उसने मुस्कुराते हुए मुझसे कहा: "जानते हो, मुझे वह नहीं मिली। वह वहाँ नहीं है। और इंतज़ार नहीं कर सका; मुझे डर था कि कहीं मेरे उस सहकर्मी की तरह मेरा भी हाल न हो जाए जो होटल से लापता हो गया था" (क्योंकि लिफ्ट वाले लड़के ने, जो पहली बार किसी पेशे में शामिल होने पर 'फिर से शामिल होना' शब्द का इस्तेमाल करता था, अपनी गलती सुधारने के लिए या अपनी नौकरी को बचाने के लिए, या अगर पीड़ित कोई और होता तो और भी चालाकी और धोखे से कहने के लिए, 'मैं जानता हूँ कि वह लापता हो गया है' कहता था, "मैं डाकघर में फिर से शामिल होना चाहूँगा।")। उसकी मुस्कान किसी बुरी मंशा से नहीं, बल्कि झिझक के कारण थी। उसे लगा कि अपने अपराध को मज़ाक बनाकर वह उसकी गंभीरता को कम कर रहा है। इसी तरह, अगर उसने मुझसे कहा होता: "तुम्हें पता है, मुझे वह नहीं मिली," तो इसका मतलब यह नहीं

था कि वह सचमुच सोचता था कि मुझे यह पहले से ही पता है। इसके विपरीत, उसे पूरा यकीन था कि मुझे यह नहीं पता, और उससे भी बढ़कर, मुझे बताने से डर रहा था। इसलिए उसने 'तुम्हें पता है' कहा ताकि उस डर को दूर कर सके जो उसे उन शब्दों को बोलते समय सता रहा था जिनसे मुझे यह बात पता चलने वाली थी। हमें उन लोगों पर कभी गुस्सा नहीं करना चाहिए जो हमारी गलती सुनकर खिलखिलाकर हंसने लगते हैं। वे ऐसा इसलिए नहीं करते कि वे हम पर हंस रहे हैं, बल्कि इसलिए कि वे इस डर से कांप रहे हैं कि कहीं हम नाराज न हो जाएं। हमें हंसने वालों के प्रति दया और कोमलता दिखानी चाहिए। मानो किसी झटके की तरह, लिफ्ट-बॉय की चिंता ने उसके चेहरे पर न केवल गुस्से की लाली ला दी थी, बल्कि उसकी बोली में भी एक ऐसा बदलाव ला दिया था जो अचानक से जाना-पहचाना सा हो गया था। उन्होंने मुझे बताया कि अल्बर्टीन एग्रेविल में नहीं है, वह नौ बजे से पहले वापस नहीं आएगी, और अगर वह समय से पहले (जिसका अर्थ है, संयोगवश) वापस आ जाती है, तो मेरा संदेश उसे दे दिया जाएगा, और किसी भी हालत में वह सुबह एक बजे से पहले मेरे पास होगी।*

[*अनुवादक का नोट: सोडोम एट गोमोर्रे के फ्रेंच पाठ में, खंड I यहीं समाप्त होता है।]

लेकिन आज शाम को मेरा क्रूर अविश्वास ठोस रूप लेने लगा। जी नहीं, इसे छिपाने की कोशिश न करें, हालांकि यह घटना कुछ हफ्तों बाद घटी, लेकिन इसकी शुरुआत कॉटार्ड की एक टिप्पणी से हुई। अल्बर्टीन और उसके दोस्तों ने उस दिन मुझे इनकार्विल के कैसिनो में घसीटने की ज़िद की थी, जहाँ संयोगवश मैं उनके साथ नहीं जा पाता (क्योंकि मेरा इरादा श्रीमती वर्दुरिन से मिलने जाने का था, जिन्होंने मुझे बार-बार आमंत्रित किया था), अगर इनकार्विल में ही ट्राम खराब होने के कारण मैं वहाँ न रुका होता, जिसे ठीक करने में काफी समय लग जाता। जब मैं ट्राम के काम खत्म होने का इंतज़ार करते हुए इधर-उधर टहल रहा था, तभी अचानक मेरी मुलाकात डॉक्टर कॉटार्ड से हुई, जो इनकार्विल में एक मरीज़ को देखने आए थे। मैंने उनका अभिवादन करने में लगभग हिचकिचाहट महसूस की क्योंकि उन्होंने मेरे किसी भी पत्र का जवाब नहीं दिया था। लेकिन दोस्ती अलग-अलग लोगों में अलग-अलग तरह से व्यक्त होती है। उच्च वर्ग के लोगों की तरह व्यवहार के निश्चित नियमों का पालन करने की परवरिश न होने के कारण, कॉटार्ड अच्छे इरादों से भरा हुआ था, जिनके बारे

में किसी को पता नहीं था, यहाँ तक कि वह उनके अस्तित्व से भी इनकार करता था, जब तक कि उसे उन्हें प्रदर्शित करने का अवसर नहीं मिला। उसने क्षमा मांगी, वास्तव में उसे मेरे पत्र मिल गए थे, उसने मेरे ठिकाने की सूचना वर्दुरिन परिवार को दे दी थी, जो मुझसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक थे और जिनसे मिलने जाने का उसने मुझे आग्रह किया। उसने मुझे वहीं उनके पास ले जाने का प्रस्ताव भी रखा, क्योंकि वह रात के खाने के लिए वापस जाने वाली छोटी स्थानीय ट्रेन का इंतजार कर रहा था। चूंकि मैं हिचकिचा रही थी और उसकी ट्रेन में अभी भी कुछ समय था (क्योंकि निश्चित रूप से काफी देरी होने वाली थी), मैंने उसे अपने साथ छोटे से कैसीनो में चलने के लिए मना लिया, जो मुझे पहली बार आने की शाम को बहुत उदास लगा था, लेकिन अब लड़कियों के शोरगुल से भरा हुआ था, जो पुरुष साथियों की अनुपस्थिति में एक साथ नाच रही थीं। एंड्री फर्श पर फिसलती हुई मेरी ओर आई; मैं अभी कॉटार्ड के साथ वर्दुरिन्स के घर जाने वाला था, लेकिन तभी मैंने अल्बर्टीन के साथ रहने की तीव्र इच्छा से प्रेरित होकर उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया। दरअसल, मैंने अभी-अभी उसकी हंसी सुनी थी। और उसकी हंसी ने तुरंत ही उसके गुलाबी रंग के शरीर का आभास कराया, उन सुगंधित द्वारों का जिनसे होकर वह अभी-अभी गुजरी थी, और ऐसा लग रहा था मानो वह गेरानियम की खुशबू की तरह ही तीव्र, कामुक और भेदक हो, मानो अपने साथ उनके सूक्ष्म कणों को लिए फिर रही हो, जो उत्तेजक और रहस्यमय दोनों हों।

उन लड़कियों में से एक, जिसे मैं नहीं जानता था, पियानो पर बैठ गई, और एंड्री ने अल्बर्टीन को अपने साथ वाल्ट्ज़ करने के लिए आमंत्रित किया। यह सोचकर खुश होकर कि मैं इन लड़कियों के साथ इस छोटे से कैसिनो में ही रहूँगा, मैंने कॉटार्ड से कहा कि वे दोनों कितनी अच्छी तरह से नाच रही हैं। लेकिन उसने, एक डॉक्टर के पेशेवर दृष्टिकोण से और अपनी बदतमीज़ी से, इस तथ्य को नज़रअंदाज़ करते हुए कि वे मेरी दोस्त थीं, हालाँकि उसने मुझे उनसे हाथ मिलाते हुए ज़रूर देखा होगा, जवाब दिया: "हाँ, लेकिन माता-पिता अपनी बेटियों को ऐसी आदतें डालने की अनुमति देकर बहुत जल्दबाज़ी करते हैं। मैं तो अपनी बेटियों को यहाँ कभी नहीं आने दूँगा। लेकिन क्या वे सुंदर दिखती हैं? मैं उनके चेहरे नहीं देख पा रहा हूँ। अब देखो," उसने आगे कहा, धीरे-धीरे वाल्ट्ज़ कर रही अल्बर्टीन और एंड्री की ओर इशारा करते हुए, जो एक-दूसरे से कसकर चिपकी हुई थीं, "मैं अपना चश्मा भूल गया हूँ और मुझे

ठीक से दिखाई नहीं देता, लेकिन वे निश्चित रूप से बहुत उत्तेजित हैं। यह बात ज़्यादा लोगों को पता नहीं है कि महिलाओं को सबसे ज़्यादा उत्तेजना अपने स्तनों से मिलती है। और उनके, जैसा कि आप देख रहे हैं, पूरी तरह से एक-दूसरे को छू रहे हैं।" और सचमुच एंड्री और अल्बर्टीन के स्तनों का संपर्क अटूट था। मुझे नहीं पता कि उन्होंने कॉटार्ड की बात सुनी या समझी, लेकिन उन्होंने वाल्ट्ज़ करते हुए धीरे से संपर्क तोड़ा। उसी क्षण एंड्री ने अल्बर्टीन से कुछ कहा, जिस पर अल्बर्टीन हँसी, वही गहरी और मर्मस्पर्शी हँसी जो मैंने पहले सुनी थी। लेकिन इस बार मुझे उससे केवल दर्द का एहसास हुआ; ऐसा लग रहा था मानो अल्बर्टीन अपनी हँसी से कुछ प्रकट कर रही हो, जैसे एंड्री को किसी अनचाहे, गुप्त रोमांच का अनुभव करा रही हो। यह किसी ऐसे नृत्य समारोह की पहली या आखिरी धुन की तरह गूंजी जिसमें आपको आमंत्रित नहीं किया गया हो। मैं कॉटार्ड के साथ वहाँ से चला गया, उसकी बातों में खोया हुआ, बस कुछ क्षणों के लिए उस दृश्य के बारे में सोच रहा था जो मैंने अभी-अभी देखा था। इसका मतलब यह नहीं है कि कॉटार्ड की बातें दिलचस्प थीं। वास्तव में, उस क्षण वह कड़वी हो गई थीं, क्योंकि हमने अभी-अभी डॉक्टर डू बोलबोन को हमें देखे बिना आगे बढ़ते देखा था। वह बालबेक खाड़ी के दूसरी ओर कुछ समय बिताने आए थे, जहाँ उनकी बहुत मांग थी। हालाँकि कॉटार्ड छुट्टियों के दौरान पेशेवर काम न करने की बात कहते थे, फिर भी उन्होंने तटवर्ती इलाकों में चुनिंदा चिकित्सकों के साथ अपना काम बढ़ाने की उम्मीद की थी, लेकिन डु बोलबोन की उपस्थिति ने उनकी इस उम्मीद को निराशा में बदल दिया। बेशक, बालबेक के डॉक्टर कॉटार्ड के रास्ते में बाधा नहीं बन सकते थे। वह तो बस एक बेहद कर्तव्यनिष्ठ डॉक्टर थे, जिन्हें हर चीज का ज्ञान था, और त्वचा की हल्की सी भी जलन का जिक्र करने पर वे तुरंत ही जटिल फॉर्मूले में वह मरहम, लोशन या मलहम बता देते थे जिससे आप ठीक हो जाते। जैसा कि मैरी जिनेस्ट अपनी मधुर भाषा में कहा करती थीं, उन्हें घावों और ज़ख्मों को 'जादू से ठीक' करना आता था। लेकिन वे किसी भी तरह से प्रतिष्ठित नहीं थे। उन्होंने कॉटार्ड को थोड़ी सी झुंझलाहट तो ज़रूर पहुँचाई थी। कॉटार्ड, अब जब वे चिकित्सा विज्ञान में अपना पद छोड़ना चाहते थे, तो विषैले पदार्थों के उपचार में विशेषज्ञता हासिल करने लगे थे। चिकित्सा के क्षेत्र में ये खतरनाक नवाचार, दवा की दुकानों में लेबल बदलने का बहाना बन गए हैं, जहाँ हर दवा को उसके विकल्पों के विपरीत, किसी भी तरह से विषैला नहीं, बल्कि

विषनाशक बताया जाता है। यह एक प्रचलित नारा है; ज़्यादा से ज़्यादा, नीचे अस्पष्ट अक्षरों में, पुराने फैशन की धुंधली सी छाप के रूप में, यह आश्वासन बचा रहता है कि दवा को सावधानीपूर्वक कीटाणुरहित किया गया है। विषैले प्रभाव रोगी को भी आश्वस्त करते हैं, जो यह जानकर खुशी से भर जाता है कि उसका लकवा केवल एक विषैले विकार के कारण है। अब, एक ग्रैंड ड्यूक जो कुछ दिनों के लिए बालबेक आया था और जिसकी आँख बहुत सूजी हुई थी, उसने कॉटार्ड को बुलवाया, जिसने सौ-फ़्रैंक के नोटों के एक बंडल के बदले (प्रोफेसर इससे कम में किसी का इलाज करने से इनकार कर देता था), सूजन को विषैले रोग के कारण बताया और विषनाशक दवा लिख दी। सूजन कम न होने पर, ग्रैंड ड्यूक बालबेक के जनरल प्रैक्टिशनर के पास वापस गया, जिसने पाँच मिनट में धूल का एक कण निकाल दिया। अगले दिन, सूजन गायब हो गई। तंत्रिका संबंधी रोगों के एक प्रसिद्ध विशेषज्ञ, हालांकि, एक अधिक खतरनाक प्रतिद्वंद्वी थे। वे हंसमुख और हंसमुख स्वभाव के थे, क्योंकि एक तो तंत्रिका संबंधी बीमारियों से ग्रस्त लोगों की संगति में रहने के बावजूद उनका स्वास्थ्य उत्तम था, और दूसरा, वे अपने रोगियों को अपने हार्दिक 'शुभ प्रभात' और 'अलविदा' के हंसमुख अंदाज से आश्वस्त करते थे, और बाद में उन्हें सख्त जैकेट पहनाने के लिए अपनी मजबूत भुजाओं से उन्हें सहारा देने के लिए भी तत्पर रहते थे। फिर भी, जब भी आप किसी पार्टी में उनसे बात करते, चाहे राजनीति की बात हो या साहित्य की, वे आपको बड़े ध्यान से सुनते, मानो कह रहे हों: "यह सब क्या है?" बिना तुरंत कोई राय दिए, मानो यह परामर्श का विषय हो। लेकिन फिर भी, उनकी प्रतिभा चाहे जो भी हो, वे एक विशेषज्ञ थे। और इस प्रकार कॉटार्ड का सारा क्रोध डु बोल्बन पर उंडेल दिया गया। लेकिन मैंने जल्द ही वर्दुरिन के पेशेवर मित्र को अलविदा कहा और उनसे जल्द ही मिलने का वादा करके बालबेक लौट आया।

अल्बर्टीन और एंड्री के बारे में उनकी टिप्पणियों से मुझे जो नुकसान हुआ वह बहुत अधिक था, लेकिन इसके सबसे बुरे प्रभाव मुझे तुरंत महसूस नहीं हुए, जैसा कि उन प्रकार के जहर के साथ होता है जो एक निश्चित समय के बाद ही अपना असर दिखाना शुरू करते हैं।

लिफ्ट-बॉय के उसे ढूंढने जाने के बाद वाली रात को अल्बर्टीन, उसके आश्वासनों के बावजूद, नहीं लौटी। बेशक, व्यक्तिगत आकर्षण प्रेम का उतना आम कारण नहीं होता जितना कि इस तरह का कथन: "नहीं, आज शाम मैं खाली नहीं रहूँगा।" दोस्तों के साथ होने पर हम इस

कथन पर शायद ही ध्यान देते हैं; हम पूरी शाम खुश रहते हैं, कोई खास छवि हमारे मन में नहीं आती; उन घंटों के दौरान वह आवश्यक घोल में डूबी रहती है; जब हम घर लौटते हैं तो पाते हैं कि प्लेट पूरी तरह से विकसित और साफ है। हमें एहसास होता है कि जीवन अब वह जीवन नहीं रहा जिसे हम एक दिन पहले एक मामूली बात के लिए त्याग देते, क्योंकि, भले ही हम मृत्यु से न डरें, हम अब बिछड़ने के बारे में सोचने की हिम्मत भी नहीं कर पाते।

लेकिन सुबह एक बजे (लिफ्ट वाले ने जो समय सीमा तय की थी) नहीं, बल्कि तीन बजे से, मुझे अब पहले की तरह उसके आने की संभावना कम होने का दुख नहीं सता रहा था। यह निश्चितता कि वह अब नहीं आएगी, मुझे एक पूर्ण, ताज़गी भरी शांति प्रदान कर रही थी; यह रात बस उन सभी रातों की तरह थी जिनमें मैंने उसे नहीं देखा, यही मेरा शुरुआती विचार था। इसके बाद, यह सोच कि मैं उसे सुबह या किसी और दिन देख लूँगा, उस खालीपन पर उभरती हुई, जिसे मैंने विनम्रतापूर्वक स्वीकार कर लिया था, सुखद हो गई। कभी-कभी, प्रतीक्षा की इन रातों में, हमारा दुख किसी ऐसी दवा के सेवन के कारण होता है जिसका हमने सेवन किया होता है। पीड़ित व्यक्ति अपने लक्षणों को गलत समझकर सोचता है कि वह उस महिला के बारे में चिंतित है जो नहीं आती। ऐसे मामलों में, कुछ तंत्रिका संबंधी बीमारियों की तरह, बेचैनी की स्थिति की गलत व्याख्या से प्रेम उत्पन्न होता है। एक ऐसी व्याख्या जिसे सुधारना व्यर्थ है, कम से कम प्रेम के संदर्भ में, एक ऐसी भावना जो (चाहे उसका कारण कुछ भी हो) हमेशा गलत होती है।

अगले दिन, जब अल्बर्टीन ने मुझे लिखा कि वह अभी-अभी एप्रेविल लौटी है, इसलिए उसे मेरा पत्र समय पर नहीं मिला, और अगर संभव हो तो वह उस शाम मुझसे मिलने आ रही है, तो उसके पत्र के शब्दों के पीछे, ठीक वैसे ही जैसे उसने एक बार टेलीफोन पर मुझसे कहा था, मुझे लगा कि मैं सुखों की उपस्थिति, उन लोगों की उपस्थिति महसूस कर सकता हूँ जिन्हें वह मुझसे ज़्यादा महत्व देती थी। एक बार फिर, मैं यह जानने की पीड़ादायक तड़प से सिर से पैर तक हिल गया कि वह क्या कर रही होगी, उस छिपे हुए प्रेम से जो हम हमेशा अपने भीतर लिए रहते हैं; मुझे लगभग एक पल के लिए लगा कि यह मुझे अल्बर्टीन से जोड़ देगा, लेकिन यह एक स्थिर धड़कन बनकर रह गया, जिसकी अंतिम गूँज मशीन के चलने से पहले ही मिट गई।

बालबेक की अपनी पहली यात्रा के दौरान मैं अल्बर्टीन के चरित्र को समझने में असफल रहा था—और शायद एंड्री भी उतनी ही असफल रही थी। मैंने इसे तुच्छ समझा था, लेकिन मुझे यह नहीं पता था कि क्या हमारी संयुक्त प्रार्थनाएँ उसे हमारे साथ रोकने और उसे गार्डन पार्टी, गधे की सवारी, पिकनिक छोड़ने के लिए राजी करने में सफल नहीं हो सकतीं। बालबेक की अपनी दूसरी यात्रा के दौरान, मुझे संदेह होने लगा कि यह तुच्छता केवल दिखावा थी, गार्डन पार्टी महज़ एक बहाना थी, या शायद एक बनावटीपन। निम्नलिखित घटना में उसने अपने विभिन्न रूप दिखाए (मेरा तात्पर्य उस घटना से है जैसा मैंने देखा, उस शीशे के मेरे हिस्से से जो बिल्कुल पारदर्शी नहीं था, और मेरे पास यह जानने का कोई साधन नहीं था कि दूसरी तरफ क्या वास्तविकता थी)। अल्बर्टीन मुझसे बेहद भावुकता से स्नेह का इज़हार कर रही थी। उसने समय देखा क्योंकि उसे एक महिला से मिलने जाना था जो, ऐसा प्रतीत होता था, हर दोपहर पाँच बजे इन्फ्रेविल में घर पर होती थी। शक से परेशान और साथ ही साथ अस्वस्थ महसूस करते हुए, मैंने अल्बर्टीन से विनती की, मैंने उससे मेरे साथ रुकने का आग्रह किया। यह असंभव था (और वास्तव में वह केवल पाँच मिनट और रुक सकती थी) क्योंकि इससे वह महिला नाराज़ हो जाती जो बिल्कुल भी मेहमाननवाज नहीं थी, बहुत जल्दी संवेदनशील थी और, अल्बर्टीन के अनुसार, एक बड़ी मुसीबत थी। "लेकिन कॉल आसानी से काटी जा सकती है।" "नहीं, मेरी चाची ने हमेशा मुझसे कहा है कि सबसे ज़रूरी चीज़ शिष्टाचार है।" "लेकिन मैंने तुम्हें अक्सर असभ्य होते देखा है।" "यह एक ही बात नहीं है, वह महिला मुझसे नाराज़ हो जाएगी और मेरी चाची से मेरे बारे में बुरी-बुरी बातें कहेगी। मैं पहले से ही उसकी नज़रों में बुरी तरह से गिर चुकी हूँ। वह चाहती है कि मैं उससे मिलने जाऊँ।" "लेकिन अगर वह हर दिन घर पर रहती है?" यहाँ अल्बर्टीन को लगा कि वह पकड़ी गई है, इसलिए उसने अपनी बात बदल दी। "हाँ, वह हर दिन घर पर रहती है। लेकिन आज मैंने वहाँ कुछ और लड़कियों से मिलने का इंतज़ाम किया है। इस तरह कम बोरिंग होगा।" "तो फिर, अल्बर्टीन, तुम मुझसे ज़्यादा इस महिला और अपने दोस्तों को अहमियत देती हो, क्योंकि एक उबाऊ मुलाक़ात को टालने के बजाय, तुम मुझे यहाँ अकेला, बीमार और बदहाल छोड़ना पसंद करती हो?" "मुझे परवाह नहीं कि यह उबाऊ है। मैं उनके लिए जा रही हूँ। मैं उन्हें अपनी गाड़ी में घर ले आऊँगी। वरना उनके पास वापस आने का कोई रास्ता नहीं होगा।" मैंने अल्बर्टीन को बताया

कि इन्फ्रेविल से रात दस बजे तक ट्रेनें हैं। "बिल्कुल सही, लेकिन क्या तुम नहीं देखतीं, हो सकता है कि हमें रात के खाने पर रुकने के लिए कहा जाए। वह बहुत मेहमाननवाज हैं।" "ठीक है, तो तुम नहीं रुकोगी।" "मैं तो बस अपनी चाची को नाराज़ कर दूँगी।" "इसके अलावा, तुम उनके साथ खाना खा सकती हो और दस बजे वाली ट्रेन पकड़ सकती हो।" "यह तो बहुत मुश्किल है।" "तो फिर मैं शहर में खाना खाने और ट्रेन से वापस आने का कोई रास्ता नहीं ढूंढ पाऊंगी। लेकिन सुनो, अल्बर्टीन। हम कुछ बहुत ही सरल करने जा रहे हैं, मुझे लगता है कि ताजी हवा मुझे अच्छा महसूस कराएगी; चूंकि तुम अपनी मालकिन को नहीं छोड़ सकतीं, इसलिए मैं तुम्हारे साथ इन्फ्रेविल चलूंगी। घबराओ मत, मैं टूर एलिजाबेथ (मालकिन का विला) तक नहीं जाऊंगी, न तो मालकिन से मिलूंगी और न ही तुम्हारे दोस्तों से।" अल्बर्टीन चौंक गई जैसे उसे ज़ोर का झटका लगा हो। एक पल के लिए वह कुछ बोल नहीं पाई। उसने बताया कि समुद्र में नहाने से उसे कोई फायदा नहीं हो रहा था। "अगर तुम मुझे अपने साथ नहीं ले जाना चाहती?" "तुम ऐसा कैसे कह सकती हो, तुम जानती हो कि तुम्हारे साथ बाहर जाने से ज्यादा मुझे और कुछ पसंद नहीं।" अचानक ही उसकी रणनीति बदल गई थी। "चूंकि हम साथ में ड्राइव पर जा रहे हैं," उसने मुझसे कहा, "क्यों न दूसरी दिशा में चलें, हम साथ में खाना खा सकते हैं। कितना अच्छा होगा। आखिर, बालबेक का वह हिस्सा ज़्यादा सुंदर है। मैं इन्फ्रेविल और उन सभी छोटे-छोटे ढाबों से तंग आ चुकी हूँ।" "लेकिन अगर तुम अपनी चाची की सहेली से मिलने नहीं जाओगी तो वह नाराज़ हो जाएगी।" "ठीक है, उसे रहने दो।" "नहीं, लोगों को नाराज़ करना ठीक नहीं है।" "लेकिन उसे पता भी नहीं चलेगा कि मैं वहाँ नहीं हूँ, उसके पास तो हर दिन लोग आते हैं; मैं कल जा सकती हूँ, परसों जा सकती हूँ, अगले हफ्ते जा सकती हूँ, उसके अगले हफ्ते जा सकती हूँ, सब एक जैसा ही है।" "और तुम्हारे दोस्तों का क्या?" "ओह, उन्होंने मुझे बहुत बार नज़रअंदाज़ किया है। अब मेरी बारी है।" "लेकिन जिस तरफ से तुम जाने की सलाह दे रही हो, वहाँ से नौ बजे के बाद कोई ट्रेन नहीं है।" "अच्छा, इसमें क्या दिक्कत है? नौ लोग काफी होंगे। वैसे भी, वापस आने की चिंता करने की ज़रूरत ही नहीं है। हम हमेशा कोई गाड़ी या साइकिल ढूंढ लेंगे, अगर कुछ भी हो जाए तो हमारे पास चलने के लिए पैर तो हैं ही।" "हम हमेशा ढूंढ लेंगे, अल्बर्टीन, तुम कैसे जा रही हो! इन्फ्रेविल की तरफ, जहाँ गाँव एक-दूसरे से मिलते हैं, वहाँ तो ठीक है। लेकिन दूसरी तरफ, बात

बिल्कुल अलग है।" "वो रास्ता भी। मैं वादा करती हूँ कि तुम्हें सही सलामत वापस ले आऊँगी।" मुझे लगा कि अल्बर्टीन मेरे लिए अपनी पहले से बनाई हुई किसी योजना को छोड़ रही है जिसके बारे में उसने मुझे बताने से मना कर दिया था, और कोई और भी होगा जो मेरी तरह दुखी होगा। यह देखकर कि जो उसने करने का सोचा था वह मुमकिन नहीं था, क्योंकि मैंने उसके साथ जाने की ज़िद की थी, उसने वह योजना पूरी तरह से छोड़ दी। वह जानती थी कि नुकसान इतना बड़ा था कि उसे ठीक नहीं किया जा सकता था। क्योंकि, कई कामों में लगी रहने वाली सभी महिलाओं की तरह, उसके पास एक ऐसा हथियार था जो कभी नाकाम नहीं होता था: शक और ईर्ष्या। बेशक, वह उन्हें भड़काना नहीं चाहती थी, बल्कि इसके बिल्कुल उलट। लेकिन प्रेमी इतने शंकालु होते हैं कि वे झूठ को तुरंत भांप लेते हैं। परिणामस्वरूप, अल्बर्टीन, जो किसी और से कम नहीं थी, अपने अनुभव से जानती थी (बिना एक पल के भी यह सोचे कि उसका यह अनुभव ईर्ष्या के कारण था) कि किसी से मुलाकात न कर पाने पर भी वह उससे दोबारा मिलने के बारे में हमेशा आश्वस्त रह सकती थी। वह अजनबी जिसे वह मेरे लिए छोड़ रही थी, दुखी होगा, उसे और भी अधिक प्यार करेगा (हालाँकि अल्बर्टीन को यह नहीं पता था कि यही कारण था), और पीड़ा को लंबा न खींचने के लिए, अपनी मर्जी से उसके पास लौट आएगा, जैसा कि मैं करता। लेकिन मुझे न तो किसी और को दुख पहुँचाने की इच्छा थी, न खुद को थकाने की, और न ही जाँच-पड़ताल के उस भयानक, अंतहीन और जटिल रास्ते पर चलने की। "नहीं, अल्बर्टीन, मैं तुम्हारा मज़ा किरकिरा नहीं करना चाहती, इन्फ्रेविल में अपनी मालकिन के पास जाओ, या यूँ कहो कि जिससे तुम सच में मिलना चाहती हो, उसके पास जाओ, मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मेरे तुम्हारे साथ न आने का असली कारण यह है कि तुम नहीं चाहतीं, मेरे साथ जो सैर तुम करने वाली थीं, वह तुम्हारी योजना नहीं थी, जिसका सबूत यह है कि तुमने अनजाने में कम से कम पाँच बार अपनी ही बात का खंडन किया है।" बेचारी अल्बर्टीन को डर था कि उसकी अनजाने में की गई बातें कहीं ज़्यादा गंभीर थीं। उसे ठीक से पता नहीं था कि उसने मुझसे क्या झूठ बोला था: "यह बिल्कुल मुमकिन है कि मैंने अपनी ही बात का खंडन किया हो। समुद्र की हवा से मेरा दिमाग़ पूरी तरह खराब हो जाता है। मैं हमेशा चीज़ों को गलत नाम से पुकारती हूँ।" और (जिससे मुझे यकीन हो गया कि अब उसे मुझे यकीन दिलाने के लिए ज़्यादा मीठी बातों की

ज़रूरत नहीं पड़ेगी) यह सुनकर मेरे दिल में एक चुभन सी महसूस हुई, जो मैंने बस हल्के से कल्पना की थी। “ठीक है, बात पक्की हो गई, मैं चलती हूँ,” उसने उदास स्वर में कहा, समय देखे बिना नहीं कि कहीं वह दूसरे व्यक्ति के लिए देर तो नहीं कर रही, क्योंकि मैंने उसे मेरे साथ शाम न बिताने का बहाना दे दिया था। “तुम्हारा बहुत बुरा हाल है। मैंने तुम्हारे साथ एक अच्छी, लंबी शाम बिताने के लिए अपनी सारी योजनाएँ बदल दीं, और तुम ही हो जो इसे नहीं चाहती, और तुम मुझ पर झूठ बोलने का आरोप लगा रही हो। मैंने तुम्हें इतना क्रूर कभी नहीं देखा। समुद्र ही मेरी कब्र होगी। मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देखूँगी।” (इन शब्दों पर मेरा दिल उछल पड़ा, हालाँकि मुझे यकीन था कि वह अगले दिन फिर आएगी, जैसा कि वह आई भी।) “मैं खुद को डुबो दूँगी, मैं खुद को पानी में फेंक दूँगी।” “सैफो की तरह।” “लो, फिर से मेरा अपमान कर रही हो। तुम न केवल मेरे शब्दों पर, बल्कि मेरे कामों पर भी शक करती हो।” “लेकिन, मेरी जान, मेरा कोई गलत इरादा नहीं था, मैं कसम खाती हूँ, तुम जानती हो कि सैफो ने खुद को समुद्र में फेंक दिया था।” “हाँ, हाँ, तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है।” उसने देखा कि घड़ी में पूरे होने में बीस मिनट बाकी थे; उसे अपनी मुलाकात छूट जाने का डर था, और विदाई का सबसे छोटा तरीका चुनते हुए (जिसके लिए उसने अगले दिन मुझसे दोबारा मिलने आकर माफ़ी मांगी, शायद उस दिन मैं खाली नहीं था), वह रोते हुए कमरे से भाग निकली और टूटे हुए दिल से बोली, "हमेशा के लिए अलविदा।" और शायद उसका दिल सच में टूटा हुआ था। क्योंकि मैं उस समय उसके मन की बात उससे बेहतर जानता था, और साथ ही वह मुझसे ज़्यादा सख्त और खुद के प्रति ज़्यादा नरम थी, इसलिए शायद उसे यह डर भी था कि जिस तरह से उसने मुझे छोड़ा था, उसके बाद मैं उससे दोबारा मिलने से मना कर दूंगा। और मुझे लगता है कि वह मुझसे बहुत जुड़ी हुई थी, इतनी ज़्यादा कि मैं उससे ज़्यादा ईर्ष्या करता था।

कुछ दिनों बाद, बालबेक में, जब हम कैसिनो के बॉलरूम में थे, तभी ब्लोच की बहन और चचेरी बहन अंदर आईं। दोनों ही बेहद खूबसूरत लग रही थीं, लेकिन मैंने अपनी सहेलियों की वजह से उनसे अभिवादन नहीं किया, क्योंकि छोटी बहन, चचेरी बहन, उस अभिनेत्री के साथ रह रही थी, जिससे मेरी पहली मुलाकात के दौरान उसकी जान-पहचान हुई थी। इस स्कैंडल का ज़िक्र सुनकर एंड्री ने दबी आवाज़ में मुझसे कहा, "ओह! इस तरह की बातों में मैं

अल्बर्टीन जैसी ही हूँ; हम दोनों को इस तरह की बातें बिल्कुल पसंद नहीं हैं।" अल्बर्टीन ने सोफे पर मुझसे बात करने के लिए बैठते ही उस बदनाम जोड़ी से मुंह फेर लिया। हालांकि, मैंने गौर किया कि अपनी जगह बदलने से पहले, जब मैडम ब्लोच और उनकी चचेरी बहन आईं, तो मेरी सहेली की आँखों में अचानक एक गहरी नज़र चमक उठी, जो कभी-कभी इस चंचल लड़की के चेहरे को गंभीर, बल्कि एक संजीदा भाव दे देती थी, और उसके बाद उसे उदास कर देती थी। लेकिन अल्बर्टीन ने तुरंत मेरी ओर देखा, उसकी निगाहें फिर भी एकटक स्थिर और चिंतनशील थीं। मैडम ब्लोच और उनकी चचेरी बहन जोर-जोर से हंसते-चिल्लाते कमरे से चली गईं। मैंने अल्बर्टीन से पूछा कि क्या वह छोटी गोरी लड़की (जो अभिनेत्री के साथ इतनी घनिष्ठ थी) वही लड़की तो नहीं थी जिसने कल फूलों के जुलूस में पुरस्कार जीता था? अल्बर्टीन ने कहा, "मुझे नहीं पता, क्या उनमें से कोई गोरी है? मुझे मानना पड़ेगा कि उनमें मेरी कोई खास दिलचस्पी नहीं है, मैंने उन्हें कभी देखा भी नहीं है। क्या उनमें से कोई गोरी है?" उसने अपनी तीन सहेलियों से एक उदासीन भाव से पूछा। जब अल्बर्टीन को मोर्चे पर हर दिन मिलने वाले लोगों के बारे में यह अज्ञानता दिखाई गई, तो यह मुझे इतनी गहरी लगी कि यह वास्तविक नहीं लग रही थी। मैंने अल्बर्टीन से कहा, "ऐसा लग रहा था कि वे हमें ज़्यादा देख भी नहीं रही थीं।" शायद (इस धारणा पर, जो मैंने जानबूझकर नहीं बनाई थी, कि अल्बर्टीन अपनी ही जाति की लड़कियों को पसंद करती है) उसे किसी भी पछतावे से मुक्त करने के लिए, यह बताते हुए कि उसने इन लड़कियों का ध्यान आकर्षित नहीं किया था और आम तौर पर, यहाँ तक कि सबसे दुष्ट महिलाओं के लिए भी अनजान लड़कियों में दिलचस्पी लेना सामान्य बात नहीं है। अल्बर्टीन ने आश्चर्यचकित होकर जवाब दिया, "वे हमें देख ही नहीं रही थीं! अरे, वे तो पूरे समय कुछ और कर ही नहीं रही थीं।" मैंने उससे कहा, "लेकिन तुम बता नहीं सकतीं, क्योंकि तुम्हारी पीठ उनकी तरफ थी।" उसने जवाब दिया, "ठीक है, और इसके बारे में क्या?" और उसने मुझे सामने की दीवार में लगे एक बड़े दर्पण की ओर इशारा किया, जिस पर मैंने ध्यान नहीं दिया था और अब मुझे एहसास हुआ कि मेरी सहेली मुझसे बात करते समय अपनी परेशान, मग्न आँखों को उस पर टिकाए हुए थी।

जिस दिन कॉटार्ड मेरे साथ इनकार्विल के छोटे से कैसिनो में गया था, तब से अल्बर्टीन मुझे बदली हुई सी लगने लगी थी; हालाँकि मैं उसकी राय से सहमत नहीं था। उसे देखते ही मेरा

गुस्सा फूट पड़ता था। मैं खुद भी बदल गया था, ठीक वैसे ही जैसे वह मेरी नज़रों में बदल गई थी। मेरे मन में उसके लिए कोई सद्भावना नहीं बची थी; उसके सामने और उसकी पीठ पीछे, जब भी मुझे लगता कि मेरी बातें उसे सुनाई देंगी, मैं उसके बारे में सबसे अपमानजनक शब्दों में बात करता था। हालाँकि, बीच-बीच में मेरे मन में शांति भी आती थी। एक दिन मुझे पता चला कि अल्बर्टीन और एंड्री दोनों ने एल्स्टिर के यहाँ का निमंत्रण स्वीकार कर लिया है। मुझे पूरा यकीन था कि वे वापसी में छुट्टियों पर आई स्कूली लड़कियों की तरह मौज-मस्ती करने के लिए, चंचल युवतियों के तौर-तरीकों की नकल करके, एक ऐसा आनंद पाने के लिए जा रही थीं जो कुंवारेपन से परे था। इस विचार से मेरा दिल दुख से भर गया, लेकिन बिना कुछ कहे, मैं उन्हें शर्मिंदा करना चाहता था और अल्बर्टीन को उस आनंद से वंचित करना चाहता था जिसकी वह उम्मीद कर रही थी। इसलिए, मैं अचानक उसके स्टूडियो पहुँच गया। लेकिन मुझे वहाँ केवल एंड्री ही मिली। अल्बर्टीन ने कोई और दिन चुना था जब उसकी चाची उसके साथ वहाँ जाने वाली थीं। तब मैंने मन ही मन सोचा कि कॉटार्ड को ज़रूर कोई गलतफहमी हुई होगी; एंड्री की वहाँ बिना उसकी सहेली के मौजूदगी से जो सकारात्मक प्रभाव मुझ पर पड़ा था, वह मेरे मन में बना रहा और अल्बर्टीन के प्रति मेरे मन में और अधिक सहानुभूति पैदा कर दी। लेकिन यह भावना क्षणिक बीमारियों से ग्रस्त नाज़ुक लोगों के स्वस्थ क्षणों की तरह ही क्षणिक थी, जो छोटी-छोटी बातों से फिर से टूट जाते हैं। अल्बर्टीन ने एंड्री को ऐसे कार्यों के लिए उकसाया जो, भले ही बहुत आगे न बढ़े हों, शायद पूरी तरह से निर्दोष नहीं थे; इस संदेह से दुखी होकर, मैं अंततः इसे दूर करने में कामयाब रहा। जैसे ही मैं इससे उबर पाया, यह एक नए रूप में फिर से प्रकट हो गया। मैंने अभी-अभी एंड्री को देखा था, अपने उन स्वाभाविक रूप से आने वाले सुंदर हाव-भावों में से एक के साथ, उसने अपना सिर अल्बर्टीन के कंधे पर प्यार से रखा, उसके गले पर चुंबन किया, अपनी आँखें आधी बंद कर लीं; या शायद उन्होंने एक-दूसरे को देखा था; किसी ने उन्हें साथ में नहाने जाते देखा था और एक टिप्पणी की थी: छोटी-छोटी बातें जो आसपास के वातावरण में तैरती रहती हैं, जिन्हें अधिकांश लोग दिनभर ग्रहण करते रहते हैं, बिना अपने स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाए या अपने मूड में बदलाव किए, लेकिन जिनका विकृत प्रभाव होता है और जो स्वभाव से ही ऐसी बातों को ग्रहण करने के लिए प्रवृत्त होती हैं, उनमें नए कष्ट पैदा करती हैं। कभी-कभी

अल्बर्टीन को दोबारा देखे बिना भी, बिना किसी के उसके बारे में मुझसे बात किए भी, मेरी स्मृति में उसकी और गिज़ेल की एक ऐसी छवि कौंध जाती थी जो उस समय मुझे निर्दोष लगती थी; अब यह मेरे मन की उस शांति को भंग करने के लिए काफी था जिसे मैंने किसी तरह पुनः प्राप्त किया था, मुझे अब बाहर जाकर खतरनाक कीटाणुओं में सांस लेने की कोई आवश्यकता नहीं थी, मैंने, जैसा कि कॉटार्ड ने कहा होगा, अपना खुद का विष उत्पन्न कर लिया था। तब मैंने स्वान के ओडेट के प्रति प्रेम के बारे में, और जिस तरह से स्वान को जीवन भर धोखा दिया गया था, उन सभी बातों के बारे में सोचा। दरअसल, जब मैं इस बारे में सोचता हूँ, तो मुझे याद आता है कि जिस परिकल्पना ने मुझे धीरे-धीरे अल्बर्टीन के पूरे चरित्र का निर्माण करने और उसके जीवन के हर पल को एक पीड़ादायक व्याख्या देने के लिए प्रेरित किया, जिस पर मेरा पूर्ण नियंत्रण नहीं था, वह श्रीमती स्वान के चरित्र की स्मृति, उनकी गहरी जड़ें जमा चुकी धारणा थी, जैसा कि मुझे बताया गया था। इन विवरणों ने बाद के वर्षों में मेरी कल्पना को यह मानने की दिशा में आगे बढ़ने में मदद की कि अल्बर्टीन एक अच्छी लड़की होने के बजाय, एक सुधरी हुई वेश्या के समान अनैतिकता और छल करने की क्षमता रखती होगी, और मैंने उन सभी कष्टों के बारे में सोचा जो उस स्थिति में मेरे लिए होते यदि मैं वास्तव में कभी उसका प्रेमी होता।

एक दिन, ग्रैंड होटल के बाहर, जहाँ हम सब मोर्चे पर इकट्ठा थे, मैं अल्बर्टीन को बेहद कठोर और अपमानजनक भाषा में संबोधित कर रहा था, और रोज़मोंडे कह रही थी: "ओह, उसके बारे में तुम्हारा विचार कितना बदल गया है; अरे, वह तो सब कुछ थी, वही सब कुछ थी, और अब तो वह कुत्तों के सामने फेंकने लायक भी नहीं रही।" अल्बर्टीन के प्रति अपने रवैये को और भी स्पष्ट करने के लिए, मैं एंड्री से हर संभव अच्छी बात कहने लगा, जो अगर उसी अवगुण से ग्रसित थी, तो मुझे लगता था कि उसके पास इसके लिए अधिक बहाना था क्योंकि वह बीमार और न्यूरोस्टेनिक थी, तभी हमने देखा कि दो घोड़ों की धीमी चाल से गली में, मोर्चे के समकोण पर, जहाँ हम खड़े थे, श्रीमती डी कैम्ब्रेमर की बग्घी आ रही थी। मुख्य मजिस्ट्रेट, जो उस समय हमारी ओर बढ़ रहे थे, गाड़ी को पहचानते ही पीछे हट गए, ताकि वे हमारे बीच न दिखें; फिर, जब उन्हें लगा कि मार्किज़ की नज़र उन पर पड़ सकती है, तो उन्होंने अपनी टोपी को बड़े सम्मान से झुकाकर उन्हें प्रणाम किया। लेकिन गाड़ी, जैसा कि उम्मीद थी, रू डे

ला मेर पर आगे बढ़ने के बजाय, होटल के गेट से अंदर चली गई। लगभग दस मिनट बाद, हाँफते हुए लिफ्ट-बॉय ने आकर मुझे बताया: "यह मार्क्विज़ डे कैमेम्बर्ट हैं, वह महाशय से मिलने आई हैं। मैं कमरे में गया, मैंने रीडिंग रूम में देखा, मुझे महाशय कहीं नहीं मिले। सौभाग्य से मुझे समुद्र तट पर देखने का ख्याल आया।" उन्होंने अभी अपना भाषण समाप्त ही किया था कि अपनी बहू और एक अत्यंत औपचारिक सज्जन के साथ, मार्क्विज़ मेरी ओर बढ़ीं, संभवतः पड़ोस में किसी दोपहर की चाय पार्टी से आ रही थीं, और झुक गईं। उम्र के कारण नहीं, बल्कि अपने कीमती गहनों के ढेर के कारण, जिनसे खुद को ढकना उन्हें अधिक सामाजिक और अपने पद के अनुरूप लगा, ताकि वे उन लोगों के सामने यथासंभव 'अच्छी तरह से सजी-धजी' दिखें जिनसे वे मिलने जा रही थीं। दरअसल, यह वही कैम्ब्रेमर परिवार का होटल में ठहरना था जिससे मेरी दादी बहुत पहले बहुत डरती थीं, जब वे चाहती थीं कि हम लेग्रैंडिन को यह न बताएं कि हम शायद बालबेक जा रहे हैं। तब माँ इन आशंकाओं पर हँसती थीं जो एक ऐसी घटना से उत्पन्न होती थीं जिसे वे असंभव मानती थीं। और यहाँ यह वास्तव में हो रहा था, लेकिन अलग तरीके से और लेग्रैंडिन की इसमें कोई भूमिका नहीं थी। "अगर मैं आपके रास्ते में न आऊँ तो क्या आपको मेरे यहाँ ठहरने से कोई आपत्ति है?" अल्बर्टीन ने पूछा (जिसकी आँखों में, मेरी कही हुई क्रूर बातों के कारण, आँसू ठहर गए थे। मैंने उन्हें बिना देखे ही महसूस किया, पर मन ही मन प्रसन्न हुए बिना नहीं), "मुझे तुमसे कुछ कहना है।" पंखों वाली एक टोपी, जिस पर नीलमणि की पिन लगी थी, श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के विग पर बेतरतीब ढंग से रखी थी, मानो कोई बैज हो जिसका प्रदर्शन आवश्यक था, लेकिन पर्याप्त भी। उसका स्थान महत्वहीन था, उसकी सुंदरता पारंपरिक थी और उसकी स्थिरता अनावश्यक थी। गर्मी के बावजूद, उस महिला ने एक जेट रंग का लबादा ओढ़ा हुआ था, जो एक डालमेटिक जैसा था, जिसके ऊपर एक फर का शॉल लटका हुआ था, जिसे पहनना तापमान और मौसम पर नहीं, बल्कि समारोह के स्वरूप पर निर्भर करता प्रतीत होता था। और श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के सीने पर एक शाही टॉर्स, एक चेन से बंधा हुआ, छाती पर क्रॉस की तरह लटक रहा था। वह सज्जन पेरिस के एक प्रतिष्ठित वकील थे, जो एक कुलीन परिवार से थे और कैम्ब्रेमर परिवार के साथ कुछ दिन बिताने आए थे। वे उन लोगों में से थे जिन्हें अपने विशाल पेशेवर अनुभव के कारण अपने पेशे को कमतर आंकने की आदत हो गई थी और जो उदाहरण के लिए कहते

थे: "मैं जानता हूँ कि मैं एक अच्छा वकील हूँ, इसलिए अब मुझे वकालत करने में कोई आनंद नहीं आता," या: "मुझे अब ऑपरेशन में कोई दिलचस्पी नहीं है, मैं जानता हूँ कि मैं एक अच्छा ऑपरेटर हूँ।" बुद्धिमान और कलाकार, वे खुद को अपनी परिपक्वता में देखते हैं, सफलता से भरपूर, उस बुद्धि और कलात्मक स्वभाव से दमकते हुए जिसे उनके पेशेवर साथी उनमें पहचानते हैं और जो उन्हें एक विशेष प्रकार का सुबोध और विवेक प्रदान करता है। वे किसी महान कलाकार की नहीं, बल्कि एक ऐसे कलाकार की पेंटिंग के प्रति जुनून पालते हैं जो फिर भी अत्यंत प्रतिष्ठित है, और अपने करियर से अर्जित बड़ी रकम उस कलाकार की कृतियों को खरीदने में खर्च करते हैं। ले सिडानर को कैम्ब्रेमर के मित्र ने चुना था, जो संयोगवश एक बहुत ही मिलनसार व्यक्ति थे। वह किताबों के बारे में तो अच्छी बातें करते थे, लेकिन सच्चे विद्वानों की किताबों के बारे में नहीं, उन विद्वानों की किताबों के बारे में नहीं जिन्होंने खुद पर महारत हासिल कर ली हो। इस नौसिखिए की एकमात्र चिड़चिड़ी आदत कुछ बने-बनाए मुहावरों का लगातार इस्तेमाल करना था, जैसे 'ज्यादातर', जिससे उनके द्वारा कही जा रही बात में गंभीरता और अपूर्णता का भाव आ जाता था। मैडम डी कैम्ब्रेमर ने मुझे बताया कि उस दोपहर बालबेक की तरफ उनके कुछ दोस्तों द्वारा दी जा रही पार्टी का उन्होंने मौका देखकर मुझसे मिलने का फैसला किया, जैसा कि उन्होंने रॉबर्ट डी सेंट-लूप से वादा किया था। "आप जानते हैं कि वह कुछ दिनों के लिए जल्द ही यहाँ आ रहे हैं: उनके चाचा चार्लस अपनी भाभी, डचेस डी लक्ज़मबर्ग के साथ यहीं पास में ठहरे हुए हैं, और श्री डी सेंट-लूप अपनी चाची से मिलने और अपनी पुरानी रेजिमेंट देखने का मौका लेना चाहते हैं, जहाँ वे बहुत लोकप्रिय और सम्मानित हैं। हमारे यहाँ अक्सर अधिकारी आते रहते हैं जो उनकी प्रशंसा करते नहीं थकते। कितना अच्छा होगा अगर आप और वह हमें फेटेर्न में एक साथ आने का अवसर दें।" मैंने अल्बर्टीन और उसकी सहेलियों का परिचय कराया। श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने हम सभी को अपनी बहू से मिलवाया। वह, जो फेटेर्न में अपने एकांतवास के कारण जिन छोटे-मोटे रईसों के साथ मेलजोल रखती थी, उनके प्रति बेहद रूखी, बेहद संकोची और अपनी छवि खराब होने से डरने वाली थी, उसने मुस्कुराते हुए मेरी ओर हाथ बढ़ाया। वह खुद को सुरक्षित महसूस कर रही थी और रॉबर्ट डी सेंट-लूप की सहेली को देखकर प्रसन्न थी, जिसके बारे में रॉबर्ट ने, अपनी सामाजिक सूझबूझ के कारण, बताया था कि वह गुएरमांटे परिवार का बहुत

बड़ा मित्र है। इस प्रकार, अपनी सास के विपरीत, श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने शिष्टाचार के दो बिल्कुल अलग-अलग रूपों का प्रयोग किया। अगर मैं उनसे उनके भाई लेग्रैंडिन के माध्यम से मिली होती, तो वह ज़्यादा से ज़्यादा पहले प्रकार का, रूखा और असहनीय शिष्टाचार ही अपनातीं। लेकिन गुएरमांटे परिवार की सहेली होने के बावजूद उनके पास पर्याप्त मुस्कान नहीं थी। होटल में मेहमानों के स्वागत के लिए सबसे सुविधाजनक कमरा वाचनालय था, वह स्थान जो कभी इतना भयानक हुआ करता था, लेकिन अब मैं वहाँ दिन में दर्जनों बार जाता था, और वहाँ से निडर होकर निकलता था, मानो मैं अपना मालिक हूँ, उन हल्के-फुल्के पागलों की तरह जो इतने लंबे समय से पागलखाने में रह चुके हैं कि अधीक्षक उन्हें चाबी सौंपकर उन पर भरोसा करता है। इसलिए मैंने श्रीमती डी कैम्ब्रेमर को वहाँ ले जाने का प्रस्ताव रखा। और चूंकि अब उस कमरे में मुझे शर्म नहीं आती थी और न ही मेरे लिए उसमें कोई आकर्षण था, क्योंकि चीजों के चेहरे हमारे लिए लोगों के चेहरों की तरह बदलते रहते हैं, इसलिए मैंने बिना किसी भावना के यह सुझाव दिया। लेकिन उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया, बाहर रहना पसंद किया, और हम होटल की छत पर खुली हवा में बैठ गए। वहाँ मुझे मैडम डी सेविग्ने की एक किताब मिली और मैंने उसे बचा लिया, जिसे माँ अपनी जल्दबाजी में भागने के दौरान ले जाना भूल गई थीं, जब उन्हें पता चला कि मेहमान मुझे बुलाने आए हैं। मेरी दादी की तरह ही, उन्हें भी अजनबियों के आने से बहुत डर लगता था, और इस डर से कि अगर वह किसी को दिख गईं तो बचने का समय निकल जाएगा, वह कमरे से इतनी तेज़ी से भागती थीं कि मेरे पिताजी और मैं उन पर हँसते थे। मैडम डी कैम्ब्रेमर के हाथ में, धूप से बचने के लिए लगे शेड के हैंडल के साथ, कई कढ़ाई वाले थैले, एक बड़ा बैग, सोने का पर्स जिसमें गार्नेट की लड़ियाँ लटक रही थीं, और एक लेस का रूमाल था। मुझे लगा कि उनके लिए इन्हें कुर्सी पर रख देना ज़्यादा सुविधाजनक होता; लेकिन मुझे लगा कि उनसे अपने धार्मिक और सामाजिक जीवन के आभूषणों को उतारने के लिए कहना अनुचित और व्यर्थ होगा। हम शांत समुद्र को निहार रहे थे, जिस पर कहीं-कहीं कुछ समुद्री पक्षी सफेद पंखुड़ियों की तरह तैर रहे थे। सामाजिक बातचीत हमें जिस 'औसत स्तर' तक ले जाती है, और हमारी उस इच्छा के कारण कि हम उन गुणों से आकर्षित न हों जिनके बारे में हम स्वयं अनजान हैं, बल्कि उन गुणों से आकर्षित हों जिन्हें हम मानते हैं कि हमारे साथ मौजूद लोगों को सराहनी चाहिए, मैंने सहज रूप से श्रीमती

डी कैम्ब्रेमर (नी लेग्रैंडिन) से उसी लहजे में बात करना शुरू कर दिया जैसे उनके भाई बात करते होंगे। मैंने सीगल की ओर इशारा करते हुए कहा, "वे जल-लिली की तरह स्थिर और सफेद दिखाई देते हैं।" और वास्तव में वे उन छोटी लहरों को निर्जीव वस्तु की तरह लग रहे थे जो उन्हें इधर-उधर उछाल रही थीं, इतना कि इसके विपरीत, लहरें उनका पीछा करते हुए मानो किसी सचेत इरादे से प्रेरित और जीवंत प्रतीत हो रही थीं। बालबेक से हमें जो समुद्र का शानदार दृश्य दिखाई दिया, उसकी प्रशंसा करने के लिए विधवा मार्क्विज़ के पास शब्द कम पड़ रहे थे, और यह बताने के लिए भी कि उन्हें उस दृश्य से कितनी ईर्ष्या हो रही थी, जबकि ला रास्पेलियर (जहाँ वे उस वर्ष नहीं रह रही थीं) से उन्हें लहरों की केवल एक दूर की झलक ही दिखाई दी थी। उनकी दो असाधारण आदतें थीं, एक तो कला (विशेषकर संगीत) के प्रति उनके अत्यधिक प्रेम के कारण और दूसरी उनके दांतों की कमी के कारण। जब भी वे सौंदर्य संबंधी विषयों पर बात करतीं, तो उनकी लार ग्रंथियां—कुछ जानवरों की तरह, जब वे मदमस्त होती हैं—इतनी अधिक उत्तेजित हो जाती थीं कि उस बूढ़ी महिला के दांतविहीन मुंह से, उनकी हल्की मूंछों वाले होंठों के कोनों से, नमी की एक बूंद टपकने लगती थी, जो वहां उचित नहीं थी। तुरंत ही वे एक गहरी आह के साथ उसे वापस अंदर खींच लेतीं, जैसे कोई व्यक्ति अपनी सांस वापस ले रहा हो। दूसरी बात, यदि उनका विषय कोई अत्यंत सुंदर संगीत होता, तो उत्साह में वे अपनी बाहें ऊपर उठातीं और कुछ निर्णायक राय देतीं, जो जोर से चबाने जैसी होती और कभी-कभी नाक से निकलती। अब तक मुझे यह कभी नहीं सूझा था कि बालबेक का साधारण समुद्र तट वास्तव में एक 'समुद्री दृश्य' प्रस्तुत कर सकता है, और श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के सरल शब्दों ने इस संबंध में मेरे विचार बदल दिए। दूसरी ओर, जैसा कि मैंने उसे बताया, मैंने हमेशा लोगों को पहाड़ी की चोटी पर स्थित ला रास्पेलियर से दिखने वाले बेजोड़ दृश्य की प्रशंसा करते सुना था। वहाँ एक विशाल ड्राइंग रूम में दो चिमनियां थीं, और खिड़कियों की एक पूरी पंक्ति बगीचों को दिखाती थी, और पेड़ों की शाखाओं के बीच से बालबेक तक और उससे आगे समुद्र दिखाई देता था, और दूसरी पंक्ति से घाटी दिखाई देती थी। "कितनी अच्छी बात है कि आपने ऐसा कहा, और आपने इसे कितनी अच्छी तरह से व्यक्त किया: शाखाओं के बीच से समुद्र। यह बहुत ही सुंदर है, कोई कह सकता है... एक चित्रित पंखा।" और मैंने थूक को रोकने और मूंछों को सुखाने के लिए ली गई गहरी सांस से

समझा कि यह प्रशंसा सच्ची थी। लेकिन मार्क्विज़ लेग्रैंडिन ठंडी बनी रहीं, यह दिखाने के लिए कि उनका तिरस्कार मेरे शब्दों के लिए नहीं, बल्कि अपनी सास के शब्दों के लिए था। इसके अलावा, वह न केवल दूसरी की बुद्धि को तुच्छ समझती थीं, बल्कि उनकी मिलनसारिता से भी घृणा करती थीं, क्योंकि उन्हें हमेशा डर रहता था कि लोग कैम्ब्रेमर परिवार के बारे में पर्याप्त उच्च विचार न बना लें। “और ये नाम कितना प्यारा है,” मैंने कहा। “इन सभी नामों की उत्पत्ति जानना तो सभी को अच्छा लगेगा।” “ये मैं आपको बता सकती हूँ,” बुढ़िया ने विनम्रता से उत्तर दिया। “ये हमारे खानदानी परिवार का नाम है, मेरी दादी अर्राचेपेल का, कोई प्रतिष्ठित परिवार नहीं, लेकिन एक सभ्य और बहुत पुराना देहाती परिवार।” “क्या! प्रतिष्ठित नहीं!” उनकी बहू ने तीखे लहजे में उन्हें टोक दिया। "बायेक्स गिरजाघर की एक पूरी खिड़की उनके हथियारों से सजी है, और एवरान्चेस के मुख्य गिरजाघर में उनकी कब्रें हैं। अगर इन पुराने नामों में आपकी दिलचस्पी है," उन्होंने आगे कहा, "तो आप एक साल देर से आए हैं। एक धर्मप्रांत से दूसरे धर्मप्रांत में बदलाव की तमाम मुश्किलों के बावजूद, हम क्रिक्केटोट के पद पर उस जगह के पल्ली पुरोहित को नियुक्त करने में कामयाब रहे, जहाँ मेरी खुद की कुछ ज़मीन है, जो यहाँ से बहुत दूर है, कॉम्ब्रे में, जहाँ उस सम्मानित पादरी को लगा कि वह न्यूरोस्टेनिक हो रहे हैं। दुर्भाग्य से, उनकी उम्र में समुद्री हवा उनके लिए अच्छी नहीं रही; उनका न्यूरोस्टेनिक और बढ़ गया और वे कॉम्ब्रे लौट आए। लेकिन जब वे हमारे पड़ोसी थे, तब उन्होंने पुराने चार्टर खोजने में अपना समय बिताया, और उन्होंने जिले के स्थानों के नामों पर एक दिलचस्प छोटी पुस्तिका तैयार की। इससे उन्हें एक नई रुचि भी मिली है, क्योंकि ऐसा लगता है कि वे अपने अंतिम वर्ष कॉम्ब्रे और उसके आसपास के क्षेत्रों पर एक महान कृति लिखने में बिता रहे हैं। मैं आपको फेटेर्न के आसपास के क्षेत्रों पर उनकी पुस्तिका भेजूँगी। यह प्रशंसा के योग्य है।" बेनेडिक्टिन। इसमें आपको हमारे पुराने रास्पेलियर के बारे में सबसे दिलचस्प बातें मिलेंगी, जिसके बारे में मेरी सास बहुत ही विनम्रता से बात करती हैं।" "खैर, इस साल," विधवा श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने उत्तर दिया, "ला रास्पेलियर अब हमारा नहीं है और न ही मेरा है। लेकिन मैं देख सकती हूँ कि आपमें चित्रकार की प्रतिभा है; मुझे यकीन है कि आप रेखाचित्र बनाती हैं, और मैं आपको फेटेर्न दिखाना चाहूँगी, जो ला रास्पेलियर से कहीं अधिक सुंदर है।" क्योंकि जैसे ही कैम्ब्रेमर परिवार ने यह निवास वर्दुरिन परिवार को किराए पर दिया, इसकी प्रमुख

स्थिति उन्हें वैसी नहीं दिखनी चाहिए थी जैसी पिछले कई वर्षों से दिखती आ रही थी, यानी कि आस-पास के क्षेत्र में अद्वितीय समुद्र और घाटी दोनों के दृश्य का लाभ, और दूसरी ओर, अचानक और पीछे मुड़कर देखने पर, यह कमी सामने आई कि वहाँ जाने या वहाँ से आने के लिए हमेशा पहाड़ी से ऊपर या नीचे जाना पड़ता था। संक्षेप में, कोई यह मान सकता था कि यदि श्रीमती... डी कैम्ब्रेमर ने इसे किराए पर दिया था, अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए नहीं बल्कि अपने घोड़ों को आराम देने के लिए। और उन्होंने इस बात पर खुशी ज़ाहिर की कि आखिरकार फ़ेटरने में समुद्र हमेशा उनके इतने करीब रहेगा, वह जिसने इतने सालों तक (वहाँ बिताए दो महीनों को भूलकर) इसे केवल ऊपर से और मानो किसी मनोरम दृश्य में देखा था। "मैं इस उम्र में इसे खोज रही हूँ," उन्होंने कहा, "और मुझे कितना आनंद आ रहा है! इससे मुझे बहुत सुकून मिल रहा है। मैं ला रास्पेलियर को मुफ्त में भी किराए पर दे दूंगी ताकि मुझे फ़ेटरने में रहने के लिए मजबूर होना पड़े।"

“अब कुछ और रोचक विषयों पर आते हैं,” लेग्रैंडिन की बहन ने बात जारी रखी, जो बूढ़ी मार्क्विज़ को ‘माँ’ कहकर पुकारती थी, लेकिन वर्षों बीतने के साथ-साथ उनके प्रति थोड़ा अभद्र व्यवहार करने लगी थी, “आपने जल लिली का ज़िक्र किया: मुझे लगता है आप क्लाउड मोनेट की उनकी तस्वीरों को जानती होंगी। क्या प्रतिभा है! मुझे उनमें विशेष रुचि है क्योंकि कॉम्ब्रे के पास, उस जगह पर जहाँ मैंने आपको बताया था कि मेरी कुछ ज़मीन है...।” लेकिन उन्होंने कॉम्ब्रे के बारे में ज़्यादा बात न करना ही बेहतर समझा। “अरे! यह तो वही श्रृंखला होगी जिसके बारे में एल्स्टिर ने हमें बताया था, इस पीढ़ी के सबसे महान चित्रकार,” अल्बर्टीन ने कहा, जो अब तक चुप थी। “आह! मैं देख सकती हूँ कि इस युवती को कला से कितना प्रेम है,” श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने कहा और एक लंबी साँस लेते हुए थूक को समेट लिया। “क्या आप मुझे ले सिडानर को उनसे पहले रखने की अनुमति देंगी, मैडमोजेल,” वकील ने एक विशेषज्ञ की तरह मुस्कुराते हुए कहा। और, जैसा कि उन्होंने वर्षों पहले एल्स्टिर की कुछ 'साहसिक' कृतियों का आनंद लिया था, या लोगों को लेते देखा था, उन्होंने आगे कहा: "एल्स्टिर प्रतिभाशाली थे, वास्तव में वे अग्रणी कलाकारों में से एक थे, लेकिन किसी न किसी कारण से वे कभी भी उस स्तर तक नहीं पहुँच पाए, उन्होंने अपना जीवन व्यर्थ कर दिया।" मैडम डी कैम्ब्रेमर एल्स्टिर के बारे में वकील से असहमत थीं, लेकिन अपने मेहमान को बहुत नाराज़

करते हुए, उन्होंने मोनेट की तुलना ले सिडानर से कर दी। यह कहना गलत होगा कि वह मूर्ख थीं; वह एक ऐसी बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण थीं जिसका मेरे लिए कोई महत्व नहीं था। जैसे-जैसे सूरज डूबने लगा, समुद्री पक्षी अब पीले हो गए थे, जैसे मोनेट की उस श्रृंखला के एक अन्य कैनवास पर जल लिली। मैंने कहा कि मैं इसे जानता हूँ, और (उनके भाई के शब्दों की नकल करते हुए, जिनका नाम लेने की मैंने अभी तक हिम्मत नहीं की थी) आगे कहा कि यह दुख की बात है कि उन्होंने एक दिन पहले आने के बारे में नहीं सोचा, क्योंकि उसी समय, उनके लिए पौसिन की एक उत्कृष्ट कृति देखने को मिलती। अगर किसी अनजान नॉर्मन जमींदार ने, जो गुएरमांटे परिवार को नहीं जानता था, श्रीमती डी कैम्ब्रेमर-लेग्रैंडिन से कहा होता कि उन्हें एक दिन पहले आना चाहिए था, तो वह निस्संदेह नाराज़गी भरे लहजे में खड़ी हो जातीं। लेकिन मैं उनसे और भी ज़्यादा परिचित होता, और वह मुस्कुराती हुई और मीठी बातें करतीं; मैं उस सुहावनी दोपहर की गर्माहट में उस लज़ीज़ शहद के केक का भरपूर आनंद उठा सकता था, जिसे श्रीमती डी कैम्ब्रेमर बहुत कम खाती थीं और जिसने उस पेस्ट्री की जगह ले ली थी जिसे मैंने अपने मेहमानों को परोसने का सोचा भी नहीं था। लेकिन पौसिन का नाम सुनते ही, उस संभ्रांत महिला का व्यवहार ज़रा भी नहीं बदला, बल्कि एक पारखी के विरोध का भाव जाग उठा। वह नाम सुनते ही, उन्होंने लगभग लगातार छह बार अपने होठों पर जीभ से वह हल्की सी आवाज़ निकाली, जो किसी शरारती बच्चे को एक साथ डांटने और चेतावनी देने का काम करती है कि वह ऐसा न करे। "भगवान के नाम पर, मोनेट जैसे महान चित्रकार के बाद, जो एक विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं, पॉसिन जैसे प्रतिभाहीन बूढ़े चित्रकार का नाम मत लीजिए। मैं आपको साफ-साफ बता दूं कि मुझे वह बेहद उबाऊ लगते हैं। मेरा मतलब है, आप इस तरह की कला को चित्रकला कह ही नहीं सकते। मोनेट, डेगास, मैनेट, हाँ, अगर आप चाहें तो इन्हें चित्रकार कह सकते हैं! यह एक अजीब बात है," वह आगे बोलीं, अपनी निगाहें अंतरिक्ष में एक अस्पष्ट बिंदु पर टिकाते हुए, जहाँ उन्हें अपने मन की बात दिखाई दे रही थी, "यह एक अजीब बात है, एक समय था जब मैं मैनेट को पसंद करती थी। आजकल, मैं मैनेट की प्रशंसा तो करती ही हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि मैं मोनेट को और भी ज्यादा पसंद करती हूँ। ओह! गिरजाघर!" वह अपने कलात्मक स्वाद के विकास के बारे में मुझे बताते समय जितनी सावधानी बरत रही थीं, उतनी ही विनम्रता भी दिखा रही थीं। और ऐसा लग रहा था कि उनकी

नज़र में उनके इस स्वाद के विकास के चरण, मोनेट की विभिन्न शैलियों से कम महत्वपूर्ण नहीं थे। ऐसा नहीं था कि मुझे उसकी पसंद-नापसंद के बारे में जानकर खुश होने का कोई कारण था, क्योंकि वह संकीर्ण सोच वाली देहाती महिलाओं के सामने भी पाँच मिनट भी अपनी पसंद-नापसंद बताए बिना नहीं रह सकती थी। जब एवरान्चेस की एक कुलीन महिला, जो मोजार्ट और वैगनर के बीच अंतर भी नहीं कर सकती थी, ने श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के सामने कहा: "पेरिस में रहते हुए हमें कुछ भी दिलचस्प नहीं दिखा, हम एक बार ओपेरा-कॉमिक गए थे, वहाँ पेलियास एट मेलिसांडे का प्रदर्शन हो रहा था, यह बहुत ही घटिया चीज़ है," तो श्रीमती डी कैम्ब्रेमर न केवल गुस्से से उबल पड़ीं, बल्कि उन्हें यह कहना भी पड़ा: "बिल्कुल नहीं, यह एक छोटा सा रत्न है," और अपनी बात पर अड़ी रहीं। शायद यह कॉम्ब्रे परिवार की एक आदत थी जो उन्होंने मेरी दादी की बहनों से सीखी थी, जो इसे 'अच्छे काम के लिए लड़ना' कहती थीं और उन डिनर पार्टियों को बहुत पसंद करती थीं जहाँ उन्हें पूरे हफ्ते पता होता था कि उन्हें अपने आदर्शों का फिलिस्तीनियों के खिलाफ बचाव करना होगा। इसी तरह, मैडम डी कैम्ब्रेमर को कला के बारे में बहस करने और जोश में आने का शौक था, जैसे दूसरे लोग राजनीति के बारे में करते हैं। उन्होंने डेबुसी का उसी तरह बचाव किया जैसे किसी महिला मित्र के आचरण की आलोचना होने पर करतीं। हालांकि, उन्हें यह अच्छी तरह पता होगा कि जब उन्होंने कहा: "बिल्कुल नहीं, यह तो एक अनमोल कृति है," तो वे दूसरी महिला को, जिन्हें वे उनकी जगह दिखा रही थीं, कलात्मक संस्कृति के उस पूरे प्रगतिशील विकास के बारे में नहीं समझा सकती थीं, जिस पर वे बिना किसी चर्चा के स्वाभाविक रूप से सहमत हो जातीं। वकील ने मुझसे कहा, "मुझे ले सिडानर से पूछना चाहिए कि वह पौसिन के बारे में क्या सोचते हैं। वह तो पक्के एकांतवासी हैं, कभी मुंह नहीं खोलते, लेकिन मुझे पता है कि उनसे बातें कैसे निकलवानी हैं।"

“खैर,” श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने आगे कहा, “मुझे सूर्यास्त से घृणा है, वे बहुत रोमांटिक, बहुत नाटकीय होते हैं। इसीलिए मुझे अपनी सास का घर, उसके उष्णकटिबंधीय पौधों से भरा घर, बिल्कुल पसंद नहीं है। आप देखेंगे, वह मोंटेकार्लो के किसी सार्वजनिक उद्यान जैसा है। इसीलिए मुझे यहाँ का आपका तट अधिक पसंद है। यह अधिक शांत, अधिक गंभीर है; वहाँ एक छोटी सी गली है जहाँ से समुद्र दिखाई नहीं देता। बरसात के दिनों में, वहाँ केवल कीचड़

होता है, वह एक अलग ही दुनिया बन जाती है। वेनिस में भी ऐसा ही है, मुझे ग्रैंड कैनाल से नफरत है और मुझे वहाँ की छोटी-छोटी गलियों जैसी कोई और चीज इतनी मार्मिक नहीं लगती। लेकिन यह सब परिवेश पर निर्भर करता है।" "लेकिन," मैंने उनसे कहा, यह महसूस करते हुए कि श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के मन में पौसिन की छवि को सुधारने का एकमात्र तरीका यही है... डी कैम्ब्रेमर की निगाहें उन्हें यह बताने के लिए थीं कि वह एक बार फिर फैशन में आ गए हैं, "श्री डेगास हमें विश्वास दिलाते हैं कि उन्हें शैंटिली में पौसिन की मूर्तियों से अधिक सुंदर कुछ भी नहीं पता।" "सचमुच? मैं शैंटिली वाली मूर्तियों को नहीं जानती," श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने कहा, जो डेगास से असहमत नहीं होना चाहती थीं, "लेकिन मैं लूव्र में मौजूद मूर्तियों के बारे में बता सकती हूँ, जो बेहद खूबसूरत हैं।" "वह भी उनकी बहुत प्रशंसा करते हैं।" "मुझे उन्हें फिर से देखना होगा। उनके बारे में मेरी धारणाएँ कुछ धुंधली हैं," उन्होंने एक क्षण की चुप्पी के बाद उत्तर दिया, और ऐसा लग रहा था कि पौसिन के बारे में जो अनुकूल राय वह निश्चित रूप से बहुत जल्द बनाने वाली थीं, वह उस जानकारी पर निर्भर नहीं थी जो मैंने उन्हें अभी दी थी, बल्कि लूव्र में पौसिन की मूर्तियों की पूरक और इस बार अंतिम जाँच पर निर्भर थी, ताकि वह अपना विचार बदल सकें। चूंकि अगर वह अभी भी पौसिन परिवार की प्रशंसा नहीं कर रही थीं, तो उन्होंने इस मामले को आगे विचार के लिए स्थगित कर दिया था, इसलिए मैंने उन्हें और अधिक असमंजस में न रखने के लिए, अपनी बात वापस लेने की दिशा में पहले कदम से ही संतुष्ट होकर, उनकी सास को बताया कि मैंने फेटेर्न के अद्भुत फूलों के बारे में कितना सुना है। उन्होंने विनम्रता से घर के पीछे स्थित अपने छोटे से पुरोहित उद्यान के बारे में बताया, जिसमें वह सुबह-सुबह बस एक दरवाजा खोलकर अपने लबादे में ही अपने मोरों को दाना खिलाने, ताजे अंडे खोजने और ज़िनिया या गुलाब के फूल इकट्ठा करने जाती थीं, जो साइडबोर्ड पर क्रीम वाले अंडों या तली हुई मछली को फूलों की क्यारी में सजाकर उन्हें अपने बगीचे के रास्तों की याद दिलाते थे। "यह सच है, हमारे पास बहुत सारे गुलाब हैं," उसने मुझसे कहा, "हमारा गुलाब का बगीचा घर के बहुत पास है, कई बार तो इससे मेरा सिर दर्द करने लगता है। ला रास्पेलियर की छत पर ज़्यादा अच्छा लगता है जहाँ हवा गुलाबों की खुशबू लाती है, लेकिन वहाँ इतनी तेज़ खुशबू नहीं आती।" मैं उसकी बहू की ओर मुड़ी। "यह बिल्कुल पेलियास जैसा है," मैंने उससे कहा, ताकि आधुनिकता के प्रति उसकी रुचि को संतुष्ट कर

सकूँ, “गुलाबों की वह खुशबू छतों तक पहुँचती है। संगीत में वह इतनी तेज़ है कि, क्योंकि मुझे हे फीवर और रोज़ फीवर है, उस दृश्य को सुनते ही मुझे छींक आने लगती है।”
"पेलियास कितना अद्भुत है!" श्रीमती डी कैम्ब्रेमर चिल्लाईं, "मैं इसकी दीवानी हूँ;" और मुझे मोहित करने की कोशिश कर रही एक जंगली औरत के हाव-भाव से मेरे करीब आते हुए, अपनी उंगलियों से काल्पनिक सुर निकालते हुए, उन्होंने कुछ गुनगुनाना शुरू किया, जो मुझे लगता है कि उनके लिए पेलियास की विदाई का प्रतीक था, और उन्होंने पूरी लगन से गुनगुनाना जारी रखा, मानो यह महत्वपूर्ण हो कि श्रीमती डी कैम्ब्रेमर उस क्षण मुझे उस दृश्य की याद दिलाएँ या बल्कि मुझे यह साबित करें कि उन्हें खुद वह दृश्य याद है। "मुझे लगता है कि यह पार्सिफ़ल से भी बेहतर है," उन्होंने आगे कहा, "क्योंकि पार्सिफ़ल में सबसे सुंदर चीजें मधुर वाक्यांशों के एक प्रकार के आभामंडल से घिरी होती हैं, जो केवल इसलिए खराब हैं क्योंकि वे मधुर हैं।" "मुझे पता है, आप एक महान संगीतकार हैं, महोदया," मैंने विधवा से कहा। "मैं आपको बजाते हुए सुनना चाहूँगा।" श्रीमती... डी कैम्ब्रेमर-लेग्रैंडिन बातचीत में न उलझने के लिए समुद्र की ओर देखती रहीं। उनका मानना था कि उनकी सास को संगीत से कोई लगाव नहीं था, इसलिए दूसरी शिष्या की प्रतिभा को, जो उनकी नज़र में भले ही बेहद उच्च कोटि की थी, वे महज़ एक तकनीकी कौशल मानती थीं, जिसमें कोई रुचि नहीं थी। यह सच था कि चोपिन की इकलौती जीवित शिष्या ने सही ही कहा था कि गुरु की वादन शैली, उनका 'भाव' उन्हीं के माध्यम से श्रीमती डी कैम्ब्रेमर तक पहुँचा था, लेकिन चोपिन की तरह वादन करना लेग्रैंडिन की बहन की नज़र में कोई प्रशंसा की बात नहीं थी, जो पोलिश संगीतकार चोपिन से सबसे ज़्यादा नफ़रत करती थीं। "ओह! वे उड़ रहे हैं!" अल्बर्टीन ने कहा, उन समुद्री पक्षियों की ओर इशारा करते हुए जो एक पल के लिए अपना फूलों जैसा आवरण उतारकर एक साथ सूर्य की ओर उड़ रहे थे। "उनके विशाल पंख उन्हें चलने से रोक रहे हैं," श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने कहा, समुद्री पक्षी को अल्बाट्रॉस समझकर। “मुझे वे बहुत पसंद हैं; मैं उन्हें एम्स्टर्डम में देखा करती थी,” अल्बर्टीन ने कहा। “उनमें समुद्र की महक आती है, वे पक्की सड़कों से भी नमकीन हवा में सांस लेते हैं।” “ओह! तो आप हॉलैंड गई हैं, आप वर्मीर की पेंटिंग्स जानती हैं?” श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने उसी लहजे में पूछा, जैसे वह कहतीं: “आप गुएरमांटे की पेंटिंग्स जानती हैं?” क्योंकि घमंड अपना विषय बदलने से लहजा नहीं बदलता।

अल्बर्टीन ने नकारात्मक जवाब दिया, यह सोचकर कि वे जीवित लोग हैं। लेकिन उसकी गलती स्पष्ट नहीं थी। “मुझे आपके लिए पियानो बजाने में बहुत खुशी होगी,” श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने मुझसे कहा। “लेकिन आप जानती हैं कि मैं केवल वही बजाती हूँ जो अब आपकी पीढ़ी को पसंद नहीं आता। मैं चोपिन की पूजा करते हुए पली-बढ़ी हूँ,” उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा, क्योंकि वह अपनी बहू से डरती थीं, और जानती थीं कि बाद वाली के लिए, जो चोपिन को संगीत नहीं मानती, उसे अच्छा या बुरा बजाना अर्थहीन था। उन्होंने स्वीकार किया कि उनकी सास में तकनीक थी, वह एक निपुण पियानोवादक थीं। "कोई भी बात मुझे यह कहने पर मजबूर नहीं करेगी कि वह एक संगीतकार हैं," यह मैडम डी कैम्ब्रेमर-लेग्रैंडिन का निष्कर्ष था। क्योंकि वह खुद को 'उन्नत' मानती थीं, क्योंकि (केवल कला के मामलों में) "कोई भी कभी भी वामपंथी विचारधारा की ओर पर्याप्त रूप से आगे नहीं बढ़ सकता," उन्होंने कहा, उनका मानना था कि संगीत न केवल प्रगति करता है, बल्कि एक सीधी रेखा में प्रगति करता है, और डेबुसी एक अर्थ में सुपर-वैगनर थे, वैगनर से थोड़ा और उन्नत। उन्होंने इस तथ्य पर ध्यान नहीं दिया कि यदि डेबुसी वैगनर से उतने स्वतंत्र नहीं थे जितना कि वह स्वयं कुछ वर्षों में मानने वाली थीं, क्योंकि हमें हमेशा उन हथियारों का उपयोग करना चाहिए जिन्हें हमने अपने कब्जे में लिया है ताकि हम अंततः उस शत्रु से मुक्त हो सकें जिसे हमने फिलहाल परास्त कर लिया है, फिर भी वह उस तृप्ति की भावना की तलाश में थे जो लोग उस काम से प्राप्त करने लगे थे जो इतना पूर्ण था, जिसमें सब कुछ व्यक्त किया गया था, ताकि एक विपरीत मांग को पूरा किया जा सके। इस प्रतिक्रिया को कुछ समय के लिए समर्थन देने वाले सिद्धांत तो थे ही, जैसे राजनीति में धार्मिक समुदायों के विरुद्ध कानूनों, पूर्वी देशों में हुए युद्धों (अप्राकृतिक शिक्षा, पीला खतरा, आदि) का समर्थन करने वाले सिद्धांत। लोगों का कहना था कि गति के युग में कला में भी तेज़ी आवश्यक है, ठीक वैसे ही जैसे वे कह सकते थे कि अगला युद्ध दो सप्ताह से अधिक नहीं चलेगा, या रेलगाड़ियों के आने से कोचों के प्रिय छोटे-छोटे स्थान नष्ट हो जाएँगे, जिन्हें मोटरगाड़ी ने फिर से लोकप्रिय बना दिया। संगीतकारों को चेतावनी दी गई कि वे अपने श्रोताओं का ध्यान भंग न करें, मानो हमारे पास ध्यान के विभिन्न स्तर न हों, जिनमें से उच्चतम स्तर को जगाना कलाकार का ही काम है। क्योंकि जो लोग एक साधारण लेख की दस पंक्तियों के बाद ऊब से जम्हाई लेते हैं, वे रिंग संगीत सुनने के लिए वर्षों-वर्ष

बेयरुथ की यात्रा करते हैं। इसके अलावा, वह दिन भी आना बाकी था जब एक दौर के लिए डेबुसी को मैसेनेट के समान ही तुच्छ घोषित कर दिया जाएगा, और मेलिसांडे के सुरों को मैनन के स्तर तक गिरा दिया जाएगा। क्योंकि सिद्धांत और विचारधाराएँ, सूक्ष्मजीवों और कणिकाओं की तरह, एक-दूसरे को खा जाती हैं और अपने संघर्ष से अस्तित्व की निरंतरता सुनिश्चित करती हैं। लेकिन वह समय अभी आना बाकी था।

जैसे शेयर बाजार में जब किसी वस्तु की कीमत बढ़ती है, तो शेयरों का एक पूरा समूह उससे लाभान्वित होता है, वैसे ही कुछ तिरस्कृत संगीतकारों को भी इस प्रतिक्रिया से लाभ मिल रहा था, या तो इसलिए कि वे इस तिरस्कार के पात्र नहीं थे, या फिर इसलिए—जिससे उनकी प्रशंसा करते समय मौलिकता झलकती थी—कि वे इसके पात्र थे। और लोग तो यहाँ तक कि अतीत में ऐसे स्वतंत्र प्रतिभावान लोगों को खोज निकालने में जुट गए, जिनकी प्रतिष्ठा पर वर्तमान आंदोलन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था, लेकिन जिनके बारे में नए गुरुओं में से किसी एक ने सकारात्मक टिप्पणी की थी। अक्सर ऐसा इसलिए होता था क्योंकि कोई गुरु, चाहे वह कोई भी हो, चाहे उसका स्कूल कितना भी विशिष्ट क्यों न हो, अपनी सहज प्रवृत्ति के आधार पर प्रतिभा का मूल्यांकन करता है, चाहे वह कहीं भी पाई जाए, या यूँ कहें कि प्रतिभा से कहीं अधिक उस सुखद प्रेरणा से, जिसका उसने अतीत में आनंद लिया है और जो उसे उसके किशोरावस्था के किसी अनमोल क्षण की याद दिलाती है। या फिर, ऐसा इसलिए भी हो सकता है कि पिछली पीढ़ी के कुछ कलाकारों ने अपने काम के किसी अंश में कुछ ऐसा साकार किया हो जो उस गुरु के काम से मिलता-जुलता हो, जिसे वह स्वयं कभी बनाना चाहता था। फिर वह पुराने उस्ताद को एक तरह का अग्रदूत मानता है; वह उनमें, एक बिल्कुल अलग रूप में, एक ऐसे प्रयास को महत्व देता है जो क्षणिक रूप से, आंशिक रूप से भाईचारे जैसा है। पौसिन के काम में टर्नर के अंश मिलते हैं, मोंटेस्क्यू में हमें फ्लाउबर्ट का एक वाक्यांश मिलता है। कभी-कभी, उस्ताद की यह कथित पसंद किसी गलती के कारण होती थी, जो न जाने कहाँ से शुरू हुई और स्कूल में फैल गई। लेकिन उस स्थिति में, उल्लेखित नाम को उस परिस्थिति का लाभ मिला जिसके तहत इसे ऐन समय पर पेश किया गया, क्योंकि यदि उस्ताद की पसंद में स्वतंत्र इच्छाशक्ति, कुछ वास्तविक रुचि व्यक्त होती है, तो स्कूल स्वयं केवल सिद्धांत पर चलते हैं। इस प्रकार, मन, अपने अभ्यस्त मार्ग का अनुसरण करते हुए, जो

विषयांतर से आगे बढ़ता है, पहले एक दिशा में, फिर दूसरी दिशा में झुकता है, और कई ऐसी रचनाओं को प्रकाश में वापस ले आया है जिनमें न्याय की आवश्यकता, या मानकों के नवीनीकरण की आवश्यकता, या डेबुसी की रुचि, या उसकी सनक, या शायद उसने कभी न कही कोई टिप्पणी, ने चोपिन की रचनाओं को जोड़ दिया था। जिन जजों पर पूरा भरोसा था, उन्होंने इनकी सराहना की, और पेलियास की प्रशंसा से प्रेरित होकर इन्होंने एक नई चमक हासिल कर ली। यहाँ तक कि जिन लोगों ने इन्हें दोबारा नहीं सुना था, वे भी इन्हें सुनने के लिए इतने उत्सुक थे कि उन्होंने ऐसा किया, भले ही उन्होंने अपनी स्वतंत्र इच्छा का भ्रम बनाए रखा। लेकिन श्रीमती डी कैम्ब्रेमर-लेग्रैंडिन साल का कुछ हिस्सा ग्रामीण इलाकों में बिताती थीं। पेरिस में भी, बीमार होने के कारण, वे ज्यादातर अपने कमरे तक ही सीमित रहती थीं। यह सच है कि इस जीवनशैली की कमियाँ मुख्य रूप से उनके उन शब्दों के चुनाव में दिखाई देती थीं जिन्हें वे प्रचलित मानती थीं और जो लिखित भाषा के लिए अधिक उपयुक्त होते। यह अंतर वे समझ नहीं पाती थीं, क्योंकि वे इन्हें बातचीत से ज़्यादा पढ़ने से सीखती थीं। मौजूदा राय की सटीक जानकारी के लिए बातचीत उतनी ज़रूरी नहीं है जितनी नवीनतम अभिव्यक्तियों की। दुर्भाग्य से, आलोचकों ने अभी तक नॉक्टर्न्स के इस पुनरुद्धार की घोषणा नहीं की थी। इसकी खबर केवल युवा लोगों के बीच मौखिक रूप से ही फैली थी। श्रीमती डी कैम्ब्रेमर-लेग्रैंडिन को इसकी जानकारी नहीं थी। मैंने उन्हें यह बताने का सौभाग्य प्राप्त किया, लेकिन अपनी बात उनकी सास से कहते हुए, ठीक वैसे ही जैसे बिलियर्ड्स खेलते समय गेंद को कुशन पर मारने के लिए निशाना लगाया जाता है, कि चोपिन, पुराने ज़माने के बिल्कुल नहीं, बल्कि डेबुसी के पसंदीदा संगीतकार थे। "सचमुच, यह तो विचित्र है," बहू ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, मानो यह पेलियास के संगीतकार की ओर से जानबूझकर किया गया एक विरोधाभास हो। फिर भी, अब यह पूरी तरह निश्चित था कि भविष्य में वह हमेशा चोपिन को आदर और आनंद के साथ सुनेंगी। इसके अलावा, मेरे शब्दों ने, जो विधवा के लिए मुक्ति का क्षण प्रतीत हुए थे, उनके चेहरे पर मेरे प्रति कृतज्ञता और सबसे बढ़कर खुशी का भाव उत्पन्न किया। उनकी आँखें 'लैट्यूड' या 'पैंतीस वर्ष कैद' नामक नाटक में लैट्यूड की आँखों की तरह चमक उठीं, और उनके हृदय ने उस फैलाव के साथ समुद्री हवा को ग्रहण किया, जिसका वर्णन बीथोवेन ने 'फिडेलियो' में उस बिंदु पर किया है जहाँ उनके कैदी अंततः

'जीवनदायिनी हवा' में फिर से सांस लेते हैं। जहां तक विधवा की बात है, मुझे लगा कि वह अपने घने बालों वाले होंठ मेरे गालों से सटा देगी। "क्या, तुम्हें चोपिन पसंद है? उसे चोपिन पसंद है, उसे चोपिन पसंद है!" वह नाक से निकलने वाली कर्कश आवाज़ में जोश से चिल्लाई; मानो वह कह रही हो: "क्या, तुम श्रीमती डी फ्रैंकेटोट को भी जानते हो?" फर्क सिर्फ इतना था कि श्रीमती डी फ्रैंकेटोट के साथ मेरे संबंधों से उसे कोई फर्क नहीं पड़ता, जबकि चोपिन के बारे में मेरे ज्ञान ने उसे एक तरह के कलात्मक उन्माद में डुबो दिया। उसके मुंह से निकलने वाली अत्यधिक लार अब काफी नहीं थी। चोपिन की पुनर्खोज में डेबुसी की भूमिका को समझने की कोशिश भी न करते हुए, उसे बस इतना लगा कि चोपिन के बारे में मेरी राय अनुकूल थी। उसका संगीतमय उत्साह उस पर हावी हो गया। "एलोडी! एलोडी! उसे चोपिन पसंद है!" उसका सीना फूल गया और उसने अपने हाथों से हवा में थपथपाया। "आह! मुझे तुरंत पता चल गया था कि तुम एक संगीतकार हो," वह चिल्लाई। "मैं समझ सकती हूँ कि तुम्हारे जैसे कलाकार को वह क्यों पसंद है। वह कितना प्यारा है!" और उसकी आवाज़ इतनी कर्कश थी मानो चोपिन के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करने के लिए उसने डेमोस्थेनस की नकल करते हुए अपने मुँह में समुद्र तट के सारे कंकड़ भर लिए हों। फिर ज्वार का रुख बदला और वह उसके घूंघट तक पहुँच गया, जिसे वह समय रहते ही बचा नहीं पाई और वह पानी में डूब गया; और अंत में मार्किज़ ने अपने कढ़ाईदार रूमाल से झाग के उस निशान को पोंछ दिया जिसमें चोपिन की याद ने उसकी मूंछों को भिगो दिया था।

“हे भगवान!” श्रीमती डी कैम्ब्रेमर-लेग्रैंडिन ने मुझसे कहा, “मुझे लगता है मेरी सास बहुत देर कर रही हैं, वो भूल गई हैं कि हमारे यहाँ मेरे चाचा डी च्नोविल भोजन करने आए हैं। और कैंकन को इंतज़ार करना पसंद नहीं है।” ‘कैंकन’ शब्द मेरी समझ से परे था, और मैंने सोचा कि शायद वो किसी कुत्ते की बात कर रही हों। लेकिन च्नोविल परिवार के बारे में, बात कुछ इस तरह थी। समय बीतने के साथ, युवा मार्किज़ को अब वो आनंद नहीं आता था जो उन्हें कभी उनके नाम का इस तरह उच्चारण करने में मिलता था। फिर भी, यही आनंद दोबारा पाने की उम्मीद ने उनके पति के चुनाव का फैसला किया था। अन्य सामाजिक हलकों में, जब चेनोविल परिवार का ज़िक्र होता था, तो रिवाज़ यह था (अर्थात्, जब भी शब्द से पहले स्वर आता था, क्योंकि अन्यथा 'दे' पर ज़ोर देना पड़ता था, और जीभ 'मैडम डी'च'नोनसेओक्स'

नहीं बोल पाती थी) कि शब्द के मौन 'ई' को छोड़ दिया जाता था। लोग कहते थे: "मोंसियर डी'चेनोविल।" कैम्ब्रेमर की परंपरा अलग थी, लेकिन उतनी ही कठोर थी। यहाँ चेनोविल के मौन 'ई' को ही दबा दिया जाता था। चाहे नाम से पहले 'मोन कज़िन' लगे या 'मा कज़िन', यह हमेशा 'दे च'नोविल' ही होता था, कभी 'दे चेनोविल' नहीं। (इन चेनौविल परिवार के पिता के बारे में, एक व्यक्ति उन्हें 'हमारे चाचा' कहता था क्योंकि वे फेटेर्न में इतने 'समझदार' नहीं थे कि 'अंक' शब्द का उच्चारण गुएरमांटे परिवार की तरह कर सकें, जिनकी जानबूझकर इस्तेमाल की जाने वाली भाषा, जिसमें व्यंजन ध्वनियों को दबा दिया जाता था और विदेशी शब्दों को स्वाभाविक बना दिया जाता था, पुरानी फ्रेंच या किसी आधुनिक बोली की तरह ही समझना मुश्किल था।) परिवार में आने वाले हर नए सदस्य को चेनौविल परिवार के बारे में तुरंत एक ऐसा पाठ मिलता था जिसकी श्रीमती डी कैम्ब्रेमर-लेग्रैंडिन को आवश्यकता नहीं थी। एक दिन जब वे मिलने गईं और उन्होंने एक लड़की को यह कहते सुना: "मेरी आंटी डी उज़ाई," "मेरे अंक डी रौआन," तो उन्होंने पहले उन प्रतिष्ठित नामों को नहीं पहचाना जिनका उच्चारण वह अक्सर करती थी: उज़ेस और रोहन। उन्हें उस व्यक्ति की हैरानी, शर्मिंदगी और लज्जा का अनुभव हुआ, जो मेज पर एक ऐसे नए आविष्कार किए गए उपकरण को देखता है जिसका उचित उपयोग वह नहीं जानता और जिससे वह खाना शुरू करने की हिम्मत नहीं करता। लेकिन उस रात और अगले दिन वह उत्साह से बार-बार दोहराती रही: "मेरी चाची उज़ाई," अंतिम 'स' को दबाकर, एक ऐसा उच्चारण जो उसे एक दिन पहले स्तब्ध कर गया था, लेकिन अब उसे यह इतना भद्दा लग रहा था कि उसे यह नहीं पता था कि उसकी एक सहेली ने जब उससे डचेस डी'उज़ेस की प्रतिमा के बारे में बात की, तो मैडम लेग्रैंडिन ने चिढ़कर और घमंडी लहजे में जवाब दिया था: "कम से कम आप उनका नाम तो ठीक से बोल सकती हैं: मैडम डी'उज़ाई।" उस क्षण से उसे यह अहसास हो गया था कि ठोस पिंडों के अधिकाधिक सूक्ष्म तत्वों में रूपांतरित होने के कारण, उसके पिता से विरासत में मिली विशाल और सम्मानपूर्वक अर्जित संपत्ति, उसकी पूर्ण शिक्षा, सोरबोन में उसकी नियमित उपस्थिति, चाहे वह कैरो के व्याख्यान हों या ब्रुनेटियर के, और लैमोरक्स के संगीत कार्यक्रमों में, यह सब अस्थिर हो जाएगा, और एक दिन यह कहने के आनंद में अपनी चरम ऊँचाई प्राप्त करेगा: "मेरी आंटी डी'उज़ाई।" इससे यह संभावना भी खारिज नहीं होती कि अपने वैवाहिक

जीवन के शुरुआती दिनों में, कम से कम, वह उन सहेलियों के साथ मेलजोल नहीं रखेगी जिन्हें वह पसंद करती थी और जिनके साथ संबंध तोड़ने के लिए उसने खुद को तैयार कर लिया था, बल्कि उन सहेलियों के साथ रखेगी जिन्हें वह पसंद नहीं करती थी और जिनसे वह यह कहने की उम्मीद करती थी (क्योंकि आखिरकार, शादी करने का यही कारण था): "मुझे तुम्हें अपनी आंटी डी'उज़ाई से मिलवाना है," और जब उसे लगा कि ऐसा संभव नहीं है, तो वह कहेगी, "मुझे तुम्हें अपनी आंटी डी'च'नौविल से मिलवाना है," और "मैं तुम्हें उज़ाई परिवार से मिलवाने के लिए भोजन पर आमंत्रित करूंगी।" एम. डी कैम्ब्रेमर से शादी के बाद मैडम लेग्रैंडिन को इनमें से पहले वाक्य का प्रयोग करने का अवसर तो मिल गया, लेकिन दूसरे का नहीं, क्योंकि उसके ससुराल वालों का दायरा वैसा नहीं था जैसा उसने सोचा था और जिसके बारे में वह सपने देखती रहती थी। सेंट-लूप के बारे में मुझसे बात करते हुए (उस अवसर पर उनके एक मुहावरे को अपनाते हुए, क्योंकि अगर मैं उनसे बात करते समय लेग्रैंडिन के उन मुहावरों का इस्तेमाल करता, तो वह मुझे रॉबर्ट की बोली में जवाब देतीं, जिसे वह नहीं जानती थीं कि उन्होंने राहेल से उधार लिया था), उन्होंने अपने अंगूठे और तर्जनी को एक साथ लाकर और अपनी आँखें आधी बंद करते हुए, मानो वह किसी अत्यंत नाजुक चीज़ को निहार रही हों जिसे उन्होंने पकड़ लिया हो, कहा: "उनका मन बहुत ही आकर्षक है।" उन्होंने इतनी गर्मजोशी से उनकी प्रशंसा करना शुरू कर दिया कि कोई भी यह मान सकता था कि वह उनसे प्यार करती हैं (वास्तव में यह आरोप लगाया गया था कि कुछ समय पहले, जब वह डोंसिएरेस में थे, रॉबर्ट उनके प्रेमी थे), वास्तव में वह बस यही चाहती थीं कि मैं उनके शब्दों को रॉबर्ट तक दोहराऊँ, और अंत में उन्होंने कहा: "आप डचेस डी गुएरमांटेस के बहुत अच्छे दोस्त हैं। मैं बीमार हूँ, मैं कहीं नहीं जाती, और मैं जानती हूँ कि वह चुनिंदा दोस्तों के एक छोटे से समूह के साथ रहती हैं, जो मुझे उनकी बहुत बुद्धिमानी लगती है, और इसलिए मैं उन्हें बहुत कम जानती हूँ, लेकिन मैं जानती हूँ कि वह वास्तव में एक असाधारण महिला हैं।" यह जानते हुए कि श्रीमती डी कैम्ब्रेमर मुझे मुश्किल से जानती थीं, और खुद को उनके स्तर तक गिराने की उत्सुकता में, मैंने विषय को टाल दिया और मार्क्विज़ को उत्तर दिया कि मैं जिसे अच्छी तरह जानती थी, वह उनके भाई, एम. लेग्रैंडिन थे। उनका नाम सुनते ही उन्होंने वही टालमटोल वाला रवैया अपना लिया, जैसा मैंने श्रीमती डी गुएरमांटेस के नाम पर किया था,

लेकिन साथ ही झुंझलाहट भी दिखाई, क्योंकि उन्हें लगा कि मैंने यह बात खुद को नहीं, बल्कि उन्हें अपमानित करने के उद्देश्य से कही है। क्या वह लेग्रैंडिन परिवार में जन्म लेने के कारण निराशा से ग्रस्त थीं? कम से कम उनके पति की बहनों और भाभीयों का तो यही कहना था, जो प्रांतीय कुलीन वर्ग की महिलाएं थीं, जिन्हें किसी के बारे में कुछ भी पता नहीं था, और जो श्रीमती डी कैम्ब्रेमर की बुद्धिमत्ता, शिक्षा, धन-दौलत और बीमारी से पहले उनके शारीरिक आकर्षण से ईर्ष्या करती थीं। "वह इसके अलावा कुछ और सोच ही नहीं सकतीं, यही बात उन्हें अंदर से मार रही है," ये निंदक श्रीमती के बारे में बात करते समय यही कहते थे। डी कैम्ब्रेमर के बारे में ये बातें किसी से भी कही जाएं, लेकिन बेहतर होगा कि किसी आम आदमी से कही जाएं। चाहे वो घमंडी और मूर्ख हो, ताकि आम आदमी होने की शर्मिंदगी को उजागर करके उसके प्रति दिखाई जा रही विनम्रता को और बढ़ा सके, या फिर शर्मीला और चतुर हो और ये बात खुद पर लागू करे, ताकि मेहमाननवाज़ी करते हुए परोक्ष रूप से उसका अपमान करने का आनंद ले सके। लेकिन अगर इन महिलाओं को लगता था कि वे अपनी भाभी के बारे में सच कह रही हैं, तो वे गलत थीं। उन्हें लेग्रैंडिन परिवार में जन्म लेने से ज़रा भी तकलीफ़ नहीं थी, क्योंकि वो ये बात पूरी तरह भूल चुकी थीं। मेरे याद दिलाने पर उन्हें गुस्सा आया और वो चुप रहीं, मानो उन्हें कुछ समझ ही न आया हो, उन्होंने मेरी बात को आगे बढ़ाने या उसकी पुष्टि करने की ज़रूरत नहीं समझी।

"हमारे चचेरे भाई-बहन हमारी यात्रा को छोटा करने का मुख्य कारण नहीं हैं," श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने कहा, जो शायद अपनी बहू से भी ज़्यादा 'च'नौविल' कहने के आनंद से तृप्त थीं। "लेकिन, महोदय, आपको ज़्यादा लोगों से परेशान न करने के लिए," उन्होंने वकील की ओर इशारा करते हुए कहा, "वे अपनी पत्नी और बेटे को होटल लाने से डर रहे थे। वे समुद्र तट पर हमारा इंतज़ार कर रहे हैं, और वे अधीर हो रहे होंगे।" मैंने उनका सटीक विवरण मांगा और उन्हें खोजने के लिए जल्दी से निकल पड़ा। पत्नी का चेहरा रेनकुलस परिवार के कुछ फूलों की तरह गोल था, और उसकी आंख के कोने पर एक बड़ा सा तिल था। और जैसे मानव जाति की पीढ़ियां पौधों के परिवार की तरह अपनी विशेषताओं को संरक्षित रखती हैं, ठीक वैसे ही जैसे उसकी माँ के दागदार चेहरे पर, एक समान तिल, जो शायद प्रजातियों की एक किस्म को वर्गीकृत करने में मदद कर सकता था, उसकी आंख के नीचे उभरा हुआ था। वकील मेरी पत्नी

और बेटे के प्रति विनम्रता से प्रभावित हुए। उन्होंने बालबेक में मेरे ठहरने के विषय में रुचि दिखाई। "आपको यहाँ थोड़ा असहज महसूस हो रहा होगा, क्योंकि यहाँ के अधिकांश लोग विदेशी हैं।" बोलते समय उनकी नज़र मुझ पर टिकी रही, क्योंकि विदेशियों से उन्हें कोई लगाव नहीं था, हालाँकि उनके कई विदेशी ग्राहक थे। वे यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि कहीं मैं उनकी विदेशियों के प्रति अरुचि का शिकार तो नहीं हूँ, अन्यथा वे यह कहकर पीछे हट जाते: "बेशक, श्रीमती X—— एक आकर्षक महिला हो सकती हैं। यह सिद्धांत की बात है।" उस समय विदेशियों के बारे में मेरी कोई निश्चित राय नहीं थी, इसलिए मैंने असहमति का कोई संकेत नहीं दिया; उन्हें लगा कि वे सुरक्षित स्थिति में हैं। उन्होंने तो यहाँ तक कह दिया कि एक दिन पेरिस आकर वे मुझे ले सिडानर का अपना संग्रह दिखाएँगे और मेरे साथ कैम्ब्रेमर परिवार को भी लाएँगे, जिनसे वे स्पष्ट रूप से मानते थे कि मेरे घनिष्ठ संबंध हैं। "मैं आपको ले सिडानर से मिलवाऊँगा," उन्होंने मुझसे कहा, उन्हें पूरा विश्वास था कि उस क्षण से मैं केवल उस शुभ दिन की प्रतीक्षा में ही रहूँगा। “आप देखेंगे कि वह कितने मनमोहक व्यक्ति हैं। और उनकी तस्वीरें आपको मंत्रमुग्ध कर देंगी। बेशक, मैं बड़े-बड़े संग्रहकर्ताओं से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता, लेकिन मुझे विश्वास है कि उनके पसंदीदा चित्रों की सबसे बड़ी संख्या मेरे पास है। बालबेक से आने के कारण, ये चित्र आपको और भी अधिक आकर्षित करेंगे, क्योंकि इनमें से अधिकांश समुद्री विषयों पर आधारित हैं।” शांत स्वभाव वाले उनके पति और पुत्र ने धैर्यपूर्वक सुना। ऐसा प्रतीत होता था कि पेरिस में उनका घर ले सिडानर का एक प्रकार का मंदिर था। इस प्रकार के मंदिर व्यर्थ नहीं होते। जब किसी देवता को अपने गुणों पर संदेह होता है, तो वह उन लोगों की अकाट्य गवाही से अपने बारे में अपनी राय की दरारों को आसानी से भर सकता है जिन्होंने अपना जीवन उनके काम के लिए समर्पित कर दिया है।

अपनी बहू के इशारे पर, श्रीमती डी कैम्ब्रेमर जाने की तैयारी करने लगीं और मुझसे बोलीं: "चूंकि आप फेटर्न में आकर नहीं ठहरेंगे, तो क्या आप कम से कम इस सप्ताह किसी दिन दोपहर के भोजन पर नहीं आएँगे, उदाहरण के लिए कल?" और अपनी उदारता दिखाते हुए, निमंत्रण को और भी आकर्षक बनाने के लिए, उन्होंने आगे कहा: "आपको कॉम्टे डी क्रिसेनोय मिलेंगे," जिन्हें मैं कभी नहीं भूली थी, क्योंकि मैं उन्हें जानती ही नहीं थी। वह मुझे

और भी प्रलोभनों से चकित करने लगीं, लेकिन अचानक रुक गईं। मुख्य मजिस्ट्रेट, जिन्हें होटल लौटने पर बताया गया था कि वह परिसर में हैं, उन्हें हर जगह ढूंढते रहे, फिर मौके का इंतजार किया, और संयोग से उन्हें देखने का नाटक करते हुए, अब उनका अभिवादन करने के लिए आगे आए। मैं समझ गई कि श्रीमती डी कैम्ब्रेमर का इरादा उन्हें दोपहर के भोजन का निमंत्रण देने का नहीं था, जो उन्होंने अभी मुझे दिया था। फिर भी, वह उसे मुझसे कहीं अधिक समय से जानता था, क्योंकि वह वर्षों से फेटेर्न में दोपहर की पार्टियों में नियमित मेहमानों में से एक था, जिनसे मैं बालबेक की अपनी पिछली यात्रा के दौरान बहुत ईर्ष्या करता था। लेकिन समाज में केवल पुरानी जान-पहचान ही मायने नहीं रखती। और मेजबान महिलाएं अपने दोपहर के भोजन को नए परिचितों के लिए आरक्षित करने के लिए अधिक इच्छुक होती हैं जो अभी भी उनकी जिज्ञासा को जगाते हैं, खासकर जब वे सेंट-लूप की मेरे बारे में शानदार और अचूक सिफारिश के साथ आते हैं। श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने सोचा कि मुख्य मजिस्ट्रेट ने वह नहीं सुना होगा जो वह मुझसे कह रही थीं, लेकिन अपने दोषी विवेक को शांत करने के लिए, उन्होंने उनसे अत्यंत विनम्र स्वर में बात करना शुरू कर दिया। क्षितिज पर, आमतौर पर अदृश्य, रिवेबेल के सुनहरे तट पर पड़ रही धूप में, हम मुश्किल से ही चमकदार नीले रंग से अलग, पानी से उठते हुए, गुलाबी, चांदी जैसे, धुंधले, छोटे-छोटे घंटियों को देख पा रहे थे जो फेटेर्न के चारों ओर एंजेलस की ध्वनि कर रही थीं। “यह भी कुछ-कुछ पेलियास जैसा ही है,” मैंने श्रीमती डी कैम्ब्रेमर-लेग्रैंडिन से कहा। “आप जानती हैं कि मैं किस दृश्य की बात कर रही हूँ।” “बिल्कुल जानती हूँ!” उन्होंने कहा; लेकिन उनकी आवाज़ और चेहरे के भावों से, जिनमें किसी भी याद का कोई आभास नहीं था, और हवा में तैरती उनकी मुस्कान से, यह संदेश साफ झलक रहा था कि “मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है”। महारानी इस बात से अचंभित थीं कि घंटियों की आवाज़ इतनी दूर तक कैसे पहुँच गई, और समय का ध्यान रखते हुए उठ खड़ी हुईं। “लेकिन, आमतौर पर,” मैंने कहा, “हम बालबेक से तट के उस हिस्से को न तो कभी देखते हैं और न ही उसकी आवाज़ सुनते हैं। मौसम में बदलाव आया होगा और क्षितिज कई मायनों में विस्तृत हो गया होगा। कहीं ऐसा तो नहीं कि घंटियाँ आपको ढूँढ़ने आई हों, क्योंकि मैं देख रही हूँ कि वे आपको जाने के लिए कह रही हैं; आपके लिए तो वे खाने की घंटी हैं।” मुख्य मजिस्ट्रेट, घंटियों में ज़रा भी दिलचस्पी न दिखाते हुए, चुपके से सामने की ओर देखा,

जहाँ उस शाम इतने कम लोगों को देखकर उन्हें अफ़सोस हुआ। "आप एक सच्चे कवि हैं," श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने मुझसे कहा। "ऐसा लगता है जैसे आप बहुत संवेदनशील और कलात्मक हैं, आइए, मैं आपको चोपिन सुनाती हूँ," उन्होंने उत्साह से भरी बाहों को ऊपर उठाते हुए और समुद्र तट पर कंकड़ के सरकने जैसी कर्कश आवाज में ये शब्द कहे। फिर थूक निगलने की आवाज आई, और उस बूढ़ी महिला ने सहज रूप से अपने रूमाल से अपनी मूंछों के छोटे-छोटे बाल पोंछ लिए। मुख्य मजिस्ट्रेट ने अनजाने में ही मार्क्विज़ को उनकी गाड़ी तक ले जाने के लिए अपना हाथ बढ़ाकर मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया। उनके इस काम में कुछ अशिष्टता, निर्भीकता और दिखावे का प्रेम झलक रहा था, जो अन्य लोगों के लिए जोखिम उठाने से भी हिचकिचाहट पैदा करता था, और जो समाज में बिल्कुल भी असफल नहीं माना जाता। इसके अलावा, वह वर्षों से मुझसे कहीं अधिक इस तरह के काम करने के आदी थे। उनके इस कार्य के लिए उन्हें धन्यवाद देते हुए भी मैंने उनकी नकल करने का साहस नहीं किया और श्रीमती के बगल में चलने लगा। डी कैम्ब्रेमर-लेग्रैंडिन, जिन्होंने मेरे हाथ में मौजूद किताब देखने पर ज़ोर दिया। मैडम डी सेविग्ने का नाम सुनकर उनके चेहरे पर शिकन आ गई; और एक ऐसे शब्द का प्रयोग करते हुए, जिसे उन्होंने कुछ समाचार पत्रों में देखा था, लेकिन जिसे बोलचाल में स्त्रीलिंग रूप देकर सत्रहवीं शताब्दी की लेखिका के लिए इस्तेमाल करने पर अजीब सा प्रभाव पड़ा, उन्होंने मुझसे पूछा: "क्या आपको लगता है कि वह सचमुच उत्कृष्ट थीं?" मार्क्विज़ ने अपने सेवक को एक पेस्ट्री बनाने वाले का पता दिया, जहाँ उन्हें शाम की धुंध से गुलाबी हुई सड़क पर जाने से पहले रुकना था, जिसके बीच से एक के बाद एक चट्टानों की धुंधली दीवारें दिखाई दे रही थीं। उन्होंने अपने बूढ़े कोचवान से पूछा कि क्या सर्दी लगने वाले घोड़ों में से एक को पर्याप्त गर्म रखा गया है, और क्या दूसरे घोड़े के जूते उसे चुभ तो नहीं रहे हैं। "मैं आपको पत्र लिखूँगी और एक पक्की मुलाकात तय करूँगी," उन्होंने धीरे से मुझसे कहा। “मैंने सुना आप मेरी बहू से साहित्य के बारे में बात कर रहे थे, वो बहुत प्यारी है,” उसने आगे कहा, हालाँकि वह सचमुच ऐसा नहीं सोचती थी, लेकिन उसने ऐसा कहने की आदत बना ली थी—और अपने दयालु हृदय के कारण इसे बनाए रखा था—ताकि उसके बेटे पर यह आरोप न लगे कि उसने पैसे के लिए शादी की है। “इसके अलावा,” उसने अंत में उत्साह से दांत पीसते हुए कहा, “वो बहुत ही दिलदार है!” इतना कहकर वह

अपनी गाड़ी में बैठ गई, सिर हिलाते हुए, अपने धूप के चश्मे के डंडे को छड़ी की तरह ऊपर उठाते हुए, और बालबेक की गलियों में अपने पुरोहिती के गहनों से लदी हुई, किसी पुराने बिशप की तरह दीक्षा समारोह के लिए निकल पड़ी।

जब गाड़ी नज़र से ओझल हो गई और मैं लड़कियों के साथ अंदर आई, तो मुख्य मजिस्ट्रेट ने मुझसे सख्ती से कहा, "उसने तुम्हें दोपहर के भोजन पर बुलाया है। अभी हमारे रिश्ते ठीक नहीं हैं। उसे लगता है कि मैं उसकी उपेक्षा करती हूँ। अरे, मैं तो मिलनसार हूँ। अगर किसी को मेरी ज़रूरत होती है, तो मैं हमेशा हाज़िर रहती हूँ: 'अद्भुत!' लेकिन उन्होंने मुझे मजबूर करने की कोशिश की। अब," उन्होंने चालाकी से अपनी उंगली उठाते हुए, मानो कोई अंतर बता रहे हों, आगे कहा, "यह ऐसी बात है जिसे मैं बर्दाश्त नहीं करूँगा। यह मेरी छुट्टियों की आज़ादी के लिए खतरा है।" मुझे कहना पड़ा: "बस करो! लगता है तुम उसकी नज़रों में अच्छे हो। जब तुम मेरी उम्र के हो जाओगे, तो देखोगे कि समाज कितना खोखला है, और तुम्हें पछतावा होगा कि तुमने इन छोटी-मोटी बातों को इतना महत्व दिया। खैर, मैं खाने से पहले थोड़ी देर के लिए जा रहा हूँ। अलविदा बच्चों," उन्होंने हम पर चिल्लाते हुए कहा, मानो वे पचास गज दूर जा चुके हों।

जब मैंने रोज़मोंडे और गिज़ेल को अलविदा कहा, तो उन्होंने हैरानी से देखा कि अल्बर्टीन उनके साथ जाने के बजाय यहीं रुक रही है। "अरे, अल्बर्टीन, तुम क्या कर रही हो, क्या तुम्हें समय का पता नहीं है?" "घर जाओ," उसने अधिकारपूर्ण स्वर में उत्तर दिया। "मैं उससे बात करना चाहती हूँ," उसने विनम्रता से मेरी ओर इशारा करते हुए कहा। रोज़मोंडे और गिज़ेल मुझे एक नए और अजीब सम्मान से भरी निगाहों से देख रही थीं। मुझे यह एहसास अच्छा लगा कि कम से कम एक पल के लिए, रोज़मोंडे और गिज़ेल की नज़रों में भी, मैं अल्बर्टीन के लिए समय से, उसके दोस्तों से भी ज़्यादा महत्वपूर्ण था, और शायद मैं उसके साथ कुछ ऐसे गंभीर रहस्य साझा कर सकता था जिन्हें उनके लिए जानना असंभव था। "क्या हम आज शाम फिर मिलेंगे?" "पता नहीं, यह उस व्यक्ति पर निर्भर करेगा। खैर, कल।" "चलो मेरे कमरे में चलते हैं," मैंने उससे कहा, जब उसके दोस्त चले गए। हम लिफ्ट से गए; वह लड़के की उपस्थिति में चुप रही। अपने मालिकों के कामों का पता लगाने के लिए व्यक्तिगत अवलोकन और अनुमान लगाने की मजबूरी, उन अजीब प्राणियों के बारे में जो आपस में ही बात करते हैं और उनसे

बोलते नहीं, 'कर्मचारियों' (जैसे लिफ्ट-बॉय जैसे नौकर) में 'मालिक' की तुलना में अधिक अनुमान लगाने की क्षमता विकसित कर देती है। हमारी इंद्रियाँ, उनकी आवश्यकता के अनुसार, या तो कमजोर हो जाती हैं या मजबूत या अधिक सूक्ष्म हो जाती हैं। जब से रेलगाड़ियाँ अस्तित्व में आईं, ट्रेन न छूटने की आवश्यकता ने हमें मिनटों का हिसाब रखना सिखाया है, जबकि प्राचीन रोमनों में, जिनका खगोल विज्ञान का ज्ञान तो सतही था ही, साथ ही वे कम जल्दबाजी वाला जीवन जीते थे, मिनटों की ही नहीं, बल्कि निश्चित घंटों की अवधारणा भी लगभग न के बराबर थी। और इसलिए लिफ्ट-बॉय ने यह जानकारी इकट्ठा की और अपने साथियों को यह बताने का इरादा किया कि अल्बर्टीन और मैं किसी काम में व्यस्त हैं। लेकिन वह हमसे लगातार बात करता रहा क्योंकि उसमें शिष्टाचार की कमी थी। फिर भी, मुझे उसके चेहरे पर हमेशा की तरह मित्रता और मुझे लिफ्ट में ले जाने की खुशी के भाव की जगह असाधारण उदासी और बेचैनी दिखाई दी। चूंकि मुझे इसका कारण नहीं पता था, इसलिए उसका ध्यान भटकाने के लिए, और हालांकि मैं अल्बर्टीन से भी ज्यादा चिंतित थी, मैंने उसे बताया कि जो महिला अभी-अभी गई थी, उनका नाम मार्किज़ डी कैम्ब्रेमर था, न कि डी कैम्बर्ट। जिस लैंडिंग पर हम उस समय रुके थे, वहां मैंने एक बदसूरत नौकरानी को बाल्टियाँ लिए देखा, जिसने सम्मानपूर्वक मेरा अभिवादन किया और मेरे जाने पर टिप की उम्मीद जताई। मैं यह जानना चाहती थी कि क्या वह वही थी जिसे मैंने बालबेक में अपने पहले आगमन की शाम को इतनी शिद्दत से चाहा था, लेकिन मैं कभी भी निश्चित नहीं हो सकी। लिफ्ट वाले लड़के ने सबसे झूठे गवाहों की तरह पूरी ईमानदारी से कसम खाई, लेकिन अपने चेहरे पर निराशा का भाव बनाए रखते हुए, कि मार्किज़ ने उसे वास्तव में कैम्बर्ट नाम से ही उसका नाम बताने को कहा था। और वास्तव में यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि उसने उसे एक ऐसा नाम कहते सुना जिसे वह पहले से जानता था। इसके अलावा, कुलीनता और उपाधियों के नामों के बारे में उसके मन में जो अस्पष्ट धारणाएँ थीं, जो कि लिफ्ट-बॉय न होने वाले कई लोगों में पाई जाती हैं, उसके कारण कैमेम्बर्ट नाम उसे और भी अधिक संभावित लगा, क्योंकि यह पनीर सर्वत्र प्रसिद्ध है, इसलिए यह बिल्कुल भी आश्चर्यजनक नहीं था कि लोगों ने इतनी गौरवशाली उपाधि से मार्किस की उपाधि प्राप्त की हो, सिवाय इसके कि मार्किस की उपाधि ने ही इस पनीर को प्रसिद्धि प्रदान की हो। फिर भी, जैसा कि उसने देखा

कि मैं अपनी गलती मानने से इनकार कर रहा हूँ, और जैसा कि वह जानता था कि मालिक अपनी सबसे व्यर्थ इच्छाओं का पालन करवाना और अपने सबसे स्पष्ट झूठ को स्वीकार करवाना पसंद करते हैं, उसने एक अच्छे नौकर की तरह मुझसे वादा किया कि भविष्य में वह कैम्ब्रेमर कहेगा। यह सच है कि कस्बे के किसी भी दुकानदार या जिले के किसी भी किसान, जहाँ कैम्ब्रेमर परिवार के नाम और व्यक्तियों से अच्छी तरह परिचित थे, लिफ्ट-बॉय जैसी गलती नहीं कर सकते थे। लेकिन 'ग्रैंड होटल ऑफ बालबेक' के कर्मचारी वहां के मूल निवासी नहीं थे। वे फर्नीचर और सामान के साथ सीधे बियारित्ज़, नीस और मोंटे-कार्लो से आए थे, जिनमें से एक दल को डोविल, दूसरे को डिनार्ड और तीसरे को बालबेक के लिए आरक्षित कर दिया गया था।

लेकिन लिफ्ट में काम करने वाले लड़के की बेचैनी बढ़ती ही जा रही थी। उसका हमेशा की तरह मुस्कुराकर मुझे अपनी वफादारी दिखाना भूल जाना, ज़रूर उस पर कोई विपत्ति आ पड़ी होगी। शायद उसे किसी ने 'याद' किया होगा। ऐसे में मैंने उसे वापस नौकरी पर रखने की कोशिश करने का मन बना लिया, क्योंकि मैनेजर ने अपने कर्मचारियों के बारे में मेरी सभी इच्छाओं को पूरा करने का वादा किया था। "आप जो चाहें कर सकते हैं, मैं सब कुछ पहले से ही ठीक कर देता हूँ।" अचानक, जैसे ही मैं लिफ्ट से बाहर निकला, मुझे लड़के की परेशानी और घबराहट का कारण समझ आ गया। क्योंकि अल्बर्टीन मेरे साथ थी, इसलिए मैंने उसे पाँच फ्रैंक नहीं दिए थे जो मैं ऊपर जाते समय उसके हाथ में चुपके से दे देता था। और वह बेवकूफ, यह समझने के बजाय कि मैं किसी तीसरे व्यक्ति के सामने उदारता का प्रदर्शन नहीं करना चाहता, कांपने लगा, यह सोचकर कि सब कुछ खत्म हो गया है, कि मैं उसे फिर कभी कुछ नहीं दूंगा। उन्हें लगा कि मैं मुश्किल में हूँ (जैसा कि ड्यूक डी गुएरमांटेस कहते थे), और इस अनुमान ने उनके मन में मेरे लिए दया की बजाय घोर स्वार्थी निराशा पैदा कर दी। मैंने खुद से कहा कि मैं अपनी माँ की सोच से कम अनुचित थी, जब मैंने एक दिन हिम्मत करके वह बड़ी रकम नहीं दी जिसका मुझे बेसब्री से इंतज़ार था। लेकिन उसी समय, उनकी खुशी के उस स्वाभाविक भाव को, जिसे मैं अब तक बिना किसी संदेह के समझती थी और जिसमें मुझे भक्ति का भाव दिखता था, अब मुझे कम निश्चित लगने लगा था। होटल की पांचवीं मंजिल से खुद को नीचे फेंकने के लिए हताशा में तैयार लिफ्ट-बॉय को देखकर, मैंने खुद से पूछा कि

अगर किसी क्रांति के परिणामस्वरूप हमारी सामाजिक स्थिति बदल जाए, तो क्या वह लड़का, आत्मनिर्भर होकर, मेरे लिए विनम्रता से लिफ्ट चलाने के बजाय मुझे कुएं में नहीं फेंक देता? और क्या निचले तबके के कुछ लोगों में समाज की तुलना में अधिक दोहरापन नहीं होता, जहां निस्संदेह लोग अपनी अपमानजनक टिप्पणियां तब तक बचाकर रखते हैं जब तक हम उनकी सुनने की सीमा से बाहर न हो जाएं, लेकिन जहां अगर हम गरीबी में डूब जाएं तो उनका रवैया हमारे प्रति अपमानजनक नहीं होगा?

लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि बालबेक होटल में लिफ्ट-बॉय सबसे ज्यादा व्यावसायिक सोच वाला था। इस दृष्टिकोण से कर्मचारियों को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है; एक ओर वे लोग थे जो आगंतुकों में भेद करते थे और एक बूढ़े रईस की मामूली टिप के लिए ज्यादा आभारी थे (जो जनरल डी ब्यूट्रेलिस से उनके लिए एक शब्द कहकर उन्हें 28 दिनों की सैन्य सेवा से मुक्त करा सकता था), बजाय उस धूर्त की फिजूलखर्ची के, जो अपनी फिजूलखर्ची से ही व्यवहारहीनता को दर्शाता था, जिसे वे केवल उसके सामने ही उदारता कहते थे। दूसरी ओर वे लोग थे जिनके लिए कुलीनता, बुद्धि, प्रसिद्धि, पद, शिष्टाचार का कोई महत्व नहीं था, सब कुछ पैसे के पीछे छिपा हुआ था। इनके लिए केवल एक ही मापदंड था, पैसा, या यूं कहें कि दिया जाने वाला पैसा। संभवतः ऐमे स्वयं, हालांकि उन्होंने कई होटलों में काम किया था, इसलिए दुनिया के बारे में व्यापक ज्ञान होने का दिखावा करते थे, इसी दूसरी श्रेणी में आते थे। अधिक से अधिक वह इस तरह की प्रशंसा पर औपचारिक रुख अपनाता, यह जताते हुए कि वह जानता है कि कौन क्या है, जैसे कि उसने प्रिंसेस डी लक्ज़मबर्ग के बारे में कहा: "क्या उस समूह में पैसों का ढेर है?" (अंत में प्रश्नचिह्न तथ्यों की पुष्टि करने या पहले से प्राप्त जानकारी की जाँच करने के लिए था, इससे पहले कि वह किसी ग्राहक को पेरिस के लिए 'शेफ' उपलब्ध कराए या उसे बालबेक में दरवाजे के पास, बाईं ओर, समुद्र के दृश्य वाली मेज देने का वादा करे)। इसके बावजूद, और हालांकि वह कुछ स्वार्थी विचारों से मुक्त नहीं था, वह उन्हें लिफ्ट-बॉय की तरह मूर्खतापूर्ण निराशा के साथ प्रदर्शित नहीं करता। फिर भी, लिफ्ट-बॉय की सरलता ने शायद चीजों को आसान बनाने में मदद की। किसी बड़े होटल या ऐसे घर की सुविधा ही ऐसी है, जैसे राहेल कभी अक्सर जाया करती थी, कि बिना किसी मध्यस्थ के, किसी नौकर या औरत का चेहरा, जो उस पल तक अकड़ा हुआ था, सौ फ्रैंक का नोट देखकर, या

उससे भी ज्यादा हजार फ्रैंक का नोट देखकर, भले ही वह किसी और को दिया जा रहा हो, मुस्कान और सेवा भाव से भर उठता है। जबकि प्रेम-प्रसंग और प्रेम-प्रसंग के रिश्तों में, धन और विनम्रता के बीच बहुत सी चीजें आ जाती हैं। इतनी सारी चीजें कि जिन लोगों के चेहरे पर पैसा अंततः मुस्कान लाता है, वे अक्सर उस आंतरिक प्रक्रिया को समझने में असमर्थ होते हैं जो उन्हें आपस में जोड़ती है, और खुद को अधिक परिष्कृत मानते हैं, और वास्तव में होते भी हैं। इसके अलावा, यह शिष्ट बातचीत से ऐसे वाक्यों को हटा देता है जैसे: "मेरे लिए बस एक ही काम बचा है, तुम मुझे कल मुर्दाघर में पाओगे।" और इसलिए शिष्ट समाज में बहुत कम उपन्यासकार या कवि मिलते हैं, उन सभी महान प्राणियों में से बहुत कम जो उन चीजों के बारे में बात करते हैं जिनका जिक्र नहीं किया जाना चाहिए।

जैसे ही हम अकेले हुए और गलियारे में आगे बढ़े, अल्बर्टीन ने बोलना शुरू किया: "तुम्हें मुझसे क्या शिकायत है?" क्या मेरा कठोर व्यवहार मेरे लिए भी कष्टदायी था? क्या यह महज़ मेरी एक अनजाने में की गई चाल थी, जिसका उद्देश्य मेरी प्रेमिका को भय और विनती की उस स्थिति में लाना था जिससे मैं उससे पूछताछ कर सकूँ, और शायद यह पता लगा सकूँ कि उसके बारे में मैंने जो वैकल्पिक परिकल्पनाएँ बहुत पहले बना रखी थीं, उनमें से कौन सी सही थी? चाहे जो भी हो, जब मैंने उसका सवाल सुना, तो मुझे अचानक एक लंबे समय से चाही गई इच्छा को प्राप्त करने वाले व्यक्ति जैसी खुशी का अनुभव हुआ। उसे जवाब देने से पहले, मैं उसे अपने कमरे के दरवाजे तक ले गया। दरवाजा खोलते ही, मैंने कमरे में फैली गुलाबी रोशनी को बिखेर दिया, जिससे रात के लिए खींचे गए सफेद मलमल के पर्दे सुनहरे दमिश्क में बदल गए। मैं खिड़की के पास गया; समुद्री पक्षी फिर से लहरों पर बैठ गए थे; लेकिन इस बार वे गुलाबी थे। मैंने अल्बर्टीन का ध्यान उनकी ओर आकर्षित किया। "विषय मत बदलो," उसने कहा, "मुझसे खुलकर बात करो।" मैंने झूठ बोला। मैंने उससे कहा कि उसे पहले एक स्वीकारोक्ति सुननी होगी, जो कि कुछ समय पहले से एंड्री के प्रति मेरे गहरे प्रेम की थी। मैंने यह स्वीकारोक्ति मंच के योग्य सरलता और स्पष्टता के साथ की, जो वास्तविक जीवन में शायद ही कभी देखने को मिलती है, सिवाय उस प्रेम के जो लोग महसूस नहीं करते। बालबेक की अपनी पहली यात्रा से पहले मैंने गिल्बर्ट के साथ जो काल्पनिक बातें की थीं, उन्हें दोहराते हुए, मैंने अपनी बात को थोड़ा बदलकर यह भी स्वीकार कर लिया (ताकि जब मैं उसे बताऊं

कि अब मैं उससे प्यार नहीं करता, तो वह मुझ पर आसानी से विश्वास कर ले)। मैंने यह भी कहा कि एक समय मैं उससे प्यार करने के कगार पर था, लेकिन बहुत समय बीत जाने के कारण, अब वह मेरे लिए एक अच्छी दोस्त और साथी से ज्यादा कुछ नहीं है, और अगर मैं उसके लिए फिर से वही तीव्र भावना महसूस करना चाहूं तो भी यह मेरे बस की बात नहीं है। जैसा कि हुआ, अल्बर्टीन के सामने उसके प्रति अपनी इस उदासीनता के दावों पर इस प्रकार खड़े होकर, मैं केवल—एक विशेष परिस्थिति और एक विशेष उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए —उस दोहरे भाव को और अधिक स्पष्ट कर रहा था, और अधिक ज़ोर दे रहा था, जो प्रेम उन सभी लोगों में अपना लेता है जिन्हें स्वयं पर इतना कम विश्वास होता है कि वे यह विश्वास नहीं कर पाते कि कोई स्त्री कभी उनसे प्रेम कर सकती है, और यह भी कि वे स्वयं वास्तव में उससे प्रेम कर सकते हैं। वे स्वयं को इतना भलीभांति जानते हैं कि उन्होंने देखा है कि विभिन्न प्रकार की स्त्रियों की उपस्थिति में भी उन्हें एक जैसी आशाएँ, एक जैसी पीड़ाएँ होती हैं, वे एक जैसे प्रेम प्रसंग गढ़ते हैं, एक जैसे शब्द बोलते हैं, और इस प्रकार वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि उनकी भावनाएँ, उनके कार्य उस स्त्री से कोई घनिष्ठ और आवश्यक संबंध नहीं रखते जिससे वे प्रेम करते हैं, बल्कि वे उसके पास से गुजरते हैं, उसे बिखेरते हैं, उसे घेर लेते हैं, जैसे लहरें चट्टानों से टकराती हैं, और उनकी अपनी अस्थिरता की भावना उनके इस संदेह को और भी बढ़ा देती है कि जिस स्त्री से वे प्रेम पाना चाहते हैं, वह उनसे प्रेम नहीं करती। ऐसा संयोग से क्यों हुआ होगा, जबकि वह तो केवल एक आकस्मिक घटना है जिसे हमारी इच्छा के उफान को पकड़ने के लिए इस प्रकार रखा गया है कि हम स्वयं उस इच्छा के लक्ष्य बन जाएं जो उसे प्रेरित कर रही है? और इसलिए, जब हम उसके सामने उन सभी भावनाओं को उड़ेलने की आवश्यकता महसूस करते हैं, जो हमारे पड़ोसी द्वारा हममें जगाई गई मात्र मानवीय भावनाओं से इतनी भिन्न हैं, वे अत्यधिक विशिष्ट भावनाएँ जो एक प्रेमी की होती हैं, तो एक कदम आगे बढ़ने के बाद, जिसे हम प्यार करते हैं उसके प्रति अपने स्नेह, अपनी आशाओं को स्वीकार करते हुए, उसे नाराज करने के डर से तुरंत अभिभूत हो जाते हैं, इस बात से भी शर्मिंदा होते हैं कि हमने उससे जो कहा है वह विशेष रूप से उसके लिए नहीं लिखा गया था, कि यह पहले ही हमारे काम आ चुका है, दूसरों के लिए भी काम आएगा, कि यदि वह हमसे प्यार नहीं करती तो वह हमें समझ नहीं सकती और उस स्थिति में हमने उस विवेचना, उस

पांडित्यपूर्ण विनम्रता की कमी के साथ बात की है जो एक अज्ञानी श्रोता को सूक्ष्म शब्दों में संबोधित करता है जो उनके लिए नहीं हैं, यह डर, यह शर्म विपरीत लय, प्रतिलोम, आवश्यकता को जन्म देती है, यहाँ तक कि पहले पीछे हटकर, पहले से स्वीकार किए गए स्नेह को जोरदार ढंग से नकार कर, आक्रामक रुख अपनाने और उसका सम्मान पुनः प्राप्त करने, उस पर हावी होने की आवश्यकता को भी। एक ही प्रेम प्रसंग के विभिन्न चरणों में, समान प्रेम प्रसंगों के सभी संबंधित चरणों में, और उन सभी लोगों में जिनका आत्म-विश्लेषण उनके आत्म-सम्मान से अधिक होता है, दोहरा लय स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। हालाँकि, यदि अल्बर्टीन से किए जाने वाले मेरे इस भाषण में यह लय सामान्य से कुछ अधिक ज़ोरदार ढंग से व्यक्त की गई थी, तो इसका कारण केवल यह था कि मैं अपने स्नेह को व्यक्त करने वाले वैकल्पिक लय की ओर अधिक तेज़ी से और अधिक प्रभावी ढंग से अग्रसर हो सकूँ।

मानो अल्बर्टीन के लिए यह मानना बहुत कष्टदायक होगा कि इतने लंबे अंतराल के बाद मेरे लिए उससे दोबारा प्रेम करना असंभव है। इसलिए मैंने अपने स्वभाव की इस विलक्षणता को उन लोगों के उदाहरणों से सही ठहराया, जिनके साथ मैंने, उनकी गलती या अपनी स्वयं की गलती के कारण, प्रेम करने का समय गंवा दिया था और चाहे कितनी भी तीव्र इच्छा रही हो, उसे दोबारा प्राप्त नहीं कर पाया था। इस प्रकार, मैं एक ही समय में उससे शिष्टाचारहीनता के लिए माफी मांगता हुआ प्रतीत हो रहा था, और साथ ही साथ उसे इस असमर्थता के मनोवैज्ञानिक कारणों को समझाने का प्रयास कर रहा था, मानो वे कारण केवल मुझमें ही हों। लेकिन इस तरह से अपनी बात समझाकर, गिल्बर्ट के मामले पर जोर देकर, जिसके संबंध में यह तर्क वास्तव में सत्य था, जबकि अल्बर्टीन पर लागू होने पर यह सत्य से बहुत दूर हो रहा था, मैंने केवल अपने कथनों को उतना ही विश्वसनीय बना दिया जितना कि मैं उन्हें मानने का दिखावा कर रहा था। मुझे लगा कि अल्बर्टीन ने मेरी 'स्पष्टवादी बात' की सराहना की और मेरे निष्कर्षों में सबूतों की स्पष्टता को पहचानते हुए, मैंने इसके लिए माफी मांगते हुए कहा कि मैं जानता हूं कि सच्चाई हमेशा अप्रिय होती है और इस मामले में उसे समझ से परे लग रही होगी। इसके विपरीत, उसने मेरी ईमानदारी के लिए मुझे धन्यवाद दिया और कहा कि वह उलझन में पड़ने के बजाय, मन की इस इतनी सामान्य और स्वाभाविक स्थिति को पूरी तरह समझती है।

एंड्री के लिए अपने काल्पनिक प्रेम का अल्बर्टीन के सामने इज़हार करने और उसके प्रति उदासीनता दिखाने से, जिसे मैंने शिष्टाचारवश, मानो शालीनता के कारण, अल्बर्टीन को यह जताते हुए आश्वस्त किया कि इसे शाब्दिक रूप से न लिया जाए, अंततः मुझे अल्बर्टीन के मेरे प्रेम का संदेह करने के डर के बिना, उससे उस कोमलता से बात करने में सक्षम बनाया, जिसे मैंने इतने लंबे समय तक स्वयं से दूर रखा था और जो मुझे अत्यंत अद्भुत लगी। मैंने लगभग अपनी विश्वासपात्र को गले लगा लिया; जब मैंने उससे उसकी उस सहेली के बारे में बात की जिससे मैं प्यार करता था, तो मेरी आँखों में आँसू आ गए। लेकिन, आखिरकार मुद्दे पर आते हुए, मैंने उससे कहा कि वह जानती है कि प्रेम का क्या अर्थ होता है, उसकी संवेदनशीलताएँ, उसके दुख, और शायद, अब एक पुरानी दोस्त होने के नाते, वह अपने दिल में उस कड़वे दुख को रोकने का प्रयास करे जो वह मुझे दे रही है, सीधे तौर पर नहीं, क्योंकि मैं उससे प्रेम नहीं करता था, अगर मैं उसे नाराज़ किए बिना यह दोहराने का साहस करूँ, बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से एंड्री के लिए मेरे प्रेम को ठेस पहुँचाकर। मैं रुक गया और अल्बर्टीन को एक विशाल पक्षी की ओर इशारा किया, जो अकेला और तेज़ी से उड़ रहा था, जो हमसे काफी आगे, अपने पंखों की नियमित फड़फड़ाहट से हवा को चीरता हुआ, लाल कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़ों की तरह जगह-जगह प्रतिबिंबित हो रहे प्रतिबिंबों से रंगे समुद्र तट पर पूरी गति से उड़ रहा था, और बिना अपनी गति धीमी किए, बिना अपना ध्यान भटकाए, बिना अपने मार्ग से विचलित हुए, उसे एक छोर से दूसरे छोर तक पार कर रहा था, मानो कोई दूत दूर-दूर तक कोई ज़रूरी और महत्वपूर्ण संदेश ले जा रहा हो। "कम से कम वह सीधे मुद्दे पर तो आता है!" अल्बर्टीन ने तिरस्कार भरे स्वर में कहा। "तुम ऐसा इसलिए कह रहे हो क्योंकि तुम्हें पता नहीं कि मैं तुम्हें क्या बताने वाला था। लेकिन यह इतना मुश्किल है कि मैं इसे छोड़ देना ही बेहतर समझता हूँ; मुझे यकीन है कि मैं तुम्हें नाराज़ कर दूँगा; और फिर बस यही होगा: मैं उस लड़की के साथ किसी भी तरह से बेहतर स्थिति में नहीं रहूँगा जिससे मैं वास्तव में प्यार करता हूँ और मैं एक अच्छे दोस्त को खो दूँगा।" "लेकिन मैं तुमसे वादा करता हूँ कि मैं नाराज़ नहीं होऊँगा।" उसका भाव इतना मधुर, इतना नम्र और शांत था, मानो उसकी सारी खुशी मुझ पर निर्भर हो, कि मैं खुद को मुश्किल से रोक पाया और उसके इस अनोखे चेहरे को चूम लिया—लगभग उसी आनंद के साथ जैसे मैं अपनी माँ को चूमता—जो अब उस विद्रोही और शरारती बिल्ली

के बच्चे की तरह चौंकने और शरमाने वाला भाव नहीं दिखाता था, जिसकी छोटी गुलाबी, नुकीली नाक होती थी, बल्कि अपने गहरे दुख में डूबा हुआ, शुद्ध अच्छाई के चौड़े, चपटे, लटके हुए टुकड़ों में ढला हुआ प्रतीत होता था। अपने प्रेम को एक ऐसे चिरस्थायी जुनून के रूप में देखते हुए जिसका उससे कोई संबंध नहीं था, खुद को उसकी जगह पर रखकर, मैंने इस ईमानदार लड़की के सामने अपना दिल पिघलने दिया, जो हमेशा मित्रतापूर्ण और वफादार व्यवहार की आदी थी, और जिसे उसका वह साथी, जिसे वह शायद अपना साथी समझती थी, पिछले कई हफ्तों से सताकर परेशान कर रहा था, और अंततः उसका उत्पीड़न चरम पर पहुँच गया था। मैंने खुद को एक विशुद्ध मानवीय दृष्टिकोण से देखा, जो हम दोनों से परे था, और जहाँ मेरा ईर्ष्यालु प्रेम घुल गया, तभी मुझे अल्बर्टीन के लिए वह गहरी दया महसूस हुई, जो शायद इतनी गहरी नहीं होती अगर मैं उससे प्रेम न करता। हालाँकि, उस लयबद्ध दोलन में जो एक घोषणा से झगड़े की ओर ले जाता है (विपरीत और क्रमिक गतियों द्वारा एक ऐसी गाँठ बनाने का सबसे निश्चित, सबसे खतरनाक तरीका जो खुलती नहीं है और हमें उस व्यक्ति से दृढ़ता से जोड़ देती है, वापसी की गति के तनाव से जो लय के दो तत्वों में से एक है), मानवीय करुणा के प्रतिध्वनियों का और विश्लेषण करने का क्या लाभ है, जो प्रेम के विपरीत है, यद्यपि शायद अनजाने में उसी कारण से उत्पन्न होती है, लेकिन हर मामले में समान प्रभाव पैदा करती है? जब हम बाद में एक महिला के लिए किए गए अपने सभी कार्यों की कुल मात्रा गिनते हैं, तो हम अक्सर पाते हैं कि उसे यह दिखाने की इच्छा से प्रेरित कार्य कि हम उससे प्यार करते हैं, उसे हमसे प्यार करने के लिए प्रेरित करने के लिए प्रेरित करने के लिए प्रेरित करने के लिए प्रेरित करने के लिए प्रेरित करने के लिए प्रेरित कार्यों की तुलना में बहुत कम या कोई अधिक नहीं होती है, जो कि उस प्राणी के प्रति किए गए गलत कामों की भरपाई करने की मानवीय आवश्यकता के कारण होते हैं जिसे हम प्यार करते हैं, केवल नैतिक कर्तव्य की भावना से, मानो हम उससे प्यार नहीं करते हों। "लेकिन मुझे बताओ, मैंने आखिर क्या किया है?" अल्बर्टीन ने मुझसे पूछा। दरवाजे पर दस्तक हुई; वह लिफ्ट वाला लड़का था; अल्बर्टीन की चाची, जो एक गाड़ी में होटल के पास से गुजर रही थीं, उसे वहाँ पाकर उसे घर ले जाने की उम्मीद में रुक गई थीं। अल्बर्टीन ने संदेश भेजा कि वह नहीं आ सकती, कि वे उसके बिना ही खाना शुरू करेंगे, और वह यह नहीं बता सकती कि वह कब

लौटेगी। "लेकिन क्या तुम्हारी चाची नाराज़ नहीं होंगी?" "तुम्हें क्या लगता है? वह सब समझ जाएँगी।" और इस तरह, कम से कम इस क्षण में, एक ऐसा क्षण जो शायद फिर कभी न आए —इस घटना से यह साबित हो गया कि अल्बर्टीन की नज़र में मेरे साथ बातचीत इतनी महत्वपूर्ण थी कि उसे हर चीज़ से ऊपर रखा जाना चाहिए, एक ऐसी बात जिसके लिए, निस्संदेह सहज रूप से पारिवारिक नियमों का हवाला देते हुए, कुछ ऐसे संकटों का उल्लेख करते हुए जिनमें, जब एम. बोंटेम्प्स का करियर दांव पर था, बिना सोचे-समझे यात्रा की गई थी, मेरी सहेली को कभी संदेह नहीं हुआ कि उसकी चाची को रात के खाने का समय त्यागते देखना बिल्कुल स्वाभाविक लगेगा। वह दूर का समय जो उसने मेरे बिना, अपने लोगों के बीच बिताया, अल्बर्टीन ने उसे मेरे पास लाकर मुझे सौंप दिया; मैं इसका जो भी उपयोग करना चाहूँ, कर सकती थी। मैंने हिम्मत जुटाकर उसे उसके रहन-सहन के बारे में जो कुछ भी पता चला था, वह सब बता दिया। मैंने यह भी कहा कि हालाँकि मुझे उस बुराई में लिप्त महिलाओं से घृणा थी, फिर भी मैंने इस बारे में तब तक नहीं सोचा था जब तक मुझे उसके साथी का नाम नहीं पता चला था। और वह समझ सकती थी, क्योंकि मैं एंड्री से बहुत प्यार करती थी, कि इस खबर ने मुझे कितना दुख पहुँचाया था। शायद यह कहना ज़्यादा समझदारी भरा होता कि मुझे कुछ और महिलाओं के नाम भी बताए गए थे, जिनमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन कॉटार्ड ने जो अचानक और भयानक खुलासा किया था, वह मेरे दिल में इस कदर गहरा उतरा कि उसे चीर डाला, वह अपने आप में पूर्ण था, लेकिन उसमें कोई और बात नहीं थी। और ठीक वैसे ही, उस क्षण से पहले, अगर कॉटार्ड ने वाल्ट्ज़ करते समय उनके हावभाव की ओर मेरा ध्यान न दिलाया होता, तो मुझे कभी यह ख्याल भी नहीं आता कि अल्बर्टीन एंड्री से प्यार करती है, या कम से कम उसे सहलाने में आनंद ले सकती है। ठीक वैसे ही, मैं उस विचार से उस विचार तक नहीं पहुँच पा रहा था, जो मेरे लिए बिल्कुल अलग था, कि अल्बर्टीन के एंड्री के अलावा अन्य महिलाओं के साथ भी संबंध हो सकते हैं, जिनके लिए स्नेह को बहाना नहीं बनाया जा सकता। अल्बर्टीन ने मुझसे यह कसम खाने से पहले ही कि यह सच नहीं है, हर उस व्यक्ति की तरह, जिसे अपने बारे में ऐसी बातें सुनने को मिलती हैं, क्रोध, चिंता और उस अज्ञात निंदक के बारे में जानने की तीव्र जिज्ञासा दिखाई, और उससे आमने-सामने होकर उसे बेनकाब करने की इच्छा भी। लेकिन उसने मुझे आश्वस्त किया कि कम से कम मेरे प्रति

उसके मन में कोई द्वेष नहीं है। "अगर यह सच होता, तो मैं तुम्हें बता देती। लेकिन एंड्री और मैं दोनों ही इस तरह की बातों से नफरत करते हैं। हमने इतने साल बिना छोटे बालों वाली महिलाओं को देखे नहीं बिताए हैं जो पुरुषों जैसा व्यवहार करती हैं और वही सब करती हैं जो तुम कह रही हो, और इससे ज़्यादा घृणा हमें किसी और बात से नहीं होती।" अल्बर्टीन ने मुझे बस अपना वचन दिया, एक दृढ़ वचन जिसका कोई प्रमाण नहीं था। लेकिन यही मुझे शांत करने का सबसे अच्छा तरीका था, ईर्ष्या उस तरह के अस्वस्थ संदेहों में से एक है जिन्हें पुष्टि की संभावना से ज़्यादा ऊर्जा से दूर करना बेहतर होता है। इसके अलावा, प्रेम का यह गुण है कि वह हमें एक ही समय में अधिक अविश्वासी और अधिक विश्वासशील बना देता है, हमें संदेह करने पर मजबूर कर देता है, किसी और की तुलना में अधिक आसानी से, उस पर जिसे हम प्यार करते हैं, और उसके इनकार से अधिक आसानी से आश्वस्त हो जाते हैं। हमें प्रेम में होना चाहिए तभी हम इस बात की परवाह कर सकते हैं कि सभी महिलाएं गुणी नहीं होतीं, यानी इससे पहले कि हम इस तथ्य से अवगत हों, और हमें प्रेम में होना चाहिए तभी हम आशा कर सकते हैं, यानी खुद को आश्वस्त कर सकते हैं कि कुछ महिलाएं गुणी होती हैं। यह मानवीय स्वभाव है कि हम उस चीज़ को खोजते हैं जो हमें दुख पहुँचाती है और फिर तुरंत उससे छुटकारा पाने की कोशिश करते हैं। जो कथन हमें ऐसा सुकून दे सकते हैं, वे स्वाभाविक रूप से सत्य प्रतीत होते हैं; हम उस शांतिदायक उपाय पर आपत्ति नहीं करते जो अपना असर दिखाता है। इसके अलावा, चाहे जिस व्यक्ति से हम प्रेम करते हैं, वह कितना भी विविध क्यों न हो, वह हमें दो मूलभूत व्यक्तित्वों से परिचित करा सकती है, चाहे वह हमें अपना लगे या अपनी इच्छाओं को किसी और दिशा में मोड़े। इन व्यक्तित्वों में से पहला व्यक्तित्व वह विशेष शक्ति रखता है जो हमें दूसरे व्यक्तित्व की वास्तविकता पर विश्वास करने से रोकता है, यह उस दूसरे व्यक्तित्व द्वारा हमें पहुँचाए गए कष्टों को दूर करने का गुप्त उपाय है। प्रिय व्यक्ति कभी रोग होता है तो कभी उसे कम करने और बढ़ाने वाला उपाय। निस्संदेह, स्वान के उदाहरण ने मेरी कल्पना और भावनाओं पर जो गहरा प्रभाव डाला था, उससे मैं लंबे समय से उस सत्य पर विश्वास करने के लिए तैयार था जिससे मुझे डर लगता था, न कि उस सत्य पर जो मैं चाहता था। और इसलिए अल्बर्टीन के कथनों से मुझे जो सुकून मिला, वह एक पल के लिए खतरे में पड़ गया, क्योंकि मुझे ओडेट की कहानी याद आ गई। लेकिन मैंने खुद

से कहा कि अगर सबसे बुरे की संभावना को स्वीकार करना ही उचित है, न केवल तब जब स्वान के कष्टों को समझने के लिए मैंने खुद को उसकी जगह रखकर देखा था, बल्कि अब भी, जब मैं खुद किसी और के बारे में सच्चाई जानने की कोशिश कर रहा हूँ, तब भी मुझे अपने प्रति क्रूरता नहीं दिखानी चाहिए। एक सैनिक जो ऐसी जगह चुनता है जहाँ वह सबसे अधिक उपयोगी नहीं बल्कि सबसे अधिक जोखिम में होता है, उसे यह गलती नहीं करनी चाहिए कि किसी एक धारणा को बाकी सभी से अधिक सत्य मान लूँ, सिर्फ इसलिए कि वह अधिक पीड़ादायक है। क्या अच्छे, मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की अल्बर्टीन और बचपन में अपनी माँ द्वारा बेची गई वेश्या ओडेट के बीच कोई बहुत बड़ा अंतर नहीं था? उनकी विश्वसनीयता की कोई तुलना नहीं हो सकती थी। इसके अलावा, अल्बर्टीन को मुझसे झूठ बोलने में उतना फायदा नहीं था जितना ओडेट को स्वान से झूठ बोलने में था। इतना ही नहीं, ओडेट ने स्वान के सामने वह बात स्वीकार कर ली थी जिसे अल्बर्टीन ने अभी-अभी नकारा था। इसलिए, अगर मैं उनकी स्थितियों में मौजूद इन भौतिक अंतरों को ध्यान में न रखता, बल्कि अपनी प्रेमिका के वास्तविक जीवन का पुनर्निर्माण केवल ओडेट के जीवन के बारे में मुझे बताई गई बातों के आधार पर करता, तो मैं तर्क में उतनी ही गंभीर त्रुटि का दोषी होता—भले ही वह विपरीत दिशा में होती—जितनी उस त्रुटि का जिसने मुझे एक निश्चित परिकल्पना की ओर झुकाया था क्योंकि उससे मुझे बाकी सब की तुलना में कम पीड़ा हुई थी। मेरे सामने एक नई अल्बर्टाइन थी, जिसकी एक झलक मैंने बालबेक की अपनी पिछली यात्रा के अंत में देखी थी, वह स्पष्टवादी और ईमानदार थी, एक ऐसी अल्बर्टाइन जिसने मेरे प्रति स्नेह के कारण मेरे संदेहों को क्षमा कर दिया था और उन्हें दूर करने का प्रयास किया था। उसने मुझे अपने बिस्तर पर अपने पास बैठाया। मैंने उसके कहे शब्दों के लिए उसे धन्यवाद दिया, उसे आश्वासन दिया कि हमारा सुलह पूर्ण हो गया है, और मैं उसके साथ फिर कभी बुरा व्यवहार नहीं करूँगा। मैंने उसे सुझाव दिया कि उसे उसी समय घर जाकर रात का खाना खा लेना चाहिए। उसने मुझसे पूछा कि क्या मुझे उसके साथ होने की खुशी नहीं है। मैंने अपना सिर उसकी ओर खींचा, उस स्पर्श के लिए जो उसने मुझे पहले कभी नहीं दिया था और शायद हमारे बीच के टूटे घाव के भरने के कारण ही मुझे यह स्पर्श मिल रहा था। उसने अपनी जीभ

हल्के से मेरे होठों पर फिराई, जिन्हें वह खोलने की कोशिश कर रही थी। पहले तो मैंने अपने होंठ कसकर बंद रखे। "तुम तो बड़े भालू हो!" उसने मुझे बताया।

मुझे उसी शाम उस जगह से चले जाना चाहिए था और फिर कभी उसे देखना नहीं चाहिए था। मुझे तब भी यह महसूस हुआ कि एकतरफा प्यार में—मैं यह भी कह सकता हूँ कि सच्चे प्यार में, क्योंकि कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिनके लिए प्यार का कोई मतलब ही नहीं होता—हम केवल उस क्षणिक खुशी का आनंद ले सकते हैं जो मुझे उन अनूठे पलों में मिली थी जब किसी स्त्री का अच्छा स्वभाव, उसकी चंचलता, या महज़ संयोग, हमारी इच्छाओं को पूर्ण रूप से उसी तरह मिला देते हैं, जैसे कि हमें सचमुच प्यार किया गया हो। समझदारी भरा रास्ता यह होता कि मैं उस छोटी सी खुशी को जिज्ञासा से देखता, आनंद से पाता, जिसके बिना मैं यह जाने ही मर जाता कि यह उन दिलों के लिए क्या मायने रख सकती है जिन्हें खुश करना आसान हो या जो अधिक भाग्यशाली हों; यह मान लेता कि यह एक विशाल और स्थायी खुशी का हिस्सा है जिसका केवल यह अंश ही मुझे दिखाई दिया, और—कहीं अगले दिन यह झूठ उजागर न हो जाए—इसके बाद किसी और कृपा की माँग न करता, जो केवल एक असाधारण क्षण की बनावट के कारण ही मिली थी। मुझे बालबेक छोड़ देना चाहिए था, खुद को एकांत में बंद कर लेना चाहिए था, उस आवाज की आखिरी तरंगों के साथ सामंजस्य में रहना चाहिए था जिसे मैंने एक पल के लिए प्रेमपूर्ण बना दिया था, और जिससे मुझे बस यही प्रार्थना करनी चाहिए थी कि वह मुझसे फिर कभी एक शब्द भी न कहे; इस डर से कि कहीं एक और शब्द, जो अब केवल भिन्न ही हो सकता है, उस संवेदनशील मौन को एक बेमेल स्वर से चकनाचूर न कर दे जिसमें, मानो किसी पेडल के दबाव से, मेरे भीतर खुशी का स्पंदन लंबे समय से जीवित रहा हो।

अल्बर्टीन के साथ हुई बातचीत से मुझे सुकून मिला और मैं एक बार फिर अपनी माँ के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने लगी। उन्हें मेरी दादी के बचपन के दिनों के बारे में मुझसे प्यार से बातें करना अच्छा लगता था। उन्हें डर था कि कहीं मैं उन दुखों के लिए खुद को दोषी न ठहराऊँ जिनसे शायद मैंने मेरी दादी के जीवन के अंतिम क्षणों को अंधकारमय कर दिया था, इसलिए वे उन वर्षों की ओर लौटना पसंद करती थीं जब मेरी बुद्धि के शुरुआती संकेतों ने मेरी दादी को वह संतोष दिया था जो अब तक मुझसे हमेशा दूर रहा था। हमने कॉम्ब्रे के पुराने दिनों की

बातें कीं। मेरी माँ ने मुझे याद दिलाया कि वहाँ कम से कम मैं पढ़ा करती थी, और बालबेक में भी मैं ऐसा ही कर सकती थी, अगर मुझे काम नहीं करना होता। मैंने जवाब दिया कि कॉम्ब्रे और वहाँ की मनमोहक रंगीन तस्वीरों की यादों में खो जाने के लिए, मैं 'हजार और एक रात' की कहानी फिर से पढ़ना चाहूँगी। बहुत समय पहले कॉम्ब्रे में, जब मेरी माँ ने मेरे जन्मदिन पर मुझे किताबें दी थीं, उसी तरह अब चुपके से, मुझे सरप्राइज देने के लिए, मेरी माँ ने गैलैंड की 'हज़ार और एक रात' और 'मर्ड्रस की हज़ार रातें और एक रात' दोनों किताबें मंगवाईं। लेकिन, दोनों अनुवादों पर नज़र डालने के बाद, मेरी माँ चाहती थीं कि मैं गैलैंड के अनुवाद को ही पढ़ूँ, हालाँकि बौद्धिक स्वतंत्रता के प्रति उनके सम्मान, मेरे बौद्धिक जीवन में दखल देने के डर और इस भावना के कारण कि एक महिला होने के नाते, एक तरफ तो उनमें (या उनके अनुसार) आवश्यक साहित्यिक योग्यता की कमी थी, और दूसरी तरफ एक युवा पुरुष के पढ़ने की निंदा न करने के कारण, क्योंकि वह स्वयं इससे आहत थीं, वे मुझ पर प्रभाव डालने में संकोच कर रही थीं। कुछ कहानियों को पढ़कर, वे विषय की अनैतिकता और अभिव्यक्ति की भद्दीपन से घृणा करने लगी थीं। लेकिन सबसे बढ़कर, मेरी माँ ने न केवल ब्रोच, धूप से बचाव का चश्मा, लबादा, मैडम डी सेविग्ने की पुस्तक, बल्कि अपनी माँ के विचार और बोलने के तौर-तरीकों को भी अनमोल अवशेषों की तरह सहेज कर रखा, और हर अवसर पर उनकी राय जानने की कोशिश की। इस तरह मेरी माँ को इस बात का कोई संदेह नहीं रहा होगा कि मेरी दादी ने मार्ड्रस की पुस्तक की कितनी निंदा की होगी। उन्हें याद आया कि कॉम्ब्रे में, मेसेग्लिस मार्ग पर टहलने जाने से पहले, मैं ऑगस्टिन थिएरी को पढ़ रही थी। मेरी दादी, मुझे पढ़ते और टहलते देखकर खुश तो थीं, लेकिन फिर भी उस व्यक्ति को देखकर नाराज़ हो गईं जिसका नाम 'तब मेरोवी का शासन था' में अंकित था, जिसे मेरोविग कहा जाता था, और उन्होंने 'कार्लोविंगियन' के लिए 'कैरोलिंगियन' कहने से इनकार कर दिया, जिसके प्रति वह वफादार रहीं। फिर मैंने उसे बताया कि मेरी दादी होमर के देवताओं को दिए गए ग्रीक नामों के बारे में क्या सोचती थीं, जो ब्लोच ने लेकोंटे डी लिस्ले का अनुसरण करते हुए दिए थे। वे सरलतम मामलों में भी ग्रीक वर्तनी प्रणाली को अपनाना एक धार्मिक कर्तव्य मानते थे, जिसमें साहित्यिक प्रतिभा निहित मानी जाती थी। उदाहरण के लिए, यदि उन्हें किसी पत्र में यह उल्लेख करना होता कि उनके घर में पी जाने वाली शराब सचमुच अमृत है, तो वे 'रियल

नेक्टर' लिखते समय 'k' का प्रयोग करते थे, जिससे उन्हें लामार्टिन का नाम सुनते ही हल्की हंसी आ जाती थी। और अगर ओडिसी की वह किताब जिसमें यूलिसिस और मिनर्वा के नाम गायब थे, उनके लिए अब ओडिसी नहीं रही, तो वह क्या कहतीं जब उन्हें अपनी 'हजार और एक रात' की किताब का शीर्षक भी विकृत दिखाई देता, जब उन्हें शेहेरज़ादे और दिनारज़ादे के अमर और परिचित नाम, ठीक वैसे ही नहीं मिलते जैसे वह जीवन भर उन्हें बोलती आई थीं, जिनमें (अगर मुस्लिम कहानियों की भाषा का प्रयोग किया जाए तो) बपतिस्मा खो चुके आकर्षक खलीफा और शक्तिशाली जिन्न मुश्किल से पहचाने जा सकते थे, क्योंकि उनका नाम बदलकर 'खलीफा' और उनका नाम 'जिनी' रख दिया गया था। फिर भी, मेरी माँ ने दोनों किताबें मुझे सौंप दीं, और मैंने उनसे कहा कि मैं उन्हें उन दिनों पढ़ूँगी जब मैं बाहर जाने के लिए बहुत थकी हुई महसूस करूँगी।

हालांकि, ऐसे दिन अक्सर नहीं आते थे। हम पहले की तरह ही एक समूह में पिकनिक मनाने जाते थे, अल्बर्टीन, उसके दोस्त और मैं, चट्टान पर या मैरी-एंटोनेट नामक फार्म पर। लेकिन कभी-कभी अल्बर्टीन मुझे यह बड़ा सुख देती थी। वह मुझसे कहती: "आज मैं तुम्हारे साथ थोड़ी देर अकेले रहना चाहती हूँ, अगर हम अकेले हों तो ज़्यादा अच्छा होगा।" फिर वह बहाना बनाती कि वह व्यस्त है, वैसे तो उसे कोई स्पष्टीकरण देने की ज़रूरत नहीं थी, और ताकि अगर बाकी लोग हमारे बिना ही किसी सैर या पिकनिक पर चले जाएँ तो हमें ढूँढ़ न पाएँ, हम प्रेमी जोड़े की तरह चुपके से बैगेटेल या ह्यूलन क्रॉस पर चले जाते, जबकि हमारा समूह, जो हमें वहाँ ढूँढ़ने के बारे में कभी नहीं सोचता था और कभी वहाँ जाता भी नहीं था, मैरी-एंटोनेट पर अनिश्चित काल तक हमारा इंतज़ार करता रहता, इस उम्मीद में कि हम वहाँ दिखाई देंगे। मुझे उस समय की भीषण गर्मी याद है, जब धूप में काम कर रहे प्रत्येक खेत मजदूर के माथे से पसीने की एक बूंद, सीधी, नियमित, रुक-रुक कर, किसी टंकी से पानी की बूंद की तरह गिरती थी, और पास के खेतों में पेड़ों से गिरते पके फलों के साथ बारी-बारी से गिरती थी; वे आज तक एक स्त्री के रहस्य की तरह रहस्यमय बने हुए हैं, जो मेरे सामने आने वाले हर प्रेम का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। अगर किसी स्त्री का ज़िक्र मेरे सामने हुआ हो और मैं उसके बारे में एक पल भी न सोचूँ, तो मैं उससे मिलने के लिए अपने पूरे हफ्ते के सारे काम रद्द कर देता हूँ, अगर मौसम ऐसा ही हो और मुझे उससे किसी सुनसान फार्महाउस में

मिलना हो। यह जानकर भी कोई फायदा नहीं कि इस तरह का मौसम, इस तरह की मुलाकात उसके स्वभाव का हिस्सा नहीं है, ये तो बस एक चारा है, जिसे मैं अच्छी तरह जानता हूँ, जिससे मैं खुद को लुभाने देता हूँ और जो मुझे फंसाने के लिए काफी है। मैं जानता हूँ कि इस स्त्री को, सर्द मौसम में, किसी कस्बे में, शायद मैं चाह सकता था, लेकिन बिना किसी रोमांटिक भावना के, बिना प्रेम भाव के; उसके लिए मेरा प्यार कम तीव्र नहीं है, भले ही परिस्थितियों के कारण इसने मुझे मोहित कर लिया हो—यह केवल और अधिक उदास हो जाता है, क्योंकि जीवन के दौरान अन्य लोगों के लिए हमारी भावनाएँ कम होती जाती हैं, जैसे-जैसे हम इस बात से अधिक स्पष्ट रूप से अवगत होते जाते हैं कि वे हमारे जीवन में कितनी छोटी भूमिका निभाते हैं और वह नया प्यार जिसे हम स्थायी बनाना चाहते हैं, जीवन के साथ ही समाप्त हो जाता है, और वह आखिरी होगा।

बालबेक में अब भी बहुत कम लोग थे, और लड़कियाँ तो नाममात्र की ही थीं। कभी-कभी मुझे कोई लड़की समुद्र तट पर आराम करती हुई दिखती थी, जिसमें कोई आकर्षण नहीं था, फिर भी कुछ विशेषताओं से ऐसा लगता था जैसे मैं उसी लड़की की पहचान कर रहा हूँ जिससे मैं उस समय मिलने में असमर्थ होने पर निराश था जब वह अपने दोस्तों के साथ घुड़सवारी स्कूल या व्यायामशाला से निकली थी। अगर वह वही लड़की थी (और मैंने अल्बर्टीन से इस बारे में बात न करने का ध्यान रखा), तो वह लड़की जिसका मैंने इतना उत्साह से इंतज़ार किया था, उसका अस्तित्व ही नहीं था। लेकिन मैं किसी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सका, क्योंकि इन लड़कियों में से किसी का भी चेहरा समुद्र तट पर कोई स्थान नहीं भरता था, कोई स्थायी रूप नहीं देता था, जो मेरे अवलोकन, मेरी इच्छा की बेचैनी या आत्म-संतोष की भावना, उसके अलग-अलग कपड़ों, उसकी तेज़ चाल या उसकी स्थिरता से कभी सिकुड़ता, कभी फैलता, कभी बदलता रहता था। फिर भी, उनमें से दो-तीन लड़कियाँ मुझे मनमोहक लगती थीं। जब भी मैं इनमें से किसी को देखता, तो मेरा मन करता कि उसे एवेन्यू डेस टैमरिस के रास्ते ले जाऊं, या रेत के टीलों के बीच, या उससे भी बेहतर, किसी चट्टान पर ले जाऊं। लेकिन, उदासीनता के विपरीत, इच्छा में ही सही, वह दुस्साहस प्रवेश कर जाता है जो एकतरफा ही सही, लेकिन प्राप्ति की ओर पहला कदम होता है। फिर भी, मेरी इच्छा और उसे चूमने की अनुमति मांगने के बीच, झिझक और संकोच का एक अनिश्चित खालीपन छाया

रहता था। फिर मैं पेस्ट्री बनाने वाले के बार में गया, और एक के बाद एक सात-आठ गिलास पोर्ट वाइन पी गया। पल भर में, मेरी इच्छा और क्रिया के बीच की अथाह खाई की जगह, शराब के असर ने एक ऐसी रेखा खींच दी जिसने उन्हें जोड़ दिया। अब झिझक या डर के लिए कोई जगह नहीं बची थी। मुझे ऐसा लगा जैसे वह लड़की मेरी बाहों में उड़ने ही वाली है। मैं उसके पास गया, मेरे होंठों से अनायास ही शब्द निकल आए: "मैं तुम्हारे साथ टहलने जाना चाहता हूँ। क्या तुम चट्टान के किनारे चलना चाहोगी? उस छोटे से जंगल के पीछे, जो अभी खाली पड़े लकड़ी के बंगले को हवा से बचाता है, हमें कोई परेशान तो नहीं करेगा?" जीवन की सारी कठिनाइयाँ दूर हो गईं, हमारे दो शरीरों के मिलन में अब कोई बाधा नहीं थी। कम से कम मेरे लिए तो नहीं। क्योंकि उसके लिए तो ये बाधाएँ खत्म नहीं हुई थीं, क्योंकि उसने पोर्ट वाइन नहीं पी थी। अगर उसने पी होती, अगर उसकी आँखों में बाहरी दुनिया की वास्तविकता कुछ कम हो जाती, तो शायद वह लंबे समय से संजोया हुआ सपना, जो उसे अचानक साकार होता दिखाई देता, मेरी बाहों में गिरने का सपना न होता।

लड़कियाँ संख्या में तो कम थीं ही, साथ ही इस मौसम में, जो अभी 'मुख्य मौसम' नहीं था, वे थोड़े समय के लिए ही रुकती थीं। मुझे एक लड़की याद है, जिसकी त्वचा लालिमा लिए, आँखें हरी और गाल गुलाबी थे, जिसका सुडौल चेहरा कुछ पेड़ों के पंखदार बीजों जैसा दिखता था। मैं नहीं कह सकती कि कौन सी हवा उसे बालबेक ले आई या कौन सी हवा उसे वहाँ से ले गई। उसका जाना इतना अचानक हुआ कि उसके बाद कई दिनों तक मैं गहरे दुख से घिरी रही, जिसे मैंने हिम्मत करके अल्बर्टीन को बताया जब मुझे एहसास हुआ कि वह लड़की हमेशा के लिए चली गई है।

मैं यह भी कहना चाहूँगा कि उनमें से कई लड़कियाँ या तो ऐसी थीं जिन्हें मैं बिल्कुल नहीं जानता था या जिनसे मैं सालों से नहीं मिला था। अक्सर, उन्हें पत्र लिखने से पहले, मैं उन्हें चिट्ठी लिखता था। अगर उनका जवाब मुझे प्यार की संभावना पर विश्वास दिलाता, तो कितनी खुशी होती! किसी महिला से दोस्ती की शुरुआत में, भले ही वह दोस्ती किसी नतीजे पर न पहुँचे, हम उससे मिली उन पहली चिट्ठियों से अलग नहीं हो पाते। हम उन्हें हर समय अपने पास रखना चाहते हैं, जैसे कोई ताज़े और दुर्लभ फूल, जिन्हें हम देखते ही रुक जाते हैं और पास लाकर उनकी खुशबू लेते हैं। जो वाक्य हमें ज़बानी याद होते हैं, उन्हें दोबारा पढ़ना अच्छा

लगता है, और जो वाक्य हमें उतने अच्छे से याद नहीं होते, उनमें हम किसी न किसी भाव से स्नेह की गहराई को परखना चाहते हैं। क्या उसने लिखा था: 'तुम्हारा प्यारा पत्र'? हमारी खुशी में एक हल्की सी खलल, जो या तो हमारी जल्दी पढ़ने की वजह से थी, या फिर चिट्ठी लिखने वाले की अस्पष्ट लिखावट की वजह से; उसने 'तुम्हारा प्यारा पत्र' नहीं लिखा था, बल्कि 'तुम्हारे पत्र से' लिखा था। लेकिन बाकी सब इतना कोमल है। काश, कल ऐसे और फूल खिलें। लेकिन फिर यह काफी नहीं है, हमें लिखे हुए शब्दों से लेखिका की आँखों और चेहरे की तुलना करनी होगी। हम मिलने का समय तय करते हैं, और—शायद उसके बदले बिना—जहाँ हमें दिए गए विवरण या हमारी निजी स्मृति के आधार पर परी विवियन से मिलने की उम्मीद थी, वहीं हमारी मुलाकात पुस-इन-बूट्स से होती है। फिर भी, हम अगले दिन के लिए मिलने का समय तय करते हैं, क्योंकि आखिरकार वह वही है, और जिसकी हमें चाह थी, वह वही है। और जिस स्त्री का हम सपना देख रहे थे, उसके लिए ये इच्छाएँ रूप और चेहरे की सुंदरता को अनिवार्य नहीं बनातीं। ये इच्छाएँ केवल एक खास व्यक्ति के लिए चाहत हैं; सुगंधों की तरह अस्पष्ट, जैसे प्रोथिराइया की चाहत स्टाइरेक्स थी, केसर एक अलौकिक चाहत, हेरा की चाहत सुगंधित खुशबूएँ, माघियों का इत्र, नाइके की चाहत मन्ना, और धूप समुद्र का इत्र। लेकिन ऑर्फीक भजनों में गाए जाने वाले ये इत्र उन देवताओं की तुलना में संख्या में बहुत कम हैं जिनकी वे पूजा करते हैं। लोबान ज्ञानी पुरुषों का इत्र है, लेकिन प्रोटोगोनोस, नेप्च्यून, नेरियस और लेटो का भी; धूप समुद्र का इत्र है, लेकिन सुंदर डाइक, थेमिस, सिरसे, नौ देवियों, इओस, मेमोसिन, दिन और डिकायोसिन का भी। जहाँ तक स्टाइरेक्स, मन्ना और सुगंधित तेलों की बात है, तो उन सभी देवताओं के नाम बताना असंभव है जो इन्हें ग्रहण करते हैं, क्योंकि इनकी संख्या बहुत अधिक है। एम्फीटेस के पास धूप को छोड़कर सभी सुगंध हैं, और गाया केवल फलियों और सुगंधित तेलों को अस्वीकार करती है। ऐसा ही कुछ मेरे मन में विभिन्न लड़कियों के लिए इच्छाएँ थीं। लड़कियों की तुलना में इनकी संख्या कम थी, लेकिन ये निराशाओं और पछतावों में बदल गईं जो एक-दूसरे से काफी मिलती-जुलती थीं। मैंने कभी लोबान की कामना नहीं की। मैंने इसे जुपियन और प्रिंस डी गुएरमांटेस के लिए आरक्षित रखा, क्योंकि यह प्रोटोगोनोस की इच्छा है, "दोहरे लिंग का, जो बैल की तरह दहाड़ता है, अनगिनत उन्मादों का, यादगार, अकथनीय, अवरोही, आनंदमय, उन्मादी, उन्मादी देवताओं के बलिदानों के लिए।"

लेकिन फिलहाल सीज़न पूरे ज़ोरों पर था; हर दिन कोई न कोई नया आगमन होता था, और मेरी सैर-सपाटे की आवृत्ति में अचानक हुई वृद्धि का कारण, जिसने 'हज़ार और एक रात' के मनमोहक पठन का स्थान ले लिया था, एक ऐसा कारण था जो आनंद से रहित था और उन सभी को दूषित कर रहा था। समुद्र तट अब लड़कियों से भरा हुआ था, और चूंकि कॉटार्ड द्वारा सुझाए गए विचार ने वास्तव में मुझे नए संदेह नहीं दिए थे, बल्कि मुझे उस मामले में संवेदनशील और कमज़ोर बना दिया था और मैं अपने मन में किसी भी संदेह को पनपने न देने के लिए सावधान था, इसलिए जैसे ही कोई युवती बालबेक पहुँचती, मैं असहज महसूस करने लगता। मैंने अल्बर्टीन को सबसे दूर की सैर का सुझाव दिया, ताकि वह नई आने वाली से परिचित न हो सके, और वास्तव में, यदि संभव हो तो, उसे देख भी न सके। मैं स्वाभाविक रूप से उन महिलाओं से और भी अधिक भयभीत था जिनके संदिग्ध तौर-तरीकों पर ध्यान दिया गया था या जिनकी बदनामी पहले से ही ज्ञात थी; मैंने अपनी मालकिन को समझाने की कोशिश की कि इस बदनामी का कोई आधार नहीं था, यह महज़ एक झूठा आरोप था, शायद मैंने खुद से यह बात स्वीकार नहीं की, क्योंकि मुझे अब भी अवचेतन रूप से यह डर था कि कहीं वह उस भ्रष्ट महिला से दोस्ती न कर ले या मेरे कारण ऐसा न कर पाने पर पछताए, या इतने सारे उदाहरणों को देखकर यह निष्कर्ष न निकाल ले कि इतने व्यापक दुराचार की निंदा नहीं की जानी चाहिए। उनमें से हर एक के अपराध को नकारते हुए, मेरा इरादा बस यही था कि मैं यह दिखावा करूँ कि समलैंगिकता जैसी कोई चीज़ मौजूद ही नहीं है। अल्बर्टीन ने भी मेरी तरह इस या उस महिला की दुष्टता पर अविश्वास जताया। "नहीं, मुझे लगता है कि यह सिर्फ़ एक दिखावा है, वह ऐसा दिखना चाहती है।" लेकिन फिर, मुझे लगभग इस बात का अफ़सोस हुआ कि मैंने दूसरी महिला की बेगुनाही का बचाव किया, क्योंकि मुझे इस बात से बहुत दुख हुआ कि अल्बर्टीन, जो पहले इतनी सख्त थीं, यह मान सकती थीं कि यह 'दिखावा' इतना आकर्षक, इतना फ़ायदेमंद है कि ऐसी रुचियों से अनजान कोई महिला भी ऐसा दिखने की कोशिश कर सकती है। मैं यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि अब और कोई महिला बालबेक न आए; मैं यह सोचकर कांप उठा कि श्रीमती पुटबस के वर्दुरिन के घर पहुंचने का समय लगभग हो चुका था, और उनकी नौकरानी, जिसके शौक के बारे में सेंट-लूप ने मुझसे कुछ नहीं छिपाया था, कहीं समुद्र तट पर न आ जाए, और अगर उस दिन मैं अल्बर्टीन के साथ

न होता, तो कहीं उसे बहकाने की कोशिश न करे। मैंने खुद से यह भी पूछा कि क्या कॉटार्ड ने यह बात खुलकर कह दी थी कि वर्दुरिन मुझे बहुत सम्मान देते हैं और, जैसा कि उसने कहा था, मेरे पीछे भागते हुए न दिखना चाहते हुए भी, मुझे अपने घर बुलाने के लिए बहुत कुछ देने को तैयार हैं, तो क्या मैं पेरिस में उनसे मिलने के लिए सभी गुएरमांटे परिवार को लाने के वादे के बल पर, किसी न किसी बहाने से श्रीमती वर्दुरिन को यह कहने के लिए मना नहीं सकता कि उन्हें अब और रोकना संभव नहीं है और उन्हें तुरंत वहां से चले जाना चाहिए। इन सब बातों के बावजूद, और चूंकि मुख्य रूप से एंड्री की उपस्थिति ही मुझे परेशान कर रही थी, अल्बर्टीन के शब्दों का मुझ पर जो सुकून देने वाला असर था, वह कुछ हद तक बना रहा—मुझे यह भी पता था कि जल्द ही मुझे इसकी ज़रूरत कम हो जाएगी, क्योंकि एंड्री रोज़मोंडे और गिज़ेल के साथ उस जगह से चली जाएगी, लगभग उसी समय जब भीड़ आने लगेगी, और अल्बर्टीन के साथ कुछ ही हफ़्ते और बिताएगी। इन हफ़्तों के दौरान, अल्बर्टीन ने जो कुछ भी किया, जो कुछ भी कहा, ऐसा लग रहा था जैसे उसने हर बात सोच-समझकर की हो, ताकि अगर मेरे मन में कोई शंका बची भी हो, तो उसे खत्म कर दे या उसे दोबारा पैदा होने से रोक दे। उसने यह सुनिश्चित किया कि वह कभी भी एंड्री के साथ अकेली न रहे, और जब हम किसी सैर से लौटते, तो वह ज़ोर देती कि मैं उसके घर तक उसके साथ जाऊं, और जब भी हम कहीं जा रहे हों, तो उसे लेने आऊं। इस बीच, एंड्री ने भी अपनी तरफ से उतनी ही सावधानी बरती, और अल्बर्टीन से मिलने से बचती हुई प्रतीत हुई। और उनके बीच यह स्पष्ट समझ ही एकमात्र संकेत नहीं था कि अल्बर्टीन ने हमारी बातचीत के बारे में अपनी सहेली को जरूर बताया होगा और उससे मेरी बेतुकी शंकाओं को शांत करने की कृपा करने का अनुरोध किया होगा।

इसी समय ग्रैंड होटल में एक ऐसा घोटाला हुआ जिसने मेरी पीड़ा को कम करने की कोशिश भी नहीं की। ब्लोच का चचेरा भाई कुछ समय से एक सेवानिवृत्त अभिनेत्री के साथ गुप्त संबंध बना रहा था, जो अब उन्हें संतुष्ट नहीं कर रहा था। उन्हें लगता था कि अगर उन्हें देखा जाए तो इससे उनके आनंद में विकृति आ जाएगी, इसलिए उन्होंने अपने इस खतरनाक खेल को सबके सामने प्रदर्शित करने का फैसला किया। उन्होंने ताश के कमरे में, बैकारेट टेबल के पास, हल्के-फुल्के स्पर्श से शुरुआत की, जिसे अंततः एक दोस्ताना अंतरंगता माना जा सकता

था। फिर वे और अधिक साहसी हो गए। और अंत में, एक शाम, बड़े बॉलरूम के एक कोने में, जहाँ अंधेरा भी नहीं था, सोफे पर, उन्होंने अपने कृत्य को छिपाने की उतनी ही कोशिश की, मानो वे बिस्तर पर हों। संयोग से पास में मौजूद दो अधिकारियों ने अपनी पत्नियों के साथ प्रबंधक से शिकायत की। एक क्षण के लिए लगा कि उनका विरोध कारगर होगा। लेकिन उनके खिलाफ यह बात थी कि वे शाम को नेटहोल्म से आए थे, जहाँ वे ठहरे हुए थे, इसलिए वे प्रबंधक के किसी काम के नहीं थे। जबकि, बिना जाने भी, और प्रबंधक ने उनसे चाहे जो भी कहा हो, श्रीमती ब्लोच को श्री निस्सिम बर्नार्ड का संरक्षण प्राप्त था। मुझे इसका कारण समझाना होगा। श्री निस्सिम बर्नार्ड पारिवारिक गुणों को सर्वोच्च स्थान पर रखते थे। हर साल वे अपने भतीजे के लिए बालबेक में एक शानदार विला किराए पर लेते थे, और कोई भी निमंत्रण उन्हें अपने घर जाकर अपने ही घर में भोजन करने से नहीं रोक पाता था, जो वास्तव में उनका ही घर था। लेकिन वे कभी भी दोपहर का भोजन घर पर नहीं करते थे। हर दिन दोपहर में वे ग्रैंड होटल में होते थे। असल बात यह थी कि वे, जैसे दूसरे लोग ओपेरा की गायिका को रखते हैं, वैसे ही एक ऐसे युवा वेटर को अपने पास रखे हुए थे, जो उन सेवकों जैसा ही था जिनकी हमने अभी बात की है, और जो हमें एस्तेर और अथाली के युवा इस्राएलियों की याद दिलाते हैं। यह सच है कि एम. निस्सिम बर्नार्ड और युवा वेटर के बीच चालीस वर्षों के आयु अंतर ने बाद वाले को एक अप्रिय संपर्क से बचा लिया होगा। लेकिन, जैसा कि रेसीन ने उन्हीं पंक्तियों में बड़ी बुद्धिमानी से कहा है:

हे ईश्वर, कितने अनिश्चित कदमों से!
एक नवोदित सद्गुण ऐसे खतरों के बीच ही आगे बढ़ता है!
एक आत्मा के सामने कितनी ही बाधाएँ आ जाती हैं!
जो तुझे खोजता है और निर्दोष साबित होना चाहता है।

हो सकता है कि युवा वेटर का पालन-पोषण बालबेक के मंदिर-कारवांसेराई में 'दुनिया से दूर' ही हुआ हो, लेकिन उसने जोआद की सलाह नहीं मानी थी।

धन-दौलत और सोने पर भरोसा मत रखो।

उन्होंने शायद यह कहकर खुद को उचित ठहराया होगा: "दुष्ट लोग पृथ्वी पर व्याप्त हैं।" चाहे जो भी हो, और यद्यपि श्री निस्सिम बर्नार्ड ने पहले ही दिन इतनी तेजी से विजय की उम्मीद नहीं की थी,
न तो वे घबराए हुए थे, न ही दुलारने के लिए उत्सुक थे।
उसे महसूस हुआ कि उन बचकानी बाहों ने उसे घेर लिया है।
और दूसरे दिन तक, एम. निस्सिम बर्नार्ड उस युवा वेटर को बाहर ले जा चुके थे,
उस भयावह हमले ने उसकी मासूमियत को नष्ट कर दिया।
उस क्षण से लड़के का जीवन बदल गया। वह सचमुच अपने वरिष्ठ अधिकारी के आदेशानुसार रोटी और नमक ढो सकता था, उसका पूरा चेहरा खुशी से चमक रहा था।
फूलों से फूलों तक, खुशियों से और भी तीव्र खुशियों तक
अब हमारी इच्छाओं को विस्तार देने की अनुमति दें।
हमारे क्षणभंगुर वर्षों की कहानी अनिश्चित है।
तो आइए इस जीवन का आनंद लेने के लिए जल्दी करें!
सम्मान और प्रसिद्धि ही पुरस्कार हैं।
अंध और नम्र आज्ञाकारिता का।
शोकग्रस्त मासूमियत के लिए
अब कौन अपनी आवाज उठाएगा!
उस दिन से, श्री निस्सिम बर्नार्ड दोपहर के भोजन की मेज पर अपनी सीट पर बैठने में कभी नहीं चूके (जैसे कोई व्यक्ति किसी नर्तकी को अपने पास रखता है, इस मामले में एक विशिष्ट और विशेष प्रकार की नर्तकी, जिसका अभी तक कोई डेगास चित्र नहीं बना है)। श्री निस्सिम बर्नार्ड को रेस्तरां के फर्श पर और दूर के दृश्य में कैशियर के पीछे-पीछे जाना बहुत अच्छा लगता था, जो अपनी हथेली के नीचे सिंहासन पर बैठी होती थी, और उस किशोर की सेवा में तत्परता से भागती हुई हरकतों को देखना उन्हें तृप्त करता था, जो सबकी सेवा में, और सबसे कम श्री निस्सिम बर्नार्ड की सेवा में तत्पर थी, क्योंकि अब श्री निस्सिम बर्नार्ड ही उन्हें अपने पास रखे हुए थे। शायद इसलिए कि युवा गायक को उस व्यक्ति के प्रति वही मित्रता दिखाना आवश्यक नहीं लगता था जिससे वह खुद को पर्याप्त रूप से प्यार करता था, या इसलिए कि वह प्यार उसे परेशान करता था या उसे डर था कि अगर इसका पता चल गया तो वह अन्य

अवसरों को खो देगा। लेकिन श्री निस्सिम बर्नार्ड को यही शीतलता पसंद थी, क्योंकि इसमें बहुत कुछ छिपा था; चाहे यह यहूदी परंपरा से उपजा हो या ईसाई भावना के अपमान से, उन्हें रासीन की रस्म में एक विशेष आनंद मिलता था, चाहे वह यहूदी हो या कैथोलिक। यदि यह एस्तेर या अथाली का वास्तविक प्रदर्शन होता, तो एम. बर्नार्ड को इस बात का अफसोस होता कि सदियों के फासले के कारण वे लेखक जीन रासीन से परिचित नहीं हो पाए, ताकि वे अपने शिष्य के लिए कोई महत्वपूर्ण भूमिका प्राप्त कर सकें। लेकिन चूंकि दोपहर के भोजन की रस्म किसी लेखक की रचना नहीं थी, इसलिए उन्होंने प्रबंधक और ऐमे के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने में ही संतोष किया, ताकि 'युवा इस्राइली' को सहायक वेटर या यहाँ तक कि मेजों की एक पंक्ति के लिए पूर्ण वेटर के प्रतिष्ठित पद पर पदोन्नत किया जा सके। उन्हें शराब परोसने वाले का पद भी प्रस्तावित किया गया था। लेकिन एम. बर्नार्ड ने उन्हें इसे अस्वीकार करने के लिए कहा, क्योंकि वे फिर हर दिन आकर उन्हें हरे-भरे भोजन कक्ष में भागते-दौड़ते देखना और एक अजनबी की तरह उनकी सेवा करवाना उनके लिए संभव नहीं होता। अब यह आनंद इतना तीव्र था कि हर साल एम. बर्नार्ड बालबेक लौटते और घर से दूर दोपहर का भोजन करते थे, इन आदतों में एम. ब्लोच ने पहले में इस तट के सबसे प्रिय चमकीले धूप और सूर्यास्त के लिए एक काव्यात्मक लगाव देखा, जबकि दूसरे में एक बूढ़े कुंवारे का अटूट जुनून देखा।

दरअसल, श्री निस्सिम बर्नार्ड के रिश्तेदारों की गलती, जिन्होंने बालबेक में उनकी वार्षिक वापसी के असली कारण और श्रीमती ब्लोच द्वारा उनके स्वाद की कमी कहे जाने वाले विषय पर कभी संदेह नहीं किया, वास्तव में एक अधिक गहन और गौण सत्य थी। क्योंकि श्री निस्सिम बर्नार्ड स्वयं इस बात से अनजान थे कि बालबेक के समुद्र तट के लिए, रेस्तरां से समुद्र के मनमोहक दृश्य के लिए, और एक अलग तरह की नर्तकी की तरह, जिसे अभी तक डेगास की पेंटिंग नहीं मिली है, अपनी एक नौकरानी को रखने की उनकी सनक में कितना गहरा प्रेम था, जबकि बाकी सभी नौकरानियाँ थीं। और इस तरह श्री निस्सिम बर्नार्ड ने बालबेक के होटल रूपी इस थिएटर के निर्देशक और मंच प्रबंधक और निर्माता ऐमे के साथ, जिनकी इस पूरे मामले में भूमिका सरल नहीं थी, उत्कृष्ट संबंध बनाए रखे। एक दिन वे एक महत्वपूर्ण भूमिका, शायद मुख्य वेटर का पद, पाने के लिए साजिश रचेंगे। इस बीच, श्री

निस्सिम बर्नार्ड का आनंद, चाहे वह कितना भी काव्यात्मक और शांत चिंतनशील क्यों न हो, उन स्त्री-प्रेमी पुरुषों की याद दिलाता था जो हमेशा जानते हैं—उदाहरण के लिए, स्वान—कि अगर वे किसी पार्टी में जाएंगे तो अपनी प्रेमिका से मिल ही लेंगे। श्री निस्सिम बर्नार्ड के बैठते ही उनकी प्रेमिका फल या सिगार से भरी ट्रे लिए हुए प्रकट हो जातीं। और इस तरह हर सुबह, अपनी भतीजी को चूमने, मेरे मित्र ब्लोच को उसके काम के बारे में टोकने और अपने फैले हुए हाथ की हथेली से उसके घोड़ों को चीनी के टुकड़े खिलाने के बाद, वे ग्रैंड होटल में दोपहर के भोजन के लिए समय पर पहुँचने की हड़बड़ी दिखाते। चाहे घर में आग लगी हो, चाहे उनकी भतीजी को दिल का दौरा पड़ गया हो, वे निस्संदेह उसी तरह निकल पड़ते। इसलिए वह उस सर्दी-जुकाम से इतना डरता था जैसे वह कोई महामारी हो, जो उसे बिस्तर पर ही रहने के लिए मजबूर कर दे—क्योंकि वह एक हाइपोकॉन्ड्रिएक (बीमारी का वहम करने वाला) था—और जिसके कारण उसे ऐमे से अपने युवा मित्र को दोपहर के भोजन और शाम की चाय के बीच घर पर उससे मिलने के लिए भेजने के लिए कहना पड़े।

उन्हें बालबेक स्थित होटल के गलियारों, निजी कार्यालयों, स्वागत कक्षों, वस्त्रगृहों, भंडारगृहों और दीर्घाओं का वह जाल बेहद पसंद था। पूर्वी सभ्यता के प्रति उनके लगाव में एक रूहानी रूह झलकती थी, और रात में बाहर जाते समय उन्हें अक्सर चुपके से उसके रास्तों की खोजबीन करते देखा जा सकता था।

तहखाने में उतरते हुए और साथ ही ध्यान से बचने और किसी भी तरह के घोटाले से बचने की कोशिश करते हुए, एम. निस्सिम बर्नार्ड ने युवा लेवियों की तलाश में ला जुइव की उन पंक्तियों की याद दिला दी:

हे हमारे पूर्वजों के ईश्वर, एक बार फिर हमारे पास आओ।

हमारे रहस्य दुष्टों की निगाहों से छिपे रहते हैं!

इसके विपरीत, मैं उन दो बहनों के कमरे में जाती थी जो बालबेक में नौकरानियों के रूप में आई थीं, और उनके साथ एक बूढ़ी विदेशी महिला भी थी। होटल जगत में उन्हें 'कूरियर' कहा जाता था, और फ्रांस्वा भी उन्हें इसी नाम से पुकारती थीं। फ्रांस्वा का मानना था कि कूरियर वह व्यक्ति होता है जो अपना काम पूरा करने आता है, दो 'कोर्सर'। होटल आज भी उस दौर की शान में जी रहे हैं जब लोग गाते थे: "C'est un courrier de cabinet."

नौकरों के क्वार्टर में किसी आगंतुक के लिए प्रवेश करना कितना भी कठिन क्यों न हो, मैंने बहुत जल्द ही इन दो युवतियों, मैडमोजेल मैरी जिनेस्टे और मैडम सेलेस्टे अल्बारेट के साथ एक अटूट और पवित्र मित्रता का बंधन बना लिया था। फ्रांस के मध्य में, ऊँचे पहाड़ों की तलहटी में, छोटी नदियों और जलप्रपातों के किनारे जन्मीं (पानी वास्तव में उनके पुराने घर के नीचे से बहता था, चक्की को घुमाता था, और घर अक्सर बाढ़ से क्षतिग्रस्त हो जाता था), वे उस क्षेत्र की विशेषताओं का साक्षात उदाहरण प्रतीत होती थीं। मैरी जिनेस्टे अधिक नियमित रूप से तेज और अचानक प्रतिक्रिया देने वाली थीं, जबकि सेलेस्टे अल्बारेट अधिक कोमल और शांत स्वभाव की थीं, मानो किसी झील की तरह फैली हुई हों, लेकिन उनके क्रोध में भयंकर उबाल आता था, जिसमें उनका रोष उन प्रलय और तूफानों के खतरे का आभास कराता था जो अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को बहा ले जाते हैं। वे अक्सर सुबह मुझसे मिलने आती थीं जब मैं अभी भी बिस्तर पर होता था। मैंने ऐसे जानबूझकर अज्ञानी लोगों को कभी नहीं देखा, जिन्होंने स्कूल में बिल्कुल कुछ नहीं सीखा था, और फिर भी जिनकी भाषा किसी तरह इतनी साहित्यिक थी कि, उनके लहजे की लगभग जंगली सहजता को छोड़कर, कोई यह सोच सकता था कि उनका भाषण बनावटी था। एक ऐसी आत्मीयता के साथ, जिसे मैं शब्दशः दोहरा रही हूँ, उन प्रशंसाओं (जिन्हें मैं यहाँ स्वयं की नहीं बल्कि सेलेस्टे की विलक्षण प्रतिभा की प्रशंसा में लिख रही हूँ) और उन आलोचनाओं के बावजूद, जो उतनी ही निराधार हैं, जिनमें सेलेस्टे की टिप्पणियाँ मुझे फंसाती प्रतीत होती हैं, जब मैं अपने दूध में क्रोइसेंट रोल डुबो रही थी, सेलेस्टे मुझसे कहती थीं: "ओह! नन्हा काला शैतान, काले घने बालों वाला, ओह, घोर दुष्टता! मुझे नहीं पता तुम्हारी माँ ने तुम्हें बनाते समय क्या सोचा होगा, क्योंकि तुम बिल्कुल एक पक्षी की तरह हो। देखो, मैरी, क्या तुम नहीं कहोगी कि वह अपने पंख संवार रहा है, और अपना सिर चारों ओर घुमा रहा है, वह इतना हल्का दिखता है, तुम कहोगी कि वह अभी उड़ना सीख रहा है। आह! तुम्हारे लिए सौभाग्य की बात है कि जिन्होंने तुम्हें पाला-पोसा, उन्होंने तुम्हें प्रतिष्ठा और धन-दौलत के साथ दुनिया में लाया; तुम्हारा क्या होता, तुम तो इतनी फिजूलखर्ची हो। देखो, वह अपना क्रोइसेंट फेंक रहा है क्योंकि वह बिस्तर को छू गया। देखो, वह अपना दूध गिरा रहा है, रुको जब तक मैं तुम्हारे चारों ओर एक रुमाल न बाँध दूँ, क्योंकि तुम..." "तुम ये कभी खुद नहीं कर सकतीं, मैंने अपनी पूरी जिंदगी में तुम्हारे जैसा बेबस और

अनाड़ी कभी नहीं देखा।" तभी मुझे मैरी जिनेस्ट की तेज़ आवाज़ सुनाई देती, जो अपनी बहन को गुस्से से डांट रही थी: "अब चुप रहो, सेलेस्टे। क्या तुम पागल हो गई हो, मिस्टर से इस तरह बात कर रही हो?" सेलेस्टे बस मुस्कुराई; और मुझे अपने गले में रुमाल बंधा होना बिल्कुल पसंद नहीं था: "नहीं, मैरी, उसे देखो, धड़ाम, वो तो सीधे सांप की तरह खड़ा हो गया है। एकदम असली सांप, मैं तुम्हें बता रही हूँ।" ये तो उसकी कुछ ही जानवरों से जुड़ी उपमाएँ थीं, क्योंकि उसके अनुसार, ये बताना नामुमकिन था कि मैं कब सोती हूँ, मैं रात भर तितली की तरह फड़फड़ाती रहती थी, और दिन में गिलहरियों की तरह फुर्तीली होती थी। "जानती हो, मैरी, जैसे हम उन्हें घर पर देखते हैं, इतने फुर्तीले कि तुम अपनी आँखों से भी उनका पीछा नहीं कर सकती।" "पर, सेलेस्टे, तुम्हें पता है कि खाना खाते समय उन्हें नैपकिन पसंद नहीं है।" "ऐसा नहीं है कि उन्हें पसंद नहीं है, बात यह है कि वे यह कह सकें कि कोई भी उन्हें उनकी मर्जी के खिलाफ कुछ नहीं करवा सकता। वे एक बड़े सज्जन हैं और वे यही दिखाना चाहते हैं। चाहे कितनी भी बार चादरें बदलनी पड़ें, पर वे नहीं मानेंगे। कल की चादरें तो ठीक थीं, लेकिन आज तो उन्हें अभी-अभी बिछाया गया है और उन्हें अभी बदलना पड़ेगा। ओह, मैंने सही कहा था कि वे गरीबों के बीच पैदा होने के लिए नहीं बने थे। देखो, उनके बाल खड़े हो गए हैं, गुस्से से चिड़िया के पंखों की तरह फूल गए हैं। बेचारा प्लूमिस्सू!" यहाँ न केवल मैरी ने विरोध किया, बल्कि मैंने भी, क्योंकि मैं खुद को जरा भी बड़ा सज्जन नहीं समझता था। लेकिन सेलेस्टे को मेरी विनम्रता की सच्चाई पर कभी विश्वास नहीं हुआ और उसने मेरी बात काट दी। "ओह! कहानीकार! ओह! चापलूस! ओह! झूठा! धूर्त बदमाश! ओह! मोलियर!" (यह एकमात्र लेखक का नाम था जो वह जानती थी, लेकिन उसने इसे मेरे लिए इस्तेमाल किया, जिसका अर्थ था एक ऐसा व्यक्ति जो नाटक लिखने और अभिनय करने दोनों में सक्षम था।) "सेलेस्टे!" मैरी की ओर से दबंग स्वर में आवाज़ आई, जो मोलियर का नाम न जानने के कारण डर गई थी कि कहीं यह कोई नया अपमान न हो। सेलेस्टे मुस्कुराती रही: "तो तुमने उसकी दराज में रखी उसकी बचपन की तस्वीर नहीं देखी। उसने हमें यह विश्वास दिलाने की कोशिश की कि वह हमेशा सादे कपड़े पहनता था। और वहाँ, अपनी छोटी छड़ी के साथ, वह फर और लेस से बने कपड़ों में है, जैसा कोई राजकुमार कभी नहीं पहनता। लेकिन यह उसकी अपार गरिमा और दयालुता के आगे कुछ भी नहीं है, जो कहीं अधिक गहरी है।" "तो

फिर," मैरी ने गुस्से में कहा, "अब तुम उसकी दराजों में ताक-झांक करने जा रही हो?" मैरी के डर को शांत करने के लिए मैंने उससे पूछा कि वह एम. निस्सिम बर्नार्ड के व्यवहार के बारे में क्या सोचती है... "आह! महोदय, ऐसी बातें हैं जिन पर मुझे विश्वास ही नहीं होता कि वे हो सकती हैं। यहाँ आकर ही पता चलता है।" और, एक बार फिर सेलेस्टे को भी मात देते हुए, उसने और भी गहरी बात कही: "आह! देखिए, महोदय, किसी के जीवन में क्या-क्या हो सकता है, यह कोई नहीं बता सकता।" विषय बदलते हुए, मैंने उससे अपने पिता के जीवन के बारे में बात की, जो दिन-रात मेहनत करते थे। "आह! महोदय, ऐसे लोग भी हैं जो अपने जीवन का कुछ भी अपने लिए नहीं रखते, एक मिनट भी नहीं, एक भी सुख नहीं, सब कुछ दूसरों के लिए बलिदान होता है, वे ऐसे जीवन हैं जो निस्वार्थ भाव से देते हैं।" "देखो, मैरी, उन्हें बस अपना हाथ चादर पर रखना है और अपना अर्धचंद्र उठाना है, क्या शान है! वे सबसे मामूली काम भी कर सकते हैं, आप कहेंगी कि फ्रांस का सारा कुलीन वर्ग, यहाँ से लेकर पाइरेनीज़ तक, उनके हर कदम में झकझोर देता है।"

इस बेहद अवास्तविक चित्र को देखकर मैं स्तब्ध रह गई; सेलेस्टे ने मेरी चुप्पी को छल का एक और उदाहरण समझा: "ओह! उसका माथा कितना पवित्र दिखता है, मानो उसमें कितना कुछ छिपा हो, बादाम के अंदर जैसे कोमल, नन्हे-नन्हे हाथ, मखमली, पंजे जैसे नाखून," और इसी तरह आगे। "देखो, मैरी, उसे देखो, वह कितनी श्रद्धा से दूध पी रहा है कि मेरा मन भी प्रार्थना करने को कर रहा है। कितना गंभीर भाव है! उन्हें उसका चित्र ठीक वैसे ही बनाना चाहिए जैसे वह अभी है। वह बिल्कुल बच्चे जैसा है। क्या उन्हीं की तरह दूध पीने से तुम्हारा रंग इतना चमकीला है? ओह! जवानी! ओह! कितनी प्यारी त्वचा है। तुम कभी बूढ़ी नहीं होगी। तुम भाग्यशाली हो, तुम्हें कभी किसी के खिलाफ हाथ उठाने की जरूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि तुम्हारी आंखें ऐसी हैं जो सबकी इच्छा पूरी कर सकती हैं। अब उसे देखो, वह गुस्से में है। वह एकदम सीधा खड़ा है, जैसे कोई साइनबोर्ड।"

फ्रांस्वा को उन दो लोगों का मुझसे इस तरह बात करना बिल्कुल पसंद नहीं आया, जिन्हें वह 'चालबाज' कहती थी। मैनेजर, जिसने अपने कर्मचारियों को हर चीज़ पर नज़र रखने का आदेश दिया था, ने मुझे यह भी चेतावनी दी कि किसी आगंतुक का नौकरों से बात करना उचित नहीं है। मुझे, जो उन 'चालबाजों' को होटल के किसी भी आगंतुक से कहीं बेहतर

समझती थी, बस उसके चेहरे पर हंस पड़ी, मुझे पूरा यकीन था कि वह मेरी बात नहीं समझेगा। और फिर बहनें लौट आईं। "देखो, मैरी, उसकी कोमल बनावट देखो। ओह, कितना सुंदर लघुचित्र है, कांच के डिब्बे में रखी सबसे कीमती चीज़ से भी बेहतर, क्योंकि वह चल सकता है, और ऐसे शब्द बोलता है जिन्हें तुम दिनों-रात सुन सकती हो।"

यह एक चमत्कार ही था कि एक विदेशी महिला उन्हें वहाँ ले आई, क्योंकि इतिहास या भूगोल का कुछ भी ज्ञान न होने के बावजूद, वे अंग्रेज़ों, जर्मनों, रूसियों, इटालियनों, सभी विदेशी कीड़ों से घृणा करती थीं और कुछ अपवादों को छोड़कर, केवल फ्रांसीसी लोगों की ही परवाह करती थीं। उनके चेहरों पर अब तक उनकी जन्मभूमि की नदी घाटियों की कोमल मिट्टी की नमी बरकरार थी, कि जैसे ही कोई होटल में ठहरे किसी विदेशी का ज़िक्र करता, उसकी कही बात दोहराने के लिए, सेलेस्टे और मैरी अपने चेहरे पर उसका चेहरा बना लेतीं, उनके होंठ उसके होंठ बन जाते, उनकी आँखें उसकी आँखें बन जातीं; इन अद्भुत हास्यपूर्ण मुखौटों को देखकर मन करता कि इन्हें हमेशा के लिए सहेज कर रख लें। दरअसल, सेलेस्टे, प्रबंधक या मेरे किसी मित्र की कही बात को दोहराने का दिखावा करते हुए, अपनी छोटी सी कहानी में मनगढ़ंत बातें जोड़ देती थी, जिनमें मुख्य मजिस्ट्रेट ब्लोच आदि की सभी कमियों को दुर्भावनापूर्ण ढंग से चित्रित किया जाता था, जबकि वह ऐसा करने से अनजान प्रतीत होती थी। एक साधारण संदेश को पहुंचाने के बहाने, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया था, यह एक अद्वितीय चित्र था। वे कभी कुछ नहीं पढ़ते थे, यहाँ तक कि अखबार भी नहीं। लेकिन एक दिन, उन्हें मेरे बिस्तर पर एक किताब पड़ी मिली। यह सेंट-लेगर लेगर की प्रशंसनीय लेकिन अस्पष्ट कविताओं का संग्रह था। सेलेस्टे ने कुछ पन्ने पढ़े और मुझसे कहा: "लेकिन क्या आपको पूरा यकीन है कि ये कविताएँ हैं, कहीं ये पहेलियाँ तो नहीं?" ज़ाहिर है, जिस व्यक्ति ने अपने बचपन में केवल एक कविता सीखी हो: "यहाँ लिली मर जाती हैं," उसके लिए यह एक अधूरा ज्ञान था। मुझे लगता है कि उनका कुछ भी न सीखने का हठ उनके बचपन के घर के अस्वस्थ वातावरण के कारण था। फिर भी, उनमें कवि बनने के सारे गुण थे, और वे आम कवियों से कहीं अधिक विनम्र थीं। क्योंकि अगर सेलेस्टे ने कुछ उल्लेखनीय कहा होता और उसे ठीक से याद न कर पाने के कारण मैं उनसे दोहराने को कहता, तो वे मुझे यकीन दिलातीं

कि वे भूल गई हैं। वे कभी कोई किताब नहीं पढ़ेंगी, लेकिन न ही वे कभी कोई किताब लिखेंगी।

फ्रांस्वा को यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि इन साधारण महिलाओं के दोनों भाइयों का विवाह हो चुका है, एक की पत्नी टूर्स के आर्कबिशप की भतीजी है और दूसरे की पत्नी रोडेज़ के बिशप की रिश्तेदार है। प्रबंधक के लिए, इसका कोई महत्व नहीं था। सेलेस्टे कभी-कभी अपने पति को उसे न समझने के लिए कोसती थी, और मैं यह देखकर चकित था कि वह उसे कैसे सहन कर पाता था। क्योंकि कुछ क्षणों में, क्रोध से भरी, उग्र, सब कुछ नष्ट कर देने वाली, वह घृणित थी। कहा जाता है कि हमारा रक्त, जो नमकीन तरल है, आदिम समुद्री तत्व का ही एक आंतरिक अवशेष है। इसी प्रकार, मेरा मानना है कि सेलेस्टे, न केवल अपने क्रोध के आवेश में, बल्कि अपने अवसाद के क्षणों में भी, अपनी मूल धाराओं की लय को बनाए रखती थी। जब वह थक जाती थी, तो यह उनके स्वभाव के अनुसार होता था; वह सचमुच सूख जाती थी। तब उसे कोई भी पुनर्जीवित नहीं कर सकता था। फिर अचानक उसके विशाल, शानदार और हल्के शरीर में रक्त संचार बहाल हो जाता था। उसकी नीली त्वचा की दूधिया पारदर्शिता में पानी बहता था। उसने सूरज की ओर देखकर मुस्कुराया और उसका रंग और भी नीला हो गया। ऐसे क्षणों में वह सचमुच दिव्य प्रतीत होती थी।

ब्लोच के परिवार को शायद कभी इस बात का अंदाज़ा भी नहीं हुआ होगा कि उनके चाचा घर पर दोपहर का भोजन क्यों नहीं करते थे और उन्होंने इसे शुरू से ही एक बुज़ुर्ग कुंवारे की सनक मान लिया था, शायद किसी अभिनेत्री के साथ उनके घनिष्ठ संबंधों की वजह से; बालबेक होटल के प्रबंधक के लिए एम. निस्सिम बर्नार्ड से जुड़ी हर बात वर्जित थी। और इसीलिए, चाचा का ज़िक्र किए बिना ही, उन्होंने भतीजी पर कोई दोष नहीं निकाला, हालांकि उसे थोड़ा और सावधान रहने की सलाह ज़रूर दी। और इसलिए, लड़की और उसकी सहेली, जिन्होंने कुछ दिनों से खुद को कैसीनो और ग्रैंड होटल से बाहर मान लिया था, यह देखकर कि सब कुछ सुलझ गया है, उन परिवारों के मुखियाओं को यह दिखाने में बहुत खुश थीं जो उनसे दूरी बनाए रखते थे कि वे बिना किसी डर के पूरी आज़ादी ले सकती हैं। निस्संदेह उन्होंने वह सार्वजनिक प्रदर्शन नहीं दोहराया जिससे सभी लोग नाराज़ हो गए थे। लेकिन धीरे-धीरे वे अपने पुराने तौर-तरीकों पर लौट आईं। एक शाम जब मैं अल्बर्टीन और ब्लोच के साथ,

जिनसे हमारी मुलाकात वहीं हुई थी, आधे अंधेरे कैसिनो से बाहर आ रहा था, तो वे एक-दूसरे से लिपटे हुए, लगातार एक-दूसरे को चूमते हुए हमारी ओर आए और हमारे पास से गुजरते हुए जोर-जोर से हंसते और अश्लील आवाजें निकालते रहे। ब्लोच ने अपनी आंखें नीचे कर लीं, मानो उसने अपने चचेरे भाई को पहचाना ही न हो, और मैं इस सोच से व्याकुल हो गया कि यह रहस्यमयी, भयानक भाषा शायद अल्बर्टीन के लिए ही थी।

एक और घटना ने मेरे विचारों को गोमोराह की ओर और भी अधिक मोड़ दिया। मैंने समुद्र तट पर एक सुंदर युवती को देखा, सीधी खड़ी और पीली, जिसकी आँखों के केंद्र से निकलती हुई किरणें इतनी ज्यामितीय रूप से चमकदार थीं कि उसकी निगाहें मिलते ही किसी तारामंडल की याद आ जाती थी। मैंने सोचा कि यह लड़की अल्बर्टीन से कितनी अधिक सुंदर है, और दूसरी को छोड़ देना ही समझदारी होगी। लेकिन, इस सुंदर युवती का चेहरा एक अत्यंत नीच जीवन, लगातार घटिया उपायों को स्वीकार करने के अदृश्य तल से इतना चिकना हो गया था कि उसकी आँखें, हालांकि उसके चेहरे के बाकी हिस्सों से अधिक उदात्त थीं, केवल लालसा और इच्छाओं को ही प्रतिबिंबित कर रही थीं। खैर, अगले दिन, जब यह युवती कैसीनो में हमसे काफी दूर बैठी थी, तो मैंने देखा कि वह लगातार अल्बर्टीन पर अपनी निगाहों की बारी-बारी से घूमती हुई अग्नि जैसी चमक बिखेर रही थी। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी प्रकाशस्तंभ से उसे संकेत दे रही हो। मुझे डर था कि मेरी सहेली को पता चल जाएगा कि उसे इतनी बारीकी से देखा जा रहा है। मुझे आशंका थी कि ये बार-बार मिलने वाली निगाहें कहीं कल होने वाली प्रेम मुलाकात का संकेत न हों। मुझे क्या पता, ये मुलाकात पहली बार न हो। चमकती आँखों वाली वह युवती शायद किसी और साल बालबेक आई हो। शायद अल्बर्टीन अपनी या किसी सहेली की इच्छाओं के आगे झुक चुकी थी, इसीलिए उस महिला ने उसे इस तरह के इशारे किए। अगर ऐसा था, तो ये इशारे सिर्फ वर्तमान की मांग नहीं थे, बल्कि बीते सुखद पलों में इनका औचित्य छिपा था।

इस लिहाज़ से, यह मुलाक़ात पहली नहीं, बल्कि बीते वर्षों में साझा किए गए रोमांचों की अगली कड़ी होनी चाहिए। और सचमुच उसकी नज़र ने यह नहीं कहा: "क्या तुम ऐसा करोगी?" जैसे ही उस युवती की नज़र अल्बर्टीन पर पड़ी, उसने अपना सिर घुमाया और यादों से भरी निगाहों से मुस्कुराई, मानो उसे बहुत डर था कि मेरी सहेली को याद न रहे। अल्बर्टीन,

जो उसे साफ़ देख सकती थी, एकदम शांत खड़ी रही, जिसके परिणामस्वरूप दूसरी, ठीक उसी तरह जैसे कोई आदमी अपनी पुरानी प्रेमिका को नए प्रेमी के साथ देखता है, उसने उसकी तरफ देखना बंद कर दिया और उस पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया, मानो वह मौजूद ही न हो।

लेकिन, एक-दो दिन बाद, मुझे इस युवती के स्वभाव का प्रमाण मिला, और साथ ही इस बात की संभावना भी कि वह अतीत में अल्बर्टीन को जानती थी। अक्सर, कैसीनो के हॉल में, जब दो लड़कियाँ एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होती थीं, तो एक चमकदार घटना घटित होती थी, मानो एक चमकती हुई लकीर एक से दूसरी की ओर गुज़र रही हो। यह भी ध्यान देने योग्य है कि ऐसी भौतिक अभिव्यक्तियों की सहायता से, भले ही वे अगोचर हों, उन खगोलीय संकेतों के द्वारा जो वातावरण के एक पूरे हिस्से में आग लगा देते हैं, बिखरी हुई गोमोराह हर कस्बे, हर गाँव में अपने अलग हुए सदस्यों को फिर से एकजुट करने, बाइबिल के शहर का पुनर्निर्माण करने का प्रयास करती है, जबकि हर जगह क्षणिक पुनर्निर्माण के उद्देश्य से ही सही, उदासीन, पाखंडी, और कभी-कभी सोडोम से आए साहसी निर्वासितों द्वारा भी यही प्रयास किए जा रहे हैं।

एक बार मैंने उस अजनबी को देखा जिसे अल्बर्टीन पहचान नहीं पाई थी, ठीक उसी समय जब ब्लोच का चचेरा भाई उसके पास आ रहा था। युवती की आँखों में चमक थी, लेकिन यह स्पष्ट था कि वह उस इस्राएली युवती को नहीं जानती थी। उसने उसे पहली बार देखा, एक इच्छा, एक संदेह का भाव महसूस किया, जो अल्बर्टीन के मामले में मौजूद निश्चितता से बिल्कुल अलग था। अल्बर्टीन, जिसकी मित्रता पर उसने अब तक भरोसा किया होगा, उसकी शीतलता के बावजूद, उसने पेरिस से परिचित लेकिन वहाँ न रहने वाले एक विदेशी के आश्चर्य को महसूस किया होगा, जो कुछ सप्ताह बिताने के लिए वहाँ लौटा था, उस छोटे से थिएटर की जगह पर जहाँ वह सुखद शामें बिताया करता था, और देखता है कि अब वहाँ एक बैंक बना दिया गया है।

ब्लोच की चचेरी बहन जाकर एक मेज पर बैठ गई और पत्रिका के पन्ने पलटने लगी। थोड़ी देर बाद वह युवती भी आकर उसके बगल में बैठ गई, मानो किसी ख्यालों में खोई हुई हो। तभी मेज के नीचे उनके पैर हिलते हुए दिखाई दिए, फिर उनके हाथ-पैर एक अव्यवस्थित ढेर में

सिमट गए। फिर बातें शुरू हुईं, और युवती का भोला-भाला पति, जो उसे हर जगह ढूंढ रहा था, यह देखकर चकित रह गया कि वह उसी शाम एक ऐसी लड़की के साथ मिलने की योजना बना रही है जिसे वह जानता भी नहीं था। उसकी पत्नी ने ब्लोच की चचेरी बहन का परिचय उससे बचपन की दोस्त के रूप में कराया, जिसका नाम वह ठीक से नहीं बता पाई, क्योंकि वह उसका नाम पूछना भूल गई थी। लेकिन पति की उपस्थिति ने उनकी घनिष्ठता को और बढ़ा दिया, क्योंकि वे एक-दूसरे को 'तू' कहकर पुकारने लगे, क्योंकि वे अपने मठ में एक-दूसरे को जानते थे। इस घटना पर वे बाद में खूब हँसे, साथ ही अपने धोखे में आए पति पर भी, और उनकी इस हँसी ने उन्हें और अधिक प्यार जताने का बहाना दे दिया।

अल्बर्टीन की बात करें तो, मैं यह नहीं कह सकता कि कैसीनो में या बीच पर किसी भी लड़की के साथ उसका व्यवहार ज़रूरत से ज़्यादा सहज था। मुझे तो उसमें हद से ज़्यादा ठंडापन और उदासीनता दिखी, जो शिष्टाचार से कहीं ज़्यादा लग रही थी, मानो शक से बचने के लिए रची गई कोई चाल हो। जब किसी लड़की ने उससे सवाल किया, तो उसने बड़ी तेज़ी से, ठंडे और शालीन अंदाज़ में ऊँची आवाज़ में जवाब दिया: "हाँ, मैं लगभग पाँच बजे टेनिस कोर्ट जाऊँगी। मैं कल सुबह लगभग आठ बजे नहाऊँगी," और फिर तुरंत उस लड़की से मुँह फेर लिया जिससे उसने यह कहा था। यह सब देखकर ऐसा लग रहा था मानो वह लोगों का ध्यान भटकाना चाहती हो, या तो कोई गुप्त मुलाकात तय करना चाहती हो, या फिर पहले से ही दबे स्वर में तय की गई इस बात को, जो अपने आप में काफ़ी हानिरहित थी, ज़ोर से बोल रही हो ताकि किसी का ध्यान न जाए। और जब बाद में मैंने उसे साइकिल पर सवार होकर तेज़ी से दूर जाते देखा, तो मुझे लगा कि वह उस लड़की को पकड़ने के लिए जल्दी में थी जिससे उसने अभी-अभी बात की थी।

तभी, जब समुद्र तट के किनारे एक मोटर-कार से एक खूबसूरत युवती उतरी, तो अल्बर्टीन खुद को पीछे मुड़ने से रोक नहीं पाई। और उसने तुरंत बताया: "मैं उस नए झंडे को देख रही थी जिसे उन्होंने स्नान स्थल के ऊपर लगाया है। पुराना वाला तो काफी जर्जर हो चुका था। लेकिन मुझे लगता है कि यह वाला उससे भी ज्यादा जर्जर है।"

एक बार अल्बर्टीन का ठंडा और उदासीन रवैया मुझे और भी दुखी कर गया। वह जानती थी कि मैं इस बात से चिढ़ता था कि वह कभी-कभी अपनी चाची की एक सहेली से मिलती थी,

जिसका व्यवहार अच्छा नहीं था और जो कभी-कभी श्रीमती बोंटेम्प्स के साथ कुछ दिन बिताने आती थी। अल्बर्टीन ने मुझे यह कहकर तसल्ली दी थी कि वह उससे दोबारा बात नहीं करेगी। और जब वह महिला इनकार्विल आई, तो अल्बर्टीन ने कहा: "वैसे, तुम्हें पता है कि वह यहाँ है। क्या उन्होंने तुम्हें बताया है?" मानो मुझे यह दिखाना चाहती हो कि वह उससे छुपकर नहीं मिल रही थी। एक दिन, जब उसने मुझे यह बताया, तो उसने आगे कहा: "हाँ, मैं उससे समुद्र तट पर टकरा गई थी, और गुजरते समय मैंने जानबूझकर उसे धक्का दिया, ताकि उसके साथ बदतमीजी कर सकूँ।" जब अल्बर्टीन ने मुझे यह बताया, तो मुझे श्रीमती बोंटेम्प्स की कही एक बात याद आ गई, जिस पर मैंने कभी ध्यान नहीं दिया था, जब उन्होंने श्रीमती बोंटेम्प्स से कहा था... मेरी मौजूदगी में स्वान ने अपनी भतीजी अल्बर्टीन की ढीठता का बखान किया, मानो यह कोई गुण हो, और बताया कि कैसे अल्बर्टीन ने किसी अधिकारी की पत्नी को याद दिलाया कि उसके पिता रसोई में काम करते थे। लेकिन जिसे हम प्यार करते हैं, उसके मुंह से निकली बात ज्यादा देर तक पवित्र नहीं रहती; वह मुरझा जाती है, सड़ जाती है। एक-दो शाम बाद, मैंने फिर से अल्बर्टीन की उस टिप्पणी के बारे में सोचा, और अब वह बदतमीज़ी नहीं थी जिस पर उसे इतना गर्व था—और जिसे देखकर मुझे केवल हंसी आती थी—जो मुझे लगता था कि वह संकेत दे रही है, बल्कि कुछ और था, यानी अल्बर्टीन ने, शायद बिना किसी निश्चित उद्देश्य के भी, इस महिला को चिढ़ाने के लिए, या जानबूझकर उसे अतीत में स्वीकार किए गए प्रस्तावों की याद दिलाने के लिए, जल्दी से उसके पास यह बात पहुंचाई थी, यह सोचकर कि शायद मैंने इसके बारे में सुना होगा क्योंकि यह सार्वजनिक रूप से हुआ था, और वह किसी भी प्रतिकूल व्याख्या को रोकना चाहती थी।

हालांकि, अल्बर्टीन जिन महिलाओं से शायद प्यार करती थी, उनके कारण मेरे मन में जो ईर्ष्या उत्पन्न हुई थी, वह अचानक समाप्त हो गई।

[खंड 1 समाप्त]

भाग 2

अध्याय II (जारी)

एम. निस्सिम बर्नार्ड के सुख (जारी) - मोरेल के विचित्र चरित्र की रूपरेखा - एम. डी चार्लस ने वर्दुरिन परिवार के साथ भोजन किया।

हम, अल्बर्टीन और मैं, छोटी स्थानीय रेलवे के बालबेक स्टेशन पर इंतज़ार कर रहे थे। बारिश हो रही थी, इसलिए हम होटल की बस से वहाँ पहुँचे थे। हमसे कुछ ही दूरी पर श्री निस्सिम बर्नार्ड थे, जिनकी एक आँख पर चोट लगी थी। उन्होंने हाल ही में अथली के गायक को छोड़कर पड़ोस के एक लोकप्रिय फार्महाउस में वेटर का काम शुरू किया था, जिसे 'चेरी ऑर्चर्ड' के नाम से जाना जाता था। लाल चेहरे और तीखे नैन-नक्श वाले इस युवक को देखकर ऐसा लगता था मानो उसके सिर की जगह टमाटर लगा हो। ठीक वैसा ही टमाटर उसके जुड़वाँ भाई के सिर की जगह भी था। तटस्थ दृष्टि से देखने वाले को जुड़वाँ बच्चों की इन पूर्ण समानताओं में एक आकर्षण सा दिखता है, मानो प्रकृति, जो उस समय औद्योगीकरण की ओर बढ़ रही है, बिक्री के लिए एक आदर्श प्रस्तुत कर रही हो। दुर्भाग्य से श्री निस्सिम बर्नार्ड इसे एक अलग नज़रिए से देखते थे, और यह समानता केवल बाहरी थी। टमाटर II महिलाओं की विशेष ज़रूरतों को पूरा करने में बेतहाशा तत्पर रहता था, जबकि टमाटर I कुछ सज्जनों की इच्छाओं को पूरा करने में कोई संकोच नहीं करता था। अब जब भी एम. बर्नार्ड, टमाटर I के साथ बिताए सुखद पलों की याद से मानो सहज प्रतिक्रिया से प्रेरित होकर चेरी के बाग में आता, तो कमज़ोर नज़र होने के कारण (हालाँकि उन्हें पहचानने में चूकने के लिए कमज़ोर नज़र होना ज़रूरी नहीं है), वह बूढ़ा इस्राएली, अनजाने में एम्फिट्रियन की तरह व्यवहार करते हुए, अपने जुड़वाँ भाई से पूछता: "क्या तुम आज शाम कहीं मिलोगे?" उसे तुरंत मुँह पर ज़ोरदार थप्पड़ पड़ता था। यहाँ तक कि एक ही भोजन के दौरान भी ऐसा कई बार हो सकता था, जब वह दूसरे भाई से वही बातचीत जारी रखता जो उसने पहले भाई से शुरू की थी। अंत में, टमाटरों के साथ विचारों के जुड़ाव के कारण, यहाँ तक कि खाने योग्य टमाटरों के साथ भी, इस तरह का व्यवहार उन्हें इतना घृणित लगने लगा कि जब भी वे ग्रैंड होटल में अपनी बगल वाली मेज पर किसी नए व्यक्ति को टमाटर मंगवाते सुनते, तो वे उससे धीरे से कहते: "महोदय, बिना परिचय के आपसे बात करने के लिए मुझे क्षमा करें। लेकिन मैंने सुना है कि आपने टमाटर मंगवाए हैं। आज वे बासी हैं। मैं आपको आपके भले के लिए बता रहा हूँ, क्योंकि मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, मैं खुद उन्हें कभी नहीं खाता।" वह अजनबी इस परोपकारी और निस्वार्थ पड़ोसी को दिल से धन्यवाद देता, वेटर को वापस बुलाता और अपना मन बदलने का नाटक करता: "नहीं, दोबारा सोचने पर, बिल्कुल नहीं,

टमाटर नहीं।" ऐमे, जिसने यह सब पहले भी देखा था, मन ही मन हँसता और सोचता: "वह बूढ़ा बदमाश है, वह श्रीमान बर्नार्ड, उसने एक और को अपना ऑर्डर बदलवा दिया।" श्रीमान बर्नार्ड, जो पहले से ही देरी से आ रही ट्राम का इंतजार कर रहे थे, अपनी काली आँख के कारण अल्बर्टीन और मुझसे बात करने की कोई उत्सुकता नहीं दिखा रहे थे। हम उससे बात करने के लिए और भी कम उत्सुक थे। हालाँकि, अगर उसी क्षण एक साइकिल हमारी ओर तेज़ी से न आती, तो उससे बात करना लगभग अपरिहार्य हो जाता; लिफ्ट-बॉय हाँफते हुए साइकिल की सीट से उछल पड़ा। होटल से निकलने के कुछ ही समय बाद मैडम वर्दुरिन ने फ़ोन किया था, यह जानने के लिए कि क्या मैं दो दिन बाद उनके साथ भोजन करूँगा; हम अभी देखेंगे कि क्यों। फिर, मुझे विस्तार से संदेश देने के बाद, लिफ्ट-बॉय हमें छोड़कर चला गया, और उन लोकतांत्रिक 'कर्मचारियों' में से एक होने के नाते, जो मध्यम वर्ग के प्रति स्वतंत्रता का दिखावा करते हैं और आपस में अधिकार के सिद्धांत को बहाल करते हैं, उसने समझाया: "मुझे जाना होगा, क्योंकि मेरे बॉस हैं।"

अल्बर्टीन की सहेलियाँ जा चुकी थीं और कुछ समय के लिए बाहर ही रहेंगी। मैं उसे व्यस्त रखने के लिए उत्सुक था। मान लीजिए कि बालबेक में मेरे साथ दोपहर बिताने से उसे कुछ खुशी मिल सकती थी, लेकिन मैं जानता था कि ऐसी खुशी कभी पूरी नहीं होती, और अल्बर्टीन, जो अभी उस उम्र में थी (जिससे हममें से कुछ लोग कभी बाहर नहीं निकल पाते) जब हमें यह समझ नहीं आता कि अपूर्णता खुशी पाने वाले में होती है, न कि देने वाले में, शायद अपनी निराशा का दोष मुझ पर डाल देती। मैं चाहता था कि वह इसका दोष उन परिस्थितियों पर डाले जो मैंने खुद बनाई थीं, और जिनके कारण हमें अकेले साथ रहने का मौका नहीं मिला, और साथ ही वह मेरे बिना कैसीनो और बीच पर भी नहीं रह सकती थी। इसलिए मैंने उस दिन उससे कहा कि वह मेरे साथ डोंसिएरेस चले, जहाँ मैं सेंट-लूप से मिलने वाला था। उसका मन बहलाने की इसी उम्मीद में, मैंने उसे पेंटिंग शुरू करने की सलाह दी, जिसकी उसने पहले भी शिक्षा ली थी। काम करते समय वह खुद से यह नहीं पूछेगी कि वह खुश है या दुखी। मैं अल्बर्टीन को भी कभी-कभार वर्दुरिन और कैम्ब्रेमर परिवार के साथ भोजन पर ले जाना चाहता था, जो निश्चित रूप से मेरे द्वारा किसी मित्र का परिचय कराए जाने पर प्रसन्न होते, लेकिन मुझे पहले यह सुनिश्चित करना था कि श्रीमती पुटबस अभी तक ला रास्पेलियर में तो

नहीं हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए मुझे स्वयं वहाँ जाना पड़ा, और चूंकि मुझे पहले से पता था कि अगले दिन अल्बर्टीन अपनी चाची से मिलने जा रही होगी, इसलिए मैंने इस अवसर का लाभ उठाकर श्रीमती वर्दुरिन को एक टेलीग्राम भेजा और उनसे पूछा कि क्या वह बुधवार को घर पर होंगी। यदि श्रीमती पुटबस घर पर होतीं, तो मैं उनकी नौकरानी से मिलने का प्रबंध करता, यह पता लगाता कि क्या उनके बालबेक आने का कोई खतरा है, और यदि हाँ, तो कब, ताकि उस दिन अल्बर्टीन को उनकी पहुँच से दूर रखा जा सके। छोटी स्थानीय रेलगाड़ी, जो उस समय मौजूद नहीं थी जब मैंने अपनी दादी के साथ यात्रा की थी, अब डोनसिएरेस-ला-गौपिल तक फैली हुई थी, जो एक बड़ा स्टेशन था जहाँ महत्वपूर्ण ट्रेनें रुकती थीं, जिनमें वह एक्सप्रेस ट्रेन भी शामिल थी जिससे मैं पेरिस से सेंट-लूप घूमने आया था और वही एक्सप्रेस ट्रेन जिससे मैं वापस लौटा था। और, खराब मौसम के कारण, ग्रैंड होटल से चलने वाली बस ने अल्बर्टीन और मुझे छोटी ट्राम के स्टेशन, बालबेक-प्लेज तक पहुँचाया।

छोटी ट्रेन अभी तक नहीं आई थी, लेकिन उसके पीछे छूटता धुएँ का गुबार, सुस्ती और धीमी गति से, दिखाई दे रहा था। यह गुबार, लगभग स्थिर बादल की तरह, अपनी गति के सहारे धीरे-धीरे क्रिक्वेटोट की चट्टान की हरी ढलान पर चढ़ रहा था। अंत में, छोटी ट्राम, जो उससे पहले सीधी रेखा में चल रही थी, अपनी बारी में धीमी गति से आ पहुँची। उसमें चढ़ने के लिए इंतज़ार कर रहे यात्री उसके लिए रास्ता बनाने के लिए पीछे हट गए, लेकिन जल्दबाजी नहीं की, क्योंकि वे जानते थे कि वे एक सौम्य, लगभग मानवीय यात्री से निपट रहे हैं, जो स्टेशन मास्टर के विनम्र संकेतों द्वारा एक नौसिखिए की साइकिल की तरह निर्देशित हो रहा था, और इंजन चालक के मजबूत हाथों में था, किसी को कुचलने का कोई खतरा नहीं था, और उचित स्थान पर रुक जाएगा।

मेरे टेलीग्राम में वर्दुरिन परिवार के टेलीफोन संदेश की व्याख्या थी और यह और भी उपयुक्त समय पर भेजा गया था क्योंकि बुधवार (जिस दिन मैंने तय किया था वह संयोग से बुधवार ही था) वह दिन था जो श्रीमती वर्दुरिन द्वारा पेरिस की तरह ही ला रास्पेलियर में रात्रिभोज पार्टियों के लिए निर्धारित था, जिसके बारे में मुझे जानकारी नहीं थी। श्रीमती वर्दुरिन ' रात्रिभोज' नहीं देती थीं, बल्कि उनके अपने 'बुधवार' होते थे। ये बुधवार कला के नमूने होते थे। यह जानते हुए भी कि उनकी कोई बराबरी नहीं है, श्रीमती वर्दुरिन उनमें कुछ खास अंतर पैदा करती थीं। वे

कहतीं, "पिछला बुधवार उससे पहले वाले बुधवार जितना अच्छा नहीं था। लेकिन मुझे विश्वास है कि अगला बुधवार मेरे द्वारा दिए गए सबसे बेहतरीन बुधवारों में से एक होगा।" कभी-कभी वे यहाँ तक मान लेती थीं: "यह बुधवार बाकी बुधवारों के लायक नहीं था। लेकिन अगले हफ्ते आपके लिए एक बड़ा सरप्राइज है।" पेरिस सीजन के आखिरी हफ्तों में, देश लौटने से पहले, वे बुधवारों के अंत की घोषणा करती थीं। इससे उन्हें अपने प्रशंसकों को उत्साहित करने का मौका मिलता था। “सिर्फ़ तीन और बुधवार बचे हैं, बस दो और,” वह उसी लहजे में कहतीं जैसे दुनिया खत्म होने वाली हो। “अगला बुधवार आप मिस नहीं करेंगे, क्योंकि वह आखिरी कार्यक्रम है।” लेकिन यह आखिरी कार्यक्रम एक दिखावा था, क्योंकि वह घोषणा करतीं: “आधिकारिक तौर पर, अब और बुधवार नहीं होंगे। आज इस साल का आखिरी बुधवार था। लेकिन मैं बुधवार को घर पर ही रहूंगी। हम सब मिलकर एक छोटा सा बुधवार मनाएंगे; मुझे यकीन है कि ये छोटे-छोटे निजी बुधवार सबसे अच्छे होंगे।” ला रास्पेलियर में, बुधवार मजबूरीवश सीमित थे, और चूंकि अगर उन्हें कोई दोस्त उस रास्ते से गुजरता हुआ मिल जाता, तो वे उसे किसी न किसी शाम के लिए आमंत्रित कर लेते, इसलिए हफ्ते का लगभग हर दिन बुधवार बन जाता था। “मुझे सभी मेहमानों के नाम याद नहीं हैं, लेकिन मुझे पता है कि मैडम ला मार्क्विज़ डी कैमेम्बर्ट भी हैं,” लिफ्ट वाले लड़के ने मुझे बताया था; कैम्ब्रेमर नाम पर हुई हमारी चर्चा की उनकी स्मृति पुरानी दुनिया की स्मृति को पूरी तरह से प्रतिस्थापित करने में सफल नहीं हुई थी, जिसके अक्षर, परिचित और अर्थपूर्ण, उस युवा कर्मचारी के लिए तब सहायक हुए जब वह इस कठिन नाम से शर्मिंदा था, और उसने तुरंत उन्हें प्राथमिकता दी और फिर से अपना लिया, न तो आलस्य के कारण और न ही किसी पुरानी और अमिट प्रथा के रूप में, बल्कि तर्क और स्पष्टता की आवश्यकता के कारण जिसे वे संतुष्ट करते थे।

हम जल्दी से एक खाली डिब्बे की तलाश में निकल पड़े जिसमें मैं अल्बर्टीन को पूरी यात्रा के दौरान अपनी बाहों में लिए रह सकूँ। एक भी खाली डिब्बा न मिलने पर, हम एक ऐसे डिब्बे में चढ़ गए जिसमें पहले से ही एक भारी-भरकम चेहरे वाली, बूढ़ी और बदसूरत, मर्दाना भाव वाली महिला बैठी थी, जो रविवार के सबसे अच्छे कपड़ों में थी और 'रिव्यू डेस ड्यूक्स मोंडेस' पढ़ रही थी। अपनी साधारणता के बावजूद, उसकी रुचियाँ विविध थीं, और मुझे यह सोचकर मज़ा आया कि वह किस सामाजिक वर्ग से संबंधित हो सकती है; मैंने तुरंत निष्कर्ष निकाला

कि वह किसी बड़े वेश्यालय की प्रबंधक या छुट्टी पर आई कोई दलाल होगी। उसका चेहरा, उसका हावभाव, इस बात का स्पष्ट प्रमाण था। बस, मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसी महिलाएँ 'रिव्यू डेस ड्यूक्स मोंडेस' पढ़ती हैं। अल्बर्टीन ने आँख मारकर और मुस्कुराकर मेरा ध्यान उसकी ओर आकर्षित किया। उस महिला में अत्यंत गरिमा थी; और जैसा कि मैं, अपने मन में, इस बात से अवगत था कि मुझे दो दिन बाद, प्रसिद्ध मैडम द्वारा छोटी रेलवे के अंतिम स्टेशन पर आमंत्रित किया गया था। वर्दुरिन, मुझे पता था कि एक मध्यवर्ती स्टेशन पर रॉबर्ट डी सेंट-लूप मेरा इंतज़ार कर रहे हैं, और थोड़ी दूर आगे जाकर मैं मैडम डी कैम्ब्रेमर को फेटेर्न में ठहरने की व्यवस्था करके उन्हें बहुत प्रसन्न कर सकता हूँ। मेरी आँखों में व्यंग्य की चमक थी जब मैंने इस आत्म-प्रशंसक महिला को देखा, जो अपने भव्य पहनावे, टोपी में लगे पंखों और 'रेव्यू डेस ड्यूक्स मोंडेस' पत्रिका के कारण खुद को मुझसे कहीं अधिक महत्वपूर्ण समझती थी। मुझे उम्मीद थी कि वह महिला ट्रेन में एम. निस्सिम बर्नार्ड से ज़्यादा देर तक नहीं रुकेगी और कम से कम टौटेनविले में तो उतर ही जाएगी, लेकिन नहीं। ट्रेन एप्रेविले में रुकी, वह बैठी रही। इसी तरह मोंटमार्टिन-सुर-मेर, पारविले-ला-बिंगार्ड, इनकारविले में भी। इसलिए निराशा में, जब ट्रेन सेंट-फ्रिचॉक्स से निकल गई, जो डोनसिएरेस से पहले आखिरी स्टेशन था, तो मैंने उस महिला की परवाह किए बिना अल्बर्टीन को गले लगाना शुरू कर दिया। डोनसिएरेस में, सेंट-लूप बड़ी मुश्किल से मुझसे स्टेशन पर मिलने आया था, उसने मुझे बताया, क्योंकि वह अपनी चाची के साथ ठहरा हुआ था, मेरा टेलीग्राम अभी-अभी उस तक पहुँचा था और पहले से कोई व्यवस्था न कर पाने के कारण वह मुझे एक घंटे से ज़्यादा समय नहीं दे सका। अफसोस, यह एक घंटा मुझे बहुत लंबा लगा, क्योंकि ट्रेन से उतरते ही अल्बर्टीन ने अपना सारा ध्यान सेंट-लूप पर लगा दिया। उसने मुझसे बात नहीं की, अगर मैं उससे कुछ पूछता तो मुश्किल से जवाब देती, और जब मैं उसके पास जाता तो मुझे दूर भगा देती। दूसरी ओर, रॉबर्ट के साथ वह अपनी चिढ़ाने वाली हंसी हंसती, उससे खूब बातें करती, उसके साथ लाए कुत्ते के साथ खेलती, और जब कुत्ता उत्तेजित होता तो जानबूझकर उसके शरीर से रगड़ती। मुझे याद आया कि जिस दिन अल्बर्टीन ने मुझे पहली बार चूमने दिया था, उस दिन मेरे चेहरे पर उस अनजान व्यक्ति के लिए कृतज्ञता का भाव था जिसने उसमें इतना गहरा बदलाव ला दिया था और मेरा काम इतना आसान कर दिया था। अब मैं उसके बारे में

सोचकर भयभीत हो जाता था। रॉबर्ट ने शायद यह महसूस कर लिया था कि मैं अल्बर्टीन के बारे में चिंतित था, क्योंकि उसने उसकी उकसाहटों का कोई जवाब नहीं दिया, जिससे वह मुझसे बहुत नाराज़ हो गई; फिर उसने मुझसे ऐसे बात की जैसे मैं अकेला था, जिसे जब उसने महसूस किया तो उसके मन में मेरे लिए सम्मान फिर से बढ़ गया। रॉबर्ट ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उसके उन दोस्तों से मिलना नहीं चाहूँगा जिनके साथ वह मुझे हर शाम डोंसिएरेस में खाना खिलाया करता था, जब मैं वहाँ रह रहा था, जो अभी भी गैरीसन में थे। और जैसा कि उसने खुद उसी चिड़चिड़े अंदाज़ में कहा, जिसकी वह दूसरों में निंदा करता था: "अगर तुम उनसे दोबारा नहीं मिलना चाहते तो उन्हें प्रभावित करने के लिए इतनी मेहनत करने का क्या फायदा?" मैंने उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया, क्योंकि मैं अल्बर्टीन से अलग होने का कोई जोखिम नहीं उठाना चाहता था, और इसलिए भी क्योंकि अब मैं उनसे अलग हो चुका था। उनसे, यानी खुद से। हम दिल से चाहते हैं कि हमें एक और जीवन मिले जिसमें हम वैसे ही हों जैसे हम इस धरती पर हैं। लेकिन हम इस बात पर विचार करने के लिए रुकते नहीं कि उस परलोक की प्रतीक्षा किए बिना भी, इस जीवन में, कुछ वर्षों बाद हम अपने अतीत के प्रति, उस स्वरूप के प्रति जो हम अमर बने रहना चाहते थे, विश्वासघात कर बैठते हैं। यह माने बिना भी कि मृत्यु हमें जीवन भर होने वाले परिवर्तनों से कहीं अधिक पूर्णतः बदल देगी, यदि उस परलोक में हमारा सामना अपने अतीत के स्वरूप से हो, तो हम स्वयं से वैसे ही मुंह मोड़ लेंगे जैसे उन लोगों से जिनसे कभी हमारे मैत्रीपूर्ण संबंध थे, लेकिन जिन्हें हमने वर्षों से नहीं देखा—जैसे सेंट-लूप के मित्र जिनसे मैं हर शाम फैसन डोरे में मिलकर बहुत आनंद लेता था, और जिनकी बातचीत अब मुझे केवल एक उबाऊ आग्रह प्रतीत होती। इस दृष्टि से, और क्योंकि मैं अतीत में मुझे जो आनंद देता था, उसकी खोज में वहाँ न जाना ही बेहतर समझता था, डोनसिएरेस में टहलना मुझे स्वर्ग में आगमन का पूर्वाभास प्रतीत हो सकता था। हम स्वर्ग के बारे में बहुत सपने देखते हैं, या यों कहें कि कई क्रमिक स्वर्गों के बारे में, लेकिन उनमें से प्रत्येक, हमारी मृत्यु से बहुत पहले, एक खोया हुआ स्वर्ग होता है, जिसमें हमें स्वयं को भी खोया हुआ महसूस करना चाहिए।

वह हमें स्टेशन पर छोड़कर चला गया। उसने मुझसे कहा, "लेकिन आपको शायद एक घंटा इंतज़ार करना पड़ेगा। अगर आप यहाँ रुकती हैं, तो शायद आपको मेरे चाचा चार्लस मिल

जाएँगी, जो आपसे दस मिनट पहले ट्रेन से पेरिस जा रहे हैं। मैंने उन्हें पहले ही अलविदा कह दिया है, क्योंकि मुझे उनकी ट्रेन शुरू होने से पहले वापस जाना है। मैंने उन्हें आपके बारे में नहीं बताया, क्योंकि मुझे आपका टेलीग्राम नहीं मिला था।" सेंट-लूप के जाने के बाद मैंने अल्बर्टीन पर जो आरोप लगाए, उसके जवाब में उसने कहा कि मेरे प्रति अपनी इस बेरुखी से वह उस धारणा को मिटाना चाहती थी जो सेंट-लूप के मन में तब पैदा हो सकती थी जब ट्रेन रुकने पर वह मुझे उसकी कमर में हाथ डाले उसके कंधे से सटा हुआ देखता। उसने वास्तव में मेरी यह मुद्रा देखी थी (मैंने उसे नहीं देखा था, वरना मैं भी वैसी ही मुद्रा अपनाती जैसी होनी चाहिए थी), और उसने मेरे कान में धीरे से कहा: "तो बात ऐसी है, उन घमंडी छोटी लड़कियों में से एक जिनके बारे में तुमने मुझे बताया था, जो मैडम डी स्टरमारिया के पास नहीं जातीं क्योंकि उन्हें लगता है कि वह तेज़-तर्रार हैं?" जब मैं पेरिस से डोनसिएरेस में रॉबर्ट से मिलने गई थी और हम बालबेक में बिताए अपने समय के बारे में बात कर रहे थे, तब मैंने पूरी ईमानदारी से रॉबर्ट से कहा था कि अल्बर्टीन में कुछ भी अच्छा नहीं है, वह सद्गुण की साक्षात मूर्ति है। और अब जब मुझे खुद पता चल गया था कि यह झूठ था, तो मैं और भी चिंतित थी कि रॉबर्ट इसे सच मान ले। मेरे लिए रॉबर्ट को यह बताना ही काफी होता कि मैं अल्बर्टीन से प्यार करती हूँ। वह उन लोगों में से एक था जो अपने दोस्त को उन कष्टों से बचाने के लिए खुद को सुख से वंचित कर सकते हैं, जिन्हें वे खुद झेलते तो और भी ज्यादा महसूस करते। "हाँ, वह अभी भी थोड़ी बचकानी है। लेकिन आपको उसके बारे में कुछ भी बुरा नहीं पता?" मैंने चिंता से पूछा। "कुछ नहीं, सिवाय इसके कि मैंने आप दोनों को प्रेमियों की तरह एक-दूसरे से चिपके हुए देखा।"

"तुम्हारे रवैये से कुछ भी नुकसान नहीं हुआ," मैंने सेंट-लूप के जाने के बाद अल्बर्टीन से कहा। "बिल्कुल सही," उसने मुझसे कहा, "यह मेरी मूर्खता थी, मैंने तुम्हारी भावनाओं को ठेस पहुँचाई, मैं तुमसे कहीं ज़्यादा दुखी हूँ। तुम देखोगे, मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूँगी; मुझे माफ़ कर दो," उसने दुखी भाव से हाथ बढ़ाते हुए विनती की। उसी क्षण, जिस प्रतीक्षालय में हम बैठे थे, उसके प्रवेश द्वार से मैंने धीरे-धीरे आते हुए देखा, उसके पीछे सम्मानपूर्वक दूरी पर सामान से लदा एक कुली, एम. डी चार्लस, चल रहा था।

पेरिस में, जहाँ मेरी उनसे मुलाक़ात केवल शाम के परिधान में हुई थी, स्थिर, काले कोट में जकड़े हुए, अपने गर्वपूर्ण अलगाव, प्रशंसा की प्यास और बातचीत की उमंग के कारण सीधे खड़े हुए, मुझे कभी एहसास नहीं हुआ था कि वे कितने बूढ़े हो गए थे। अब, हल्के यात्रा सूट में, जिससे वे और भी मोटे लग रहे थे, जब वे कमरे में इतराते हुए चल रहे थे, अपने फूले हुए पेट और लगभग प्रतीकात्मक नितंबों को संभाले हुए, दिन की कठोर रोशनी उनके होठों पर रंग बिखेर रही थी, नाक की नोक पर कोल्ड क्रीम से जमे हुए चावल के पाउडर जैसा रंग, उनकी रंगी हुई मूंछों पर काला रंग, जिसका काला रंग उनके सफ़ेद बालों के विपरीत था, कृत्रिम प्रकाश में वह सब कुछ एक ऐसे व्यक्ति के जीवंत रंग जैसा लग रहा था जो अभी भी युवा था। ट्रेन के कारण थोड़ी देर के लिए ही सही, मैं उनसे बात कर रहा था, लेकिन साथ ही साथ मैंने अल्बर्टीन के डिब्बे पर भी नज़र रखी ताकि उन्हें पता चल जाए कि मैं आ रहा हूँ। जब मैंने अपना सिर एम. डी चार्लस की ओर घुमाया, तो उन्होंने मुझसे अनुरोध किया कि मैं उनके एक रिश्तेदार सैनिक को बुला लूँ, जो प्लेटफार्म के दूसरी ओर खड़ा था, मानो हमारी ट्रेन का इंतज़ार कर रहा हो, लेकिन विपरीत दिशा में, बालबेक से दूर। एम. डी चार्लस ने कहा, "वह अपनी रेजिमेंट के बैंड में है। आप अभी भी काफी जवान हैं, और मैं दुर्भाग्य से इतना बूढ़ा हो चुका हूँ कि आप मुझे उसके पास जाने की परेशानी से बचा सकते हैं।" मैंने स्वयं उस सैनिक के पास जाने का फैसला किया, जिसकी ओर उन्होंने मुझे इशारा किया था, और उसके कॉलर पर कढ़ाई किए हुए वीणा के चिन्ह से मुझे पता चला कि वह बैंड वादक था। लेकिन, जैसे ही मैं अपना काम करने की तैयारी कर रहा था, मुझे कितना आश्चर्य हुआ, और मैं कह सकता हूँ कि मुझे कितनी खुशी हुई, जब मैंने मोरेल को पहचाना, जो मेरे चाचा के नौकर का बेटा था, जिसने मुझे कई यादें दिला दीं। उन्होंने मुझे एम. डी चार्लस का संदेश पहुँचाना भुला दिया। "क्या, तुम डोंसिएरेस में हो?" "हाँ, और उन्होंने मुझे तोपखाने से जुड़े बैंड में रख दिया है।" लेकिन उन्होंने यह जवाब रूखे और घमंडी लहजे में दिया। वह एक कट्टर दिखावा करने वाले बन गए थे, और ज़ाहिर है कि मुझे देखकर, जो उन्हें उनके पिता के पेशे की याद दिला रहा था, उन्हें अच्छा नहीं लगा। अचानक मैंने एम. डी चार्लस को हमारी ओर आते देखा। मेरी देरी ने ज़ाहिर तौर पर उनके धैर्य की परीक्षा ले ली थी। "आज शाम मैं थोड़ा संगीत सुनना चाहूँगा," उन्होंने बिना किसी भूमिका के मोरेल से कहा, "मैं शाम के लिए पाँच सौ फ़्रैंक देता हूँ, जो शायद

आपके किसी मित्र को रुचिकर लगे, अगर बैंड में कोई हो।" एम. डी चार्लस की धृष्टता को जानते हुए, मैं इस बात से चकित था कि उन्होंने अपने युवा मित्र को हालचाल तक नहीं कहा। हालाँकि, बैरन ने मुझे सोचने का समय नहीं दिया। अत्यंत मित्रतापूर्ण ढंग से हाथ बढ़ाते हुए उन्होंने कहा, "अलविदा, मेरे प्रिय मित्र," मानो यह संकेत दे रहे हों कि मैं अब उन्हें छोड़कर जा सकता हूँ। संयोगवश, मैंने अपनी प्रिय अल्बर्टीन को बहुत देर तक अकेला छोड़ दिया था। गाड़ी में चढ़ते हुए मैंने उनसे कहा, "जानती हो, समुद्र किनारे का जीवन और यात्रा मुझे यह एहसास दिलाते हैं कि दुनिया के रंगमंच में अभिनेताओं से कम मंच हैं, और स्थितियों से कम अभिनेता हैं।" "ऐसा क्यों कह रहे हो?" "क्योंकि एम. डी चार्लस ने अभी-अभी मुझे अपने एक मित्र को लाने के लिए कहा था, जिसे मैंने अभी-अभी इसी स्टेशन के प्लेटफार्म पर अपने ही एक मित्र के रूप में पहचाना है।" लेकिन जैसे ही मैंने ये शब्द कहे, मैं सोचने लगा कि बैरन ने उस सामाजिक खाई को कैसे पाटा होगा जिसके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था। सबसे पहले मेरे मन में यह विचार आया कि शायद यह जुपियन के माध्यम से हुआ हो, जिसकी भतीजी, जैसा कि पाठक को याद होगा, वायलिन वादक के प्रति विशेष लगाव दिखाती थी। मुझे सबसे ज़्यादा हैरानी इस बात पर हुई कि पाँच मिनट में पेरिस जाने वाले बैरन ने संगीतमय संध्या का अनुरोध क्यों किया। लेकिन, जुपियन की भतीजी की छवि को फिर से याद करते हुए, मुझे एहसास होने लगा कि जीवन में 'पहचान' वाकई एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, तभी अचानक सच्चाई मेरे दिमाग में कौंध गई और मुझे एहसास हुआ कि मैं कितनी भोली थी। एम. डी चार्लस ने अपने जीवन में कभी मोरेल को नहीं देखा था, न ही मोरेल ने एम. डी चार्लस को। एम. डी चार्लस, एक योद्धा को देखकर चकित और भयभीत दोनों थे, हालाँकि उनके पास वीणा के अलावा कोई हथियार नहीं था, फिर भी उन्होंने भावुक होकर मुझे उस व्यक्ति को लाने के लिए कहा जिसके बारे में उन्हें ज़रा भी संदेह नहीं था कि मैं उसे पहले से जानती हूँ। खैर, पाँच सौ फ्रैंक की पेशकश ने मोरेल को किसी भी पूर्व संबंध की कमी को पूरा कर दिया होगा, क्योंकि मैंने देखा कि वे बिना यह सोचे समझे कि वे हमारी ट्राम के बिल्कुल पास खड़े हैं, बातें करते रहे। जब मुझे वह तरीका याद आया जिससे एम. डी चार्लस मोरेल और मेरे पास आए थे, तो मुझे तुरंत उनके कुछ रिश्तेदारों से समानता दिखाई दी, जब वे सड़क पर किसी महिला को उठा ले जाते थे। बस फर्क इतना था कि जिस महिला को वे चाहते थे, उसका लिंग

बदल गया था। एक निश्चित उम्र के बाद, और भले ही हममें अलग-अलग विकास होते रहें, हम जितना अधिक अपने आप को पहचानते हैं, हमारी विशिष्ट विशेषताएं उतनी ही अधिक निखरती हैं। प्रकृति, अपनी रचना को सामंजस्यपूर्ण ढंग से संवारते हुए, उसमें समाहित विभिन्न आकृतियों के कारण रचना की एकरसता को तोड़ देती है। इसके अलावा, जिस अहंकार के साथ एम. डी चार्लस ने वायलिन वादक से बात की थी, वह सापेक्ष है और देखने के नजरिए पर निर्भर करता है। समाज के उन चार में से तीन पुरुषों ने, जिन्होंने उनके सामने सिर हिलाया था, इसे पहचान लिया होगा, न कि उस पुलिस प्रमुख ने, जिसे कुछ साल बाद उन पर नजर रखनी थी।

"पेरिस ट्रेन का सिग्नल आ गया है, महोदय," सामान ढो रहे कुली ने कहा। "लेकिन मैं ट्रेन से नहीं जा रहा, इसे क्लॉकरूम में रख दो, धिक्कार है तुम पर!" एम. डी चार्लस ने कुली को बीस फ्रैंक देते हुए कहा, योजना में हुए बदलाव से वे आश्चर्यचकित थे और टिप पाकर प्रसन्न भी हुए। उनकी इस उदारता ने तुरंत एक फूल बेचने वाली को आकर्षित किया। "ये कार्नेशन खरीद लीजिए, देखिए, ये सुंदर गुलाब, महोदय, यह आपके लिए सौभाग्य लाएगा।" एम. डी चार्लस ने धैर्य खोते हुए उसे कुछ फ्रैंक दिए, जिसके बदले में महिला ने उन्हें आशीर्वाद और अपने फूल भी दे दिए। "हे भगवान, ये हमें अकेला क्यों नहीं छोड़ सकती," एम. डी चार्लस ने व्यंग्यपूर्ण और शिकायत भरे लहजे में मोरेल से कहा, मानो कोई व्याकुल व्यक्ति हो, जिससे विनती करने में उन्हें कुछ सांत्वना मिली। "हमारे पास पहले से ही बात करने के लिए बहुत कुछ है।" शायद कुली अभी तक सुनने की सीमा से बाहर नहीं गया था, शायद एम. डी चार्लस बहुत अधिक श्रोताओं को नहीं देखना चाहते थे, शायद इन आकस्मिक टिप्पणियों ने उनकी उच्च संकोच को मुलाकात के अनुरोध को सीधे तौर पर न कहने में सक्षम बनाया। संगीतकार ने फूल बेचने वाली की ओर स्पष्ट, आदेशात्मक और दृढ़ स्वर में मुड़कर हाथ उठाया, जिससे वह पीछे हट गई और उसे संकेत दिया कि उन्हें उसके फूल नहीं चाहिए और वह जितनी जल्दी हो सके उनके रास्ते से हट जाए। एम. डी चार्लस ने इस अधिकारपूर्ण, पौरुषपूर्ण हावभाव को उत्साह से देखा, जो उस सुंदर हाथ से किया गया था जिसके लिए यह अभी भी बहुत भारी, बहुत क्रूर होना चाहिए था, एक ऐसी परिपक्वतापूर्ण दृढ़ता और लचीलेपन के साथ जिसने इस अभी तक दाढ़ीविहीन किशोर को एक युवा डेविड का आभास दिया जो गोलियत

के खिलाफ युद्ध छेड़ने में सक्षम था। बैरन की प्रशंसा अनजाने में उस मुस्कान में घुलमिल गई जिससे हम एक बच्चे में उसकी उम्र से परे गंभीरता का भाव देखते हैं। "यह वह व्यक्ति है जिसे मैं अपनी यात्राओं में अपने साथ ले जाना चाहूंगा और जो मेरे व्यवसाय में मेरी मदद करे। वह मेरे जीवन को कितना सरल बना देगा," एम. डी चार्लस ने मन ही मन कहा।

पेरिस जाने वाली ट्रेन (जिसमें एम. डी चार्लस नहीं बैठे थे) चल पड़ी। फिर हम, अल्बर्टीन और मैं, अपनी-अपनी ट्रेन में बैठ गए, मुझे पता ही नहीं था कि एम. डी चार्लस और मोरेल का क्या हुआ। "हमें अब कभी झगड़ा नहीं करना चाहिए, मैं आपसे फिर से क्षमा मांगती हूँ," अल्बर्टीन ने सेंट-लूप वाली घटना का जिक्र करते हुए दोहराया। "हमें हमेशा एक-दूसरे के प्रति अच्छा व्यवहार करना चाहिए," उसने प्यार से कहा। "जहाँ तक आपके दोस्त सेंट-लूप की बात है, अगर आपको लगता है कि मुझे उसमें ज़रा भी दिलचस्पी है, तो आप बिलकुल गलत हैं। मुझे उसके बारे में बस यही अच्छा लगता है कि वह आपको बहुत पसंद करता है।" "वह बहुत अच्छा इंसान है," मैंने कहा, इस बात का ध्यान रखते हुए कि रॉबर्ट को वे काल्पनिक गुण न दूं जो मैं अल्बर्टीन के अलावा किसी और के साथ होता तो उसकी दोस्ती के लिए ज़रूर गढ़ लेता। "वह एक बेहतरीन इंसान है, स्पष्टवादी, समर्पित, वफादार, ऐसा व्यक्ति जिस पर आप किसी भी काम के लिए भरोसा कर सकते हैं।" यह कहते हुए मैंने अपनी ईर्ष्या को काबू में रखते हुए, सेंट-लूप के बारे में सच ही कहा, लेकिन जो मैंने कहा वह अक्षरशः सच था। मैंने ठीक उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया जो श्रीमती डी विलेपारिसिस ने मुझसे उनके बारे में बात करते समय इस्तेमाल किए थे, जब मैं उन्हें नहीं जानती थी, उन्हें बहुत अलग, बहुत घमंडी समझती थी, और मन ही मन सोचती थी: "लोग उन्हें अच्छा इसलिए समझते हैं क्योंकि वे एक महान सज्जन हैं।" ठीक वैसे ही जैसे जब उन्होंने मुझसे कहा था: "वे बहुत प्रसन्न होंगे," तो होटल के बाहर उन्हें गाड़ी से जाने की तैयारी करते हुए देखकर, मैंने सोचा कि उनकी चाची का भाषण महज़ एक औपचारिकता थी, जो मुझे बहलाने के लिए कही गई थी। और बाद में मुझे एहसास हुआ कि उन्होंने जो कहा था वह ईमानदारी से कहा था, मेरी रुचियों, मेरे पढ़ने-लिखने के बारे में सोचकर, और क्योंकि वे जानती थीं कि सेंट-लूप को यही पसंद था, ठीक वैसे ही जैसे अब मेरी बारी थी कि मैं किसी ऐसे व्यक्ति से ईमानदारी से कहूँ जो उनके पूर्वज ला रोशेफौकॉल्ड, मैक्सिम्स के लेखक, का इतिहास लिख रहा था और रॉबर्ट से उनके बारे में

सलाह लेना चाहता था: "वे बहुत प्रसन्न होंगे।" बात बस इतनी सी थी कि मैं उसे जान चुकी थी। लेकिन, जब मैंने उसे पहली बार देखा था, तो मैंने सोचा भी नहीं था कि मेरे जैसी बुद्धि वाला कोई व्यक्ति इतने सलीकेदार पहनावे और व्यवहार में लिपटा हो सकता है। उसके पंखों को देखकर मैंने उसे किसी और ही प्रजाति का पक्षी समझा था। अब अल्बर्टीन ने, शायद इसलिए कि सेंट-लूप ने मेरे प्रति इतनी दयालुता दिखाते हुए उसके साथ इतना ठंडा व्यवहार किया था, मुझसे वही कहा जो मैं पहले से सोच रही थी: "अरे! वह तो वाकई बहुत समर्पित है! मैंने देखा है कि लोग हमेशा दूसरों में सारे गुण ढूंढते हैं, जब वे फाउबर्ग सेंट-जर्मेन से जुड़े होते हैं।" अब सेंट-लूप का फाउबर्ग सेंट-जर्मेन से जुड़ा होना एक ऐसी बात थी जिसके बारे में मैंने इन सभी वर्षों में कभी सोचा भी नहीं था, जिनमें उसने अपनी प्रतिष्ठा को त्यागकर मुझे अपने गुण दिखाए थे। दूसरों को देखने के हमारे नज़रिए में बदलाव, सामाजिक संबंधों की तुलना में मित्रता में कहीं अधिक स्पष्ट होता है, लेकिन प्रेम में यह बदलाव कहीं अधिक प्रभावशाली होता है, जहाँ इच्छा इतनी व्यापक होती है कि उदासीनता के मामूली संकेत भी इतने दब जाते हैं कि सेंट-लूप ने शुरुआत में जो उदासीनता दिखाई थी, वह उससे कहीं कम थी। पहले तो मुझे लगा कि अल्बर्टीन मेरा तिरस्कार करती है, उसके दोस्तों को मैं अमानवीय समझती हूँ, और एल्स्टिर के उस छोटे समूह के बारे में कहे गए कथन को, जिसमें उसने मुझसे ठीक उसी भावना से कहा था जैसे मैडम डी विलेपारिसिस ने सेंट-लूप के बारे में कहा था, "वे अच्छी लड़कियाँ हैं," मैंने केवल सुंदरता और एक विशेष प्रकार की शालीनता के प्रति लोगों के लगाव का नतीजा समझा। लेकिन जब मैंने अल्बर्टीन को यह कहते सुना, "चाहे वह समर्पित हो या न हो, मैं दिल से आशा करती हूँ कि मैं उसे फिर कभी न देखूँ, क्योंकि उसने हमें झगड़ा करवाया है। हमें फिर कभी झगड़ा नहीं करना चाहिए। यह अच्छा नहीं है," तो यह राय मेरे मन में स्वाभाविक रूप से नहीं बनती। चूंकि उसने सेंट-लूप की चाहत दिखाई थी, इसलिए मुझे लगा कि कुछ समय के लिए यह धारणा दूर हो गई है कि वह महिलाओं की परवाह करती है, जिसे मैं कभी दूर न होने वाला मानता था। और, अल्बर्टीन के रेनकोट को देखकर, जिसमें वह मानो कोई और ही इंसान बन गई थी, बरसात के दिनों की अथक घुमक्कड़, और जो चुस्त-दुरुस्त, लचीला और धूसर रंग का था, उस क्षण ऐसा लग रहा था मानो उसके कपड़ों को बारिश से बचाने के बजाय वह खुद ही भीग गया हो और मेरी प्रेमिका के शरीर से ऐसे चिपका हो जैसे

किसी मूर्तिकार के लिए उसकी आकृति की छाप ले रहा हो, मैंने उस रेनकोट को फाड़ दिया जो मेरे सीने को ईर्ष्या से थामे हुए था, और अल्बर्टीन को अपनी ओर खींचते हुए कहा: "लेकिन क्या तुम, आलसी यात्री, मेरे कंधे पर सिर रखकर सपने नहीं देखोगी, अपना माथा उस पर टिकाकर?" मैंने उसका सिर अपने हाथों में लेकर कहा, और उसे विशाल, पानी से भरे और शांत मैदान दिखाए, जो ढलती शाम में दूर नीली घाटियों के समानांतर खुले स्थानों से घिरे क्षितिज तक फैले हुए थे।

दो दिन बाद, उस मशहूर बुधवार को, उसी छोटी ट्रेन में, जिसे मैंने बालबेक से ला रास्पेलियर में भोजन करने के लिए फिर से लिया था, मैं ग्रेनकोर्ट-सेंट-वास्ट में कॉटार्ड को न चूकने का पूरा ध्यान रख रहा था, जहाँ श्रीमती वर्दुरिन के दूसरे टेलीफोन संदेश में मुझे बताया गया था कि मुझे उन्हें वहीं मिलना चाहिए। उन्हें मेरी ट्रेन में चढ़ना था और मुझे बताना था कि हमें कहाँ उतरना है ताकि हम उन डिब्बों को पकड़ सकें जो ला रास्पेलियर से स्टेशन के लिए भेजे जाएँगे। और इसलिए, जैसे ही छोटी ट्रेन डोनसिएरेस के बाद पहले स्टेशन ग्रेनकोर्ट पर मुश्किल से एक पल के लिए रुकी, मैं खुली खिड़की पर तैयार खड़ा था, क्योंकि मुझे डर था कि मैं कॉटार्ड को नहीं देख पाऊँगा या वह मुझे नहीं देख पाएँगे। व्यर्थ का डर! मुझे इस बात का एहसास नहीं था कि उस छोटे से समूह ने अपने सभी नियमित सदस्यों को किस हद तक एक ही प्रकार में ढाल लिया था। वे, शाम की पोशाक में सजे-धजे प्लेटफार्म पर इंतज़ार करते हुए, अपने आत्मविश्वास, फैशन और आत्मीयता के भाव से तुरंत पहचाने जाने लगे। उनकी आँखों में एक ऐसी चमक थी जो मानो किसी खाली जगह को छान रही हो, जहाँ उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए कुछ भी न हो, और आम लोगों की कतारों को भी भेद रही हो। वे किसी ऐसे साथी के आने का इंतज़ार कर रहे थे जो पहले के स्टेशन से ट्रेन में सवार हुआ हो, और आने वाली बातचीत की उम्मीद में उनकी आँखें चमक रही थीं। साथ में भोजन करने की आदत से उस छोटे समूह के सदस्यों में जो पहचान बन गई थी, वह उनकी एकमात्र विशेषता नहीं थी; जब वे बड़ी संख्या में, पूरी ताकत से, एक साथ जमा होते थे, तो यात्रियों की भीड़ के बीच एक और भी चमकीला हिस्सा बनाते थे—जिसे ब्रिचोट ने पेकुस कहा था—जिनके सुस्त चेहरों पर वर्दुरिन नाम का कोई अर्थ नहीं दिखता था, न ही ला रास्पेलियर में भोजन करने की कोई उम्मीद। सच कहूँ तो, इन आम यात्रियों को मुझसे कम दिलचस्पी होती अगर कोई उनके

सामने—उनमें से कई लोगों की ख्याति के बावजूद—उन विश्वासियों के नाम लेता जिन्हें बाहर खाना खाते देखकर मैं हैरान था, जबकि उनमें से कई तो मेरे जन्म से पहले से ही ऐसा करते आ रहे थे, उन कहानियों के अनुसार जो मैंने सुनी थीं, उस समय से जो इतना दूर और अस्पष्ट था कि मुझे उसकी दूरी को बढ़ा-चढ़ाकर बताने का मन करता था। उनके अस्तित्व की निरंतरता, बल्कि उनकी शक्तियों की पूर्णता, और उन कई मित्रों के अंत के बीच का अंतर जिन्हें मैंने पहले ही कहीं न कहीं देखा था, मुझे वही भावना देता है जो हमें तब महसूस होती है जब हम अखबारों के ब्रेकिंग न्यूज़ कॉलम में वह खबर पढ़ते हैं जिसकी हमें बिल्कुल उम्मीद नहीं होती, उदाहरण के लिए किसी असमय मृत्यु की, जो हमें आकस्मिक लगती है क्योंकि उसके कारण हमारी जानकारी से परे होते हैं। यह वह अनुभूति है कि मृत्यु सभी मनुष्यों पर एक समान नहीं आती, बल्कि उसकी त्रासदी की एक तीव्र लहर उन लोगों को भी बहा ले जाती है जिन्हें अन्य लोगों के समान ही महत्व दिया जाता है, जबकि आने वाली लहरें उन्हें लंबे समय तक बख्शती रहती हैं। हम आगे देखेंगे कि मृत्यु के विभिन्न रूप जो अदृश्य रूप से व्याप्त हैं, समाचार पत्रों में प्रकाशित शोक संदेशों की विचित्र अप्रत्याशितता का कारण हैं। तब मैंने देखा कि समय बीतने के साथ-साथ न केवल सामान्य बातचीत में भी छिपी हुई वास्तविक प्रतिभाएं प्रकट होती हैं और अपना प्रभाव जमाती हैं, बल्कि साधारण व्यक्ति भी उन उच्च पदों तक पहुँच जाते हैं, जो हमारे बचपन की कल्पना में कुछ प्रसिद्ध बुजुर्गों से जुड़े होते हैं, जबकि हमें कभी यह कल्पना भी नहीं थी कि कुछ वर्षों बाद उनके शिष्य, गुरु बनकर, स्वयं भी प्रसिद्ध होंगे और वही सम्मान और श्रद्धा प्राप्त करेंगे जो कभी उन्होंने स्वयं महसूस की थी। परन्तु यदि विश्वासियों के नाम दृष्टि से अज्ञात थे, तब भी उनका स्वरूप ही उन्हें दृष्टि में विशिष्ट बना देता था। दरअसल, ट्रेन में (जब दिन भर में उनमें से कोई न कोई क्या कर रहा होगा, इस संयोग से वे सब एक साथ इकट्ठा हो गए थे), अगले स्टेशन पर केवल एक अकेले सदस्य को लेने के लिए, जिस डिब्बे में वे सब इकट्ठा हुए थे, मूर्तिकार स्की की कोहनी से टिकट लगा हुआ था, कॉटार्ड के टेम्प्स का झंडा लगा हुआ था, वह दूर से ही एक खास सैलून की तरह अलग दिख रहा था, और तय स्टेशन पर देर से आए साथी का स्वागत कर रहा था। केवल ब्रिचोट ही अपनी आंशिक दृष्टिहीनता के कारण इन स्वागत संकेतों को शायद ही समझ पाया होगा। लेकिन दल में से कोई न कोई हमेशा उस अंधे व्यक्ति पर नज़र रखने के लिए आगे आता था, और जैसे ही

उसकी भूसे की टोपी, हरी छतरी और नीले चश्मे नज़र आते, उसे धीरे से लेकिन जल्दी से चुने हुए डिब्बे की ओर ले जाया जाता था। इसलिए यह अकल्पनीय था कि वफादारों में से कोई भी, उसके 'अकेले' होने या 'ट्रेन से न आने' के गंभीर संदेह पैदा किए बिना, यात्रा के दौरान दूसरों को न ले जाए। कभी-कभी इसके विपरीत प्रक्रिया भी घटित होती थी: दोपहर के समय किसी श्रद्धालु को ट्रेन में कुछ दूर जाना पड़ता था और परिणामस्वरूप उसे समूह में शामिल होने से पहले कुछ दूरी अकेले तय करनी पड़ती थी; लेकिन इस प्रकार अलग-थलग होने पर भी, वह आमतौर पर एक निश्चित प्रभाव उत्पन्न करने में सफल रहता था। जिस भविष्य की ओर वह यात्रा कर रहा होता था, वह उसे सामने वाली सीट पर बैठे व्यक्ति के लिए एक पहचान बना देता था, जो मन ही मन कहता था: "यह कोई खास व्यक्ति होगा," कॉटार्ड या मूर्तिकार स्की की मुलायम टोपी के चारों ओर एक धुंधली आभा देख लेता था और अगले स्टेशन पर जब एक सजी-धजी भीड़ (यदि वह उनका अंतिम पड़ाव होता) उस श्रद्धालु का गाड़ी के दरवाजे पर स्वागत करती और उसे प्रतीक्षा कर रही गाड़ियों में से एक तक ले जाती, तो वह केवल आधा ही आश्चर्यचकित होता था, उन सभी का डौविल स्टेशन के सहायक द्वारा आदरपूर्वक अभिवादन किया जाता था, या यदि वह कोई मध्यवर्ती स्टेशन होता, तो वे डिब्बे में प्रवेश कर जाते थे। यही किया गया, और वह भी जल्दबाजी में, क्योंकि उनमें से कुछ देर से पहुँचे थे। स्टेशन पर पहले से खड़ी ट्रेन के चलने ही वाली थी कि कॉटार्ड के नेतृत्व में आए दल ने दौड़ते हुए उस डिब्बे की ओर कूच किया जिसकी खिड़की से उसने मुझे इशारा करते देखा था। ब्रिचोट, जो इन वफादारों में से एक था, इन वर्षों में पहले से कहीं अधिक वफादार हो गया था, जबकि दूसरों की निष्ठा कम हो गई थी। जैसे-जैसे उसकी दृष्टि लगातार कमजोर होती गई, उसे पेरिस में भी, रात के बाद अपने काम के घंटे कम करने पड़े। इसके अलावा, वह आधुनिक सोरबोन विश्वविद्यालय से सहमत नहीं था, जहाँ जर्मन मॉडल पर आधारित वैज्ञानिक सटीकता के विचार मानवतावाद पर हावी होने लगे थे। अब वह पूरी तरह से अपने व्याख्यानों और परीक्षक के रूप में अपने कर्तव्यों तक ही सीमित था; और इस प्रकार उसके पास सामाजिक गतिविधियों के लिए बहुत अधिक समय था। यानी, वर्दुरिन के घर शामें बिताना, या उन पार्टियों में शामिल होना जो कभी-कभी भावुक वफादारों में से कोई एक वर्दुरिन को देता था। यह सच है कि दो मौकों पर प्रेम लगभग वह हासिल करने में कामयाब हो गया था जो

उसका काम अब नहीं कर पा रहा था, यानी ब्रिचोट को उस छोटे से समूह से अलग करने में। लेकिन श्रीमती वर्दुरिन, जो हमेशा सतर्क रहती थीं और अपने सैलून के हित में इस तरह के नाटक और क्रियान्वयन में निस्वार्थ आनंद लेने लगी थीं, ने तुरंत ब्रिचोट और उस खतरनाक व्यक्ति के बीच दूरी पैदा कर दी, क्योंकि वह (जैसा कि उन्होंने कहा) 'चीजों को व्यवस्थित करने' और 'जख्म पर गर्म लोहे से नमक छिड़कने' में माहिर थीं। यह काम उन्होंने उस खतरनाक व्यक्ति के मामले में और भी आसान पाया, जो ब्रिचोट की धोबिन थी। श्रीमती वर्दुरिन, जिन्हें प्रोफेसर के पांचवीं मंजिल के कमरों में प्रवेश करने का अधिकार था, जब भी सीढ़ियाँ चढ़ने की जहमत उठातीं, तो क्रोध से लाल हो जातीं और उस अभागी औरत के मुँह पर दरवाजा बंद कर देतीं। "क्या!" मालकिन ने ब्रिचोट से कहा, "मुझ जैसी औरत आपको अपने यहाँ आने का सम्मान देती है, और आप उस जैसी औरत का स्वागत करते हैं?" ब्रिचोट श्रीमती वर्दुरिन की उस सेवा को कभी नहीं भूले थे, जिन्होंने बुढ़ापे में उन्हें दलदल में धंसने से बचाया था, और वे उनके प्रति और भी अधिक आसक्त होते चले गए। वहीं, इस स्नेह के पुनरुत्थान के विपरीत, और शायद इसी कारण से, श्रीमती वर्दुरिन एक अति आज्ञाकारी अनुयायी और उस आज्ञाकारिता से ऊबने लगी थीं, जिसके बारे में वे पहले से ही आश्वस्त हो सकती थीं। लेकिन वर्दुरिन परिवार के साथ घनिष्ठता से ब्रिचोट को एक ऐसी विशिष्टता प्राप्त हुई जिसने उन्हें सोरबोन विश्वविद्यालय में उनके सभी सहकर्मियों से अलग कर दिया। वे उन विवरणों से चकित थे जो उन्होंने उन्हें उन रात्रिभोज पार्टियों के बारे में बताए जिनमें उन्हें कभी आमंत्रित नहीं किया जाएगा, समीक्षाओं में उनके उल्लेख से, सैलून में उनके चित्र की प्रदर्शनी से, किसी प्रतिष्ठित लेखक या चित्रकार द्वारा, जिनकी प्रतिभा को कला संकाय के अन्य पदों पर आसीन लोग तो सराहते थे, लेकिन उनकी ओर ध्यान आकर्षित करने की कोई संभावना नहीं थी, और उस साधारण दार्शनिक के परिधान की भव्यता से भी। यह भव्यता उन्होंने पहले तो लापरवाही समझ ली थी, जब तक कि उनके सहकर्मी ने उन्हें विनम्रतापूर्वक समझाया कि लंबी टोपी स्वाभाविक रूप से किसी से मिलने जाते समय ज़मीन पर रखी जाती है, और यह ग्रामीण इलाकों में होने वाले रात्रिभोज के लिए उपयुक्त नहीं है, चाहे वह कितना भी शानदार क्यों न हो, जहाँ इसे एक नरम टोपी से बदल देना चाहिए, जो डिनर जैकेट के साथ बिल्कुल सही लगती है। छोटे समूह के गाड़ी में बैठने के बाद पहले कुछ क्षणों तक मैं कॉटार्ड से बात

भी नहीं कर सका, क्योंकि वह घुटन महसूस कर रहा था, ट्रेन छूटने से बचने के लिए दौड़ने से नहीं, बल्कि ट्रेन को ठीक समय पर पकड़ने पर आश्चर्य से। उन्हें सफलता की स्वाभाविक खुशी से कहीं अधिक आनंद आ रहा था, मानो किसी बेहतरीन चुटकुले पर हंसी आ रही हो। "आह! वाह! क्या मज़ाक था!" उन्होंने संभलकर कहा। "एक मिनट बाद! कसम से, इसे कहते हैं सही समय पर पहुंचना!" उन्होंने आंख मारते हुए कहा, उनका इरादा यह पूछना नहीं था कि यह अभिव्यक्ति सही है या नहीं, क्योंकि वे अब आत्मविश्वास से भरे हुए थे, बल्कि अपनी संतुष्टि व्यक्त करना था। आखिरकार वे मुझे अपने छोटे से समूह के अन्य सदस्यों से मिलवाने में सफल रहे। मुझे यह देखकर झुंझलाहट हुई कि वे लगभग सभी ऐसे कपड़े पहने हुए थे जिन्हें पेरिस में 'स्मोकिंग' कहा जाता है। मैं भूल गया था कि वर्दुरिन परिवार धीरे-धीरे फैशनेबल तौर-तरीकों की ओर बढ़ रहा था, जो ड्रेफस मामले से धीमा पड़ गया था, 'नए' संगीत से तेज हो गया था, एक ऐसा विकास जिसे वे स्वयं नकारते रहे और तब तक नकारते रहे जब तक वह पूरा नहीं हो गया, ठीक वैसे ही जैसे कोई सेनापति अपने सैन्य लक्ष्यों की घोषणा तब तक नहीं करता जब तक वह उन्हें प्राप्त नहीं कर लेता, ताकि असफल होने पर हारा हुआ न दिखे। इसके अलावा, समाज भी उनका साथ देने के लिए आधा-अधूरा ही तैयार था। बात यहाँ तक पहुँच गई थी कि उन्हें ऐसे लोग माना जाता था जिनके घर समाज का कोई भी व्यक्ति नहीं जाता था, लेकिन उन्हें इस बात से ज़रा भी फ़र्क नहीं पड़ता था। वर्दुरिन सैलून को संगीत का मंदिर माना जाता था। लोग आपको बताते थे कि वहीं विंटेइल को प्रेरणा और प्रोत्साहन मिला था। अब, भले ही विंटेइल की सोनाटा पूरी तरह से उपेक्षित और लगभग अज्ञात रही हो, आधुनिक संगीतकारों में सबसे महान माने जाने वाले उनके नाम का असाधारण प्रभाव था। इसके अलावा, फ़ॉबूर्ग के कुछ युवकों ने यह तय किया कि उन्हें मध्यम वर्ग से अधिक बुद्धिमान होना चाहिए, उनमें से तीन ने संगीत का अध्ययन किया था, और उनमें विंटेइल की सोनाटा बहुत लोकप्रिय थी। घर लौटने पर वे अपनी उन बुद्धिमान माताओं से इसके बारे में बात करते थे जिन्होंने उन्हें संगीत सीखने के लिए प्रेरित किया था। और, अपने बेटों की रुचियों में दिलचस्पी लेते हुए, संगीत समारोहों में ये माताएँ श्रीमती वर्दुरिन को उनके सामने वाले बॉक्स में छपे हुए स्कोर में संगीत सुनते हुए सम्मानपूर्वक देखती थीं। अब तक, वर्दुरिन परिवार की यह सामाजिक सफलता केवल दो बातों से ही ज़ाहिर होती थी। पहली बात तो यह कि

श्रीमती वर्दुरिन, प्रिंसेसा डी कैप्रारोला के बारे में कहती थीं: "आह! वह बुद्धिमान हैं, वह एक आकर्षक महिला हैं। लेकिन मैं मूर्खों को बर्दाश्त नहीं कर सकती, वे लोग जो मुझे परेशान करते हैं, वे मुझे पागल कर देते हैं।" इससे किसी भी समझदार व्यक्ति को यह समझ आ जाता कि प्रिंसेसा डी कैप्रारोला, जो उच्च समाज में विचरण करती थीं, श्रीमती वर्दुरिन से मिलने आई थीं। उन्होंने श्रीमती स्वान के पति की मृत्यु के बाद शोक व्यक्त करने के दौरान उनका नाम भी लिया था और पूछा था कि क्या वह उन्हें जानती हैं। "आपने कौन सा नाम लिया?" ओडेट ने अचानक उदासी से पूछा। "वरदुरिन? ओह, हाँ, बिल्कुल," उसने उदास स्वर में कहा, "मैं उन्हें नहीं जानती, या यूँ कहूँ कि मैं उन्हें बिना जाने ही जानती हूँ, वे ऐसे लोग हैं जिनसे मैं सालों पहले लोगों के घरों में मिलती थी, वे काफी अच्छे लोग हैं।" जब प्रिंसेसा डि कैप्रारोला चली गईं, तो ओडेट ने साफ-साफ सच बोल देना चाहा। लेकिन यह तुरंत बोला गया झूठ उसकी सोची-समझी रणनीति का नतीजा नहीं था, बल्कि उसके डर और इच्छाओं का खुलासा था। उसने उस बात से इनकार नहीं किया जिससे इनकार करना समझदारी होती, बल्कि उस बात से इनकार किया जो वह नहीं चाहती थी कि हो, भले ही दूसरे व्यक्ति को एक घंटे बाद यह बात पता चल ही जाए। थोड़ी देर बाद उसने अपना आत्मविश्वास वापस पा लिया, और सवालों से बचने के लिए उसने पहले ही कहा, ताकि वह डरी हुई न लगे: "मैडम वरदुरिन, अरे, मैं उन्हें बहुत अच्छी तरह जानती थी!" विनम्रता का दिखावा करते हुए, जैसे कोई बड़ी महिला आपको बताती है कि उसने ट्राम ली है। "हाल ही में वर्दुरिन परिवार के बारे में बहुत चर्चा हो रही है," श्रीमती डी सोव्रे ने कहा। ओडेट ने एक डचेस की मुस्कुराती हुई तिरस्कारपूर्ण मुस्कान के साथ उत्तर दिया: "हाँ, मैंने भी हाल ही में उनके बारे में बहुत कुछ सुना है। समाज में कभी-कभी ऐसे ही नए लोग आते रहते हैं," यह जताए बिना कि वह स्वयं भी उनमें से एक थीं। "प्रिंसेसा डी कैप्रारोला ने वहाँ भोजन किया था," श्रीमती डी सोव्रे ने आगे कहा। "आह!" ओडेट ने अपनी मुस्कान बढ़ाते हुए उत्तर दिया, "इसमें मुझे कोई आश्चर्य नहीं है। इस तरह की चीजें हमेशा प्रिंसेसा डी कैप्रारोला से शुरू होती हैं, और फिर कोई और उनका अनुसरण करता है, जैसे कि कॉम्टेस मोले।" यह कहते हुए, ओडेट उन दो महान महिलाओं के प्रति गहरी अवमानना से भरी हुई प्रतीत हुईं, जिन्होंने हाल ही में बने ड्राइंग रूम में 'गृह प्रवेश' की आदत बना ली थी। उनके लहजे से ऐसा लगा कि उनका तात्पर्य यह था कि वह, ओडेट, श्रीमती डी

सोव्रे की तरह ही... डी सौव्रे उस तरह की शख्सियत नहीं थीं जो खुद को इस तरह की चीजों में शामिल होने देतीं।

श्रीमती वर्दुरिन द्वारा प्रिंसेसा डी कैप्रारोला की बुद्धिमत्ता को स्वीकार करने के बाद, दूसरा संकेत जिससे पता चलता है कि वर्दुरिन परिवार अपने भविष्य के प्रति सचेत था, वह यह था कि (बिना औपचारिक अनुरोध के) वे इस बात को लेकर बेहद चिंतित हो गए कि अब लोग उनके साथ शाम के भोजन के लिए पारंपरिक पोशाक में आएं। श्री वर्दुरिन का अब उनके भतीजे, जो 'गाड़ी में' थे, द्वारा बिना किसी झिझक के स्वागत किया जा सकता था। ग्रेनकोर्ट में मेरी गाड़ी में सवार होने वालों में सैनियेट भी थे, जिन्हें बहुत पहले उनके चचेरे भाई फोर्शेविल ने वर्दुरिन परिवार से निकाल दिया था, लेकिन बाद में वे वापस लौट आए थे। सामाजिक दृष्टि से, उनकी कमियां - उनके उत्कृष्ट गुणों के बावजूद - मूल रूप से कॉटार्ड जैसी थीं, जैसे शर्म, दूसरों को खुश करने की चाहत और इसमें असफल प्रयास। लेकिन अगर जीवन के क्रम ने कॉटार्ड को, अगर वर्दुरिन्स के यहाँ नहीं तो, जहाँ अतीत की यादों के प्रभाव के कारण वह परिचित परिवेश में होने पर कमोबेश एक जैसा ही रहा, कम से कम अपने व्यवहार में, अपने अस्पताल के वार्ड में, चिकित्सा अकादमी में, शीतलता, तिरस्कार और गंभीरता का एक आवरण धारण करने के लिए मजबूर किया, जो तब और भी बढ़ गया जब उसने अपने प्रशंसक छात्रों को चुटकुलों से पुरस्कृत किया, तो पुराने कॉटार्ड और नए कॉटार्ड के बीच एक स्पष्ट विभाजन कर दिया, तो इसके विपरीत वही दोष सैनियेट में और भी बढ़ गए, जितना अधिक उसने उन्हें सुधारने का प्रयास किया। यह जानते हुए कि वह अक्सर उबाऊ होते थे, कि लोग उनकी बात नहीं सुनते थे, कॉटार्ड की तरह अपनी गति धीमी करने या अधिकारपूर्ण लहजे से उनका ध्यान आकर्षित करने के बजाय, उन्होंने न केवल हास्यपूर्ण लहजा अपनाकर लोगों को अपनी बातचीत के अत्यधिक गंभीर स्वरूप को माफ करने के लिए मनाने की कोशिश की, बल्कि उन्होंने अपनी गति बढ़ा दी, स्पष्ट रूप से बात करने लगे, संक्षिप्त शब्दों का प्रयोग किया ताकि वे कम शब्दों में बात करें और अपने विषय से अधिक परिचित प्रतीत हों, लेकिन वे केवल इतना ही सफल हुए कि उनकी बातें समझ से परे हो गईं और अंतहीन लगने लगीं। उनका आत्मविश्वास कॉटार्ड जैसा नहीं था, जो उनके रोगियों को स्तब्ध कर देता था, जो अन्य लोगों द्वारा उनके सामाजिक शिष्टाचार की प्रशंसा किए जाने पर उत्तर देते थे:

"जब वह आपको अपने परामर्श कक्ष में मिलते हैं तो वह एक अलग ही व्यक्ति होते हैं, आपका चेहरा प्रकाश की ओर होता है और उनकी पीठ प्रकाश की ओर, और उनकी भेदक आँखें।" इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा, ऐसा लगा जैसे यह अत्यधिक शर्म को छुपा रहा हो, जिसे दूर करने के लिए एक छोटी सी बात ही काफी होगी। सैनीएट, जिनके दोस्त हमेशा उन्हें आत्मविश्वास की कमी का ताना मारते थे, और जिन्होंने वास्तव में ऐसे लोगों को देखा था जिन्हें वे अपने से कहीं कमतर समझते थे, आसानी से वो सफलता हासिल कर लेते थे जो उन्हें नहीं मिल पाई थी, अपनी कोई भी कहानी सुनाना शुरू करने से पहले उसकी हास्यप्रदता पर मुस्कुराए बिना नहीं रहते थे, इस डर से कि कहीं उनका गंभीर रवैया सुनने वालों को उनकी बातों का महत्व कम न समझ दे। कभी-कभी, उनकी कही जाने वाली बातों में हास्य तत्व को समझकर, लोग उन्हें सम्मान देने के लिए चुप हो जाते थे। लेकिन कहानी बेअसर हो जाती थी। एक दयालु साथी अतिथि कभी-कभी सैनीएट को निजी तौर पर, लगभग गुप्त रूप से, बिना किसी का ध्यान खींचे, एक मुस्कान के साथ प्रोत्साहन देते थे, जैसे कोई एक हाथ से दूसरे हाथ में नोट पास करता है। लेकिन कोई भी इतनी हिम्मत नहीं करता था कि खुलकर हंसने की जिम्मेदारी उठाए, सबके सामने आने का जोखिम उठाए। कहानी समाप्त होने और बेअसर हो जाने के बहुत समय बाद भी, सानियेट उदास होकर खुद ही मुस्कुराता रहता, मानो कहानी का आनंद ले रहा हो और उस आनंद को महसूस कर रहा हो जिसे वह पर्याप्त समझता था और जिसे दूसरों ने महसूस नहीं किया था। जहाँ तक मूर्तिकार स्की की बात है, जिसे उसके पोलिश उपनाम के उच्चारण में कठिनाई के कारण यह नाम दिया गया था, और क्योंकि वह खुद एक विशेष सामाजिक दायरे में आने के बाद से कुछ सम्मानित लेकिन थोड़े उबाऊ और बहुत सारे रिश्तेदारों के साथ भ्रमित न होने का दिखावा करता था, चौवालीस वर्ष की आयु में और अच्छे दिखने का कोई दिखावा न करते हुए, उसमें एक प्रकार का बचकानापन, एक स्वप्निल उदासी थी, जो इस बात का परिणाम थी कि वह दस वर्ष की आयु तक कल्पना से परे सबसे आकर्षक खर्चीला लड़का था, सभी महिलाओं का चहेता। श्रीमती वर्दुरिन का मानना था कि वह एल्स्टिर से कहीं अधिक कलाकार था। हालाँकि, उनके बीच जो भी समानता थी, वह केवल बाहरी थी। एल्स्टिर, जो स्की से एक बार मिल चुका था, उसके लिए यह काफी था कि उसे स्की से वैसी ही गहरी घृणा महसूस हो, जैसी हमें अपने ठीक विपरीत लोगों से नहीं, बल्कि

उन लोगों से होती है जो हमारी सबसे बुरी विशेषताओं को दर्शाते हैं, जिन्हें हमने खुद ठीक कर लिया है, और जो हमें यह याद दिलाकर चिढ़ाते हैं कि हम कुछ अन्य लोगों के सामने कैसे दिखते थे, इससे पहले कि हम वह बनें जो हम आज हैं। लेकिन श्रीमती वर्दुरिन का मानना था कि स्की में एल्स्टिर से कहीं अधिक स्वभाव था क्योंकि ऐसी कोई कला नहीं थी जिसमें वह अभिव्यक्ति की निपुणता न रखता हो, और उन्हें पूरा विश्वास था कि अगर वह इतना आलसी न होता तो वह अपनी इस निपुणता को प्रतिभा में बदल लेता। मालकिन को यह वास्तव में एक अतिरिक्त गुण लगता था, क्योंकि यह कड़ी मेहनत के बिल्कुल विपरीत था, जिसे वह प्रतिभाहीन लोगों का भाग्य मानती थीं। स्की आपसे जो भी बनाने को कहता, वह बना देता, चाहे कफ़लिंक पर हो या दरवाजों के पैनल पर। वह किसी संगीतकार की आवाज़ में गाते थे, पियानो को स्मृति से बजाते थे, जिससे पियानो एक ऑर्केस्ट्रा जैसा प्रभाव पैदा करता था। यह उनकी निपुणता से कम, बल्कि उनके बेस सुरों के उतार-चढ़ाव से ज़्यादा होता था, जो यह दर्शाते थे कि उंगलियां कॉर्नेट के बजने का संकेत देने में असमर्थ हैं, जिसे वे अपने होठों से अनुकरण करते थे। बोलते समय वे शब्दों का चयन इस तरह करते थे कि एक विचित्र प्रभाव उत्पन्न हो, जैसे कि किसी कॉर्ड को बजाने से पहले वे रुककर 'पिंग!' कहते थे ताकि ब्रास वाद्ययंत्रों की आवाज़ सुनाई दे। उन्हें असाधारण रूप से बुद्धिमान माना जाता था, लेकिन वास्तव में उनके विचार दो या तीन तक ही सीमित थे। अपनी सनकीपन की छवि से ऊबकर, उन्होंने खुद को एक व्यावहारिक, यथार्थवादी व्यक्ति साबित करने का ठान लिया था, जिसके कारण वे झूठी सटीकता और झूठे सामान्य ज्ञान का दिखावा करते थे, जो उनकी कमज़ोर स्मृति और हमेशा गलत सूचनाओं के भंडार से और भी बढ़ जाता था। अगर वह नौ साल का होता, सुनहरे घुंघराले बालों, चौड़े फीते वाले कॉलर और लाल चमड़े के छोटे बूटों के साथ, तो उसके सिर, गर्दन और अंगों की हरकतें बेहद सुंदर होतीं। कॉटार्ड और ब्रिचोट के साथ ग्रेनकोर्ट स्टेशन पहुँचने पर, उनके पास समय भी था, इसलिए उन्होंने ब्रिचोट को प्रतीक्षा-कक्ष में छोड़कर टहलने चले गए। जब कॉटार्ड ने वापस लौटने का प्रस्ताव रखा, तो स्की ने जवाब दिया: "लेकिन कोई जल्दी नहीं है। आज लोकल ट्रेन नहीं है, विभागीय ट्रेन है।" कॉटार्ड पर इस सटीक बात के प्रभाव से प्रसन्न होकर, उन्होंने अपने बारे में कहा: "हाँ, क्योंकि स्की को कला से प्यार है, क्योंकि वह मिट्टी के मॉडल बनाता है, इसलिए लोग सोचते हैं कि वह

व्यावहारिक नहीं है। इस क्षेत्र को मुझसे बेहतर कोई नहीं जानता।" फिर भी वे स्टेशन की ओर वापस मुड़ गए, तभी अचानक आती हुई ट्रेन का धुआँ देखकर कॉटार्ड ने ज़ोर से चिल्लाते हुए कहा: "हमें अपनी पूरी ताकत लगानी होगी।" वे सचमुच ठीक समय पर पहुँचे, स्की के अलावा स्थानीय और विभागीय ट्रेनों के बीच का अंतर उनके लिए कभी अस्तित्व में ही नहीं था। "लेकिन क्या राजकुमारी ट्रेन में नहीं हैं?" ब्रिचोट की आवाज़ गूंज उठी, जिनके विशाल चश्मे, जो स्वरयंत्र विशेषज्ञों द्वारा अपने रोगियों के गले में रोशनी डालने के लिए माथे पर लगाए जाने वाले परावर्तकों की तरह चमकदार थे, मानो प्रोफेसर की आँखों से जान निकाल चुके हों, और शायद इसलिए कि वे अपनी दृष्टि को उनसे समायोजित करने का प्रयास कर रहे थे, ऐसा लग रहा था कि वे सबसे मामूली क्षणों में भी निरंतर ध्यान और असाधारण स्थिरता के साथ खुद को निहार रहे हों। ब्रिचोट की बीमारी, जिसने धीरे-धीरे उनकी दृष्टि छीन ली, ने उन्हें उस इंद्रिय की सुंदरता से परिचित कराया, ठीक वैसे ही जैसे अक्सर हमें किसी वस्तु से विदा लेने, उदाहरण के लिए उसे उपहार में देने का मन बनाना पड़ता है, इससे पहले कि हम उसका अध्ययन कर सकें, उस पर पछता सकें, उसकी प्रशंसा कर सकें। "नहीं, नहीं, राजकुमारी मैडम वर्दुरिन के कुछ मेहमानों के साथ मेनविले गई हैं, जो पेरिस जाने वाली ट्रेन पकड़ रहे थे। यह संभव है कि मैडम वर्दुरिन, जिनका सेंट-मार्स में कुछ काम था, उनके साथ हों! अगर ऐसा है, तो वह हमारे साथ आएंगी और हम सब साथ यात्रा करेंगे, जो बहुत आनंददायक होगा। हमें मेनविले में नज़र रखनी होगी और देखना होगा कि क्या देखने को मिलता है! अरे, लेकिन यह तो कुछ भी नहीं है, आप कह सकते हैं कि हम बस छूटने से बाल-बाल बचे। जब मैंने ट्रेन देखी तो मैं दंग रह गया। इसे ही कहते हैं मनोवैज्ञानिक क्षण। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि हम ट्रेन छूट गए, मैडम वर्दुरिन हमें बिना लिए डिब्बों को वापस आते हुए देखें: क्या दृश्य होता!" डॉक्टर ने कहा, जो अभी तक अपने भावों से उबर नहीं पाए थे। "यह तो एक अच्छा मज़ाक होता, है ना? तो फिर, ब्रिचोट, हमारे इस छोटे से कारनामे के बारे में आपका क्या कहना है?" डॉक्टर ने गर्व भरे लहजे में पूछा। ब्रिचोट ने जवाब दिया, "सच कहूँ तो, अगर ट्रेन गायब होती, तो वो वही होता जिसे स्वर्गीय विलेमेन आँखों में चुभन कहा करते थे!" लेकिन मैं, पहले तो इन अजनबी लोगों से विचलित था, तभी मुझे अचानक कॉटार्ड की कही बात याद आ गई जो उसने छोटे से कैसिनो के बॉलरूम में मुझसे कही थी, और मानो कोई अदृश्य कड़ी हमारे शरीर के किसी

अंग को हमारी दृश्य स्मृति से जोड़ रही हो, अल्बर्टीन को एंड्री के शरीर से सटाए हुए देखकर मेरे दिल में भयानक दर्द हुआ। यह दर्द ज़्यादा देर तक नहीं रहा: अल्बर्टीन के महिलाओं के साथ संबंध होने का विचार अब असंभव सा लगने लगा था, क्योंकि अड़तालीस घंटे पहले जब मेरी प्रेमिका ने सेंट-लूप के साथ संबंध बनाने की कोशिश की थी, तो मेरे अंदर एक नई ईर्ष्या जाग उठी थी जिसने मुझे पुरानी ईर्ष्या भुला दी थी। मैं इतना भोला था कि मैंने मान लिया कि एक ज़रूरत दूसरी ज़रूरत को नकार देती है। हरम्बौविले में, जब ट्राम पूरी तरह भरी हुई थी, तो नीले ब्लाउज पहने एक किसान, जिसके पास केवल तीसरी श्रेणी का टिकट था, हमारे डिब्बे में चढ़ गया। डॉक्टर को लगा कि राजकुमारी को ऐसे व्यक्ति के साथ यात्रा करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए, इसलिए उसने एक कुली को बुलाया, अपना कार्ड दिखाया और खुद को एक बड़ी रेलवे कंपनी का चिकित्सा अधिकारी बताया। उसने स्टेशन मास्टर को किसान को उतारने के लिए मजबूर किया। इस घटना से सैनियेट का डरपोक मन इतना आहत और भयभीत हो गया कि जैसे ही उसने इसे शुरू होते देखा, उसे पहले से ही डर था कि प्लेटफार्म पर किसानों की भीड़ के कारण यह विद्रोह का रूप न ले ले। उसने पेट दर्द का बहाना बनाया और डॉक्टर की हिंसा में किसी भी तरह की जिम्मेदारी से बचने के लिए गलियारे में इधर-उधर भटकने लगा, और ऐसा दिखावा करने लगा कि वह कॉटार्ड द्वारा वर्णित 'पानी' की तलाश कर रहा है। जब उसे पानी नहीं मिला, तो वह वहीं रुक गया और 'ट्विस्टर' के दूसरे छोर से दृश्य को निहारने लगा। "अगर यह श्रीमती वर्दुरिन के यहाँ आपकी पहली उपस्थिति है, महोदय," ब्रिचोट ने मुझे संबोधित करते हुए कहा, जो एक नवागंतुक के सामने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए उत्सुक था, "तो आप पाएंगे कि 'जीवन की सुख-सुविधाओं' का अनुभव करने के लिए इससे बेहतर कोई जगह नहीं है। शौकियापन, पुराने ज़माने के ज्ञान और हर तरह के 'वाद' से जुड़े शब्दों के आविष्कारकों में से एक के शब्दों में कहूँ तो, मैं 'एम. ले प्रिंस डी टैलीरैंड' की बात कर रहा हूँ।" क्योंकि, जब वह अतीत के इन महान रईसों की बात करता था, तो वह उनके खिताबों के आगे 'एम.' लगाना चतुर और उस समय के चलन के अनुसार समझता था, और कहता था 'एम. ले ड्यूक डी ला रोशेफौकॉल्ड,' 'एम. ले कार्डिनल डी रेट्ज़,' और इन्हें 'वह जीवन-संघर्ष करने वाला डी गोंडी,' 'वह बोलंगिस्ट डी मार्सीलाक' भी कहता था। और जब भी वे मोंटेस्क्यू का ज़िक्र करते,

मुस्कुराते हुए उन्हें "मोंसियर ले प्रेसिडेंट सेकंडैट डी मोंटेस्क्यू" कहना नहीं भूलते थे। एक समझदार और अनुभवी व्यक्ति को ऐसी विद्वतापूर्ण शैली से चिढ़ होती, जो व्याख्यान-कक्ष की शैली जैसी लगती थी। लेकिन एक राजकुमार के बारे में बात करते समय एक अनुभवी व्यक्ति के उत्तम शिष्टाचार में भी एक विद्वतापूर्ण शैली झलकती है, जो एक अलग ही वर्ग को दर्शाती है - वह वर्ग जिसमें 'विलियम' के आगे 'सम्राट' लगाकर किसी शाही व्यक्ति को तीसरे व्यक्ति के रूप में संबोधित किया जाता है। ब्रिचोट ने 'मोंसियर ले प्रिंस डी टैलीरैंड' का ज़िक्र करते हुए आगे कहा, "अहा, अब ये हैं वो व्यक्ति - जिनके सामने हम सम्मानपूर्वक झुकते हैं। ये हमारे पूर्वज हैं।" “यह एक आकर्षक घर है,” कॉटार्ड ने मुझसे कहा, “यहाँ आपको हर तरह की चीज़ें मिलेंगी, क्योंकि श्रीमती वर्दुरिन किसी खास वर्ग तक सीमित नहीं हैं, ब्रिचोट जैसे महान विद्वान, राजकुमारी शेरबातोफ़ जैसी उच्च कुलीन महिलाएं, एक महान रूसी महिला, ग्रैंड डचेस यूडोक्सी की मित्र, जो उनसे अकेले में भी मिलती हैं जब किसी और को आने की अनुमति नहीं होती।” वास्तव में, ग्रैंड डचेस यूडोक्सी नहीं चाहती थीं कि राजकुमारी शेरबातोफ़, जिन्हें पिछले कई वर्षों से सभी ने नज़रअंदाज़ किया था, उनके घर आएं जब वहाँ अन्य लोग भी मौजूद हों, इसलिए उन्होंने उन्हें केवल सुबह जल्दी आने की अनुमति दी, जब महारानी घर पर नहीं होती थीं। उनके उन मित्रों में से किसी से भी मिलना उतना ही अप्रिय होता जितना कि राजकुमारी के लिए उनसे मिलना असहज होता। क्योंकि, पिछले तीन वर्षों से, ग्रैंड डचेस से निकलते ही, श्रीमती शेरबातोफ़ एक मैनीक्योरिस्ट की तरह, श्रीमती वर्दुरिन के पास चली जाती थीं। वेरदुरिन, जो अभी-अभी जागी थी और दिन भर उसके साथ रही, यह कहा जा सकता है कि राजकुमारी की वफादारी ब्रिचोट की वफादारी से भी कहीं अधिक थी, जो उन बुधवारों को पेरिस में, जहाँ उसे ल'एबे-ऑक्स-बोइस में खुद को एक तरह का शैतोब्रियां समझने का आनंद मिलता था, और देश में, जहाँ वह खुद को मैडम डी शैटेलेट के सैलून में उस व्यक्ति के समकक्ष बनते हुए देखता था, जिसे वह हमेशा (विद्वत्तापूर्ण व्यंग्य और संतुष्टि के साथ) "एम. डी वोल्टेयर" कहता था।

मित्रों की कमी के कारण राजकुमारी शेरबातोफ़ ने पिछले कुछ वर्षों से वर्दुरिन परिवार के प्रति ऐसी वफ़ादारी दिखाई थी जिसने उन्हें 'वफ़ादारों' के एक साधारण सदस्य से कहीं अधिक बना दिया था, वफ़ादारी का वह प्रतीक, वह आदर्श जिसे श्रीमती वर्दुरिन ने लंबे समय

से अप्राप्य माना था और जिसे अब, अपने जीवन के अंतिम वर्षों में, उन्होंने अंततः इस नई महिला सदस्य में साकार पाया। यद्यपि स्वामिनी को ईर्ष्या की तीव्र पीड़ा होती थी, यह अभूतपूर्व था कि उनके सबसे निष्ठावान वफ़ादारों ने कम से कम एक बार भी उन्हें 'निराश' न किया हो। सबसे घर में रहने वाले भी यात्रा के प्रलोभन में पड़ जाते थे; सबसे संयमी भी सद्गुणों से विमुख हो जाते थे; सबसे स्वस्थ भी फ्लू की चपेट में आ जाते थे, सबसे आलसी भी अपने एक महीने के सैनिक कार्य के लिए पकड़े जाते थे, सबसे उदासीन भी मरती हुई माँ की अंतिम विदाई देने चले जाते थे। और श्रीमती वर्दुरिन का यह प्रयास व्यर्थ ही गया। वर्दुरिन ने तब उन्हें रोमन महारानी की तरह बताया कि वह एकमात्र सेनापति है जिसकी आज्ञा का पालन उसकी सेना को करना चाहिए, ईसा मसीह या सम्राट की तरह कि जो अपने माता-पिता से उससे अधिक प्रेम करता है और उन्हें छोड़कर उसका अनुसरण करने को तैयार नहीं है, वह उसके योग्य नहीं है, कि बिस्तर पर आलस करने या बुरी स्त्रियों द्वारा मूर्ख बनाए जाने के बजाय, उनके लिए बेहतर होगा कि वे उसकी संगति में रहें, उसके साथ रहें, जो उनका एकमात्र उपचार और एकमात्र आनंद है। लेकिन नियति, जो कभी-कभी जीवन के अंतिम वर्षों को रोशन करने की कृपा करती है, ने श्रीमती वर्दुरिन को राजकुमारी शेरबातोफ़ से मिलवाया। अपने परिवार से कटी हुई, अपनी जन्मभूमि से निर्वासित, बैरोनेस पुटबस और ग्रैंड डचेस यूडोक्सी के अलावा किसी को नहीं जानती थी, जिनके घरों में, क्योंकि वह स्वयं पूर्व के मित्रों से नहीं मिलना चाहती थी, और बाद वाली नहीं चाहती थी कि उसके मित्र राजकुमारी से मिलें, वह केवल सुबह-सुबह जाती थी जब श्रीमती... वेरदुरिन अभी भी सो रही थी, जहाँ तक उसे याद था, वह कभी भी अपने कमरे में बंद नहीं रही थी, जब वह बारह साल की थी तब उसे खसरा हो गया था। 31 दिसंबर को उसने श्रीमती वेरदुरिन को जवाब दिया, जो अकेले रह जाने से डरकर उससे पूछ रही थीं कि क्या वह नए साल की पूर्व संध्या होने के बावजूद रात भर वहीं नहीं सोएगी: "क्यों, मुझे साल के किसी भी दिन क्या रोक सकता है? इसके अलावा, कल एक ऐसा दिन है जब लोग घर पर रहते हैं, और यही मेरा घर है।" एक बोर्डिंग हाउस में रहते हुए, और जब भी वेरदुरिन परिवार कहीं जाता था, वह भी वहाँ से चली जाती थी, छुट्टियों में उनके साथ जाती थी। राजकुमारी ने श्रीमती वेरदुरिन के सामने विग्री की परंपरा का पूर्ण उदाहरण प्रस्तुत किया था।

तुम ही एकमात्र ऐसी चीज के रूप में प्रकट हुए जिसकी तलाश मनुष्य सदा करता रहता है।
उस छोटे समूह की महिला अध्यक्ष, जो अपनी 'वफादार' में से किसी एक की मृत्यु के बाद भी उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करना चाहती थी, ने राजकुमारी शेरबातोफ़ से वादा करवाया था कि उनमें से जो भी जीवित बचेगा, उसे उसके बगल में दफनाया जाएगा। अजनबियों के सामने—जिनमें से हमें हमेशा उसी को गिनना चाहिए जिससे हम सबसे बेशर्मी से झूठ बोलते हैं क्योंकि वही वह व्यक्ति है जिसके तिरस्कार से हमें सबसे अधिक डरना चाहिए: स्वयं स्वयं—राजकुमारी शेरबातोफ़ ने अपनी केवल तीन मित्रताएँ—ग्रैंड डचेस, वर्दुरिन परिवार और बैरोनेस पुटबस के साथ—को एकमात्र मित्रता के रूप में प्रस्तुत करने का पूरा ध्यान रखा, न कि उन आपदाओं के कारण जो उसके नियंत्रण से परे थीं और बाकी सभी के विनाश से उत्पन्न हुई थीं, बल्कि एक स्वतंत्र चुनाव द्वारा चुनी गई थीं और एकांत और सादगी के प्रति एक विशेष प्रेम ने उसे इन मित्रताओं तक सीमित कर दिया था। "मैं किसी और को नहीं देखती," वह कहती, इस बात पर जोर देते हुए कि यह एक ऐसा नियम था जिसे व्यक्ति स्वयं पर थोपता है, न कि कोई ऐसी आवश्यकता जिसके आगे वह झुकता है। वह आगे कहतीं, "मैं केवल तीन घरों में जाती हूँ," ठीक वैसे ही जैसे कोई नाटककार, जिसे डर होता है कि उसका नाटक चौथे मंचन तक नहीं पहुँच पाएगा, यह घोषणा करता है कि उसके नाटक के केवल तीन ही प्रदर्शन होंगे। चाहे श्रीमान और श्रीमती वर्दुरिन इस मनगढ़ंत कहानी की सच्चाई पर विश्वास करते हों या नहीं, उन्होंने राजकुमारी को इसे अपने अनुयायियों के मन में बिठाने में मदद की थी। और बदले में, वे इस बात से आश्वस्त थे कि राजकुमारी ने हज़ारों निमंत्रणों में से केवल वर्दुरिन दंपति को ही चुना था, और वर्दुरिन दंपति ने, सभी उच्च कुलीन वर्ग द्वारा व्यर्थ में मनाए जाने के बावजूद, राजकुमारी के पक्ष में केवल एक अपवाद बनाने पर सहमति जताई थी।
उनकी दृष्टि में, राजकुमारी, जो अपने मूल परिवेश से इतनी श्रेष्ठ थीं कि उन्हें उन सभी लोगों के बीच, जिनकी संगति का वे आनंद ले सकती थीं, उबाऊ लगना स्वाभाविक था, लेकिन उन्हें केवल वर्दुरिन ही मनोरंजक लगे, जबकि वे, बदले में, पूरे अभिजात वर्ग द्वारा उन पर बरसाए गए प्रस्तावों को अनसुना करते हुए, केवल एक अपवाद के लिए सहमत हुए, जो कि अपनी जाति की बाकी महिलाओं की तुलना में कहीं अधिक बुद्धिमान एक महान महिला, राजकुमारी शेरबातोफ के पक्ष में था।

राजकुमारी बहुत धनी थीं; वह हर पहले शो के लिए एक बड़ा बॉक्स बुक करती थीं, जिसमें श्रीमती वर्दुरिन की सहमति से, वह केवल अपने वफादार ग्राहकों को ही आमंत्रित करती थीं और किसी और को नहीं। लोग इस पीली और रहस्यमयी शख्सियत की ओर इशारा करते थे, जो उम्र के साथ सफेद तो हो गई थीं, लेकिन कुछ सूखे और मुरझाए हुए झाड़ी के फलों की तरह लाल हो गई थीं। लोग उनके प्रभाव और विनम्रता दोनों की प्रशंसा करते थे, क्योंकि उनके साथ हमेशा एक शिक्षाविद, ब्रिचोट, एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक, कॉटार्ड, उस समय के अग्रणी पियानोवादक, और बाद में एम. डी चार्लस भी होते थे, फिर भी वह थिएटर में सबसे कम प्रमुख बॉक्स बुक करने पर जोर देती थीं, पृष्ठभूमि में रहती थीं, बाकी दर्शकों पर ध्यान नहीं देती थीं, और पूरी तरह से अपने छोटे समूह के लिए जीती थीं, जो प्रदर्शन समाप्त होने से कुछ समय पहले, इस विचित्र शासक के पीछे-पीछे चले जाते थे, जिनमें एक निश्चित शर्मीली, आकर्षक, फीकी सुंदरता थी। लेकिन अगर श्रीमती... शेरबाटोफ़ ने दर्शकों की ओर नहीं देखा, वह छाया में ही रहीं, मानो वह उस जीवंत दुनिया को भूलने की कोशिश कर रही हों जिसकी उन्हें दिली चाह थी और जिसे वह जान नहीं पा रही थीं: एक छोटे से कमरे में बैठे लोगों का समूह उनके लिए वैसा ही था जैसा कुछ जानवरों के लिए खतरे की मौजूदगी में उनकी लगभग लाश जैसी गतिहीनता होती है। फिर भी, समाज में लोगों में नवीनता और जिज्ञासा की जो प्यास होती है, उसने उन्हें इस रहस्यमयी अजनबी पर शायद उन मशहूर हस्तियों से भी ज़्यादा ध्यान देने के लिए मजबूर कर दिया, जिन्हें देखने के लिए हर कोई आगे के कमरों में बैठा रहता था। उन्होंने कल्पना की कि वह उन लोगों से अलग होंगी जिन्हें वे जानते थे, कि एक अद्भुत बुद्धि और विवेकपूर्ण उदारता ने उनके चारों ओर प्रतिष्ठित पुरुषों का वह छोटा सा घेरा बनाए रखा था। राजकुमारी को मजबूरन, अगर आप उनसे किसी के बारे में बात करते या किसी का उनसे परिचय कराते, तो समाज के प्रति अपने घृणा के भ्रम को बनाए रखने के लिए, एक तीव्र शीतलता का दिखावा करना पड़ता था। फिर भी, कॉटार्ड या श्रीमती के समर्थन से... वर्दुरिन में, कई नवागंतुक उनसे जान-पहचान बनाने में कामयाब रहे और नए व्यक्ति से मिलने की खुशी में वे इतनी मग्न हो जाती थीं कि अपने जानबूझकर एकांत में रहने की कहानी को भूल जाती थीं और नए व्यक्ति को खुश करने के लिए हर संभव प्रयास करती थीं। अगर वह व्यक्ति बिल्कुल महत्वहीन होता, तो बाकी लोग आश्चर्यचकित रह जाते। "यह कितनी

अजीब बात है कि राजकुमारी, जो किसी से भी जान-पहचान नहीं रखती, ऐसे नीरस व्यक्ति के लिए अपवाद बना रही है।" लेकिन इस तरह की जान-पहचानें दुर्लभ थीं और राजकुमारी अपने वफादारों के बीच सीमित जीवन जीती थीं।

कॉटार्ड अक्सर कहते थे, "मैं उनसे बुधवार को वर्दुरिन के यहाँ मिलूँगा," बजाय इसके कि वे कहते, "मैं उनसे मंगलवार को अकादमी में मिलूँगा।" वे बुधवार को भी एक समान रूप से महत्वपूर्ण और अपरिहार्य मुलाकात मानते थे। लेकिन कॉटार्ड उन कम लोकप्रिय लोगों में से थे, जो किसी भी निमंत्रण का जवाब देना उतना ही अनिवार्य मानते थे, मानो वह कोई आदेश हो, जैसे कोई सैन्य या न्यायिक सम्मन। किसी बहुत महत्वपूर्ण मरीज़ के बुलावे पर ही वे बुधवार को वर्दुरिन के यहाँ नहीं आ पाते थे, और यह महत्व मरीज़ की गंभीरता से ज़्यादा उसके पद पर निर्भर करता था। कॉटार्ड, जो एक नेक इंसान थे, बुधवार की खुशियों को किसी स्ट्रोक से पीड़ित मजदूर के लिए नहीं, बल्कि किसी मंत्री की सर्दी-जुकाम के लिए भी छोड़ देते थे। तब भी वे अपनी पत्नी से कहते थे, "श्रीमती वर्दुरिन से मेरी ओर से माफी मांग लेना। उन्हें बता देना कि मैं बाद में आऊँगा। महामहिम को सर्दी-जुकाम होने के लिए कोई और दिन भी चुनना चाहिए था।" एक बुधवार को उनकी पुरानी रसोइया की बांह में चोट लग गई थी। कॉटार्ड, जो पहले से ही वर्दुरिन के घर जाने के लिए डिनर जैकेट पहने हुए थे, ने अपनी पत्नी के यह पूछने पर कि क्या वह कट पर पट्टी नहीं बांध सकते, कंधे उचका दिए: "बिल्कुल नहीं, लियोन्टाइन," उन्होंने कराहते हुए कहा; "क्या तुम नहीं देख सकतीं कि मैंने अपनी सफेद जैकेट पहनी हुई है?" अपने पति को नाराज़ न करने के लिए, श्रीमती कॉटार्ड ने तुरंत उनके मुख्य ड्रेसर को बुलवाया। समय बचाने के लिए, उसने एक टैक्सी ली, जिसके परिणामस्वरूप, जब कॉटार्ड की गाड़ी उन्हें वर्दुरिन के घर ले जाने के लिए आंगन से निकल रही थी, तभी उसकी गाड़ी आंगन में पहुंची, और दोनों को एक-दूसरे को रास्ता देने के लिए पीछे हटने में पांच मिनट बर्बाद हो गए। श्रीमती कॉटार्ड चिंतित थीं कि ड्रेसर अपने मालिक को शाम की पोशाक में न देख ले। कॉटार्ड देरी को कोसते हुए बैठे रहे, शायद पछतावे से, और एक दुष्ट स्वभाव में चले गए जिसे बुधवार के सारे सुखों ने भी दूर नहीं किया।

यदि कॉटार्ड के मरीजों में से कोई उनसे पूछे: "क्या आप कभी गुएरमांटेस को देखते हैं?" प्रोफेसर अत्यंत ईमानदारी से उत्तर देते थे: "शायद वास्तव में गुएरमांटे परिवार नहीं, मैं निश्चित

नहीं कह सकता। लेकिन मैं उन सभी लोगों से अपने कुछ मित्रों के घर पर मिलता हूँ। आपने वर्दुरिन परिवार के बारे में तो सुना ही होगा। वे सबको जानते हैं। इसके अलावा, वे निश्चित रूप से ऐसे लोग नहीं हैं जो दुनिया से गिर गए हों। उनके पास वाकई बहुत धन-दौलत है। आम तौर पर अनुमान लगाया जाता है कि श्रीमती वर्दुरिन की संपत्ति पैंतीस मिलियन है। हे भगवान, पैंतीस मिलियन, यह तो बहुत बड़ी रकम है। और इसलिए उन्हें एक ही मौके पर दो बार मौका नहीं मिलता। आपने डचेस डी गुएरमांटे का जिक्र किया। मुझे अंतर समझा दीजिए। श्रीमती वर्दुरिन एक महान महिला हैं, डचेस डी गुएरमांटे शायद कोई खास नहीं हैं। आप अंतर समझ ही गए होंगे। वैसे भी, चाहे गुएरमांटे परिवार श्रीमती वर्दुरिन के घर जाए या न जाए, वह सभी उच्च कोटि के लोगों का स्वागत करती हैं, जैसे डी'शेरबाटोफ, डी'फोर्चेविल, आदि। "सभी उच्च कोटि के लोग, फ्रांस और नवारे के सभी कुलीन वर्ग, जिनके साथ आप मुझे आमने-सामने बातचीत करते हुए देखेंगे। बेशक, ऐसे लोग विज्ञान के राजकुमारों से मिलकर बहुत प्रसन्न होते हैं," उन्होंने मूर्खतापूर्ण घमंड भरी मुस्कान के साथ कहा, जो उनके होठों पर उनके इस गर्वपूर्ण संतोष से आई थी कि पहले पोटेन और चारकोट जैसे लोगों के लिए इस्तेमाल होने वाला यह शब्द अब उन पर भी लागू हो रहा था, बल्कि इस बात से कि उन्हें अंततः रीति-रिवाजों द्वारा स्वीकृत इन सभी अभिव्यक्तियों का उपयोग करना आ गया था, और लंबे अध्ययन के बाद उन्होंने इन्हें कंठस्थ कर लिया था। और इसलिए, श्रीमती वर्दुरिन के यहाँ आने वाले लोगों में से एक के रूप में राजकुमारी शेरबाटोफ का जिक्र करने के बाद, कॉटार्ड ने आँख मारते हुए कहा: "इससे आपको घर की शैली का अंदाजा लग गया होगा, अगर आप समझ रहे हैं कि मेरा क्या मतलब है?" उनका मतलब था कि यह फैशन की पराकाष्ठा थी। अब, ग्रैंड डचेस यूडोक्सी के अलावा किसी को न जानने वाली रूसी महिला का स्वागत करना बिल्कुल भी फैशनेबल नहीं था। लेकिन राजकुमारी शेरबातोफ़ शायद उन्हें जानती भी न हों, इससे वर्दुरिन सैलून की सर्वोच्च भव्यता के बारे में कॉटार्ड के आकलन या वहाँ आमंत्रित किए जाने की उनकी खुशी में कोई कमी नहीं आती। जिन लोगों के घरों में हम जाते हैं, उनमें हमें जो वैभव दिखाई देता है, वह मंच पर राजाओं और रानियों के वैभव से अधिक स्वाभाविक नहीं है; क्योंकि उनके वस्त्रों पर निर्माता के लिए सैकड़ों-हजारों फ्रैंक खर्च करके असली पोशाकें और गहने खरीदना व्यर्थ है, जब एक महान डिजाइनर कांच के टुकड़ों से जड़े मोटे कपड़े के

एक डबलट और कागज के एक लबादे पर प्रकाश की एक किरण केंद्रित करके कहीं अधिक भव्य प्रभाव पैदा कर सकता है। एक व्यक्ति ने अपना जीवन पृथ्वी के महान लोगों के बीच बिताया हो सकता है, जो उसके लिए केवल उबाऊ रिश्तेदार या थकाऊ परिचित रहे हों, क्योंकि बचपन से ही पनपी घनिष्ठता ने उनकी दृष्टि में उन्हें हर तरह से महत्वहीन बना दिया था। दूसरी ओर, अगर वही व्यक्ति संयोगवश सबसे गुमनाम लोगों के साथ घुलमिल जाए, तो अनगिनत कॉटार्ड उन कुलीन महिलाओं से हमेशा के लिए मोहित हो जाते हैं, जिनके ड्राइंग रूम को वे अभिजात वर्ग की शान-शौकत का केंद्र मानते थे। ये महिलाएं मैडम डी विलेपारिसिस और उनकी सहेलियों जैसी भी नहीं थीं (महान महिलाएं जो अपनी महानता खो चुकी थीं, और जिनके पास उनके साथ पले-बढ़े अभिजात वर्ग ने जाना-पहचाना नाम छोड़ दिया था); नहीं, वे महिलाएं जिनकी दोस्ती कई पुरुषों के लिए गर्व का स्रोत रही है, अगर ये पुरुष अपने संस्मरण प्रकाशित करें और उन महिलाओं और अन्य महिलाओं के नाम बताएं जो उनकी पार्टियों में आती थीं, तो मैडम डी कैम्ब्रेमर भी मैडम डी गुएरमांटेस की तरह उन्हें पहचान नहीं पाएंगी। लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है! एक कॉटार्ड की अपनी मार्क्विज़ होती है, जो उसके लिए "बैरोन" होती है, जैसा कि मारिवाक्स में है, वह बैरोन जिसका नाम कभी उल्लेख नहीं किया जाता, इतना कि कोई यह सोचता भी नहीं कि उसका कभी कोई नाम था। कॉटार्ड को इस बात का और भी अधिक यकीन है कि वह अभिजात वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है—जिसने उस महिला के बारे में कभी सुना भी नहीं है—क्योंकि उपाधियाँ जितनी संदिग्ध होती हैं, शराब के गिलासों, चांदी के बर्तनों, नोटपैड और सामान पर मुकुट उतने ही प्रमुखता से प्रदर्शित होते हैं। कई कॉटार्ड, जिन्होंने यह मान लिया था कि वे फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के केंद्र में रह रहे हैं, शायद सामंती सपनों से उन लोगों की तुलना में कहीं अधिक मोहित थे जो वास्तव में राजकुमारों के बीच रहते थे, ठीक उसी तरह जैसे एक छोटा दुकानदार जो रविवार को कभी-कभी "पुराने जमाने" की इमारतों को देखने जाता है, कभी-कभी उन्हीं इमारतों से, जिनका हर पत्थर हमारे समय का है, जिनकी छतों को वायलेट-ले-ड्यूक के शिष्यों ने नीले रंग से रंगा है और सुनहरे सितारों से सजाया है, उन्हें मध्य युग का सबसे प्रबल अहसास होता है। "राजकुमारी मेनविले में होंगी। वह हमारे साथ आ रही हैं। लेकिन मैं अभी आपको उनसे मिलवाऊंगा नहीं। बेहतर होगा कि यह काम श्रीमती वर्दुरिन पर

छोड़ दिया जाए। जब तक कि मुझे कोई वैकल्पिक रास्ता न मिल जाए। तब तक आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं कि मैं इस मामले को अपने हाथ में ले लूंगा।" "आप क्या कह रहे थे?" सैनीएट ने बाहर जाने का बहाना करते हुए हमसे वापस आकर पूछा। ब्रिचोट ने कहा, "मैं इस सज्जन को एक कहावत सुना रहा था, जो आपको याद होगी, उस व्यक्ति की जो मेरी राय में अठारहवीं सदी के पहले व्यक्ति थे, जिनका नाम चार्ल्स मौरिस, एब्बे डी पेरिगोर्ड था। उन्होंने एक उत्कृष्ट पत्रकार बनने का वादा करके शुरुआत की थी। लेकिन उनका अंत बुरा हुआ, मेरा मतलब है कि वे मंत्री बन गए! जीवन में ऐसी त्रासदियाँ होती रहती हैं। एक बेईमान राजनेता, जिसने एक कुलीन व्यक्ति की तरह घमंड के साथ प्रशिया के राजा के लिए काम करने में कोई संकोच नहीं किया, और जिसकी मृत्यु 'वामपंथी मध्यमार्गी' के रूप में हुई।"
सेंट-पियरे-डेस-इफ्स स्टेशन पर एक खूबसूरत लड़की हमसे आकर मिली, जो दुर्भाग्यवश हमारे छोटे समूह का हिस्सा नहीं थी। उसकी नीली त्वचा, उसकी गहरी आँखें और उसके आकर्षक और मनमोहक रूप-रंग से मेरी नज़रें नहीं हट रही थीं। थोड़ी देर बाद, डिब्बे में गर्मी होने के कारण उसने खिड़की खोलने की इच्छा जताई, और चूंकि मेरे पास ही ओवरकोट नहीं था, इसलिए वह सबसे विदा नहीं लेना चाहती थी। उसने मुझसे फुर्तीली, शांत और मज़ाकिया आवाज़ में कहा, "क्या आपको थोड़ी ताज़ी हवा से कोई आपत्ति है, महोदय?" मेरा मन किया कि मैं उससे कहूँ, "क्या आप हमारे साथ वर्दुरिन्स के यहाँ चलेंगी?" या "मुझे अपना नाम और पता बताएँ।" मैंने उत्तर दिया, "नहीं, मुझे ताज़ी हवा से कोई परेशानी नहीं है, मैडमोजेल।" इस पर, बिना हिले-डुले, उसने पूछा, "क्या आपके दोस्तों को धूम्रपान से कोई आपत्ति है?" और उसने एक सिगरेट जला ली। तीसरे स्टेशन पर वह डिब्बे से कूद पड़ी।
अगले दिन, मैंने अल्बर्टीन से पूछा कि वह कौन हो सकती है। क्योंकि, रॉबर्ट के प्रति अल्बर्टीन के रवैये से ईर्ष्या करते हुए, मैं मूर्खतापूर्ण ढंग से यह सोचता था कि लोगों के पास केवल एक ही प्रकार का प्रेम हो सकता है, और इसी वजह से अन्य महिलाओं के मामले में मैं आश्वस्त था। अल्बर्टीन ने मुझसे कहा, और मुझे विश्वास है कि उसने पूरी ईमानदारी से कहा कि उसे नहीं पता। "काश मैं उसे फिर से देख पाता!" मैंने कहा। "चिंता मत करो, लोग हमेशा फिर मिलते हैं," अल्बर्टीन ने उत्तर दिया। इस मामले में वह गलत थी; मैंने सिगरेट पीती उस सुंदर लड़की को फिर कभी नहीं देखा, और न ही मैं उसे पहचान पाया। इसके अलावा, हम यह भी देखेंगे

कि मैंने लंबे समय तक उसे क्यों नहीं खोजा। लेकिन मैं उसे भूला नहीं हूँ। जब भी मैं उसके बारे में सोचता हूँ, तो कभी-कभी मेरे मन में एक तीव्र लालसा जाग उठती है। लेकिन इच्छा की ये पुनरावृत्तियाँ हमें यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि यदि हम इन लड़कियों को उसी आनंद के साथ फिर से पाना चाहते हैं, तो हमें उस वर्ष में भी लौटना होगा जिसके बाद दस और वर्ष बीत चुके हैं और जिसके दौरान उसकी सुंदरता फीकी पड़ गई है। हम कभी-कभी किसी व्यक्ति को फिर से पा सकते हैं, लेकिन हम समय को समाप्त नहीं कर सकते। और यह सिलसिला तब तक चलता रहता है जब तक वह अनचाहा दिन नहीं आ जाता, जो सर्दियों की रात की तरह उदास होता है, जब हम उस लड़की को या किसी और को खोजना बंद कर देते हैं, जब उसे पाना ही हमें डरा देता है। क्योंकि अब हमें ऐसा महसूस नहीं होता कि हममें उसे आकर्षित करने की पर्याप्त शक्ति है, या उससे प्रेम करने की ताकत। बेशक, इसका मतलब यह नहीं है कि हम शब्द के कड़े अर्थों में नपुंसक हैं। और प्रेम की बात करें तो, हमें उससे पहले से कहीं अधिक प्रेम करना चाहिए। लेकिन हमें लगता है कि यह हमारे पास बची थोड़ी सी शक्ति के लिए बहुत बड़ा काम है। शाश्वत विश्राम ने पहले ही ऐसे अंतराल तय कर दिए हैं जिन्हें हम न तो पार कर सकते हैं और न ही अपनी आवाज उन तक पहुंचा सकते हैं। सही कदम रखना किसी खतरनाक छलांग को न चूकने जैसी उपलब्धि है। उस लड़की के सामने ऐसी हालत में दिखना जिसे हम प्यार करते हैं, भले ही हमने अपनी जवानी के सुनहरे बाल और चेहरे को बरकरार रखा हो! हम जवानी के साथ कदम मिलाकर चलने का बोझ नहीं उठा सकते। और भी बुरा तब होता है जब हमारी शारीरिक इच्छा कम होने के बजाय बढ़ जाती है! हम इसके लिए एक ऐसी महिला का इंतजाम करते हैं जिसे आकर्षित करने के लिए हमें कोई प्रयास नहीं करना पड़ता, जो केवल एक रात के लिए हमारे सोफे पर सोएगी और जिसे हम फिर कभी नहीं देखेंगे।

"लगता है वायलिन वादक के बारे में अभी तक कोई खबर नहीं है," कॉटार्ड ने कहा। दरअसल, उस छोटे से परिवार में आज की सबसे बड़ी घटना श्रीमती वर्दुरिन के प्रिय वायलिन वादक की असफलता थी। डोनसिएरेस के पास सैन्य सेवा में कार्यरत, वह सप्ताह में तीन बार आधी रात के पास के साथ ला रास्पेलियर में भोजन करने आता था। लेकिन दो दिन पहले, पहली बार, वफादार लोग उसे ट्राम में नहीं ढूंढ पाए। ऐसा माना जा रहा था कि वह ट्राम छूट

गई है। लेकिन श्रीमती वर्दुरिन ने अगली ट्राम का इंतज़ार करने के लिए भेजा, और इसी तरह आखिरी ट्राम के आने तक, डिब्बा खाली लौटा। "उसे निश्चित रूप से गार्ड-रूम में धकेल दिया गया होगा, उसके भाग जाने का कोई और कारण नहीं हो सकता। हे भगवान! सैनिकों में, आप जानते हैं, उन लोगों के साथ, बस एक बदमिजाज सार्जेंट ही काफी होता है।" ब्रिचोट ने कहा, "अगर वह आज शाम फिर से नाकाम रहे, तो श्रीमती वर्दुरिन के लिए और भी शर्मनाक होगा, क्योंकि हमारी मेज़बान ने पहली बार उन पड़ोसियों को रात के खाने पर बुलाया है जिनसे उन्होंने ला रास्पेलियर ली थी, यानी मार्क्विस और मार्क्विज़ डी कैम्ब्रेमर।" कॉटार्ड ने हैरानी से कहा, "आज शाम, मार्क्विस और मार्क्विज़ डी कैम्ब्रेमर! लेकिन मुझे इसके बारे में बिल्कुल भी पता नहीं था। ज़ाहिर है, मुझे बाकी सब की तरह पता था कि वे एक दिन ज़रूर आएंगे, लेकिन मुझे अंदाज़ा नहीं था कि इतनी जल्दी। सप्रिस्टी!" वह मेरी तरफ मुड़ते हुए बोले, "मैंने तुमसे क्या कहा था? राजकुमारी शेरबाटोफ़, मार्क्विस और मार्क्विज़ डी कैम्ब्रेमर।" और इन नामों को दोहराते हुए, उनकी मधुरता में डूबते हुए उन्होंने मुझसे कहा, "देखो, हम अच्छे लोगों के साथ हैं। हालांकि, चूंकि यह तुम्हारी पहली उपस्थिति है, इसलिए तुम भीड़ में से एक होगे। यह एक असाधारण रूप से शानदार आयोजन होने वाला है।" ब्रिचोट की ओर मुड़ते हुए उन्होंने आगे कहा, "मालकिन बहुत क्रोधित होंगी। अब समय आ गया है कि हम उनकी मदद करने का दिखावा करें।" जब से श्रीमती वर्दुरिन ला रास्पेलियर में थीं, तब से वे अपने वफादारों के सामने यह दिखावा करती आ रही थीं कि उन्हें अपने मकान मालिकों को एक शाम के लिए आमंत्रित करने की मजबूरी बहुत बुरी लग रही है और साथ ही अफ़सोस भी हो रहा है। उन्होंने समझाया कि ऐसा करने से उन्हें अगले साल बेहतर शर्तें मिलेंगी और वे उन्हें केवल व्यापारिक कारणों से आमंत्रित कर रही हैं। लेकिन वे इस बात से इतना डरती थीं, इतना घबराती थीं कि अपने छोटे समूह से बाहर के लोगों के साथ भोजन करने का विचार उनके लिए इतना कष्टदायक था कि वे उस बुरे दिन को टालती रहती थीं। दरअसल, उनके बताए कारणों से, भले ही वे उन्हें बढ़ा-चढ़ाकर बता रही हों, उन्हें थोड़ा डर तो लगता ही था, लेकिन साथ ही साथ यह बात उन्हें अपने उस दिखावे के कारण आकर्षित भी करती थी जिसे वे अपने तक ही सीमित रखना पसंद करती थीं। इसलिए वह कुछ हद तक ईमानदार थी; उसका मानना था कि वह छोटा सा कबीला दुनिया भर में अद्वितीय है, उन परिपूर्ण रचनाओं में से एक है जिन्हें

बनने में सदियाँ लग जाती हैं। उसे यह सोचकर ही डर लगता था कि कहीं ये देहाती लोग, जो रिंग और मीस्टरसिंगर से अनभिज्ञ हैं, बातचीत के माहौल में अपनी भूमिका नहीं निभा पाएंगे और श्रीमती वर्दुरिन के यहाँ आकर उन प्रसिद्ध बुधवारों में से एक को बर्बाद कर देंगे, जो कला की अतुलनीय और नाजुक कृतियाँ हैं, ठीक उन वेनिस के गिलासों की तरह जिन्हें एक गलत सुर भी चकनाचूर कर सकता है। "इसके अलावा, वे निश्चित रूप से कट्टर विरोधी और सैन्यवादी होंगे," श्रीमती वर्दुरिन ने कहा था। "अरे, मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, हमने इस सब के बारे में काफी कुछ सुन लिया है," श्रीमती वर्दुरिन ने उत्तर दिया था, जो एक सच्ची ड्रेफस समर्थक होने के बावजूद, अपने सैलून के प्रबल ड्रेफसवाद के विपरीत एक सामाजिक संतुलन पाकर प्रसन्न होतीं। ड्रेफसवाद राजनीतिक रूप से तो विजयी रहा, लेकिन सामाजिक रूप से नहीं। लेबोरी, रीनाच, पिक्वार्ट, ज़ोला समाज के लोगों के लिए कमोबेश गद्दार ही थे, जो उन्हें केवल इस छोटे से समूह से दूर रख सकते थे। और इसलिए, राजनीति में इस दखल के बाद, श्रीमती वर्दुरिन कला जगत में लौटने के लिए दृढ़ थीं। इसके अलावा, क्या इंडी और डेबुसी इस मामले में 'गलत' पक्ष में नहीं थे? "जहां तक इस मामले का सवाल है, हमें केवल ब्रिचोट को याद रखने की जरूरत है," उन्होंने कहा (डॉन एकमात्र वफादार व्यक्ति थे जिन्होंने जनरल स्टाफ का साथ दिया था, जिससे श्रीमती वर्दुरिन की नजरों में उनकी प्रतिष्ठा काफी गिर गई थी)। "ड्रेफस मामले पर हमेशा चर्चा करने की कोई जरूरत नहीं है। नहीं, असल बात यह है कि कैम्ब्रेमर मुझे ऊब चुके हैं।" जहाँ तक वफादारों की बात है, वे कैम्ब्रेमर से मिलने की अपनी अनकही इच्छा से उतने ही उत्साहित थे जितने कि श्रीमती वर्दुरिन की बनावटी अनिच्छा के शिकार। वेरदुरिन ने कहा कि उन्हें उन्हें आमंत्रित करने का मन हुआ, वे दिन-प्रतिदिन उनसे बातचीत करते हुए उन्हीं घटिया तर्कों पर लौट आते थे जिनसे उन्होंने स्वयं निमंत्रण का समर्थन किया था, और उन्हें अप्रतिरोध्य बनाने की कोशिश करते थे। कॉटार्ड ने दोहराया, "एक बार और हमेशा के लिए फैसला कर लो, और अगले साल के लिए तुम्हारे पास बेहतर शर्तें होंगी, वे माली को भुगतान करेंगे, तुम घास के मैदान का उपयोग कर पाओगी। यह एक उबाऊ शाम के लायक होगा। मैं केवल तुम्हारे बारे में सोच रहा हूँ," उन्होंने आगे कहा, हालाँकि एक बार उनका दिल उछल पड़ा था, जब श्रीमती वेरदुरिन की गाड़ी में उनकी मुलाकात बूढ़ी श्रीमती डी कैम्ब्रेमर की गाड़ी से हुई थी और इससे भी बढ़कर, रेलवे

कर्मचारियों की नज़र में उन्हें शर्मिंदगी महसूस हुई थी जब स्टेशन पर वे मार्क्विस के बगल में खड़े थे। दूसरी ओर, कैम्ब्रेमर परिवार, सामाजिक आंदोलन से बहुत दूर रहता था, इसलिए उन्हें कभी संदेह नहीं हुआ कि कुछ फैशनेबल महिलाएं श्रीमती वेरदुरिन के बारे में विशेष विचार से बात कर रही थीं। वेरदुरिन को लगता था कि वह एक ऐसी शख्सियत है जो सिर्फ बोहेमियन लोगों को जानती है, शायद कानूनी तौर पर शादीशुदा भी नहीं है, और जन्म से ही किसी और से नहीं मिलती, सिवाय खुद के। उन्होंने उसके साथ भोजन करने का विचार इसलिए स्वीकार कर लिया था ताकि वे उस किरायेदार से अच्छे संबंध बनाए रख सकें, जिसके बारे में उन्हें उम्मीद थी कि वह कई मौसमों तक वापस आती रहेगी, खासकर तब जब पिछले महीने उन्हें पता चला था कि उसे हाल ही में लाखों की संपत्ति विरासत में मिली है। चुपचाप और बिना किसी औपचारिक शिष्टाचार के उन्होंने उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन के लिए खुद को तैयार किया। वफादारों ने उस दिन के आने की उम्मीद छोड़ दी थी, क्योंकि श्रीमती वेरदुरिन ने अक्सर उनके सामने एक तारीख तय कर दी थी जो हमेशा टलती रही। ये झूठे फैसले न केवल इस डिनर पार्टी के विचार से होने वाली उनकी ऊब को दिखाने के लिए थे, बल्कि आस-पड़ोस में रहने वाले उस छोटे समूह के उन सदस्यों को सस्पेंस में रखने के लिए भी थे जो कभी-कभी असफल हो जाते थे। ऐसा नहीं था कि मालकिन को यह अंदाज़ा था कि वह "महान दिन" उनके लिए भी उतना ही आनंददायक होगा जितना उनके लिए, बल्कि इसलिए कि उन्हें यह समझाकर कि यह रात्रिभोज उनके लिए सबसे बड़ा सामाजिक कर्तव्य है, वह उनकी वफादारी की अपील कर सकें। "तुम मुझे उन चीनी अधिकारियों के साथ अकेला नहीं छोड़ोगे! हमें इस बोरियत को दूर करने के लिए पूरी ताकत से इकट्ठा होना होगा। ज़ाहिर है, हम उन चीज़ों के बारे में बात नहीं कर पाएंगे जिनमें हमारी दिलचस्पी है। बुधवार का दिन तो बर्बाद हो जाएगा, लेकिन क्या कर सकते हैं!"

"सच में," ब्रिचोट ने मुझे समझाया, "मुझे लगता है कि मैडम वर्दुरिन, जो बहुत बुद्धिमान हैं और अपने बुधवार के कार्यक्रमों को शानदार बनाने के लिए बहुत मेहनत करती हैं, इन पुराने खानदान के, लेकिन कम अक्ल वाले देहाती लोगों को देखने के लिए बिल्कुल भी उत्सुक नहीं थीं। वह बड़ी मार्कीज़ (वृद्ध कुलीन महिला) को बुलाने का मन नहीं बना पाईं, लेकिन उनके

बेटे और बहू को बुलाने के लिए राज़ी हो गईं।" "आह! तो हम मार्कीज़ डी कैम्ब्रेमर को देखने वाले हैं?" कॉटार्ड ने मुस्कुराते हुए कहा; उनकी मुस्कान में थोड़ी-सी बनावटी भावुकता भी झलक रही थी, हालाँकि उन्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि मैडम डी कैम्ब्रेमर सुंदर हैं या नहीं। लेकिन 'मार्कीज़' का खिताब सुनते ही उनके मन में प्रेम-प्रसंगों के बारे में अजीब-सी कल्पनाएँ आने लगीं। "आह! मैं उन्हें जानता हूँ," स्की ने कहा, जो एक बार मैडम वर्दुरिन के साथ बाहर जाते समय उनसे मिला था। "मुझे उम्मीद है कि यह जान-पहचान 'बाइबिल वाले अर्थ' में नहीं है," डॉक्टर ने अपनी ऐनक के पीछे से शरारती नज़र डालते हुए कहा; यह उनका पसंदीदा मज़ाक था। "वह बुद्धिमान हैं," स्की ने मुझे बताया। "स्वाभाविक रूप से," उसने आगे कहा—यह देखकर कि मैंने कुछ नहीं कहा—और हर शब्द पर मुस्कुराते हुए ज़ोर दिया, "वह बुद्धिमान हैं और साथ ही नहीं भी; उनमें औपचारिक शिक्षा की कमी है, वह थोड़ी चंचल हैं, लेकिन उनमें सुंदर चीज़ों को पहचानने की सहज समझ है। वह शायद कुछ न बोलें, लेकिन जब भी बोलेंगी, तो कोई बेवकूफी वाली बात कभी नहीं कहेंगी। और इसके अलावा, उनका रंग-रूप भी बहुत आकर्षक है। उनकी पेंटिंग बनाना एक मज़ेदार अनुभव होगा," उसने अपनी आँखें आधी बंद करते हुए कहा, मानो वह उन्हें अपने सामने पोज़ देते हुए देख रहा हो। चूँकि उनके बारे में मेरी राय स्की की राय से बिल्कुल अलग थी—जिसे वह इतने बारीक शब्दों में बयां कर रहा था—इसलिए मैंने बस इतना ही कहा कि वह एक बहुत ही जाने-माने इंजीनियर, मिस्टर लेग्रैंडिन की बहन हैं। "तो देखा, अब तुम्हारी मुलाक़ात एक सुंदर महिला से होने जा रही है," ब्रिचोट ने मुझसे कहा, "और कौन जाने, इस मुलाक़ात का क्या नतीजा निकले। क्लियोपेट्रा कोई बहुत बड़ी कुलीन महिला नहीं थी; वह तो एक साधारण-सी औरत थी—हमारे मेल्हाक के शब्दों में कहें तो, एक अनजान, लेकिन बेहद खतरनाक औरत—और ज़रा सोचो कि इसके क्या परिणाम हुए! न सिर्फ़ उस बेवकूफ़ एंटनी के लिए, बल्कि पूरी प्राचीन दुनिया के लिए भी।" "मेरी मुलाक़ात मैडम डी कैम्ब्रेमर से पहले ही हो चुकी है," मैंने जवाब दिया। "आह! तो फिर, आप खुद को जानी-पहचानी ज़मीन पर पाएँगे।" "मुझे उनसे मिलकर और भी ज़्यादा खुशी होगी," मैंने उन्हें जवाब दिया, "क्योंकि उन्होंने मुझसे कॉम्ब्रे के पुराने पादरी की लिखी एक किताब देने का वादा किया है—जो इस इलाके के जगहों के नामों के बारे में है—और मैं उन्हें उनका वादा याद दिला पाऊँगा। मुझे उस पादरी में दिलचस्पी है,

और शब्दों की उत्पत्ति (etymologies) में भी।" "उसने जो बातें बताई हैं, उन पर बिल्कुल भी भरोसा मत करना," ब्रिशो ने जवाब दिया, "ला रास्पेलियर में उस किताब की एक कॉपी रखी है, जिसे मैंने सरसरी तौर पर देखा है, लेकिन उसमें मुझे कोई भी काम की बात नहीं मिली; वह तो पूरी तरह से गलतियों का पुलिंदा है। मैं तुम्हें एक उदाहरण देता हूँ। इस इलाके में कई जगहों के नामों में 'Bricq' शब्द मिलता है। उस भले पादरी के मन में एक बहुत ही अजीब-सी सोच थी कि यह शब्द 'Briga' से आया है, जिसका मतलब होता है कोई ऊँची जगह या कोई किला। वह इस शब्द को सेल्टिक कबीलों—जैसे Latobriges, Nemetobriges वगैरह—में भी ढूँढ़ लेता है, और फिर इसे Briand, Brion जैसे नामों से भी जोड़ देता है। अगर हम सिर्फ़ इसी इलाके की बात करें, जहाँ इस समय हमें तुम्हारी संगति का सुख मिल रहा है, तो 'Bricquebose' का मतलब है 'ऊँची जगह पर बना जंगल', 'Bricqueville' का मतलब है 'ऊँची जगह पर बनी बस्ती', और 'Bricquebec'—जहाँ हम अभी Maineville पहुँचने से पहले थोड़ी देर के लिए रुकेंगे—का मतलब है 'नदी के किनारे बनी ऊँची जगह'। लेकिन, इन सब बातों में ज़रा भी सच्चाई नहीं है; इसकी सीधी-सी वजह यह है कि 'bricq' असल में एक पुराना नॉर्स शब्द है, जिसका सीधा-सा मतलब होता है 'पुल'। ठीक वैसे ही, जैसे 'fleur' शब्द —जिसे Mme. de Cambremer का वह चेला बड़ी मेहनत से कभी स्कैंडिनेवियाई शब्दों 'floi' या 'flo' से जोड़ता है, तो कभी आयरिश शब्दों 'ae' या 'aer' से—असल में, बिना किसी शक के, डेनमार्क का 'fjord' शब्द है, जिसका मतलब होता है 'बंदरगाह'। इसी तरह, वह भले पादरी यह भी सोचता है कि 'Saint–Mars–le–Vêtu' नाम का जो स्टेशन 'la Raspelière' के ठीक बगल में है, उसका मतलब है 'Saint–Martin–le–Vieux' (यानी 'vetus')। इसमें कोई शक नहीं कि इस इलाके के जगहों के नामों (toponymy) में 'vieux' शब्द ने एक बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। आम तौर पर 'Vieux' शब्द 'vadum' से आता है, जिसका मतलब होता है 'रास्ता' या 'गुज़रने की जगह'—ठीक वैसे ही, जैसे 'les Vieux' नाम की जगह पर है। अंग्रेज़ी में इसी चीज़ को 'ford' (जैसे Oxford, Hereford) कहा जाता है। लेकिन, इस खास मामले में, 'Vêtu' शब्द 'vetus' से नहीं, बल्कि 'vastus' से आया है—जिसका मतलब होता है कोई ऐसी जगह जो पूरी तरह से उजड़ी हुई या वीरान हो। तुम्हें इस इलाके के आस-पास ही 'Sottevast' (यानी Setold की वीरान ज़मीन) और 'Brillevast' (यानी Berold की वीरान

ज़मीन) जैसी जगहें मिल जाएँगी। मुझे उस पादरी की गलती के बारे में और भी ज़्यादा पक्का यकीन इसलिए है, क्योंकि... Saint–Mars–le–Vêtu को पहले Saint–Mars du Cast और यहाँ तक कि Saint–Mars–de–Terregate भी कहा जाता था। अब इन शब्दों में 'v' और 'g' अक्षर एक ही हैं। हम 'dévaster' कहते हैं, लेकिन 'gâcher' भी कहते हैं। 'Jâchères' और 'gatines' (जो High German शब्द 'wastinna' से आया है) का अर्थ एक ही है: इसलिए 'Terregate' का मतलब 'terra vasta' है। जहाँ तक Saint–Mars की बात है—जिसे पहले (माफ़ करना) Saint–Merd कहा जाता था—यह असल में Saint–Medardus है, जिसके अलग-अलग रूप Saint–Médard, Saint–Mard, Saint–Marc, Cinq–Mars और यहाँ तक कि Dammas भी मिलते हैं। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि यहाँ से बिल्कुल पास में, 'Mars' नाम वाली जगहें इस बात का सीधा सबूत हैं कि उनका मूल पैगन (यानी देवता Mars से जुड़ा) है; यह परंपरा इस देश में आज भी ज़िंदा है, लेकिन यहाँ के धर्मगुरु इसे मानने से इनकार करते हैं। देवताओं को समर्पित ऊँची जगहें यहाँ काफ़ी आम हैं, जैसे कि Jupiter का पर्वत (Jeumont)। आपके पादरी इस बात को मानने से इनकार करते हैं,
लेकिन दूसरी ओर, जहाँ कहीं भी ईसाई धर्म के निशान मिले हैं, वे उसकी नज़र से बच जाते हैं। वह लोक्टुडी तक भटक गया है, जो उसके अनुसार एक बर्बर नाम है, जबकि यह केवल लोकस सैंक्टी टुडेनी है, और उसने सैममार्कोलेस में सैंक्टस मार्टियालिस का भी उल्लेख नहीं किया है। ब्रिचोट ने मेरी रुचि देखकर आगे कहा, "आपके पादरी के नाम में 'होन', 'होम', 'होल्म' जैसे प्रत्यय 'हॉल' (हुल्लस) शब्द से लिए गए हैं, जिसका अर्थ है पहाड़ी, जबकि यह नॉर्स शब्द 'होल्म' से आया है, जिसका अर्थ है द्वीप, जिससे आप स्टॉकहोम में परिचित हैं, और जो इस पूरे जिले में व्यापक रूप से प्रचलित है, जैसे ला हाउल्मे, एंगोहोम, ताहौमे, रोबेहोम, नेहोम, क्रेटेहोल्मे, इत्यादि।" इन नामों ने मुझे उस दिन की याद दिला दी जब अल्बर्टीन इन्फ्रेविले-ला-बिगोट (ब्रिचोट ने मुझे बताया कि यह जागीर के दो लगातार स्वामियों के नाम पर रखा गया था) जाना चाहती थी, और फिर उसने सुझाव दिया था कि हम रोबेहोम में साथ भोजन करें। जहाँ तक मेनविले की बात है, हम अभी उस पर आ ही रहे थे। मैंने पूछा, "क्या नेहोम कार्केथुइट और क्लिटोर्प्स के पास कहीं नहीं है?" "बिल्कुल; नेहोमे प्रसिद्ध विस्काउंट निगेल का द्वीप या प्रायद्वीप है, जिसका नाम नेविल में भी मिलता है। आपने जिन कार्केथुइट

और क्लिटोर्प्स का ज़िक्र किया है, वे श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के शिष्य को और भी गलतियाँ करने का मौका देते हैं। निस्संदेह उन्होंने देखा होगा कि कार्के एक चर्च है, जर्मनों का किर्चे। आपको केर्केविले याद होगा, और डनकर्क का ज़िक्र तो बनता ही है। क्योंकि वहाँ हमें रुककर प्रसिद्ध शब्द 'डन' पर विचार करना चाहिए, जिसका सेल्ट्स के लिए अर्थ था ऊँची भूमि। और यह आपको पूरे फ्रांस में मिलेगा। आपके पादरी ड्यूनविले से सम्मोहित थे, जो यूरे-एट-लोइर में बार-बार आता है; उन्हें चेर में चेटोडुन, डन-ले-रोई, सार्थे में ड्यूनो, एरिएज में डन, नीव्रे में ड्यून-लेस-प्लेसेस और कई अन्य नाम भी मिले होंगे। 'Dun' शब्द उन्हें Douville के बारे में एक अजीब सी गलती की ओर ले जाता है—वह जगह जहाँ हम उतरेंगे और जहाँ हमें Mme. Verdurin की आरामदायक गाड़ियाँ हमारा इंतज़ार करती मिलेंगी। वह कहते हैं कि Douville, लैटिन में 'Donvilla' है। असल में, Douville ऊँची पहाड़ियों के तल पर ही बसा है। आपके क्यूरे (पादरी), जो सब कुछ जानते हैं, फिर भी महसूस करते हैं कि उन्होंने कोई गलती कर दी है। दरअसल, उन्हें एक पुराने दस्तावेज़ (cartulary) में 'Domvilla' नाम मिला है। इस पर वह अपनी बात से पलट जाते हैं; उनके अनुसार, Douville Mont Saint–Michel के मठाधीश (Abbot)—यानी Domino Abbati—की जागीर (fief) है। वह इस खोज से बहुत खुश हैं; यह बात तब और भी अजीब लगती है जब हम Mont Saint–Michel में बिताए गए उस बदनाम जीवन के बारे में सोचते हैं, जिसका ज़िक्र Sainte–Claire sur Epte के 'Capitulary' में मिलता है। हालाँकि, यह उस बात से ज़्यादा अजीब नहीं है कि डेनमार्क के राजा को इस पूरे समुद्री तट का अधिपति (suzerain) माना जाए—एक ऐसा राजा जिसने ईसा मसीह की तुलना में Odin की पूजा को कहीं ज़्यादा बढ़ावा दिया था। दूसरी ओर, यह अनुमान कि 'n' बदलकर 'm' हो गया है, मुझे चौंकाता नहीं है; इसमें 'Lyon' शब्द की तुलना में कम बदलाव की ज़रूरत पड़ती है—जबकि 'Lyon' भी पूरी तरह से सही है और 'Dun' (यानी Lugdunum) शब्द से ही बना है। लेकिन सच तो यह है कि वह मठाधीश (abbé) गलत हैं। Douville कभी भी 'Donville' नहीं था, बल्कि वह 'Doville' था—यानी 'Eudonis villa', जिसका अर्थ है 'Eudes का गाँव'। Douville को पहले 'Escalecliff' कहा जाता था—जिसका मतलब है 'चट्टान पर बनी सीढ़ियाँ'। लगभग 1233 ईस्वी में, Escalecliff के स्वामी (Lord) Eudes le Bouteiller 'पवित्र भूमि' (Holy Land) की यात्रा पर निकले। अपनी

रवानगी से ठीक पहले, उन्होंने वहाँ के चर्च को Blanchelande के मठ (Abbey) को सौंप दिया। आपसी शिष्टाचार के तौर पर, उस गाँव का नाम उन्हीं के नाम पर रख दिया गया—और इसी तरह आज हमें यह गाँव 'Douville' के नाम से जानने को मिलता है। लेकिन मुझे यह भी कहना होगा कि 'स्थान-नाम विज्ञान' (toponymy)—जिसके बारे में मुझे बहुत कम या लगभग कुछ भी जानकारी नहीं है—कोई एकदम सटीक विज्ञान नहीं है। अगर हमारे पास यह ऐतिहासिक प्रमाण न होता, तो यह भी मुमकिन था कि 'Douville' शब्द 'Ouville' से आया हो —जिसका अर्थ है 'जल' (Waters)। जिन शब्दों में 'ai' ध्वनि आती है (जैसे Aiguës-Mortes)—और जो 'aqua' शब्द से बने हैं—वे अक्सर बदलकर 'eu' या 'ou' रूप ले लेते हैं। और सच तो यह है कि Douville के बिल्कुल पास ही कुछ मशहूर जल-स्रोत (झरने) मौजूद थे, जिन्हें 'Carquethuit' कहा जाता था। आप शायद सोचें कि पादरी वहाँ ईसाई मूल ढूँढ़ने के लिए बहुत ज़्यादा उत्सुक थे, खासकर इसलिए क्योंकि इस इलाके को ईसाई धर्म में बदलना काफी मुश्किल रहा होगा; तभी तो सेंट उर्सल, सेंट गोफ़्रोई, सेंट बार्सानोर, और ब्रेवेडेंट के सेंट लॉरेंट जैसे लोगों ने इसे बदलने के लिए लगातार कोशिशें कीं, और आखिर में यह काम ब्यूबेक के भिक्षुओं को सौंप दिया। लेकिन 'थुइट' (thuit) के मामले में लेखक से गलती हुई है; वह इसे 'टॉफ़्ट' (toft) का एक रूप मानते हैं—यानी कोई इमारत, जैसा कि क्रिक्वेटोट, एक्टोट, यवेटोट में होता है—जबकि असल में यह 'थ्वेट' (thveit) है, जिसका मतलब है साफ़ की गई जगह या खेती लायक बनाई गई ज़मीन, जैसा कि ब्राक्वेटुइट, ले थुइट, रेगनेटुइट वगैरह में देखा जाता है। इसी तरह, अगर वह 'क्लिटूर्प्स' (Clitourps) में नॉर्मन शब्द 'थॉर्प' (thorp) को पहचानते हैं—जिसका मतलब 'गाँव' होता है—तो भी वह इस बात पर अड़े रहते हैं कि इस शब्द का पहला हिस्सा 'क्लीवस' (clivus) से आया होगा, जिसका मतलब है 'ढलान', जबकि असल में यह 'क्लिफ़' (cliff) से आया है, जिसका मतलब है 'खड़ी चट्टान' या 'कगार'। लेकिन उनकी सबसे बड़ी गलतियाँ उनकी अज्ञानता की वजह से उतनी नहीं हैं, जितनी कि उनके पूर्वाग्रहों की वजह से। कोई व्यक्ति चाहे कितना भी वफ़ादार फ्रांसीसी क्यों न हो, उसे सबूतों को नज़रअंदाज़ करके यह मानने की ज़रूरत नहीं है कि 'सेंट-लॉरेंट एन ब्रे' (Saint-Laurent en Bray) वही रोमन पादरी हैं जो कभी बहुत मशहूर थे, जबकि असल में वह डबलिन के आर्कबिशप सेंट लॉरेंस 'टूट' (Saint Lawrence 'Toot) हैं। लेकिन अपनी

देशभक्ति की भावनाओं से भी कहीं ज़्यादा, आपके दोस्त की धार्मिक कट्टरता उन्हें अजीबोगरीब गलतियाँ करने पर मजबूर कर देती है। उदाहरण के लिए, 'ला रास्पेलियर' (la Raspelière) में हमारे मेज़बानों से ज़्यादा दूर नहीं, दो जगहें हैं जिनका नाम 'मोंटमार्टिन' (Montmartin) है—'मोंटमार्टिन-सुर-मेर' और 'मोंटमार्टिन-एन-ग्रेन्स'। 'ग्रेन्स' (Graignes) के मामले में, भले पादरी बिल्कुल सही थे; उन्होंने वहाँ देखा था...

लैटिन में ग्रैग्नेस, ग्रीक में ग्रानिया, और ग्रीक में क्रेने, का अर्थ तालाब या दलदल होता है; क्रेस्मेज़, क्रोएन, ग्रेमविले, लेंग्रोन के कितने उदाहरण हम दे सकते हैं? लेकिन, जब बात मोंटमार्टिन की आती है, तो आपका स्वघोषित भाषाविद् इस बात पर अडिग रहता है कि ये संत मार्टिन को समर्पित पल्ली होने चाहिए। वह अपनी राय इस तथ्य पर आधारित करता है कि संत उनके संरक्षक हैं, लेकिन यह नहीं समझता कि उन्हें बाद में ही अपनाया गया था; या यूँ कहें कि वह मूर्तिपूजा के प्रति अपनी घृणा से अंधा हो गया है; वह यह मानने से इनकार करता है कि यदि यह संत मार्टिन का प्रश्न होता, तो हमें मोंट-सेंट-मार्टिन को उसी तरह कहना चाहिए जैसे हम मोंट-सेंट-मिशेल कहते हैं, जबकि मोंटमार्टिन नाम कहीं अधिक मूर्तिपूजक तरीके से मंगल देवता को समर्पित मंदिरों को संदर्भित करता है, जिनके अब कोई अवशेष नहीं बचे हैं, लेकिन विशाल रोमन शिविरों के आसपास निर्विवाद अस्तित्व मोंटमार्टिन नाम के बिना भी उनकी अत्यधिक संभावना को साबित करता है, जो सभी संदेहों को दूर करता है। आप देख रहे हैं कि ला रास्पेलियर में मिलने वाला छोटा सा पैम्फलेट बिल्कुल भी सही नहीं है। मैंने विरोध करते हुए कहा कि कॉम्ब्रे में पादरी ने हमें अक्सर दिलचस्प व्युत्पत्तियाँ बताई थीं। "शायद वह अपने देश में बेहतर थे, नॉर्मंडी जाने से उनका संतुलन बिगड़ गया होगा।" मैंने आगे कहा, "और इससे उन्हें कोई फायदा भी नहीं हुआ, क्योंकि वे यहाँ न्यूरोस्थीनिया लेकर आए थे और गठिया लेकर वापस चले गए।" "अरे, उनका न्यूरोस्थीनिया ही इसके लिए जिम्मेदार है। वे न्यूरोस्थीनिया से भाषा विज्ञान की ओर लौट गए हैं, जैसा कि मेरे आदरणीय गुरु पोकेलिन कहते। कॉटार्ड, हमें बताइए, क्या आपको लगता है कि न्यूरोस्थीनिया भाषा विज्ञान पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है, भाषा विज्ञान न्यूरोस्थीनिया पर सुखदायक प्रभाव डाल सकता है और न्यूरोस्थीनिया से राहत मिलने से गठिया हो सकता है?" "निस्संदेह, गठिया और न्यूरोस्थीनिया न्यूरो-आर्थराइटिस के गौण रूप हैं।" आप मेटास्टेसिस द्वारा एक से दूसरे

में जा सकते हैं।" ब्रिचोट ने कहा, "प्रख्यात प्रोफेसर, एम. पुर्गन की तरह ही लैटिन और ग्रीक से भरपूर फ्रेंच में अपनी बात रखते हैं, उनकी स्मृति मोलियर जैसी है!" "मेरे अंकल, मेरा मतलब है हमारे राष्ट्रीय सारसी से..." लेकिन उन्हें अपना वाक्य पूरा करने से रोक दिया गया। प्रोफेसर अपनी सीट से एक ज़ोरदार चीख के साथ उछल पड़े: "अरे, यह क्या!" जब उनकी ज़बान फिर से खुली, तो उन्होंने कहा, "हम मेनविले (सुना तुमने?) और रेनविले भी पार कर चुके हैं।" उन्होंने अभी-अभी देखा था कि ट्रेन सेंट-मार्स-ले-वेटू पर रुक रही थी, जहाँ ज़्यादातर यात्री उतर गए। "वे बिना रुके आगे नहीं बढ़ सकते। कैम्ब्रेमर्स के बारे में बात करते समय हमने ज़रूर इस पर ध्यान नहीं दिया होगा। मेरी बात सुनो, स्की, ध्यान दो, मैं तुम्हें 'एक मज़ेदार बात' बताने जा रहा हूँ," कॉटार्ड ने कहा, जिसे यह कहावत बहुत पसंद आ गई थी, जो कुछ मेडिकल हलकों में आम तौर पर इस्तेमाल होती थी। "राजकुमारी ज़रूर इसी ट्रेन में होगी; उसने हमें देखा नहीं होगा, और वह किसी दूसरे डिब्बे में चली गई होगी। चलो, उसे ढूँढ़ते हैं।" "उम्मीद है, इससे हम किसी मुसीबत में नहीं फँसेंगे!" और यह कहकर वह हम सबको राजकुमारी शेरबातोफ़ की तलाश में ले गया। उसने उसे एक खाली डिब्बे के कोने में 'रिव्यू डेस ड्यूक्स मोंडेस' पढ़ते हुए पाया। बहुत पहले ही, तिरस्कार के डर से, उसने अपनी जगह पर बने रहने—चाहे ज़िंदगी में हो या ट्रेन में—और जब तक दूसरा व्यक्ति उसे नमस्कार न करे, तब तक अपना हाथ आगे न बढ़ाने की आदत डाल ली थी। जब उसके वफ़ादार साथी उसके डिब्बे में दाखिल हुए, तब भी वह पढ़ती रही। मैंने उसे तुरंत पहचान लिया; यह वही महिला थी जिसने शायद अपनी हैसियत खो दी थी, लेकिन फिर भी वह ऊँचे कुल की थी—जो किसी भी हाल में, वर्दुरिन जैसे किसी 'सैलून' की शान थी—और यही वह महिला थी जिसे, इसी ट्रेन में, दो दिन पहले मैंने शायद किसी कोठे की मालकिन समझ लिया था। उसकी सामाजिक पहचान, जो पहले इतनी धुंधली थी, उसका नाम जानते ही मेरे सामने साफ़ हो गई; ठीक वैसे ही, जैसे किसी पहेली पर खूब माथापच्ची करने के बाद, आखिरकार हमें वह शब्द मिल जाता है जो सारी उलझनें सुलझा देता है—और किसी व्यक्ति के मामले में, वह शब्द उसका नाम होता है। ट्रेन में अपने साथ सफ़र करने वाले किसी व्यक्ति के बारे में दो दिन बाद यह पता चलना कि वह कौन है, किसी पत्रिका के पिछले अंक में दी गई पहेली का हल अगले अंक में पढ़ने से कहीं ज़्यादा मज़ेदार हैरानी होती है। बड़े-बड़े रेस्तरां, कसीनो और लोकल

ट्रेनें—ये सभी ऐसी सामाजिक पहेलियों की 'पारिवारिक चित्र-दीर्घाएँ' होती हैं। "राजकुमारी जी, लगता है मेनविले में हम आपसे मिल नहीं पाए! क्या हम आपके डिब्बे में आकर बैठ सकते हैं?" "क्यों नहीं, ज़रूर," राजकुमारी ने कहा। जब कोट्टार्ड ने उसे संबोधित किया—और केवल तभी—उसने अपनी पत्रिका से नज़रें हटाईं। उसकी आँखें—जो एम. डे शार्लस की आँखों जैसी ही थीं, हालाँकि थोड़ी ज़्यादा सौम्य थीं—उन लोगों को भली-भाँति देख पा रही थीं, जिनके वहाँ मौजूद होने का वह नाटक कर रही थी कि उसे कोई इल्म ही नहीं है। कोट्टार्ड ने यह निष्कर्ष निकाला कि कैम्ब्रेमर परिवार से मिलने के लिए मुझे दिया गया निमंत्रण ही मेरी सिफ़ारिश के लिए काफ़ी है; इसलिए, पल भर की हिचकिचाहट के बाद, उसने मेरा परिचय राजकुमारी से करवाया। राजकुमारी ने बड़े ही शिष्टाचार के साथ सिर झुकाकर मेरा अभिवादन किया, लेकिन ऐसा लगा मानो वह मेरा नाम पहली बार ही सुन रही हो। "हे भगवान!" डॉक्टर चिल्लाया, "मेरी पत्नी मेरे सफ़ेद रंग के 'वेस्टकोट' के बटन बदलवाना भूल गई है। अरे!" "वे औरतें—उन्हें कभी कुछ याद नहीं रहता। बेटा, तुम कभी शादी मत करना," उन्होंने मुझसे कहा। और चूँकि यह उन मज़ाकों में से एक था जिन्हें वे तब करना उचित समझते थे, जब उनके पास कहने के लिए और कुछ नहीं होता था।

कहने की ज़रूरत नहीं कि उसने अपनी आँख के कोने से राजकुमारी और बाकी वफ़ादार लोगों की तरफ़ झाँका; वे लोग—क्योंकि वह एक प्रोफ़ेसर और शिक्षाविद था—मुस्कुराकर जवाब देते, और उसके अच्छे स्वभाव तथा घमंड से मुक्ति की तारीफ़ करते। राजकुमारी ने हमें बताया कि वह युवा वायलिन वादक मिल गया है। पिछली शाम उसे सिरदर्द की वजह से बिस्तर पकड़ना पड़ा था, लेकिन वह उस शाम आ रहा था और अपने साथ अपने पिता के एक दोस्त को भी ला रहा था, जिससे उसकी मुलाक़ात Doncières में हुई थी। उसने यह बात Mme. Verdurin से जानी थी, जिनके साथ उसने उस सुबह दोपहर का खाना खाया था; उसने यह बात हमें तेज़ आवाज़ में बताई, अपने रूसी लहजे में 'r' अक्षरों को धीरे से अपने गले के पिछले हिस्से में घुमाते हुए, मानो वे 'r' नहीं, बल्कि 'l' हों। "आह! आपने आज सुबह उनके साथ दोपहर का खाना खाया," Cottard ने राजकुमारी से कहा; लेकिन अपनी नज़रें मेरी तरफ़ घुमा लीं—इस बात का मकसद मुझे यह दिखाना था कि राजकुमारी उस मालकिन के साथ कितनी गहरी जान-पहचान रखती थीं। "आप सचमुच एक वफ़ादार समर्थक हैं!" "हाँ,

मुझे वह छोटा-सा दायरा बहुत पसंद है—इतना समझदार, इतना सुहावना, कभी भी द्वेषपूर्ण नहीं, बिल्कुल सीधा-सादा, ज़रा भी दिखावा करने वाला नहीं, और अपनी उंगलियों के पोरों तक होशियार।" "अरे बाप रे! लगता है मेरा टिकट खो गया है, मुझे वह कहीं नहीं मिल रहा," Cottard चिल्लाया; उसकी घबराहट ऐसी थी जो उन परिस्थितियों में बिल्कुल ही बेतुकी थी। वह जानता था कि Douville में—जहाँ दो-एक बग्गियाँ हमारा इंतज़ार कर रही होंगी—टिकट-चेकर उसे बिना टिकट के ही जाने देगा, और तो और, वह और भी ज़्यादा विनम्रता से अपना सिर झुकाकर उसे सलाम करेगा; ताकि वह सलाम उसकी इस रियायत का एक स्पष्टीकरण बन सके—यानी, यह कि उसने Cottard को Verdurin परिवार के नियमित मेहमानों में से एक के तौर पर पहचान लिया था। "इसके लिए वे मुझे हवालात में तो नहीं डाल देंगे," डॉक्टर ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा। "आप कह रहे थे, जनाब," मैंने Brichot से पूछा, "कि यहाँ पास में ही कुछ मशहूर जल-स्रोत हुआ करते थे; हमें यह बात कैसे पता चलती है?" "अगले स्टेशन का नाम इस बात के ढेरों सबूतों में से एक है। उसका नाम Fervaches है।" "मुझे समझ नहीं आ रहा कि वह किस बारे में बात कर रहा है," राजकुमारी ने बुदबुदाते हुए कहा, मानो वह मुझसे शिष्टाचारवश कह रही हो: "वह काफ़ी उबाऊ आदमी है, है ना?" "अरे, राजकुमारी, Fervaches का मतलब होता है गर्म झरने। Fervidae aquae. लेकिन उस युवा वायलिन वादक की बात पर वापस आते हैं," Brichot ने आगे कहा, "मैं तो तुम्हें एक बहुत बड़ी खबर बताना ही भूल गया था, Cottard. क्या तुमने सुना कि हमारा बेचारा दोस्त Dechambre, जो कभी Mme. Verdurin का पसंदीदा पियानो वादक हुआ करता था, अभी-अभी गुज़र गया? यह बहुत ही दुख की बात है।" "वह काफ़ी युवा था," Cottard ने जवाब दिया, "लेकिन उसके लिवर में ज़रूर कोई दिक्कत रही होगी; उस हिस्से में कुछ न कुछ गंभीर गड़बड़ ज़रूर थी, क्योंकि वह काफ़ी समय से बहुत ही अजीब सा दिख रहा था।" "लेकिन वह इतना भी युवा नहीं था," Brichot ने कहा; "उन दिनों में, जब Elstir और Swann Mme. Verdurin के यहाँ आया करते थे, तब तक Dechambre पेरिस में अपनी एक पहचान बना चुका था—और, जो बात सबसे ज़्यादा काबिले-गौर है, वह यह कि उसने यह पहचान बिना विदेश में सफलता का 'अभिषेक' पाए ही बना ली थी। आह! वह आदमी Saint Barnum के 'सुसमाचार' का अनुयायी बिल्कुल नहीं था।" "तुम्हें गलतफहमी हुई है; उस

समय वह Mme. Verdurin के यहाँ नहीं जा सकता था—उस समय तो वह अभी भी 'पालने' (बचपन) में ही था।" "लेकिन, अगर मेरी पुरानी याददाश्त मुझे धोखा नहीं दे रही है, तो मुझे तो यही लगता है कि Dechambre, Swann के लिए Vinteuil का 'सोनाटा' बजाया करता था—उस समय, जब वह 'क्लब-मैन' (रईस), जिसने कुलीन वर्ग से नाता तोड़ लिया था, इस बात से बिल्कुल बेखबर था कि एक दिन वह हमारी 'राष्ट्रीय Odette' का 'बुर्जुआ-नुमा' राजकुमार-पति बनने वाला है।" "यह असंभव है। Vinteuil का 'सोनाटा' Mme. Verdurin के यहाँ तब बजाया गया था, जब Swann ने वहाँ आना-जाना बहुत पहले ही बंद कर दिया था," डॉक्टर ने कहा। डॉक्टर उन सभी लोगों की तरह था, जो कड़ी मेहनत करते हैं और यह सोचते हैं कि उन्हें बहुत सी ऐसी बातें याद हैं जो उनके काम की हैं—लेकिन असल में वे बहुत सी दूसरी बातें भूल जाते हैं। उनकी यह स्थिति उन्हें उन लोगों की यादों में खोकर आनंदित होने का मौका देती है, जिनके पास करने के लिए और कोई काम ही नहीं होता। "तुम पूरी तरह से गच्चा खा गए हो—हालाँकि तुम्हारा दिमाग आज भी उतना ही दुरुस्त है, जितना पहले कभी था," डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए कहा। ब्रिशो ने मान लिया कि उससे गलती हुई थी। ट्रेन रुक गई। हम 'ला सोग्न' पर थे। इस नाम ने मेरी जिज्ञासा जगा दी। मैंने कोट्टार्ड से कहा, "काश, मुझे पता चल पाता कि इन सभी नामों का मतलब क्या है।" "आपको एम. ब्रिशो से पूछना चाहिए; हो सकता है उन्हें पता हो।" ब्रिशो ने जवाब दिया, "अरे, 'ला सोग्न' का मतलब है 'ला सिकोग्न' यानी 'सिकोनिया'।" मैं तो उनसे कई और नामों के बारे में पूछने के लिए बेताब था।

अपनी 'जगह' से लगाव को भूलकर, श्रीमती शेरबाटोफ़ ने कृपापूर्वक मुझसे जगह बदलने की पेशकश की, ताकि मैं ब्रिचोट से आसानी से बात कर सकूँ, जिनसे मैं अन्य व्युत्पत्तियों के बारे में पूछना चाहता था जिनमें मेरी रुचि थी। उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि उन्हें इस बात से कोई आपत्ति नहीं है कि वे इंजन की ओर मुँह करके या पीठ करके, खड़ी होकर या बैठकर, या किसी भी तरह से यात्रा करें। जब तक उन्हें नए यात्री के इरादे पता नहीं चल जाते, तब तक वे रक्षात्मक मुद्रा में रहती थीं, लेकिन जैसे ही उन्हें पता चलता कि ये इरादे मैत्रीपूर्ण हैं, वे हर संभव प्रयास करती थीं। अंत में ट्रेन डौविल-फेटर्न स्टेशन पर रुकी, जो फेटर्न और डौविल

गाँवों से लगभग समान दूरी पर होने के कारण, उनके नाम में दो शब्द जोड़कर बनाया गया था। जब हम टिकट जमा करने वाले बैरियर पर पहुँचे, तो डॉक्टर कॉटार्ड ने हैरानी से कहा, "सैपरलिपोपेट!" और अपनी टिकट खोने का बहाना करते हुए कहा, "मुझे मेरी टिकट नहीं मिल रही, मैंने उसे खो दिया होगा।" लेकिन कलेक्टर ने अपनी टोपी उतारकर उन्हें आश्वस्त किया कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता और आदरपूर्वक मुस्कुराए। राजकुमारी (कोचमैन को निर्देश देते हुए, मानो वह श्रीमती वर्दुरिन की कोई सेविका हों, जो कैम्ब्रेमर परिवार के कारण स्टेशन नहीं आ पाई थीं, और वैसे भी वह शायद ही कभी आती थीं) मुझे और ब्रिचोट को अपने साथ एक गाड़ी में ले गईं। डॉक्टर, सैनियेट और स्की दूसरी गाड़ी में बैठ गए।

हालांकि ड्राइवर काफी युवा था, वह वर्दुरिन परिवार का पहला कोचमैन था, और इस पदवी का एकमात्र हकदार वही था। वह दिन के समय उन्हें सभी यात्राओं पर ले जाता था, क्योंकि वह सभी सड़कों से परिचित था, और शाम को श्रद्धालुओं से मिलने जाता और बाद में उन्हें वापस स्टेशन ले आता था। उसके साथ अतिरिक्त सहायक भी होते थे (जिन्हें वह आवश्यकता पड़ने पर चुनता था)। वह एक उत्कृष्ट व्यक्ति था, शांत और सक्षम, लेकिन उसका चेहरा कुछ ऐसा उदास था कि एकटक देखने से ही पता चलता था कि छोटी-छोटी बात पर भी वह क्रोधित हो जाएगा, और उसके मन में बुरे विचार आने लगेंगे। लेकिन इस समय वह काफी खुश था, क्योंकि उसने अपने भाई, जो एक और उत्कृष्ट व्यक्ति था, के लिए वर्दुरिन परिवार में जगह पक्की कर ली थी। हमने डौविल से होते हुए अपनी यात्रा शुरू की। घास के टीले गाँव से समुद्र तक फैले हुए थे, चौड़ी ढलानों में नमी और नमक की संतृप्ति ने उन्हें एक समृद्धता, कोमलता और चरम रंगों की जीवंतता प्रदान की थी। रिवेबेल के द्वीप और खाइयाँ, जो अब बालबेक की तुलना में कहीं अधिक निकट थीं, तट के इस हिस्से को मेरे लिए एक अनोखे, राहत मानचित्र जैसा रूप दे रही थीं। हम कुछ छोटे बंगलों के पास से गुज़रे, जिनमें से लगभग सभी चित्रकारों को किराए पर दिए गए थे; एक पगडंडी पर मुड़े जिस पर कुछ आवारा मवेशी, हमारे घोड़ों की तरह ही डरे हुए, दस मिनट तक हमारा रास्ता रोकते रहे, और फिर हम चट्टानी सड़क पर आ पहुँचे। "लेकिन, अमर देवताओं की कसम," ब्रिचोट ने अचानक पूछा, "चलो उस बेचारे डेचम्ब्रे के पास वापस चलते हैं; क्या आपको लगता है कि श्रीमती वर्दुरिन जानती हैं? क्या किसी ने उन्हें बताया है?" श्रीमती वर्दुरिन, समाज में रहने वाले अधिकांश लोगों की तरह,

केवल इसलिए कि उन्हें अन्य लोगों के साथ की आवश्यकता थी, उनके बारे में एक दिन के लिए भी नहीं सोचती थीं, क्योंकि उनकी मृत्यु के बाद वे न तो बुधवार को आ सकते थे, न ही शनिवार को, और न ही बिना सज-धज कर भोजन कर सकते थे। और उस छोटे से समूह के बारे में, जो इस मामले में सभी सैलून का एक प्रतीक था, यह नहीं कहा जा सकता था कि उसमें जीवित सदस्यों से अधिक मृत सदस्य थे, क्योंकि जैसे ही कोई मर जाता था, ऐसा लगता था मानो वह कभी अस्तित्व में ही नहीं था। लेकिन, मृतक के बारे में बात करने की झंझट से बचने के लिए, यानी शोक के प्रतीक के रूप में एक भोज को स्थगित करने के लिए—जो कि मालकिन के लिए असंभव था—एम. वर्दुरिन यह बहाना करते थे कि वफादार की मृत्यु का उनकी पत्नी पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा है कि उनके स्वास्थ्य के हित में, इसका जिक्र उनसे कभी नहीं किया जाना चाहिए। इसके अलावा, और शायद इसलिए कि अन्य लोगों की मृत्यु उन्हें इतनी निर्णायक, इतनी तुच्छ दुर्घटना लगती थी, अपनी मृत्यु का विचार उन्हें भयभीत कर देता था और वे किसी भी ऐसे विचार से बचते थे जो इस ओर ले जा सकता था। ब्रिचोट की बात करें तो, चूंकि वह ईमानदारी की मूर्ति थे और एम. वर्दुरिन की अपनी पत्नी के बारे में कही गई बातों से पूरी तरह प्रभावित थे, इसलिए वे अपने मित्र के लिए इस बात से भयभीत थे कि इस तरह के शोक से उनकी पत्नी को कितना दुख होगा। "हाँ, उन्हें आज सुबह सबसे बुरी खबर पता चल गई थी," राजकुमारी ने कहा, "उनसे इसे छुपाना असंभव था।" "आह! ज़्यूस की हज़ार गर्जनाएँ!" ब्रिचोट चिल्लाए। "आह! यह बहुत बड़ा सदमा रहा होगा, पच्चीस साल पुराने दोस्त का निधन। वह हममें से एक थे।" "बिल्कुल, बिल्कुल, आप और क्या उम्मीद कर सकती हैं? ऐसी घटनाएं दुखदायी होती ही हैं; लेकिन मैडम वर्दुरिन एक बहादुर महिला हैं, वह भावुकता से कहीं अधिक बौद्धिक हैं।" "मैं डॉक्टर से पूरी तरह सहमत नहीं हूँ," राजकुमारी ने कहा, जिनकी तेज़ वाणी और धीमी आवाज़ उन्हें निश्चित रूप से उदास और विद्रोही दोनों दिखा रही थी। "श्रीमती वर्दुरिन, अपने कठोर बाहरी रूप के नीचे, संवेदनशीलता का खजाना छिपाती हैं। श्री वर्दुरिन ने मुझे बताया कि उन्हें पेरिस में अंतिम संस्कार के लिए जाने से रोकने में बहुत कठिनाई हुई थी; उन्हें मजबूरन उन्हें यह सोचने देना पड़ा कि यह सब गाँव में ही होगा।" "अरे! वो पेरिस जाना चाहती थी, है ना? बेशक, मैं जानता हूँ कि उसका दिल भी है, शायद ज़रूरत से ज़्यादा ही। बेचारा डेचम्ब्रे! जैसा कि मैडम वर्दुरिन ने दो महीने पहले कहा

था: 'उसके सामने प्लांटे, पाडेरेव्स्की, यहाँ तक कि रिस्लर भी कुछ नहीं हैं!' आह, वो उस चकाचौंध के भूखे नीरो से भी ज़्यादा सही कह सकता था, जिसने जर्मन विद्वत्ता को भी आत्मसात कर लिया है: Qualis artifex pereo! लेकिन कम से कम डेचम्ब्रे की मृत्यु तो अपने पुरोहिती जीवन की पूर्ति करते हुए, बीथोवेन की भक्ति की आभा में हुई होगी; और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसने वीरतापूर्वक अंतिम सांस ली होगी; जर्मन संगीत के उस व्याख्याकार को डी में मास मनाते हुए मृत्यु को प्राप्त होने का पूरा अधिकार था। लेकिन अंततः, वह अदृश्य का स्वागत करने वाला व्यक्ति था, क्योंकि वह प्रेरित कलाकार कभी-कभी अपने पेरिस के शैम्पेन संस्कृति से, एक गार्ड की शान और चतुराई का प्रदर्शन करता था।"

अब जिस ऊंचाई पर हम पहुँच चुके थे, वहाँ से समुद्र बालबेक की तरह ऊँची-नीची पर्वत श्रृंखलाओं का आभास नहीं करा रहा था, बल्कि इसके विपरीत, किसी पर्वत की चोटी से या उसके किनारे से घूमती हुई सड़क से देखने पर नीले-हरे हिमनद या नीचे स्थित चमकते मैदान का दृश्य दिखाई दे रहा था। धाराओं की रेखाएँ मानो सतह पर स्थिर थीं और उन्होंने वहाँ हमेशा के लिए अपने संकेंद्रित वृत्त बना रखे थे; समुद्र का चमकीला चेहरा, जिसका रंग सूक्ष्म रूप से बदल रहा था, खाड़ी के मुहाने की ओर, जहाँ एक मुहाना खुलता था, दूधिया नीले रंग का हो गया था, जिसमें छोटी-छोटी काली नावें, जो हिलती-डुलती नहीं थीं, मक्खियों की तरह फंसी हुई प्रतीत हो रही थीं। मुझे लगा कि इससे विशाल दृश्य कहीं और नहीं मिल सकता। लेकिन सड़क के हर मोड़ पर एक नया विस्तार जुड़ता चला गया और जब हम डौविल टोल-हाउस पहुँचे, तो चट्टान की वह चोटी, जिसने तब तक खाड़ी के आधे हिस्से को हमसे छिपा रखा था, हट गई, और अचानक मैंने अपने बाईं ओर एक ऐसी गहरी खाई देखी जो पहले वाली खाई जितनी ही गहरी थी, लेकिन जिसने दूसरी खाई के आकार को बदल दिया और उसकी सुंदरता को दुगना कर दिया। इस ऊँचे स्थान की हवा में एक ऐसी ताजगी और शुद्धता थी जिसने मुझे मदहोश कर दिया। मैं वर्दुरिन परिवार का बहुत आभारी था; उनके द्वारा हमारे लिए गाड़ी भेजना मुझे उनकी दयालुता का एक मार्मिक कार्य लगा। मेरा मन कर रहा था कि मैं राजकुमारी को चूम लूँ। मैंने उनसे कहा कि मैंने इससे पहले कभी इतनी सुंदर जगह नहीं देखी। उन्होंने कहा कि उन्हें भी यह जगह किसी भी अन्य जगह से ज़्यादा प्यारी है। लेकिन मैं देख सकता था कि उनके लिए, और वर्दुरिन परिवार के लिए भी, जो बात वास्तव में

मायने रखती थी, वह पर्यटकों की तरह नज़ारे को निहारना नहीं था, बल्कि वहाँ अच्छे भोजन का आनंद लेना, अपने पसंदीदा लोगों का मनोरंजन करना, पत्र लिखना, किताबें पढ़ना, संक्षेप में, इन परिवेशों में रहना, निष्क्रिय रूप से दृश्य की सुंदरता को अपने भीतर समाहित होने देना था, बजाय इसके कि इसे अपने ध्यान का केंद्र बनाया जाए।

टोल-हाउस के बाद, जहाँ गाड़ी समुद्र से इतनी ऊँचाई पर एक पल के लिए रुकी थी कि मानो किसी पहाड़ की चोटी से नीचे नीले समुद्र का नज़ारा देखकर चक्कर आने लगता था, मैंने खिड़की खोली; हर लहर की आवाज़, जो बारी-बारी से टूट रही थी, साफ़ सुनाई दे रही थी, उसकी कोमलता और सटीकता में एक अलग ही दिव्यता थी। क्या यह माप के उस सूचकांक की तरह नहीं था जो हमारी सभी सामान्य धारणाओं को उलट देता है और हमें दिखाता है कि ऊर्ध्वाधर दूरियों को क्षैतिज दूरियों के साथ समन्वित किया जा सकता है, उस धारणा के विपरीत जो हमारा मन आमतौर पर उनके बारे में बनाता है; और यह कि यद्यपि वे इस तरह आकाश को हमारे करीब लाते हैं, वे विशाल नहीं हैं; वास्तव में वे उस ध्वनि के लिए कम विशाल हैं जो उन छोटी लहरों की ध्वनि की तरह उनसे होकर गुज़रती है, क्योंकि जिस माध्यम से उसे गुज़रना पड़ता है वह शुद्ध होता है। और वास्तव में यदि कोई टोल-हाउस से बस कुछ गज नीचे चला जाए, तो वह लहरों की उस ध्वनि को पहचान नहीं पाएगा, जिसे छह सौ फीट की चट्टान ने उसकी कोमल, सूक्ष्म और सटीक ध्वनि से वंचित नहीं किया था। मैंने मन ही मन सोचा कि मेरी दादी इसे सुनकर उतना ही आनंदित होतीं जितना वे प्रकृति और कला की हर अभिव्यक्ति को देखकर होती थीं, जिसकी सादगी में ही भव्यता छिपी होती है। मैं उस समय परमानंद में थी, और मेरे आस-पास की हर चीज़ भी उसी तरह ऊपर उठ रही थी। यह देखकर मेरा दिल पिघल गया कि वर्दुरिन परिवार ने हमें स्टेशन पर लेने के लिए संदेश भेजा था। मैंने राजकुमारी से भी यही कहा, जिन्हें लगा कि मैं शिष्टाचार के इस साधारण से काम को बढ़ा-चढ़ाकर बता रही हूँ। मुझे पता है कि बाद में उन्होंने कॉटार्ड से स्वीकार किया कि उन्हें मैं बहुत उत्साहित लगी; कॉटार्ड ने जवाब दिया कि मैं बहुत भावुक हूँ, मुझे शांत करने वाली दवाइयाँ लेनी चाहिए और बुनाई शुरू कर देनी चाहिए। मैंने राजकुमारी को हर पेड़, गुलाबों से ढके हर छोटे घर को दिखाया, मैंने उन्हें हर चीज़ की प्रशंसा करवाई, मेरा मन कर रहा था कि मैं उन्हें अपनी बाहों में भर लूँ और अपने दिल से लगा लूँ। उन्होंने मुझसे कहा कि उन्हें

मुझमें चित्रकला की प्रतिभा दिखाई देती है, कि मुझे रेखाचित्र अवश्य बनाने चाहिए, और उन्हें आश्चर्य है कि किसी ने उन्हें इसके बारे में नहीं बताया। और उन्होंने स्वीकार किया कि देश वास्तव में बहुत सुंदर था। हम उस छोटे से गाँव एंगल्सकेविल (ब्रिचोट ने हमें बताया कि इसका नाम एंगलबर्टी विला है) से गुज़रे, जो अपनी ऊँचाई पर बसा हुआ था। "लेकिन क्या आपको पूरा यकीन है कि डेचैम्ब्रे की मृत्यु के बावजूद आज शाम पार्टी होगी, राजकुमारी?" वह बिना सोचे समझे आगे बोले कि स्टेशन पर जिस गाड़ी में हम बैठे थे, उसकी मौजूदगी ही उनके सवाल का जवाब थी। "हाँ," राजकुमारी ने कहा, "श्रीमान वर्दुरिन ने ज़ोर देकर कहा कि इसे टाला नहीं जाना चाहिए, सिर्फ़ इसलिए कि उनकी पत्नी इस बारे में न सोचें। और इसके अलावा, इतने सालों से हर बुधवार को दावत देने के बाद, उनकी आदतों में ऐसा बदलाव उन्हें परेशान कर सकता था। उनकी नसें आजकल बहुत कमज़ोर हैं। श्रीमान वर्दुरिन को खास तौर पर खुशी हुई कि आप आज शाम खाने पर आ रही हैं, क्योंकि उन्हें पता था कि इससे श्रीमती वर्दुरिन का ध्यान बँट जाएगा," राजकुमारी ने यह दिखावा भूलकर कहा कि उन्होंने मेरा नाम पहले कभी नहीं सुना था। “मुझे लगता है कि श्रीमती वर्दुरिन के सामने कुछ न कहना ही बेहतर होगा,” राजकुमारी ने आगे कहा। “आह! मुझे खुशी है कि आपने मुझे चेतावनी दी,” ब्रिचोट ने सरलता से जवाब दिया। “मैं आपका सुझाव कॉटार्ड को बता दूंगा।” गाड़ी एक पल के लिए रुकी। फिर वह आगे बढ़ी, लेकिन गांव की गली में पहियों की आवाज़ बंद हो गई थी। हम ला रास्पेलियर के मुख्य मार्ग पर मुड़ गए थे, जहाँ श्री वर्दुरिन सीढ़ियों पर हमारा इंतज़ार कर रहे थे। “मैंने डिनर जैकेट पहनकर अच्छा किया,” उन्होंने प्रसन्नता से कहा, “क्योंकि मेरे दल में इतने अच्छे सज्जन हैं।” और जब मैंने कपड़े न बदलने के लिए माफी मांगी, तो उन्होंने कहा: “अरे, कोई बात नहीं। हम सब यहाँ दोस्त हैं। मुझे आपको अपनी एक डिनर जैकेट देने में खुशी होती, लेकिन वह आपको फिट नहीं आएगी।” जब ब्रिचोट ला रास्पेलियर के हॉल में दाखिल हुए और पियानोवादक की मृत्यु पर शोक व्यक्त किया, तो उन्होंने भावुकता से भरे स्वर में मेज़बान से हाथ मिलाया, लेकिन मेज़बान ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। मैंने उन्हें बताया कि मुझे यहाँ का नज़ारा कितना पसंद आया। "अहा! बहुत बढ़िया, और आपने अभी कुछ नहीं देखा, हमें आपको घुमाना चाहिए। क्यों न आप यहाँ एक-दो सप्ताह बिताएँ, यहाँ की हवा बहुत अच्छी है।" ब्रिचोट को लगा कि शायद उनका हाथ मिलाना समझ नहीं पाया। "अहा! बेचारा

डेचम्ब्रे!" उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा, कहीं श्रीमती वर्दुरिन आस-पास न हों। "यह बहुत दुखद है," श्रीमती वर्दुरिन ने हल्के स्वर में उत्तर दिया। "इतना जवान," ब्रिचोट ने बात जारी रखी। इन निरर्थकों के लिए रोके जाने से नाराज़ होकर, एम. वर्दुरिन ने जल्दबाज़ी भरे स्वर में और एक कड़वी आह के साथ उत्तर दिया, जो दुःख की नहीं बल्कि चिड़चिड़ी अधीरता की थी: "हाँ, बिल्कुल, लेकिन अब क्या किया जाए? अब पछताने से कोई फायदा नहीं, उसके बारे में बात करने से वह वापस तो नहीं आ जाएगा, है ना?" और, उनकी विनम्रता और प्रसन्नता लौट आई: "चलो, मेरे प्यारे ब्रिचोट, जल्दी से अपना सामान उतारो। हमारे पास एक सूप है जिसे इंतज़ार नहीं कराया जा सकता। लेकिन, भगवान के लिए, मैडम वर्दुरिन से डेचैम्ब्रे के बारे में बात करना शुरू मत करो। तुम जानते हो कि वह हमेशा अपनी भावनाओं को छुपाती हैं, लेकिन वह बहुत ही संवेदनशील हैं। मैं तुम्हें वचन देता हूँ, जब उन्होंने सुना कि डेचैम्ब्रे मर गया है, तो वह लगभग रो पड़ी थीं," एम. वर्दुरिन ने गहरे व्यंग्य के स्वर में कहा। उनकी बातों को सुनकर ऐसा लग सकता था कि तीस साल पुराने दोस्त की मौत पर शोक मनाना एक तरह का पागलपन है, और दूसरी ओर यह भी समझ में आता था कि एम. वर्दुरिन और उनकी पत्नी का अटूट रिश्ता उन्हें लगातार आलोचना करने और उन्हें अक्सर चिढ़ाने से नहीं रोकता था। "अगर आप उससे इस बारे में बात करेंगे, तो वह जाकर फिर से बीमार पड़ जाएगी। यह बहुत दुखद है, ब्रोंकाइटिस के तीन हफ्ते बाद ही। जब ऐसा होता है, तो मुझे ही बीमार की देखभाल करनी पड़ती है। आप समझ सकते हैं कि मैं इससे कितना तंग आ चुका हूँ। डेचैम्ब्रे की मौत पर जितना चाहें उतना शोक मनाएँ। उसके बारे में सोचें, लेकिन उसके बारे में बात न करें। मैं डेचैम्ब्रे को बहुत पसंद करता था, लेकिन आप मुझे अपनी पत्नी से और भी ज्यादा प्यार करने के लिए दोष नहीं दे सकते। ये रहे कॉटार्ड, आप उनसे पूछ सकते हैं।" और वास्तव में, वह जानते थे कि एक पारिवारिक डॉक्टर कई छोटी-छोटी सेवाएँ कर सकता है, जैसे कि यह सलाह देना कि किसी को शोक में डूबना नहीं चाहिए।

विनम्र स्वभाव वाले कॉटार्ड ने मालकिन से कहा था: "अगर तुम इस तरह परेशान होती रहोगी, तो कल तुम मुझे 102 डिग्री बुखार दे दोगी," ठीक वैसे ही जैसे वह रसोइए से कहता: "कल तुम मुझे रई दे दोगी।" जब चिकित्सा बीमार को ठीक करने में विफल रहती है, तो वह क्रियाओं और सर्वनामों के अर्थ को बदलने में लग जाती है।

एम. वर्दुरिन को यह देखकर खुशी हुई कि सैनीएट ने, दो दिन पहले हुए अपमान के बावजूद, उस छोटे समूह को नहीं छोड़ा था। और वास्तव में, श्रीमती वर्दुरिन और उनके पति ने अपने आलस्य में ऐसी क्रूरता विकसित कर ली थी जिसके लिए अब कभी-कभार मिलने वाले बड़े अवसर पर्याप्त नहीं थे। वे ओडेट और स्वान के बीच, ब्रिचोट और उसकी प्रेमिका के बीच दरार पैदा करने में सफल रहे थे। यह तय था कि वे किसी और के साथ फिर से ऐसा करने की कोशिश करेंगे। लेकिन ऐसा अवसर हर दिन नहीं मिलता था। जबकि, अपनी अत्यधिक संवेदनशीलता, डरपोक और जल्दी उत्तेजित होने वाली शर्म के कारण, सैनीएट उन्हें साल के हर दिन कोड़े मारने का एक जरिया मुहैया कराता था। और इसलिए, उनके असफल होने के डर से, वे हमेशा उसे दोस्ताना और लुभावने शब्दों से आमंत्रित करने का ध्यान रखते थे, जैसे स्कूल के बड़े लड़के या रेजिमेंट के पुराने सैनिक किसी नए रंगरूट से बात करते हैं, जिसे वे बहला-फुसलाकर अपने चंगुल में लाना चाहते हैं, ताकि उसे क्षण भर के लिए खुश कर सकें और जब वह बच न सके तो उसे धमका सकें। "जो भी करो," ब्रिचोट ने कॉटार्ड को याद दिलाया, जिसने एम. वर्दुरिन की बात नहीं सुनी थी, "मैडम वर्दुरिन के सामने चुप रहो। डरो मत, ओ कॉटार्ड, तुम एक ज्ञानी व्यक्ति से बात कर रहे हो, जैसा कि थियोक्रिटस कहते हैं। इसके अलावा, एम. वर्दुरिन सही हैं, विलाप करने का क्या फायदा," वह आगे बोला, क्योंकि वह भाषण के रूपों और उनसे उत्पन्न विचारों को आत्मसात करने में सक्षम था, लेकिन सूक्ष्म बोध न होने के कारण, उसने एम. वर्दुरिन की टिप्पणियों में सबसे साहसी संयम की प्रशंसा की थी। "फिर भी, यह एक महान प्रतिभा है जो दुनिया से चली गई है।" "क्या, आप अभी भी डेचैम्ब्रे के बारे में बात कर रहे हैं?" एम. वर्दुरिन ने कहा, जो हमसे आगे निकल गए थे, और यह देखकर कि हम उनका पीछा नहीं कर रहे हैं, वापस मुड़ गए थे। "सुनो," उसने ब्रिचोट से कहा, "अतिशयोक्ति से कुछ हासिल नहीं होता। उसकी मृत्यु उसे प्रतिभावान बताने का बहाना नहीं है, वह ऐसा था ही नहीं। मैं मानता हूँ कि वह अच्छा बजाता था, और उससे भी बढ़कर, वह यहाँ अपने सही माहौल में था; यहाँ से हटाए जाने पर उसका अस्तित्व ही समाप्त हो गया। मेरी पत्नी उस पर मोहित थी और उसने ही उसकी प्रतिष्ठा बनाई। तुम जानते हो कि वह कैसी है। मैं और आगे बढ़ता हूँ, उसकी अपनी प्रतिष्ठा के हित में, उसकी मृत्यु सही समय पर हुई है, वह पूरी तरह से तैयार है, जैसे पैम्पिल्स की अतुलनीय रेसिपी के अनुसार ग्रिल की

गई केन की युवतियाँ, मुझे उम्मीद है (जब तक कि तुम हमें इस कसबाह में, जो आसमान की सभी हवाओं के लिए खुला है, अपनी विलाप भरी बातों से पूरी रात यहाँ खड़ा न रखो)। तुम सच में हमसे यह उम्मीद नहीं करते कि डेचम्ब्रे की मृत्यु से हम सब भूख से मर जाएँगे, जबकि पिछले एक साल से वह संगीत कार्यक्रम देने से पहले सुरों का अभ्यास करने के लिए बाध्य था; केवल कुछ पल के लिए, और केवल कुछ पल के लिए, अपनी कलाई की लचीलता को पुनः प्राप्त करने के लिए। इसके अलावा, आज शाम आप किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने वाले हैं, जो डेचम्ब्रे से कहीं अधिक महान कलाकार है, एक नौजवान जिसे मेरी पत्नी ने खोजा है (जैसे उसने डेचम्ब्रे, पैडेरेव्स्की और बाकी सभी को खोजा था): "मोरेल। वह अभी तक नहीं आया है, धिक्कार है उस पर। वह अपने परिवार के एक पुराने दोस्त के साथ आ रहा है, जिसे उसने अपने साथ ले लिया है और जो उसे इतना ऊबा देता है कि उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं, लेकिन अन्यथा, अपने पिता से झगड़ा न करने के लिए, उसे डोनसिएरेस में रुककर उसका साथ देना पड़ता: बैरन डी चार्लस।" सभी वफादार लोग ड्राइंग रूम में दाखिल हुए। एम. वर्दुरिन, जो मेरे साथ तब तक रुके रहे जब तक मैंने अपने कपड़े नहीं उतारे, उन्होंने मजाक में मेरा हाथ पकड़ लिया, जैसा कि कोई मेजबान डिनर पार्टी में करता है जब कोई महिला साथ देने के लिए मौजूद नहीं होती। "क्या आपकी यात्रा सुखद रही?" “हाँ, श्री ब्रिचोट ने मुझे कुछ ऐसी बातें बताईं जिनमें मेरी बहुत रुचि थी,” मैंने शब्दों की व्युत्पत्ति के बारे में सोचते हुए कहा, और इसलिए भी क्योंकि मैंने सुना था कि वर्दुरिन परिवार ब्रिचोट की बहुत प्रशंसा करता था। “मुझे आश्चर्य है कि उन्होंने आपको कुछ बताया,” श्री वर्दुरिन ने कहा, “वे बहुत ही एकांतप्रिय व्यक्ति हैं, और अपने ज्ञान के बारे में बहुत कम बोलते हैं।” यह प्रशंसा मुझे कुछ खास उपयुक्त नहीं लगी। “वे आकर्षक लगते हैं,” मैंने टिप्पणी की। “बेहतरीन, मनमोहक, ऐसे व्यक्ति जिनसे आप हर दिन मिलते नहीं, उनका स्वभाव कितना सहज और अनोखा है, मेरी पत्नी उन्हें बहुत पसंद करती है, और मैं भी!” श्री वर्दुरिन ने अतिशयोक्तिपूर्ण लहजे में उत्तर दिया, मानो कोई पाठ दोहरा रहे हों। तभी मुझे समझ आया कि ब्रिचोट के बारे में उन्होंने जो कहा था वह व्यंग्यात्मक था। और मैंने स्वयं से पूछा कि क्या श्री वर्दुरिन, उन पुराने दिनों के बाद से, जिनके बारे में मैंने सुना था, अपनी पत्नी के प्रभाव से मुक्त नहीं हो गए थे।

मूर्तिकार को यह जानकर अत्यंत आश्चर्य हुआ कि वर्दुरिन परिवार एम. डी चार्लस को अपने घर में ठहराने के लिए तैयार था। जबकि फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में, जहाँ एम. डी चार्लस बहुत प्रसिद्ध थे, किसी ने भी उनके नैतिक मूल्यों का जिक्र नहीं किया (जिनके बारे में अधिकांश लोगों को कोई संदेह नहीं था, अन्य लोग संशय में थे, उन्हें गहन लेकिन प्लेटोनिक मित्रता और अविवेकी व्यवहार का सूचक मानते थे, जबकि कुछ प्रबुद्ध लोग किसी भी दुर्भावनापूर्ण गैलार्डन द्वारा लगाए गए किसी भी आरोप का पुरजोर खंडन करते थे)। वहीं दूसरी ओर, उनके नैतिक मूल्यों की, जिनकी प्रकृति शायद कुछ घनिष्ठ मित्रों को ही ज्ञात थी, उनके आस-पास के लोगों से दूर प्रतिदिन निंदा की जा रही थी, ठीक उसी प्रकार जैसे कभी-कभी तोपखाने की आवाज केवल सन्नाटे के पार ही सुनाई देती है। इसके अलावा, उन पेशेवर और कलात्मक हलकों में जहाँ उन्हें उलटफेर का आदर्श उदाहरण माना जाता था, समाज में उनकी उच्च स्थिति और उनके कुलीन वंश के बारे में किसी को कुछ पता नहीं था। यह प्रक्रिया रोमानिया के लोगों के बीच प्रचलित उस प्रक्रिया के समान थी जिसके कारण रोंसार्ड का नाम एक महान कुलीन व्यक्ति के रूप में जाना जाता है, जबकि उनके काव्य कार्यों के बारे में वहाँ कोई जानकारी नहीं है। इतना ही नहीं, रोंसार्ड की कुलीनता के बारे में रोमानियाई धारणा एक त्रुटि पर आधारित है। इसी प्रकार, यदि चित्रकारों और अभिनेताओं की दुनिया में एम. डी चार्लस की इतनी बदनामी थी, तो इसका कारण यह था कि लोग उन्हें एक ऐसे कॉम्टे लेब्लोइस डी चार्लस के साथ भ्रमित कर देते थे जिनका उनसे कोई संबंध नहीं था (या यदि था भी, तो बहुत दूर का संबंध था), और जिन्हें संभवतः गलती से एक ऐतिहासिक पुलिस छापे के दौरान गिरफ्तार कर लिया गया था। संक्षेप में, हमारे एम. डी चार्लस से जुड़ी सभी कहानियाँ किसी और की ओर इशारा करती थीं। कई पेशेवरों ने शपथपूर्वक दावा किया कि उनके एम. डी चार्लस के साथ संबंध थे, और उन्होंने ऐसा सद्भावना से किया, यह मानते हुए कि नकली एम. डी चार्लस ही असली था, और नकली एम. डी चार्लस ने संभवतः, आंशिक रूप से कुलीनता के दिखावे के कारण, और आंशिक रूप से अपने दुराचार को छिपाने के लिए, एक भ्रम को बढ़ावा दिया, जो असली एम. डी चार्लस (वह बैरन जिसे हम पहले ही जानते हैं) के लिए लंबे समय तक हानिकारक रहा, और बाद में, जब उसका पतन शुरू हुआ, तो यह उसके लिए एक सुविधा बन गया, क्योंकि इससे उसे यह कहने में भी सक्षम बनाया गया: "यह मैं नहीं हूँ।"

और वर्तमान मामले में, अफवाहें उसके बारे में नहीं थीं। अंततः, एक वास्तविक तथ्य (बैरन की प्रवृत्तियाँ) की रिपोर्टों की असत्यता को और भी पुष्ट करने वाली बात यह थी कि उसका एक लेखक के साथ घनिष्ठ और पूरी तरह से पवित्र मित्रता थी, जिसने नाट्य जगत में किसी कारणवश ऐसी ही प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली थी जिसका वह किसी भी तरह से हकदार नहीं था। जब उन्हें एक साथ किसी शो के पहले शो में देखा जाता था, तो लोग कहते थे: "देखो," ठीक वैसे ही जैसे यह माना जाता था कि डचेस डी गुएरमांटेस के प्रिंसेस डी पार्म के साथ अनैतिक संबंध थे; यह एक अटूट किंवदंती थी, क्योंकि इसे केवल उन दो महान महिलाओं की उपस्थिति में ही गलत साबित किया जा सकता था, जिनके पास इसे दोहराने वाले लोग संभवतः थिएटर में उनके चश्मे से उन्हें घूरने और बगल की सीट पर बैठे व्यक्ति से उनकी निंदा करने के अलावा कभी नहीं पहुँच पाते। एम. डी चार्लस के नैतिक मूल्यों को देखते हुए, मूर्तिकार ने और भी आसानी से यह निष्कर्ष निकाला कि बैरन की सामाजिक स्थिति भी उतनी ही निम्न होगी, क्योंकि उसे एम. डी चार्लस के परिवार, उनकी उपाधि या उनके नाम के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। जिस प्रकार कॉटार्ड ने यह कल्पना की थी कि हर कोई जानता है कि डॉक्टर ऑफ मेडिसिन की उपाधि का कोई महत्व नहीं है, जबकि अस्पताल में सलाहकार की उपाधि का महत्व होता है, उसी प्रकार समाज में लोग यह मानकर गलती करते हैं कि हर किसी के मन में अपने नाम के सामाजिक महत्व का वही विचार होता है जो उनके और उनके समूह के अन्य लोगों के मन में होता है।

प्रिंस डी'एग्रीजेंट को एक क्लब के नौकर ने धोखेबाज समझा, जिस पर उनका पच्चीस लुई का कर्ज था। उन्होंने अपनी अहमियत फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में ही दोबारा हासिल की, जहाँ उनकी तीन बहनें डचेस थीं। दरअसल, महान रईस का प्रभाव उन साधारण लोगों में नहीं, जिनकी नज़र में उनका कोई महत्व नहीं है, बल्कि उन चतुर लोगों में है जो हर बात को समझते हैं। एम. डी चार्लस को भी उसी शाम पता चला कि उनके मेज़बान को सबसे प्रतिष्ठित ड्यूक परिवारों के बारे में बहुत कम जानकारी थी।

मूर्तिकार को पूरा यकीन था कि वर्दुरिन परिवार एक दागदार प्रतिष्ठा वाले व्यक्ति को अपने इतने प्रतिष्ठित परिवार में प्रवेश देकर एक गंभीर गलती कर रहा है, इसलिए उसने मालकिन को एक तरफ ले जाना अपना कर्तव्य समझा। "आप पूरी तरह से गलत हैं, वैसे भी मैं उन

कहानियों पर कभी ध्यान नहीं देती, और अगर यह सच भी होता, तो मैं यह कहना चाहूँगी कि इससे मेरी छवि को कोई नुकसान नहीं पहुँचता!" श्रीमती वर्दुरिन ने क्रोधित होकर उत्तर दिया, क्योंकि मोरेल बुधवार के कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था, इसलिए उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि वे उसे किसी भी तरह से नाराज न करें। जहाँ तक कॉटार्ड की बात है, वह कोई राय नहीं दे सका, क्योंकि उसने ऊपर जाकर शौचालय में कुछ काम निपटाने की अनुमति माँगी थी, और उसके बाद श्री वर्दुरिन के शयनकक्ष में एक मरीज के लिए एक अत्यंत आवश्यक पत्र लिखना था।

पेरिस से आए एक महान प्रकाशक, जो रात के खाने पर आमंत्रित होने की उम्मीद से आए थे, अचानक और तेज़ी से चले गए, यह महसूस करते हुए कि वे इस छोटे से समूह के लिए उतने काबिल नहीं थे। वे लंबे, हट्टे-कट्टे, गहरे रंग के, विद्वान और कुछ हद तक तीखे स्वभाव के व्यक्ति थे। उन्हें देखकर ऐसा लगता था मानो कोई तेज़ धार वाला चाकू हो।

श्रीमती वर्दुरिन ने हमें अपने विशाल ड्राइंग रूम में स्वागत किया, जहाँ घास, खसखस और जंगली फूलों के प्रदर्शन थे, जिन्हें उसी सुबह तोड़ा गया था, और दीवारों पर दो शताब्दी पहले एक उत्कृष्ट कलाकार द्वारा चित्रित इसी तरह के विषय पर चित्र बने हुए थे। श्रीमती वर्दुरिन अपने एक पुराने दोस्त के साथ ताश खेल रही थीं, तभी एक पल के लिए उठीं और हमसे एक मिनट के लिए अपना खेल खत्म करने का अनुरोध किया, इस दौरान उन्होंने हमसे कुछ बातें भी कीं। हालाँकि, मैंने उन्हें अपने अनुभव के बारे में जो बताया, उससे वे पूरी तरह संतुष्ट नहीं हुईं। एक तो मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वे और उनके पति हर दिन उन सूर्यास्तों के समय से बहुत पहले घर के अंदर आ जाते थे, जिन्हें उस चट्टान से देखना बहुत सुंदर माना जाता था, और ला रास्पेलियर की छत से तो और भी सुंदर, और जिन्हें देखने के लिए मैं मीलों का सफर तय कर सकता था। "हाँ, यह अतुलनीय है," श्रीमती वर्दुरिन ने लापरवाही से कहा, कमरे को कांच की दीवार देने वाली विशाल खिड़कियों की ओर एक नज़र डालते हुए। “भले ही यह हमेशा हमारे सामने हो, फिर भी हम इससे कभी नहीं ऊबते,” और उसने अपना ध्यान वापस अपने कार्डों पर लगा दिया। अब मेरा उत्साह ही मुझे नखरेबाज़ बना रहा था। मैंने खेद व्यक्त किया कि मैं ड्राइंग रूम से डार्नेटल की चट्टानें नहीं देख सकता, जिनके बारे में एल्स्टिर ने मुझे बताया था कि उस समय वे बहुत सुंदर लगती हैं, जब उनमें इतने सारे रंग प्रतिबिंबित

होते हैं। “अरे! आप उन्हें यहाँ से नहीं देख सकते, आपको पार्क के अंत तक, 'खाड़ी के नज़ारे' तक जाना होगा। वहाँ की सीट से आप पूरा दृश्य देख सकते हैं। लेकिन आप वहाँ अकेले नहीं जा सकते, आप रास्ता भटक जाएँगे। अगर आप चाहें तो मैं आपको वहाँ ले जा सकती हूँ,” उसने दयालुता से कहा। “नहीं, नहीं, आप उस दिन की अपनी बीमारी से संतुष्ट नहीं हैं, आप फिर से बीमार होना चाहते हैं। वह वापस आएगा, वह खाड़ी का नज़ारा किसी और समय देख लेगा।” मैंने ज़िद नहीं की, और समझ गया कि वर्दुरिन परिवार के लिए इतना जानना ही काफ़ी था कि यह सूर्यास्त उनके ड्राइंग रूम या डाइनिंग रूम में एक शानदार पेंटिंग की तरह, एक अनमोल जापानी एनामेल की तरह प्रवेश करता था, और ला रास्पेलियर के लिए चुकाए जा रहे ऊँचे किराए को जायज़ ठहराता था, जिसमें प्लेट और लिनेन तो थे, लेकिन जिस पर वे शायद ही कभी नज़र डालते थे; उनके लिए यहाँ महत्वपूर्ण था आराम से रहना, सैर पर जाना, अच्छा खाना खाना, बातें करना, और अपने मनपसंद दोस्तों का मनोरंजन करना, जिन्हें वे बिलियर्ड्स के मनोरंजक खेल, बढ़िया भोजन और खुशनुमा चाय पार्टियों का आनंद देते थे। हालाँकि, बाद में मैंने देखा कि उन्होंने कितनी समझदारी से इस इलाके को जान लिया था, और वे अपने मेहमानों को उतनी ही अनोखी सैर पर ले जाते थे जितना कि वे उन्हें जो संगीत सुनाते थे। ला रास्पेलियर के फूल, समुद्र किनारे की सड़कें, पुराने घर और अनदेखे गिरजाघर, श्री वर्दुरिन के जीवन में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे कि जो लोग उन्हें केवल पेरिस में देखते थे और जो स्वयं समुद्र किनारे और ग्रामीण जीवन के स्थान पर शहरी जीवन की सुख-सुविधाओं को अपना लेते थे, वे शायद ही समझ पाते थे कि वे स्वयं अपने जीवन को किस रूप में देखते थे या उनके सुख-सुविधाओं का उनके लिए कितना महत्व था। यह महत्व इस तथ्य से और भी बढ़ गया कि वर्दुरिन परिवार को पूरा विश्वास था कि ला रास्पेलियर, जिसे वे खरीदना चाहते थे, दुनिया में अद्वितीय संपत्ति है। उनके आत्मसम्मान ने उन्हें ला रास्पेलियर को जो श्रेष्ठता प्रदान की, उसने मेरी उस उत्सुकता को उनकी दृष्टि में उचित ठहराया, जो अन्यथा उन्हें थोड़ी परेशान कर सकती थी, क्योंकि इसमें कई निराशाएँ शामिल थीं (जैसे मेरी निराशा जब मैंने बहुत पहले पहली बार बर्मा को सुना था) और जिसे मैंने उनके सामने खुलकर स्वीकार किया था।

"मुझे गाड़ी के वापस आने की आवाज़ सुनाई दे रही है," मालकिन ने अचानक धीमी आवाज़ में कहा। संक्षेप में कहें तो, उम्र बढ़ने के साथ होने वाले स्वाभाविक बदलावों के अलावा, श्रीमती वर्दुरिन अब वैसी नहीं दिखती थीं जैसी वह उस समय थीं जब स्वान और ओडेट उनके घर में वह छोटा सा गीत सुना करते थे। यहाँ तक कि जब वह उसे बजते हुए सुनती थीं, तब भी उन्हें वह कोमल प्रशंसा का भाव दिखाने की ज़रूरत नहीं थी जो वह तब दिखाती थीं, क्योंकि वह उनका सामान्य भाव बन गया था। बाख, वैगनर, विंटेउइल और डेब्यूसी के संगीत से उन्हें जो अनगिनत तंत्रिका पीड़ाएँ हुई थीं, उनके प्रभाव से श्रीमती वर्दुरिन का माथा बहुत बड़ा हो गया था, जैसे गठिया से अंततः अपंग हो चुके अंग। उसके कनपटे, जो सुंदर, पीड़ाग्रस्त, दूध जैसे सफेद गोलों की एक जोड़ी का आभास देते थे, जिनमें सामंजस्य अनंत काल तक विचरण करता रहता था, उसकी चांदी जैसी लटों को दोनों ओर बिखेरते हुए, स्वामिनी की ओर से, बिना कुछ कहे ही, यह घोषणा कर रहे थे: "मैं जानती हूँ कि आज रात मेरे लिए क्या होने वाला है।" उसके चेहरे पर अब अनुचित हिंसा के लगातार सौंदर्यबोधपूर्ण भावों को व्यक्त करने की कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वे स्वयं ही उसके क्षतिग्रस्त और भव्य चेहरे की स्थायी अभिव्यक्ति बन गए थे। सौंदर्य द्वारा दिए जाने वाले निरंतर आसन्न कष्टों के प्रति इस समर्पण भाव और पिछली सोनाटा के प्रभावों से मुश्किल से उबर पाने के बावजूद रात के खाने के लिए तैयार होने के लिए आवश्यक साहस के कारण, श्रीमती वर्दुरिन, सबसे हृदयविदारक संगीत सुनते समय भी, एक तिरस्कारपूर्ण भावहीन चेहरा बनाए रखती थीं, और वास्तव में एस्पिरिन के दो चम्मच निगलने के लिए एकांत में चली जाती थीं।

“अरे हाँ, ये रहे!” जब श्री वर्दुरिन ने दरवाजा खुलते देखा और मोरेल को अंदर आते देखा, तो राहत की सांस लेते हुए कहा। उनके पीछे श्री डी चार्लस भी थे। श्री डी चार्लस के लिए वर्दुरिन परिवार के साथ भोजन करना समाज में प्रवेश करने से कहीं अधिक संदिग्ध वातावरण में प्रवेश करने जैसा था। वे उतने ही भयभीत थे जितना कोई स्कूली बच्चा पहली बार वेश्यालय में प्रवेश करते समय होता है, जहाँ मालकिन के प्रति अत्यंत आदर भाव होता है। इसके अलावा, श्री डी चार्लस की मर्दाना और निर्मम दिखने की प्रबल इच्छा (जब वे खुले दरवाजे पर पहुँचे) शिष्टाचार के उन पारंपरिक विचारों से दब गई, जो शर्म के प्रकट होते ही बनावटी रवैये को तोड़कर अवचेतन मन की भावनाओं को जगा देते हैं। जब कोई चार्लस, चाहे वह कुलीन हो या

आम आदमी, अजनबियों के प्रति सहज और जन्मजात विनम्रता की भावना से प्रेरित होता है, तो हमेशा किसी महिला रिश्तेदार की आत्मा, देवी के समान परिचारिका या उसके प्रतिरूप के रूप में, उसे एक अनजान ड्राइंग-रूम में ले जाती है और उसके व्यवहार को तब तक ढालती है जब तक कि वह अपनी मेज़बान से आमने-सामने न हो जाए। इस प्रकार, एक युवा चित्रकार, जिसका पालन-पोषण एक धर्मनिष्ठ, प्रोटेस्टेंट महिला चचेरी बहन ने किया है, कमरे में प्रवेश करेगा, उसका सिर झुका हुआ और कांप रहा होगा, उसकी आँखें छत की ओर उठी होंगी, उसके हाथ एक अदृश्य मफ को कसकर पकड़े होंगे, जिसकी याद की गई आकृति और उसकी वास्तविक एवं संरक्षक उपस्थिति भयभीत कलाकार को बिना किसी अगोराफोबिया के हॉल और भीतरी ड्राइंग-रूम के बीच की खाई को पार करने में मदद करेगी। इस प्रकार, वर्षों पहले वह धर्मपरायण रिश्तेदार, जिनकी स्मृति आज भी उनकी सहायता कर रही है, एक कमरे में प्रवेश करती थीं, और इतने विलापपूर्ण स्वर में कि मन में यह प्रश्न उठता था कि वह कौन सी विपत्ति की सूचना देने आई हैं, तभी उनके पहले शब्दों से ही, जैसा कि अब चित्रकार के मामले में है, यह बोध हो जाता था कि वह भोजन के बाद मिलने आई हैं। उसी नियम के अनुसार, जो यह अपेक्षा करता है कि जीवन, अभी तक पूर्ण न हुए कार्य के हित में, अतीत की सबसे सम्मानित, संभवतः सबसे पवित्र, कभी-कभी केवल सबसे निर्दोष विरासतों को भी निरंतर वेश्यावृत्ति में शामिल करे, उनका उपयोग करे, उन्हें दूषित करे, और यद्यपि इस मामले में इसने एक अलग पहलू को जन्म दिया, जो श्रीमती का पहलू था। कॉटार्ड के भतीजे, जो अपने स्त्री जैसे व्यवहार और संगति से परिवार को परेशान करते थे, हमेशा खुशी से प्रवेश करते थे मानो उन्होंने आपके लिए कोई आश्चर्य रखा हो या आपको यह बताने वाले हों कि उन्हें विरासत में बहुत धन मिला है। उनकी खुशी इतनी तीव्र होती थी कि उनसे इसका कारण पूछना व्यर्थ होता, क्योंकि यह उनकी अचेतन वंशानुगत प्रवृत्ति और उनके लिंग के गलत निर्धारण के कारण थी। वे दबे पांव चलते थे, निस्संदेह स्वयं आश्चर्यचकित होते थे कि उनके हाथ में ताश का डिब्बा नहीं है, वे अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए अपने होंठ वैसे ही खोलते थे जैसे उन्होंने अपनी चाची को खोलते देखा था, और उनकी बेचैन निगाहें दर्पण पर टिकी होती थीं, जिसमें वे यह सुनिश्चित करना चाहते थे, हालांकि उन्होंने सिर पर कुछ नहीं पहना था, कि उनकी टोपी, जैसा कि श्रीमती कॉटार्ड ने एक बार स्वान से पूछा था, टेढ़ी तो नहीं

है। एम. डी चार्लस की बात करें तो, जिस समाज में वे रहे थे, उसने इस नाजुक घड़ी में उन्हें शिष्टाचार के विभिन्न उदाहरण, अन्य तौर-तरीके और सबसे बढ़कर यह सिद्धांत सिखाया था कि कुछ मामलों में, जब व्यक्ति निम्न वर्ग के लोगों से व्यवहार कर रहा हो, तो उसे अपने उन असाधारण गुणों का उपयोग करना चाहिए जिन्हें वह सामान्यतः छिपाकर रखता है। उन्होंने बड़ी शान से, नखरे दिखाते हुए और उसी लचक से, जैसे कोई स्कर्ट उनकी लड़खड़ाती चाल को रोक देती, श्रीमती वर्दुरिन की ओर बढ़े। उनका हावभाव इतना प्रसन्न और सम्मानित था कि मानो उनके घर ले जाया जाना उनके लिए परम सम्मान की बात हो। ऐसा लग रहा था मानो श्रीमती डी मार्सैंट्स कमरे में प्रवेश कर रही हों, क्योंकि उस समय वह स्त्री इतनी प्रमुखता से दिखाई दे रही थी जिसे प्रकृति की एक गलती ने एम. डी चार्लस के शरीर में स्थापित कर दिया था। यह सच था कि बैरन ने इस गलती को मिटाने और मर्दाना रूप धारण करने के लिए हर संभव प्रयास किया था। लेकिन जैसे ही वह सफल हुआ, उसने अपने पुराने शौक बरकरार रखते हुए, चीजों को स्त्री के नजरिए से देखने की इस आदत ने उसे एक नया स्त्रीत्वपूर्ण रूप दे दिया, जो इस बार वंशानुगत नहीं बल्कि उसकी अपनी जीवनशैली के कारण था। और जैसे-जैसे वह धीरे-धीरे सामाजिक प्रश्नों को भी स्त्री के दृष्टिकोण से देखने लगा, और अनजाने में ही, क्योंकि झूठ बोलने से ही नहीं, बल्कि स्वयं से झूठ बोलने से भी व्यक्ति को यह एहसास नहीं रहता कि वह झूठ बोल रहा है, यद्यपि उसने (वेरदुरिन के ड्राइंग रूम में प्रवेश करते समय) अपने शरीर से एक महान रईस की सारी शिष्टता प्रकट करने का आह्वान किया था, वही शरीर जो एम. डी चार्लस की समझ से परे बातों को पूरी तरह समझ चुका था, उसने एक महान महिला के सारे आकर्षण इस हद तक प्रदर्शित किए कि बैरन को 'स्त्रीमय' विशेषण का हकदार माना जा सकता था। ऐसा नहीं है कि एम. डी. चार्लस के प्रकट होने और इस तथ्य के बीच कोई संबंध होना आवश्यक है कि पुत्र, जो हमेशा अपने पिता के समान नहीं होते, भले ही वे विकृत न हों, और भले ही वे स्त्रियों के पीछे भागें, अपनी माताओं का अपमान कर सकते हैं। लेकिन हमें यहां एक ऐसे विषय पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है जो अपने आप में एक अध्याय का विषय है: माता का अपमान।

हालांकि एम. डी चार्लस के इस परिवर्तन के पीछे अन्य कारण भी थे, और विशुद्ध रूप से शारीरिक उथल-पुथल ने उनके भौतिक स्वरूप को 'सक्रिय' कर दिया और उनके शरीर को

धीरे-धीरे स्त्रीत्व की श्रेणी में ला दिया, फिर भी यहाँ जिस परिवर्तन का हम वर्णन कर रहे हैं, वह आध्यात्मिक मूल का था। स्वयं को बीमार समझने के कारण आप बीमार हो जाते हैं, दुबले हो जाते हैं, बिस्तर से उठने में असमर्थ हो जाते हैं, तंत्रिका संबंधी आंत्रशोथ से पीड़ित हो जाते हैं। पुरुषों के प्रति कोमल भाव रखने के कारण आप स्त्री बन जाते हैं, और एक काल्पनिक आत्मा आपकी गतिविधियों में बाधा डालती है। यह जुनून, जैसा कि दूसरे मामले में आपके स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, इस मामले में आपके लिंग को बदल सकता है। मोरेल, जो उनके साथ थे, मुझसे हाथ मिलाने आए। उस पहले क्षण से ही, उनमें हुए दोहरे परिवर्तन के कारण, मेरे मन में उनके बारे में एक बुरी धारणा बन गई (अफ़सोस, मुझे समय रहते चेतावनी नहीं मिली और मैंने उस पर अमल नहीं किया!)। मैंने कहा है कि मोरेल, अपने पिता की निम्न स्थिति से ऊपर उठकर, आमतौर पर तिरस्कारपूर्ण आत्मीयता में लिप्त रहते थे। जिस दिन वह मुझे तस्वीरें लेकर आए थे, उस दिन उन्होंने मुझसे बात की थी, लेकिन एक बार भी मुझे महामहिम कहकर संबोधित नहीं किया, मानो मुझे एक हीन व्यक्ति समझ रहे हों। श्रीमती वर्दुरिन को यह देखकर कितना आश्चर्य हुआ कि उन्होंने मेरे सामने, और केवल मेरे सामने ही, बहुत झुककर प्रणाम किया, और किसी और से एक शब्द भी कहने से पहले ही, उन्होंने मुझसे अत्यंत सम्मान के शब्द कहे—ऐसे शब्द जो मुझे लगा कि उनकी कलम से या उनके होठों से निकलना असंभव है। मुझे तुरंत संदेह हुआ कि उन्हें मुझसे कोई एहसान चाहिए। एक मिनट बाद मुझे एक तरफ ले जाकर उन्होंने कहा, "महाशय, मेरे लिए बहुत बड़ा उपकार करेंगे," इस बार उन्होंने मुझसे तीसरे व्यक्ति के रूप में बात करते हुए कहा, "श्रीमती वर्दुरिन और उनके मेहमानों से मेरे पिता के पेशे की प्रकृति को छुपाकर। यह कहना बेहतर होगा कि आपके परिवार में, वे इतनी बड़ी जागीरों के एजेंट थे कि वे लगभग आपके माता-पिता के बराबर थे।" मोरेल के इस अनुरोध ने मुझे बहुत परेशान किया क्योंकि इसने मुझे उनके पिता की स्थिति को नहीं, जिसमें मेरी ज़रा भी रुचि नहीं थी, बल्कि मेरी अपनी संपत्ति को बढ़ा-चढ़ाकर बताने के लिए बाध्य किया, जो मुझे बेतुकी लगती थी। लेकिन वे इतने दुखी और ज़ोरदार लग रहे थे कि मैं उन्हें मना नहीं कर सका। "नहीं, खाने से पहले," उन्होंने विनती भरे लहजे में कहा, "महाशय श्रीमती वर्दुरिन को एक तरफ ले जाने के लिए आसानी से कोई बहाना ढूंढ सकते हैं।" अंततः मैंने यही किया, मोरेल के पिता की प्रतिष्ठा को यथासंभव बढ़ाने

का प्रयास किया, बिना अपने परिवार की 'शान-शौकत' और 'सांसारिक संपदा' को अनावश्यक रूप से बढ़ा-चढ़ाकर बताए। यह डाक से भेजे गए पत्र की तरह ही पहुँच गया, श्रीमती वर्दुरिन की हैरानी के बावजूद, जिनकी मेरे दादाजी से बस थोड़ी-बहुत जान-पहचान थी। और चूंकि उनमें शिष्टाचार की कमी थी, और वे पारिवारिक जीवन से नफरत करती थीं (जो छोटे से परिवार को तोड़ देता है), उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें बहुत पहले मेरे परदादा को देखने की याद है, और उनके बारे में ऐसे बात की जैसे वे लगभग एक मूर्ख थे, जो छोटे से समूह को समझने में असमर्थ होते, और जो, उनके शब्दों में, "हममें से एक नहीं थे," और फिर मुझसे कहा: "परिवार इतने उबाऊ होते हैं, उनसे दूर भाग जाना ही एकमात्र उपाय है;" और उन्होंने तुरंत मुझे मेरे परदादा के चरित्र की एक ऐसी विशेषता के बारे में बताना शुरू कर दिया, जिसके बारे में मुझे पता नहीं था, हालाँकि घर पर मुझे इसका संदेह हो सकता था (मैंने उन्हें कभी नहीं देखा था, लेकिन वे अक्सर उनके बारे में बात करते थे), उनकी उल्लेखनीय कंजूसी (मेरे परदादा की कुछ हद तक अत्यधिक उदारता के विपरीत, जो गुलाबी पोशाक वाली महिला के मित्र और मोरेल के पिता के नियोक्ता थे): "क्यों, बिल्कुल, अगर आपके दादा-दादी के पास ऐसा बड़ा एजेंट था, तो यह केवल यह दर्शाता है कि एक परिवार में सभी प्रकार के लोग होते हैं। आपके दादा के पिता इतने कंजूस थे कि अपने जीवन के अंत में, जब वे लगभग मंदबुद्धि हो चुके थे - सच कहूँ तो, वे कभी भी कोई खास नहीं थे, आप उन सभी से कहीं अधिक मूल्यवान हैं - वे बस में अपनी सवारी के लिए एक पैसा भी नहीं दे सके। इसलिए उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति को उनके पीछे भेजना पड़ा जो उनके लिए किराया चुकाता था, और उस बूढ़े कंजूस को यह सोचने दिया गया कि उनके मित्र एम. डी पर्सिग्नी, कैबिनेट मंत्री, ने उन्हें बसों में मुफ्त यात्रा करने की अनुमति दी थी। लेकिन मैं... यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई कि हमारे मोरेल के पिता इतने अच्छे पद पर थे। मुझे लगा था कि वे एक शिक्षक थे, लेकिन कोई बात नहीं, शायद मुझे गलतफहमी हुई होगी। वैसे भी, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि मैं आपको बता दूं कि यहाँ हम केवल सच्ची योग्यता, व्यक्तिगत योगदान, जिसे मैं सहभागिता कहता हूँ, को ही महत्व देते हैं। बशर्ते कि कोई व्यक्ति कलात्मक हो, दूसरे शब्दों में कहें तो, यदि वह बिरादरी का सदस्य हो, तो और कुछ मायने नहीं रखता। मोरेल जिस तरह से बिरादरी का सदस्य था—जहाँ तक मैं पता लगा पाया हूँ—वह यह था कि वह महिलाओं और

पुरुषों दोनों के प्रति इतना स्नेह रखता था कि वह अपने अनुभव से दोनों लिंगों को संतुष्ट कर सके। लेकिन यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि जैसे ही मैंने उसे वचन दिया कि मैं श्रीमती से उसकी ओर से बात करूँगा... वर्दुरिन, और जैसे ही मैंने ऐसा किया, और बाद में इसे वापस लेने की कोई संभावना नहीं रही, मोरेल का मेरे प्रति 'सम्मान' मानो जादू से गायब हो गया, सम्मान की औपचारिक भाषा मिट गई, और वास्तव में कुछ समय के लिए वह मुझसे बचता रहा, मानो मेरा अपमान कर रहा हो। यहाँ तक कि अगर श्रीमती वर्दुरिन चाहतीं कि मैं उसे कोई संदेश दूं, या उससे कुछ बजाने के लिए कहूँ, तो वह किसी एक श्रद्धालु से बात करता रहता, फिर दूसरे के पास चला जाता, और अगर मैं उसके पास जाता तो अपनी जगह बदल लेता। बाकी लोगों को उसे तीन-चार बार बताना पड़ता था कि मैंने उससे बात की है, जिसके बाद वह संयमित भाव से संक्षेप में जवाब देता, यानी जब तक हम अकेले न हों। जब ऐसा होता, तो वह उदार और मिलनसार हो जाता, क्योंकि उसका एक आकर्षक पहलू भी था। फिर भी, उस पहली शाम से ही मैंने यह निष्कर्ष निकाल लिया कि उसका स्वभाव नीच है, कि वह किसी भी तरह की नीचता से पीछे नहीं हटेगा, और कृतज्ञता से रहित है। इस मामले में वह अधिकांश मनुष्यों जैसा ही था। लेकिन चूंकि मुझे अपनी दादी के स्वभाव का कुछ अंश विरासत में मिला था, और मैं दूसरों से कुछ भी अपेक्षा किए बिना या उनके किसी भी काम से नाराज़ हुए बिना, उनकी विविधता का आनंद लेता था, इसलिए मैंने उसकी नीचता को नज़रअंदाज़ कर दिया, जब भी उसकी प्रसन्नता दिखाई देती थी, तो मैं उसमें आनंदित होता था, और वास्तव में मुझे लगता है कि उसकी ओर से एक सच्चा स्नेह था, जब मानव स्वभाव के बारे में उसके सभी झूठे विचारों का सामना करने के बाद, उसे एहसास हुआ (एक झटके के साथ, क्योंकि उसने एक अंध और आदिम बर्बरता की ओर अजीब वापसी दिखाई) कि उसके प्रति मेरी दया निस्वार्थ थी, कि मेरा उदार व्यवहार समझ की कमी से नहीं बल्कि जिसे वह अच्छाई कहता था, उससे उत्पन्न हुआ था; और, इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि मैं उसकी कला से मंत्रमुग्ध हो गया था जो वास्तव में एक प्रशंसनीय निपुणता से थोड़ा अधिक थी, लेकिन जिसने मुझे (शब्द के बौद्धिक अर्थ में एक वास्तविक संगीतकार न होते हुए भी) इतना अच्छा संगीत फिर से या पहली बार सुनने का मौका दिया। इसके अलावा एक प्रबंधक—एम. डी चार्लस (जिनके पास ऐसी प्रतिभाएं होने का मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था, हालांकि श्रीमती

डी गुएरमांटेस, जो उन्हें अपने युवा दिनों में एक बिल्कुल अलग व्यक्ति के रूप में जानती थीं, ने दावा किया था कि उन्होंने उनके लिए एक सोनाटा की रचना की थी, एक पंखा चित्रित किया था, इत्यादि), अपनी वास्तविक योग्यताओं के प्रति विनम्र थे, लेकिन प्रतिभा के मामले में प्रथम श्रेणी के थे। उन्होंने अपनी इस निपुणता को एक बहुमुखी कलात्मक बोध की सेवा में लगाया, जिससे यह दस गुना बढ़ गई। कल्पना कीजिए रूसी बैले में एक साधारण कलाकार की, जिसे एम. डियागिलेफ द्वारा प्रशिक्षित, शिक्षित और हर दिशा में विकसित किया गया हो।

मैंने अभी-अभी श्रीमती वर्दुरिन को वह संदेश दिया था जिसका ज़िम्मा मोरेल ने मुझे सौंपा था और मैं श्री डी चार्लस से सेंट-लूप के बारे में बात कर रहा था, तभी कॉटार्ड कमरे में ऐसे घुस आया जैसे घर में आग लग गई हो और उसने ऐलान किया कि कैम्ब्रेमर आ गए हैं। श्रीमती वर्दुरिन, श्री डी चार्लस (जिन्हें कॉटार्ड ने नहीं देखा था) और मेरे जैसे अजनबियों के सामने कैम्ब्रेमर के आगमन को कोई महत्व नहीं देना चाहती थीं, इसलिए वह हिली नहीं, इस खबर पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी और डॉक्टर से बस इतना कहा, बड़े सलीके से पंखा झलते हुए और किसी फ्रांसीसी थिएटर की मार्क्विज़ के लहजे में: "बैरन अभी-अभी हमें बता रहे थे..." यह कॉटार्ड के लिए असहनीय था! पुराने दिनों की तुलना में अब वह उतने अचानक नहीं बोले, क्योंकि ज्ञान और उच्च पदों ने उनके कथन को महत्व दिया था, लेकिन फिर भी उसी भावना के साथ, जो उन्होंने वर्दुरिन के घर पर फिर से महसूस की थी, उन्होंने कहा: "एक बैरन! कौन सा बैरन? बैरन कहाँ है?" अविश्वास की सीमा तक पहुँच चुके आश्चर्य से कमरे में चारों ओर देखते हुए। श्रीमती वर्दुरिन ने, एक मेज़बान की बनावटी उदासीनता के साथ, जब किसी नौकर ने उनके मेहमानों के सामने एक कीमती गिलास तोड़ दिया हो, और युवा डुमास के नाटक में अभिनय कर रहे एक संगीत विद्यालय के पुरस्कार विजेता के कृत्रिम, आडंबरपूर्ण लहजे में, मोरेल के संरक्षक की ओर अपने पंखे से इशारा करते हुए उत्तर दिया: "अरे, बैरन डी चार्लस, जिनसे मैं आपको मिलवाती हूँ, श्रीमान प्रोफेसर कॉटार्ड।" वैसे, श्रीमती वर्दुरिन को मुख्य भूमिका निभाने का अवसर मिलने पर ज़रा भी अफ़सोस नहीं था। एम. डी चार्लस ने अपनी दो उंगलियां आगे बढ़ाईं, जिन्हें प्रोफेसर ने 'विज्ञान के राजकुमार' जैसी सौम्य मुस्कान के साथ थाम लिया। लेकिन कैम्ब्रेमर दंपति को कमरे में आते देख वे अचानक रुक गए, और एम. डी चार्लस मुझे एक कोने में ले गए, कुछ बताने के लिए, और इस दौरान उन्होंने मेरी मांसपेशियों

को छूकर देखा, जो जर्मनों की आदत है। एम. डी कैम्ब्रेमर पुराने मार्क्विज़ से बिलकुल अलग थे। जिसने भी उनके बारे में सुना था, या उनके लिखे पत्रों को पढ़ा था, जो स्पष्ट और सशक्त थे, उनके लिए उनका रूप-रंग चौंका देने वाला था। बेशक, कोई भी इसकी आदत डाल लेता। लेकिन उनकी नाक उनके मुंह के ऊपर तिरछी थी, शायद उनके चेहरे पर मौजूद कई टेढ़ी रेखाओं में से एकमात्र ऐसी रेखा, जिसके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था, और जो एक अशिष्ट मूर्खता को दर्शाती थी, जो दो पके सेबों जैसे गालों पर नॉर्मन रंगत की निकटता से और भी बढ़ जाती थी। हो सकता है कि एम. डी कैम्ब्रेमर की आँखों में पलकों के पीछे कोटेंटिन के आकाश की एक झलक रह गई हो, जो धूप वाले दिनों में इतना कोमल होता है जब राहगीर सड़क किनारे रुककर चिनार के पेड़ों की सैकड़ों छायाओं को गिनते हुए आनंद लेता है। लेकिन उनकी भारी, धुंधली और झुकी हुई पलकों ने बुद्धि की एक छोटी सी झलक को भी बाहर आने से रोक दिया होगा। और इसलिए, उस नीली दृष्टि की कमी से निराश होकर, व्यक्ति का ध्यान उनकी बड़ी टेढ़ी नाक पर जाता था। इंद्रियों के उलटफेर से, एम. डी कैम्ब्रेमर अपनी नाक से आपको देखते थे। उनकी यह नाक बदसूरत नहीं थी, बल्कि बहुत सुंदर, बहुत साहसी, अपनी अहमियत पर बहुत गर्व करने वाली थी। धनुषाकार, पॉलिश की हुई, चमकीली, एकदम नई, यह उनकी आँखों की अपर्याप्तता की भरपाई करने के लिए पूरी तरह तैयार थी। दुर्भाग्य से, यदि आंखें कभी-कभी वह अंग होती हैं जिनके माध्यम से हमारी बुद्धिमत्ता प्रकट होती है, तो नाक (एक अंग की बाकी अंगों पर पड़ने वाली घनिष्ठ एकजुटता और अनपेक्षित प्रभाव को ध्यान में न रखते हुए) आम तौर पर वह अंग है जिसमें मूर्खता सबसे आसानी से प्रदर्शित होती है।

एम. डी कैम्ब्रेमर द्वारा हमेशा, यहाँ तक कि सुबह के समय भी, पहने जाने वाले गहरे रंग के वस्त्रों की शालीनता उन लोगों को शायद आश्वस्त कर सकती थी जो अपरिचित लोगों के समुद्रतटीय पहनावे की चकाचौंध से व्याकुल और चिढ़ गए थे; फिर भी यह समझना असंभव था कि मुख्य मजिस्ट्रेट की पत्नी ने, एलेनकॉन के उच्च समाज के बारे में आपसे कहीं अधिक जानने वाली व्यक्ति के रूप में, विवेक और अधिकार के भाव से यह क्यों कहा कि एम. डी कैम्ब्रेमर को देखते ही, उन्हें जानने से पहले ही, ऐसा महसूस होता है जैसे कोई व्यक्ति सर्वोच्च प्रतिष्ठा वाले, उत्तम संस्कार वाले व्यक्ति की उपस्थिति में है, जो बालबेक में देखे गए व्यक्ति से

बिल्कुल अलग है, संक्षेप में कहें तो एक ऐसा व्यक्ति जिसकी संगति में कोई खुलकर सांस ले सकता है। बालबेक के उन सभी पर्यटकों से घिरी हुई, जो उसकी दुनिया को नहीं जानते थे, वह उसके लिए किसी धुले हुए नमक की बोतल के समान था। इसके विपरीत मुझे ऐसा लगा कि वह उन लोगों में से एक था जिन्हें मेरी दादी तुरंत 'बिल्कुल गलत' मान लेतीं, और चूंकि उन्हें दिखावे की कोई समझ नहीं थी, इसलिए वह निस्संदेह इस बात से चकित रह जातीं कि वह मैडम लेग्रैंडिन का हाथ जीतने में कैसे सफल हो गया, जिन्हें प्रसन्न करना निश्चित रूप से कठिन रहा होगा, क्योंकि उनका भाई 'इतना सभ्य' था। एम. डी कैम्ब्रेमर की साधारण कुरूपता के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा यही कहा जा सकता था कि उसमें मिट्टी की महक थी और वह एक बहुत पुरानी स्थानीय परंपरा को संजोए हुए थी; उनके दोषपूर्ण चेहरे को देखकर, जिसे सुधारना अच्छा लगता, मुझे उन छोटे नॉर्मन कस्बों के नामों की याद आ गई जिनकी व्युत्पत्ति के बारे में मेरे मित्र पादरी को गलतफहमी थी क्योंकि किसान नामों का गलत उच्चारण करते थे, या उनके मूल में छिपे लैटिन या नॉर्मन शब्दों को गलत समझते थे, और अंततः उन्हें एक ऐसी बर्बरता में ढाल दिया था जो मानचित्रों में पहले से ही मौजूद है, जैसा कि ब्रिचोट ने कहा होगा, एक गलत अर्थ और उच्चारण की गलती। इन पुराने कस्बों में जीवन काफी सुखद हो सकता है, और एम. डी कैम्ब्रेमर में भी कुछ अच्छे गुण रहे होंगे, क्योंकि अगर एक माँ का स्वभाव ही ऐसा था कि बूढ़ी मार्किज़ अपनी बहू के बजाय अपने बेटे को ज़्यादा पसंद करती थीं, तो दूसरी ओर, उनके अन्य बच्चे भी थे, जिनमें से कम से कम दो गुणवान थे, और उन्हें अक्सर यह कहते सुना जाता था कि उनकी राय में मार्क्विस परिवार में सबसे अच्छे थे। सेना में बिताए थोड़े समय के दौरान, उनके साथियों ने कैम्ब्रेमर नाम को उच्चारण में लंबा पाते हुए, उन्हें कैंकन उपनाम दे दिया था, जिसका अर्थ था बकबक करने की आदत, जो उन पर बिल्कुल भी लागू नहीं होता था। वह किसी भी डिनर पार्टी को खुशनुमा बनाने में माहिर थे, जब मछली (चाहे वह बासी ही क्यों न हो) या मुख्य व्यंजन आता था, तो वह कहते थे: "वाह, यह तो बहुत बढ़िया जानवर लग रहा है।" और उसकी पत्नी, जिसने परिवार में प्रवेश करने के बाद उन सभी रीति-रिवाजों को अपना लिया था जिन्हें वह उनका हिस्सा मानती थी, अपने पति के दोस्तों के बराबर व्यवहार करने लगी और शायद उसे खुश करने की कोशिश करती, मानो वह उसकी कुंवारेपन में शामिल रही हो। अधिकारियों से उसके बारे में बात करते समय वह

लापरवाही भरे लहजे में कहती थी: "आप अभी कैंकन से मिलेंगे। कैंकन बालबेक गया है, लेकिन वह आज शाम वापस आ जाएगा।" वह वर्दुरिन परिवार में आकर खुद को मुश्किल में डालने से बहुत नाराज़ थी और उसने ऐसा केवल अपनी सास और पति के आग्रह पर, पट्टा नवीनीकृत करने की उम्मीद में किया था। लेकिन, उनसे कम सभ्य होने के कारण, उसने अपने छिपे हुए इरादे को छुपाया नहीं और पिछले पखवाड़े से अपनी सहेलियों के सामने इस डिनर पार्टी का मज़ाक उड़ा रही थी। "आप जानती हैं कि हम अपने किरायेदारों के साथ भोजन करने जा रहे हैं। इससे बढ़ा हुआ किराया भी जायज़ हो जाएगा। दरअसल, मुझे यह देखने की बहुत उत्सुकता है कि उन्होंने हमारी बेचारी पुरानी ला रास्पेलियर का क्या हाल कर दिया है" (जैसे कि वह उसी घर में पैदा हुई हो और वहाँ उसे अपने परिवार की सारी पुरानी यादें मिल जाएँगी)। "हमारे पुराने रखवाले ने मुझे कल ही बताया था कि आप उस जगह को पहचान भी नहीं पाएँगी। मैं यह सोचकर भी घबरा रही हूँ कि वहाँ क्या-क्या चल रहा होगा। मुझे यकीन है कि हमें दोबारा अंदर जाने से पहले पूरे घर को कीटाणुरहित करवाना पड़ेगा।" वह घमंडी और उदास होकर आई थी, मानो वह कोई ऐसी महान महिला हो जिसका महल युद्ध के कारण दुश्मन के कब्जे में हो, लेकिन फिर भी वह खुद को घर जैसा महसूस करती हो और हमलावरों को यह दिखाना चाहती हो कि वे घुसपैठ कर रहे हैं। डी कैम्ब्रेमर मुझे पहले देख नहीं पाईं क्योंकि मैं कमरे के एक कोने में एम. डी चार्लस के साथ बैठा था। डी चार्लस मुझे बता रहे थे कि उन्होंने मोरेल से सुना है कि मोरेल के पिता मेरे परिवार में 'एजेंट' थे, और चार्लस मुझे पर्याप्त बुद्धिमान और उदार मानते हैं (यह शब्द वे और स्वान दोनों इस्तेमाल करते थे) कि मैं उस नीच और घृणित आनंद से दूर रहूँगा जो तुच्छ मूर्ख (मुझे चेतावनी दी गई थी) मेरी जगह पर हमारे मेजबानों को ऐसी बातें बताकर लेते जिन्हें वे अपमानजनक समझ सकते थे। बैरन ने निष्कर्ष निकाला, "केवल इस तथ्य से कि मैं उसमें रुचि लेता हूँ और उसकी रक्षा करता हूँ, उसे श्रेष्ठता मिलती है और अतीत मिट जाता है।" जब मैं उनकी बातें सुन रहा था और चुप रहने का वादा कर रहा था, जो मैं बदले में बुद्धिमान और उदार समझे जाने की कोई उम्मीद न होने पर भी रखता, तब मैं श्रीमती डी कैम्ब्रेमर को देख रहा था। और मुझे उस पिघलते हुए, स्वादिष्ट टुकड़े को पहचानने में कठिनाई हो रही थी जो मैंने पिछली दोपहर बालबेक के टैरेस पर चाय के समय अपने पास रखा था, उस नॉर्मन रॉक-केक में जो अब मुझे

पत्थर की तरह सख्त दिख रहा था, जिसमें श्रद्धालु अपने दांत गड़ाने की व्यर्थ कोशिश करते। इस ज्ञान से चिढ़कर कि उसके पति को अपनी माँ की सरल दयालुता विरासत में मिली है, जिसके कारण जब भी कोई श्रद्धालु उससे मिलवाया जाता तो वह चापलूसी भरा भाव धारण कर लेता, फिर भी समाज की नेता के रूप में अपना कर्तव्य निभाने के लिए उत्सुक, जब ब्रिचोट का नाम उससे लिया गया तो उसने ब्रिचोट और अपने पति का परिचय कराने का फैसला किया, जैसा कि उसने अपने अधिक फैशनेबल दोस्तों को करते देखा था, लेकिन क्रोध या अहंकार ने दुनियादारी दिखाने की इच्छा पर हावी होकर, जैसा उसे कहना चाहिए था, यह नहीं कहा: "मुझे अपने पति का परिचय कराने दीजिए," बल्कि: "मैं आपको अपने पति से मिलवाती हूँ," इस प्रकार कैम्ब्रेमर्स का झंडा बुलंद करते हुए, व्यर्थ, क्योंकि उसके पति ने ब्रिचोट के सामने उतना ही झुककर प्रणाम किया जितना उसने उम्मीद की थी। लेकिन श्रीमती डी कैम्ब्रमर का सारा गुस्सा पल भर में गायब हो गया जब उनकी नज़र एम. डी चार्लस पर पड़ी, जिन्हें वह पहले से जानती थीं। स्वान के साथ घनिष्ठ संबंधों के बावजूद भी वह उनसे परिचय कराने में कभी सफल नहीं हो पाई थीं। एम. डी चार्लस हमेशा महिलाओं का पक्ष लेते थे, एम. डी गुएरमांटेस की रखेलों के विरुद्ध अपनी भाभी का, और स्वान की पुरानी प्रेमिका ओडेट का, जो उस समय अविवाहित थीं, नए प्रेमी के विरुद्ध। नैतिकता के कट्टर रक्षक और घरों के वफादार संरक्षक होने के नाते, उन्होंने ओडेट से वादा किया था और उसे निभाया भी था कि वह कभी भी श्रीमती डी कैम्ब्रमर से नहीं मिलेंगे। उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि वर्दुरिन के घर पर ही उनकी मुलाकात इस दुर्गम व्यक्ति से होगी। एम. डी कैम्ब्रेमर जानते थे कि यह उनकी पत्नी के लिए बहुत बड़ी खुशी थी, इतनी बड़ी कि वे स्वयं भी भावुक हो गए और अपनी पत्नी को इस भाव से देखा मानो कह रहे हों: "अब तुम्हें खुशी है कि तुमने आने का फैसला किया, है ना?" वे बहुत कम बोलते थे, क्योंकि वे जानते थे कि उन्होंने एक श्रेष्ठ महिला से विवाह किया है। "मैं, बिलकुल अयोग्य," वे हर क्षण कहते और सहज ही ला फॉन्टेन और फ्लोरियन की एक-एक कहानी सुना देते, जो उन्हें अपनी अज्ञानता पर सटीक लगती थी और साथ ही साथ उन्हें चापलूसी के दिखावे के पीछे छिपे उन वैज्ञानिकों को यह दिखाने का मौका देती थी जो जॉकी के सदस्य नहीं थे कि कोई खिलाड़ी होते हुए भी कहानियाँ पढ़ सकता है। दुर्भाग्य से, उन्हें उनमें से केवल दो ही कहानियाँ याद थीं। और इसलिए वे बार-बार सामने

आती रहती थीं। श्रीमती डी कैम्ब्रेमर मूर्ख नहीं थीं, लेकिन उनकी कई बेहद परेशान करने वाली आदतें थीं। उनके लिए नामों को बिगाड़ने में अभिजात्य वर्ग के प्रति किसी प्रकार का तिरस्कार नहीं होता था। वह डचेस डी गुएरमांटेस (जिनके जन्म मात्र से ही उन्हें श्रीमती डी कैम्ब्रेमर की तुलना में ऐसी बेतुकी बात से और भी अधिक सुरक्षित रहना चाहिए था) की तरह यह कहने वाली व्यक्ति नहीं थीं कि उन्हें जूलियन डी मोनचेटो का पुराना नाम याद नहीं है (हालाँकि अब यह उन महिलाओं में से एक का नाम है जिनसे मिलना-जुलना बेहद मुश्किल है): "एक छोटी मैडम... पिका डेला मिरांडोला।" नहीं, जब श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने कोई नाम गलत बोला तो वह दयालुतावश था, ताकि ऐसा न लगे कि उन्हें कोई नुकसानदेह तथ्य पता है, और जब उन्होंने ईमानदारी से इसे स्वीकार किया, तो उन्होंने इसे बदलकर छिपाने की कोशिश की। उदाहरण के लिए, यदि वह किसी महिला का बचाव कर रही होती, तो वह इस तथ्य को छिपाने की कोशिश करती, जबकि वह उस व्यक्ति से झूठ न बोलने के लिए दृढ़ संकल्पित होती जिसने उससे सच बताने को कहा था, कि मैडम फलां-फलां उस समय एम. सिल्वेन लेवी की प्रेमिका थीं, और कहती: "नहीं... मैं उनके बारे में बिल्कुल कुछ नहीं जानती। मुझे लगता है कि लोग उन पर एक ऐसे सज्जन के प्रति आसक्ति पैदा करने का आरोप लगाते थे जिनका नाम मुझे नहीं पता, कुछ कैह्न, कोह्न, कुह्न जैसा; खैर, मेरा मानना है कि वह सज्जन कई वर्षों से मर चुके हैं और उनके बीच कभी कुछ नहीं था।" यह झूठ बोलने वालों द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया के समान है, लेकिन विपरीत है, जो सोचते हैं कि यदि वे अपनी प्रेमिका या किसी अन्य पुरुष से बात करते समय अपने काम के बारे में अपने बयान को बदल देते हैं, तो उनका श्रोता तुरंत यह नहीं समझ पाएगा कि अभिव्यक्ति (जैसे उसका कैह्न, कोह्न, कुह्न) बीच में डाली गई है, बाकी बातचीत से अलग है, और इसका दोहरा अर्थ है।

मदाम वर्दुरिन ने अपने पति के कान में फुसफुसाकर कहा: "क्या मैं बैरन डी शार्लस को अपना हाथ थामने का न्योता दूँ? चूँकि मदाम डी कैम्ब्रेमर आपके दाईं ओर होंगी, तो हम सम्मान को आपस में बाँट सकते हैं।" "नहीं," एम. वर्दुरिन ने कहा, "क्योंकि दूसरे का ओहदा ऊँचा है" (उनका मतलब था कि एम. डी कैम्ब्रेमर एक मार्क्विस थे), "तो एम. डी शार्लस, सख़्ती से कहा जाए तो, उनसे नीचे के दर्जे के हैं।" "बहुत ठीक, मैं उन्हें राजकुमारी के पास बिठा

दूँगी।" और मदाम वर्दुरिन ने मदाम शेरबातोफ़ का परिचय एम. डी शार्लस से करवाया; दोनों ने चुपचाप एक-दूसरे के सामने सिर झुकाया, मानो वे एक-दूसरे के बारे में सब कुछ जानते हों और आपस में कोई राज़ रखने का वादा कर रहे हों। एम. वर्दुरिन ने मेरा परिचय एम. डी कैम्ब्रेमर से करवाया। इससे पहले कि वे अपनी ऊँची और थोड़ी हकलाती हुई आवाज़ में बोलना शुरू भी करते, उनकी लंबी कद-काठी और गोरा रंग, उनके हाव-भाव में, एक ऐसे कमांडिंग अफ़सर की फ़ौजी हिचकिचाहट को दर्शा रहा था जो आपको सहज महसूस कराने की कोशिश करता है और कहता है: "मैंने तुम्हारे बारे में सुना है, मैं देखूँगा कि क्या किया जा सकता है; तुम्हारी सज़ा माफ़ कर दी जाएगी; हमें यहाँ किसी का खून बहाने की प्यास नहीं है; सब ठीक हो जाएगा।" फिर, जब उन्होंने मेरा हाथ मिलाया: "मुझे लगता है कि आप मेरी माँ को जानते हैं," उन्होंने मुझसे कहा। उन्हें 'लगता है' शब्द पहली मुलाक़ात की नज़ाकत के हिसाब से सही लगा, लेकिन इसका मतलब कोई अनिश्चितता जताना नहीं था, क्योंकि उन्होंने आगे कहा: "मेरे पास उनकी तरफ़ से आपके लिए एक चिट्ठी है।" एम. डी कैम्ब्रेमर को उस जगह पर दोबारा आने में बच्चों जैसी खुशी महसूस हुई, जहाँ वे इतने लंबे समय तक रहे थे। "मैं फिर से अपने घर आ गया हूँ," उन्होंने मदाम वर्दुरिन से कहा, जबकि उनकी आँखें दरवाज़ों के ऊपर बने पैनलों पर बनी फूलों की पेंटिंग्स और ऊँचे चबूतरों पर रखी संगमरमर की मूर्तियों को पहचानकर हैरानी से देख रही थीं। फिर भी, उन्हें शायद थोड़ा अजनबीपन महसूस हुआ होगा, क्योंकि मदाम वर्दुरिन अपने साथ अपनी कई पुरानी और कीमती चीज़ें ले आई थीं। इस मामले में, मदाम वर्दुरिन को कैम्ब्रेमर परिवार वाले भले ही हर चीज़ को उलट-पुलट कर देने वाली मानते थे, लेकिन असल में वे कोई क्रांतिकारी नहीं थीं, बल्कि एक ऐसे समझदार और पारंपरिक सोच वाली महिला थीं, जिसे वे लोग समझ ही नहीं पाए। इसलिए, उस पर पुराने घर से नफ़रत करने और वहाँ के कीमती, आलीशान पर्दों की जगह सादे कपड़े के पर्दे टाँगकर घर का अपमान करने का आरोप लगाना उनका गलत था—यह ठीक वैसा ही था जैसे कोई अज्ञानी पादरी, सूबे के आर्किटेक्ट को इसलिए डाँटे कि उसने पुराने नक्काशीदार लकड़ी के सामान को वापस उसकी जगह पर रख दिया है, जिसे पादरी ने कूड़े के ढेर पर फेंक दिया था और जिसकी जगह उसने 'प्लेस सेंट-सल्पिस' से खरीदे गए सजावटी सामान लगाने का फ़ैसला किया था। इसके अलावा, हवेली के सामने, फूलों की उन क्यारियों

की जगह अब जड़ी-बूटियों का एक बगीचा बनने लगा था—ये क्यारियाँ न सिर्फ़ कैम्ब्रेमर परिवार का, बल्कि उनके माली का भी गौरव थीं। वह माली, जो कैम्ब्रेमर परिवार को ही अपना एकमात्र मालिक मानता था और वर्दुरिन परिवार के शासन तले दबता जा रहा था—मानो उस जगह पर इस समय किसी हमलावर सेना का कब्ज़ा हो—चुपके से जाकर अपनी पुरानी मालकिन के सामने अपना दुखड़ा रोता था। उसे इस बात पर बहुत गुस्सा आता था कि उसके लगाए 'अराउकेरिया', 'बेगोनिया', 'हाउस-लीक्स' और 'डबल डहलिया' जैसे फूलों का मज़ाक उड़ाया जाता था; और इस बात पर भी कि इतनी आलीशान जगह पर कोई 'कैमोमाइल' और 'मेडनहेयर' जैसे साधारण पौधे उगाने की हिम्मत कैसे कर सकता है। श्रीमती वर्दुरिन को इस दबी हुई नाराज़गी का एहसास हो गया था। उन्होंने मन ही मन यह तय कर लिया था कि अगर वे 'ला रास्पेलियर' को लंबे समय के लिए किराए पर लेती हैं या उसे खरीद ही लेती हैं, तो उनकी शर्तों में से एक शर्त यह भी होगी कि उस माली को नौकरी से निकाल दिया जाए—जबकि इसके ठीक विपरीत, उसकी पुरानी मालकिन उस माली को बहुत अहमियत देती थी। जब बुरे दिन चल रहे थे, तब उसने बिना किसी वेतन के उनकी सेवा की थी; वह अपनी मालकिन को बहुत चाहता था। लेकिन, निचले तबके के लोगों में पाई जाने वाली राय की उस अजीबोगरीब और बहुआयामी प्रकृति के चलते—जहाँ किसी के लिए मन में गहरा नैतिक तिरस्कार होने के बावजूद उसके प्रति ज़बरदस्त तारीफ़ का भाव भी छिपा होता है, और ये दोनों भावनाएँ आपस में मिलकर पुरानी और कभी न मिटने वाली शिकायतों के साथ गुंथी होती हैं—वह अक्सर श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के बारे में कुछ ऐसी बातें कहता था: श्रीमती डी कैम्ब्रेमर, जो 1870 के युद्ध के दौरान पूर्वी फ़्रांस में स्थित अपने ही एक घर में थीं, और अचानक हुए हमले से घबराकर उन्हें एक महीने तक जर्मन सैनिकों के साथ एक ही घर में रहने की मजबूरी झेलनी पड़ी थी। माली उनके बारे में कहता था: "बहुत से लोग श्रीमती मार्कीज़ को इस बात के लिए कभी माफ़ नहीं कर पाए कि युद्ध के दौरान उन्होंने प्रशियाई सैनिकों का पक्ष लिया था, और यहाँ तक कि उन्हें अपने ही घर में पनाह भी दी थी। किसी और समय की बात होती, तो मैं इसे समझ सकता था; लेकिन युद्ध के समय उन्हें ऐसा बिल्कुल नहीं करना चाहिए था। यह बिल्कुल भी सही नहीं था।" ताकि वह अपनी मृत्यु तक उसके प्रति वफ़ादार रहे, उसकी अच्छाई के लिए उसका आदर करे, और पूरी तरह से यह विश्वास करे

कि वह राजद्रोह की दोषी थी। मादाम वेरडुरिन इस बात से नाराज़ थीं कि एम. दे कैम्ब्रेमर 'ला रास्पेलिएर' में इतना अपनापन दिखाने का दिखावा कर रहे थे। "फिर भी, आपको यहाँ काफ़ी बदलाव ज़रूर नज़र आए होंगे," उन्होंने जवाब दिया। "एक तो, वे बड़े-बड़े कांस्य के 'बारबेडिएन' शैतान और कुछ भद्दी-सी छोटी-छोटी मखमल की कुर्सियाँ थीं, जिन्हें मैंने तुरंत अटारी में भिजवा दिया; हालाँकि उनके लिए तो वह जगह भी कुछ ज़्यादा ही अच्छी है।" एम. दे कैम्ब्रेमर को यह तीखा जवाब देने के बाद, उन्होंने उन्हें रात के खाने के लिए अंदर ले जाने हेतु अपना हाथ थमाया। वह एक पल के लिए हिचकिचाए, और मन ही मन सोचने लगे: "मैं सचमुच, एम. दे चार्लस से पहले अंदर नहीं जा सकता।" लेकिन यह मानकर कि वह दूसरा व्यक्ति इस घर का कोई पुराना मित्र है, और यह देखकर कि उसे कोई विशेष सम्मानजनक स्थान नहीं दिया गया है, उन्होंने वह हाथ थामने का फ़ैसला किया जो उन्हें बढ़ाया गया था; और उन्होंने मादाम वेरडुरिन से कहा कि इस 'संगोष्ठी' (symposium) में शामिल होकर उन्हें कितना गर्व महसूस हो रहा है (उन्होंने उस छोटे से समूह को यही नाम दिया था, और इस शब्द के अपने ज्ञान पर उन्हें मन ही मन एक संतोष भरी मुस्कान भी आ रही थी)। कोटार्ड, जो एम. दे चार्लस के ठीक बगल में बैठे थे, उन्होंने अपनी ऐनक के पार से उनकी ओर देखकर एक मुस्कान बिखेरी—ताकि उनसे जान-पहचान हो सके और बातचीत शुरू हो सके—और इसके साथ ही उन्होंने आँखों से कई ऐसे इशारे किए जो...

वे पहले के दिनों की तुलना में ज़्यादा ज़ोरदार थीं, और उनमें अब शर्म की कोई रुकावट नहीं थी। और ये मनमोहक नज़रें, जो साथ वाली मुस्कान से और भी निखर गई थीं, अब शीशे की रुकावट में नहीं बँधी थीं, बल्कि हर तरफ़ फैल रही थीं। बैरन, जो हर जगह अपने जैसे लोगों की कल्पना आसानी से कर लेते थे, उन्हें इसमें कोई शक नहीं था कि कोटार्ड भी उन्हीं में से एक है, और उन पर डोरे डाल रहा है। फौरन ही उन्होंने प्रोफ़ेसर के प्रति एक 'इन्वर्ट' (समलैंगिक) वाला ठंडा रवैया अपना लिया—वह रवैया जिसमें वह उन लोगों के प्रति उतनी ही नफ़रत दिखाता है जो उसकी तरफ़ खिंचे चले आते हैं, जितनी शिद्दत से वह उन लोगों के पीछे भागता है जो उसे अपनी तरफ़ खींचते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि, भले ही हममें से हर कोई प्यार किए जाने के सुख के बारे में झूठ-मूठ बातें करता हो—वह सुख जो किस्मत ने हमेशा हमसे दूर ही रखा है—लेकिन यह एक आम नियम है। यह नियम सिर्फ़ 'शार्लस टाइप'

के लोगों पर ही लागू नहीं होता, बल्कि यह हर उस इंसान पर लागू होता है जिसे हम प्यार नहीं करते, लेकिन जो हमें प्यार करता है—ऐसा इंसान हमें बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं होता। ऐसे इंसान के बजाय—या ऐसी औरत के बजाय जिसके बारे में हम यह नहीं कहते कि वह हमसे प्यार करती है, बल्कि यह कहते हैं कि वह हमें बोर करती है—हम किसी भी दूसरे इंसान का साथ ज़्यादा पसंद करते हैं; भले ही उस दूसरे इंसान में उस औरत जैसा कोई आकर्षण न हो, न ही उसकी जैसी सूरत हो, और न ही उसका जैसा दिमाग़ हो। हमारी नज़र में, वह औरत अपनी खोई हुई अहमियत तभी वापस पा सकती है, जब वह हमसे प्यार करना छोड़ दे। इस नज़रिए से देखें, तो हमें इसमें बस एक ही बात नज़र आती है—कि यह एक आम नियम का ही एक अजीब-सा रूप है; यह नियम उस चिड़चिड़ाहट के रूप में सामने आता है जो किसी 'इन्वर्ट' के मन में उस मर्द के प्रति पैदा होती है, जो उसे नापसंद है, लेकिन फिर भी उसके पीछे पड़ा रहता है। और इसलिए, जहाँ एक आम इंसान अपनी भावनाओं को छिपाने की कोशिश करता है, वहीं एक 'इन्वर्ट' उन भावनाओं को उस मर्द तक पहुँचाने में कोई कसर नहीं छोड़ता जो उन भावनाओं को जगाता है—ठीक वैसे ही, जैसे वह किसी औरत के साथ कभी नहीं करता। उदाहरण के लिए, एम. दे शार्लस का ही मामला ले लीजिए—वह प्रिंसेस दे गुएरमांटेस के साथ ऐसा बिल्कुल नहीं करते थे; हालाँकि प्रिंसेस का उनके प्रति जुनून उन्हें बोर तो करता था, लेकिन साथ ही उन्हें अपनी तारीफ़ जैसा भी लगता था। लेकिन जब वे किसी दूसरे आदमी को अपने प्रति एक खास तरह की पसंद दिखाते हुए देखते हैं, तो—चाहे इसलिए कि वे यह समझने में नाकाम रहते हैं कि यह पसंद बिल्कुल वैसी ही है जैसी उनकी अपनी है; या इसलिए कि उन्हें यह याद दिलाए जाने पर गुस्सा आता है कि यह पसंद—जिसे वे तब तक बहुत महान मानते हैं जब तक वे खुद इसे महसूस करते हैं—असल में एक बुराई मानी जाती है; या फिर उन हालात में खुद को फिर से अच्छा साबित करने की चाहत में, जहाँ ऐसा करने में उन्हें कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ता; या फिर अपने असली रूप के सामने आ जाने के डर से—जिस डर को वे तुरंत महसूस करने लगते हैं, जैसे ही उनकी अपनी चाहत उन्हें अंधा बनाकर एक नासमझी से दूसरी नासमझी की ओर ले जाना बंद कर देती है; या फिर किसी दूसरे व्यक्ति के अस्पष्ट रवैये के कारण उस चोट को सहने के गुस्से से—जिस चोट को वे खुद, अगर वह दूसरा व्यक्ति उन्हें आकर्षित करता, तो उस पर पहुँचाने से ज़रा भी नहीं हिचकिचाते

—ये वे लोग हैं जिन्हें किसी नौजवान का मीलों तक पीछा करने में ज़रा भी बुरा नहीं लगता, जो थिएटर में भी उससे अपनी नज़रें नहीं हटाते, भले ही वह अपने दोस्तों के साथ हो, और इस वजह से इस बात का खतरा हो कि वे उस नौजवान को उसके दोस्तों की नज़र में शर्मिंदा कर दें; ऐसे लोग, अगर कोई ऐसा आदमी जो उन्हें आकर्षित नहीं करता, बस उनकी तरफ देख भी ले, तो उन्हें यह कहते हुए सुना जा सकता है: "जनाब, आप मुझे क्या समझते हैं?" (सिर्फ इसलिए कि वह उन्हें वैसा ही समझता है जैसे वे असल में हैं) "मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा, नहीं, समझाने की कोशिश मत कीजिए, आप पूरी तरह गलत हैं।" ज़रूरत पड़ने पर वे बातों से आगे बढ़कर हाथापाई पर भी उतर आते हैं, और उस व्यक्ति से, जो उस अनजान अजनबी को जानता है, बड़े गुस्से से कहते हैं: "क्या? आप उस घिनौने प्राणी को जानते हैं? वह तो किसी को भी घूरे ही जाता है!... कैसा घटिया बर्ताव है!" एम. डी. चार्लस ने तो इतनी हद तक नहीं किया, लेकिन उन्होंने भी वैसा ही नाराज़ और ठंडा रवैया अपना लिया—जैसा कि वे औरतें अपनाती हैं, जब किसी को उन पर शक होता है—खासकर वे औरतें जिनका चरित्र ढीला नहीं होता, और उससे भी ज़्यादा वे औरतें जिनका चरित्र ढीला होता है। इसके अलावा, जब एक समलैंगिक का सामना दूसरे समलैंगिक से होता है, तो उसे सिर्फ अपनी एक नापसंद छवि ही नहीं दिखाई देती—जो कि पूरी तरह से बेजान होने के कारण, ज़्यादा से ज़्यादा सिर्फ उसके आत्म-सम्मान को ही चोट पहुँचा सकती है—बल्कि उसे अपना ही एक दूसरा रूप दिखाई देता है; एक जीता-जागता रूप, जो उसी दुनिया में सक्रिय है, और इसलिए जो उसके प्रेम-संबंधों को भी नुकसान पहुँचाने की क्षमता रखता है। और इसलिए, अपनी सुरक्षा की सहज प्रवृत्ति के कारण ही वह अपने संभावित प्रतिद्वंद्वी की बुराई करेगा—चाहे उन लोगों के सामने जो उसे कोई नुकसान पहुँचाने में सक्षम हों (और ऐसा करते समय उसे इस बात की भी परवाह नहीं होती कि लोग उसे झूठा मान सकते हैं, खासकर तब जब वह ऐसे लोगों के सामने दूसरे व्यक्ति की बुराई करता है जो शायद उसके अपने मामले के बारे में सब कुछ जानते हों), या फिर उस नौजवान के सामने जिसे उसने 'अपना बना लिया है'—जो शायद उससे छिन जाने वाला है—और जिसे यह यकीन दिलाना उसके लिए बहुत ज़रूरी है कि जिन कामों को वक्ता (खुद) के साथ करना उसके लिए फायदेमंद होगा, वही काम अगर वह किसी दूसरे व्यक्ति के साथ करेगा तो वे उसकी ज़िंदगी के लिए अभिशाप बन जाएँगे। एम. डी शार्लस के

लिए—जो शायद उन पूरी तरह से काल्पनिक खतरों के बारे में सोच रहे थे जिनमें इस कोटार्ड की मौजूदगी, जिसकी मुस्कान का उन्होंने गलत अर्थ लगाया था, मोरेल को फँसा सकती थी—एक ऐसा समलैंगिक व्यक्ति जो उन्हें आकर्षित नहीं करता था, वह न केवल उनका अपना ही एक विकृत रूप (caricature) था, बल्कि एक जान-बूझकर खड़ा किया गया प्रतिद्वंद्वी भी था। एक व्यापारी, जो कोई अनोखा व्यापार करता है, और जब वह किसी प्रांतीय शहर में पहुँचता है जहाँ वह जीवन भर बसने का इरादा रखता है, और वहाँ उसे पता चलता है कि उसी चौक में, ठीक उसके सामने, कोई दूसरा प्रतिस्पर्धी भी वही व्यापार कर रहा है—तो उसे उतनी ही निराशा होती है जितनी शार्लस को होती है; शार्लस जो किसी शांत जगह पर जाता है ताकि वह बिना किसी की नज़र में आए प्रेम-क्रीड़ा कर सके, और जिस दिन वह वहाँ पहुँचता है, उसी दिन उसकी नज़र वहाँ के स्थानीय ज़मींदार या नाई पर पड़ जाती है—जिनका हाव-भाव और तौर-तरीका किसी भी संदेह की गुंजाइश नहीं छोड़ता। वह व्यापारी अक्सर अपने प्रतिस्पर्धी को नफ़रत की नज़र से देखने लगता है; यह नफ़रत कभी-कभी उदासी में बदल जाती है, और यदि उसमें वंशानुगत (hereditary) कमज़ोरी का अंश पर्याप्त मात्रा में मौजूद हो, तो छोटे शहरों में अक्सर यह देखने को मिलता है कि वह व्यापारी पागलपन के लक्षण दिखाने लगता है, जो कि...

इसका एकमात्र इलाज यही था कि वह अपना स्टॉक और गुडविल बेचकर किसी दूसरी जगह चला जाए। उस 'इनवर्ट' (समलैंगिक) का गुस्सा और भी ज़्यादा तकलीफ़देह होता है। उसे यह एहसास हो गया है कि पहले ही पल से, वह 'स्क्वायर' और वह 'नाई' उसके युवा साथी पर बुरी नज़र रखे हुए हैं। भले ही वह रोज़ाना सौ बार अपने साथी से यह दोहराता हो कि वह नाई और स्क्वायर नीच लोग हैं, और उनके संपर्क में आने से उसकी बदनामी होगी, फिर भी वह, 'हारपैगॉन' की तरह, अपने खजाने की रखवाली करने पर मजबूर है; और वह रात में उठकर यह पक्का करता है कि कहीं उसका खजाना चोरी तो नहीं हो रहा है। और इसमें कोई शक नहीं कि यही बात—इच्छा से भी ज़्यादा, या साथ बिताई आदतों की सहूलियत से भी ज़्यादा, और लगभग उतनी ही जितनी कि खुद को जानने का अनुभव—एक 'इनवर्ट' को दूसरे 'इनवर्ट' को पहचानने में मदद करती है; वह भी इतनी तेज़ी और निश्चितता के साथ कि उसमें गलती की गुंजाइश लगभग न के बराबर होती है। हो सकता है कि एक पल के लिए उसे कोई

गलतफ़हमी हो जाए, लेकिन उसकी तेज़ अंतर्दृष्टि उसे तुरंत सच्चाई से रूबरू करा देती है। और इसलिए, एम. डी चार्लस की वह गलतफ़हमी बहुत कम समय के लिए थी। उसकी दिव्य परख-शक्ति ने उसे पहले ही मिनट में यह दिखा दिया कि 'कॉटार्ड' उसकी बिरादरी का नहीं है, और उसे कॉटार्ड की तरफ़ से किसी भी तरह की 'पेशकदमी' (रोमांटिक इशारों) का डर पालने की ज़रूरत नहीं है—न तो अपने लिए (जिससे उसे बस झुंझलाहट ही होती), और न ही 'मोरेल' के लिए (जिसे वह कहीं ज़्यादा गंभीर मामला मानता)। उसका मन फिर से शांत हो गया; और चूँकि वह अभी भी 'वीनस एंड्रोजाइन' के प्रभाव में था, इसलिए वह बीच-बीच में 'वरडुरिन' लोगों को देखकर हल्की सी मुस्कान बिखेर देता—बिना अपना मुँह खोलने की ज़हमत उठाए; वह बस अपने होठों के एक कोने को हल्का सा मोड़ देता, और एक पल के लिए उसकी आँखों में एक 'नखरेबाज़' सी चमक कौंध जाती। वह अपनी 'पौरुषता' (मर्दानगी) को लेकर इतना ज़्यादा जुनूनी था कि वह ठीक वैसा ही करता, जैसा शायद उसकी भाभी —'डचेस डी गुएरमांटेस'—करतीं। "क्या आप शिकार के शौकीन हैं, जनाब?" एम. वरडुरिन ने एम. डी कैम्ब्रेमर से कुछ तिरस्कार भरे लहजे में पूछा। "क्या 'स्की' ने आपको बताया कि आज हम कितने बाल-बाल बचे?" कॉटार्ड ने उस घर की मालकिन से पूछा। "मैं ज़्यादातर 'शांतेपी' के जंगल में शिकार करता हूँ," एम. डी कैम्ब्रेमर ने जवाब दिया। "नहीं, मैंने उसे कुछ भी नहीं बताया है," स्की ने कहा। "क्या यह जगह अपने नाम के लायक है?" ब्रिशो ने M. de Cambremer से पूछा—मुझ पर अपनी आँख के कोने से एक नज़र डालने के बाद, क्योंकि उसने मुझसे वादा किया था कि वह 'व्युत्पत्तियों' (derivations) का विषय छेड़ेगा, और साथ ही मुझसे यह भी गुज़ारिश की थी कि मैं Cambremer वालों को यह न बताऊँ कि Combray के पादरी द्वारा दी गई व्युत्पत्तियों के प्रति उसके मन में कितनी अवमानना है। "मुझे डर है कि मैं शायद बहुत मंदबुद्धि हूँ, लेकिन मुझे आपका सवाल समझ नहीं आया," M. de Cambremer ने कहा। "मेरा मतलब है: क्या इसमें बहुत सारी 'पाई' (pies) गाती हैं?" ब्रिशो ने जवाब दिया। इस बीच, Cottard से यह बर्दाश्त नहीं हो रहा था कि Mme. Verdurin को यह पता न चले कि उनकी ट्रेन लगभग छूट ही गई थी। "बोल डालो," Mme. Cottard ने अपने पति को हिम्मत देते हुए कहा, "हमें अपनी पूरी कहानी सुनाओ।" "खैर, सच कहूँ तो, यह वाकई बहुत ही असाधारण बात है," डॉक्टर ने कहा, और अपनी कहानी शुरू से दोहराई।

"जब मैंने देखा कि ट्रेन स्टेशन पर खड़ी है, तो मैं हक्का-बक्का रह गया। यह सब Ski की गलती थी। तुम्हारी जानकारी थोड़ी गलत निकली, मेरे प्यारे दोस्त! और वहाँ स्टेशन पर ब्रिशो हमारा इंतज़ार कर रहा था!" "मैंने तो यह मान लिया था," उस विद्वान ने कहा—अपनी पतली होठों पर मुस्कान लिए हुए और अपनी आँखों से जितना हो सका, उतना चारों ओर देखते हुए —"कि अगर तुम Graincourt में फँस गए थे, तो इसका मतलब यह होगा कि तुम्हारा सामना किसी चलती-फिरती 'जलपरी' (siren) से हो गया था।" "ज़रा अपनी ज़बान पर लगाम दोगे? अगर मेरी पत्नी ने तुम्हें सुन लिया तो!" प्रोफेसर ने कहा। "यह जो मेरी पत्नी है, यह बहुत ईर्ष्यालु है।" "आह! वह ब्रिशो," Ski चिल्लाया—ब्रिशो की उस चटपटी मज़ाक-भरी बात से पारंपरिक उल्लास में डूबते हुए—"वह हमेशा एक जैसा ही रहता है;" हालाँकि उसके पास यह मानने का कोई कारण नहीं था कि उस विश्वविद्यालय के विद्वान ने कभी अश्लीलता का सहारा लिया हो। और, इस 'पवित्र' कथन को एक रस्मी हाव-भाव से और भी अलंकृत करने के लिए, उसने ऐसा अभिनय किया मानो वह ब्रिशो की टांग खींचने की अपनी इच्छा को रोक ही न पा रहा हो। "वह कभी नहीं बदलता, वह बदमाश," Ski आगे बोला—और बिना यह सोचे-समझे कि उस विद्वान के लगभग अंधेपन के कारण उसके शब्दों का प्रभाव एक साथ कितना दुखद और हास्यास्पद हो रहा था—"हमेशा औरतों की ताक में रहता है।" "आप देख रहे हैं," एम. डी कैम्ब्रेमर ने कहा, "एक विद्वान से मिलने का क्या मतलब होता है। मैं पिछले पंद्रह सालों से शैन्टेपी के जंगल में शिकार कर रहा हूँ, और मैंने कभी सोचा भी नहीं कि इस नाम का मतलब क्या है।" एमएमई. डी कैम्ब्रेमर ने अपने पति पर एक सख्त नज़र डाली; उन्हें यह बिल्कुल पसंद नहीं आया कि उनके पति ब्रिचोट के सामने इस तरह खुद को नीचा दिखाएँ। उन्हें और भी ज़्यादा गुस्सा तब आया, जब कैंकन द्वारा इस्तेमाल किए गए हर 'बने-बनाए' मुहावरे पर, कॉटार्ड—जो उन सभी की बारीकियों को जानता था, क्योंकि उसने खुद उन्हें बड़ी मेहनत से सीखा था—ने मार्किस को बताया (जिन्होंने अपनी नासमझी मान ली थी) कि उन मुहावरों का असल में कोई मतलब नहीं होता। "जैसे, 'गोभी जैसा बेवकूफ़' क्यों? क्या आपको लगता है कि गोभी किसी भी दूसरी चीज़ से ज़्यादा बेवकूफ़ होती है? आप कहते हैं: 'एक ही बात को छत्तीस बार दोहराना।' छत्तीस ही क्यों? आप ऐसा क्यों कहते हैं: 'लट्टू की तरह सोना?' 'ब्रेस्ट की गड़गड़ाहट' ही क्यों? 'चार सौ चालें चलना' ही क्यों?" लेकिन इस बात पर, एम. डी कैम्ब्रेमर

का बचाव ब्रिचोट ने किया, जिन्होंने इन सभी मुहावरों की उत्पत्ति के बारे में समझाया। लेकिन एमएमई. डी कैम्ब्रेमर मुख्य रूप से उन बदलावों को देखने में व्यस्त थीं, जो वर्दुरिन्स ने 'ला रास्पेलिएर' में किए थे—ताकि वह उनमें से कुछ की आलोचना कर सकें, और कुछ को—या शायद उन्हीं बदलावों को—'फेटर्न' में अपना सकें। "मैं बस यही सोच रही हूँ कि वह झूमर कौन-सा है, जो इतना टेढ़ा लटका हुआ है। मैं अपनी पुरानी 'रास्पेलिएर' को मुश्किल से ही पहचान पा रही हूँ," उन्होंने आगे कहा, और उनके चेहरे पर...

एक जानी-पहचानी, कुलीन अदा थी उनके अंदाज़ में—जैसे वह किसी पुराने नौकर के बारे में बात कर रही हों; उनका मकसद उसकी उम्र बताना उतना नहीं था, जितना यह जताना कि उन्होंने उसे उसके पालने के दिनों से देखा है। और, चूंकि उनकी बातचीत में किताबों का थोड़ा-सा असर था, इसलिए उन्होंने दबी ज़बान में आगे कहा: "फिर भी," उन्होंने जोड़ा, "मुझे यह महसूस किए बिना नहीं रहा जाता कि अगर मैं किसी और के घर में रह रही होती, तो इस तरह हर चीज़ को बदलने में मुझे थोड़ी हिचक ज़रूर होती।" "यह अफ़सोस की बात है कि आप उनके साथ नहीं आए," मादाम वेरडुरिन ने एम. दे शार्लस और मोरेल से कहा—इस उम्मीद के साथ कि एम. दे शार्लस अब उनके 'समूह में शामिल' हो गए हैं, और उस नियम का पालन करेंगे जिसके तहत सभी को एक ही ट्रेन से आना होता है। "क्या आपको पक्का यकीन है कि 'शांतेपी' का मतलब 'गाने वाली मैगपाई' (एक तरह की चिड़िया) ही होता है, चोचोट?" उन्होंने अपनी बात जारी रखी—यह दिखाने के लिए कि एक बेहतरीन मेज़बान होने के नाते, वह एक ही समय में हर बातचीत में हिस्सा ले सकती हैं। "मुझे इस वायलिन वादक के बारे में कुछ बताइए," मादाम दे काम्ब्रेमर ने मुझसे कहा, "मुझे उनमें दिलचस्पी है; मुझे संगीत से बेहद प्यार है, और मुझे लगता है कि मैंने उनके बारे में पहले भी सुना है—ज़रा मेरी जानकारी को पूरा कीजिए।" उन्हें पता चला था कि मोरेल, एम. दे शार्लस के साथ आए हैं; और उन्हें उम्मीद थी कि मोरेल को अपने घर बुलाकर, वह एम. दे शार्लस से दोस्ती कर पाएंगी। हालाँकि, उन्होंने अपनी बात में यह भी जोड़ा—ताकि मैं उनके पूछने की असली वजह का अंदाज़ा न लगा सकूँ—"मुझे एम. ब्रिशो में भी दिलचस्पी है।" क्योंकि, भले ही वह कितनी भी पढ़ी-लिखी और सुसंस्कृत क्यों न हों—ठीक वैसे ही जैसे कुछ लोग, जिनका शरीर मोटापे की

ओर झुकता है, न के बराबर खाना खाते हैं और दिन भर लगातार कसरत करते रहते हैं, फिर भी उनका मोटापा कम होने के बजाय बढ़ता ही जाता है—ठीक उसी तरह, मादाम दे काम्ब्रेमर भी—खासकर 'फ़ेतेर्न' में रहते हुए—दर्शनशास्त्र की कितनी भी गहरी और गूढ़ बातें क्यों न सीख लें, या संगीत की कितनी भी बारीकियाँ क्यों न समझ लें; इन सब अध्ययनों से बाहर निकलकर वह बस ऐसी साज़िशें बुनने में ही लगी रहती थीं, जिनके ज़रिए वह अपने बचपन के उन मध्य-वर्गीय दोस्तों से नाता तोड़ सकें, और उन ऊँचे तबके के लोगों से संबंध बना सकें—जिनके बारे में उन्होंने शुरू में सोचा था कि वे उनके 'ससुराल वालों' की सामाजिक दुनिया का हिस्सा होंगे, लेकिन बाद में उन्हें पता चला कि वे लोग तो कहीं ज़्यादा ऊँचे और दूर के लोग हैं। एक दार्शनिक—जो उनके हिसाब से शायद उतना 'आधुनिक' नहीं था—यानी 'लाइबनिट्ज़' ने कहा है कि 'बुद्धि से हृदय तक का सफ़र बहुत लंबा होता है।' मादाम दे काम्ब्रेमर भी—ठीक अपने भाई की तरह ही—इस लंबे सफ़र को तय करने में पूरी तरह असमर्थ थीं। जॉन स्टुअर्ट मिल की पढ़ाई छोड़कर सिर्फ़ लाचेलियर की पढ़ाई पर ध्यान देने के साथ-साथ, वह बाहरी दुनिया की असलियत पर जितना कम यकीन करती थी, मरने से पहले उस दुनिया में अपनी एक अच्छी जगह बनाने की उतनी ही ज़्यादा बेताबी से कोशिश करती थी। कला में यथार्थवाद के प्रति उसके जुनून में, कोई भी चीज़ उसे इतनी मामूली नहीं लगती थी कि वह किसी चित्रकार या लेखक के लिए एक मॉडल का काम कर सके। कोई भी फैशनेबल तस्वीर या उपन्यास उसे बीमार महसूस करा देता था; टॉल्स्टॉय के मुजिक (किसान), या मिलेट के किसान ही उसके लिए सामाजिक दायरे की आखिरी सीमा थे, जिसके पार वह किसी कलाकार को जाने की इजाज़त नहीं देती थी। लेकिन अपनी खुद की सामाजिक सीमाओं को पार करना, खुद को डचेस (रानी जैसी महिलाओं) के साथ करीबी जान-पहचान के स्तर तक पहुँचाना—यही उसके सारे प्रयासों का लक्ष्य था; महान कलाकृतियों के अध्ययन के ज़रिए उसने खुद पर जो आध्यात्मिक उपचार आज़माया था, वह उसके अंदर बचपन से ही मौजूद और बढ़ती हुई दिखावटी ऊँच-नीच की भावना (snobbishness) को दूर करने में पूरी तरह नाकाम रहा था। इस दिखावटीपन ने तो उसकी जवानी के दिनों की कुछ लालच और व्यभिचार की प्रवृत्तियों को भी ठीक कर दिया था—ठीक वैसे ही जैसे कुछ अजीब और स्थायी शारीरिक बीमारियाँ, उनसे पीड़ित लोगों को दूसरी

बीमारियों से सुरक्षित कर देती हैं। फिर भी, जब मैं उसकी बातें सुन रहा था, तो मैं उसकी भाषा की नफ़ासत की तारीफ़ किए बिना नहीं रह सका—भले ही मुझे उससे कोई खुशी नहीं मिल रही थी। वह ऐसी भाषा थी जिसका इस्तेमाल, उस ज़माने में, एक जैसी बौद्धिक सोच रखने वाले सभी लोग करते थे; इस तरह, वह नफ़ासत भरी भाषा हमें तुरंत ही—किसी वृत्त के चाप की तरह—पूरे वृत्त की परिधि का वर्णन करने और उसे परिभाषित करने का ज़रिया दे देती थी। और इसलिए, ऐसी भाषा का इस्तेमाल करने वाले लोग मुझे तुरंत ही बोर कर देते थे, क्योंकि मुझे लगता था कि मैं उन्हें पहले से ही जानता हूँ; फिर भी, आम तौर पर उन्हें बहुत ऊँचे दर्जे का इंसान माना जाता था, और अक्सर मुझे उनके साथ को बहुत ही सुखद और अनमोल बताया जाता था। "मैडम, आप इस बात से ज़रूर वाकिफ़ होंगी कि जंगल के कई इलाकों के नाम वहाँ रहने वाले जानवरों के नाम पर ही रखे जाते हैं। जैसे, शैन्टेपी के जंगल के ठीक बगल में, शैन्टेरेन का जंगल है।" "मुझे नहीं पता कि वह 'रानी' कौन है, लेकिन आप उसके साथ बिल्कुल भी तहज़ीब से पेश नहीं आ रहे हैं," एम. डी कैम्ब्रेमर ने कहा। "यह तो तुम्हारे लिए था, चोचोट," मैडम डी वर्दुरिन ने कहा। "और इसके अलावा, क्या आपकी यात्रा सुखद रही?" "हमें सिर्फ़ कुछ धुंधले से लोग दिखे, जो ट्रेन में ठसाठस भरे हुए थे। लेकिन मुझे M. de Cambremer के सवाल का जवाब देना ही होगा; इस मामले में 'reine' का मतलब राजा की पत्नी नहीं, बल्कि एक मेंढक है। इस इलाके में मेंढक का यह नाम काफ़ी समय से चला आ रहा है, जैसा कि 'Renneville' स्टेशन के नाम से पता चलता है, जिसे असल में 'Reineville' लिखा जाना चाहिए।" "सुनिए, वह जानवर तो काफ़ी बढ़िया लग रहा है," M. de Cambremer ने एक मछली की ओर इशारा करते हुए Mme. Verdurin से कहा। (यह उन तारीफ़ों में से एक थी, जिनके ज़रिए उन्हें लगता था कि वे किसी डिनर-पार्टी में अपने खाने का हिसाब चुका रहे हैं, और मेहमाननवाज़ी का तुरंत बदला चुका रहे हैं। "उन्हें बुलाने की कोई ज़रूरत नहीं है," वे अक्सर अपनी पत्नी से अपने किसी दोस्त जोड़े के बारे में बात करते हुए कहते थे। "वे तो हमें पाकर बहुत खुश हुए थे। असल में, उन्होंने ही मुझे आने के लिए धन्यवाद दिया था।") "मुझे..."

फिर भी, मैं आपको बता दूँ कि मैं सालों से हर रोज़ रेनेविल जाता रहा हूँ, और मुझे वहाँ कहीं भी, किसी भी दूसरी जगह के मुकाबले ज़्यादा मेंढक कभी नहीं दिखे। मैडम डी कैम्ब्रेमर यहाँ एक ऐसे पैरिश से क्यूरे (पादरी) को लाई हैं जहाँ उनकी काफ़ी ज़मीन-जायदाद है; मुझे लगता है कि उनकी सोच भी काफ़ी हद तक आपकी ही जैसी है। उन्होंने एक किताब लिखी है। "मुझे पता है, मैंने उसे बड़े ही चाव से पढ़ा है," ब्रिशो ने बनावटी अंदाज़ में जवाब दिया। इस जवाब से उनके घमंड को जो परोक्ष संतुष्टि मिली, उसकी वजह से एम. डी कैम्ब्रेमर ज़ोर-ज़ोर से और देर तक हँसते रहे। "आह! तो सुनिए, इस किताब के लेखक—अब मैं इसे क्या कहूँ—इस भूगोल, या इस शब्दकोश के लेखक ने, एक छोटी सी जगह के नाम पर बहुत विस्तार से चर्चा की है; यह वह जगह है जिसके हम पहले—अगर मैं ऐसा कह सकूँ तो—'लॉर्ड' (मालिक) हुआ करते थे, और जिसका नाम 'पॉन्ट-आ-कुलेव्रे' है। बेशक, ज्ञान के इस अथाह सागर के सामने मैं तो बस एक अनपढ़ गँवार ही हूँ, लेकिन अगर वह वहाँ एक बार गए हैं, तो मैं तो वहाँ हज़ार बार जा चुका हूँ; और अगर मुझे वहाँ उनका कोई भी 'घिनौना साँप' कभी दिखा हो, तो आप मुझे चाहे जो सज़ा दे दें—मैं उन्हें 'घिनौना' इसलिए कह रहा हूँ, भले ही ला फॉन्टेन जैसे महान लेखक ने उनकी कितनी ही तारीफ़ क्यों न की हो।" (उनकी दो कहानियों में से एक का नाम 'आदमी और साँप' था।) "आपको वहाँ कोई साँप नहीं दिखा, और आप बिल्कुल सही थे," ब्रिशो ने जवाब दिया। "निस्संदेह, जिस लेखक का आप ज़िक्र कर रहे हैं, उन्हें अपने विषय की पूरी-पूरी जानकारी है; उन्होंने वाकई एक ज़बरदस्त किताब लिखी है।" "देखा!" मैडम डी कैम्ब्रेमर खुशी से बोलीं, "वह किताब—उसके लिए और कोई शब्द नहीं है—वह तो अपने आप में एक 'बेनेडिक्टिन कृति' है।" "इसमें कोई शक नहीं कि उन्होंने कई 'पॉलीप्टिक्स' (जिनसे हमारा मतलब हर धर्मप्रांत के धार्मिक पदों और चर्चों की सूचियों से है) का अध्ययन किया होगा; हो सकता है कि उन्हीं से उन्हें ज़मींदार संरक्षकों और चर्च के अधिकारियों के नाम मिले हों। लेकिन इसके अलावा भी कुछ और स्रोत हैं। मेरे एक बहुत ही विद्वान मित्र ने उन स्रोतों की भी गहराई से छानबीन की है। उन्हें पता चला कि जिस जगह की बात हो रही है, उसका असली नाम 'पॉन्ट-आ-क्विलेव्रे' था।" इस अजीब नाम ने उन्हें अपनी खोज को और आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया—एक लैटिन लेख तक, जिसमें उस पुल को—जिसे आपका मित्र साँपों से भरा हुआ मानता है—'Pons cui aperit' कहा गया है: "एक बंद पुल, जिसे

केवल उचित भुगतान करने पर ही खोला जाता था।" "आप मेंढकों की बात कर रहे थे।" "जब मैं खुद को ऐसे विद्वान लोगों के बीच पाता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं एरिओपैगस के सामने एक मेंढक हूँ," (यह उनकी दूसरी कहानी थी) कैंकन ने कहा, जो अक्सर ज़ोरदार हँसी के साथ इस मज़ाक का आनंद लेते थे; उन्हें लगता था कि ऐसा करके वे एक ही समय में, विनम्रता और उपयुक्तता के साथ, अपनी अज्ञानता को स्वीकार भी कर रहे हैं और अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन भी कर रहे हैं। जहाँ तक कोटार्ड की बात थी, वे एक तरफ तो एम. डी चार्लस की चुप्पी से घिरे हुए थे, और दूसरी तरफ कहीं और बात करने का मौका ढूँढ़ रहे थे; इसलिए वे मेरी तरफ मुड़े और मुझसे एक ऐसा सवाल पूछा जिससे उनके मरीज़ बहुत प्रभावित होते थे—खासकर तब जब वह सवाल बिल्कुल सही बैठता था और उन्हें यह दिखाता था कि डॉक्टर, एक तरह से, उनके शरीर के अंदर तक झाँक सकते हैं। अगर दूसरी तरफ, वह सवाल सही नहीं बैठता था, तो भी उससे उन्हें कुछ सिद्धांतों की जाँच करने और अपने पहले के दृष्टिकोण को और व्यापक बनाने में मदद मिलती थी। "जब आप किसी अपेक्षाकृत ऊँची जगह पर आते हैं—जैसे कि यह जगह जहाँ हम अभी हैं—तो क्या आपको लगता है कि इस बदलाव की वजह से आपको 'साँस रुकने के दौरे' (choking fits) पड़ने की संभावना बढ़ जाती है?" उन्होंने मुझसे इस पूरे भरोसे के साथ पूछा कि या तो वे मेरी तारीफ़ पाएँगे या फिर अपने ज्ञान में कुछ इज़ाफ़ा करेंगे। एम. डी कैम्ब्रेमर ने यह सवाल सुना और मुस्कुरा दिए। "मैं आपको बता नहीं सकता कि यह सुनकर मुझे कितनी हैरानी और मज़ा आया कि आपको भी साँस रुकने के दौरे पड़ते हैं," उन्होंने मेज़ के उस पार से मेरी तरफ देखते हुए कहा। उनका मतलब यह नहीं था कि इससे उन्हें खुशी मिली, हालाँकि सच तो यह था कि उन्हें खुशी मिली ही थी। क्योंकि यह भले आदमी किसी दूसरे व्यक्ति के दुख-तकलीफ़ों के बारे में सुनकर संतुष्टि और हँसी के एक झटके के बिना नहीं रह पाते थे—हालाँकि यह हँसी जल्द ही एक दयालु हृदय की स्वाभाविक करुणा में बदल जाती थी। लेकिन उनके शब्दों का एक और भी अर्थ था, जिसे उनके अगले वाक्य ने और भी स्पष्ट रूप से ज़ाहिर कर दिया। "मुझे इसमें मज़ा इसलिए आया," उन्होंने समझाया, "क्योंकि मेरी बहन को भी ये दौरे पड़ते हैं।" और सचमुच, उन्हें इसमें मज़ा आया था—ठीक वैसे ही जैसे उन्हें यह सुनकर मज़ा आता कि मैं किसी ऐसे व्यक्ति को अपना दोस्त बता रहा हूँ जो अक्सर उनके घर आता-जाता रहता था।

"दुनिया कितनी छोटी है," यही वह विचार था जो उनके मन में आया और जिसे मैंने उनके मुस्कुराते हुए चेहरे पर साफ़ लिखा हुआ देखा—ठीक उसी पल जब कोटार्ड मुझसे मेरे साँस रुकने के दौरों के बारे में बात कर रहे थे। और इस दावत वाली शाम से ही, ये दौरे हमारे बीच एक 'साझी दिलचस्पी' का विषय बन गए; जिसके बाद एम. डी कैम्ब्रेमर ने कभी भी इनके बारे में पूछना नहीं छोड़ा—भले ही वे सिर्फ़ अपनी बहन को इसकी ख़बर देने के लिए ही पूछते हों। जब मैं उन सवालों के जवाब दे रहा था जो उनकी पत्नी... जब वे मोरेल के बारे में मुझसे लगातार पूछते रहे, तो मेरे विचार उस बातचीत पर लौट आए जो उस दोपहर मेरी माँ से हुई थी। उन्होंने मुझे वर्दुरिन्स के यहाँ जाने से रोकने की कोई कोशिश किए बिना—यह मानते हुए कि अगर वहाँ मेरा मनोरंजन होने की कोई संभावना है—यह सुझाव दिया था कि वह एक ऐसा घर है जिसे मेरे दादाजी पसंद नहीं करते, और जिसे देखकर वे ज़रूर कह उठते: "सावधान!" इसके बाद मेरी माँ ने आगे कहा: "सुनो, जज टौरेल और उनकी पत्नी ने मुझे बताया कि वे मैडम बॉनटेम्प्स के साथ दोपहर के भोजन पर गए थे। उन्होंने मुझसे कोई सवाल नहीं पूछा। लेकिन उनकी बातों से मुझे ऐसा लगा कि अल्बर्टिन के साथ तुम्हारी शादी उसकी मौसी के जीवन की सबसे बड़ी खुशी होगी। मुझे लगता है कि इसका असली कारण यह है कि वे सभी तुम्हें बहुत पसंद करते हैं। साथ ही, जिस तरह से वे यह मानकर चलते हैं कि तुम उसे अच्छे से रख पाओगे—और जिस तरह के दोस्त हमारे हैं, जिनके बारे में वे कमोबेश जानते ही हैं—ये सभी बातें..."

मुझे लगता है कि इस बात को नज़रअंदाज़ नहीं किया गया है, भले ही यह एक छोटी सी बात हो। मैं खुद तुमसे इसका ज़िक्र नहीं करती, क्योंकि मैं इसे कोई खास अहमियत नहीं देती; लेकिन मुझे लगता है कि लोग तुमसे इसका ज़िक्र ज़रूर करेंगे, इसलिए मैंने सोचा कि पहले ही मैं तुमसे इस बारे में बात कर लूँ।" "लेकिन तुम खुद, तुम उसके बारे में क्या सोचती हो?" मैंने अपनी माँ से पूछा। "देखो, शादी तो मुझे उससे करनी नहीं है। तुम यकीनन उससे हज़ार गुना बेहतर लड़की चुन सकते हो। लेकिन मुझे लगता है कि तुम्हारी दादी को यह बिल्कुल पसंद नहीं आता कि मैं तुम्हारे फैसले पर कोई असर डालूँ। सच कहूँ तो, मैं तुम्हें यह नहीं बता सकती कि मैं अल्बर्टिन के बारे में क्या सोचती हूँ; क्योंकि मैं उसके बारे में सोचती ही नहीं हूँ। मैं तुमसे वही कहूँगी जो मैडम डी सेविग्ने ने कहा था: 'उसमें कुछ अच्छी खूबियाँ हैं, कम-से-

कम मुझे तो ऐसा ही लगता है। लेकिन अभी इस शुरुआती दौर में, मैं उसकी तारीफ़ सिर्फ़ यह बताकर कर सकती हूँ कि उसमें क्या नहीं है। एक चीज़ जो उसमें बिल्कुल नहीं है, वह है रेनेस का लहजा। समय के साथ, शायद मैं यह भी कहूँगी कि उसमें कुछ और भी खास है। और अगर वह तुम्हें खुश रख पाती है, तो मैं हमेशा उसके बारे में अच्छा ही सोचूँगी।'" लेकिन इन्हीं शब्दों के ज़रिए—जिनमें मेरी अपनी खुशी का फैसला मुझ पर ही छोड़ दिया गया था—मेरी माँ ने मुझे फिर से उसी दुविधा में डाल दिया, जिसमें मैं बहुत पहले तब फँस गया था, जब मेरे पिता ने मुझे 'फेड्रा' नाटक देखने जाने की इजाज़त दे दी थी, और उससे भी बढ़कर, मुझे लिखने-पढ़ने का काम शुरू करने की छूट दे दी थी। उस वक्त मुझे अचानक ही अपने कंधों पर एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी का बोझ महसूस हुआ था—उन्हें नाराज़ करने का डर, और वह उदासी जो हमें तब घेर लेती है जब हम उन आदेशों का पालन करना छोड़ देते हैं जो एक दिन से दूसरे दिन तक हमारे भविष्य को छिपाकर रखते हैं; और जब हमें यह एहसास होता है कि अब आखिरकार हमने सचमुच एक बड़े-बुज़ुर्ग इंसान की तरह अपनी ज़िंदगी जीना शुरू कर दिया है—वह ज़िंदगी, जो हममें से हर किसी के पास मौजूद एकमात्र ज़िंदगी है।

शायद सबसे अच्छा यही होगा कि मैं थोड़ा और इंतज़ार करूँ, अल्बर्टीन को अतीत मानकर चलना शुरू करूँ, ताकि पता चल सके कि क्या मैं सचमुच उससे प्यार करता था। मैं उसे ध्यान भटकाने के लिए वर्दुरिन परिवार से मिलने ले जा सकता हूँ, और इस विचार ने मुझे याद दिलाया कि मैं खुद उस शाम वहाँ सिर्फ यह जानने के लिए गया था कि श्रीमती पुटबस वहाँ ठहरी हैं या उनके आने की उम्मीद है। खैर, वह उनके साथ भोजन नहीं कर रही थीं। "आपके मित्र सेंट-लूप की बात करें तो," श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने कहा, उनके शब्दों से उनके विचारों में एक गहरा क्रम झलक रहा था, जितना कि उनके शब्दों से लग सकता था, क्योंकि अगर वह मुझसे संगीत के बारे में बात कर रही थीं तो उनका मतलब गुएरमांटे परिवार के बारे में ही था; "आप जानते हैं कि हर कोई राजकुमारी डी गुएरमांटे की भतीजी से उनकी शादी के बारे में बात कर रहा है। मैं आपको बता दूँ कि जहाँ तक मेरा सवाल है, समाज की ये सारी गपशप

मुझे बेअसर लगती है।" मुझे डर सता रहा था कि कहीं मैंने रॉबर्ट से उस लड़की के बारे में कुछ ऐसा न कह दिया हो जो मुझे बेपरवाह बना दे, एक ऐसी लड़की जो दिखावटी मौलिकता से भरी थी, जिसका दिमाग उतना ही साधारण था जितनी उसकी हरकतें हिंसक थीं। शायद ही कभी हम कुछ ऐसा सुनते हैं जिससे हमें अपने कहे पर पछतावा न हो। मैंने श्रीमती डी कैम्ब्रेमर को सच-सच जवाब दिया कि मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता, और वैसे भी मुझे लगता है कि वह लड़की अभी सगाई के लिए बहुत छोटी है। "शायद इसीलिए अभी तक सगाई पक्की नहीं हुई है, वैसे भी इसके बारे में बहुत बातें हो रही हैं।" "मुझे आपको चेतावनी देनी चाहिए," श्रीमती वर्दुरिन ने श्रीमती डी कैम्ब्रेमर से रूखेपन से कहा, क्योंकि उन्होंने मुझे मोरेल के बारे में उनसे बात करते हुए सुना था और जब श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने सेंट-लूप की सगाई के बारे में बात करने के लिए अपनी आवाज़ धीमी की, तो उन्हें लगा कि मोरेल के बारे में अभी भी चर्चा चल रही है। “यहाँ आपको हल्के-फुल्के संगीत की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। कला के मामले में, आप जानते हैं, मेरे बुधवार के कार्यक्रमों में आने वाले श्रद्धालु, जिन्हें मैं अपने बच्चे कहती हूँ, सभी बेहद उन्नत हैं,” उन्होंने गर्व और भय के भाव से कहा। “मैं कभी-कभी उनसे कहती हूँ: मेरे प्यारे लोगों, आप अपनी स्वामिनी से बहुत आगे बढ़ रहे हैं, हालाँकि ऐसा नहीं है कि उन्हें कभी किसी साहसिक चीज़ से डर लगा हो। हर साल यह थोड़ा और आगे बढ़ता जा रहा है; मैं वह दिन आते देख सकती हूँ जब उन्हें वैगनर या इंडी की कोई ज़रूरत नहीं रहेगी।” “लेकिन उन्नत होना शानदार है, कोई कभी भी पर्याप्त उन्नत नहीं हो सकता,” श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने भोजन कक्ष के हर कोने को ध्यान से देखते हुए कहा, अपनी सास द्वारा वहाँ छोड़ी गई चीज़ों और श्रीमती वर्दुरिन द्वारा लाई गई चीज़ों को पहचानने की कोशिश कर रही थीं, और बाद वाली को उनकी खराब रुचि के लिए रंगे हाथों पकड़ने की कोशिश कर रही थीं। साथ ही, उन्होंने मुझे उस विषय पर बात करने के लिए प्रेरित करने की कोशिश की जिसमें उनकी सबसे अधिक रुचि थी, एम. डी चार्लस। उन्हें यह देखकर अच्छा लगा कि वह एक वायलिन वादक की देखभाल कर रहे हैं। "वह बुद्धिमान लगते हैं।" "अरे वाह, उनकी उम्र के हिसाब से उनका दिमाग तो बहुत तेज़ है," मैंने कहा। "उम्र? लेकिन वह बिल्कुल बूढ़े नहीं लगते, देखो, उनके बाल तो अभी भी जवान हैं।" (क्योंकि पिछले तीन-चार सालों से, साहित्यिक चलन शुरू करने वाले उन अज्ञात लोगों में से किसी एक ने 'बाल' शब्द

का प्रयोग आर्टिकल के साथ किया था, और श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के आसपास के सभी लोग बनावटी मुस्कान के साथ 'बाल' कहते थे। आज भी लोग 'बाल' कहते हैं, लेकिन आर्टिकल के अत्यधिक प्रयोग से सर्वनाम का नया रूप सामने आएगा।) "श्री डी चार्लस के बारे में मुझे सबसे ज़्यादा जो बात आकर्षित करती है," उन्होंने आगे कहा, "वह यह है कि उनमें प्रतिभा झलकती है। मैं आपको बता दूं कि मैं ज्ञान को ज़्यादा महत्व नहीं देती। जो चीज़ें सीखी जा सकती हैं, उनमें मेरी कोई रुचि नहीं है।" यह बात श्रीमती डी कैम्ब्रेमर की अपनी विशिष्टता से मेल खाती थी, जो पूरी तरह से अनुकरण और अर्जित की गई थी। लेकिन संयोगवश, उस समय जो बात जानना आवश्यक था, वह यह थी कि ज्ञान कुछ भी नहीं है, और मौलिकता के सामने उसका कोई मूल्य नहीं है। श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने अन्य बातों के साथ-साथ यह भी सीख लिया था कि किसी को कुछ भी नहीं सीखना चाहिए। उन्होंने मुझे समझाया, "इसीलिए ब्रिचोट, जिसका एक रोचक पहलू है, क्योंकि मैं कुछ हद तक तीखे ज्ञान को तुच्छ नहीं समझती, मुझे बहुत कम रुचिकर लगता है।" लेकिन ब्रिचोट उस समय केवल एक ही बात में मग्न था; लोगों को संगीत के बारे में बात करते सुनकर, वह कांप उठा कि कहीं यह विषय श्रीमती वर्दुरिन को डीकैम्ब्रे की मृत्यु की याद न दिला दे। उसने कुछ ऐसा कहने का फैसला किया जिससे वह उस भयावह स्मृति को दूर कर सके। श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने उससे यह प्रश्न पूछकर उसे एक अवसर प्रदान किया: "क्या आपका मतलब यह है कि वन क्षेत्रों के नाम हमेशा जानवरों के नाम पर रखे जाते हैं?" ब्रिचोट ने उत्तर दिया, "बिल्कुल नहीं," इतने सारे अजनबियों के सामने अपना ज्ञान प्रदर्शित करने में गर्व महसूस करते हुए, जिनमें से, मैंने उससे कहा था, वह निश्चित रूप से कम से कम एक को तो रुचिकर लगेगा। "हमें बस इस बात पर गौर करना है कि कितनी बार, लोगों के नामों में भी, एक पेड़ को संरक्षित रखा जाता है, जैसे कोयले के टुकड़े में फर्न। हमारे एक विशेष पादरी का नाम एम. डी सॉल्सेस डी फ्रेसीनेट है, जिसका अर्थ है, अगर मैं गलत नहीं हूँ, तो विलो और ऐश के पेड़ों से लगाया गया स्थान; उनके भतीजे एम. डी सेल्व्स में तो और भी अधिक पेड़ हैं, क्योंकि उनका नाम डी सेल्व्स, डी सिल्वीस है।" सैनिएट बातचीत को इतना जीवंत होते देखकर बहुत खुश हुए। ब्रिचोट लगातार बोल रहे थे, इसलिए वे चुप रह सके और एम. और मैडम वर्दुरिन के तीखे व्यंग्य से बच गए। और आज़ाद होने की खुशी में और भी भावुक होते हुए, उन्हें तब बहुत बुरा लगा जब उन्होंने एम. वर्दुरिन को, इतने

भव्य रात्रिभोज की औपचारिकता के बावजूद, बटलर से एम. सैनिएट के सामने पानी का एक बड़ा बर्तन रखने को कहते सुना, जो वैसे भी कभी कुछ और नहीं पीते थे। (अधिकांश सैनिकों की मृत्यु के लिए ज़िम्मेदार सेनापति उनके भरपेट भोजन पर ज़ोर देते हैं।) इसके अलावा, श्रीमती वर्दुरिन ने एक बार सैनियेट पर मुस्कुराया भी था। निश्चित रूप से, वे दयालु लोग थे। अब उसे और यातना नहीं दी जाएगी। इसी क्षण भोजन में एक ऐसे व्यक्ति ने खलल डाला जिसका ज़िक्र करना मैं भूल गया था। वह एक प्रख्यात नॉर्वेजियन दार्शनिक थे जो बहुत अच्छी फ्रेंच बोलते थे, लेकिन बहुत धीरे-धीरे। इसके दो कारण थे: पहला, उन्होंने हाल ही में यह भाषा सीखी थी और गलतियाँ नहीं करना चाहते थे (फिर भी उन्होंने कुछ गलतियाँ कीं), इसलिए वे प्रत्येक शब्द को एक तरह के मानसिक शब्दकोश से जोड़कर बोलते थे। दूसरा, वे एक तत्वज्ञानी थे, इसलिए वे बोलते समय हमेशा अपने विचारों पर ध्यान देते थे, जो एक फ्रांसीसी व्यक्ति में भी बोलने में धीमापन पैदा करता है। वैसे तो वे एक आकर्षक व्यक्ति थे, हालाँकि दिखने में वे कई अन्य लोगों से मिलते-जुलते थे, सिवाय एक बात के। बोलने में इतने धीमे (हर शब्द के बाद मौन का अंतराल होता था) इस व्यक्ति ने अलविदा कहते ही कमरे से निकलने में आश्चर्यजनक तेज़ी दिखाई। उसकी जल्दबाजी को देखकर पहली बार में किसी को भी यही लग सकता था कि वह पेट दर्द या किसी और भी गंभीर समस्या से पीड़ित है।

"मेरे प्रिय—सहकर्मी," उसने ब्रिचोट से कहा, अपने मन में यह सोचने के बाद कि क्या 'सहकर्मी' सही शब्द है, "मेरी एक तरह की—इच्छा है यह जानने की कि क्या आपकी सुंदर फ्रेंच—लैटिन—नॉर्मन भाषा की—शब्दावली में और भी पेड़ हैं। मैडम" (उसका मतलब मैडम वेर्दुरिन से था, हालाँकि उसकी हिम्मत नहीं हुई कि वह उनकी ओर देखे) "ने मुझे बताया है कि आप सब कुछ जानते हैं। क्या यह ठीक वही पल नहीं है?" "नहीं, यह खाने का पल है," मैडम वेर्दुरिन ने बीच में टोकते हुए कहा, जिन्हें लग रहा था कि रात का खाना कभी खत्म ही नहीं होगा। "बहुत अच्छा," उस स्कैंडिनेवियाई व्यक्ति ने जवाब दिया, अपना सिर अपनी प्लेट पर झुकाते हुए, एक हार मान लेने वाली और उदास मुस्कान के साथ। "लेकिन मुझे मैडम को यह बताना होगा कि अगर मैंने खुद को यह प्रश्नावली—माफ़ कीजिए, यह पूछताछ—करने की इजाज़त दी है, तो इसलिए क्योंकि मुझे कल पेरिस लौटना है, ताकि मैं

'टूर डी'अर्जेंट' या 'होटल म्युरिस' में खाना खा सकूँ। मेरे फ्रेंच—भाई—एम. बुटू वहाँ हमें अध्यात्मवाद के कुछ सत्रों—माफ़ कीजिए, कुछ आध्यात्मिक आह्वान के बारे में संबोधित करने वाले हैं, जिन्हें उन्होंने नियंत्रित किया है।" "टूर डी'अर्जेंट उतना अच्छा नहीं है जितना लोग उसे बताते हैं," मैडम वेर्डुरिन ने कड़वाहट से कहा। "असल में, मैंने वहाँ कुछ बहुत ही घटिया खाने खाए हैं।" "लेकिन क्या मैं गलत हूँ? क्या मैडम की मेज़ पर जो खाना परोसा जाता है, वह बेहतरीन फ्रेंच पाक-कला का एक बेहतरीन उदाहरण नहीं है?" "खैर, यह पूरी तरह से बुरा तो नहीं है," मैडम वेर्डुरिन ने जवाब दिया, उनकी आवाज़ में थोड़ी मिठास आ गई थी। "और अगर आप अगले बुधवार को आएँगे, तो यह और भी बेहतर होगा।" "लेकिन मैं सोमवार को अल्जीयर्स के लिए निकल रहा हूँ, और वहाँ से मैं 'केप' जा रहा हूँ। और जब मैं 'केप ऑफ़ गुड होप' में होऊँगा, तो मैं अपने प्रतिष्ठित सहकर्मी—माफ़ कीजिए, मैं अपने भाई से दोबारा नहीं मिल पाऊँगा।" और इन पिछली गलतियों के लिए माफ़ी माँगने के बाद, उसने आज्ञाकारी बनकर, बहुत तेज़ी से अपना खाना खाना शुरू कर दिया। लेकिन ब्रिचोट तो और भी ज़्यादा खुश था कि वह पेड़ों से जुड़ी और भी शब्द-व्युत्पत्तियाँ बता सकता था; उसने जवाब दिया, जिससे वह नॉर्वेजियाई व्यक्ति इतना प्रभावित हुआ कि उसने फिर से खाना बंद कर दिया—लेकिन साथ ही उसने नौकरों को इशारा किया कि वे उसकी प्लेट हटा लें और उसे अगला व्यंजन परोसें। "चालीस लोगों में से एक," ब्रिशो ने कहा, "का नाम हुसे है, या ऐसी जगह जहाँ हॉली के पेड़ लगे हों; एक शानदार डिप्लोमैट, डी'ऑर्मेसन के नाम में, आपको एल्म का पेड़ मिलेगा—वही 'अल्मस' जो वर्जिल को बहुत प्रिय था, और जिसके नाम पर 'उल्म' शहर का नाम पड़ा; उनके साथियों के नामों में भी पेड़ों के नाम छिपे हैं: एम. डी ला बुले में 'बर्च' (बुलो), एम. डी'ओने में 'एल्डर' (ओन), एम. डी बुसिएर में 'बॉक्स' (बुइस), और एम. अल्बारे में 'सपवुड' (ओबिए)" (मैंने मन ही मन यह बात याद रख ली कि मुझे यह सेलेस्ट को ज़रूर बतानी है), "एम. डी चोलेट में 'गोभी' (शू), और एम. डी ला पोमेरे के नाम में 'सेब का पेड़' (पोमिएर)—जिनके लेक्चर हम सुना करते थे; तुम्हें याद है न, सानिएत? उन दिनों की बात है जब हमारे आदरणीय पोरेल को दुनिया के दूसरे छोर पर, ओडोनिया में प्रोकौंसल बनाकर भेजा गया था?" "आपने कहा था कि 'चोलेट' नाम 'शू' शब्द से बना है," मैंने ब्रिशो से कहा। "तो क्या मैं यह मान लूँ कि 'डोंसिएर' पहुँचने से पहले जिस स्टेशन से मैं गुज़रा था—'सेंट-फ्रिशू'—

उसका नाम भी 'शू' से ही आया है?" "नहीं, सेंट-फ्रिशू असल में 'सैंक्टस फ्रुक्टुओसस' है; ठीक वैसे ही जैसे 'सैंक्टस फेरेओलस' से 'सेंट-फार्गो' नाम बना। लेकिन, इसमें नॉर्मन भाषा का कोई भी अंश नहीं है।" "यह तो बहुत ज़्यादा जानता है; इसने तो हमें बोर कर दिया," राजकुमारी ने दबी ज़बान में बुदबुदाते हुए कहा। "और भी न जाने कितने नाम हैं जिनमें मेरी दिलचस्पी है, लेकिन मैं एक ही बार में आपसे सब कुछ तो नहीं पूछ सकती।" और फिर, कोट्टार्ड की ओर मुड़ते हुए मैंने पूछा, "क्या मैडम पुटबस यहाँ आई हुई हैं?" जब ब्रिशो ने सानिएत का नाम लिया, तो एम. वर्दुरिन ने अपनी पत्नी और कोट्टार्ड की ओर व्यंग्य भरी नज़र से देखा; उनकी उस नज़र ने बेचारे शर्मीले मेहमान को पूरी तरह से घबरा दिया। "नहीं, भगवान का शुक्र है," मैडम वर्दुरिन ने जवाब दिया—जिन्होंने मेरा सवाल सुन लिया था—"मैंने किसी तरह उनका ध्यान वेनिस की ओर मोड़ दिया है; अब इस साल तो हमें उनसे छुटकारा मिल ही गया है।" "अब जल्द ही दो पेड़ों पर मेरा भी हक़ होगा," एम. डी चार्लस ने कहा, "क्योंकि मैंने सेंट-मार्टिन-डु-चेन और सेंट-पियरे-डेस-इफ्स के बीच एक छोटा-सा घर ले लिया है।" "लेकिन यह तो यहाँ से काफ़ी पास है; मुझे उम्मीद है कि आप चार्ली मोरेल के साथ अक्सर यहाँ आते रहेंगे। आपको बस हमारे छोटे से ग्रुप के साथ ट्रेनों के बारे में तालमेल बिठाना होगा; आप तो डोंसिएरेस से बस एक कदम की दूरी पर हैं," एमएमई. वर्दुरिन ने कहा। उन्हें यह बिल्कुल पसंद नहीं था कि लोग एक ही ट्रेन से न आएँ, या उस समय पर न पहुँचें जब उन्होंने उन्हें लेने के लिए गाड़ियाँ भेजी हों। वह जानती थीं कि ला रास्पेलिएर तक चढ़ाई कितनी मुश्किल है—भले ही कोई फेतेर्न के पीछे वाला घुमावदार रास्ता ही क्यों न ले, जिसमें आधा घंटा ज़्यादा लगता था। उन्हें डर था कि उनके जो मेहमान अकेले-अकेले रहना पसंद करते हैं, उन्हें शायद ले जाने के लिए गाड़ियाँ न मिलें; या फिर, असल में न आने का बहाना बनाते हुए वे यह कह दें कि उन्हें डोविल-फेतेर्न में कोई गाड़ी नहीं मिली, और वे इतनी मुश्किल चढ़ाई पैदल चढ़ने में खुद को समर्थ महसूस नहीं कर रहे थे। इस न्योते के जवाब में एम. डी चार्लस ने चुपचाप सिर झुकाकर अभिवादन किया। "यह ऐसे इंसान नहीं हैं जिनसे आप हफ़्ते के किसी भी दिन बात कर सकें; ये तो काफ़ी अक्खड़ मिज़ाज के लगते हैं," डॉक्टर ने स्की के कान में फुसफुसाते हुए कहा। ऊपरी तौर पर घमंड का दिखावा करने के बावजूद, वह स्वभाव से काफ़ी सीधे-सादे थे; इसलिए उन्होंने इस बात को छिपाने की कोई कोशिश नहीं की कि चार्लस ने उन्हें

नज़रअंदाज़ किया था। "उन्हें शायद यह पता नहीं है कि सभी स्वास्थ्य-स्थलों पर—और यहाँ तक कि पेरिस के अस्पतालों में भी—जो डॉक्टर मुझे स्वाभाविक रूप से अपना 'मुखिया' मानते हैं, वे मुझसे परिचय करवाना अपने लिए सम्मान की बात समझते हैं..."
"मुझे यहाँ मौजूद सभी रईसों से मिलवा दो—वैसे उन्हें दोबारा कहने की ज़रूरत नहीं पड़ती। इससे स्पा में मेरा समय काफ़ी मज़ेदार गुज़रता है," उसने बेपरवाही से कहा। "दरअसल, Doncières में रेजिमेंट के मेडिकल ऑफ़िसर—जो कर्नल के डॉक्टर भी हैं—ने मुझे उनसे मिलवाने के लिए दोपहर के खाने पर बुलाया था; उन्होंने कहा था कि जनरल के साथ खाना खाने का मुझे पूरा हक़ है। और वह जनरल कोई 'Monsieur de...' हैं। मुझे नहीं पता कि उनके खानदानी दस्तावेज़ इस बैरन के दस्तावेज़ों से ज़्यादा पुराने हैं या कम।" "तुम उसकी फ़िक्र मत करो, उसका ओहदा तो बहुत ही मामूली है," Ski ने दबी आवाज़ में जवाब दिया, और फिर कुछ ऐसी अस्पष्ट बात कही जिसका मुझे बस आख़िरी अक्षर ही सुनाई दिया —'ast'—क्योंकि मैं उस वक़्त Brichot की बातें सुनने में मगन था, जो M. de Charlus से बात कर रहा था।

"नहीं, जहाँ तक इसकी बात है, मुझे अफ़सोस के साथ कहना पड़ रहा है कि शायद आपके पास सिर्फ़ एक ही पेड़ है; क्योंकि अगर 'Saint–Martin–du–Chêne' का मतलब साफ़ तौर पर 'Sanctus Martinus juxta quercum' है, तो दूसरी तरफ़, शब्द 'if' शायद सिर्फ़ मूल शब्द 'ave' या 'eve' हो सकता है, जिसका अर्थ है 'नम'—जैसा कि 'Aveyron', 'Lodève', 'Yvette' में है—और जिसे आप आज भी हमारी रसोई के सिंक (éviers) में देख सकते हैं। यह शब्द 'eau' (पानी) है, जिसे ब्रेटन भाषा में 'ster' से दर्शाया जाता है—जैसे 'Stermaria', 'Sterlaer', 'Sterbouest', 'Ster–en–Dreuchen'।" मैंने इसके आगे कुछ नहीं सुना; क्योंकि 'Stermaria' नाम दोबारा सुनकर मुझे चाहे जितनी भी खुशी हुई हो, मैं अपने बगल में बैठे 'Cottard' की बातें सुने बिना नहीं रह सका, जो 'Ski' से धीरे-धीरे कह रहा था: "सच में! मुझे इस बारे में पता ही नहीं था। तो यह जनाब ऐसे सज्जन हैं जिन्होंने 'पीछे देखना' सीख लिया है! क्या ये भी उस 'खुशहाल टोली' का हिस्सा हैं? फिर भी, इनकी आँखों के चारों ओर चर्बी के छल्ले तो नहीं दिख रहे। मुझे अपने पैरों को अपने नीचे ही समेटकर रखना होगा, वरना कहीं

ये उन्हें दबाना शुरू न कर दें। लेकिन मुझे ज़रा भी हैरानी नहीं हुई। मुझे नहाते हुए रईसों को उनके 'जन्मदिन के लिबास' (नंगे बदन) में देखने की आदत है; वे सब कमोबेश पतित ही होते हैं। मैं उनसे बात नहीं करता, क्योंकि आख़िरकार मैं एक सरकारी पद पर हूँ और ऐसा करना मेरे लिए नुकसानदायक हो सकता है। लेकिन उन्हें अच्छी तरह पता है कि मैं कौन हूँ।" 'Saniette', जो 'Brichot' की तीखी बात से डर गया था, अब फिर से चैन की साँस लेने लगा था—ठीक उस आदमी की तरह जो तूफ़ान से डरता है, लेकिन जब देखता है कि बिजली चमकने के बाद कोई गड़गड़ाहट नहीं हुई, तो उसे राहत मिलती है—तभी उसने सुना कि 'M. Verdurin' उससे सवाल कर रहे हैं। 'Verdurin' ने उस बेचारे पर ऐसी घूरती नज़रें जमा दीं कि जब तक वह अपनी बात पूरी नहीं कर चुका, तब तक उन नज़रों ने उसका पीछा नहीं छोड़ा; ऐसा करके उन्होंने उसे एक ही पल में शर्मिंदा कर दिया और उसे अपना खोया हुआ आत्मविश्वास वापस पाने का कोई मौका नहीं दिया। "लेकिन 'Saniette', तुमने हमें कभी बताया ही नहीं कि तुम 'Odéon' में होने वाले उन 'matinées' (सुबह के शो) में जाते थे?" किसी दबंग सार्जेंट के सामने काँपते हुए नए सिपाही की तरह, 'Saniette' ने जवाब दिया। उसने अपनी आवाज़ को जितना हो सके धीमा और छोटा रखा, ताकि उसे उस 'वार' से बचने का बेहतर मौका मिल सके: "सिर्फ़ एक बार, 'Chercheuse' देखने गया था।" "यह क्या कह रहा है?" एम. वर्दुरिन ने गुस्से और नफ़रत भरे अंदाज़ में चिल्लाते हुए कहा, अपनी भौंहें सिकोड़ते हुए, मानो वह कुछ ऐसी बात समझने की कोशिश कर रहे हों जो समझ से बाहर हो। "तुम्हारी बात समझना नामुमकिन है, तुम्हारे मुँह में क्या भरा है?" एम. वर्दुरिन ने पूछा, उनका गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था, और वह सानिएट के अटक-अटककर बोलने की आदत की तरफ़ इशारा कर रहे थे। "बेचारा सानिएट, मैं उसे दुखी नहीं होने दूँगी," एमएम. वर्दुरिन ने झूठी हमदर्दी दिखाते हुए कहा, ताकि किसी को भी उनके पति के बदतमीज़ इरादे पर कोई शक न रहे। "मैं Ch...Che... में था।" "Che, che, साफ़-साफ़ बोलने की कोशिश करो," एम. वर्दुरिन ने कहा, "मुझे तुम्हारी एक भी बात समझ नहीं आ रही।" लगभग सभी वफ़ादार लोग ज़ोर से हँस पड़े; वे नरभक्षियों के एक झुंड जैसे लग रहे थे, जिन्हें किसी गोरे आदमी की चमड़ी पर ज़ख्म देखकर खून पीने की प्यास जाग उठी हो। क्योंकि नकल करने की आदत और हिम्मत की कमी ही समाज और भीड़, दोनों पर राज करती है। और हम सभी उस इंसान पर

हँसते हैं जिसका मज़ाक उड़ाया जा रहा हो; लेकिन दस साल बाद, जब वही इंसान किसी ऐसे माहौल में हो जहाँ उसकी तारीफ़ होती हो, तो हम उसकी इज़्ज़त करने से पीछे नहीं हटते। ठीक इसी तरह, आम जनता अपने राजाओं को या तो देश-निकाला दे देती है या फिर उनका ज़ोरदार स्वागत करती है। "अरे, अब रहने भी दो, इसमें उसकी कोई गलती नहीं है," एमएम. वर्दुरिन ने कहा। "इसमें मेरी भी कोई गलती नहीं है; अगर लोग ठीक से बोल नहीं सकते, तो उन्हें बाहर खाना खाने के लिए नहीं जाना चाहिए।" "मैं फ़ावार्ट के 'Chercheuse d'Esprit' में था।" "क्या! तुम 'Chercheuse d'Esprit' को सिर्फ़ 'Chercheuse' कहते हो? अरे, यह तो कमाल की बात है! मैं सौ साल तक भी अंदाज़ा लगाने की कोशिश करता, तो भी यह बात नहीं पकड़ पाता," एम. वर्दुरिन चिल्लाए। हालाँकि, अगर वह तुम्हें किसी किताब का पूरा नाम लेते हुए सुन लेते, तो वह तुरंत यह तय कर लेते कि तुम न तो साहित्य को समझते हो, न ही कला को, और न ही तुम 'हममें से एक' हो। मिसाल के तौर पर, लोगों से उम्मीद की जाती थी कि वे सिर्फ़ 'Malade' या 'Bourgeois' कहें; और अगर कोई 'imaginaire' या 'gentilhomme' शब्द भी जोड़ देता, तो इससे यह साबित हो जाता कि उसे उस खास माहौल की 'बारीकियों' (shop) की समझ नहीं है—ठीक वैसे ही, जैसे किसी ड्राइंग-रूम में कोई इंसान किसी का नाम लेते हुए 'M.' (Monsieur) शब्द का इस्तेमाल करके यह साबित कर देता है कि वह उस ऊँचे समाज का हिस्सा नहीं है। 'M. de Montesquieu' के बजाय 'de Montesquiou–Fézensac' कहा। "लेकिन यह इतना भी अजीब नहीं है," सानिएट ने कहा, जो भावनाओं से गदगद था लेकिन मुस्कुरा रहा था, हालाँकि वह मुस्कुराने के मूड में बिल्कुल नहीं था। Mme. Verdurin खुद को रोक नहीं पाईं। "हाँ, बिल्कुल!" वह खिलखिलाते हुए बोलीं। "आप पूरी तरह से निश्चिंत हो सकते हैं कि कोई भी कभी यह अंदाज़ा नहीं लगा पाता कि आपका मतलब 'Chercheuse d'Esprit' से था।" M. Verdurin ने और भी नरम लहजे में बात आगे बढ़ाई, और सानिएट तथा ब्रिचोट दोनों को संबोधित करते हुए कहा: "फिर भी, यह एक काफी सुंदर रचना है—यह 'Chercheuse d'Esprit'।" एक गंभीर लहजे में कहे गए इस सीधे-सादे वाक्य में, जिसमें द्वेष का कोई निशान नहीं था, सानिएट को उतना ही सुकून मिला और उसके मन में उतनी ही कृतज्ञता जागी, जितनी किसी जान-बूझकर की गई तारीफ़ से जागती। वह एक भी शब्द नहीं बोल पाया और बस खुशी से चुप रहा। ब्रिचोट ज़्यादा बातूनी था। "यह सच है,"

उसने M. Verdurin को जवाब दिया, "और अगर इसे किसी Sarmatian या Scandinavian लेखक की रचना बताकर पेश किया जा सकता, तो हम 'Chercheuse d'Esprit' को किसी 'मास्टरपीस' (उत्कृष्ट कृति) के खाली पद के लिए उम्मीदवार के तौर पर पेश कर सकते थे। लेकिन, भले ही यह बात कोमल Favart की आत्मा के प्रति बिना किसी अनादर के कही जा रही हो—उनमें Ibsen जैसा मिजाज़ नहीं था।" (इतना कहते ही वह शर्म से लाल हो गया—सिर से पाँव तक—क्योंकि उसे उस Norwegian दार्शनिक की याद आ गई, जो इसलिए परेशान जान पड़ता था क्योंकि वह किसी चीज़ की तलाश में था...)
(यह जानने की कोशिश बेकार गई कि 'buis' कौन सी सब्ज़ी हो सकती है, जिसका ज़िक्र ब्रिशो ने थोड़ी देर पहले बुसिएर के नाम के सिलसिले में किया था।) "खैर, अब जब पोरेल की जगह एक ऐसे अधिकारी ने ले ली है जो टॉलस्टॉय के सिद्धांतों का कड़ाई से पालन करने वाला है, तो हो सकता है कि हम ओडोनियन मेहराब के नीचे 'अन्ना कैरेनिना' या 'रिज़रेक्शन' का मंचन देख सकें।" "मैं फ़ावार्ट के उस चित्र को जानता हूँ जिसका ज़िक्र आप कर रहे हैं," एम. डी शार्लस ने कहा। "मैंने उसकी एक बहुत ही बढ़िया प्रिंट काउंटेस मोले के यहाँ देखी है।" काउंटेस मोले के नाम का मादाम वेर्दुरिन पर गहरा असर पड़ा। "ओह! तो आप मादाम डी मोले के यहाँ जाते हैं!" उन्होंने हैरानी से कहा। उन्हें लगा कि लोग 'काउंटेस मोले' या 'मादाम मोले' सिर्फ़ संक्षेप में कहते हैं—जैसे उन्होंने लोगों को 'द रोहन्स' कहते सुना था—या फिर तिरस्कार के भाव से कहते हैं, जैसा कि वह खुद कहती थीं: 'मादाम ला ट्रेमोइल।' उन्हें इस बात में कोई शक नहीं था कि काउंटेस मोले—जो ग्रीस की रानी और प्रिंसेसा डी कैप्रारोला को जानती थीं—का 'de' (डी) शब्द पर उतना ही अधिकार था जितना किसी और का; और इस बार उन्होंने तय किया था कि वह इतनी शानदार हस्ती को—और ऐसी हस्ती को जिसने उनके साथ बेहद शिष्टता का व्यवहार किया था—यह सम्मान ज़रूर देंगी। और इसलिए, यह साफ़ करने के लिए कि उन्होंने जान-बूझकर ऐसा कहा था और काउंटेस को उनका 'de' देने में उन्हें कोई हिचक नहीं थी, उन्होंने आगे कहा: "लेकिन मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था..."

"कि आप मैडम डी मोले को जानते थे!"—जैसे कि यह दोहरी असाधारण बात हो; एक तो यह कि एम. डी चार्लस उस महिला को जानते थे, और दूसरी यह कि मैडम वेर्दुरिन को यह पता

नहीं था कि वह उन्हें जानते हैं। अब समाज—या कम से कम वे लोग जिन्हें एम. डी चार्लस यह नाम देते थे—एक अपेक्षाकृत एकरूप और सुगठित इकाई बनाता है। और इसलिए यह बात समझ में आती है कि, मध्यम वर्ग की बेमेल विशालता में, कोई बैरिस्टर किसी ऐसे व्यक्ति से कह सकता है जो उसके किसी स्कूली दोस्त को जानता हो: "लेकिन आखिर आप उसे जानते कैसे हैं?" जबकि किसी फ्रांसीसी के 'मंदिर' या 'जंगल' शब्द का अर्थ जानने पर आश्चर्य करना, एम. डी चार्लस और काउंटेस मोले को एक साथ लाने वाले संयोगों पर आश्चर्य करने से शायद ही अधिक असाधारण होता। इसके अलावा, भले ही ऐसी जान-पहचान उन नियमों से स्वाभाविक रूप से न बनी हो जो समाज को नियंत्रित करते हैं, फिर भी इस बात में अजीब क्या हो सकता था कि मैडम वेर्डुरिन को इसके बारे में पता नहीं था? क्योंकि वह एम. डी चार्लस से पहली बार मिल रही थीं, और मैडम मोले के साथ उनके संबंध ही एकमात्र ऐसी बात नहीं थी जो वह उनके बारे में नहीं जानती थीं—सच कहूँ तो, वह उनके बारे में कुछ भी नहीं जानती थीं। "वह कौन थी जिसने यह 'शेरशेज़ डी'एस्प्रिट' (Chercheuse d'Esprit) का किरदार निभाया था, मेरे प्यारे सानिएट?" एम. वेर्डुरिन ने पूछा। हालाँकि उन्हें लगा कि अब खतरा टल गया है, फिर भी उस बूढ़े पुरातत्ववेत्ता ने जवाब देने से पहले हिचकिचाहट महसूस की। "लो हो गया," मैडम वेर्डुरिन ने कहा, "तुम उसे डरा देते हो; वह जो कुछ भी कहता है, तुम उसका मज़ाक उड़ाते हो, और फिर उम्मीद करते हो कि वह जवाब दे। चलो भी, हमें बताओ कि वह किरदार किसने निभाया था, और तुम्हें घर ले जाने के लिए थोड़ा 'गैलेंटाइन' (मांस का व्यंजन) मिलेगा," मैडम वेर्डुरिन ने कहा—ऐसा कहते हुए उन्होंने उस घोर आर्थिक तंगी की ओर क्रूरतापूर्ण इशारा किया, जिसमें सानिएट ने अपने एक दोस्त के परिवार को बचाने की कोशिश में खुद को धकेल दिया था। "मुझे बस इतना याद है कि मैडम समारी ने 'ज़र्बीन' का किरदार निभाया था," सानिएट ने कहा। "ज़र्बीन? "यह आखिर है क्या?" M. Verdurin चिल्लाए, मानो घर में आग लग गई हो। "यह पुराने नाटकों के किरदारों में से एक है, जैसे Captain Fracasse—यानी आग खाने वाला, या फिर 'पंडित' (Pedant)।" "आह, पंडित—वह तो तुम खुद ही हो। Zerbine! नहीं, सच में, यह आदमी तो पागल है," M. Verdurin ने हैरानी से कहा। Mme. Verdurin ने अपने मेहमानों की ओर देखा और हँस पड़ीं, मानो वह Saniette की तरफ़ से माफ़ी माँग रही हों। "Zerbine—उसे लगता है कि हर कोई तुरंत

समझ जाएगा कि इसका मतलब क्या है। तुम तो बिल्कुल M. de Longepierre जैसे हो—जो मेरी जान-पहचान का सबसे बेवकूफ़ आदमी है; उसने कुछ दिन पहले ही बड़े आराम से हमसे कहा था—'Banat'। किसी को कोई अंदाज़ा नहीं था कि उसका मतलब क्या है। आख़िरकार हमें पता चला कि वह सर्बिया का एक प्रांत है।" Saniette की उस तकलीफ़ को खत्म करने के लिए—जो मुझे उससे कहीं ज़्यादा चुभ रही थी—मैंने Brichot से पूछा कि क्या वह जानता है कि 'Balbec' शब्द का क्या मतलब है। "Balbec शायद 'Dalbec' शब्द का ही बिगड़ा हुआ रूप है," उसने मुझे बताया। "इसके लिए हमें इंग्लैंड के राजाओं के पुराने दस्तावेज़ (charters) देखने पड़ेंगे—जो Normandy के अधिपति थे; क्योंकि Balbec, Dover की जागीर (Barony) के अधीन आता था। इसी वजह से इसे अक्सर 'Balbec d'Outre–Mer' या 'Balbec–en–Terre' कहा जाता था। लेकिन Dover की जागीर खुद Bayeux के बिशप के अधीन थी। और, हालाँकि Templars को कुछ समय के लिए उस मठ (abbey) में कुछ अधिकार मिले हुए थे—लेकिन Louis d'Harcourt (जो Jerusalem के Patriarch और Bayeux के बिशप थे) के ज़माने से ही, उसी धर्म-क्षेत्र (diocese) के बिशप ही Balbec के धार्मिक पद (benefice) पर किसी को नियुक्त करने का अधिकार रखते थे।" तो मुझे डौविल के पादरी ने यह बात समझाई—एक गंजा, वाक्पटु, शानदार और खाने-पीने का शौकीन व्यक्ति, जो ब्रिलाट-सावरिन के नियमों पर चलता था, और जिसने मुझे थोड़ी पहेली जैसी भाषा में एक ढीली-ढाली शिक्षा-पद्धति के बारे में बताया, जबकि वह मुझे कुछ बेहतरीन तले हुए आलू खिला रहा था। जब ब्रिचोट यह दिखाने के लिए मुस्कुराया कि इतनी अलग-अलग चीज़ों को एक साथ जोड़ना और आम बातों के बारे में बात करते समय व्यंग्यपूर्ण ढंग से ऊँची भाषा का इस्तेमाल करना कितना हाज़िरजवाबी भरा है, तो सानिएट कोई ऐसी चालाक टिप्पणी करने का मौका ढूँढ़ रहा था जो उसे उस गहरे गड्ढे से बाहर निकाल सके जिसमें वह गिर गया था। वह हाज़िरजवाबी वाली टिप्पणी जिसे 'तुलना' कहा जाता था, अब अपना रूप बदल चुकी थी; क्योंकि हाज़िरजवाबी में भी साहित्यिक शैलियों की तरह ही विकास होता है—एक महामारी जो खत्म हो जाती है, उसकी जगह दूसरी ले लेती है, और इसी तरह यह क्रम चलता रहता है। एक समय था जब आम 'तुलना' का तरीका होता था—'...की पराकाष्ठा' (height of...)। लेकिन अब यह तरीका पुराना हो चुका था, कोई भी इसका इस्तेमाल नहीं

करता था; बस कोटार्ड ही अकेला बचा था जो कभी-कभार, 'पिकेट' (ताश का एक खेल) खेलते हुए बीच में कह देता था: "क्या आप जानते हैं कि भुलक्कड़पन की पराकाष्ठा क्या है? वह यह सोचना है कि 'नान्तेस का आदेश' (Edict of Nantes) कोई अंग्रेज़ औरत थी।" इन 'पराकाष्ठाओं' की जगह अब उपनामों ने ले ली थी। असल में, यह अब भी वही पुरानी 'तुलना' ही थी, लेकिन क्योंकि उपनामों का चलन था, इसलिए लोगों ने इस पुरानी शैली के बचे रहने पर ध्यान नहीं दिया। सानिएट की बदकिस्मती यह थी कि जब ये 'तुलनाएँ' उसकी अपनी नहीं होती थीं—और आम तौर पर उस छोटे से समूह के लिए अनजान होती थीं—तो वह उन्हें इतने झिझकते हुए पेश करता था कि, भले ही वह उनके हास्यपूर्ण स्वभाव को दिखाने के लिए उनके बाद हँसता भी था, फिर भी किसी को भी उसका मज़ाक समझ नहीं आता था। और दूसरी तरफ, अगर वह मज़ाक उसका अपना होता था—क्योंकि आम तौर पर उसे यह विचार अपने किसी करीबी दोस्त से बातचीत के दौरान सूझा होता था, और उस दोस्त ने ही उस मज़ाक को दोहराकर उसका श्रेय खुद ले लिया होता था—तो ऐसे में वह मज़ाक तो सबको पता होता था, लेकिन किसी को यह नहीं पता होता था कि वह सानिएट का है। और इसलिए, जब वह इनमें से कोई मज़ाक बीच में बोलता था, तो लोग उसे पहचान लेते थे,

लेकिन, क्योंकि वह इसका लेखक था, इसलिए उस पर साहित्यिक चोरी का आरोप लगा। "बहुत अच्छा," ब्रिशो ने आगे कहा, "नॉर्मन भाषा में 'बी' (Bee) का मतलब एक धारा या नदी होता है; जैसे 'एबे ऑफ़ बेक', 'मोबेक'—दलदल से आने वाली धारा (जहाँ 'मोर' या 'मेर' का मतलब दलदल होता था, जैसे 'मोरविल', या 'ब्रिक्केमार', 'अल्विमारे', 'कैम्ब्रेमर' में); 'ब्रिक्केबेक'—ऊँची ज़मीन से आने वाली धारा, जो 'ब्रिगा' शब्द से आया है—एक किला-बंद जगह, जैसे 'ब्रिक्किविल', 'ब्रिक्केबोस', 'ले ब्रिक', 'ब्रायंड', या असल में 'ब्राइस'—यानी पुल; जो जर्मन भाषा के 'ब्रुक' (जैसे 'इन्सब्रुक') और अंग्रेज़ी के 'ब्रिज' (पुल) जैसा ही है, जिससे कई जगहों के नाम खत्म होते हैं (जैसे 'कैम्ब्रिज')। इसके अलावा, नॉर्मंडी में आपको 'बेक' के कई और उदाहरण भी मिलेंगे: 'कॉडेबेक', 'बोलबेक', 'ले रोबेक', 'ले बेक-हेलुइन', 'बेकेरेल'। यह जर्मन शब्द 'बाख' (Bach) का नॉर्मन रूप है, जैसे 'ऑफेनबाख', 'एन्सपाख'। 'वाराग्वेबेक'—जो पुराने शब्द 'वाराइन' से आया है, जिसका मतलब 'वॉरेन' (warren) जैसा ही है—यानी

सुरक्षित जंगल या तालाब। जहाँ तक 'डाल' (Dal) की बात है," ब्रिशो ने आगे कहा, "यह 'थाल' (Thal) का ही एक रूप है, जिसका मतलब घाटी होता है: जैसे 'डार्नेटाल', 'रोसेंडाल', और असल में, 'लूवियर्स' के पास ही 'बेकडाल' भी है। जिस नदी के नाम पर 'बालबेक' का नाम पड़ा है, वह वैसे बहुत ही प्यारी है। जब उसे किसी 'फलाइज़' (Falaise)—जर्मन में 'फेल्स' (Fels)—से देखा जाता है (और हाँ, यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं, एक ऊँचाई पर बसा हुआ, 'फलाइज़' नाम का एक बहुत ही सुंदर कस्बा भी है), तो वह नदी चर्च के ऊँचे शिखरों के ठीक नीचे से बहती हुई लगती है—हालाँकि असल में वह चर्च से काफ़ी दूर है—और ऐसा लगता है जैसे वह उन शिखरों की परछाईं दिखा रही हो।" "मुझे लगता है," मैंने कहा, "कि यह एक ऐसा नज़ारा है जिसकी 'एल्स्टिर' बहुत तारीफ़ करते हैं। मैंने उनके स्टूडियो में इसके कई स्केच देखे हैं।" "एल्स्टिर! तो आप 'टिश' को जानते हैं?" मैडम वर्दुरिन खुशी से चिल्लाईं। "लेकिन क्या आप जानते हैं कि हम कभी बहुत गहरे दोस्त हुआ करते थे? भगवान का शुक्र है, अब मैं उसे कभी नहीं देखती। नहीं, आप कोटार्ड या ब्रिशो से पूछ लीजिए; मेरी मेज़ पर उसकी जगह हमेशा तय रहती थी, वह हर रोज़ आता था। अब, वह एक ऐसा आदमी है जिसके बारे में आप कह सकते हैं कि हमारे छोटे से ग्रुप को छोड़ने से उसका कोई भला नहीं हुआ। मैं अभी आपको कुछ फूल दिखाऊँगी जो उसने मेरे लिए बनाए थे; आप देखेंगे कि उनमें और उसके आज के कामों में कितना फ़र्क है—आज के काम मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं हैं, बिल्कुल भी नहीं! अरे! मैंने उससे कोटार्ड का एक पोर्ट्रेट भी बनवाया था—और मेरे तो उसने न जाने कितने स्केच बनाए हैं।" "और उसने प्रोफ़ेसर के बालों का रंग बैंगनी कर दिया था," श्रीमती कोटार्ड ने कहा—यह भूलते हुए कि उस समय उनके पति कॉलेज के 'फ़ेलो' भी नहीं बने थे। "मुझे नहीं पता, सर, कि आपको मेरे पति के बाल बैंगनी रंग के लगते हैं या नहीं।" "इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता," श्रीमती वेर्दुरिन ने कहा—श्रीमती कोटार्ड के प्रति तिरस्कार और उस चित्रकार के प्रति प्रशंसा का भाव दिखाते हुए अपनी ठुड्डी ऊपर उठाते हुए। "वह रंगों का एक माहिर कलाकार था, एक बेहतरीन चित्रकार। जबकि," उन्होंने मेरी ओर मुड़ते हुए आगे कहा, "मुझे नहीं पता कि आप इसे चित्रकारी कहेंगे या नहीं—रचना के नाम पर वे विशालकाय 'राक्षसियाँ', वे बड़ी-बड़ी इमारतें जिन्हें वह आजकल प्रदर्शित करता है—जब से उसने मेरे यहाँ आना छोड़ दिया है। मेरी नज़र में, यह सब बस रंगों की लीपा-पोती है; यह सब इतना

घिसा-पिटा है, और इसमें कोई उभार या व्यक्तित्व भी नहीं है। यह तो कोई भी कर सकता है।" "वह अठारहवीं सदी की नज़ाकत को फिर से ज़िंदा करता है—लेकिन एक आधुनिक रूप में," सैनिएट अचानक बोल पड़े—मेरी विनम्रता से उन्हें काफ़ी हिम्मत और तसल्ली मिली थी। "लेकिन मुझे तो हेलेऊ ज़्यादा पसंद है।" "वह हेलेऊ जैसा बिल्कुल भी नहीं है," श्रीमती वेर्डुरिन ने कहा। "हाँ, उसमें अठारहवीं सदी का जुनून तो है। वह एक 'स्टीम-पावर्ड वाटो' है," और यह कहकर वह हँसने लगे। "बहुत पुराना, इतना पुराना कि जैसे सदियों से चला आ रहा हो—यह बात तो मैं सालों से सुनता आ रहा हूँ," श्री वेर्डुरिन ने कहा—जिन्हें असल में 'स्की' ने एक बार यही बात दोहराई थी, लेकिन तब उसने इसे अपना खुद का विचार बताया था। "यह अफ़सोस की बात है कि जब कभी-कभार आप कुछ मज़ेदार कहते हैं और उसे समझने लायक बनाते हैं, तो वह आपका अपना नहीं होता।" "मुझे इस बात का दुख है," मादाम वेरडुरिन ने आगे कहा, "क्योंकि वह सच में बहुत काबिल था; उसने पेंटिंग के लिए अपने प्यारे स्वभाव को बर्बाद कर दिया। आह! अगर वह हमारे साथ रुका होता! तो वह आज के ज़माने का सबसे महान लैंडस्केप पेंटर बन गया होता। और यह एक औरत है जिसने उसे इतना नीचे गिरा दिया! ऐसा नहीं है कि इससे मुझे हैरानी हुई हो, क्योंकि वह एक अच्छा-खासा आदमी तो था, लेकिन आम सा। असल में, वह एक औसत दर्जे का इंसान था। मैं आपको बता सकती हूँ कि मुझे यह बात तुरंत समझ आ गई थी। सच कहूँ तो, उसने मुझे कभी आकर्षित नहीं किया। मैं उसे बहुत पसंद करती थी, बस इतना ही। एक तो, वह बहुत गंदा रहता था। मुझे बताइए, क्या आपको सच में ऐसे लोग पसंद हैं जो कभी नहाते नहीं?" "यह रंग-बिरंगी चीज़ क्या है जो हम खा रहे हैं?" स्की ने पूछा। "इसे स्ट्रॉबेरी मूस कहते हैं," मादाम वेरडुरिन ने कहा। "लेकिन यह बहुत ही शानदार है। आपको शैतो-मार्गो, शैतो-लाफ़ित, और पोर्ट वाइन की बोतलें खोलनी चाहिए।" "मैं आपको बता नहीं सकती कि वह मुझे कितना हँसाता है; वह पानी के अलावा कुछ नहीं पीता," मादाम वेरडुरिन ने कहा। वह अपनी इस कल्पना पर खुशी ज़ाहिर करते हुए, इतने ज़्यादा खर्च के विचार से होने वाली अपनी घबराहट को छिपाने की कोशिश कर रही थीं। "लेकिन पीने के लिए नहीं," स्की ने आगे कहा, "आप हमारे सारे गिलास भर देंगे; वे शानदार आड़ू और बड़े-बड़े नेक्टराइन लेकर आएँगे, जो वहाँ डूबते सूरज की रोशनी में चमकेंगे; यह किसी बेहतरीन वेरोनीज़ पेंटिंग जितना ही शानदार लगेगा।" "इसमें लगभग

उतना ही खर्च आएगा," एम. वेरडुरिन ने धीरे से कहा। "लेकिन उन चीज़ों को हटाओ जिनका रंग इतना भद्दा है," स्की ने कहा। वह अपने मेज़बान के सामने से प्लेट छीनने की कोशिश कर रहा था, जबकि मेज़बान अपनी ग्रुयेर चीज़ को पूरी ताकत से बचा रहा था। "आप समझ सकती हैं कि मुझे एल्स्टिर के जाने का कोई दुख नहीं है," मादाम वेरडुरिन ने मुझसे कहा, "वह दूसरा आदमी कहीं ज़्यादा काबिल है। एल्स्टिर तो बस कड़ी मेहनत का दूसरा नाम है—एक ऐसा आदमी जो चाहकर भी पेंटिंग करना नहीं छोड़ पाता। वह एक अच्छा छात्र है, एक अंधाधुंध नकल करने वाला प्रतियोगी। जबकि स्की तो बस..."

वह अपनी मर्ज़ी का मालिक है। आप देखेंगे कि वह रात के खाने के बीच में ही सिगरेट जला लेगा।" "आखिरकार, मुझे समझ नहीं आता कि आप उसकी पत्नी को क्यों नहीं बुलातीं," कॉटार्ड ने कहा, "वह तब भी हमारे साथ ही होता।" "ज़रा सोच-समझकर बोलिए, प्लीज़; मैं अपने दरवाज़े बाज़ारू औरतों के लिए नहीं खोलती, मॉन्सियर ले प्रोफ़ेसर," मैडम वेरडुरिन ने कहा। इसके ठीक उलट, उन्होंने एल्सटिर को वापस लाने के लिए अपनी पूरी ताक़त लगा दी थी—भले ही उसे अपनी पत्नी के साथ ही आना पड़ता। लेकिन उनकी शादी से पहले, उन्होंने उन दोनों के बीच झगड़ा करवाने की कोशिश की थी; उन्होंने एल्सटिर से कहा था कि जिस औरत से वह प्यार करता है, वह बेवकूफ़, गंदी, बदचलन और चोर है। लेकिन इस बार, वह उन दोनों के बीच दरार डालने में नाकाम रहीं। एल्सटिर ने वेरडुरिन के 'सैलून' (महफ़िल) से ही नाता तोड़ लिया था; और वह इस बात से खुश था—ठीक वैसे ही, जैसे कोई नया-नवेला भक्त उस बीमारी या बदकिस्मती को दुआएँ देता है, जिसने उसे दुनियादारी से दूर करके मोक्ष का रास्ता दिखाया हो। "प्रोफ़ेसर साहब सचमुच कमाल के इंसान हैं," उन्होंने कहा। "आप सीधे-सीधे यह क्यों नहीं कह देते कि मैं कोई 'बदचलनखाना' चलाती हूँ? कोई भी यही सोचेगा कि आपको पता ही नहीं है कि मैडम एल्सटिर किस तरह की औरत हैं। मैं तो अपनी मेज़ पर किसी भी मामूली-से-मामूली बाज़ारू औरत को बिठाना ज़्यादा पसंद करूँगी! ओह नहीं, मैं इस तरह की चीज़ें बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करती।" इसके अलावा, मैं आपको बता सकती हूँ कि अगर मैं उसकी पत्नी को नज़रअंदाज़ करती, तो यह मेरी बेवकूफ़ी होती; क्योंकि अब उसके पति में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं रही, वह अब पुराने ज़माने का हो चुका है, उसे तो ठीक से चित्र बनाना भी नहीं आता।" "उसकी जैसी बुद्धि वाले आदमी के लिए यह बात बहुत

ही अजीब है," कॉटार्ड ने कहा। "अरे, नहीं!" मादाम वेरडुरिन ने जवाब दिया, "उस समय भी, जब उसमें प्रतिभा थी—और सच कहूँ तो उस कमीने में प्रतिभा कूट-कूटकर भरी थी—उसकी सबसे उबाऊ बात यह थी कि उसमें ज़रा भी अक्ल नहीं थी।" मादाम वेरडुरिन ने एल्स्टिर के बारे में यह राय तब ही बना ली थी, जब उनके बीच कोई झगड़ा नहीं हुआ था, और न ही तब, जब उन्हें एल्स्टिर की चित्रकारी में कोई दिलचस्पी नहीं रह गई थी। असल बात तो यह थी कि, जब वह उनके छोटे से समूह का हिस्सा था, तब भी अक्सर ऐसा होता था कि एल्स्टिर अपना पूरा दिन किसी ऐसी औरत के साथ बिताता था, जिसे—सही हो या गलत—मादाम वेरडुरिन एकदम बेवकूफ़ समझती थीं; और उनकी नज़र में, यह किसी समझदार आदमी का बर्ताव नहीं था। "नहीं," उन्होंने पूरी तरह से अपनी बात पर अड़े रहते हुए कहा, "मेरा तो यही मानना है कि उसकी पत्नी और वह, दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने हैं। भगवान ही जानता है कि इस पूरी दुनिया में उससे ज़्यादा उबाऊ इंसान कोई और नहीं है; अगर मुझे उसके साथ बस दो घंटे भी बिताने पड़ें, तो मैं तो पागल ही हो जाऊँगी। लेकिन लोग कहते हैं कि एल्स्टिर को अपनी पत्नी बहुत ही समझदार लगती है। इस बात से इनकार करने का कोई फ़ायदा नहीं है कि हमारा 'टिश' (Tiche) बेहद बेवकूफ़ था। मैंने उसे ऐसे-ऐसे लोगों से प्रभावित होते देखा है, जिनके बारे में आप सोच भी नहीं सकते—ऐसे-ऐसे बेवकूफ़ लोग, जिन्हें हमें अपने छोटे से समूह में कभी घुसने ही नहीं देना चाहिए था। और तो और! वह उन्हें चिट्ठियाँ लिखता था, उनसे बहस करता था—सोचिए ज़रा, वह एल्stिर!" "इसका मतलब यह नहीं है कि उनमें कोई आकर्षक गुण नहीं हैं—ओह, वे बहुत आकर्षक और मज़ेदार रूप से विचित्र हैं, ज़ाहिर है।" क्योंकि मादाम वेर्डुरिन को पक्का यकीन था कि जो लोग सचमुच असाधारण होते हैं, वे हर तरह की बेवकूफियाँ करने में सक्षम होते हैं। यह एक गलत धारणा है, जिसमें फिर भी थोड़ी-बहुत सच्चाई ज़रूर है। बेशक, लोगों की बेवकूफियाँ बर्दाश्त से बाहर होती हैं। लेकिन संतुलन की वह कमी, जिसका पता हमें समय बीतने के साथ ही चलता है, असल में इंसान के दिमाग में उन सूक्ष्म भावनाओं के प्रवेश का नतीजा होती है, जिनके लिए उसका दिमाग स्वाभाविक रूप से तैयार नहीं होता। इसलिए, आकर्षक लोगों की विचित्र आदतें हमें चिढ़ाती हैं; लेकिन ऐसे आकर्षक लोग बहुत कम ही मिलते हैं—अगर मिलते भी हैं—जो साथ ही साथ थोड़े विचित्र न हों। "देखो, अब मैं तुम्हें उनके फूल दिखा सकती हूँ," उसने मुझसे कहा, यह

देखकर कि उसके पति उसे उठने का इशारा कर रहे थे। और उसने फिर से एम. दे कैम्ब्रेमर का हाथ थाम लिया। जैसे ही एम. वेर्दुरिन मादाम दे कैम्ब्रेमर से पीछा छुड़ा पाए, उन्होंने एम. दे शार्लस से इस बात के लिए माफ़ी माँगने की कोशिश की, और उन्हें इसके पीछे के कारण बताए—खासकर इसलिए, ताकि वे एक 'रईस' (titled gentleman) के साथ इन सामाजिक बारीकियों पर चर्चा करने का आनंद ले सकें; एक ऐसा रईस, जो उस पल उन लोगों के मुकाबले खुद को कमतर महसूस कर रहा था, जिन्होंने उसे वह दर्जा दिया था, जिसका वे उसे हकदार मानते थे। लेकिन सबसे पहले, वे एम. दे शार्ास को यह साफ़ कर देना चाहते थे कि बौद्धिक रूप से वे उनका इतना अधिक सम्मान करते हैं कि वे यह सोच भी नहीं सकते कि एम. दे शार्ास जैसी हस्ती इन छोटी-मोटी बातों पर ज़रा भी ध्यान देगी। "मेरी इस छोटी सी बात का ज़िक्र करने के लिए माफ़ करना," उन्होंने बात शुरू की, "क्योंकि मैं समझ सकता हूँ कि आपके लिए ऐसी चीज़ों का कितना कम महत्व है। मध्यम-वर्गीय मानसिकता वाले लोग इन पर ध्यान देते हैं, लेकिन बाकी लोग—कलाकार, और वे लोग जो सचमुच हमारी ही तरह के हैं—वे इन बातों की ज़रा भी परवाह नहीं करते। और अब, हमारी बातचीत के शुरुआती शब्दों से ही, मुझे एहसास हो गया था कि आप भी हममें से ही एक हैं!" एम. दे शार्ास, जिन्होंने इस बात का बिल्कुल ही अलग मतलब निकाला, वे सीधे तनकर खड़े हो गए। डॉक्टर की उन घूरती नज़रों के बाद, उन्हें अपने मेज़बान की यह 'अपमानजनक बेबाकी' (insulting frankness) दम घोंटने वाली लगी। "विरोध मत कीजिए, मेरे प्रिय महोदय; आप हममें से ही एक हैं—यह बात दिन के उजाले की तरह साफ़ है," एम. वेर्दुरिन ने जवाब दिया। "ज़रा गौर कीजिए: मुझे इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं है कि आप किसी कला का अभ्यास करते हैं या नहीं; लेकिन इसकी कोई ज़रूरत भी नहीं है। और वैसे भी, सिर्फ़ कला का अभ्यास करना ही हमेशा काफ़ी नहीं होता।" "डेचैम्ब्रे, जिनकी अभी-अभी मृत्यु हुई है, बहुत ही शानदार ढंग से बजाते थे—पूरी ऊर्जा और कुशलता के साथ—लेकिन वे 'हममें से एक' नहीं थे; आपको तुरंत यह एहसास हो जाता था कि वे हमारे समूह के नहीं हैं। ब्रिशो भी 'हममें से एक' नहीं हैं। मोरेल हैं; मेरी पत्नी हैं; और मुझे महसूस हो रहा है कि आप भी हैं..." "आप मुझे क्या बताने वाले थे?" एम. डे चार्लस ने बात काटते हुए पूछा। उन्हें अब एम. वर्दुरिन की बात का मतलब कुछ-कुछ समझ में आने लगा था, जिससे उन्हें थोड़ी तसल्ली हुई; लेकिन वे चाहते थे कि एम. वर्दुरिन इस

तरह की 'गलतफ़हमी पैदा करने वाली' बातें इतनी ज़ोर से न कहें। "बस यही कि हमने आपको बाईं ओर बिठाया है," एम. वर्दुरिन ने जवाब दिया। एम. डे चार्लस ने बात को समझते हुए, एक सौहार्दपूर्ण...

मैंने एक ढीठ मुस्कान के साथ जवाब दिया: "अरे! यहाँ तो इस बात की ज़रा भी अहमियत नहीं है!" और वह ज़ोर से हँसा—एक ऐसी हँसी जो पूरी तरह से उसकी अपनी थी—शायद उसे यह हँसी अपनी किसी बवेरियन या लोरेन दादी से मिली थी, जिसने खुद इसे अपनी किसी पूर्वज से, बिल्कुल उसी रूप में विरासत में पाया था; इस तरह, यह हँसी कई सदियों से यूरोप के छोटे-छोटे पुराने ज़माने के दरबारों में बिना किसी बदलाव के गूँजती आ रही थी, और कोई भी इसकी अनमोल खासियत का लुत्फ़ वैसे ही उठा सकता था, जैसे कुछ पुराने वाद्ययंत्रों का, जो अब दुर्लभ हो चुके हैं। कई बार ऐसा होता है कि किसी का पूरा चित्र खींचने के लिए, हमें अपने शब्दों वाले वर्णन में आवाज़ की नकल भी जोड़नी पड़ती है; और M. de Charlus की जो छवि हमारे सामने उभरती है, वह उस छोटी सी हँसी के बिना अधूरी ही रह जाएगी—वह हँसी जो इतनी नाज़ुक और हल्की थी—ठीक वैसे ही, जैसे कुछ संगीत रचनाएँ कभी भी ठीक-ठीक नहीं बज पातीं, क्योंकि हमारे ऑर्केस्ट्रा में वे 'छोटी तुरहियाँ' नहीं होतीं, जिनकी आवाज़ पूरी तरह से अपनी होती है, और जिनके लिए संगीतकार ने वह खास धुन लिखी होती है। "लेकिन," M. Verdurin ने उसकी हँसी से चिढ़कर सफाई दी, "हमने तो यह जान-बूझकर किया था। मुझे तो रईसी के खिताबों की ज़रा भी परवाह नहीं है," उसने आगे कहा—उस तिरस्कार भरी मुस्कान के साथ, जिसे मैंने अपने जान-पहचान के कई लोगों के चेहरे पर देखा है (मेरी दादी और माँ के विपरीत); वे लोग ऐसी मुस्कान तब ओढ़ लेते थे, जब वे दूसरों के सामने किसी ऐसी चीज़ के बारे में बात करते थे, जो उनके पास नहीं होती थी—उन्हें लगता था कि ऐसा करने से दूसरे लोग उस खास चीज़ का इस्तेमाल करके उन पर रौब नहीं जमा पाएँगे। "लेकिन, आप समझते क्यों नहीं? चूँकि M. de Cambremer यहाँ मौजूद थे, और वे एक 'Marquis' हैं, जबकि आप तो बस एक 'Baron' हैं..." "माफ़ कीजिएगा," M. de Charlus ने हैरान-परेशान Verdurin को बड़े ही घमंडी अंदाज़ में जवाब दिया, "मैं तो 'Duc de Brabant', 'Damoiseau de Montargis', और 'Prince d'Oléron', 'de Carency', 'de Viareggio'

तथा 'des Dunes' भी हूँ। खैर, इस बात की तो ज़रा भी अहमियत नहीं है। प्लीज़, आप परेशान न हों," उसने अपनी बात खत्म करते हुए कहा—और उसके इन आखिरी शब्दों के साथ ही, उसके चेहरे पर फिर से वही बारीक मुस्कान फैल गई: "मैं तो एक ही नज़र में भाँप गया था कि आपको 'सोसाइटी' (ऊँचे तबके) में रहने की आदत नहीं है।"

मैडम वेर्डुरिन मेरे पास आईं ताकि मुझे एल्स्टिर के बनाए फूल दिखा सकें। अगर बाहर जाकर रात का खाना खाने की आदत—जिसके प्रति मैं अब काफ़ी उदासीन हो गया था—ने इसके विपरीत, एक बिल्कुल नया रूप ले लिया था—समुद्र के किनारे की यात्रा का रूप, जिसके बाद एक गाड़ी में बैठकर समुद्र तल से छह सौ फ़ीट ऊपर एक जगह तक चढ़ाई करनी पड़ी थी—और इस अनुभव ने मुझमें एक तरह का नशा सा पैदा कर दिया था, तो ला रास्पेलिएर पहुँचने पर भी वह एहसास दूर नहीं हुआ था। "ज़रा इसे तो देखो," मालकिन ने कहा, और मुझे एल्स्टिर के बनाए कुछ विशाल और शानदार गुलाब दिखाए; उनके चिकने गहरे लाल और समृद्ध सफ़ेद रंग, फूलों के उस स्टैंड पर जिस पर वे रखे थे, इतने उभार के साथ दिख रहे थे कि मानो वे मलाईदार हों। "क्या तुम्हें लगता है कि ऐसा प्रभाव लाने के लिए उसे अब भी फूलों को छूकर देखना पड़ता होगा? क्या तुम्हें यह कमाल का नहीं लगता? और इसके अलावा, एक पदार्थ के तौर पर भी यह बहुत बढ़िया है; इसे हाथ में लेकर महसूस करना भी मज़ेदार होगा। मैं तुम्हें बता नहीं सकती कि उसे इन फूलों को बनाते हुए देखना कितना मज़ेदार था। कोई भी यह महसूस कर सकता था कि वह ठीक वैसा ही प्रभाव लाने की कोशिश में कितना डूबा हुआ था।" और मालकिन की नज़रें उस कलाकार के इस तोहफ़े पर विचारमग्न होकर टिक गईं—एक ऐसा तोहफ़ा जिसमें न केवल उस कलाकार की महान प्रतिभा झलक रही थी, बल्कि उनकी पुरानी दोस्ती भी समाई हुई थी; एक ऐसी दोस्ती जो अब केवल इन यादगार निशानी के रूप में ही जीवित थी, जो कलाकार ने मालकिन को सौंप दी थीं। उन फूलों के पीछे—जिन्हें कलाकार ने बहुत पहले मालकिन के लिए चुना था—मालकिन को वह सुडौल हाथ दिखाई दे रहा था जिसने एक सुबह, जब वे फूल अपनी पूरी ताज़गी में थे, उन्हें रंगों से सजाया था; इस तरह, मेज़ पर रखे हुए वे फूल और कुर्सी की पीठ से टिका हुआ वह हाथ—मालकिन की दावत में—आमने-सामने आ गए थे; वे गुलाब अब भी जीवित थे, और उनका वह चित्र भी, जो

हूबहू उनके जैसा ही लग रहा था। लगभग हूबहू ही, क्योंकि एल्स्टिर किसी भी फूल को तब तक नहीं देख पाता था, जब तक कि वह उसे पहले अपने मन के उस भीतरी बगीचे में न ले जाए—एक ऐसा बगीचा जिसमें हम सभी को हमेशा ही रहना पड़ता है। उसने अपने इस जल-रंग चित्र में उन गुलाबों का वह रूप दिखाया था, जैसा उसने उन्हें देखा था—एक ऐसा रूप जिसे, अगर वह न होता, तो शायद कोई भी कभी जान ही न पाता; इसलिए कोई यह कह सकता है कि ये गुलाबों की एक बिल्कुल नई किस्म थी, जिससे इस चित्रकार ने—एक कुशल माली की तरह—गुलाबों के इस विशाल परिवार को और भी समृद्ध बना दिया था। "जिस दिन से उसने उस छोटे से समूह को छोड़ा, वह खत्म हो गया। ऐसा लगता है, मेरे साथ खाना खाने में उसने अपना समय बर्बाद किया, कि मैंने उसकी प्रतिभा के विकास में रुकावट डाली," उसने व्यंग्य भरे लहजे में कहा। "जैसे कि मुझ जैसी औरत का साथ किसी कलाकार के लिए फायदेमंद न हो सकता हो," उसने गर्व से भरकर कहा। हमारे ठीक बगल में, एम. डी कैम्ब्रेमर, जो पहले से ही बैठे हुए थे, यह देखकर कि एम. डी चार्लस खड़े हैं, उठने और उन्हें अपनी कुर्सी देने का इशारा किया। मार्क्विस के मन में यह पेशकश शायद सिर्फ़ विनम्र होने की एक अस्पष्ट इच्छा से ही उपजी थी। एम. डी चार्लस ने इसे एक कर्तव्य का रूप देना ज़्यादा पसंद किया—एक ऐसा कर्तव्य जो उस साधारण सज्जन को पता था कि वह एक राजकुमार के प्रति निभाना चाहता है—और उन्हें लगा कि इस सम्मान पर अपना अधिकार साबित करने का इससे बेहतर तरीका कोई नहीं है कि वे इसे अस्वीकार कर दें। और इसलिए उन्होंने कहा: "आप यह क्या कर रहे हैं? मैं आपसे विनती करता हूँ! यह कैसा विचार है!" इस विरोध के चतुर और ज़ोरदार लहजे में अपने आप में कुछ ऐसा था जो पूरी तरह से 'गुएरमांटेस' शैली का था; यह बात उनके उस आदेशात्मक, अनावश्यक और अनौपचारिक हाव-भाव से और भी ज़्यादा साफ़ हो गई, जिसके साथ उन्होंने अपने दोनों हाथ नीचे किए—मानो उन्हें ज़बरदस्ती बिठाने के लिए—एम. डी कैम्बरेमर के कंधों पर रख दिए, जो अभी तक उठे नहीं थे। "अरे, अरे, मेरे प्यारे दोस्त," बैरन ने ज़ोर देकर कहा, "यह कुछ ज़्यादा ही हो रहा है। इसकी कोई ज़रूरत नहीं है! आजकल हम यह सम्मान सिर्फ़ शाही परिवार के राजकुमारों के लिए ही रखते हैं।" उनके घर के प्रति मेरे उत्साह का कैम्बरेमर परिवार पर Mme. Verdurin से ज़्यादा कोई असर नहीं हुआ। क्योंकि जिन सुंदर चीज़ों की ओर उन्होंने मेरा ध्यान दिलाया, उनके प्रति मैं

उदासीन ही बना रहा, और इसके बजाय मैं अपनी पुरानी, धुंधली यादों में खोकर उत्साहित होता रहा; कभी-कभी तो मैंने यह भी मान लिया कि मुझे उस जगह में वैसा कुछ भी नहीं मिला, जैसा कि उसके नाम को सुनकर मैंने अपने मन में सोच रखा था। मैंने Mme. de Cambremer को यह कहकर नाराज़ कर दिया कि मुझे लगा था कि यह जगह शहर से काफ़ी दूर, गाँव के माहौल में होगी। दूसरी ओर, मैं अचानक रुककर दरवाज़े की दरार से अंदर आती हुई हवा की महक को बड़े आनंद से सूंघने लगा। "मुझे लगता है कि आपको हवा के झोंके पसंद हैं," उन्होंने मुझसे कहा। टूटे हुए शीशे पर चिपकाए गए हरे रंग के कपड़े के टुकड़े की मैंने जो तारीफ़ की, उसका भी कोई खास असर नहीं हुआ: "कितना भद्दा लग रहा है!" मार्किस ने ज़ोर से कहा। चरम पल तब आया जब मैंने कहा: "मेरी सबसे बड़ी खुशी तब थी जब मैं यहाँ पहुँचा। जब मैंने गैलरी में अपने कदमों की गूँज सुनी, तो मुझे लगा कि मैं किसी गाँव की पंचायत-दफ़्तर में आ गया हूँ, जहाँ दीवार पर ज़िले का नक्शा टंगा हो।" इस बार, मैडम डी कैम्ब्रेमर ने पूरी तरह से मेरी तरफ़ से मुँह फेर लिया। "तुम्हें यह इंतज़ाम बहुत बुरा तो नहीं लगा?" उनके पति ने उनसे उसी हमदर्दी भरी चिंता के साथ पूछा, जैसे वे पूछते कि उनकी पत्नी ने किसी तकलीफ़देह रस्म को कैसे सहा। "उनके पास कुछ बहुत बढ़िया चीज़ें हैं।" लेकिन, चूँकि द्वेष—जब पक्के और निश्चित स्वाद के नियम उसे तय सीमाओं में नहीं बाँधते—तो वह हर चीज़ में नुक्स निकालता है, चाहे वह उन लोगों की शक्ल-सूरत हो या उनके घर, जिन्होंने उस आलोचक की जगह ले ली हो: "हाँ, लेकिन वे सही जगहों पर नहीं रखी हैं। इसके अलावा, क्या वे सचमुच उतनी ही बढ़िया हैं जितनी वे दिखती हैं?" "तुमने ध्यान दिया होगा," मिस्टर डी कैम्ब्रेमर ने कहा, उनकी उदासी में एक मज़बूती का भाव भी था, "यहाँ कुछ 'जूई' के पर्दे हैं जो घिस चुके हैं, इस ड्राइंग-रूम में कुछ चीज़ें तो बिल्कुल ही पुरानी और तार-तार हो चुकी हैं!" "और कपड़े का वह टुकड़ा..."

"इसके बड़े-बड़े गुलाब, किसी किसान औरत की रजाई जैसे लगते हैं," मैडम डी कैम्ब्रेमर ने कहा, जिनकी पूरी तरह से बनावटी संस्कृति सिर्फ़ आदर्शवादी दर्शन, इंप्रेशनिस्ट पेंटिंग और डेबुसी के संगीत तक ही सीमित थी। और, सिर्फ़ दिखावे के लिए नहीं, बल्कि अच्छे स्वाद के नाम पर आलोचना करते हुए उन्होंने कहा: "और इन्होंने हवा रोकने के लिए स्क्रीन लगा रखी हैं! कितना खराब स्टाइल है! ऐसे लोगों से आप और क्या उम्मीद कर सकते हैं? उन्हें पता ही

नहीं है—वे भला कहाँ से सीखते? वे ज़रूर कोई रिटायर्ड व्यापारी होंगे। उनके हिसाब से तो यह सचमुच बुरा नहीं है।" "मुझे तो झूमर अच्छे लगे," मार्क्विस ने कहा, हालाँकि यह साफ़ नहीं था कि उन्होंने झूमरों को ही क्यों अपवाद माना—ठीक वैसे ही, जैसे जब भी कोई किसी चर्च की बात करता था—चाहे वह चार्ट्रेस का कैथेड्रल हो, या रीम्स का, या एमिएन्स का, या बालबेक का चर्च—तो वह हमेशा जिस चीज़ की तारीफ़ करना नहीं भूलते थे, वह थी: "ऑर्गन-लॉफ़्ट, उपदेश-मंच और मिज़रिकॉर्ड्स।" "जहाँ तक बगीचे की बात है, उसके बारे में तो बात ही मत करो," मैडम डी कैम्ब्रेमर ने कहा। "वह तो एक कत्लेआम है।" "वे रास्ते जो बिल्कुल टेढ़े-मेढ़े हैं।" जब मादाम वेरडुरिन कॉफ़ी परोस रही थीं, तो मैंने उस मौके का फ़ायदा उठाकर वह चिट्ठी देखी जो एम. दे कैम्ब्रेमर मेरे लिए लाए थे, और जिसमें उनकी माँ ने मुझे रात के खाने पर बुलाया था। स्याही के उस हल्के से निशान से, लिखावट में एक ऐसी खासियत झलक रही थी जिसे भविष्य में मैं हज़ारों लिखावटों के बीच पहचान सकूँगा—इसके लिए मुझे किसी खास कलम के इस्तेमाल की अटकल लगाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, ठीक वैसे ही जैसे यह मानने की ज़रूरत नहीं पड़ती कि किसी चित्रकार को अपनी मौलिक सोच को ज़ाहिर करने के लिए दुर्लभ और रहस्यमय ढंग से मिले-जुले रंगों की ज़रूरत होती है। सच कहूँ तो, लकवे का मारा कोई ऐसा व्यक्ति जिसे दौरे के बाद लिखने की बीमारी (एग्राफ़िया) हो गई हो, और जो लिखावट को किसी चित्र की तरह देखने पर मजबूर हो—बिना उसे पढ़ पाए—वह भी यह समझ जाता कि मादाम दे कैम्ब्रेमर एक ऐसे पुराने खानदान से ताल्लुक रखती हैं, जहाँ साहित्य और कलाओं के प्रति गहरा लगाव उनकी कुलीन परंपराओं का एक अहम हिस्सा बन गया था। वह उस दौर का भी अंदाज़ा लगा लेता, जब मार्कीज़ ने एक ही समय में लिखना और शोपेन का संगीत बजाना सीखा था। वह ऐसा दौर था जब संभ्रांत लोग मिलनसारिता के नियम का पालन करते थे, और जिसे 'तीन विशेषणों का नियम' कहा जाता था। मादाम दे कैम्ब्रेमर ने इन दोनों नियमों को एक में ही मिला दिया था। उनके लिए सिर्फ़ एक तारीफ़ वाला विशेषण काफ़ी नहीं होता था; वह उसके बाद (कलम की एक हल्की सी लकीर खींचकर) दूसरा विशेषण लिखतीं, और फिर (एक और लकीर खींचकर) तीसरा विशेषण जोड़तीं। लेकिन, उनकी लिखावट की सबसे अनोखी बात यह थी कि—साहित्यिक और सामाजिक रूप से वह जो हासिल करना चाहती थीं, उसके बिल्कुल विपरीत—मादाम दे कैम्ब्रेमर की चिट्ठियों में उन

तीनों विशेषणों का क्रम किसी प्रगति या बढ़त जैसा नहीं, बल्कि किसी 'घटते क्रम' (diminuendo) जैसा प्रतीत होता था। मादाम दे कैम्ब्रेमर ने अपनी इस पहली चिट्ठी में मुझे बताया कि वह सेंट-लूप से मिली थीं, और उन्होंने सेंट-लूप के 'अद्वितीय—दुर्लभ—सच्चे' गुणों को पहले से कहीं ज़्यादा सराहा था; उन्होंने यह भी बताया कि सेंट-लूप अपने एक दोस्त के साथ (वही दोस्त जिसे उनकी बहू से प्यार हो गया था) दोबारा उनके यहाँ आ रहे हैं; और अगर मैं भी उनके साथ—या उनके बिना—फ़ेटर्न में रात का खाना खाने आऊँ, तो उन्हें 'बेहद खुशी—प्रसन्नता—आनंद' का अनुभव होगा। शायद ऐसा इसलिए था क्योंकि मिलनसार बनने की उनकी चाहत उनकी कल्पना की उर्वरता और उनकी शब्दावली की समृद्धि से कहीं आगे निकल गई थी; यही वजह थी कि वह महिला, जो तीन विस्मयादिबोधक शब्द कहने पर तुली हुई थी, दूसरे और तीसरे शब्द को पहले शब्द की कमज़ोर गूँज से ज़्यादा कुछ भी बनाने में असमर्थ थी। अगर वह बस एक चौथा विशेषण और जोड़ देतीं, तो उनकी शुरुआती मिलनसारिता का कोई नामो-निशान ही न बचता। इसके अलावा, एक खास तरह की परिष्कृत सादगी के साथ—जिसने निश्चित रूप से उनके परिवार और उनके जान-पहचान के दायरे में काफी गहरा प्रभाव डाला होगा—मदाम डी कैम्ब्रेमर ने 'ईमानदार' (sincere) शब्द की जगह 'सच्चा' (true) शब्द इस्तेमाल करने की आदत डाल ली थी (क्योंकि उन्हें लगता था कि समय के साथ 'ईमानदार' शब्द खोखला लगने लग सकता है)। और यह दिखाने के लिए कि वह सचमुच ईमानदारी से ही प्रेरित थीं, उन्होंने उस पारंपरिक नियम को तोड़ दिया जिसके अनुसार विशेषण 'सच्चा' को संज्ञा से पहले रखा जाता है; इसके बजाय, उन्होंने उसे बेझिझक संज्ञा के बाद रख दिया। उनके पत्रों का अंत इन शब्दों से होता था: "मेरी सच्ची मित्रता पर विश्वास करें।" "मेरी सच्ची सहानुभूति पर विश्वास करें।" दुर्भाग्य से, यह एक इतना घिसा-पिटा फ़ॉर्मूला बन गया था कि इस स्पष्टवादिता का दिखावा, उन पुरानी और प्रतिष्ठित कहावतों की तुलना में—जिनके अर्थ के बारे में लोगों ने सोचना ही छोड़ दिया है—किसी शिष्ट बनावटीपन (polite fiction) का ज़्यादा आभास कराता था। हालाँकि, मैं बातचीत के उस शोर-शराबे के कारण उनका पत्र पढ़ नहीं पा रहा था; उस शोर के बीच से एम. डी शार्लस की ऊँची आवाज़ साफ़ सुनाई दे रही थी। वह अभी भी उसी विषय पर बात करते हुए एम. डी कैम्ब्रेमर से कह रहे थे: "जब आपने मुझे अपनी कुर्सी पेश की, तो आपने मुझे एक ऐसे सज्जन की याद दिला दी

जिनका पत्र मुझे आज सुबह ही मिला है; उस पर पता लिखा था: 'महामहिम, बैरन डी शार्लस को,' और उसकी शुरुआत इन शब्दों से होती थी..."

'मोनसेंयूर'।" "निश्चित रूप से, आपके संवाददाता थोड़ी अतिशयोक्ति कर रहे थे," एम. डी कैम्ब्रेमर ने जवाब दिया, और हल्की-सी मुस्कान बिखेर दी। एम. डी चार्लस ने ही यह बात छेड़ी थी; लेकिन वह खुद इसमें शामिल नहीं हुए। "खैर, अगर बात यहाँ तक आ ही गई है, मेरे प्यारे दोस्त," उन्होंने कहा, "तो मैं यह कहना चाहूँगा कि, हेराल्ड्री (कुल-चिह्न शास्त्र) के नज़रिए से देखें, तो वह पूरी तरह सही थे। आप समझ रहे हैं न, मैं इसे कोई निजी मामला नहीं मान रहा हूँ। मैं किसी और के बारे में भी यही बात कहता। लेकिन हमें तथ्यों का सामना करना ही पड़ता है; इतिहास तो इतिहास है, हम उसे बदल नहीं सकते और न ही उसे दोबारा लिखने की शक्ति हमारे पास है। मुझे सम्राट विलियम का उदाहरण देने की ज़रूरत नहीं है, जिन्होंने कील (Kiel) में मुझे हमेशा 'मोनसेंयूर' कहकर ही संबोधित किया। मैंने सुना है कि उन्होंने फ्रांस के सभी ड्यूक्स को यही उपाधि दी थी—जो कि एक विशेषाधिकार का दुरुपयोग था—लेकिन शायद यह हमारे ज़रिए फ्रांस के प्रति ही एक सूक्ष्म सम्मान का प्रदर्शन था।" "शायद, यह सम्मान से ज़्यादा दिखावा था," एम. डी कैम्ब्रेमर ने कहा। "आह! इस बात पर मैं आपसे सहमत नहीं हूँ। ज़रा गौर कीजिए: व्यक्तिगत रूप से, होहेनज़ोलर्न जैसे निम्न दर्जे के व्यक्ति—जो ऊपर से एक प्रोटेस्टेंट भी हैं, और जिन्होंने मेरे चचेरे भाई, हनोवर के राजा का सिंहासन हथिया लिया है—वह मेरे पसंदीदा व्यक्ति तो कतई नहीं हो सकते," एम. डी चार्लस ने आगे कहा; ऐसा लगता था कि हनोवर पर कब्ज़ा होने का दुख उन्हें अलसैस-लोरेन के छिन जाने से भी ज़्यादा सता रहा था। "लेकिन मेरा मानना है कि सम्राट के मन में हमारे प्रति जो भावना है, वह पूरी तरह से सच्ची है। बेवकूफ़ लोग आपसे कहेंगे कि वह तो बस एक 'मंचीय सम्राट' (stage emperor) हैं। इसके विपरीत, वह बेहद बुद्धिमान व्यक्ति हैं; यह सच है कि उन्हें चित्रकला के बारे में कुछ भी नहीं पता, और उन्होंने हेर त्शुडी (Herr Tschudi) को सार्वजनिक दीर्घाओं से 'एल्स्टिर' (Elstirs) की कलाकृतियाँ हटाने के लिए मजबूर कर दिया था। लेकिन लुई चौदहवें भी तो डच उस्तादों की कला को नहीं सराहते थे; उन्हें भी दिखावे का उतना ही शौक था—और फिर भी, कुल मिलाकर, वह एक महान सम्राट थे। इसके अलावा,

विलियम द्वितीय ने अपने देश को सैन्य और नौसैनिक, दोनों ही दृष्टिकोणों से जिस तरह से सुसज्जित किया है, वैसा लुई चौदहवें नहीं कर पाए थे; और मुझे उम्मीद है कि विलियम द्वितीय के शासनकाल में कभी भी उन पराजयों का सामना नहीं करना पड़ेगा, जिन्होंने उस सम्राट के अंतिम दिनों को अंधकारमय बना दिया था—जिसे लोग नासमझी में 'रोई सोलेल' (सूर्य-सम्राट) कहकर पुकारते हैं।" मेरी राय में, गणतंत्र ने होहेनज़ोलर्न के प्रस्तावों को ठुकराकर, या उन पर बहुत थोड़ी-थोड़ी प्रतिक्रिया देकर एक बहुत बड़ी गलती की। वह खुद भी इस बात से अच्छी तरह वाकिफ है और अपनी बात को सही शब्दों में कहने की अपनी खास कला के साथ कहता है: 'मुझे टोपी उठाकर किया गया सम्मान नहीं, बल्कि हाथ मिलाकर की गई दोस्ती चाहिए।' एक इंसान के तौर पर, वह बहुत ही घटिया है; उसने अपने सबसे अच्छे दोस्तों को ऐसे हालात में छोड़ दिया, उनके सामने घुटने टेक दिए और उन्हें नकार दिया, जहाँ उसकी चुप्पी उतनी ही शर्मनाक थी जितनी कि उन दोस्तों की महानता," एम. डी चार्लस ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा। वह अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों के चलते यूलेनबर्ग मामले की ओर ज़बरदस्ती खिंचा चला जा रहा था, और उसे याद आया कि इस मामले के सबसे ऊँचे ओहदे वाले दोषियों में से एक ने उससे क्या कहा था: "सम्राट ने शायद हमारी नज़ाकत पर भरोसा किया होगा, तभी तो उसने ऐसे मुकदमे की इजाज़त देने की हिम्मत की। लेकिन हमारे विवेक पर भरोसा करके उसने कोई गलती नहीं की थी। हम अपने होंठों पर ताला लगाकर फाँसी के तख्ते तक चले जाते।" "लेकिन, इन सब बातों का उससे कोई लेना-देना नहीं है जो मैं समझाने की कोशिश कर रहा था; वह बात यह है कि जर्मनी में, हमारे जैसे 'मीडिएटाइज़्ड' (राज-अधिकार खो चुके) राजकुमारों को 'Durchlaucht' (महामहिम) कहा जाता है, और फ्रांस में भी हमारी 'हाईनेस' (महामहिम) की पदवी को सार्वजनिक रूप से मान्यता प्राप्त थी। सेंट-साइमन यह साबित करने की कोशिश करता है कि हमारी तरफ से यह एक तरह का दुरुपयोग था, लेकिन इस मामले में वह पूरी तरह से गलत है। वह जो तर्क देता है—यानी यह कि लुई XIV ने हमें उसे 'सबसे ईसाई राजा' (Most Christian King) कहकर संबोधित करने से मना किया था और हमें उसे केवल 'राजा' कहकर पुकारने का आदेश दिया था—उससे तो बस यही साबित होता है कि हमारी पदवी हमें उसी से मिली थी, न कि यह कि हमारे पास राजकुमार का ओहदा नहीं था। वरना, यह ओहदा ड्यूक डी लोरेन और ऐसे ही न जाने कितने

ही दूसरे लोगों से भी छीन लेना पड़ता। "इसके अलावा, हमारे कई खिताब 'हाउस ऑफ़ लोरेन' से आए हैं, मेरी परदादी थेरेसे डी'एस्पिने के ज़रिए, जो 'डेमोइसो डी कॉमर्सि' की बेटी थीं।" यह देखकर कि मोरेल उनकी बात सुन रहा है, एम. डी चार्लस ने अपने दावे के पीछे के कारणों को विस्तार से बताना शुरू किया। "मैंने अपने भाई को बताया है कि हमारे परिवार का ज़िक्र 'गोथा' के तीसरे हिस्से में नहीं, बल्कि दूसरे हिस्से में—या यूँ कहूँ कि पहले हिस्से में —शामिल होना चाहिए," उन्होंने बिना यह सोचे-समझे कहा कि मोरेल को पता ही नहीं था कि 'गोथा' क्या है। "लेकिन यह उसका मामला है; वह हमारे परिवार का मुखिया है, और जब तक वह कोई आपत्ति नहीं उठाता और इस मामले को ऐसे ही चलने देता है, तब तक मुझे बस अपनी आँखें मूँद लेनी हैं।" "एम. ब्रिचोट में मेरी बहुत दिलचस्पी है," मैंने एमएमई. वर्दुरिन से कहा, जब वह मेरे पास आईं; और मैंने एमएमई. डी कैम्ब्रेमर का खत अपनी जेब में डाल लिया। "उनका दिमाग बहुत सुलझा हुआ है और वह एक बेहतरीन इंसान हैं," उन्होंने बेरुखी से जवाब दिया। "बेशक, उनमें जिस चीज़ की कमी है, वह है मौलिकता और अच्छा ज़ौक; उनकी याददाश्त बहुत खराब है। लोग उन 'पूर्वजों' के बारे में—यानी आज शाम यहाँ आए हुए 'प्रवासियों' (émigrés) के पूर्वजों के बारे में—कहा करते थे कि वे कुछ भी नहीं भूले हैं। लेकिन उनके पास कम-से-कम यह बहाना तो था," उन्होंने स्वान के एक मशहूर जुमले को दोहराते हुए कहा, "कि उन्होंने कुछ सीखा ही नहीं था। जबकि ब्रिचोट को सब कुछ पता है, और वह रात के खाने के दौरान हमारे सिर पर शब्दकोश के पन्ने फेंकते रहते हैं। मुझे यकीन है कि अब आपको सभी कस्बों और गाँवों के नामों के बारे में सब कुछ पता चल गया होगा।" जब एमएमई. वर्दुरिन बोल रही थीं, तो मुझे अचानक याद आया कि मैंने उनसे कुछ पूछने का मन बनाया था, लेकिन मुझे याद नहीं आ रहा था कि वह क्या था। इस पल मैं यह भी नहीं बता सकता था कि उस शाम एमएमई. वर्दुरिन ने क्या पहना हुआ था। शायद उस वक्त भी...

मैं इससे ज़्यादा कुछ नहीं कह पाया, क्योंकि मेरा मन चीज़ों को बारीकी से देखने वाला नहीं है। लेकिन यह महसूस करते हुए कि उसकी पोशाक कोई साधारण चीज़ नहीं थी, मैंने उससे कुछ विनम्र और तारीफ़ भरे शब्द कहे। वह लगभग सभी औरतों जैसी ही थी, जो यह मान लेती हैं कि उनकी तारीफ़ में कही गई बात पूरी तरह सच है, और यह एक निष्पक्ष, ज़बरदस्त फ़ैसला है—मानो यह किसी ऐसी कलाकृति के बारे में हो जिसका उस इंसान से कोई लेना-देना ही न

हो। और इसलिए, उसने इतनी गंभीरता से जवाब दिया कि मुझे अपने ही पाखंड पर शर्म आ गई; उसने उस गर्व और भोलेपन भरे सवाल के साथ जवाब दिया, जो ऐसी परिस्थितियों में अक्सर पूछा जाता है: "तुम्हें यह पसंद आया?" "मुझे पता है तुम ब्रिशो के बारे में बात कर रहे हो। हाँ, शांतेपी, फ़्रेसीने—उसने तुम्हें किसी भी बात पर नहीं बख्शा। मेरी नज़र तुम पर ही थी, मेरी छोटी मालकिन!" "मैंने तुम्हें देख लिया था; मैं बस अपनी हँसी रोक नहीं पा रहा था।" "मुझे पक्का यकीन है कि तुम शांतेपी के बारे में ही बात कर रहे हो," एम. वेरडुरिन ने हमारी तरफ़ आते हुए कहा। मैं अकेला था—अपने हरे कपड़े के टुकड़े और लकड़ी की महक के बारे में सोचते हुए—और इस बात पर मेरा ध्यान ही नहीं गया कि जब ब्रिशो शब्दों की उत्पत्ति (etymologies) पर चर्चा कर रहा था, तो वह दूसरों के मज़ाक का पात्र बन रहा था। और चूँकि जिन बातों से मुझे चीज़ों का असली मोल समझ आता था, वे ऐसी थीं जिन्हें दूसरे लोग या तो महसूस ही नहीं करते थे, या फिर बिना सोचे-समझे ही उन्हें 'बेकार' समझकर नकार देते थे—इसलिए वे बातें मेरे लिए पूरी तरह से बेकाम थीं। साथ ही, उनका एक और नुकसान यह भी था कि वे मुझे एम. वेरडुरिन की नज़रों में 'बेवकूफ़' साबित कर देती थीं; उन्हें साफ़ दिख रहा था कि मैं ब्रिशो की बातों में पूरी तरह 'फँस' गया हूँ—ठीक वैसे ही, जैसे पहले मैं एम. डी गुएरमांटेस की नज़रों में बेवकूफ़ साबित हुआ था, क्योंकि मुझे एम. डी अर्पाजोन से मिलने जाना पसंद था। हालाँकि, ब्रिशो के मामले में एक और वजह भी थी। मैं उनके उस छोटे से 'खास गुट' (clan) का हिस्सा नहीं था। और हर गुट में—चाहे वह सामाजिक हो, राजनीतिक हो या साहित्यिक—एक अजीब सी आदत बन जाती है: बातचीत में, किसी सरकारी भाषण में, किसी कहानी में या किसी कविता में—हर उस चीज़ को ढूँढ़ निकालना, जिसके बारे में कोई भी सीधा-सादा पाठक कभी सोच भी नहीं सकता। कितनी ही बार ऐसा हुआ है कि किसी विद्वान और थोड़े पुराने ख्यालों वाले 'अकादमीशियन' की लिखी कोई कहानी—जिसे उसने बड़े हुनर से सुनाया हो—पढ़ने के बाद, जब मेरे मन में कुछ भावनाएँ उमड़ती हैं, तो मैं ब्लॉक या एम. से यह कहने ही वाला होता हूँ... डी गुएरमांटेस: "यह कितना मनमोहक है!" जब मैंने अभी अपना मुँह खोला ही था कि वे सब चिल्ला उठे—हर कोई अपनी-अपनी अलग भाषा में: "अगर आप सचमुच मनोरंजन करना चाहते हैं, तो फलाँ-फलाँ की कहानी पढ़िए। इंसानी बेवकूफी इससे ज़्यादा निचले स्तर पर कभी नहीं गिरी।" ब्लोच की नाराज़गी का मुख्य कारण

यह पता चलना था कि शैली के कुछ प्रभाव—जो अपने आप में काफी सुखद थे—अब थोड़े फीके पड़ गए थे; वहीं, मादाम डी गुएरमांटेस की नाराज़गी का कारण यह था कि कहानी लेखक के असल इरादे के ठीक विपरीत साबित होती जान पड़ रही थी—कुछ ऐसे तथ्यों के आधार पर जिन्हें समझने की कुशाग्र बुद्धि उनमें तो थी, पर मेरे मन में वे विचार कभी आते ही नहीं। मुझे इस बात पर भी उतना ही आश्चर्य हुआ, जितना कुछ दिनों बाद फेतेर्न में कैम्ब्रेमर दंपत्ति की बात सुनकर हुआ था। मैं जब 'ला रास्पेलिएर' की ज़ोरदार तारीफ कर रहा था, तो उन्होंने मुझसे कहा: "यह नामुमकिन है कि आप सच बोल रहे हों—खासकर तब, जब उन्होंने उस जगह का यह हाल कर दिया है।" यह सच है कि उन्होंने वहाँ के चीनी-मिट्टी के बर्तनों की तारीफ की थी। उन भद्दे विंडस्क्रीन की तरह ही, यह बात भी मेरी नज़र से चूक गई थी। "खैर, जब आप वापस बालबेक जाएँगे, तो आपको पता चलेगा कि बालबेक का असली मतलब क्या है," मिस्टर वेरडुरिन ने व्यंग्य करते हुए कहा। असल में, ब्रिशो ने मुझे जो बातें बताई थीं, उन्हीं में मेरी सबसे ज़्यादा दिलचस्पी थी। जहाँ तक उनकी 'बुद्धि' की बात है—जैसा कि वे लोग उसे कहते थे—तो वह ठीक वैसी ही बुद्धि थी, जिसकी कभी इस छोटे से समूह ने बहुत तारीफ की थी। वह आज भी उसी चिढ़ाने वाली धाराप्रवाह शैली में बातें करते थे; लेकिन अब उनके शब्दों में वह असर नहीं रहा था, क्योंकि अब उन्हें एक शत्रुतापूर्ण चुप्पी या कानों को चुभने वाली गूँज का सामना करना पड़ता था। जो चीज़ बदली थी, वह उनके कहे शब्द नहीं थे—बल्कि कमरे की ध्वनिकी (acoustics) और वहाँ मौजूद श्रोताओं का रवैया बदल गया था। "ज़रा संभलकर," मादाम वेरडुरिन ने ब्रिशो की ओर इशारा करते हुए दबी ज़बान में कहा। ब्रिशो—जिनके सुनने की शक्ति उनकी देखने की शक्ति से कहीं ज़्यादा तेज़ थी—ने उस मालकिन की ओर एक तीखी नज़र डाली, जिसे उन्होंने तुरंत ही वापस खींच लिया; यह नज़र किसी कमज़ोर नज़र वाले दार्शनिक की नज़र जैसी थी। भले ही उनकी आँखों की रोशनी कमज़ोर पड़ गई थी, लेकिन इसके ठीक विपरीत, उनकी 'मन की आँख' अब चीज़ों को कहीं ज़्यादा व्यापक नज़रिए से देखने लगी थी। उन्हें यह बात समझ आ गई थी कि इंसानी स्नेह से बहुत ज़्यादा उम्मीद नहीं की जा सकती, और उन्होंने इस सच्चाई को स्वीकार कर लिया था। निस्संदेह, इस सच्चाई का पता चलने पर उन्हें गहरा दुख हुआ था। ऐसा हो सकता है कि कोई व्यक्ति, जो आमतौर पर किसी महफ़िल में खुशी से स्वागत पाता है, किसी एक शाम यह महसूस करे कि

दूसरे लोग उसे बहुत ज़्यादा छिछोरा, या बहुत ज़्यादा किताबी, या बहुत ज़्यादा शोर मचाने वाला, या बहुत ज़्यादा आगे बढ़कर बोलने वाला—या कुछ भी ऐसा ही—समझ रहे हैं; और वह दुखी होकर घर लौटे। अक्सर यह विचारों या कार्यप्रणाली का कोई मतभेद होता है, जिसके कारण वह दूसरे लोगों को बेतुका या पुराने ज़माने का लगता है। अक्सर उसे इस बात का पूरा एहसास होता है कि वे दूसरे लोग उससे कमतर हैं। वह उन कुतर्कों की आसानी से धज्जियाँ उड़ा सकता है जिनके आधार पर उसे चुपचाप दोषी ठहराया गया है; उसका मन करता है कि वह जाकर उनसे मिले या उन्हें कोई पत्र लिखे; लेकिन फिर दोबारा सोचने पर, वह कुछ नहीं करता, और अगले हफ़्ते के निमंत्रण का इंतज़ार करता है। कभी-कभी तो, ये निराशाएँ उस शाम के साथ ही खत्म होने के बजाय, महीनों तक बनी रहती हैं। सामाजिक निर्णयों की अस्थिरता से उत्पन्न होने के कारण, वे उस अस्थिरता को और भी बढ़ा देती हैं। क्योंकि जिस व्यक्ति को यह पता है कि श्रीमती X— उसे तुच्छ समझती हैं, वही व्यक्ति जब यह महसूस करता है कि श्रीमती Y— के यहाँ उसका सम्मान होता है, तो वह श्रीमती Y— को दूसरी वाली से कहीं ज़्यादा श्रेष्ठ घोषित कर देता है, और फिर उन्हीं के यहाँ आना-जाना शुरू कर देता है। हालाँकि, यह वह...

उन पुरुषों का वर्णन करने के लिए यह सही जगह है—जो सामाजिक जीवन से तो ऊपर हैं, लेकिन समाज के बाहर अपनी अहमियत समझने की क्षमता उनमें नहीं है; जिन्हें बुलाए जाने पर खुशी होती है, लेकिन जिनकी उपेक्षा होने पर वे कड़वाहट से भर जाते हैं; जो हर साल उस मेज़बान की कमियाँ ढूँढ़ निकालते हैं जिसकी वे अब तक तारीफ़ों के पुल बाँधते आए थे, और उस महिला की प्रतिभा को पहचानते हैं जिसकी उन्होंने कभी ठीक से कद्र नहीं की थी; और जो अपने पुराने प्यार के पास लौटने को तैयार रहते हैं—खासकर तब, जब उन्हें नए प्यार में भी वैसी ही कमियाँ नज़र आने लगती हैं, और जब वे पुराने प्यार की कमियों को भूलने लगते हैं। इन क्षणिक निराशाओं को देखकर हम उस गहरे दुख का अंदाज़ा लगा सकते हैं जो ब्रिशो को तब हुआ था, जब उन्हें यह एहसास हुआ कि उनकी यह निराशा अब हमेशा के लिए है। उन्हें इस बात का पूरा पता था कि मैडम वेरडुरिन कभी-कभी सबके सामने उनका मज़ाक उड़ाती थीं—यहाँ तक कि उनकी शारीरिक कमज़ोरियों का भी।

और यह जानते हुए कि इंसानी स्नेह से बहुत कम उम्मीद की जा सकती है, और हकीकत को स्वीकार करते हुए भी, वह फिर भी मालकिन को अपना सबसे अच्छा दोस्त मानता रहा। लेकिन, विद्वान के चेहरे पर जो शर्म की लाली छा गई थी, उसे देखकर मैडम वर्दुरिन समझ गईं कि उसने उनकी बात सुन ली है, और उन्होंने तय कर लिया कि बाकी शाम वह उसके साथ नरमी से पेश आएंगी। मैं उन्हें यह कहने से खुद को रोक नहीं पाया कि वह सैनिएट के साथ बहुत नरमी से पेश नहीं आई थीं। "क्या! उसके साथ नरमी से पेश नहीं आई! अरे, वह तो हमारी पूजा करता है; तुम सोच भी नहीं सकते कि उसके लिए हम क्या मायने रखते हैं। मेरे पति कभी-कभी उसकी बेवकूफी से थोड़े चिढ़ जाते हैं—और तुम्हें मानना पड़ेगा कि उनके पास चिढ़ने की पूरी वजह है—लेकिन जब ऐसा होता है, तो वह एक पिटे हुए कुत्ते की तरह दुबकने के बजाय, विद्रोह करके खड़ा क्यों नहीं हो जाता? यह ईमानदारी नहीं है। मुझे यह पसंद नहीं है। इसका मतलब यह नहीं है कि मैं हमेशा अपने पति को शांत करने की कोशिश नहीं करती, क्योंकि अगर वह बहुत ज़्यादा आगे बढ़ जाते, तो नतीजा बस यही होता कि सैनिएट दूर रहने लगता; और मैं ऐसा नहीं चाहती, क्योंकि मैं तुम्हें बता सकती हूँ कि उसके पास दुनिया में एक भी पैसा नहीं है—उसे अपने खाने की ज़रूरत है। लेकिन आखिर में, अगर उसे बुरा लगता है, तो वह दूर रह सकता है; इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है। जब कोई इंसान दूसरों पर निर्भर होता है, तो उसे इतना बेवकूफ न बनने की कोशिश करनी चाहिए।" "ऑमाल की डची, हाउस ऑफ़ फ़्रांस के पास जाने से पहले, सालों तक हमारे परिवार में रही थी," एम. डी चार्लस, एम. डी कैम्ब्रेमर को समझा रहे थे—और उनके सामने मोरेल चुपचाप खड़ा था; असल में, यह पूरी बात, भले ही सीधे तौर पर उसे संबोधित न की गई हो, लेकिन उसका मकसद उसी के लिए था। "हमें सभी विदेशी राजकुमारों पर वरीयता प्राप्त थी; मैं आपको इसके सौ उदाहरण दे सकता हूँ। जब 'मोंसियर' के अंतिम संस्कार के समय, 'प्रिंसेस डी क्रॉय' ने मेरी पर-पर-दादी के बाद घुटनों के बल बैठने की कोशिश की, तो उस महिला ने उन्हें तीखे शब्दों में याद दिलाया कि उन्हें 'हसॉक' (घुटनों के नीचे रखने वाले गद्दे) का

विशेषाधिकार प्राप्त नहीं है; उन्होंने ड्यूटी पर तैनात अधिकारी से उसे हटवा दिया, और इस मामले की शिकायत राजा से की। राजा ने 'मैडम डी क्रॉय' को आदेश दिया कि वे 'मैडम डी गुएरमांटेस' से मिलें और उनसे क्षमा याचना करें। जब 'ड्यूक डी बर्गंडी' अपने साथ ऊँची छड़ें (राजदंड) उठाए हुए द्वारपालों के साथ हमारे पास आए, तो हमने राजा से यह अधिकार प्राप्त कर लिया कि उन छड़ों को नीचे झुका दिया जाए। मैं जानता हूँ कि अपने ही परिवार की खूबियों के बारे में बात करना शिष्टाचार के विरुद्ध है। लेकिन यह सर्वविदित है कि संकट की घड़ी में हमारे लोग हमेशा सबसे आगे रहे हैं। जब हमने 'ड्यूक्स ऑफ ब्रैबेंट' के युद्ध-घोष को त्याग दिया, तो हमारा नया युद्ध-घोष था—'पासावांत!' इसलिए, यह बात पूरी तरह से न्यायसंगत है कि हर जगह सबसे पहले होने का जो अधिकार हमने सदियों तक युद्ध के मैदान में स्थापित किया था, उसे बाद में राजदरबार में भी हमारे लिए पुष्ट कर दिया गया। और, सच कहूँ तो, वहाँ इस बात को हमेशा स्वीकार किया गया है। मैं आपको एक और उदाहरण दे सकता हूँ—'प्रिंसेस ऑफ बाडेन' का। उन्होंने शिष्टाचार की सारी सीमाएँ लांघते हुए, उसी 'डचेस डी गुएरमांटेस' की वरीयता को चुनौती देने का दुस्साहस किया, जिनके बारे में मैं अभी बात कर रहा था; उन्होंने राजा के समक्ष सबसे पहले प्रवेश करने की कोशिश की—शायद मेरी रिश्तेदार द्वारा दिखाई गई क्षणिक हिचकिचाहट का लाभ उठाते हुए (हालाँकि उस हिचकिचाहट का कोई कारण नहीं था)। तब राजा ने ऊँची आवाज़ में कहा: 'अंदर आइए, चचेरी बहन, अंदर आइए; मैडम डी बाडेन भली-भांति जानती हैं कि उनके प्रति उनका क्या कर्तव्य है।' और यह 'डचेस डी गुएरमांटेस' के रूप में ही था कि उन्होंने यह उच्च पद प्राप्त किया—भले ही वे स्वयं भी किसी साधारण परिवार से नहीं थीं; क्योंकि अपनी माँ की ओर से वे पोलैंड की रानी, हंगरी की रानी, 'इलेक्टर पैलेटाइन', 'प्रिंस ऑफ सवॉय-कैरिन्यानो' और 'इलेक्टर ऑफ हनोवर' (जो बाद में इंग्लैंड के राजा बने) की भतीजी थीं।" "मैकेनास, अपने पूर्वज राजाओं की संतान!" ब्रिशोट ने 'मिस्टर डी चार्लस' को संबोधित करते हुए कहा; चार्लस ने सिर को हल्का सा झुकाकर इस प्रशंसा को स्वीकार किया। "आपने क्या कहा?" मैडम... वेरडुरिन ने ब्रिचोट से पूछा, वह अपनी पिछली बात के लिए उनसे माफ़ी माँगना चाहती थी। "मेरा मतलब था—भगवान मुझे माफ़ करे—एक ऐसे 'डैंडी' (सजने-सँवरने वाले) से जो उस समय का सबसे बेहतरीन नमूना था" (श्रीमती वेरडुरिन थोड़ा सिकुड़ गईं) "अगस्तस के ज़माने

के आस-पास" (श्रीमती वेरडुरिन, यह सोचकर कि वह ज़माना बहुत पुराना था, थोड़ी निश्चिंत हुईं और उनके चेहरे पर शांति आ गई), "वह वर्जिल और होरेस का दोस्त था, जिसने उनकी चापलूसी इस हद तक की कि उनके मुँह पर ही अपनी ऊँची, बल्कि शाही खानदानी शान का बखान कर दिया; संक्षेप में कहूँ तो मेरा मतलब था मेसेनास से—एक किताबी कीड़ा जो होरेस, वर्जिल और अगस्तस का दोस्त था। मुझे पूरा यकीन है कि श्री डी चार्लस मेसेनास के बारे में सब कुछ जानते होंगे।" श्रीमती वेरडुरिन की ओर एक प्यारी, तिरछी नज़र डालते हुए—क्योंकि उन्होंने श्रीमती वेरडुरिन को मोरेल के साथ परसों के लिए मिलने का समय तय करते सुन लिया था और उन्हें डर था कि कहीं वह उन्हें न बुलाएँ—श्री डी चार्लस ने कहा, "मैं तो कहूँगा कि मेसेनास प्राचीन काल का 'वेरडुरिन' ही था।" श्रीमती वेरडुरिन अपनी संतुष्टि भरी मुस्कान को पूरी तरह छिपा नहीं पाईं। वह मोरेल के पास गईं। उन्होंने मोरेल से कहा, "तुम्हारे पिता का वह दोस्त बहुत अच्छा आदमी है। साफ़ पता चलता है कि वह पढ़ा-लिखा और अच्छे खानदान का आदमी है। हमारे इस छोटे से समूह में वह खूब घुल-मिल जाएगा। पेरिस में उसका पता क्या है?" मोरेल ने घमंडी चुप्पी साधे रखी और बस ताश खेलने का प्रस्ताव रख दिया। श्रीमती वेरडुरिन ने ज़ोर देकर कहा कि पहले थोड़ा वायलिन संगीत हो जाए। सबको हैरान करते हुए, श्री डी चार्लस—जो कभी अपनी ज़बरदस्त प्रतिभा का ज़िक्र नहीं करते थे—ने फ़ोरे के पियानो और वायलिन के 'सोनाटा' के अंतिम हिस्से (जो बेचैन, उद्विग्न, शुमान जैसा था, लेकिन फिर भी फ्रैंक के 'सोनाटा' से पहले का था) में बेहद शुद्ध शैली में संगत की। मुझे लगा कि...

वह मोरेल को—जो अपनी आवाज़ और कला-कौशल में अद्‌भुत रूप से संपन्न था—ठीक वे ही गुण प्रदान करता, जिनकी उसमें कमी थी: संस्कृति और शैली। लेकिन मैं एक ही व्यक्ति में शारीरिक दोष और आध्यात्मिक वरदान के इस मेल के बारे में कौतूहल से सोचता रहा। एम. डी शार्लस अपने भाई, ड्यूक डी गुएरमांटेस से बहुत अलग नहीं था। सच तो यह है कि कुछ ही पल पहले (हालाँकि ऐसा कम ही होता था), उसने अपने भाई की तरह ही खराब फ्रेंच बोली थी। उसने मुझे ताना दिया (निस्संदेह इसलिए ताकि मैं एमएम. वेरडुरिन के सामने मोरेल की बढ़-चढ़कर तारीफ़ कर सकूँ) कि मैं उससे मिलने कभी नहीं आता; और जब मैंने अपनी समझदारी (discretion) का हवाला दिया, तो उसने जवाब दिया: "लेकिन, जब मैं खुद तुमसे

यह कह रहा हूँ, तो नाराज़ होने का अधिकार भी सिर्फ़ मुझे ही है।" यह बात ड्यूक डी गुएरमांटेस भी कह सकता था। कुल मिलाकर, एम. डी शार्ास भी आखिर एक गुएरमांटेस ही था। लेकिन प्रकृति ने उसके तंत्रिका तंत्र (nervous system) का संतुलन इतना बिगाड़ दिया था कि उसने उस स्त्री के बजाय—जिसे उसका भाई ड्यूक चुनता—वर्जिल के किसी गड़रिये या प्लेटो के किसी शिष्य को प्राथमिकता दी; और इसके साथ ही, ड्यूक डी गुएरमांटेस के लिए अनजान और अक्सर इस असंतुलन से जुड़े कुछ गुणों ने एम. डी शार्लस को एक बेहतरीन पियानोवादक, एक शौकिया चित्रकार (जिसमें कला-बोध की कमी नहीं थी), और एक वाक्पटु वक्ता बना दिया। कौन यह भांप पाता कि वह तेज़, जोशीली और मनमोहक शैली —जिससे एम. डी शार्लस फ़ॉरे के सोनाटा के 'शुमान-नुमा' अंश को बजाता था—उसका मूल कारण (या कम-से-कम उसका समानांतर रूप) पूरी तरह से शारीरिक तत्वों में, यानी एम. डी शार्लस के तंत्रिका-संबंधी दोषों में छिपा था? हम बाद में समझाएँगे कि तंत्रिका-संबंधी दोषों से हमारा क्या तात्पर्य है, और ऐसा क्यों है कि सुकरात के ज़माने का कोई यूनानी या ऑगस्टस के ज़माने का कोई रोमन—जैसा कि हम उन्हें जानते हैं—वैसा होते हुए भी पूरी तरह से सामान्य पुरुष बना रह सकता था, न कि आज हमारे आस-पास दिखने वाले 'पुरुष-स्त्रियों' (men-women) जैसा। जिस तरह उनमें कला के प्रति सच्ची लगन थी, जो कभी पूरी नहीं हो पाई, उसी तरह M. de Charlus ने—Duke से कहीं ज़्यादा—अपनी माँ से प्यार किया था, अपनी पत्नी से प्यार किया था; और सच तो यह है कि उनकी मृत्यु के कई साल बाद भी, अगर कोई उनके सामने उनकी बात करता, तो उनकी आँखों से आँसू छलक पड़ते—मगर वे आँसू ऊपरी होते, ठीक वैसे ही जैसे किसी बहुत मोटे आदमी के शरीर से पसीना निकलता है, जिसकी माथे की त्वचा ज़रा-सी भी मेहनत करने पर पसीने से चमक उठती है। फ़र्क बस इतना है कि मोटे आदमी को देखकर हम कह उठते हैं: "आपको कितनी गर्मी लग रही है," जबकि दूसरों के आँसुओं को हम नज़रअंदाज़ करने का दिखावा करते हैं। हमारा मतलब है, समाज के 'ऊँचे तबके' के लोग; क्योंकि आम और सीधे-सादे लोग आँसू देखकर इतने परेशान हो जाते हैं, मानो सिसकियाँ भरना किसी गंभीर रक्तस्राव (खून बहने) से भी ज़्यादा जानलेवा हो। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद भी, झूठ बोलने की आदत के चलते, M. de Charlus ने अपनी जीवन-शैली में कोई बदलाव नहीं किया—एक ऐसी जीवन-शैली जो उनके

इस दुख के बिल्कुल भी मेल नहीं खाती थी। सच तो यह है कि बाद में वे इतने गिर गए कि उन्होंने यह बात भी जगज़ाहिर कर दी कि अंतिम संस्कार की रस्मों के दौरान, उन्हें पुजारी के सहायक (acolyte) से उसका नाम और पता पूछने का मौका मिल गया था। और हो सकता है कि यह बात सच भी हो।

जब वह रचना समाप्त हुई, तो मैंने फ्रैंक की कुछ रचनाएँ माँगने का साहस किया, जिससे श्रीमती डी कैम्ब्रेमर को इतना तीव्र दर्द हुआ कि मैंने ज़िद नहीं की। उन्होंने मुझसे कहा, "आप इस तरह की चीज़ों की प्रशंसा नहीं कर सकते।" इसके बजाय उन्होंने डेबुसी की फ़ेट्स माँगी, जिसे सुनते ही वे पहले ही सुर से "आह! कितना शानदार!" कहने लगीं। लेकिन मोरेल को पता चला कि उन्हें केवल शुरुआती धुनें ही याद हैं, और शरारत भरे अंदाज़ में, धोखा देने के इरादे के बिना, उन्होंने मेयरबीर का एक मार्च बजाना शुरू कर दिया। दुर्भाग्य से, क्योंकि उन्होंने बहुत कम अंतराल रखा और कोई घोषणा नहीं की, सभी को लगा कि वे अभी भी डेबुसी ही बजा रहे हैं, और सब 'शानदार!' कहते रहे। मोरेल ने यह खुलासा करके कि संगीतकार पेलियास नहीं बल्कि रॉबर्ट ले डियाबल हैं, एक अजीब सी खामोशी पैदा कर दी। श्रीमती डी कैम्ब्रेमर को इसका एहसास भी नहीं हुआ, क्योंकि उन्हें अभी-अभी स्कारलाटी की एक किताब मिली थी, और वे उन्माद में उस पर टूट पड़ी थीं। "ओह! इसे बजाओ, देखो, यह रचना, यह तो दिव्य है!" वह चिल्लाई। और फिर भी, इस संगीतकार की, जिसे लंबे समय से तिरस्कृत किया गया था और जिसे हाल ही में सर्वोच्च सम्मान मिला था, उसने अपनी तीव्र अधीरता में उन भयानक रचनाओं में से एक का चयन किया था, जो अक्सर हमें सोने नहीं देतीं, जबकि एक निर्दयी शिष्य अगली मंजिल पर उन्हें अनिश्चित काल तक दोहराता रहता है। लेकिन मोरेल संगीत से ऊब चुका था, और चूंकि वह ताश खेलने पर अड़ा था, इसलिए एम. डी चार्लस ने भी शामिल होने के लिए व्हिस्ट का खेल प्रस्तावित किया। "वह अभी मास्टर को बता रहा था कि वह एक राजकुमार है," स्की ने श्रीमती वर्दुरिन से कहा, "लेकिन यह सच नहीं है, वे वास्तुकारों का एक साधारण परिवार हैं।" "मैं जानना चाहती हूँ कि आप मेसेनास के बारे में क्या कह रहे थे। मुझे इसमें दिलचस्पी है, क्या आप नहीं जानते!" श्रीमती वर्दुरिन ने ब्रिचोट से

दोहराया, उनकी आत्मीयता ने उन्हें मंत्रमुग्ध कर दिया। और इसलिए, स्वामिनी की नज़रों में, और शायद मेरी भी, चमकने के लिए: "सच कहूँ तो, महोदया, मुझे मेकेनस में सबसे ज़्यादा दिलचस्पी इसलिए है क्योंकि वह उस चीनी देवता का सबसे पहला और प्रसिद्ध अनुयायी है जिसके आज फ्रांस में ब्रह्मा, स्वयं ईसा मसीह, सर्वशक्तिमान ईश्वर उबेदामद से भी ज़्यादा अनुयायी हैं।" श्रीमती वर्दुरिन अब ऐसे मौकों पर अपना सिर हाथों में छिपाकर संतुष्ट नहीं रहती थीं। वह क्षणभंगुर कहे जाने वाले कीड़ों की तरह अचानक राजकुमारी शेरबतोफ़ पर टूट पड़तीं; अगर वह पहुँच के भीतर होतीं तो स्वामिनी उनके कंधे से लिपट जातीं, अपने नाखून उसमें गाड़ देतीं और कुछ पलों के लिए अपना चेहरा उससे ऐसे छिपा लेतीं जैसे कोई बच्चा लुका-छिपी खेल रहा हो। इस सुरक्षात्मक आवरण में छिपी हुई, ऐसा लगता था जैसे वह तब तक हँसती रहतीं जब तक उनकी आँखों से आँसू न आ जाते और वह उतनी ही सहजता से कुछ भी नहीं सोच पातीं जितनी कि वे लोग जो लंबी प्रार्थना करते समय सावधानी के तौर पर अपना चेहरा हाथों में छिपा लेते हैं। वर्दुरिन बीथोवेन के चौकड़ी संगीत सुनते समय उनकी नकल करती थीं, ताकि यह लगे कि वह उन्हें प्रार्थना की तरह मानती हैं और यह न लगे कि वह सो रही हैं। "मैं बिल्कुल गंभीर हूँ, महोदया," ब्रिचोट ने कहा। "मुझे लगता है कि आज के समय में बहुत से लोग ऐसे हो गए हैं जो अपना समय अपनी नाभि को ऐसे निहारते हुए बिताते हैं मानो वह ब्रह्मांड का केंद्र हो। सिद्धांत के तौर पर, मुझे किसी ऐसे निर्वाण पर कोई आपत्ति नहीं है जो हमें संपूर्णता में विलीन कर दे (जो म्यूनिख और ऑक्सफोर्ड की तरह, अस्नीरेस या बोइस-कोलंब्स की तुलना में पेरिस के काफी करीब है), लेकिन यह न तो एक सच्चे फ्रांसीसी के लिए और न ही एक सच्चे यूरोपीय के लिए अशोभनीय है, जब जापानी संभवतः हमारे बाइजेंटियम के द्वार पर हैं, कि सामाजिक रूप से सैन्य-विरोधी लोग मुक्त छंद के मूलभूत गुणों पर गंभीरता से चर्चा करें।" वर्दुरिन को लगा कि वह राजकुमारी के बुरी तरह घायल कंधे को नज़रअंदाज़ कर सकती है, और उसने अपना चेहरा एक बार फिर दिखने दिया, हालाँकि उसने आँखों को पोंछने का नाटक किया और दो-तीन बार साँस लेने के लिए हाँफने का नाटक किया। लेकिन ब्रिचोट यह सुनिश्चित करना चाहता था कि मुझे भी इस मनोरंजन में हिस्सा मिले, और उसने अपने द्वारा कुशलतापूर्वक आयोजित मौखिक परीक्षाओं से यह सीख लिया था कि युवाओं को खुश करने का सबसे अच्छा तरीका उन्हें उपदेश देना, उन्हें महत्वपूर्ण

महसूस कराना और उन्हें आपको प्रतिक्रियावादी समझने पर मजबूर करना है: "मैं युवाओं के देवताओं के विरुद्ध ईशनिंदा नहीं करना चाहता," उसने मुझ पर उस दबे-छिपे नज़र से देखते हुए कहा, जिस तरह एक वक्ता अपने श्रोता के किसी सदस्य का नाम लेकर उस पर नज़र डालता है। "मैं नहीं चाहता कि मुझे मल्लरमी चैपल में विधर्मी और धर्मत्यागी करार दिया जाए, जहाँ हमारे नए मित्र ने, अपनी उम्र के सभी नौजवानों की तरह, कम से कम एक शिष्य के रूप में, गूढ़ धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लिया होगा और खुद को विक्षिप्त या रोसिक्रुशियन साबित किया होगा। लेकिन, सच में, हमने कला की पूजा करने वाले इन बुद्धिजीवियों को काफी देख लिया है, जो ज़ोला के नशे में चूर होने के बाद वर्लेन के वश में आ जाते हैं। बॉडेलेयर की भक्ति में मदहोश होकर, वे उस शक्तिपूर्ण प्रयास के काबिल नहीं रह जाते, जिसकी देश को एक दिन उनसे अपेक्षा हो सकती है, क्योंकि वे अफीम के पाइप के प्रतीकात्मकता के उमंग भरे, शक्तिहीन वातावरण में महान साहित्यिक मनोविकार से सुन्न हो चुके हैं।" ब्रिचोट के बेतुके और अटपटे भाषण के प्रति प्रशंसा का कोई भी आभास न कर पाने के कारण, मैंने स्की की ओर मुड़कर उसे आश्वस्त किया कि एम. डी चार्लस जिस परिवार से संबंधित थे, उसके बारे में वह पूरी तरह से गलत थे; उन्होंने उत्तर दिया कि उन्हें अपने तथ्यों का पूरा यकीन है, और उन्होंने आगे कहा कि मैंने खुद कहा था कि उनका असली नाम गैंडिन, ले गैंडिन था। "मैंने आपको बताया था," मेरा जवाब था, "कि श्रीमती डी कैम्ब्रेमर एक इंजीनियर, एम. लेग्रैंडिन की बहन थीं। मैंने आपसे एम. डी चार्लस के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। उनका और श्रीमती डी कैम्ब्रेमर का उतना ही संबंध है जितना कि ग्रेट कोंडे और रेसीन का।" "सचमुच! मुझे लगा था कि संबंध है," स्की ने हल्के से कहा, अपनी गलती के लिए उतनी ही कम माफी मांगते हुए जितनी उन्होंने कुछ घंटे पहले उस गलती के लिए मांगी थी जिसके कारण उनका दल लगभग ट्रेन छूटने वाला था। "क्या आप इस तट पर लंबे समय तक रुकने का इरादा रखते हैं?" श्रीमती... वेरदुरिन ने एम. डी चार्लस से पूछा, जिनमें उन्हें विश्वासियों की संख्या में वृद्धि की उम्मीद थी और उन्हें डर था कि कहीं वे पेरिस जल्दी न लौट जाएं। एम. डी चार्लस ने नाक से निकलने वाली धीमी आवाज़ में उत्तर दिया, "हे भगवान, कौन जाने वाला है। मैं सितंबर के अंत तक यहीं रहना चाहूंगा।" श्रीमती वेरदुरिन ने कहा, "आप बिल्कुल सही कह रहे हैं; उस समय समुद्र में भयंकर तूफान आते हैं।" "सच कहूं तो, यह बात मुझे प्रभावित नहीं करेगी। मैंने कुछ

समय से अपने संरक्षक संत माइकल की उपेक्षा की है और मैं 29 सितंबर को माउंट पर स्थित एबे में उनके पर्व पर रुककर उनकी क्षमा चाहता हूं।" श्रीमती वेरदुरिन ने पूछा, "क्या आपको इन सब बातों में दिलचस्पी है?" वेरदुरिन शायद अपने गुस्से और पादरी-विरोधी भावना को दबा लेतीं, अगर उन्हें यह डर न होता कि इतनी लंबी यात्रा के कारण वायलिन वादक और बैरन अड़तालीस घंटे तक उनसे संपर्क नहीं कर पाएंगे। “शायद आपको बीच-बीच में बहरापन हो जाता है,” एम. डी चार्लस ने उद्दंडता से उत्तर दिया। “मैंने आपको बताया है कि संत माइकल मेरे गौरवशाली संरक्षकों में से एक हैं।” फिर, परोपकारी भाव से मुस्कुराते हुए, उनकी आँखें दूर तक टकटकी लगाए थीं, उनकी आवाज़ में एक ऐसी उत्तेजना थी जो अब न केवल सौंदर्यपरक बल्कि धार्मिक भी प्रतीत हो रही थी: “अर्पण के समय यह कितना सुंदर होता है जब माइकल वेदी के पास सफेद वस्त्र पहने सीधे खड़े होते हैं, और सुगंधित तेलों से भरे एक सुनहरे धूपदान को झुलाते हैं, जिसकी सुगंध ईश्वर तक पहुँचती है।” “हम वहाँ समूह में जा सकते हैं,” श्रीमती वर्दुरिन ने सुझाव दिया, हालाँकि उन्हें पादरियों से घृणा थी। “उस समय, जब भेंट चढ़ाने का कार्यक्रम शुरू होगा,” एम. डी चार्लस ने आगे कहा, जो अन्य कारणों से, लेकिन संसद में अच्छे वक्ताओं की तरह, कभी भी किसी व्यवधान का उत्तर नहीं देते थे और अनसुना करने का नाटक करते थे, “हमारे युवा मित्र पैलेस्ट्रिनाइज़ को बाख की कोई रचना गाते हुए देखना कितना अद्भुत होगा। आदरणीय मठाधीश भी आनंद से भर उठेंगे, और यही सबसे बड़ी श्रद्धा है, कम से कम सबसे बड़ी सार्वजनिक श्रद्धा जो मैं अपने पवित्र संरक्षक को अर्पित कर सकता हूँ। विश्वासियों के लिए यह कितना प्रेरणादायक होगा! हमें अभी संगीत के युवा देवदूत, संत माइकल के समान योद्धा को इसके बारे में बताना चाहिए।”

सैनीएट को चौथे खिलाड़ी के रूप में बुलाया गया, लेकिन उसने कहा कि उसे व्हिस्ट खेलना नहीं आता। कॉटार्ड ने देखा कि हमारी ट्रेन आने में ज़्यादा समय नहीं बचा है, इसलिए वह तुरंत मोरेल के साथ एकार्टे खेलने में जुट गया। एम. वर्दुरिन बहुत क्रोधित हुए और सैनीएट को घूरते हुए गुस्से से बोले, "क्या दुनिया में ऐसा कुछ है जो तुम खेल सकते हो?" व्हिस्ट खेलने का मौका न मिलने से वह बहुत गुस्से में थे और बूढ़े रजिस्ट्रार का अपमान करने का मौका पाकर खुश भी थे। डर के मारे उन्होंने चालाकी दिखाने की पूरी कोशिश की। "हाँ, मैं पियानो बजा सकता

हूँ," उन्होंने कहा। कॉटार्ड और मोरेल आमने-सामने बैठे थे। "अब तुम्हारी बारी है," कॉटार्ड ने कहा। कॉटार्ड के साथ मोरेल को देखकर चिंतित एम. डी चार्लस ने एम. डी कैम्ब्रेमर से कहा, "चलिए हम कार्ड टेबल के पास चलते हैं।" “यह उतना ही रोचक है जितना शिष्टाचार के वे प्रश्न जिनका आजकल कोई महत्व नहीं रह गया है। कम से कम फ्रांस में तो हमारे पास बचे हुए एकमात्र राजा ताश के पत्तों के राजा हैं, जो मुझे हमारे युवा प्रतिभाशाली कलाकार के हाथों में मानो भरे पड़े हैं,” उन्होंने कुछ क्षण बाद मोरेल के प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त करते हुए कहा, जो उनके ताश खेलने के तरीके तक फैली हुई थी, साथ ही उनकी चापलूसी करने के लिए और अंत में युवा वायलिन वादक के कंधे पर झुकने के अपने अचानक मुड़ने का कारण बताने के लिए भी। “आई-ई कट,” कॉटार्ड ने (ताश के धोखेबाज़ के लहजे की नकल करते हुए) कहा, जिनके बच्चे, उनके छात्रों और मुख्य ड्रेसर की तरह, तब खिलखिलाकर हंस पड़े जब गुरु, किसी गंभीर रोगी के बिस्तर के पास भी, मिर्गी के रोगी के भावहीन चेहरे के साथ अपने घिसे-पिटे चुटकुलों में से एक बोलते थे। “मुझे नहीं पता कि क्या खेलना है,” मोरेल ने एम. डी चार्लस से सलाह मांगते हुए कहा। "जैसा आप चाहें, हारना तय है, चाहे आप कुछ भी खेलें, सब एक जैसा ही है (c'est égal)।" "इगल... इंगल्ली?" डॉक्टर ने एम. डी कैम्ब्रेमर की ओर व्यंग्यात्मक और दयालु दृष्टि डालते हुए कहा। "वह एक सच्ची दिवा थीं, एक सपना थीं, एक ऐसी कारमेन जैसी हम फिर कभी नहीं देख पाएंगे। वह अपने किरदार के लिए पूरी तरह समर्पित थीं। मुझे भी इंगल्ली को सुनना बहुत पसंद था—पूरी तरह से समर्पित।" मार्क्विस ने उन सभ्य लोगों की तरह अकड़ दिखाई जो यह नहीं समझते कि वे अपने मेज़बान के साथ मेलजोल रखने के बारे में अनिश्चित होकर उनका अपमान कर रहे हैं, और अपने तिरस्कारपूर्ण भाव के लिए माफी मांगने के लिए अंग्रेज़ी शिष्टाचार अपनाते हुए बोले: "वह सज्जन कौन हैं जो ताश खेल रहे हैं, उनका पेशा क्या है, वे क्या बेचते हैं? मैं जानना चाहता हूँ कि मैं किससे मिल रहा हूँ, ताकि किसी भी अनाड़ी से दोस्ती न कर लूँ। लेकिन जब आपने मुझे उनसे मिलवाया था, तब मैंने उनका नाम नहीं पूछा था।" यदि एम. वर्दुरिन ने इस मुहावरे का प्रयोग करते हुए एम. डी कैम्ब्रेमर का परिचय अपने साथी अतिथियों से कराया होता, तो दूसरे को बहुत बुरा लगता। लेकिन यह जानते हुए कि इसके विपरीत प्रक्रिया अपनाई जा रही थी, उन्होंने बिना किसी जोखिम के सौहार्दपूर्ण और विनम्र व्यवहार करना उचित समझा। कॉटार्ड

के साथ अपनी घनिष्ठता पर एम. वर्दुरिन का गर्व अब और भी बढ़ गया था, क्योंकि डॉक्टर एक प्रतिष्ठित प्रोफेसर बन चुके थे। लेकिन अब यह गर्व पहले जैसी सरल भाषा में व्यक्त नहीं होता था। तब, जब कॉटार्ड जनता के बीच लगभग अज्ञात थे, यदि आप एम. वर्दुरिन से उनकी पत्नी के चेहरे के तंत्रिका दर्द के बारे में बात करते, तो वे कहते, "कुछ नहीं किया जा सकता," ठीक उसी सरल आत्मसंतुष्टि के साथ जैसे वे लोग मानते हैं कि उनका हर परिचित प्रसिद्ध होगा, और उनके पारिवारिक गायन गुरु का नाम तो सभी जानते ही होंगे। "अगर उनका डॉक्टर कोई साधारण होता, तो शायद दूसरी राय ली जाती, लेकिन जब डॉक्टर का नाम कॉटार्ड हो" (जिस नाम का उच्चारण उन्होंने बुशार्ड या चारकोट की तरह किया) "तो बस अपरिहार्य को स्वीकार करना पड़ता है।" उलटी प्रक्रिया अपनाते हुए, यह जानते हुए कि एम. डी कैम्ब्रेमर ने प्रसिद्ध प्रोफेसर कॉटार्ड के बारे में ज़रूर सुना होगा, एम. वर्दुरिन ने सरल लहजे में कहा, "वह हमारे पारिवारिक डॉक्टर हैं, एक नेक इंसान जिन्हें हम बहुत मानते हैं और जो हमारे लिए अपनी जान तक दे सकते हैं; वह डॉक्टर नहीं, दोस्त हैं, मुझे नहीं लगता कि आपने उनके बारे में कभी सुना होगा या उनका नाम आपके लिए कुछ मायने रखता होगा, वैसे भी हमारे लिए तो वह एक बहुत अच्छे इंसान, एक बहुत प्यारे दोस्त, कॉटार्ड का नाम है।" यह नाम, जो उन्होंने विनम्रता से फुसफुसाते हुए कहा, एम. डी कैम्ब्रेमर को चौंका दिया, जिन्होंने सोचा कि उनके मेज़बान किसी और की बात कर रहे हैं। "कॉटार्ड? आपका मतलब प्रोफेसर कॉटार्ड से तो नहीं है?" उसी क्षण उक्त प्रोफेसर की आवाज़ सुनाई दी, जो खेल के एक अजीब मोड़ पर अपने कार्ड देखते हुए कह रहे थे: "यहीं पर ग्रीक ग्रीक से मिलता है।" "जी हाँ, बिलकुल, वह एक प्रोफेसर हैं," एम. वर्दुरिन ने कहा। "क्या! प्रोफेसर कॉटार्ड! आप कोई गलती तो नहीं कर रहे? – आपको पूरा यकीन है कि यह वही व्यक्ति हैं? जो रू डू बैक में रहते हैं?" "हाँ, उनका पता 43, रू डू बैक है। आप उन्हें जानते हैं?" "लेकिन प्रोफेसर कॉटार्ड को तो हर कोई जानता है। वह तो शीर्ष पर हैं! आप मुझसे यह भी पूछ सकते हैं कि क्या मैं बूफ़ डे सेंट-ब्लेज़ या कर्टोइस-सफ़िट को जानता हूँ। जब मैंने उन्हें बोलते सुना तो मुझे पता चल गया कि वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं, इसीलिए मैंने आपसे पूछने की हिम्मत की।" "चलिए, मैं क्या खेलूँ, ट्रम्प?" कॉटार्ड ने पूछा। फिर अचानक, एक ऐसी अशिष्टता के साथ जो वीरतापूर्ण परिस्थितियों में भी आपत्तिजनक होती, जैसे कोई सैनिक मृत्यु के प्रति अपनी घृणा व्यक्त

करने के लिए भद्दे शब्दों का प्रयोग करता है, लेकिन ताश के खेल जैसे सुरक्षित मनोरंजन में तो यह और भी मूर्खतापूर्ण हो गया, कॉटार्ड ने तुरुप का पत्ता खेलने का फैसला किया और गंभीर, आत्मघाती भाव धारण कर लिया। उसने अपनी जान जोखिम में डालने वाले लोगों की भाषा का प्रयोग करते हुए, अपना पत्ता ऐसे खेला मानो वह उसकी जान हो, और चिल्लाया: "यह रहा, और भाड़ में जाए!" यह सही पत्ता नहीं था, लेकिन उसे एक सांत्वना मिली। कमरे के बीचोंबीच, एक आरामदायक कुर्सी पर, श्रीमती कॉटार्ड, एक अच्छे भोजन के उस प्रभाव के आगे झुक गईं, जो उन्हें हमेशा अप्रतिरोध्य लगता था, और व्यर्थ प्रयासों के बाद भी गहरी और कोमल नींद में डूब गईं। वह चाहे बार-बार उठकर मुस्कुराने की कोशिश करे, चाहे अपनी ही मूर्खता पर या फिर किसी विनम्र बात का जवाब न मिलने के डर से, वह फिर से उस निर्मम और सुखद बीमारी के चंगुल में डूब जाती थी। शोर से भी ज़्यादा, जिस चीज़ ने उसे पल भर के लिए जगाया, वह थी वह नज़र (जिसे वह पत्नी के स्नेह में आँखें बंद होने पर भी देख सकती थी और पहले से ही जानती थी, क्योंकि यही दृश्य हर शाम घटता था और उसके सपनों में उस समय की तरह आता था जब उठना पड़ता था), वह नज़र जिससे प्रोफ़ेसर ने वहाँ मौजूद लोगों का ध्यान अपनी पत्नी की नींद की ओर खींचा था। पहले तो उसने बस उसकी तरफ देखा और मुस्कुराया, क्योंकि अगर एक डॉक्टर के तौर पर वह रात के खाने के बाद सो जाने की इस आदत को नापसंद करता था (या कम से कम बाद में झुंझलाहट का वैज्ञानिक कारण बताता था, लेकिन यह निश्चित नहीं है कि यही निर्णायक कारण था, क्योंकि इस बारे में उसके कई अलग-अलग विचार थे), तो एक सर्वशक्तिमान और चिढ़ाने वाले पति के रूप में, वह अपनी पत्नी को मूर्ख बनाने में आनंदित होता था, उसे पहले थोड़ा सा जगाता था, ताकि वह फिर से सो जाए और उसे उसे दोबारा जगाने का आनंद मिले।

इस समय तक श्रीमती कॉटार्ड गहरी नींद में सो रही थीं। "अरे, लियोन्टाइन, तुम खर्राटे ले रही हो," प्रोफेसर ने उन्हें पुकारा। "मैं श्रीमती स्वान की बात सुन रही हूँ, मेरी प्यारी," श्रीमती कॉटार्ड ने धीमी आवाज़ में उत्तर दिया और फिर से नींद में डूब गईं। "यह सरासर बकवास है," कॉटार्ड ने कहा, "वह अभी हमें बताएंगी कि वह सोई ही नहीं थीं। वह उन मरीजों की तरह हैं जो हमसे परामर्श करने आते हैं और ज़िद करते हैं कि वे कभी सोते ही नहीं।" "शायद वे कल्पना करते हैं," एम. डी कैम्ब्रेमर ने हंसते हुए कहा। लेकिन डॉक्टर को चिढ़ाने के साथ-

साथ खंडन करने में भी उतना ही आनंद आता था, और वे किसी भी कीमत पर किसी आम आदमी को अपने सामने चिकित्सा की बातें करने की अनुमति नहीं देते थे। "लोग कल्पना नहीं करते कि वे कभी सोते ही नहीं," उन्होंने हठधर्मी लहजे में कहा। "आह!" मार्क्विस ने सम्मानपूर्वक झुकते हुए उत्तर दिया, जैसा कि कॉटार्ड कभी किया करती थीं। “यह आसानी से देखा जा सकता है,” कॉटार्ड ने आगे कहा, “कि आपने मेरी तरह कभी भी ट्रियोनल की दो ग्रेन मात्रा भी बिना नींद लाए नहीं दी होगी।” “बिल्कुल सही, बिल्कुल सही,” मार्क्विस ने श्रेष्ठता का भाव दिखाते हुए हंसते हुए उत्तर दिया, “मैंने कभी ट्रियोनल या ऐसी कोई दवा नहीं ली है जो जल्द ही अपना असर खो देती है और पेट खराब कर देती है। जब कोई व्यक्ति मेरी तरह चैंटेपी के जंगल में पूरी रात शिकार करता है, तो मैं आपको विश्वास दिला सकता हूं कि उसे सोने के लिए ट्रियोनल की आवश्यकता नहीं होती।” “ऐसा तो मूर्ख ही कहते हैं,” प्रोफेसर ने उत्तर दिया। “ट्रियोनल अक्सर तंत्रिका तंत्र पर उल्लेखनीय प्रभाव डालता है। आपने ट्रियोनल का जिक्र किया, क्या आपको पता है कि यह क्या है?” “अच्छा... मैंने लोगों को कहते सुना है कि यह नींद लाने वाली दवा है।” “आप मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दे रहे हैं,” प्रोफेसर ने उत्तर दिया, जो सप्ताह में तीन बार संकाय में परीक्षकों के बोर्ड में बैठते थे। "मैं आपसे यह नहीं पूछ रहा कि इससे आपको नींद आती है या नहीं, बल्कि यह क्या है। क्या आप बता सकते हैं कि इसमें एमाइल और एथिल कितने प्रतिशत है?" "नहीं," एम. डी कैम्ब्रेमर ने शर्मिंदा होकर जवाब दिया। "मुझे तो एक अच्छा गिलास पुरानी ब्रांडी या 345 पोर्ट पसंद है।" "जो दस गुना ज़्यादा ज़हरीली हैं," प्रोफेसर ने बीच में ही टोकते हुए कहा। "ट्रियोनल की बात करें तो," एम. डी कैम्ब्रेमर ने आगे कहा, "मेरी पत्नी को इस तरह की चीज़ें पसंद हैं, बेहतर होगा कि आप उनसे इस बारे में बात करें।" "शायद उसे भी इसके बारे में उतना ही पता है जितना आपको। वैसे भी, अगर आपकी पत्नी सोने के लिए ट्रियोनॉल लेती है, तो आप देख सकते हैं कि मेरी पत्नी को इसकी ज़रूरत नहीं है। चलो, लियोन्टाइन, उठो, तुम एंकिलोज़ हो रही हो, क्या तुमने मुझे कभी खाने के बाद सोते देखा है? अगर तुम अभी से बूढ़ी औरत की तरह सोती रहोगी, तो साठ साल की उम्र में तुम्हारा क्या हाल होगा? तुम मोटी हो जाओगी, तुम रक्त संचार रोक रही हो। वह तो मेरी बात सुन भी नहीं रही है।" "ये खाने के बाद की छोटी-छोटी झपकी सेहत के लिए खराब होती हैं, है ना, डॉक्टर?" एम. डी कैम्ब्रेमर ने कॉटार्ड से अपना रिश्ता सुधारने की

कोशिश करते हुए कहा। "भारी भोजन के बाद व्यायाम करना चाहिए।" "बकवास!" डॉक्टर ने जवाब दिया। "हमने एक शांत लेटे हुए कुत्ते और एक दौड़ते-भागते कुत्ते के पेट से बराबर मात्रा में भोजन लिया है और पहले वाले में पाचन क्रिया ज़्यादा अच्छी होती है।" "तो फिर नींद ही पाचन क्रिया रोकती है।" "यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपका मतलब ग्रासनली पाचन, पेट पाचन या आंतों के पाचन से है; आपको ऐसी व्याख्याएँ देना व्यर्थ है जो आप समझ ही नहीं पाएँगी क्योंकि आपने कभी चिकित्सा का अध्ययन नहीं किया है। तो अब, लियोन्टाइन, जल्दी चलो, हमें जाना चाहिए।" यह सच नहीं था, क्योंकि डॉक्टर तो बस अपना खेल जारी रखने जा रहा था, लेकिन उसे उम्मीद थी कि इस तरह वह उस बहरी-गूंगी महिला की नींद को और भी कठोर तरीके से तोड़ देगा, जिसे वह अब तक दिए गए अपने विद्वतापूर्ण उपदेशों के बावजूद एक शब्द भी उत्तर नहीं दे पा रहा था। श्रीमती कॉटार्ड में नींद की अवस्था में भी जागते रहने का दृढ़ संकल्प बचा था या नहीं, या फिर इसलिए कि आरामकुर्सी उनके सिर को सहारा नहीं दे रही थी, वह खाली हवा में एक निर्जीव वस्तु की तरह यांत्रिक रूप से बाएँ से दाएँ और ऊपर से नीचे हिल रही थी, और श्रीमती कॉटार्ड, अपने हिलते हुए सिर के साथ, कभी संगीत सुनती हुई प्रतीत होती थीं, तो कभी मृत्यु की अंतिम पीड़ा में। जहाँ उनके पति की बढ़ती हुई कठोर नसीहतें बेअसर साबित हुईं, वहीं अपनी मूर्खता का उनका बोध सफल रहा। “मेरा बाथटब अच्छा और गर्म है,” उसने बुदबुदाते हुए कहा, “लेकिन शब्दकोश में पंख...” वह एकदम सीधी होकर बैठ गई। “ओह! हे भगवान, मैं कितनी मूर्ख हूँ। मैं क्या बकवास कर रही थी, मैं अपनी टोपी के बारे में सोच रही थी, मुझे यकीन है मैंने कुछ बेवकूफी भरी बात कह दी, एक मिनट में मुझे सो जाना चाहिए था, यह उस भयानक आग की वजह से है।” सब लोग हंसने लगे, क्योंकि कमरे में आग नहीं थी।*

[* सोडोम एट गोमोर्रे के फ्रेंच पाठ में, खंड II इस बिंदु पर समाप्त होता है।]

"आप मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं," श्रीमती कॉटार्ड ने खुद हंसते हुए कहा और अपने माथे पर हाथ रखकर, सम्मोहनकर्ता के हल्के स्पर्श और बाल संवारने वाली महिला के आत्मविश्वास के साथ, नींद के अंतिम निशान मिटाते हुए बोलीं, "मुझे प्रिय श्रीमती वर्दुरिन से विनम्रतापूर्वक क्षमा मांगनी चाहिए और उनसे सच बताने का अनुरोध करना चाहिए।" लेकिन उनकी मुस्कान तुरंत दुख भरी हो गई, क्योंकि प्रोफेसर, जो जानते थे कि उनकी पत्नी उन्हें प्रसन्न

करना चाहती है और इस डर से कांप रहे थे कि कहीं वह असफल न हो जाए, उन पर चिल्लाए थे: "आईने में खुद को देखो, तुम इतनी लाल हो जैसे तुम्हारे चेहरे पर मुहांसे निकल आए हों, तुम बिल्कुल एक बूढ़े किसान जैसी दिख रही हो।" "आप जानते हैं, वह आकर्षक हैं," श्रीमती ने कहा। वर्दुरिन ने कहा, "उनके चरित्र का एक बेहद मनोरंजक व्यंग्यात्मक पहलू है। और फिर, जब पूरे संकाय ने मेरे पति की उम्मीद छोड़ दी थी, तब उन्होंने उन्हें मृत्यु के मुंह से छुड़ाया। उन्होंने तीन रातें उनके बिस्तर के पास बिताईं, बिना लेटे। और इसलिए कॉटार्ड मेरे लिए, आप जानते हैं," उन्होंने गंभीर और लगभग धमकी भरे स्वर में कहा, अपने संगीतमय माथे पर हाथ रखते हुए, जो सफेद बालों से ढका हुआ था, मानो हम डॉक्टर पर हमला करना चाहते हों, "पवित्र हैं! वे मुझसे दुनिया में कुछ भी मांग सकते हैं! वैसे भी, मैं उन्हें डॉक्टर कॉटार्ड नहीं, डॉक्टर भगवान कहती हूँ! और ऐसा कहकर भी मैं उनकी निंदा कर रही हूँ, क्योंकि यह भगवान उन आपदाओं को दूर करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं जिनके लिए दूसरे जिम्मेदार होते हैं।" "एक तुरुप का पत्ता बजाओ," एम. डी चार्लस ने प्रसन्नता से मोरेल से कहा। "एक तुरुप का पत्ता, ये लो," वायलिन वादक ने कहा। “आपको पहले अपने राजा का ऐलान कर देना चाहिए था,” एम. डी चार्लस ने कहा, “आप खेल पर ध्यान नहीं दे रहे हैं, बल्कि इस बात पर ध्यान दे रहे हैं कि आप कितना अच्छा खेल रहे हैं!” “मेरे पास राजा है,” मोरेल ने कहा। “वह एक शानदार आदमी है,” प्रोफेसर ने जवाब दिया। “ऊपर उन छड़ियों का क्या मतलब है?” श्रीमती वर्दुरिन ने पूछा और एम. डी कैम्ब्रेमर का ध्यान मेंटलपीस के ऊपर खुदे हुए एक शानदार प्रतीक चिन्ह की ओर दिलाया। “क्या ये आपके प्रतीक चिन्ह हैं?” उन्होंने व्यंग्यपूर्ण तिरस्कार के साथ पूछा। “नहीं, ये हमारे नहीं हैं,” एम. डी कैम्ब्रेमर ने जवाब दिया। "हमारा प्रतीक चिन्ह पाँच पट्टियों वाला, लाल और लाल रंग की पट्टियों से बना है, जिसमें विपरीत दिशा में कई तिपतिया घासें हैं। नहीं, ये अर्राचेपेल परिवार का प्रतीक चिन्ह है, जो हमारे वंश के नहीं थे, लेकिन जिनसे हमें यह घर विरासत में मिला है, और हमारे वंश में किसी ने भी इसमें कोई बदलाव नहीं किया है। अर्राचेपेल (हमें बताया गया है कि पहले पेल्विलैन्स) लाल रंग के आधार में पाँच कटे हुए स्तंभों वाला प्रतीक चिन्ह धारण करते थे। जब उन्होंने फेटेर्न परिवार के साथ गठबंधन किया, तो उनका प्रतीक चिन्ह बदल गया, लेकिन सुनहरे रंग के आधार में बीस क्रॉस-कोटेड फिटची के भीतर एक कैंटन और दाएँ कोने में अर्माइन बना

रहा।" "यह तो उसके लिए एक और झटका है!" श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने बुदबुदाया। "मेरी परदादी का उपनाम डी'अर्राचेपेल या डी राचेपेल था, जैसा आप चाहें, क्योंकि पुराने चार्टर में दोनों ही रूप मिलते हैं," एम. डी कैम्ब्रेमर ने शर्म से लाल होते हुए कहा, क्योंकि तभी उन्हें वह विचार आया जिसके लिए उनकी पत्नी ने उन्हें श्रेय दिया था, और उन्हें डर था कि श्रीमती वर्दुरिन ने शायद उस भाषण को अपने लिए इस्तेमाल कर लिया हो जिसमें उनका कोई जिक्र नहीं था। इतिहास की किताबों में लिखा है कि ग्यारहवीं शताब्दी में, पहले अर्राचेपेल, मेस, जिनका नाम पेल्विलैन था, ने घेराबंदी युद्ध में, टीलों को तोड़ने में विशेष दक्षता दिखाई। इसी से उन्हें अर्राचेपेल नाम मिला, जिससे वे सम्मानित हुए, और वे टीले जो सदियों से उनके हथियारों में मौजूद हैं। ये वे टीले हैं जिन्हें किलेबंदी को और अधिक अभेद्य बनाने के लिए, उनके सामने जमीन में गाड़ दिया जाता था और फिर उन्हें अगल-बगल से जोड़ दिया जाता था। इन्हें आपने बिल्कुल सही कहा है कि ये छड़ें हैं, हालांकि इनका हमारे लाफोंटेन की तैरती हुई छड़ों से कोई लेना-देना नहीं था। क्योंकि माना जाता था कि ये गढ़ को अभेद्य बना देती हैं। बेशक, हमारी आधुनिक तोपों के सामने तो ये हंसी का पात्र बन जाती हैं। लेकिन आपको यह ध्यान रखना होगा कि मैं ग्यारहवीं शताब्दी की बात कर रहा हूँ। "यह सब कुछ पुराना हो चुका है," श्रीमती वर्दुरिन ने कहा, "लेकिन छोटे घंटाघर की अपनी एक अलग पहचान है।" कॉटार्ड ने कहा, "तुम्हारे पास तो... तुरलुतुतु की किस्मत है," यह शब्द उन्होंने मोलियर के शब्द का प्रयोग करने से बचने के लिए खुशी-खुशी दोहराया। "क्या तुम जानते हो कि हीरों के राजा को सेना से क्यों निकाल दिया गया था?" मोरेल, जो सैन्य सेवा से थक चुका था, बोला, "मुझे उसकी जगह होने में कोई आपत्ति नहीं होगी।" एम. डी चार्लस ने कहा, "अरे! कितना बुरा देशभक्त है!" और वह वायलिन वादक का कान खींचने से खुद को रोक नहीं पाया। कॉटार्ड ने अपना मज़ाक जारी रखते हुए कहा, "नहीं, तुम नहीं जानते कि हीरों के राजा को सेना से क्यों निकाल दिया गया था, क्योंकि उसकी एक ही आँख है।" एम. डी कैम्ब्रेमर ने कॉटार्ड को यह दिखाने के लिए कहा कि वह उसे पहचानता है, "आप मुश्किल में हैं, डॉक्टर।" एम. डी चार्लस ने मासूमियत से बीच में टोकते हुए कहा, "यह युवक अद्भुत है। वह भगवान की तरह वायलिन बजाता है।" यह टिप्पणी डॉक्टर को पसंद नहीं आई और उन्होंने जवाब दिया, "सुधार करने में कभी देर नहीं होती। जो अंत में हँसता है, वही सबसे देर तक हँसता है।" "क्वीन, ऐस," भाग्य

का आशीर्वाद पाकर मोरेल ने विजयी भाव से घोषणा की। डॉक्टर ने अपना सिर झुका लिया, मानो इस सौभाग्य को नकारने में असमर्थ हों, और मंत्रमुग्ध होकर स्वीकार किया: "यह बहुत अच्छा है।" "हमें एम. डी चार्लस से मिलकर बहुत खुशी हुई," श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने श्रीमती वर्दुरिन से कहा। "क्या आप उनसे पहले कभी नहीं मिली थीं? वे बहुत अच्छे हैं, वे असाधारण हैं, वे एक खास दौर के हैं" (उन्हें यह बताना मुश्किल होता कि किस दौर के), श्रीमती वर्दुरिन ने एक पारखी, एक पारखी और एक मेजबान की संतुष्ट मुस्कान के साथ उत्तर दिया। श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने मुझसे पूछा कि क्या मैं सेंट-लूप के साथ फेटेर्न आ रही हूँ। जब मैंने घर से दूर जाने वाले ओक के पेड़ों के नीचे चाँद को नारंगी लालटेन की तरह चमकते देखा, तो मैं प्रशंसा से भर उठी। "यह तो कुछ भी नहीं है, थोड़ी देर में, जब चाँद और ऊपर चढ़ जाएगा और घाटी रोशन हो जाएगी, तो यह हज़ार गुना बेहतर होगा।" "क्या आप इस इलाके में कुछ दिन रुकेंगी, महोदया?" एम. डी कैम्ब्रेमर ने श्रीमती कॉटार्ड से पूछा, जिसका अर्थ अस्पष्ट रूप से आमंत्रित करना था और उन्होंने फिलहाल कोई और स्पष्ट वादा करने से परहेज किया। "जी हाँ, महोदय, मैं बच्चों के लिए इस वार्षिक यात्रा को बहुत महत्वपूर्ण मानती हूँ। आप चाहे जो भी कहें, उन्हें ताज़ी हवा चाहिए। संकाय मुझे विची भेजना चाहता था; लेकिन वहाँ बहुत उमस है, और जब मेरे ये बड़े बच्चे थोड़े और बड़े हो जाएँगे, तब मैं अपने पेट का ख्याल रख सकती हूँ। इसके अलावा, प्रोफेसर को अपनी सभी परीक्षाओं के कारण हमेशा काम में व्यस्त रहना पड़ता है, और गर्म मौसम उन्हें बुरी तरह थका देता है। मुझे लगता है कि पूरे साल इस तरह भागदौड़ करने के बाद किसी को भी पूरी तरह आराम की ज़रूरत होती है। चाहे कुछ भी हो जाए, हम कम से कम एक महीना और रुकेंगे।" "अहा! तो फिर मिलेंगे।" "इसके अलावा, मुझे यहाँ रुकना और भी ज़रूरी होगा क्योंकि मेरे पति को सवॉय जाना है, और वे यहाँ अगले पखवाड़े तक नहीं ठहरेंगे।" "मुझे घाटी का नज़ारा समुद्र के नज़ारे से भी ज़्यादा पसंद है," श्रीमती वर्दुरिन ने आगे कहा। "आपकी यात्रा के लिए यह रात बहुत अच्छी गुज़रेगी।" "अगर आप आज रात बालबेक वापस जाने के लिए पूरी तरह से दृढ़ हैं, तो हमें पहले पता कर लेना चाहिए कि गाड़ियाँ तैयार हैं या नहीं," श्रीमती वर्दुरिन ने मुझसे कहा, "क्योंकि मुझे इसकी कोई ज़रूरत नहीं दिखती। हम आपको कल सुबह ले जा सकते हैं। मौसम निश्चित रूप से अच्छा होगा। सड़कें बहुत बढ़िया हैं।" मैंने कहा कि यह असंभव है। "लेकिन वैसे भी अभी समय नहीं

हुआ है," मालकिन ने विरोध किया। "उन्हें अकेला छोड़ दो, उनके पास बहुत समय है। स्टेशन पर एक घंटा इंतज़ार करने के लिए पहुँचने से उन्हें क्या फ़ायदा होगा। वे यहाँ ज़्यादा खुश हैं। और तुम, मेरे युवा मोज़ार्ट," उन्होंने मोरेल से कहा, श्रीमती डी चार्लस को सीधे संबोधित करने की हिम्मत न करते हुए, "क्या तुम रात रुकोगे? हमारे पास समुद्र के सामने कुछ अच्छे कमरे हैं।" “नहीं, वह नहीं कर सकता,” एम. डी चार्लस ने उस तल्लीन ताश खेलने वाले की ओर से उत्तर दिया जिसने सुना ही नहीं था। “उसके पास केवल आधी रात तक का ही पास है। उसे एक अच्छे छोटे बच्चे की तरह आज्ञाकारी और सलीके से बिस्तर पर वापस जाना चाहिए,” उन्होंने विनम्र, सलीकेदार और दृढ़ स्वर में कहा, मानो उन्हें इस पवित्र तुलना का प्रयोग करने में और मोरेल के किसी भी संदर्भ पर अपनी आवाज़ को ठहरने देने में, और (उंगलियों के विफल होने पर) शब्दों से उसे छूने में, जो उसके व्यक्तित्व का अन्वेषण करते प्रतीत होते थे, एक प्रकार का व्यंजक आनंद मिल रहा हो।

ब्रिचोट ने मुझे जो उपदेश दिया था, उससे एम. डी कैम्ब्रेमर ने यह निष्कर्ष निकाला कि मैं एक 'ड्रेफूसार्ड' (ड्रेफूस का समर्थक) हूँ। चूँकि वे स्वयं ड्रेफूस के घोर विरोधी थे, इसलिए एक विरोधी के प्रति शिष्टाचार दिखाते हुए, उन्होंने एक यहूदी कर्नल की तारीफ़ों के पुल बाँधना शुरू कर दिया। वह कर्नल शेव्रेग्नी के एक चचेरे भाई के साथ हमेशा बहुत अच्छा बर्ताव करता था और उसने उस भाई को वह तरक्की दिलवाई थी, जिसका वह हकदार था। एम. डी कैम्ब्रेमर ने कहा, "और मेरे चचेरे भाई के विचार तो इसके ठीक विपरीत थे।" उन्होंने यह तो नहीं बताया कि वे विचार क्या थे, लेकिन मुझे लगा कि वे विचार उतने ही पुराने और बेढंगे थे, जितना कि उनका अपना चेहरा—ऐसे विचार, जिन्हें कुछ छोटे कस्बों के कुछ परिवारों ने शायद बहुत लंबे समय से अपने मन में पाल रखा होगा। एम. डी कैम्ब्रेमर ने आखिर में कहा, "खैर, आप जानते हैं, मैं तो इसे सचमुच 'बढ़िया' (fine) कहूँगा!" यह सच है कि वे यहाँ 'बढ़िया' शब्द का इस्तेमाल उस कलात्मक अर्थ में नहीं कर रहे थे, जिस अर्थ में उनकी पत्नी और माँ के मन में अलग-अलग कलाकृतियों का ख्याल आता—बेशक, वे कलाकृतियाँ ही होतीं। एम. डी कैम्ब्रेमर अक्सर इस शब्द का इस्तेमाल तब करते थे, जब, उदाहरण के लिए, वे किसी दुबले-पतले व्यक्ति को बधाई दे रहे होते थे, जिसका वज़न थोड़ा बढ़ गया हो। "क्या!

तुमने दो महीनों में आधा 'स्टोन' (लगभग 6.4 किलो) वज़न बढ़ा लिया? अरे वाह, यह तो बहुत 'बढ़िया' है!" मेज़ पर जलपान की व्यवस्था थी। श्रीमती वर्दुरिन ने सज्जनों को आमंत्रित किया कि वे जाकर अपनी पसंद का कोई भी पेय चुन लें। एम. डी चार्लस गए, अपना पेय पिया और तुरंत ताश की मेज़ के पास अपनी सीट पर लौट आए, जहाँ से वे फिर हिले भी नहीं। श्रीमती वर्दुरिन ने उनसे पूछा, "क्या आपने मेरा 'ऑरेंज-एड' (संतरे का शरबत) चखा?" इस पर एम. डी चार्लस ने एक मनमोहक मुस्कान के साथ—और एक ऐसी साफ़ व मधुर आवाज़ में, जिसका इस्तेमाल वे शायद ही कभी करते थे—तथा अपने होठों और शरीर की अनगिनत मुद्राओं के साथ जवाब दिया, "नहीं, मैंने उसके बगल वाला पेय पसंद किया। मुझे लगता है, वह स्ट्रॉबेरी का रस था; वह बहुत ही स्वादिष्ट था।" यह एक दिलचस्प बात है कि कुछ खास तरह के गुप्त कार्यों का बाहरी प्रभाव, बोलने या हाव-भाव दिखाने के एक ऐसे तरीके के रूप में सामने आता है, जो उन कार्यों को उजागर कर देता है। यदि कोई सज्जन 'इमैकुलेट कंसेप्शन' (ईसा मसीह के पवित्र गर्भधारण), या ड्रेफूस की बेगुनाही, या अनेक लोकों (ग्रहों) के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं या नहीं रखते, और वे अपनी राय को अपने तक ही सीमित रखना चाहते हैं, तो आपको उनकी आवाज़ या उनके हाव-भाव में ऐसा कुछ भी नहीं मिलेगा, जिससे आप उनके विचारों को भाँप सकें। लेकिन जब M. de Charlus को उस तीखी आवाज़ में, उस मुस्कान के साथ और अपने हाथ लहराते हुए यह कहते सुना गया: "नहीं, मुझे इसका पड़ोसी, स्ट्रॉबेरी का जूस ज़्यादा पसंद आया," तो कोई भी पूरे यकीन के साथ कह सकता था: "लो, इसे तो 'मज़बूत लिंग' (पुरुषों) से ही प्यार है," ठीक उसी यकीन के साथ जिससे कोई जज किसी ऐसे अपराधी को सज़ा सुना सकता है जिसने अपना गुनाह कबूल न किया हो; या कोई डॉक्टर किसी ऐसे मरीज़ को, जो 'जनरल पैरालिसिस' (लकवे) से पीड़ित हो और शायद खुद अपनी बीमारी से अनजान हो, लेकिन बोलने में कोई ऐसी गलती कर दे जिससे डॉक्टर यह अंदाज़ा लगा ले कि वह तीन साल के अंदर मर जाएगा। शायद जो लोग किसी आदमी के यह कहने के तरीके से कि: "नहीं, मुझे इसका पड़ोसी, स्ट्रॉबेरी का जूस ज़्यादा पसंद आया," यह नतीजा निकालते हैं कि उसे 'अप्राकृतिक' कहे जाने वाले किस्म का प्यार है, उन्हें ऐसी किसी वैज्ञानिक जानकारी की ज़रूरत नहीं होती। लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि उस राज़ को ज़ाहिर करने वाले संकेत और उस राज़ के बीच एक ज़्यादा सीधा रिश्ता होता है। खुद से

सीधे-सीधे शब्दों में कुछ कहे बिना भी, इंसान को यह महसूस होता है कि जवाब देने वाली कोई कोमल, मुस्कुराती हुई महिला है; और वह महिला इसलिए बनावटी लगती है क्योंकि वह एक पुरुष होने का नाटक कर रही होती है, और हमें पुरुषों में ऐसे हाव-भाव देखने की आदत नहीं होती। और शायद यह सोचना ज़्यादा सुखद है कि न जाने कितने सालों से, कुछ 'परी जैसी' महिलाओं को गलती से 'पुरुष लिंग' में शामिल कर लिया गया है; जहाँ, एक तरह के 'निर्वासन' में रहते हुए, वे उन पुरुषों की ओर अपने पंख फड़फड़ाती रहती हैं जिनसे उन्हें शारीरिक तौर पर घिन आती है, फिर भी वे एक 'ड्राइंग-रूम' को सजाना और 'कमरों का माहौल' बनाना बखूबी जानती हैं। M. de Charlus को इस बात से ज़रा भी फ़र्क नहीं पड़ा कि Mme. Verdurin खड़ी थीं; वे अपनी आरामकुर्सी में ही जमे रहे ताकि Morel के ज़्यादा करीब रह सकें। Mme. Verdurin ने Baron से कहा: "क्या आपको यह एक गुनाह नहीं लगता कि वह इंसान, जो अपनी वायलिन की धुन से हमें मंत्रमुग्ध कर सकता था, वह वहाँ ताश की मेज़ पर बैठा है? जबकि वायलिन तो कोई भी बजा सकता है!" M. de Charlus ने ताश के खेल पर अपनी नज़र जमाए रखते हुए कहा: "वह ताश भी अच्छा खेलता है, वह हर काम अच्छे से करता है, वह बहुत ही होशियार है," ताकि वह Morel को सही सलाह दे सकें। हालाँकि, Mme. Verdurin के सम्मान में अपनी कुर्सी से न उठने की उनकी एकमात्र वजह सिर्फ़ यही नहीं थी। उन्होंने सामाजिक धारणाओं का एक अनोखा मेल बनाया था—एक तरफ़ वे एक बड़े रईस थे, तो दूसरी तरफ़ कला के शौकीन। अपने समाज के किसी भी आम आदमी की तरह सिर्फ़ शिष्टता दिखाने के बजाय, वे सेंट-साइमन की शैली में अपने लिए एक तरह का 'जीवंत चित्र' (tableau-vivant) रच लेते थे। और उस पल, वे 'मारेचल डी'उक्सेल्स' का अभिनय करके अपना मनोरंजन कर रहे थे—एक ऐसा व्यक्ति जिसमें उन्हें अन्य पहलुओं से भी दिलचस्पी थी, और जिसके बारे में कहा जाता था कि उसे अपनी शान का इतना गुमान था कि वह दरबार के सबसे प्रतिष्ठित लोगों के सामने भी, आलस का बहाना बनाकर, अपनी कुर्सी पर ही बैठा रहता था। "वैसे, चार्लस," मैडम वर्दुरिन ने कहा—जो अब उनके साथ कुछ ज़्यादा ही घुलने-मिलने लगी थीं—"क्या आपके इलाके (Faubourg) में कोई ऐसा बूढ़ा रईस है जिसकी दौलत-शोहरत अब खत्म हो चुकी हो, और जो मेरे यहाँ दरबान (porter) का काम करने को तैयार हो?" "क्यों नहीं... ज़रूर," एम. डी चार्लस ने एक सौम्य मुस्कान के साथ जवाब

दिया, "लेकिन मैं आपको ऐसा करने की सलाह नहीं दूँगा।" "क्यों नहीं?" "मुझे आपकी ही फ़िक्र होगी—मुझे डर है कि आपके जो 'खास' मेहमान आपसे मिलने आएँगे, वे दरबान की कोठरी (lodge) तक पहुँचकर वहीं रुक जाएँगे और उससे आगे बढ़ ही नहीं पाएँगे।" यह उन दोनों के बीच हुई पहली छोटी-मोटी तकरार थी। मैडम वर्दुरिन ने शायद ही इस बात पर कोई खास ध्यान दिया हो। अफ़सोस की बात है कि पेरिस में आगे चलकर उनके बीच ऐसी और भी कई तकरारें होने वाली थीं। एम. डी चार्लस वह अपनी कुर्सी से चिपका रहा। इसके अलावा, वह अपनी हल्की सी मुस्कान को रोक नहीं पाया, यह देखकर कि कुलीन वर्ग की प्रतिष्ठा और मध्यम वर्ग की कायरता के बारे में उसके पसंदीदा सिद्धांत, मैडम वेरडुरिन के इतनी आसानी से मान जाने से कैसे सही साबित हो गए थे। मालकिन को बैरन के इस रवैये से ज़रा भी हैरानी नहीं हुई, और अगर वह उसे छोड़कर चली गई, तो सिर्फ इसलिए क्योंकि वह मुझे मिस्टर डी कैम्ब्रेमर के साथ व्यस्त देखकर परेशान हो गई थी। लेकिन सबसे पहले, वह मिस्टर डी चार्लस और काउंटेस मोले के बीच के रिश्तों का रहस्य सुलझाना चाहती थी। "आपने मुझे बताया था कि आप मैडम डी मोले को जानते हैं। क्या इसका मतलब यह है कि आप वहाँ जाते हैं?" उसने पूछा, 'वहाँ जाना' शब्दों को यह अर्थ देते हुए कि वहाँ उसका स्वागत होता है, या उस महिला से उसे वहाँ जाकर मिलने की अनुमति मिली हुई है। मिस्टर डी चार्लस ने तिरस्कार भरे लहजे में, बनावटी सटीकता के साथ और एक लयबद्ध स्वर में जवाब दिया: "हाँ, कभी-कभी।" इस 'कभी-कभी' शब्द ने मैडम वेरडुरिन के मन में संदेह पैदा कर दिया, जिसने पूछा: "क्या आप कभी वहाँ ड्यूक डी गुएरमांटेस से मिले हैं?" "आह! वह मुझे याद नहीं।" "ओह!" मैडम वेरडुरिन ने कहा, "क्या आप ड्यूक डी गुएरमांटेस को नहीं जानते?" "और मैं उसे कैसे नहीं जानूंगा?" मिस्टर डी चार्लस ने जवाब दिया, उसके होंठ मुस्कान में मुड़ गए। यह मुस्कान व्यंग्यात्मक थी; लेकिन चूंकि बैरन को अपने सोने के दांत के दिख जाने का डर था, इसलिए उसने अपने होंठों को विपरीत दिशा में मोड़कर उसे रोक लिया, जिससे बनी हुई टेढ़ी-मेढ़ी रेखा एक नेक-दिल मुस्कान जैसी लगने लगी। "आप ऐसा क्यों कहते हैं: 'मैं उसे कैसे नहीं जानूंगा?'" "क्योंकि वह मेरा भाई है," मिस्टर डी चार्लस ने लापरवाही से कहा, जिससे मैडम वेरडुरिन हक्का-बक्का रह गई और इस अनिश्चितता में डूब गई कि क्या उसका मेहमान उसका मज़ाक उड़ा रहा है, या वह कोई नाजायज़ बेटा है, या फिर किसी दूसरी शादी से हुआ

बेटा है। यह विचार कि ड्यूक डी गुएरमांटेस के भाई का नाम बैरन डी चार्लस हो सकता है, उसके दिमाग में कभी आया ही नहीं। वह मेरी तरफ लपकी। "मैंने अभी-अभी M. de Cambremer को आपको रात के खाने पर बुलाते हुए सुना। इसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है, आप समझते हैं। लेकिन आपकी अपनी भलाई के लिए, मुझे उम्मीद है कि आप वहाँ नहीं जाएँगे। एक तो, वह जगह बोर करने वाले लोगों से भरी पड़ी है। ओह! अगर आपको ऐसे देहाती काउंट और मार्किस के साथ खाना पसंद है जिन्हें कोई नहीं जानता, तो आपकी यह इच्छा जी भर के पूरी हो जाएगी।" "मुझे लगता है कि मुझे वहाँ एक-दो बार जाना ही पड़ेगा। हालाँकि, मैं पूरी तरह से आज़ाद नहीं हूँ, क्योंकि मेरी एक छोटी चचेरी बहन है जिसे मैं अकेला नहीं छोड़ सकता" (मुझे लगा कि इस मनगढ़ंत रिश्ते की वजह से अल्बर्टिन को अपने साथ ले जाना मेरे लिए ज़्यादा आसान हो गया था)। "लेकिन जहाँ तक Cambremers की बात है, क्योंकि मेरा उनसे परिचय हो चुका है..." "आप वही करें जो आपको अच्छा लगे। एक बात मैं आपको बता सकती हूँ: वह जगह सेहत के लिए बहुत खराब है; जब आपको निमोनिया हो जाएगा, या कोई बढ़िया-सा पुराना गठिया हो जाएगा, तो आप ज़्यादा बेहतर महसूस करेंगे!" "लेकिन क्या वह जगह खुद बहुत सुंदर नहीं है?" "हम्म... हाँ... अगर आपको पसंद हो तो। जहाँ तक मेरी बात है, मैं साफ-साफ कहती हूँ कि मुझे इस घाटी के ऊपर से यहाँ का नज़ारा सौ गुना ज़्यादा पसंद है। सबसे पहले तो, अगर वे हमें पैसे भी देते, तब भी मैं वह दूसरा घर नहीं लेती, क्योंकि समुद्र की हवा M. Verdurin के लिए जानलेवा है। अगर आपकी चचेरी बहन को नसों की कोई भी तकलीफ़ है... लेकिन आपकी नसें तो खुद ही खराब हैं, मुझे लगता है कि आपको दम घुटने के दौरे पड़ते हैं। ठीक है! आप खुद देख लीजिएगा। वहाँ एक बार जाइए, उसके बाद एक हफ़्ते तक आपको नींद नहीं आएगी; लेकिन यह मेरा काम नहीं है।" और इस बात की परवाह किए बिना कि अभी-अभी उसने जो कहा था, उससे यह बात कितनी अलग थी: "अगर तुम्हें घर देखना अच्छा लगेगा—जो कि बुरा नहीं है (हालाँकि 'सुंदर' कहना शायद कुछ ज़्यादा ही होगा)—फिर भी अपनी पुरानी खाई और पुराने पुल की वजह से यह काफ़ी दिलचस्प है; और चूँकि मुझे खुद को थोड़ा कष्ट देकर वहाँ एक बार खाना खाना ही पड़ेगा, तो ठीक है, तुम उसी दिन आ जाना। मैं अपने पूरे छोटे से ग्रुप को साथ लाने की कोशिश करूँगी, तब काफ़ी मज़ा आएगा। परसों हम गाड़ी से हरम्बोविल जा रहे हैं। वहाँ का

सफ़र बहुत शानदार है, और साइडर भी बहुत स्वादिष्ट है। तुम भी हमारे साथ चलो। ब्रिशो, तुम भी आना। और तुम भी, स्की। इस तरह हमारी एक अच्छी-खासी पार्टी बन जाएगी—जो कि असल में, मेरे पति ने शायद पहले से ही तय कर रखी होगी। मुझे नहीं पता कि उन्होंने किस-किस को बुलाया है; मॉन्सियर डी चार्लस, क्या आप भी उनमें से एक हैं?" बैरन, जिसने उसकी पूरी बात नहीं सुनी थी और जिसे यह भी नहीं पता था कि वह हरम्बोविल की सैर के बारे में बात कर रही थी, यह सुनकर चौंक गया। "कितना अजीब सवाल है," उसने मज़ाकिया लहजे में बुदबुदाते हुए कहा—जिससे मैडम वर्दुरिन को काफ़ी बुरा लगा। "खैर," उसने मुझसे कहा, "इससे पहले कि तुम कैम्ब्रेमर्स के साथ रात का खाना खाओ, क्यों न उसे यहाँ ले आओ —तुम्हारी चचेरी बहन को? क्या उसे बातचीत करना और समझदार लोग पसंद हैं? क्या वह मिलनसार है? हाँ? बहुत बढ़िया, तो फिर। उसे अपने साथ ले आना। कैम्ब्रेमर्स ही दुनिया में अकेले लोग नहीं हैं। मैं समझ सकती हूँ कि वे उसे बुलाकर खुश होंगे; उन्हें शायद मेहमान मिलना मुश्किल होता होगा। यहाँ उसे ताज़ी हवा और बहुत सारे समझदार लोगों का साथ मिलेगा। वैसे भी, मुझे पूरा भरोसा है कि अगले बुधवार को तुम मुझे निराश नहीं करोगे। मैंने सुना था कि तुम रिवेबेल में अपनी चचेरी बहन, एम. डी शार्लस, और—पता नहीं और कौन था —के साथ एक टी-पार्टी कर रहे थे। तुम्हें उन सभी को यहाँ लाने का इंतज़ाम करना होगा; अगर तुम सब एक साथ आओ तो बहुत अच्छा लगेगा। यहाँ पहुँचना दुनिया का सबसे आसान काम है, सड़कें बहुत प्यारी हैं; अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें लाने के लिए किसी को भेज सकती हूँ। मुझे समझ नहीं आता कि तुम्हें रिवेबेल में ऐसा क्या पसंद आता है; वहाँ तो मच्छरों का आतंक है। शायद तुम वहाँ के 'रॉक-केक' की शोहरत के बारे में सोच रहे हो। मेरा रसोइया उनसे कहीं ज़्यादा बढ़िया केक बनाता है। मैं तुम्हें वे केक खिला सकती हूँ,"

"ये लो, नॉर्मन रॉक-केक—एकदम असली चीज़—और शॉर्टब्रेड; मुझे और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं। आह! अगर तुम्हें वो घटिया चीज़ें पसंद हैं जो वे रिवेबेल में देते हैं, तो वो मैं तुम्हें नहीं दूँगी; मैं अपने मेहमानों को ज़हर नहीं देती, जनाब। और अगर मैं ऐसा करना भी चाहूँ, तो मेरा रसोइया ऐसी घिनौनी चीज़ें बनाने से साफ़ मना कर देगा और मेरी नौकरी छोड़ देगा। वो रॉक-केक जो तुम्हें वहाँ नीचे मिलते हैं, तुम बता ही नहीं सकते कि वे किस चीज़ से बने हैं। मैं

एक बेचारी लड़की को जानती थी जिसे उन्हें खाने से पेरिटोनाइटिस हो गया था, और तीन ही दिनों में उसकी जान चली गई। वह सिर्फ़ सत्रह साल की थी। उसकी बेचारी माँ के लिए यह बहुत दुख की बात थी," मैडम वेर्डुरिन ने उदास लहजे में कहा; उनके माथे की लकीरों में अनुभव और दुख की गहरी छाप साफ़ झलक रही थी। "खैर, अगर तुम्हें अपनी जेब कटवाना और पैसे यूँ ही पानी की तरह बहाना पसंद है, तो जाओ और रिवेबेल में चाय पियो। लेकिन मैं तुमसे एक गुज़ारिश करती हूँ—यह एक बहुत ही निजी काम है जो मैं तुम्हें सौंप रही हूँ—ठीक छह बजे, अपनी पूरी टोली को यहाँ ले आना; उन्हें अकेले इधर-उधर भटकने मत देना। तुम जिसे चाहो, उसे साथ ला सकते हो। मैं यह बात हर किसी से नहीं कहती। लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि तुम्हारे दोस्त अच्छे लोग हैं; मैं पहली नज़र में ही समझ गई कि हम एक-दूसरे को अच्छी तरह समझते हैं। हमारे इस छोटे से खास ग्रुप के अलावा, बुधवार को कुछ और भी बहुत ही दिलचस्प लोग आने वाले हैं। तुम शायद छोटी मैडम डी लॉन्गपॉन्ट को नहीं जानते। वह बहुत ही प्यारी और हाज़िरजवाब हैं; तुम्हें पता चलेगा कि उनमें ज़रा भी दिखावा या घमंड नहीं है—तुम्हें वह बहुत पसंद आएँगी। और वह अपने साथ दोस्तों की एक पूरी टोली भी लाने वाली हैं," मैडम वेर्डुरिन ने यह दिखाने के लिए कहा कि ऐसा करना ही सही रहेगा, और दूसरे का उदाहरण देकर मुझे भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया। "हम देखेंगे कि किसका असर ज़्यादा है और कौन ज़्यादा लोगों को ला पाता है—बार्ब डी लॉन्गपॉन्ट या तुम। और हाँ, मुझे लगता है कि कोई बर्गोट को भी साथ लाने वाला है," उन्होंने कुछ अनमने से अंदाज़ में कहा। दरअसल, उस सुबह अखबारों में एक खबर छपी थी कि उस महान लेखक की सेहत को लेकर गंभीर चिंता बनी हुई है, जिसके चलते उनसे मुलाक़ात होने की संभावना बहुत ही कम लग रही थी। "खैर, तुम देखोगे कि यह मेरा अब तक का सबसे कामयाब बुधवार होगा; मुझे अपने यहाँ कोई भी बोर करने वाली औरत नहीं चाहिए।" आप इस शाम से अंदाज़ा मत लगाइए, यह पूरी तरह से बेकार रही। शिष्टाचार दिखाने की कोशिश मत कीजिए; आप मुझसे ज़्यादा बोर नहीं हुए होंगे—मुझे तो खुद यह बहुत ही उबाऊ लगी। आपको पता है, हर शाम आज रात जैसी नहीं होगी! मैं कैम्ब्रेमर्स की बात नहीं कर रही हूँ—वे तो बिल्कुल ही अजीब लोग हैं—लेकिन मैं समाज के ऐसे लोगों को भी जानती हूँ जिन्हें बहुत ही मिलनसार माना जाता था; खैर, मेरे छोटे से दायरे के लोगों के मुकाबले तो वे कहीं टिकते ही नहीं थे। मैंने आपको यह

कहते हुए सुना था कि आपको स्वान बहुत होशियार लगता है। मुझे कहना पड़ेगा कि मेरी नज़र में उसकी होशियारी को कुछ ज़्यादा ही बढ़ा-चढ़ाकर बताया जाता है। लेकिन उस आदमी के चरित्र की बात छोड़ दें—जो मुझे हमेशा से ही मूल रूप से अरुचिकर, मक्कार और धोखेबाज़ लगा है—तो भी मैंने उसे बुधवार की रातों को अक्सर अपने यहाँ खाने पर बुलाया है। खैर, आप दूसरों से भी पूछ सकते हैं—यहाँ तक कि ब्रिशो के मुकाबले भी (जो कोई बहुत कमाल का आदमी तो नहीं है, बस एक अच्छा सहायक शिक्षक है जिसे मैंने 'इंस्टीट्यूट' में नौकरी दिलवाई थी), स्वान तो कहीं भी नहीं टिकता था। वह कितना नीरस था! और जब मैंने इसके विपरीत अपनी राय ज़ाहिर की, तो वह बोली: "यही सच है। मैं आपके सामने उसके खिलाफ एक शब्द भी नहीं कहना चाहती, क्योंकि वह आपका दोस्त था—सच कहूँ तो वह आपको बहुत पसंद करता था और उसने मेरे सामने आपकी तारीफ़ बहुत ही प्यारे अंदाज़ में की थी—लेकिन यहाँ मौजूद दूसरों से पूछकर देखिए कि क्या उसने हमारे खाने के दौरान कभी कोई दिलचस्प बात कही थी? आखिर यही तो किसी भी इंसान को परखने की सबसे बड़ी कसौटी है। खैर, मुझे नहीं पता कि ऐसा क्यों था, लेकिन मेरे घर पर स्वान कभी भी खुलकर सामने नहीं आ पाता था—उससे कोई भी काम की बात नहीं निकल पाती थी। और मज़े की बात यह है कि उसमें जो कुछ भी थोड़ा-बहुत हुनर था, वह उसने यहीं से सीखा था।" मैंने उसे यकीन दिलाया कि वह बहुत ही बुद्धिमान व्यक्ति था। "नहीं, आपको ऐसा सिर्फ इसलिए लगता है क्योंकि आप उसे उतने लंबे समय से नहीं जानते जितना मैं जानती हूँ। उसकी असलियत बहुत जल्द ही सामने आ जाती थी। मैं तो हमेशा उससे मिलकर बोर होकर मर जाती थी।" (जिसका मतलब यह निकाला जा सकता है: "वह ला ट्रेमोइल्स और गुएरमांटेस जैसे बड़े घरानों में जाता था, और उसे पता था कि मैं वहाँ नहीं जा पाती।") "और मैं हर चीज़ बर्दाश्त कर सकती हूँ—सिवाय बोर होने के।" "यह मैं न तो बर्दाश्त कर सकती हूँ और न ही करूँगी!" बोरियत के प्रति उनका डर अब वह वजह बन गया था, जिस पर Mme. Verdurin अपने छोटे से समूह की बनावट को समझाने के लिए निर्भर रहती थीं। वह अभी तक डचेस (कुलीन महिलाओं) की मेहमाननवाज़ी नहीं करती थीं, क्योंकि वह बोरियत को सहने में असमर्थ थीं; ठीक वैसे ही, जैसे वह समुद्री बीमारी (sea-sickness) के कारण समुद्री यात्रा पर नहीं जा पाती थीं। मैंने मन ही मन सोचा कि Mme. Verdurin ने जो कहा, वह पूरी

तरह से गलत नहीं था। जहाँ एक ओर Guermantes परिवार के लोग Brichot को अब तक मिले लोगों में सबसे बेवकूफ़ आदमी घोषित कर देते, वहीं मैं इस बात को लेकर अनिश्चित बना रहा कि क्या वह असल में उन लोगों से बेहतर नहीं था—भले ही Swann से बेहतर न हो, लेकिन कम से कम उन दूसरे लोगों से तो बेहतर था, जिनमें Guermantes जैसी हाज़िरजवाबी तो थी, पर उनमें Brichot की किताबी और पांडित्यपूर्ण बातों से बचने का अच्छा सलीका और उन पर शर्मिंदा होने की विनम्रता भी थी। मैंने खुद से यह सवाल ऐसे पूछा, मानो मेरे जवाब से बुद्धि की प्रकृति पर कोई नई रोशनी पड़ने वाली हो; और मैंने यह सवाल उतनी ही गंभीरता से पूछा, जितनी गंभीरता से Port-Royal के प्रभाव में आया कोई ईसाई 'ईश्वरीय कृपा' (Grace) की समस्या पर विचार करता है। "आप देखेंगी," Mme. Verdurin ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "जब आप समाज के कुलीन लोगों को असली बुद्धि वाले लोगों—यानी हमारे जैसे लोगों—के साथ एक जगह इकट्ठा करती हैं, तो उन्हें देखने का असली मज़ा वहीं आता है। समाज का वह कुलीन व्यक्ति, जो 'अंधों के राज्य' में बहुत होशियार और चमकीला दिखाई देता है, यहाँ आकर बस 'एक आँख वाला' बनकर रह जाता है। इसके अलावा, बाकी लोगों को भी यहाँ अब अपनापन महसूस नहीं होता। बात यहाँ तक पहुँच गई है कि मैं खुद से यह पूछने लगी हूँ कि क्या...

ऐसी लुभावनी चीज़ों का मेल जो सब कुछ बिगाड़ देता है; मैं ऐसी खास शामें शुरू नहीं करूँगा जो सिर्फ़ बोर करने वाले लोगों तक ही सीमित हों, ताकि मुझे अपने छोटे से ग्रुप का पूरा फ़ायदा मिल सके। खैर: तुम अपने कज़िन के साथ फिर से आ रहे हो। यह तय हो गया। बहुत बढ़िया। वैसे भी, तुम दोनों को यहाँ खाने के लिए कुछ न कुछ तो मिल ही जाएगा। फ़ेटर्न तो भुखमरी का अड्डा है। ओह, वैसे, अगर तुम्हें चूहे पसंद हैं, तो फौरन वहाँ चले जाओ; तुम्हें जितने चाहो उतने मिल जाएँगे। और वे तुम्हें वहाँ तब तक रखेंगे जब तक तुम वहाँ रुकने को तैयार रहोगे। अरे, तुम तो भूख से ही मर जाओगे। मुझे पक्का यकीन है कि जब मैं वहाँ जाऊँगा, तो निकलने से पहले ही अपना डिनर कर लूँगा। जितने ज़्यादा लोग, उतना ही ज़्यादा मज़ा; तुम्हें पहले यहाँ आना चाहिए और मेरे साथ चलना चाहिए। हम 'हाई टी' लेंगे, और जब वापस आएँगे तब रात का खाना खाएँगे। क्या तुम्हें 'एप्पल-टार्ट्स' पसंद हैं? हाँ? बहुत बढ़िया, तो फिर सुन लो, हमारा शेफ़ दुनिया के सबसे बेहतरीन एप्पल-टार्ट्स बनाता है। देखा, मैंने

तुमसे जो कहा था कि तुम यहीं रहने के लिए बने हो, वह बात बिल्कुल सही थी। तो आओ और यहीं रहो। तुम्हें पता है, इस घर में लोगों की सोच से कहीं ज़्यादा जगह है। मैं इस बारे में ज़्यादा बात नहीं करता, ताकि बोर करने वाले लोग मेरे पीछे न पड़ जाएँ। तुम अपने कज़िन को भी अपने साथ रहने के लिए ला सकते हो। बालबेक के मुक़ाबले यहाँ का माहौल उसे काफ़ी अलग और ताज़गी भरा लगेगा। मुझे पूरा यकीन है कि यहाँ की हवा में मैं लाइलाज बीमारियों को भी ठीक कर सकता हूँ। मैं तुम्हें बता दूँ कि मैंने ऐसा किया भी है, और यह कोई पहली बार नहीं है। क्योंकि मैं पहले भी यहाँ के काफ़ी करीब रह चुका हूँ—एक ऐसी जगह जिसे मैंने खुद ढूँढ़ा था और जो मुझे बहुत ही सस्ते में मिल गई थी; वह जगह उनके 'रास्पेलियर' से बिल्कुल ही अलग तरह का घर था। अगर हम साथ में घूमने निकलें, तो मैं तुम्हें वह जगह दिखा सकता हूँ। लेकिन मैं यह मानता हूँ कि यहाँ की हवा भी काफ़ी ताज़गी और स्फूर्ति देने वाली है। फिर भी, मैं इस बारे में ज़्यादा कुछ कहना नहीं चाहता; वरना पूरा पेरिस ही मेरे इस छोटे से कोने के पीछे पागल हो जाएगा। मेरी किस्मत हमेशा से ऐसी ही रही है। खैर, अपने कज़िन को मेरा यह संदेश दे देना। हम तुम दोनों को घाटी की तरफ़ खुलने वाले दो बहुत ही बढ़िया कमरों में ठहराएँगे; तुम्हें सुबह के समय वह नज़ारा ज़रूर देखना चाहिए—जब कोहरे के बीच से सूरज की किरणें छनकर आती हैं! "वैसे, यह रॉबर्ट डी सेंट-लूप कौन है जिसके बारे में तुम बात कर रहे थे?" उसने कुछ परेशान-सी होकर पूछा, क्योंकि उसने सुना था कि मैं डोंसिएरेस में उससे मिलने जाने वाला हूँ, और उसे डर था कि कहीं उसकी वजह से मैं उससे मिलने न जा पाऊँ। "अगर वह बोर करने वाला नहीं है, तो क्यों न उसे यहीं ले आओ? मैंने मोरेल से उसके बारे में सुना है; मुझे लगता है कि वह उसके सबसे अच्छे दोस्तों में से एक है," मैडम वेरडुरिन ने पूरी तरह से झूठ बोलते हुए कहा, क्योंकि सेंट-लूप और मोरेल तो एक-दूसरे के अस्तित्व से भी अनजान थे। लेकिन यह सुनने के बाद कि सेंट-लूप, मिस्टर डी चार्लस को जानता है, उसने मान लिया कि यह वायलिन बजाने वाले के ज़रिए ही हुआ होगा, और वह ऐसा दिखाना चाहती थी जैसे उसे उन सबके बारे में सब कुछ पता हो। "कहीं वह मेडिकल या लिटरेचर की पढ़ाई तो नहीं कर रहा? तुम्हें पता है, अगर तुम्हें एग्ज़ाम के बारे में कोई मदद चाहिए, तो कोटार्ड कुछ भी कर सकता है, और मैं उससे अपनी मर्ज़ी के मुताबिक काम करवाती हूँ। जहाँ तक बाद में एकेडमी की बात है—क्योंकि मुझे लगता है कि वह अभी उतना बड़ा नहीं हुआ है—तो

मेरी जेब में कई नोट्स पड़े हैं। तुम्हारे दोस्त को यहाँ का माहौल बहुत अपना-सा लगेगा, और शायद उसे यह घर घूमकर देखना भी अच्छा लगेगा। डोंसिएरेस में ज़िंदगी कुछ ज़्यादा रोमांचक नहीं होती। लेकिन तुम वही करना जो तुम्हें ठीक लगे; तुम अपने हिसाब से जो भी सबसे अच्छा लगे, वैसा इंतज़ाम कर लेना," उसने बिना ज़्यादा ज़ोर दिए अपनी बात खत्म की, ताकि ऐसा न लगे कि वह ऊँचे खानदान के लोगों से जान-पहचान बढ़ाने की कोशिश कर रही है; और इसलिए भी, क्योंकि वह हमेशा यही मानती थी कि जिस तरीके से वह अपने 'वफ़ादारों' पर राज करती थी—यानी तानाशाही—उसी का दूसरा नाम 'आज़ादी' था। "अरे, तुम्हें क्या हो गया है?" उसने मिस्टर वेरडुरिन को देखकर पूछा; मिस्टर वेरडुरिन, जो बेसब्री से हाथ-पैर हिलाते हुए, उस लकड़ी की छत की तरफ़ जा रहे थे जो ड्राइंग-रूम के बगल में, घाटी के ऊपर बनी हुई थी—ठीक उस आदमी की तरह जो गुस्से से उबल रहा हो और जिसे ताज़ी हवा की सख़्त ज़रूरत हो। "क्या सैनीएट ने तुम्हें फिर से परेशान किया है? लेकिन तुम्हें पता ही है कि वह कितना बेवकूफ़ है; तुम्हें उसे वैसे ही स्वीकार करना होगा, इस तरह खुद को इतना परेशान मत करो। मुझे इस तरह की बातें बिल्कुल पसंद नहीं हैं," उसने मुझसे कहा, "क्योंकि यह उसके लिए अच्छा नहीं है; इससे उसका खून दिमाग़ में चढ़ जाता है।" लेकिन मुझे यह कहना ही पड़ेगा कि कभी-कभी सैनिएट को झेलने के लिए किसी फ़रिश्ते जितना सब्र चाहिए होता है, और यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि उसे घर में रखना एक तरह का परोपकार ही है। जहाँ तक मेरी बात है, मुझे यह मानना पड़ेगा कि वह इतना ज़बरदस्त बेवकूफ़ है कि मैं उसकी हरकतों का मज़ा लिए बिना नहीं रह पाती। मुझे पूरा यकीन है कि आपने सुना होगा कि रात के खाने के बाद उसने क्या कहा था: 'मैं 'व्हिस्ट' (ताश का खेल) तो नहीं खेल सकता, लेकिन पियानो ज़रूर बजा सकता हूँ।' है ना यह कमाल की बात? यह सचमुच बहुत बड़ी बात है, और वैसे देखा जाए तो बिल्कुल झूठ भी है, क्योंकि उसे इन दोनों में से किसी के बारे में कुछ भी नहीं पता। लेकिन मेरे पति, अपनी सख़्त बाहरी बनावट के बावजूद, बहुत ही संवेदनशील और दयालु दिल के इंसान हैं; और सैनिएट का वह आत्म-केंद्रित रवैया—जिसमें वह हमेशा इस बात की फ़िक्र करता रहता है कि दूसरों पर उसका क्या असर पड़ेगा—उन्हें पागल कर देता है। "चलो, प्यारे, शांत हो जाओ; तुम्हें तो पता ही है कि कोटार्ड ने तुमसे कहा था कि यह तुम्हारे लिवर के लिए अच्छा नहीं है। और इन सब का

खामियाज़ा तो मुझे ही भुगतना पड़ेगा," मैडम वेरडुरिन ने कहा। "कल सैनिएट फिर से घबराया हुआ और रोता-बिलखता हुआ वापस आएगा। बेचारा आदमी, वह सचमुच बहुत बीमार है। फिर भी, इसका मतलब यह तो नहीं कि वह दूसरे लोगों की जान ही ले ले। इसके अलावा, यहाँ तक कि उन पलों में भी जब वह तकलीफ़ में होता है—जब किसी का मन उसके लिए हमदर्दी दिखाने का करता है—उसकी बेवकूफ़ी दिल को पत्थर जैसा सख़्त बना देती है। वह सचमुच हद से ज़्यादा बेवकूफ़ है। तुम्हें बस उससे बहुत ही नरमी से यह कहना है कि इन सब तमाशों की वजह से तुम दोनों की तबीयत बिगड़ जाती है, और इसलिए वह अब दोबारा यहाँ न आए; चूँकि उसे इसी बात का सबसे ज़्यादा डर लगता है, इसलिए इसका उसके दिमाग़ पर काफ़ी सुकून देने वाला असर पड़ेगा," मैडम वेरडुरin ने अपने पति के कान में फुसफुसाते हुए कहा।

दाईं ओर की खिड़कियों से समुद्र मुश्किल से दिखाई दे रहा था। लेकिन दूसरी ओर की खिड़कियों से घाटी दिख रही थी, जो अब चांदनी की बर्फीली चादर में लिपटी हुई थी। बीच-बीच में मोरेल और कॉटार्ड की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। "क्या आपके पास कोई तुरुप का पत्ता है?" "हाँ।" "अरे! आपकी किस्मत अच्छी है," एम. डी कैम्ब्रेमर ने मोरेल के सवाल के जवाब में कहा, क्योंकि उन्होंने देखा था कि डॉक्टर का हाथ तुरुप के पत्तों से भरा हुआ था। "देखो, हीरे की देवी आ रही है," डॉक्टर ने कहा। "यह तुरुप का पत्ता है, जानते हो? मेरी चाल। लेकिन अब सोरबोन नहीं है," डॉक्टर ने एम. डी कैम्ब्रेमर से कहा; "यहाँ केवल पेरिस विश्वविद्यालय है।" एम. डी कैम्ब्रेमर ने स्वीकार किया कि उन्हें समझ नहीं आया कि डॉक्टर ने उनसे ऐसा क्यों कहा। "मुझे लगा कि आप सोरबोन के बारे में बात कर रहे हैं," डॉक्टर ने जवाब दिया। “मैंने तुम्हें कहते सुना: तू नू ला सोर्स बोन,” उसने आँख मारते हुए कहा, जिससे पता चलता था कि यह एक व्यंग्य था। “ज़रा रुको,” उसने अपने प्रतिद्वंद्वी की ओर इशारा करते हुए कहा, “मैंने उसके लिए एक ट्रैफ़लगर तैयार रखा है।” और डॉक्टर के लिए यह संभावना बहुत अच्छी रही होगी, क्योंकि खुशी से उसके कंधे ठहाकों से हिलने लगे, जो उसके परिवार में, कॉटार्ड परिवार की ‘वंश’ में, संतुष्टि का एक लगभग प्राणीशास्त्रीय संकेत था। पिछली पीढ़ी में, हाथों को आपस में रगड़ने का इशारा, मानो साबुन लगा रहे हों, इस हरकत

के साथ किया जाता था। कॉटार्ड ने स्वयं पहले दोनों तरीकों का एक साथ प्रयोग किया था, लेकिन एक दिन, किसी को नहीं पता कि किसके हस्तक्षेप से, शायद पत्नी या प्रोफेसर के हस्तक्षेप से, हाथों को रगड़ने की यह प्रथा गायब हो गई। डॉक्टर डोमिनोज़ खेलते समय भी, जब वह अपने प्रतिद्वंद्वी को दौड़ाकर डबल सिक्स लेने पर मजबूर कर देता था, जो उसके लिए सबसे बड़ा आनंद था, तब भी वह अपने कंधों को हिलाकर ही संतुष्ट हो जाता था। और जब—जो कि बहुत कम ही होता था—वह कुछ दिनों के लिए अपने पैतृक गाँव जाता और अपने चचेरे भाई से मिलता, जो अभी भी हाथ मलने की अवस्था में था, तो लौटकर वह श्रीमती कॉटार्ड से कहता: "मुझे लगा बेचारा रेने बहुत साधारण है।" "क्या तुम्हारे पास वह छोटा हिरण है?" उसने मोरेल की ओर मुड़कर कहा। "नहीं? तो मैं यह पुराना डेविड खेलता हूँ।" "तो तुम्हारे पास पाँच हैं, तुम जीत गए!" "यह तो बड़ी जीत है, डॉक्टर," मार्क्विस ने कहा। "एक पाइरिक जीत," कॉटार्ड ने मार्क्विस की ओर मुड़कर और अपने चश्मे से उनकी टिप्पणी के प्रभाव का आकलन करते हुए कहा। "अगर अभी भी समय है," उसने मोरेल से कहा, "मैं तुम्हें तुम्हारा बदला देता हूँ। यह मेरा सौदा है। आह! नहीं, गाड़ियाँ आ रही हैं, शुक्रवार ही होना पड़ेगा, और मैं तुम्हें एक ऐसा करतब दिखाऊँगा जो तुम हर दिन नहीं देखते।" श्रीमान और श्रीमती वर्दुरिन हमें दरवाजे तक ले गए। मालकिन सैनीएट को खास तौर पर प्यार से मना रही थीं ताकि अगली बार वो ज़रूर लौट आए। "मेरे बेटे, मुझे तो ऐसा नहीं लग रहा कि तुमने ठीक से कपड़े पहने हैं," एम. वर्दुरिन ने कहा, जिनकी उम्र उन्हें मुझसे इस पिता तुल्य लहजे में बात करने की इजाज़त देती थी। "ऐसा लग रहा है जैसे मौसम बदल गया हो।" ये शब्द सुनकर मुझे खुशी हुई, मानो प्रकृति में छिपे गहरे जीवन, विभिन्न संयोजनों के उदय का संकेत मेरे जीवन में हो रहे अन्य परिवर्तनों की ओर इशारा कर रहा हो और उसमें नई संभावनाएं पैदा कर रहा हो। पार्क का दरवाज़ा खोलते ही, जाने से पहले, ऐसा लगा मानो उस पल एक अलग ही 'मौसम' ने अपना कब्ज़ा जमा लिया हो; गर्मी की खुशियों में से एक, ठंडी हवाएं देवदार के बागान में उठ रही थीं (जहाँ बहुत पहले श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने चोपिन के सपने देखे थे) और लगभग अनजाने में, कोमल घुमावों में, चंचल भंवरों में, अपनी कोमल रात्रि की शुरुआत कर रही थीं। मैंने उस कालीन को लेने से इनकार कर दिया, जिसे मुझे अगली शामों में अल्बर्टीन के साथ होने पर स्वीकार करना था। मैंने ऐसा ठंड से बचने की बजाय अपनी खुशी को गुप्त

रखने के लिए किया। नॉर्वेजियन दार्शनिक की व्यर्थ खोज की गई। क्या उन्हें पेट दर्द हो गया था? क्या उन्हें ट्रेन छूटने का डर था? क्या कोई हवाई जहाज उन्हें लेने आया था? क्या उन्हें किसी विमान में ऊपर ले जाया गया था? किसी भी हालत में, वह किसी को पता चले बिना, किसी देवता की तरह गायब हो गए थे। "तुम नासमझ हो," एम. डी कैम्ब्रेमर ने मुझसे कहा, "यह तो दान की तरह ठंडा है।" "दान क्यों?" डॉक्टर ने पूछा। "सावधान रहो," मार्क्विस ने आगे कहा। "मेरी बहन रात में कभी बाहर नहीं जाती। हालाँकि, वह इस समय काफी खराब हालत में है। वैसे भी, तुम्हें नंगे बदन नहीं खड़ा रहना चाहिए, तुरंत अपना सिर ढक लो।" "ये ठंड से होने वाले घुटन नहीं हैं," कॉटार्ड ने गंभीरता से कहा। "ओह, बिल्कुल!" एम. डी कैम्ब्रेमर ने सिर झुकाया। "बेशक, अगर यही आपकी राय है..." "प्रेस की राय!" डॉक्टर ने चश्मा पहने मुस्कुराते हुए कहा। एम. डी कैम्ब्रेमर हँसे, लेकिन उन्हें पूरा यकीन था कि वे सही हैं, इसलिए उन्होंने ज़ोर देकर कहा: "फिर भी," उन्होंने कहा, "जब भी मेरी बहन रात में बाहर जाती है, उसे दौरा पड़ जाता है।" "बहस करने का कोई फायदा नहीं," डॉक्टर ने अपने असभ्य व्यवहार की परवाह किए बिना जवाब दिया। "वैसे, मैं समुद्र किनारे डॉक्टरी नहीं करता, जब तक कि मुझे किसी परामर्श के लिए बुलाया न जाए। मैं यहाँ छुट्टी पर हूँ।" शायद वे अपनी इच्छा से कहीं ज़्यादा छुट्टी पर थे। जब वे दोनों एक साथ गाड़ी में चढ़े, तो एम. डी कैम्ब्रेमर ने उनसे कहा: "हम भाग्यशाली हैं कि हमारे काफी करीब (आपकी तरफ नहीं, बल्कि दूसरी तरफ, लेकिन उस बिंदु पर जगह काफी कम है) एक और प्रसिद्ध चिकित्सक, डॉक्टर डू बोलबोन हैं।" कॉटार्ड, जो आमतौर पर अपने सहयोगियों की आलोचना करने से बचते थे, अपनी नैतिकता के कारण, उसी तरह विस्मित हुए, जैसे उन्होंने उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन मुझसे कहा था जब हम छोटे से कैसीनो गए थे: "लेकिन वह डॉक्टर नहीं हैं। वह 'साहित्यिक चिकित्सा' का अभ्यास करते हैं, यह सब काल्पनिक चिकित्सा है, पाखंड है। फिर भी, हमारे संबंध काफी अच्छे हैं। अगर मैं जा नहीं रहा होता, तो मैं नाव लेकर उनसे मिलने जरूर जाता।" लेकिन, कॉटार्ड ने एम. डी कैम्ब्रेमर से डु बोलबोन के बारे में जिस लहजे में बात की, उससे मुझे लगा कि जिस नाव से वह उनसे मिलने जाते, वह उस नाव से काफी मिलती-जुलती होगी जिसे सालेर्नो के डॉक्टरों ने एक अन्य साहित्यिक डॉक्टर, वर्जिल (जिन्होंने उनके सभी मरीज़ों को भी अपने साथ ले लिया था) द्वारा खोजे गए जलक्षेत्र को बर्बाद करने के लिए किराए

पर लिया था, लेकिन जो यात्रा के दौरान उनके साथ ही डूब गई। "अलविदा, मेरी प्यारी सैनिएट, कल आना मत भूलना, तुम जानती हो कि मेरे पति को तुमसे मिलना कितना अच्छा लगता है। उन्हें तुम्हारी चतुराई, तुम्हारी बुद्धि पसंद है; हाँ, तुम अच्छी तरह जानती हो, उनका मिजाज अचानक बदल जाता है, लेकिन वह तुमसे मिले बिना नहीं रह सकते। वह हमेशा सबसे पहले मुझसे यही पूछते हैं: 'क्या सैनिएट आ रही है? मुझे उससे मिलना बहुत अच्छा लगता है।'" "मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा," एम. वर्दुरिन ने सैनिएट से बनावटी स्पष्टता के साथ कहा, जो मालकिन की कही बात और उनके सैनिएट के साथ व्यवहार को पूरी तरह से मेल खाती प्रतीत हुई। फिर अपनी घड़ी देखते हुए, शायद नम रात की हवा में छुट्टी का समय न बढ़ाने के लिए, उन्होंने कोचवानों को चेतावनी दी कि वे समय बर्बाद न करें, बल्कि पहाड़ी से नीचे उतरते समय सावधानी बरतें, और हमें आश्वासन दिया कि हम अपनी ट्रेन के लिए पर्याप्त समय पर पहुँच जाएँगे। यह ट्रेन सभी यात्रियों को एक-एक स्टेशन पर, और अंत में मुझे उतारने के लिए थी, क्योंकि बालबेक तक कोई और नहीं जा रहा था, और इसकी शुरुआत कैम्ब्रेमर परिवार से हुई। उन्होंने अपने घोड़ों को रात में ला रास्पेलियर तक न ले जाने के लिए, डौविल-फेटर्न स्टेशन पर हमारे साथ ट्रेन पकड़ी। उनके सबसे नज़दीकी स्टेशन वास्तव में यह नहीं था, जो गाँव से पहले से ही कुछ दूरी पर था और हवेली से भी काफी दूर था, बल्कि ला सोग्ने था। डौविल-फेटरने स्टेशन पहुँचने पर, श्री डी कैम्ब्रेमर ने वर्दुरिन परिवार के कोचवान (उस भले, संवेदनशील और उदास मन वाले कोचवान) को एक सिक्का (जैसा कि फ्रांस्वा कहा करती थीं) देने का विशेष ध्यान रखा, क्योंकि श्री डी कैम्ब्रेमर उदार थे और इस मामले में अपनी माँ के समान थे। लेकिन, शायद इस समय उनके पिता की याद आने के कारण, उन्हें कुछ हिचक हुई, या शायद उन्हें लगा कि कहीं कोई गलती न हो जाए—या तो उनकी ओर से, जैसे कि अंधेरे में कहीं वे फ्रैंक की जगह 'तुम्हें' न दे दें, या फिर प्राप्तकर्ता की ओर से, जो उपहार के महत्व को न समझ पाए। इसलिए उन्होंने इस ओर ध्यान दिलाया: "मैं तुम्हें एक फ्रैंक दे रहा हूँ, है ना?" उन्होंने कोचवान से कहा, और सिक्के को तब तक घुमाया जब तक वह दीपक की रोशनी में चमकने लगा, ताकि उनके अनुयायी श्रीमती वर्दुरिन को उनकी इस बात की सूचना दे सकें। "है ना? बीस सू ठीक है, क्योंकि यह थोड़ी ही दूर है।" वह और श्रीमती डी कैम्ब्रेमर हमें ला सोग्ने में छोड़कर चले गए। "मैं अपनी बहन को बताऊँगा," उन्होंने मुझसे

दोहराया, "कि तुम्हें घुटन के दौरे पड़ते हैं, मुझे यकीन है कि उसे इसमें दिलचस्पी होगी।" मैं समझ गया कि उनका मतलब था: 'उसे खुशी होगी।' जहाँ तक उनकी पत्नी की बात है, उन्होंने मुझसे विदा लेते समय दो संक्षिप्त शब्दों का प्रयोग किया, जो उस समय मुझे पत्र में भी लिखते समय चौंका देते थे, हालाँकि अब मुझे उनकी आदत हो गई है, लेकिन बोलते समय, आज भी मुझे उनकी जानबूझकर की गई लापरवाही, उनकी सहजता में कुछ असहनीय पांडित्यपूर्ण लगता है: "आपसे मिलकर खुशी हुई," उन्होंने मुझसे कहा; "अगर आप सेंट-लूप से मिलें तो उन्हें मेरा नमस्कार कहना।" यह कहते हुए श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने नाम का उच्चारण 'सेंट-लूप' किया। मुझे कभी पता नहीं चला कि किसने उसके सामने इस तरह उच्चारण किया था, या किस बात ने उसे यह मानने पर मजबूर किया कि इसका उच्चारण इस तरह होना चाहिए। खैर, कुछ हफ्तों तक वह 'सेंट-लूप' ही कहती रही और एक आदमी जो उसकी बहुत प्रशंसा करता था और हर तरह से उसकी नकल करता था, वह भी ऐसा ही करता था। अगर दूसरे लोग 'सेंट-लू' कहते, तो वे जोर देकर, स्पष्ट रूप से 'सेंट-लूप' कहते, चाहे दूसरों को अप्रत्यक्ष रूप से सबक सिखाने के लिए या उनसे अलग दिखने के लिए। लेकिन, निस्संदेह, श्रीमती डी कैम्ब्रेमर से कहीं अधिक बुद्धिमान महिलाओं ने उसे बताया, या अप्रत्यक्ष रूप से समझाया कि यह सही उच्चारण नहीं है, और जिसे वह मौलिकता का प्रतीक मानती थी, वह एक गलती थी जिससे लोग उसे समाज के रीति-रिवाजों से कम परिचित समझेंगे, क्योंकि कुछ ही समय बाद श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने... डी कैम्ब्रेमर फिर से 'सेंट-लू' कह रही थीं, और उनके प्रशंसक ने भी अपना विरोध करना छोड़ दिया, चाहे इसलिए कि उन्होंने उसे उपदेश दिया था, या इसलिए कि उसने देखा था कि अब वह अंतिम व्यंजन का उच्चारण नहीं कर रही थीं, और उसने मन ही मन सोचा होगा कि अगर इतनी प्रतिष्ठित, ऊर्जावान और महत्वाकांक्षी महिला ने हार मान ली है, तो इसके पीछे कोई ठोस कारण ही होगा। उनके प्रशंसकों में सबसे बुरा उनका पति था। श्रीमती डी कैम्ब्रेमर को दूसरों को चिढ़ाने में बहुत आनंद आता था, जो अक्सर बेहद अभद्र होता था। जैसे ही वह मुझ पर या किसी और पर इस तरह से हमला करना शुरू करतीं, श्री डी कैम्ब्रेमर अपने शिकार को देखने लगते और साथ ही हंसते रहते। चूंकि मार्क्विस की आंख में भेंगापन था—एक ऐसी खामी जो मंदबुद्धि लोगों की हंसी में भी चतुराई का भाव पैदा कर देती है—इस हंसी का प्रभाव यह था कि उनकी आंख की पूरी सफेदी में पुतली का एक

हिस्सा उभर आता था। जैसे अचानक आई दरार से बादलों से घिरे आकाश में नीले रंग का एक धब्बा आ जाता है। इसके अलावा, उनका मोनोकल, किसी कीमती तस्वीर पर लगे शीशे की तरह, इस नाजुक प्रक्रिया की रक्षा करता था। उनकी हंसी के असली इरादे के बारे में कहना मुश्किल था कि क्या वह दोस्ताना थी: "अरे! बदमाश! तुम तो बड़ी ही अच्छी स्थिति में हो, है ना? तुमने एक ऐसी महिला का दिल जीत लिया है जो बहुत हाजिरजवाब है!" या फिर अशिष्ट: "खैर, महोदय, मुझे उम्मीद है कि आप सबक सीखेंगे, आपको अपनी गलती माननी ही पड़ेगी।" या फिर विनम्र: "मैं यहाँ हूँ, आप जानते हैं, मैं इसे हंसी में लेता हूँ क्योंकि यह सब मज़ाक है, लेकिन मैं आपको अपमानित नहीं होने दूँगा।" या फिर बेरहमी से साथ देते हुए: "मुझे अपनी थोड़ी सी नमक छिड़कने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन आप देख सकते हैं कि वह आप पर जो भी अपमान बरसा रही है, मैं उसका आनंद ले रहा हूँ। मैं कुबड़ा होकर तड़प रहा हूँ, इसलिए मैं, पति, इसका समर्थन करता हूँ। और इसलिए, अगर आपने पलटवार करने की हिम्मत की, तो आपको मुझसे निपटना होगा, मेरे युवा महोदय। मैं सबसे पहले आपको दो ज़ोरदार थप्पड़ मारूँगा, जो सटीक निशाना लगाकर मारे जाएँगे, फिर हम चैंटेपी के जंगल में जाकर तलवारबाज़ी करेंगे।"

पति की खुशी का सही अर्थ जो भी हो, पत्नी की चंचलता जल्द ही समाप्त हो गई। इसके बाद एम. डी कैम्ब्रेमर का हंसना बंद हो गया, उनकी आंखों की पुतली गायब हो गई और जैसे एक-दो मिनट के लिए कोई पूरी तरह से सफेद आंख की उम्मीद करना भूल गया हो, इससे इस लाल चेहरे वाले नॉर्मन को एक साथ दुर्बल और आनंदित भाव मिला, मानो मार्किस का अभी-अभी ऑपरेशन हुआ हो, या वे अपने एकतरफा चश्मे से स्वर्ग से शहादत की प्रार्थना कर रहे हों।

अध्याय III

एम. डी चार्लस के दुख—उनका दिखावटी द्वंद्वयुद्ध—'ट्रांसअटलांटिक' के पड़ाव—अल्बर्टीन से तंग आकर, मैंने उससे नाता तोड़ने का फैसला किया

मुझे नींद से बेहाल किया जा रहा था। मुझे लिफ्ट वाले ने नहीं, बल्कि उस तिरछी आँखों वाले नौकर ने मेरे तल तक पहुँचाया। बातचीत शुरू करने के लिए उसने मुझे बताया कि उसकी बहन अभी भी उस अमीर आदमी के साथ है, और एक बार जब उसने अपने काम से दूर घर लौटने का फैसला किया, तो उसके दोस्त ने उस तिरछी आँखों वाले नौकर और अन्य भाग्यशाली बच्चों की माँ से मुलाकात की, जिन्होंने उस नासमझ लड़की को तुरंत उसके संरक्षक के पास वापस भेज दिया। "आप जानते हैं, महोदय, मेरी बहन एक शानदार महिला हैं। वह पियानो बजाती हैं, स्पेनिश बोलती हैं। और आप उन्हें देखकर कभी नहीं सोचेंगे कि वह उस साधारण कर्मचारी की बहन हैं जो आपको लिफ्ट में ऊपर ले जाता है, वह किसी भी चीज़ से परहेज नहीं करतीं; मैडम के पास अपनी नौकरानी है, मुझे आश्चर्य नहीं होगा अगर एक दिन वह अपनी गाड़ी भी रख लें। वह बहुत सुंदर हैं, अगर आप उन्हें देख सकें, थोड़ी अकड़ू और घमंडी, लेकिन, हे भगवान, आप समझ सकते हैं। वह मस्ती से भरी हैं। वह किसी भी होटल से निकलने से पहले अलमारी या दराज में कुछ न कुछ कर देती हैं, ताकि सफाई करने वाली नौकरानी के लिए एक छोटा सा यादगार तोहफा छोड़ जाएं। कभी-कभी वह टैक्सी में भी ऐसा करती हैं, और किराया चुकाने के बाद, वह एक पेड़ के पीछे छिप जाती हैं, और जब टैक्सी ड्राइवर को पता चलता है कि उसे उनके बाद अपनी टैक्सी साफ करनी है, तो वह खूब हंसती हैं। मेरे पिता की किस्मत तब चमकी जब उन्हें मेरा छोटा भाई उस भारतीय राजकुमार से मिला जिसे वे बहुत पहले जानते थे। बेशक, यह उसी तरह की बात नहीं है। लेकिन यह एक शानदार स्थिति है। अकेले यात्रा करना ही अपने आप में एक अलग अनुभव है।" यह तो एक सपना ही होगा। मैं ही अकेला बचा हूँ, अभी तक मेरी शादी नहीं हुई है। पर कौन जाने। हम खुशनसीब परिवार हैं; शायद एक दिन मैं गणतंत्र का राष्ट्रपति बनूँ। लेकिन मैं आपको बातें करते-करते थक नहीं रहा हूँ" (मैंने एक शब्द भी नहीं बोला था और उनकी बातें सुनते-सुनते मुझे नींद आने लगी थी)। "शुभ रात्रि, महोदय। ओह! धन्यवाद, महोदय। अगर सबका दिल

आपके जैसा दयालु होता, तो कोई गरीब ही नहीं बचता। लेकिन, जैसा कि मेरी बहन कहती है, 'गरीब तो हमेशा रहेंगे, ताकि अब जब मैं अमीर हूँ, तो उन पर रौब जमा सकूँ।' मेरी इस बात के लिए मुझे माफ़ करना। शुभ रात्रि, महोदय।"

शायद हर रात हम सोते समय उन कष्टों का सामना करने का जोखिम उठाते हैं जिन्हें हम अवास्तविक और महत्वहीन समझते हैं, क्योंकि वे हमारी उस नींद के दौरान महसूस होंगे जिसे हम अचेतन मानते हैं। और सचमुच, जब मैं ला रास्पेलियर से देर से लौटा, तो मुझे बहुत नींद आ रही थी। लेकिन मौसम ठंडा होने के बाद मुझे तुरंत नींद नहीं आई, क्योंकि आग से कमरा ऐसे जगमगा रहा था मानो उसमें कोई दीपक जल रहा हो। लेकिन वह जलती हुई लकड़ी के अलावा कुछ नहीं थी, और - ठीक उसी तरह जैसे दीपक की रोशनी में, जैसे दिन ढलते ही रात हो जाती है - उसकी तेज रोशनी जल्दी ही फीकी पड़ गई; और मैं नींद की एक ऐसी अवस्था में चला गया जो एक दूसरे कमरे की तरह है, जिसमें हम अपना कमरा छोड़कर तब जाते हैं जब हमें नींद आती है। उसमें अपनी अलग-अलग आवाज़ें होती हैं और कभी-कभी घंटी की आवाज़ से हमारी नींद अचानक टूट जाती है, जो हमारे कानों को साफ सुनाई देती है, हालांकि किसी ने घंटी नहीं बजाई होती। इसके अपने सेवक हैं, इसके खास आगंतुक हैं जो हमें बाहर ले जाने के लिए आते हैं ताकि हम उठने के लिए तैयार रहें, लेकिन तभी हमें अचानक एहसास होता है कि हम दूसरे कमरे में पहुँच गए हैं, रात के कमरे में, कि वह खाली है, कोई नहीं आया। इसमें रहने वाली जाति, हमारे पहले मानव पूर्वजों की तरह, उभयलिंगी है। इसमें एक पुरुष क्षण भर में स्त्री के रूप में प्रकट होता है। इसमें मौजूद चीजें पुरुषों में, पुरुषों में, दोस्तों और दुश्मनों में बदलने की प्रवृत्ति दिखाती हैं। नींद के इन दौरों के दौरान सोने वाले के लिए बीतने वाला समय, जागते हुए व्यक्ति के जीवन के समय से बिल्कुल अलग होता है। कभी-कभी यह बहुत तेजी से बीतता है, पंद्रह मिनट एक दिन जैसा लगता है, तो कभी-कभी बहुत लंबा, हमें लगता है कि हमने बस एक छोटी सी झपकी ली है, जबकि हम पूरे दिन सोए रहते हैं। फिर, नींद के रथ में, हम ऐसी गहराइयों में उतरते हैं जहाँ स्मृति हमारा पीछा नहीं कर पाती, और जिसके किनारे पर पहुँचकर मन को अपने कदम पीछे खींचने पड़ते हैं। नींद के घोड़े, सूर्य के घोड़ों की तरह, इतनी स्थिर गति से चलते हैं, ऐसे वातावरण में जहाँ अब कोई प्रतिरोध नहीं होता, कि किसी अज्ञात द्वारा नीले आकाश से फेंके गए किसी छोटे से

बाहरी उल्कापिंड की आवश्यकता होती है जो हमारी नियमित नींद को प्रभावित करे (जो अन्यथा रुकने का कोई कारण नहीं रखती और अनंत काल तक इसी तरह गतिमान रहती) और उसे अचानक घुमाकर वास्तविकता की ओर लौटाए, बिना रुके यात्रा कराए, जीवन की सीमा से लगे क्षेत्रों को पार कराए जहाँ सोने वाला व्यक्ति जीवन से आने वाली आवाज़ें सुनेगा, जो अभी भी काफी अस्पष्ट हैं, लेकिन पहले से ही बोधगम्य हैं, भले ही विकृत हों—और अचानक पृथ्वी पर आकर जाग जाए। फिर उस गहरी नींद से हम भोर में जागते हैं, यह जाने बिना कि हम कौन हैं, कोई नहीं हैं, नवजात हैं, किसी भी चीज़ के लिए तैयार हैं, हमारा मस्तिष्क उस अतीत से खाली है जो पहले हमारा जीवन था। और शायद यह और भी सुखद होता है जब जागने के बिंदु पर हमारा आगमन अचानक होता है और हमारी नींद के विचार, विस्मृति के आवरण में छिपे हुए, नींद के समाप्त होने से पहले क्रम से हमारे पास लौटने का समय नहीं पाते। फिर, उस काले तूफान से, जिससे हम गुज़रे हुए प्रतीत होते हैं (परन्तु हम 'हम' शब्द का प्रयोग भी नहीं करते), हम बेसुध, बिना किसी विचार के, सारहीन अवस्था में बाहर निकलते हैं। उस व्यक्ति या वस्तु को ऐसा कौन सा आघात लगा है जो वहाँ पड़ा है, जिससे वह किसी भी चीज़ से बेखबर, सुन्न हो गया है, जब तक कि स्मृति का प्रवाह वापस आकर उसे चेतना या व्यक्तित्व प्रदान नहीं करता? इसके अलावा, इन दोनों प्रकार के जागरण के लिए, हमें आदत के नियम के अधीन, गहरी नींद में भी, सो जाने से बचना चाहिए। आदत अपने जाल में जो कुछ भी फँसाती है, उस पर वह कड़ी नज़र रखती है, हमें उससे बचना चाहिए, उस क्षण सोना चाहिए जब हम सोच रहे हों कि हम सोने के अलावा कुछ और कर रहे हैं, दूसरे शब्दों में, ऐसी नींद जो दूरदर्शिता के संरक्षण में न हो, चिंतन की संगति में न हो, भले ही वह अप्रत्यक्ष ही क्यों न हो। कम से कम, इन जागृतियों में जिनका मैंने अभी वर्णन किया है, और जिनका अनुभव मैंने आमतौर पर ला रास्पेलियर में रात भर भोजन करते समय किया था, सब कुछ इसी प्रक्रिया से घटित हुआ, और मैं इसकी गवाही दे सकता हूँ, मैं वह विचित्र मनुष्य जो मृत्यु की प्रतीक्षा करते हुए बंद दरवाजों के पीछे रहता है, दुनिया से कुछ नहीं जानता, उल्लू की तरह गतिहीन बैठा रहता है, और उस पक्षी की तरह ही अंधेरा होने पर ही चीजों को थोड़ा स्पष्ट रूप से देखना शुरू करता है। सब कुछ इसी प्रक्रिया से घटित होता है, लेकिन शायद रूई की एक परत ने ही सोने वाले को यादों के आंतरिक संवाद और नींद की निरंतर

वाक्पटुता को ग्रहण करने से रोक रखा है। क्योंकि (और यह दूसरी प्रणाली में भी समान रूप से प्रकट हो सकता है, जो अधिक विशाल, अधिक रहस्यमय, अधिक सूक्ष्म है) जागृत अवस्था में प्रवेश करते ही, सोने वाला अपने भीतर एक आवाज सुनता है: "क्या तुम आज रात इस भोजन पर आओगे, मेरे प्यारे दोस्त, कितना मज़ा आएगा?" और सोचता है: "हाँ, कितना मज़ा आएगा, मैं ज़रूर जाऊँगा"; फिर, पूरी तरह जागते हुए, उसे अचानक याद आया: "डॉक्टर ने हमें आश्वासन दिया है कि मेरी दादी के पास जीने के लिए बस कुछ ही हफ्ते बचे हैं।" वह घंटी बजाता है, इस सोच से रो पड़ता है कि अब पहले की तरह उसकी दादी, उसकी मरणासन्न दादी नहीं, बल्कि एक उदासीन वेटर ही उसकी पुकार का जवाब देने आएगा। इसके अलावा, जब नींद उसे स्मृति और विचारों से भरी दुनिया से इतना दूर ले गई, एक ऐसे आकाश में जहाँ वह अकेला था, अकेलेपन से भी कहीं अधिक; उस साथी के बिना जिसमें हम चीजों को महसूस करते हैं, यानी स्वयं, वह समय और उसके मापदंडों से परे था। लेकिन अब नौकर कमरे में है, और वह उससे समय पूछने की हिम्मत नहीं करता, क्योंकि उसे नहीं पता कि वह सोया है या नहीं, कितने घंटे सोया है (वह खुद से पूछता है कि क्या यह कितने दिन नहीं होने चाहिए, इस तरह थके हुए शरीर और तरोताजा मन के साथ लौटते हुए, उसका दिल घर के लिए तड़प रहा है, मानो किसी बहुत लंबी यात्रा से लौटा हो)। हम बेशक इस बात पर ज़ोर दे सकते हैं कि समय एक ही है, इस व्यर्थ तर्क के लिए कि घड़ी देखकर ही हमें पता चलता है कि जो हम एक दिन समझ रहे थे, वह केवल पंद्रह मिनट ही था। लेकिन जिस क्षण हमें यह पता चलता है, हम एक जागृत व्यक्ति होते हैं, जागृत मनुष्यों के समय में डूबे हुए, हम दूसरे समय को छोड़ चुके होते हैं। शायद वास्तव में दूसरे समय से भी कहीं अधिक: दूसरा जीवन। नींद में मिलने वाले सुखों को हम अपने जीवनकाल में अनुभव किए गए सुखों की सूची में शामिल नहीं करते। केवल सबसे अधिक इंद्रियजन्य सुख की बात करें, तो हममें से कौन जागने पर इस बात से चिढ़ महसूस नहीं करता कि नींद में हमें ऐसा सुख मिला, जिसे यदि हम थकाना न चाहें तो जागने के बाद दिन भर अनिश्चित काल तक दोहरा नहीं सकते। यह सरासर व्यर्थ लगता है। हमने दूसरे जीवन में सुख का अनुभव किया है, जो हमारा नहीं है। स्वप्नलोक के दुख और सुख (जो आमतौर पर जागने के तुरंत बाद गायब हो जाते हैं), यदि हम उन्हें अपने बजट में शामिल करते हैं, तो वे हमारे जीवन के चालू खाते में शामिल नहीं होते हैं।

मैंने दो बार कहा है; शायद अंततः एक ही समय है, ऐसा नहीं कि जागृत व्यक्ति का समय सोने वाले के लिए मान्य है, बल्कि शायद इसलिए कि दूसरा जीवन, वह जीवन जिसमें वह सोता है, अपने गहन रूप में समय की श्रेणी में शामिल नहीं है। मैं इस निष्कर्ष पर तब पहुँचा जब ला रास्पेलियर में रात के खाने के बाद की सुबह मैं पूरी तरह से सो जाता था। इसका कारण यह था कि जागने पर मैं निराश होने लगा था, जब मैंने पाया कि दस बार घंटी बजाने के बाद भी वेटर नहीं आया। ग्यारहवीं बार घंटी बजाने पर वह आया। आखिरकार वह तो पहली ही घंटी थी। बाकी दस घंटियाँ तो मेरी नींद में मात्र संकेत थीं जो अभी भी मेरे आस-पास मंडरा रही थीं, उस घंटी की जो मैं बजाना चाहता था। मेरे सुन्न हाथ हिले तक नहीं थे। खैर, उन सुबहों में (और यही कारण है कि मैं कहता हूँ कि नींद शायद समय के नियम से अनभिज्ञ होती है) जागने का मेरा प्रयास मुख्य रूप से उस अस्पष्ट, अपरिभाषित नींद को, जिसमें मैं अभी जी रहा था, समय के पैमाने में लाने का प्रयास था। यह आसान काम नहीं है; नींद, जिसे यह नहीं पता होता कि हम दो घंटे सोए हैं या दो दिन, कोई संकेत नहीं दे सकती। और अगर हमें बाहर कोई संकेत न मिले, तो समय में वापस न जा पाने के कारण हम फिर से सो जाते हैं, पाँच मिनट के लिए जो हमें तीन घंटे लगते हैं।

मैंने हमेशा यही कहा है—और प्रयोगों से सिद्ध भी किया है—कि सबसे शक्तिशाली नींद लाने वाली दवा स्वयं नींद है। दो घंटे की गहरी नींद के बाद, इतने सारे दिग्गजों से लड़ने और इतने सारे आजीवन मित्रता बनाने के बाद, जागना कई ग्राम वेरोनल लेने के बाद जागने से कहीं अधिक कठिन होता है। और इसलिए, एक बात से दूसरी बात पर तर्क करते हुए, मुझे नॉर्वेजियन दार्शनिक से यह सुनकर आश्चर्य हुआ, जिन्होंने इसे एम. बोट्रॉक्स, "मेरे प्रख्यात सहयोगी—क्षमा करें, मेरे भाई" से सुना था, कि एम. बर्गसन नींद लाने वाली दवाओं के स्मृति पर पड़ने वाले विशिष्ट प्रभावों के बारे में क्या सोचते थे। “स्वाभाविक रूप से,” एम. बर्गसन ने एम. बौट्रॉक्स से कहा था, यदि नॉर्वेजियन दार्शनिक की बात पर विश्वास किया जाए, “समय-समय पर मध्यम मात्रा में ली जाने वाली नींद की दवाएँ हमारे दैनिक जीवन की उस ठोस स्मृति पर कोई प्रभाव नहीं डालतीं जो हमारे भीतर दृढ़ता से स्थापित है। लेकिन स्मृति के अन्य रूप भी हैं, जो अधिक उच्चतर हैं, लेकिन अधिक अस्थिर भी हैं। मेरे एक सहकर्मी प्राचीन इतिहास पर व्याख्यान देते हैं। वे मुझे बताते हैं कि यदि वे रात भर सोने की गोली खा लें, तो व्याख्यान के

दौरान उन्हें आवश्यक ग्रीक उद्धरणों को याद करने में बहुत कठिनाई होती है। जिन डॉक्टर ने उन्हें ये गोलियाँ दी थीं, उन्होंने उन्हें आश्वासन दिया था कि इनका स्मृति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। 'शायद इसलिए कि आपको ग्रीक उद्धरण देने की आवश्यकता नहीं है,' इतिहासकार ने व्यंग्यपूर्ण गर्व के साथ उत्तर दिया।"

मैं यह नहीं कह सकता कि एम. बर्गसन और एम. बौट्रॉक्स के बीच हुई यह बातचीत सटीक रूप से बताई गई है या नहीं। नॉर्वेजियन दार्शनिक, हालांकि इतने गहन और स्पष्ट, इतने भावपूर्ण ढंग से ध्यान देने वाले थे, शायद उन्होंने गलत समझा हो। व्यक्तिगत रूप से, मेरे अपने अनुभव में मैंने इसका विपरीत परिणाम पाया है। कुछ मादक पदार्थों के सेवन के बाद सुबह हमें जो विस्मृति के क्षण आते हैं, वे प्राकृतिक और गहरी नींद की रात के दौरान व्याप्त विस्मृति से आंशिक रूप से ही सही, लेकिन विचलित करने वाले, मिलते-जुलते हैं। अब, दोनों ही मामलों में मैं जो भूल जाता हूँ, वह बॉडेलेयर की कोई पंक्ति नहीं है, जो दूसरी ओर मेरे कानों में गूंजती रहती है, न ही यह ऊपर बताए गए दार्शनिकों में से किसी एक की कोई अवधारणा है, बल्कि यह मेरे आस-पास की साधारण चीजों की वास्तविकता है - अगर मैं सो रहा हूँ - जिसकी मेरी अबोधता मुझे मूर्ख बनाती है; अगर मैं जाग जाऊं और कृत्रिम नींद से बाहर आऊं, तो यह पोरफिरी या प्लॉटिनस की प्रणाली नहीं है, जिस पर मैं पहले की तरह ही धाराप्रवाह चर्चा कर सकता हूं, बल्कि वह उत्तर है जो मैंने एक निमंत्रण के जवाब में देने का वादा किया था, जिसकी स्मृति एक सर्वव्यापी खालीपन से बदल गई है। उदात्त विचार अपनी जगह पर बना रहता है; नींद लाने वाली दवा ने छोटी-छोटी चीजों में, हर उस चीज में जो सक्रियता की मांग करती है, कार्य करने की शक्ति को निष्क्रिय कर दिया है—सही समय पर, रोजमर्रा की जिंदगी की किसी स्मृति को पकड़ने के लिए। मस्तिष्क के विनाश के बाद अस्तित्व के बारे में जो कुछ भी कहा जा सकता है, उसके बावजूद, मैं देखता हूं कि मस्तिष्क में प्रत्येक परिवर्तन एक आंशिक मृत्यु है। हमारे पास हमारी सभी यादें हैं, लेकिन उन्हें याद करने की क्षमता नहीं है, ऐसा प्रख्यात नॉर्वेजियन दार्शनिक एम. बर्गसन के शब्दों को दोहराते हुए कहा गया है, जिनकी भाषा का अनुकरण करने का मैंने प्रयास नहीं किया है ताकि मेरी कहानी अनावश्यक रूप से लंबी न हो जाए। लेकिन उन्हें याद करने की क्षमता नहीं है। तो फिर, वह स्मृति क्या है जिसे हम याद नहीं करते? या, वास्तव में, आइए और आगे बढ़ें। हमें

बीते तीस वर्षों की यादें याद नहीं रहतीं; फिर भी हम उनमें पूरी तरह डूबे हुए हैं; तो फिर तीस वर्षों पर ही क्यों रुकें, क्यों न इस पूर्व जीवन को अपने जन्म से पहले तक बढ़ाएँ? जिस क्षण मुझे अपने पीछे की यादों का एक पूरा हिस्सा याद नहीं रहता, जिस क्षण वे मेरे लिए अदृश्य हो जाती हैं, जिस क्षण मेरे पास उन्हें याद करने की क्षमता नहीं रहती, कौन मुझे आश्वस्त कर सकता है कि उस अज्ञात समूह में कुछ ऐसी यादें नहीं हैं जो मेरे मानव जीवन से कहीं अधिक पुरानी हों? यदि मेरे भीतर और मेरे चारों ओर इतनी सारी यादें हैं जिन्हें मैं याद नहीं कर पाता, तो यह विस्मृति (कम से कम एक वास्तविक विस्मृति, क्योंकि मेरे पास कुछ भी देखने की क्षमता नहीं है) उस जीवन तक भी फैली हो सकती है जो मैंने किसी दूसरे मनुष्य के शरीर में, यहाँ तक कि किसी दूसरे ग्रह पर भी जिया हो। एक सामान्य विस्मृति सब कुछ मिटा देती है। लेकिन उस स्थिति में, आत्मा की उस अमरता का क्या अर्थ है जिसकी वास्तविकता का दावा नॉर्वेजियन दार्शनिक ने किया था? मृत्यु के बाद मैं जो व्यक्ति बनूंगा, उसे उस व्यक्ति को याद रखने का कोई कारण नहीं होगा जो मैं अपने जन्म से अब तक रहा हूं, ठीक उसी तरह जैसे मेरे जन्म से पहले मैं जो था उसे याद रखने का कोई कारण नहीं होगा।

वेटर अंदर आया। मैंने उसे यह नहीं बताया कि मैंने कई बार घंटी बजाई थी, क्योंकि मुझे एहसास होने लगा था कि अब तक मैंने केवल सपने में ही घंटी बजने का अनुभव किया था। फिर भी, इस विचार से मैं चिंतित था कि इस सपने में अनुभव की तरह स्पष्टता थी। अनुभव में, इसके विपरीत, सपने जैसी अवास्तविकता होती है।

इसके बजाय मैंने उससे पूछा कि रात भर इतनी बार घंटी कौन बजा रहा था। उसने कहा: "कोई नहीं," और वह अपने इस कथन को साबित भी कर सकता था, क्योंकि घंटी बजने पर वह दर्ज हो जाती। फिर भी मुझे बार-बार बजने वाली, लगभग उग्र घंटियों की आवाज़ सुनाई दे रही थी जो अभी भी मेरे कानों में गूंज रही थी और कई दिनों तक सुनाई देती रही। हालांकि, ऐसा बहुत कम होता है कि नींद इस तरह हमारी जागृत अवस्था में ऐसी यादें उकेर दे जो उसके साथ ही नष्ट न हो जाएं। हम इन यादों को गिन सकते हैं। अगर नींद ने कोई विचार गढ़ा है, तो वह जल्द ही पतले, अपूरणीय टुकड़ों में टूट जाता है। लेकिन, इस मामले में, नींद ने आवाज़ें गढ़ी थीं। अधिक ठोस और सरल, वे लंबे समय तक टिकी रहीं। वेटर द्वारा बताए गए समय की अपेक्षाकृत जल्दी होने पर मैं चकित था। फिर भी मैं तरोताज़ा महसूस कर रहा था।

हल्की नींदें लंबी अवधि की होती हैं, क्योंकि जागने और सोने के बीच की एक मध्यवर्ती अवस्था होने के कारण, जो जागने की कुछ धुंधली लेकिन स्थायी छाप को संरक्षित करती है, उन्हें हमें तरोताज़ा करने के लिए गहरी नींद की तुलना में कहीं अधिक समय चाहिए होता है, जो कम समय की हो सकती है। मुझे एक और वजह से काफी आराम महसूस हुआ। अगर थकान का एहसास होना ही थकान का एहसास दिलाने के लिए काफी है, तो खुद से यह कहना कि "मैं तरोताज़ा हो गया हूँ," ताजगी पैदा करने के लिए काफी है। मैं सपना देख रहा था कि एम. डी चार्लस एक सौ दस साल के थे, और उन्होंने अपनी माँ, मैडम वर्दुरिन के कान पर एक घूंसा मारा था, क्योंकि उन्होंने वायलेट के एक गुच्छे के लिए पाँच हज़ार मिलियन दिए थे; इसलिए मुझे यकीन था कि मैं गहरी नींद सोया था, मैंने रात भर के अपने विचारों और उस पल के जीवन की सभी संभावनाओं के ठीक उलट सपना देखा था; यह मुझे पूरी तरह से तरोताज़ा महसूस कराने के लिए काफी था।

अगर मैंने अपनी माँ को बताया होता कि (जिस दिन अल्बर्टिन के लिए टोपी का ऑर्डर दिया गया था—उसे बिना कुछ बताए, ताकि यह उसके लिए एक सरप्राइज़ हो—ठीक उसी दिन) M. de Charlus ग्रैंड होटल, बालबेक के एक प्राइवेट कमरे में रात का खाना खाने के लिए किसे अपने साथ लाए थे, तो उन्हें बहुत हैरानी होती; क्योंकि वह यह समझ ही नहीं पाती थीं कि M. de Charlus Verdurins से मिलने के लिए इतनी लगन क्यों दिखाते थे। उनका मेहमान कोई और नहीं, बल्कि एक ऐसी महिला का नौकर था जो Cambremers की चचेरी बहन थी। यह नौकर बहुत ही शानदार ढंग से कपड़े पहने हुए था, और जब वह Baron के साथ हॉल से गुज़र रहा था, तो वहाँ मौजूद लोगों की नज़र में वह 'एक फैशनेबल आदमी' जैसा लग रहा था—जैसा कि Saint-Loup कहते। सच कहूँ तो, वहाँ मौजूद नौजवान पेज-बॉय—वे 'Levites' जो उस समय मंदिर की सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे, क्योंकि यह उनके ड्यूटी पर आने का समय था—उन्होंने उन दोनों अजनबियों पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया; जिनमें से एक, M. de Charlus, अपनी नज़रें नीचे झुकाए हुए थे, यह दिखाने के लिए कि वह उन पर ज़रा भी ध्यान नहीं दे रहे हैं। ऐसा लग रहा था मानो वह उन लोगों के बीच से अपना रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ रहे हों। "Prosper, एक पवित्र राष्ट्र की प्यारी उम्मीद," उन्होंने Racine के एक अंश

को याद करते हुए कहा, और उसे एक बिल्कुल ही अलग अर्थ दिया। "माफ़ करना?" नौकर ने पूछा, जो क्लासिक्स (साहित्य) का ज़्यादा जानकार नहीं था। M. de Charlus ने कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि उन्हें इस बात पर कुछ गर्व था कि वह कभी किसी सवाल का जवाब नहीं देते थे, और सीधे आगे बढ़ते जाते थे—मानो होटल में उनके अलावा कोई और मेहमान हो ही नहीं, या इस दुनिया में Baron de Charlus के अलावा किसी और का अस्तित्व ही न हो। लेकिन, Josabeth के भाषण को आगे दोहराते हुए: "आओ, आओ, मेरे बच्चों," उन्हें अचानक एक तरह की अरुचि महसूस हुई, और उन्होंने Josabeth की तरह यह नहीं जोड़ा: "उन्हें मेरे पास आने दो"; क्योंकि ये नौजवान अभी उस उम्र तक नहीं पहुँचे थे जब यौन-विकास पूरी तरह से हो जाता है—और यही वह उम्र थी जो M. de Charlus को आकर्षित करती थी। इसके अलावा, अगर उन्होंने Madame de Chevregny के नौकर को पत्र लिखा था—क्योंकि उन्हें उसकी आज्ञाकारिता पर कोई संदेह नहीं था—तो भी उन्हें उम्मीद थी कि उन्हें कोई ज़्यादा मर्दाना व्यक्ति मिलेगा। लेकिन उसे देखने पर, उन्हें वह अपनी उम्मीद से कहीं ज़्यादा स्त्रैण (औरतों जैसा) लगा। उसने उसे बताया कि वह किसी और का इंतज़ार कर रहा था, क्योंकि वह मैडम डी शेवरेग्नी के एक और नौकर को शक्ल से जानता था, जिसे उसने उनकी गाड़ी के आगे वाली सीट पर देखा था। यह एक बहुत ही देहाती किस्म का किसान था—उस आदमी से बिल्कुल अलग जो अभी आया था। दूसरी तरफ, यह आदमी अपने जनाना तौर-तरीकों को अपनी खूबसूरती बढ़ाने वाला मानता था, और उसे ज़रा भी शक नहीं था कि उसकी यही 'दुनियादारी वाली अदा' थी जिसने एम. डी चार्लस को दीवाना बना दिया था; इसलिए वह अंदाज़ा भी नहीं लगा पा रहा था कि बैरन किस आदमी की बात कर रहा है। "लेकिन घर में उसके अलावा कोई और है ही नहीं—एक आदमी है जिसे आपने शायद देखा नहीं होगा; वह बहुत ही बदसूरत है, बिल्कुल किसी बड़े-चौड़े किसान जैसा।" और यह सोचकर कि शायद इसी देहाती आदमी को बैरन ने देखा होगा, उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँची। बैरन ने यह भांप लिया, और अपनी खोज का दायरा बढ़ाते हुए कहा: "लेकिन मैंने कोई कसम तो नहीं खाई है कि मैं सिर्फ़ मैडम डी शेवरेग्नी के आदमियों को ही जानूंगा," उसने कहा। "ज़रूर यहाँ या पेरिस में किसी न किसी घर में बहुत सारे लोग होंगे—चूँकि तुम जल्द ही यहाँ से जाने वाले हो—जिनसे तुम मेरी जान-पहचान करवा सकते हो?" "ओह, नहीं!" नौकर ने

जवाब दिया, "मैं अपनी ही क्लास के किसी भी आदमी के साथ नहीं घूमता। मैं उनसे सिर्फ़ ड्यूटी के समय ही बात करता हूँ। लेकिन एक बहुत ही अच्छा आदमी है जिससे मैं आपकी जान-पहचान करवा सकता हूँ।" "कौन?" बैरन ने पूछा। "प्रिंस डी गुएरमांटेस।" एम. डी गुएरमांटेस को इस बात पर गुस्सा आया कि उसे सिर्फ़ एक बुज़ुर्ग आदमी का प्रस्ताव दिया जा रहा था—और वह भी ऐसा आदमी जिसके लिए उसे किसी नौकर के ज़रिए जान-पहचान करवाने की कोई ज़रूरत नहीं थी। और इसलिए उसने रूखे स्वर में उस प्रस्ताव को ठुकरा दिया, और उस नौकर के ऊँचे सामाजिक दिखावों से निराश हुए बिना, उसे फिर से समझाने लगा कि उसे किस तरह का आदमी चाहिए—उसका अंदाज़, उसकी किस्म—जैसे कि कोई जॉकी, वगैरह-वगैरह... इस डर से कि कहीं उस पल वहाँ से गुज़र रहे वकील ने उनकी बातें सुन न ली हों, उसने सोचा कि यह दिखाना ही समझदारी होगी कि वह दुनिया की किसी भी चीज़ के बारे में बात कर रहा है, सिवाय उस चीज़ के जिसका उसके सुनने वाले को शक हो सकता है। इसलिए उसने ज़ोर देकर और गूँजती हुई आवाज़ में कहा—लेकिन ऐसे, जैसे वह बस अपनी बातचीत जारी रखे हुए हो: "हाँ, अपनी उम्र के बावजूद, मुझे अभी भी चीज़ें जमा करने का, सुंदर चीज़ों का बहुत शौक़ है। कोई पुरानी काँसे की चीज़ या कोई पुरानी चमकदार कलाकृति पाने के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूँ। मुझे सुंदरता से बेहद प्यार है।" लेकिन नौकर को यह समझाने के लिए कि उसने कितनी तेज़ी से बात का विषय बदल दिया है, एम. डी शार्लस ने हर शब्द पर इतना ज़ोर दिया—और इससे भी बढ़कर, वकील को अपनी बात सुनाने के लिए—उसने अपने शब्द इतनी ज़ोर से चिल्लाकर कहे कि यह सारा नाटक ही अपने आप में यह बताने के लिए काफ़ी होना चाहिए था कि वह क्या छिपा रहा है; खासकर उन कानों के लिए जो अदालत के उस अधिकारी के कानों से ज़्यादा चौकस हों। उसे ज़रा भी शक नहीं हुआ—ठीक वैसे ही जैसे होटल के किसी भी दूसरे रहने वाले को नहीं हुआ—जिनमें से हर कोई उस इतने सलीके से कपड़े पहने नौकर को एक फैशनेबल विदेशी ही समझ रहा था। दूसरी ओर, अगर वे सज्जन धोखा खा गए और उसे कोई प्रतिष्ठित अमेरिकी समझ बैठे, तो जैसे ही वह नौकरों के सामने आया, उन्होंने उसे तुरंत पहचान लिया—ठीक वैसे ही जैसे एक कैदी दूसरे कैदी को पहचान लेता है; बल्कि सच कहूँ तो, उन्होंने उसे दूर से ही सूँघ लिया —ठीक वैसे ही जैसे कुछ जानवर एक-दूसरे को सूँघकर पहचान लेते हैं। मुख्य वेटर ने अपनी

भौंहें चढ़ा लीं। ऐमे ने शक भरी नज़र डाली। शराब परोसने वाले वेटर ने अपने कंधे उचकाते हुए, अपने हाथ की आड़ में (क्योंकि उसे ऐसा करना ही शिष्टता लगी) एक अपमानजनक टिप्पणी की, जिसे हर किसी ने सुन लिया। और यहाँ तक कि हमारी बूढ़ी फ्रांस्वा भी—जिसकी आँखों की रोशनी कम होती जा रही थी और जो...

उस पल सीढ़ियों के नीचे, कोरियर लोगों के साथ खाना खाने जा रही एक महिला ने अपना सिर ऊपर उठाया और एक नौकर को पहचान लिया—ऐसी जगह जहाँ होटल के मेहमानों को किसी नौकर के होने का ज़रा भी शक नहीं होता था—ठीक वैसे ही जैसे बूढ़ी दाई यूरिक्लिया, भोज में बैठे दूसरे लोगों से बहुत पहले ही, यूलिसिस को पहचान लेती है। और जब उसने देखा कि M. de Charlus उसके साथ हाथ में हाथ डाले चल रहे हैं, तो उसके चेहरे पर हैरानी और घबराहट के भाव आ गए; मानो अचानक वे सारी अफ़वाहें, जो उसने बार-बार सुनी थीं लेकिन जिन पर उसे कभी यकीन नहीं हुआ था, अब उसकी नज़रों में पूरी तरह सच लगने लगी हों। उसने इस घटना के बारे में मुझसे या किसी और से कभी कोई बात नहीं की, लेकिन इस बात ने उसके मन में ज़रूर काफ़ी हलचल मचाई होगी; क्योंकि उसके बाद, जब भी पेरिस में उसकी मुलाक़ात 'जूलियन' से होती—जिससे वह तब तक बहुत ज़्यादा जुड़ी हुई थी—तो वह अब भी उसके साथ शिष्टता से पेश आती, लेकिन उसकी वह शिष्टता अब कुछ ठंडी पड़ गई थी और उसमें हमेशा एक तरह की दूरी या परदा सा बना रहता था। इसी घटना की वजह से एक और व्यक्ति ने मुझसे अपने मन की बात कही: वह था ऐमे। जब मेरी मुलाक़ात M. de Charlus से हुई, तो उन्हें मुझसे मिलने की बिल्कुल उम्मीद नहीं थी; उन्होंने अपना हाथ उठाया और "शुभ संध्या" कहकर मेरा अभिवादन किया—कम से कम ऊपरी तौर पर तो ऐसा ही लगा—ठीक उसी बेपरवाही के साथ, जैसी किसी बड़े रईस में होती है, जो यह मानता है कि उसे कुछ भी करने की पूरी आज़ादी है और जो यह सोचता है कि कुछ भी छिपाने की कोशिश न करना ही बेहतर है। ऐमे, जो उस पल M. de Charlus को शक की नज़र से देख रहा था और जिसने यह भी देख लिया था कि मैंने उनके साथी का अभिवादन किया है—जिसके बारे में उसे पूरा यकीन था कि वह एक नौकर है—उसी शाम मुझसे पूछा कि वह व्यक्ति कौन था। दरअसल, कुछ समय से ऐमे को बातें करने का, या जैसा कि वह खुद कहता

था—शायद अपनी इन बातों के 'दार्शनिक' (उसके हिसाब से) स्वरूप पर ज़ोर देने के लिए—मेरे साथ 'चर्चा' करने का बहुत शौक हो गया था। और जब मैंने अक्सर उससे कहा कि मुझे इस बात से बहुत दुख होता है कि जब मैं खाना खा रहा होता हूँ, तो उसे मेज़ के पास खड़े रहना पड़ता है, जबकि उसे भी मेरे साथ बैठकर खाना खाना चाहिए, तो उसने कहा कि उसने पहले कभी किसी मेहमान को इतनी 'समझदारी भरी बात' करते हुए नहीं देखा था। उस पल वह दो वेटर से बातें कर रहा था। उन दोनों ने मुझे झुककर प्रणाम किया; मुझे समझ नहीं आया कि उनके चेहरे मुझे इतने अनजान क्यों लग रहे थे, हालाँकि उनकी बातचीत का लहजा मुझे कुछ-कुछ जाना-पहचाना सा ही लगा। ऐमे उन दोनों को उनकी शादी-ब्याह की योजनाओं को लेकर डाँट रहा था, क्योंकि उसे उनकी ये योजनाएँ बिल्कुल भी पसंद नहीं थीं। उन्होंने मुझसे गुहार लगाई, तो मैंने कहा कि मैं इस मामले पर कोई राय नहीं दे सकता, क्योंकि मैं उन्हें जानता ही नहीं था। उन्होंने मुझे अपने नाम बताए, और याद दिलाया कि रिवेबेल में वे अक्सर मेरी सेवा कर चुके थे। लेकिन एक ने अपनी मूँछें बढ़ा ली थीं, तो दूसरे ने उन्हें मुंडवाकर अपने बाल भी छोटे करवा लिए थे; और इसी वजह से—भले ही उनके कंधों पर वही पुराने सिर टिके थे (न कि कोई अलग सिर, जैसा कि नोट्रे-डेम के दोषपूर्ण जीर्णोद्धार में होता है)—वे मेरे लिए लगभग उतने ही अदृश्य बने रहे, जितने कि वे वस्तुएँ जो कितनी भी बारीकी से खोजने पर नहीं मिलतीं, जबकि वे असल में सबकी आँखों के सामने ही होती हैं—जैसे कि अंगीठी के ऊपर रखी कोई चीज़, जिस पर किसी का ध्यान नहीं जाता। जैसे ही मुझे उनके नाम पता चले, मैंने उनकी आवाज़ों की उस जानी-पहचानी धुन को तुरंत पहचान लिया; क्योंकि मुझे फिर से उनके वही पुराने चेहरे दिखाई देने लगे, जिनसे उनकी पहचान साफ़ हो गई थी। "ये शादी करना चाहते हैं, और इन्हें तो अंग्रेज़ी भी नहीं आती!" ऐमे ने मुझसे कहा—यह सोचे बिना कि मुझे होटल-सेवा के तौर-तरीकों की ज़्यादा जानकारी नहीं थी, और न ही मुझे यह पता हो सकता था कि जो व्यक्ति विदेशी भाषाएँ नहीं जानता, उसे नौकरी मिलने की कोई गारंटी नहीं होती। मुझे लगा कि ऐमे को यह पहचानने में कोई दिक्कत नहीं होगी कि वह नया मेहमान 'एम. दे शार्लस' हैं; बल्कि मुझे तो यह भी लगा कि उन्हें वे ज़रूर याद होंगे—क्योंकि जब मैं पिछली बार बालबेक गया था और बैरन, 'एम. दे विलेपारिसिस' से मिलने आए थे, तब ऐमे ने ही डाइनिंग-रूम में उनकी सेवा की थी। इसलिए, मैंने उसे बैरन का नाम बता

दिया। ऐमे को न सिर्फ़ बैरन दे शार्लस याद नहीं थे, बल्कि उनका नाम सुनकर वह काफ़ी हैरान भी हुआ। उसने मुझसे कहा कि अगले दिन वह अपने कमरे में एक चिट्ठी ढूँढ़ेगा, जिसके बारे में शायद मैं उसे कुछ समझा सकूँ। मुझे और भी ज़्यादा हैरानी इसलिए हुई, क्योंकि पिछले साल जब एम. दे शार्लस ने बालबेक में मुझे बर्गोट की कोई किताब देने की इच्छा ज़ाहिर की थी, तब उन्होंने ख़ास तौर पर ऐमे को ही बुलाया था; और बाद में पेरिस के उस रेस्तराँ में भी उन्होंने ऐमे को ज़रूर पहचाना होगा—जहाँ मैंने सेंट-लूप और उसकी प्रेमिका के साथ दोपहर का खाना खाया था, और जहाँ एम. दे शार्ास हम पर नज़र रखने के लिए आए थे। यह सच है कि ऐमे उन दोनों ही मौकों पर बैरन के ये काम खुद नहीं कर पाया था—क्योंकि पहली बार वह बीमार होने की वजह से बिस्तर पर पड़ा था, और दूसरी बार वह मेहमानों की सेवा करने में व्यस्त था। फिर भी, जब उसने यह दिखाने का नाटक किया कि वह M. de Charlus को नहीं जानता, तो मुझे उसकी ईमानदारी पर गहरा शक हुआ। एक बात तो यह थी कि उसने बैरन से ज़रूर कुछ माँगा होगा। Balbec Hotel के ऊपर के सभी वेटर की तरह, और Prince de Guermantes के कई नौकरों की तरह, Aimé भी एक ऐसी नस्ल का था जो Prince की नस्ल से भी ज़्यादा पुरानी थी, और इसलिए ज़्यादा कुलीन थी। जब आप बैठने के लिए कोई कमरा माँगते थे, तो पहले आपको लगता था कि आप अकेले हैं। लेकिन थोड़ी ही देर में, सर्विस-रूम में आपको एक मूर्ति जैसा वेटर दिखाई देता था—उसी लाल-चेहरे वाले Etruscan किस्म का, जिसका Aimé एक बेहतरीन उदाहरण था; शैम्पेन के बहुत ज़्यादा सेवन से वह थोड़ा बूढ़ा हो गया था, और अब उसे वह अनिवार्य समय नज़दीक आता दिख रहा था जब उसे Contrexéville का पानी पीना पड़ेगा। सभी मेहमान उनसे सिर्फ़ अपनी सेवा करवाने के लिए ही नहीं कहते थे। जो नौकर-चाकर जवान, ईमानदार और मेहनती थे—जिनकी मालकिन...

...बाहर उनका इंतज़ार कर रही ,, गाड़ियों की तरफ़ भाग निकले। इस पर ऐमे ने उन्हें डांटा कि वे गंभीर नहीं हैं। उन्हें ऐसा करने का पूरा हक़ था। वे खुद बहुत गंभीर थे। उनकी पत्नी और बच्चे थे, और वे उनके लिए बहुत महत्वाकांक्षी थे। इसलिए, जब भी कोई अनजान महिला या पुरुष उनसे संपर्क करता, तो वे उसे कभी मना नहीं करते थे—भले ही इसका मतलब उन्हें पूरी रात वहीं रुकना पड़े। क्योंकि व्यापार सबसे पहले आता है। वे कुछ इस तरह के इंसान थे

जो एम. डी शार्लस को बहुत आकर्षित करते थे; इसलिए जब उन्होंने मुझसे कहा कि वे एम. डी शार्लस को नहीं जानते, तो मुझे लगा कि वे झूठ बोल रहे हैं। लेकिन मैं गलत था। उस नौकर ने बैरन से बिल्कुल सच कहा था जब उसने बताया था कि ऐमे (जिन्होंने अगले दिन इस बात के लिए उसे खूब डांटा था) सोने चले गए हैं (या बाहर गए हुए हैं), और दूसरी बार वे किसी का इंतज़ार करने में व्यस्त थे। लेकिन कल्पना अक्सर हकीकत से आगे निकल जाती है। और शायद उस नौकर की घबराहट देखकर एम. डी शार्लस को उसके बहानों की सच्चाई पर शक हो गया था; इस शक ने उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचाई, जिसके बारे में ऐमे को ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था। इसके अलावा, हमने यह भी देखा है कि सेंट-लूप ने ऐमे को उस गाड़ी तक जाने से रोक दिया था जिसमें एम. डी शार्लस बैठे थे—एम. डी शार्लस, जिन्होंने किसी तरह उस वेटर का नया पता ढूँढ़ निकाला था, और जिन्हें वहाँ भी निराशा ही हाथ लगी। ऐमे, जिन्होंने एम. डी शार्लस को देखा ही नहीं था, उस शाम को हैरान रह गए—ठीक उसी दिन जब मैंने सेंट-लूप और उनकी प्रेमिका के साथ दोपहर का खाना खाया था—जब उन्हें 'गुएरमांटेस' परिवार की मुहर लगा एक खत मिला। मैं यहाँ उस खत के कुछ अंश पेश कर रहा हूँ—यह एक समझदार इंसान की उस एकतरफ़ा पागलपन का उदाहरण है, जो एक ऐसे बेवकूफ़ को संबोधित कर रहा है जिसमें थोड़ी-बहुत समझ तो है। "श्रीमान, मैंने बहुत कोशिश की—ऐसी कोशिशें जिन्हें देखकर वे तमाम लोग हैरान रह जाएँगे जिन्होंने मुझसे मिलने और मेरा स्वागत पाने के लिए व्यर्थ ही इंतज़ार किया है—लेकिन मैं आपको कुछ बातें समझाने में नाकाम रहा। ये बातें आपने मुझसे पूछी तो नहीं थीं, लेकिन मुझे लगा कि अपनी और आपकी गरिमा को बनाए रखने के लिए मुझे ये बातें आपको बतानी ही चाहिए। इसलिए, मैं यहाँ वही बातें लिख रहा हूँ जिन्हें आमने-सामने कहना शायद ज़्यादा आसान होता। मैं आपसे यह बात नहीं छिपाऊँगा कि, जब पहली बार बालबेक में मेरी नज़र आप पर पड़ी थी, तो मुझे आपका चेहरा बिल्कुल भी पसंद नहीं आया था।" इसके बाद उस समानता पर विचार किए गए—जिस पर ध्यान केवल अगले दिन ही गया—जो एक ऐसे दिवंगत मित्र से थी, जिनसे एम. डी शार्लस का गहरा लगाव था। तभी अचानक मेरे मन में यह विचार आया कि आप, अपने पेशे की ज़रूरतों में बिना किसी तरह की रुकावट डाले, मुझसे मिलने आ सकते हैं; और उन ताश के खेलों में मेरा साथ देकर, जिनसे उनकी हंसी-मज़ाक मेरी उदासी दूर कर देती थी, मुझे यह

भ्रम दे सकते हैं कि वे मरे नहीं हैं। आपने जो भी कमोबेश बेतुकी अटकलें लगाई होंगी—ऐसी अटकलें जो एक नौकर की सोच के ज़्यादा करीब हैं (एक ऐसा नौकर जो 'नौकर' कहलाने का भी हकदार नहीं, क्योंकि उसने सेवा करने से ही मना कर दिया है), न कि इतनी ऊँची भावना को समझने लायक—शायद आपने सोचा होगा कि आप खुद को बहुत अहमियत दे रहे हैं। आपको यह भी नहीं पता था कि मैं कौन हूँ और क्या हूँ; जब मैंने आपसे एक किताब लाने को कहा, तो आपने मुझे यह संदेश भिजवाया कि आप बिस्तर पर हैं। लेकिन यह सोचना एक भूल है कि असभ्य व्यवहार से कभी किसी का आकर्षण बढ़ता है—और वैसे भी, आपमें तो आकर्षण की पूरी तरह से कमी है। अगर अगली सुबह, इत्तेफ़ाक से, मुझे आपसे बात करने का मौका न मिला होता, तो मैं यह मामला वहीं खत्म कर देता। मेरे दिवंगत मित्र से आपकी शक्ल इतनी ज़्यादा मिलती-जुलती थी—कि आपकी बहुत ज़्यादा निकली हुई ठुड्डी की वह असहनीय बनावट भी छिप गई थी—कि मुझे एहसास हुआ कि यह तो वही दिवंगत मित्र हैं, जो उस पल आपको अपना सौम्य भाव उधार दे रहे थे, ताकि आप मुझ पर अपना प्रभाव फिर से जमा सकें और आपको मिल रहे इस अनोखे अवसर को चूकने से बचा सकें। सच कहूँ तो, हालाँकि अब मेरी कोई इच्छा नहीं है—क्योंकि अब कोई उद्देश्य नहीं बचा है और इस जीवन में आपसे दोबारा मिलने की संभावना भी कम ही है—कि मैं भौतिक हितों से जुड़े भद्दे सवाल उठाऊँ; फिर भी, मैं अपने दिवंगत मित्र की इस प्रार्थना को मानने में बेहद खुशी महसूस करता (क्योंकि मैं संतों के मिलन और जीवित लोगों की किस्मत में उनके जान-बूझकर किए गए हस्तक्षेप में विश्वास रखता हूँ) कि मैं आपके साथ वैसा ही व्यवहार करूँ जैसा मैं उनके साथ किया करता था। उनके पास अपनी गाड़ी थी, अपने नौकर थे, और उनके लिए यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि मैं अपनी संपत्ति का ज़्यादातर हिस्सा उन्हें समर्पित कर दूँ, क्योंकि मैं उनसे वैसा ही प्रेम करता था जैसा एक पिता अपने पुत्र से करता है। लेकिन आपने कुछ और ही तय किया। मेरी इस गुज़ारिश के जवाब में कि आप मेरे लिए एक किताब ले आएँ, आपने यह जवाब भिजवाया कि आपको बाहर जाना ज़रूरी है। और आज सुबह, जब मैंने आपको अपनी गाड़ी में आने का संदेश भिजवाया, तो आपने—अगर मैं बिना किसी ईशनिंदा के ऐसा कह सकूँ—तीसरी बार मुझे ठुकरा दिया। आप मुझे क्षमा करेंगे कि मैंने इस लिफाफे में वह भारी-भरकम बख्शीश नहीं रखी है... "जो मैं आपको बालबेक में देना चाहता था, और

जिस पर खुद को सीमित रखना मेरे लिए बहुत तकलीफ़देह होगा—खासकर ऐसे व्यक्ति के साथ व्यवहार करते हुए, जिसके साथ मैंने एक पल के लिए यह सोचा था कि मैं अपनी सारी संपत्ति साझा करूँगा। कम-से-कम आप मुझे अपने रेस्टोरेंट में आपको ढूँढ़ने की चौथी बेकार कोशिश करने की परेशानी से तो बचा ही सकते हैं; क्योंकि अब मेरा सब्र जवाब दे रहा है।"
(यहाँ एम. डी चार्लस ने अपना पता दिया, और बताया कि वे किन घंटों में घर पर मिलेंगे, आदि।) "विदा, श्रीमान। चूँकि मेरा मानना है कि—उस दोस्त से इतनी ज़्यादा समानता रखने के कारण जिसे मैंने खो दिया है—आप पूरी तरह से बेवकूफ़ तो नहीं हो सकते, अन्यथा..."
वरना चेहरा-मोहरा पढ़ने का शास्त्र एक झूठा विज्ञान साबित होगा। मुझे पूरा यकीन है कि अगर किसी दिन आप इस घटना के बारे में फिर से सोचेंगे, तो आपको कुछ अफ़सोस और पछतावा ज़रूर होगा। जहाँ तक मेरी बात है, तो मेरा यकीन कीजिए कि मैं पूरी ईमानदारी से कह रहा हूँ कि मेरे मन में कोई कड़वाहट नहीं है। मैं तो यही चाहता कि हम इस तीसरी बेकार की कोशिश के बजाय, किसी कम अप्रिय याद के साथ एक-दूसरे से अलग होते। यह बात जल्द ही भुला दी जाएगी। हम उन जहाज़ों की तरह हैं जिन्हें आपने बालबेक में अक्सर देखा होगा, जो एक पल के लिए एक-दूसरे के रास्ते से गुज़रे थे; शायद दोनों के लिए रुक जाना ही फ़ायदेमंद होता; लेकिन उनमें से एक ने कुछ और ही तय किया; जल्द ही वे क्षितिज पर एक-दूसरे को देखना भी बंद कर देंगे और उनकी मुलाक़ात की बात दिमाग़ से निकल जाएगी; लेकिन, इस अंतिम विदाई से पहले, उनमें से हर एक दूसरे को सलाम करता है, और इसलिए इस मोड़ पर, श्रीमान, आपके लिए हर तरह की शुभकामनाएँ देते हुए, मैं विदा लेता हूँ।
बैरन डी चार्लस।"

ऐमे ने इस पत्र को पूरा पढ़ा भी नहीं था, क्योंकि उसे कुछ समझ नहीं आया और उसे लगा कि यह एक धोखा है। जब मैंने उसे बताया कि बैरन कौन है, तो वह सोच में डूबा हुआ सा लग रहा था और उसे वही पछतावा हो रहा था जिसका अनुमान एम. डी चार्लस ने लगाया था। मैं यह कसम नहीं खा सकता कि उस समय उसने अपने दोस्तों को गाड़ियाँ देने वाले व्यक्ति को माफ़ीनामा नहीं लिखा होगा। लेकिन इसी बीच एम. डी चार्लस की मोरेल से जान-पहचान हो गई थी। यह सच था कि मोरेल के साथ उसके संबंध शायद प्लेटोनिक थे, इसलिए एम. डी

चार्लस कभी-कभी ऐसी संगति में शाम बिताना चाहता था जिसमें मैं अभी हॉल में उससे मिला था। लेकिन अब वह मोरेल से उस तीव्र भावना को दूर नहीं कर पा रहा था, जो कुछ साल पहले आज़ादी में ऐमे पर हावी हो गई थी और उसी ने वह पत्र लिखवाया था जिसने मुझे, उसके लेखक के लिए, तब परेशान कर दिया था जब मुख्य वेटर ने मुझे वह पत्र दिखाया था। एम. डी. चार्लस के प्रेम के असामाजिक स्वभाव को देखते हुए, यह जुनून की उन अगोचर, प्रचंड धाराओं का एक और भी प्रभावशाली उदाहरण था, जिनके द्वारा प्रेमी, एक तैराक की तरह, बहुत जल्द ही ज़मीन से ओझल हो जाता है। निस्संदेह, एक सामान्य व्यक्ति का प्रेम भी, जब प्रेमी अपनी इच्छाओं, पछतावों, निराशाओं और योजनाओं को लगातार गढ़ते हुए, एक ऐसी स्त्री के बारे में एक पूरा रोमांस रचता है जिसे वह जानता भी नहीं, तो कम्पास के दोनों पैर काफी चौड़े कोण पर खुल सकते हैं। फिर भी, यह कोण उस जुनून के चरित्र से असाधारण रूप से बढ़ गया था जो आमतौर पर साझा नहीं किया जाता है और एम. डी. चार्लस और ऐमे के बीच सामाजिक स्थिति के अंतर से भी।

मैं हर दिन अल्बर्टीन के साथ बाहर जाती थी। उसने दोबारा चित्रकारी शुरू करने का फैसला किया था और अपने पहले प्रयासों के लिए सेंट-जीन डे ला हाइस के चर्च को चुना था, जहाँ कोई नहीं जाता था और बहुत कम लोगों ने इसके बारे में सुना था। यह एक ऐसी जगह थी जिसका वर्णन करना कठिन था, बिना गाइड के इसे खोजना असंभव था, अपने एकांत के कारण वहाँ पहुँचना धीमा था, एप्रेविल स्टेशन से आधे घंटे से भी ज़्यादा दूर, क्रेटेहोल्म गाँव के आखिरी घरों में से एक को पीछे छोड़ने के बाद। एप्रेविल नाम के बारे में मुझे पता चला कि पादरी की किताब और ब्रिचोट की जानकारी में अंतर था। एक के अनुसार, एप्रेविल प्राचीन स्प्रेविला था; दूसरे के अनुसार, यह नाम अप्रिविला से लिया गया था। अपनी पहली यात्रा पर हमने फेटेर्न से विपरीत दिशा में, यानी ग्रेटेवास्ट की ओर जाने वाली एक छोटी ट्रेन ली। लेकिन गर्मी का मौसम था और दोपहर के भोजन के तुरंत बाद घर से बाहर निकलना बहुत मुश्किल था। मैं इतनी जल्दी निकलना नहीं चाहती थी; चमकदार और तपती हवा आलस्य और ठंडे स्थानों में आराम करने के विचार पैदा कर रही थी। मेरी माँ और मेरे कमरे में, उनकी स्थिति के अनुसार, तापमान अलग-अलग था, मानो किसी तुर्की स्नानघर के कमरे हों। माँ का ड्रेसिंग रूम, सूरज की चकाचौंध से जगमगाता हुआ, मूरिश सफेदी से भरा हुआ, किसी कुएँ की

तलहटी में डूबा हुआ सा लग रहा था, क्योंकि उसकी चारों दीवारें प्लास्टर से ढकी हुई थीं। वहीं ऊपर, खाली जगह में, आकाश, जिसकी मुलायम सफेद लहरें एक के बाद एक गुजरती हुई दिखाई दे रही थीं, (मन में उठ रही लालसा के कारण), चाहे किसी चबूतरे पर बना हो या खिड़की के ऊपर लगे दर्पण में उल्टा दिखाई दे रहा हो, नीले पानी से भरा एक तालाब जैसा लग रहा था, जो नहाने वालों के लिए आरक्षित हो। इस भीषण गर्मी के बावजूद, हमने एक बजे वाली ट्रेन पकड़ी थी। लेकिन अल्बर्टीन को डिब्बे में बहुत गर्मी लग रही थी, लंबी पैदल यात्रा में तो और भी ज्यादा गर्मी लग रही थी, और मुझे डर था कि जब वह उस नम जगह पर बैठी जहाँ सूरज की किरणें नहीं पहुँच रही थीं, तो उसे सर्दी न लग जाए। दूसरी ओर, एल्स्टिर की हमारी पहली यात्राओं के दौरान ही मैंने यह तय कर लिया था कि वह न केवल विलासिता बल्कि कुछ हद तक आराम की भी सराहना करेगी, जिससे वह पैसों की कमी के कारण वंचित थी। इसलिए मैंने बालबेक के एक कारीगर से व्यवस्था की थी कि हमें बाहर ले जाने के लिए प्रतिदिन एक गाड़ी भेजी जाए। गर्मी से बचने के लिए हमने चैंटेपी के जंगल से होकर जाने वाला रास्ता चुना। अनगिनत पक्षी, जिनमें से कुछ लगभग समुद्री पक्षी थे, हमारे दोनों ओर पेड़ों पर आपस में बातें कर रहे थे, और उनकी अदृश्यता ने वही शांति का अनुभव कराया जो आंखें बंद करने पर होता है। गाड़ी के अंदर अल्बर्टीन के बगल में, उसकी बाहों में जंजीरों से जकड़ी हुई, मैं इन ओशनिड्स को सुन रहा था। और जब संयोग से मेरी नज़र इन संगीतकारों में से एक पर पड़ी, जो एक पत्ते से दूसरे पत्ते की शरण में फुदक रहा था, तो उसके और उसके गीतों के बीच इतना कम संबंध था कि मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि मैं उस नन्हे से शरीर में, फड़फड़ाते हुए, विनम्र, चौंके हुए और दृष्टिहीन होकर, उनके गीतों का कारण देख रहा हूँ। गाड़ी हमें चर्च तक नहीं ले जा सकी। क्रेटहोल्म से गुज़रने के बाद मैंने गाड़ी रोक दी और अल्बर्टीन को अलविदा कहा। क्योंकि उसने मुझे इस चर्च और अन्य इमारतों, कुछ चित्रों के बारे में यह कहकर चिंतित कर दिया था: "आपके साथ इसे देखना कितना सुखद होगा!" यह ऐसा सुख था जो मैं उसे नहीं दे सकता था। मुझे खुद सुंदर चीजों के सामने ऐसा सुख तभी मिलता था जब मैं अकेला होता था या अकेले होने का नाटक करता था और बोलता नहीं था। लेकिन चूंकि उसे लगा कि शायद वह मेरे कारण कला की उन भावनाओं को महसूस कर पाएगी जो इस तरह व्यक्त नहीं की जा सकतीं—इसलिए मैंने यह कहना बेहतर समझा कि

मुझे उसे छोड़ना होगा, दिन के अंत में उसे लेने वापस आऊंगा, लेकिन इस बीच मुझे गाड़ी से वापस जाकर श्रीमती वर्दुरिन या कैम्ब्रेमर्स से मिलना होगा, या बालबेक में माँ के साथ एक घंटा बिताना होगा, लेकिन इससे आगे नहीं जाना है। कम से कम शुरुआत में तो नहीं। क्योंकि, एक बार अल्बर्टीन ने मुझसे चिढ़कर कहा था: "यह कितना उबाऊ है कि प्रकृति ने चीजों को इतनी बुरी तरह से व्यवस्थित किया है और सेंट-जीन डे ला हाइस को एक दिशा में और ला रास्पेलियर को दूसरी दिशा में रखा है, जिससे आप पूरे दिन देश के उस हिस्से में कैद रहते हैं जिसे आपने चुना है;" टोपी और घूंघट आते ही मैंने सेंट-फार्गेउ (पादरी की किताब के अनुसार सैंक्टस फेरेओलस) से एक मोटर-कार मंगवाई, जो अंततः मेरे लिए मुसीबत बन गई। अल्बर्टीन, जिसे मैंने अब तक अनजान रखा था और जो मुझे लेने आई थी, होटल के सामने इंजन की आवाज़ सुनकर हैरान रह गई, और यह जानकर बहुत खुश हुई कि यह मोटर हमारे लिए है। मैंने उसे एक पल के लिए अपने कमरे में ऊपर बुलाया। वह खुशी से उछल पड़ी। "हम वर्दुरिन्स से मिलने जा रहे हैं।" "हाँ, लेकिन बेहतर होगा कि आप ऐसे कपड़े पहनकर न जाएं क्योंकि आप अपनी मोटर लेकर जा रहे हैं। आप इन कपड़ों में ज़्यादा अच्छे लगेंगे।" और मैंने वो टोपी और घूंघट निकाला जिसे मैंने छुपा रखा था। "ये मेरे लिए हैं? ओह! आप तो देवदूत हैं!" वह चिल्लाई और अपनी बाहें मेरे गले में डाल दीं। ऐमे, जो सीढ़ियों पर हमसे मिला, अल्बर्टीन के शानदार पहनावे और हमारे वाहन पर गर्व करते हुए, क्योंकि बालबेक में ये वाहन अभी भी अपेक्षाकृत दुर्लभ थे, हमारे पीछे सीढ़ियों से नीचे आने का आनंद लिया। अल्बर्टीन, अपने नए कपड़ों में खुद को दिखाने के लिए उत्सुक थी, उसने मुझसे कार का दरवाजा खोलने के लिए कहा, क्योंकि हम बाद में जब अधिक एकांत चाहते थे तो इसे बंद कर सकते थे। "अब," ऐमे ने ड्राइवर से कहा, जिससे वह परिचित नहीं था और जो हिला भी नहीं था, "क्या तुम (तू) नहीं सुन रहे हो, तुम्हें अपनी छत खोलनी है?" ऐमे, होटल के जीवन से परिष्कृत हो चुका था, जिसमें उसने उच्च पद प्राप्त कर लिया था, वह उस टैक्सी ड्राइवर जितना शर्मीला नहीं था जिसके लिए फ्रांस्वा एक 'लेडी' थी; औपचारिक परिचय के अभाव के बावजूद, जिन आम लोगों को उसने पहले कभी नहीं देखा था, उन्हें वह 'तू' कहकर संबोधित करता था, हालाँकि यह कहना मुश्किल था कि यह उसकी ओर से अभिजात्य तिरस्कार था या लोकतांत्रिक भाईचारा। "मैं व्यस्त हूँ," ड्राइवर ने उत्तर दिया, जो मुझे देखकर नहीं पहचानता

था। "मुझे मैडम सिमोनट के लिए आदेश मिला है। मैं इस सज्जन को नहीं ले जा सकता।" ऐमे ज़ोर से हँस पड़ा: "अरे वाह, तुम बड़े बेवकूफ़ हो," उसने ड्राइवर से कहा, जिसे उसने तुरंत यकीन दिला दिया, "यह मैडम सिमोनट हैं, और महाशय, जो तुम्हें अपनी कार की छत खोलने के लिए कह रहे हैं, वही हैं जिन्होंने तुम्हें व्यस्त रखा है।" और ऐमे, हालाँकि व्यक्तिगत रूप से अल्बर्टीन के लिए उसके मन में कोई भावना नहीं थी, मेरे लिए उसके पहने हुए कपड़ों पर गर्व महसूस कर रहा था, उसने ड्राइवर से फुसफुसाते हुए कहा: "तुम्हें रोज़-रोज़ ऐसी राजकुमारी को गाड़ी में बिठाने का मौका नहीं मिलता, है ना?" इस पहले अवसर पर, मैं अकेला नहीं था जो अन्य दिनों की तरह ला रास्पेलियर जा सका, जबकि अल्बर्टीन चित्रकारी कर रही थी; उसने मेरे साथ वहाँ जाने का फैसला किया। उसने सोचा कि हम रास्ते में जगह-जगह रुक सकते हैं, लेकिन उसे लगा कि सेंट-जीन डे ला हाइस से शुरू करना असंभव है। यानी किसी दूसरी दिशा में जाना, और एक ऐसी यात्रा करना जो किसी और दिन के लिए तय लग रही थी। इसके विपरीत, उसे ड्राइवर से पता चला कि सेंट-जीन जाना बहुत आसान है, जो वह बीस मिनट में कर सकता है, और हम चाहें तो वहाँ घंटों रुक सकते हैं, या और आगे जा सकते हैं, क्योंकि क्रेटहोल्म से ला रास्पेलियर तक पैंतीस मिनट से ज़्यादा नहीं लगेंगे। जैसे ही गाड़ी चली, एक शानदार घोड़े की तरह एक ही छलांग में बीस कदम चल दिए, हमें इसका एहसास हो गया। दूरियाँ केवल स्थान और समय का संबंध हैं और उस संबंध के साथ बदलती रहती हैं। हम किसी स्थान तक पहुँचने में आने वाली कठिनाई को मील या किलोमीटर की प्रणाली में व्यक्त करते हैं, जो कठिनाई कम होते ही झूठी हो जाती है। कला भी इससे प्रभावित होती है, जब कोई गाँव जो किसी दूसरे गाँव से अलग दुनिया में लगता था, एक ऐसे परिदृश्य में उसका पड़ोसी बन जाता है जिसके आयाम बदल चुके होते हैं। बहरहाल, यह जानकारी कि शायद एक ऐसा ब्रह्मांड मौजूद हो जिसमें दो और दो पाँच होते हैं और दो बिंदुओं के बीच की सबसे छोटी रेखा सीधी रेखा नहीं होती, अल्बर्टाइन को उससे कहीं कम आश्चर्यचकित करती जितना कि ड्राइवर को यह कहते हुए सुनना कि एक ही दोपहर में सेंट-जीन और ला रास्पेलियर, डौविल और क्रेटेहोल्म, सेंट-मार्स ले विएक्स और सेंट-मार्स ले वेटू, गौरविले और ओल्ड बालबेक, टूरविले और फेटेर्न तक जाना आसान था, जो अब तक अलग-अलग दिनों की कोठरियों में उसी तरह कैद थे जैसे बहुत पहले मेसेग्लिस और गुएरमांटेस थे, जिन पर वही

आँखें एक दोपहर में नहीं टिक सकती थीं, अब सात-लीग के बूट पहने उस विशालकाय व्यक्ति द्वारा लाए गए, और हमारे चाय के समय के आसपास उनके टावर और मीनारें, उनके पुराने बगीचे, जिन्हें अतिक्रमण करने वाला जंगल वापस प्रकट कर रहा था, इकट्ठा हो गए।

पहाड़ी सड़क के नीचे पहुँचकर, कार ने आसानी से चढ़ाई शुरू कर दी; उस समय एक लगातार आवाज़ आ रही थी, मानो कोई चाकू तेज़ कर रहा हो, और नीचे फैला हुआ समुद्र हमारे देखते-देखते और भी विशाल होता गया। मॉन्टसर्वेन्ट के पुराने, देहाती घर हमारी ओर दौड़ते हुए से लगे—मानो उन्होंने अपनी गोद में अंगूर की बेलें या गुलाब की झाड़ियाँ थाम रखी हों। 'ला रास्पेलियर' के चीड़ के पेड़, जो शाम की हवा चलने पर भी इतने बेचैन नहीं होते थे, अब हर दिशा में भागते हुए से लगे—मानो वे हमसे दूर भागना चाहते हों। तभी एक नया नौकर, जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था, छत पर हमारे लिए दरवाज़ा खोलने आया; उधर माली का बेटा, अपनी उम्र से कहीं ज़्यादा समझदारी दिखाते हुए, उस कार को एकटक निहारता रहा। चूँकि उस दिन सोमवार नहीं था, इसलिए हमें पक्का पता नहीं था कि श्रीमती वर्दुरिन घर पर मिलेंगी या नहीं; क्योंकि सोमवार को छोड़कर—जिस दिन वह निश्चित रूप से घर पर होती थीं—बाकी दिनों में बिना पहले से सूचना दिए उनसे मिलने जाना ठीक नहीं माना जाता था। इसमें कोई शक नहीं कि वह 'मुख्यतः' घर पर ही रहती थीं; लेकिन इस शब्द का प्रयोग—जिसे श्रीमती स्वान भी तब किया करती थीं, जब वह अपना एक छोटा-सा दायरा (clan) बनाने की कोशिश में थीं, और चाहती थीं कि लोग खुद चलकर उनके पास आएँ, न कि उन्हें लोगों के पास जाना पड़े—श्रीमती स्वान की नज़र में 'सिद्धांत के तौर पर' (on principle) घर पर रहने से था; जबकि असल में इसका मतलब केवल 'सामान्य नियम के अनुसार' (as a general rule) ही होता था—यानी, जिसमें अक्सर अपवाद भी होते थे। क्योंकि श्रीमती वर्दुरिन को न केवल बाहर घूमना-फिरना पसंद था, बल्कि वह एक मेज़बान के तौर पर अपने कर्तव्यों को निभाने में भी कोई कसर नहीं छोड़ती थीं। जब वह लोगों को दोपहर के भोजन पर बुलाती थीं, तो कॉफ़ी, लिकर्स और सिगरेट के ठीक बाद—भले ही मेहमानों को गर्मी और भोजन के बाद हल्की-सी ऊंघ आ रही हो, और वे छत की पत्तियों भरी डालियों के बीच से, काँच जैसे चमकीले समुद्र पर गुज़रते 'जर्सी पैकेट' जहाज़ को देखना

ज़्यादा पसंद करते हों—उनके कार्यक्रम में कई छोटी-छोटी सैर (excursions) शामिल होती थीं। इन सैरों के दौरान, मेहमानों को ज़बरदस्ती गाड़ियों में बिठाया जाता था, और फिर उनकी मर्ज़ी हो या न हो, उन्हें डौविले के आस-पास के उन नज़ारों को दिखाने के लिए ले जाया जाता था, जिनकी वहाँ कोई कमी नहीं थी। मनोरंजन का यह दूसरा हिस्सा भी—जैसा कि अक्सर होता था (एक बार उठकर गाड़ी में बैठने की मेहनत कर लेने के बाद)—मेहमानों को पहले हिस्से जितना ही संतोषजनक लगता था। स्वादिष्ट व्यंजनों, पुरानी वाइन या ताज़गी भरे साइडर (cider) का आनंद लेने के बाद, मेहमान पहले से ही इस बात के लिए तैयार होते थे कि वे ताज़ी हवा की शुद्धता और आस-पास के नज़ारों की भव्यता में पूरी तरह खो जाएँ। श्रीमती... Verdurin अजनबियों को इन जगहों पर ऐसे ले जाती थीं, मानो ये उनकी संपत्ति के ही हिस्से हों (कमोबेश अलग-थलग), जिन्हें आप उनके साथ दोपहर के भोजन पर आने पर देखे बिना नहीं रह सकते थे, और इसके विपरीत, जिनके बारे में आपको कभी पता भी नहीं चलता, अगर उस मालकिन ने आपका आतिथ्य न किया होता। सैर-सपाटे और गाड़ी की सवारी पर, ठीक वैसे ही जैसे Morel और पहले Dechambre के वादन पर, अपना एकाधिकार जमा लेने का यह दावा—और आस-पास के नज़ारों को अपने 'छोटे से समूह' (little clan) का हिस्सा बनने पर मजबूर करना—पहली नज़र में जितना बेतुका लगता है, असल में उतना बेतुका था नहीं। Mme. Verdurin को उस 'रुचि की कमी' पर अफ़सोस होता था, जो उनके अनुसार, Cambremers ने 'la Raspelière' की साज-सज्जा और बगीचे की व्यवस्था में दिखाई थी; लेकिन उससे भी ज़्यादा उन्हें Cambremers की उस 'पहल की कमी' पर अफ़सोस था, जो वे आस-पास के ग्रामीण इलाकों में सैर-सपाटे के दौरान दिखाते थे (या अपने मेहमानों से करवाते थे)। ठीक वैसे ही, जैसे उनके अनुसार, 'la Raspelière' अब जाकर वैसा बनना शुरू हुआ था जैसा उसे हमेशा से होना चाहिए था—क्योंकि अब वह उस 'छोटे से समूह' का ठिकाना बन गया था—ठीक वैसे ही उन्होंने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि Cambremers—जो अपनी खुली गाड़ी (barouche) में बैठकर रेलवे लाइन के किनारे, समुद्र तट के पास, और ज़िले की एकमात्र 'बदसूरत सड़क' पर लगातार घूमते रहते थे—पूरी ज़िंदगी उसी जगह पर बिताने के बावजूद, असल में उस जगह को जानते ही नहीं थे। इस दावे में कुछ हद तक सच्चाई भी थी। आदत के चलते, कल्पना-शक्ति की कमी के कारण, और उस ग्रामीण इलाके

में रुचि न होने की वजह से—जो बहुत पास होने के कारण उन्हें 'घिसा-पिटा' (hackneyed) सा लगता था—Cambremers जब भी घर से बाहर निकलते थे, तो हमेशा उन्हीं पुरानी जगहों पर और उन्हीं पुरानी सड़कों से होकर जाते थे। बेशक, जब Verdurins ने उन्हें उनके अपने ही 'वतन' (native country) की सैर कराने का प्रस्ताव दिया, तो Cambremers ने इस बात पर ज़ोर का ठहाका लगाया। लेकिन जब असल में सैर पर जाने की बारी आई, तो Cambremers—और यहाँ तक कि उनका कोचवान भी—हमें उन शानदार और कुछ हद तक 'छिपी हुई' जगहों पर ले जाने में पूरी तरह असमर्थ साबित हुए, जहाँ M. Verdurin हमें ले जाते थे; कभी वे किसी निजी (लेकिन वीरान पड़ी) संपत्ति की चारदीवारी को पार करके अंदर चले जाते थे—जहाँ जाने की हिम्मत कोई दूसरा व्यक्ति शायद ही कर पाता—तो कभी वे गाड़ी छोड़कर एक ऐसे पगडंडी पर चल पड़ते थे जो पहियों वाली गाड़ियों के लिए काफ़ी चौड़ी नहीं थी; लेकिन दोनों ही स्थितियों में, उन्हें हमेशा एक बेहद अद्भुत और मनमोहक नज़ारा देखने का निश्चित इनाम मिलता था। चलते-चलते हम यह भी कह दें कि 'la Raspelière' का बगीचा, एक तरह से, कई मील के दायरे में की जाने वाली तमाम सैर-सपाटों का एक 'लघु-सार' (compendium) जैसा था। एक तो इसकी शानदार स्थिति के कारण—जहाँ एक तरफ घाटी और दूसरी तरफ समुद्र का नज़ारा दिखता था—और दूसरे इसलिए भी कि, एक ही तरफ (जैसे समुद्र की तरफ) पेड़ों के बीच से इस तरह रास्ते बनाए गए थे कि एक जगह से देखने पर आपको एक क्षितिज दिखाई देता था, और दूसरी जगह से दूसरा। देखने की इन सभी जगहों पर एक-एक बेंच रखी हुई थी; आप बारी-बारी से उस बेंच पर जाकर बैठते थे, जहाँ से बालबेक, या पारविल, या डोविल का नज़ारा दिखता था। यहाँ तक कि एक ही नज़ारे को देखने के लिए भी, एक बेंच चट्टान के बिल्कुल किनारे पर रखी होती थी, और दूसरी थोड़ी पीछे। पीछे वाली बेंच से आपको सामने हरियाली दिखाई देती थी और एक ऐसा क्षितिज नज़र आता था जो पहले से ही कल्पना से भी कहीं ज़्यादा विशाल लगता था, लेकिन जो और भी असीम हो जाता था।

यह नज़ारा और भी शानदार हो जाता, अगर आप एक छोटे से रास्ते पर चलते हुए अगली बेंच तक जाते, जहाँ से आप समुद्र के पूरे विशाल विस्तार को निहार सकते थे। वहाँ आप लहरों की आवाज़ को बिल्कुल साफ-साफ सुन सकते थे—ऐसी आवाज़ जो बगीचे के ज़्यादा एकांत

हिस्सों तक नहीं पहुँच पाती थी; उन हिस्सों में समुद्र दिखाई तो देता था, लेकिन उसकी आवाज़ सुनाई नहीं देती थी। 'ला रास्पेलियर' (la Raspelière) में रहने वाले लोग इन विश्राम-स्थलों को 'व्यूज़' (views) या 'नज़ारे' कहकर पुकारते थे। और सच भी यही था कि ये जगहें हवेली के चारों ओर आस-पास के इलाकों—चाहे वह समुद्र तट हो या जंगल—के सबसे बेहतरीन नज़ारों को समेटे हुए थीं; दूरी के कारण ये नज़ारे बहुत छोटे दिखाई देते थे, ठीक वैसे ही जैसे सम्राट हैड्रियन ने अपने विला में अलग-अलग देशों के सबसे मशहूर स्मारकों के छोटे-छोटे मॉडल इकट्ठा किए थे। 'व्यू' शब्द के साथ जो नाम जुड़ा होता था, वह ज़रूरी नहीं कि समुद्र तट पर स्थित किसी जगह का ही हो; अक्सर वह खाड़ी के दूसरी ओर स्थित तट का नाम होता था—एक ऐसा तट जिसे आप, उस विशाल परिदृश्य के बावजूद, बिल्कुल अलग और स्पष्ट रूप से पहचान सकते थे। ठीक वैसे ही, जैसे आप एम. वर्दुरिन की लाइब्रेरी से कोई किताब लेकर 'बालबेक के नज़ारे' वाली जगह पर जाकर एक घंटे तक पढ़ते थे; उसी तरह, अगर आसमान साफ होता, तो 'रिवबेल के नज़ारे' वाली जगह पर मेहमानों को 'लिकर' (शराब) परोसी जाती थी—बशर्ते हवा बहुत तेज़ न चल रही हो; क्योंकि, दोनों ओर पेड़ लगे होने के बावजूद, वहाँ ऊपर की हवा काफी ठंडी और तीखी होती थी। अब उन 'गाड़ी-सवार पार्टियों' (carriage parties) की बात करें जिन्हें एमएमई. वर्दुरिन अक्सर दोपहर के समय आयोजित किया करती थीं: अगर घर लौटने पर उन्हें किसी 'रईस मेहमान' (social butterfly) का कार्ड मिलता—जो बस 'समुद्र तट की एक छोटी-सी यात्रा' पर आया हो—तो मालकिन (एमएमई. वर्दुरिन) ऊपर से तो बहुत खुश होने का नाटक करती थीं, लेकिन असल में वह मन ही मन बहुत दुखी होती थीं कि वह मेहमान उनके यहाँ आया और उनसे मुलाकात नहीं हो पाई। ऐसे में (भले ही उस ज़माने में लोग उनके यहाँ सिर्फ 'घर देखने' या उस महिला से एक दिन की जान-पहचान बढ़ाने के लिए आते थे—जिसका कलात्मक 'सैलून' तो बहुत मशहूर था, लेकिन पेरिस के संभ्रांत समाज की मुख्यधारा से थोड़ा बाहर माना जाता था), वह फौरन एम. वर्दुरिन से कहकर उस मेहमान को अगले बुधवार के रात के खाने पर आमंत्रित करवा लेती थीं। चूंकि वह पर्यटक अक्सर उस तय दिन से पहले ही वहाँ से चला जाता था, या फिर उसे रात में देर तक बाहर रहने से डर लगता था, इसलिए एमएमई. वर्दुरिन ने यह व्यवस्था कर रखी थी कि सोमवार के दिन, 'चाय के समय' (teatime) वह हमेशा घर पर ही मौजूद रहेंगी।

ये 'चाय-पार्टियाँ' बिल्कुल भी बड़ी नहीं होती थीं; मैंने पेरिस में इस तरह की कहीं ज़्यादा शानदार और भव्य महफिलें देखी थीं—जैसे कि प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के यहाँ, एमएमई. डी गैलिफेट के यहाँ, या एमMM. d'Arpajon का। लेकिन यह पेरिस नहीं था, और इस जगह के आकर्षण ने, मेरी नज़रों में, न केवल पार्टी की सुखदता को बढ़ाया, बल्कि वहाँ आए मेहमानों की खूबियों को भी निखारा। किसी जानी-मानी हस्ती से मिलना—जो पेरिस में मुझे ज़रा भी खुशी नहीं देता—लेकिन ला रास्पेलिएर में, जहाँ वह फेतेर्न या शांतेपी के जंगल के रास्ते, दूर से चलकर आया था, उस मुलाकात का स्वरूप और महत्व ही बदल गया; वह एक सुखद घटना बन गई। कभी-कभी वह कोई ऐसा व्यक्ति होता था जिसे मैं बहुत अच्छी तरह जानता था, और जिससे मिलने के लिए मैं स्वान के यहाँ एक कदम भी आगे नहीं बढ़ता। लेकिन इस पहाड़ी पर उसका नाम कुछ अलग ही सुनाई देता था—ठीक वैसे ही जैसे किसी अभिनेता का नाम, जिसे आप थिएटर में अक्सर सुनते हैं, किसी खास जलसे के विज्ञापन में अलग रंग में छपा देखकर अचानक उसका महत्व कई गुना बढ़ जाता है, क्योंकि उस जलसे में बाकी लोगों की मौजूदगी अप्रत्याशित होती है। जैसा कि देहात में लोग बिना किसी औपचारिकता के पेश आते हैं, वह जानी-मानी हस्ती अक्सर अपने साथ उन दोस्तों को भी ले आती थी जिनके यहाँ वह ठहरी होती थी; वह श्रीमती वेर्दुरिन के कान में धीरे से यह बहाना बनाती थी कि वह उन्हें पीछे नहीं छोड़ सकती, क्योंकि वह उन्हीं के घर में रह रही है। दूसरी ओर, अपने मेज़बानों के सामने वह यह जताती थी कि वह एक तरह की शिष्टाचार-भेंट दे रही है—समुद्र किनारे की इस नीरस ज़िंदगी में, उन्हें बुद्धि और विवेक के एक केंद्र में ले जाकर, एक शानदार हवेली की सैर कराकर और बेहतरीन चाय पिलाकर, वह उन्हें एक नया अनुभव दे रही है। इस तरह, वहाँ एक साथ कई ऐसे लोग जमा हो जाते थे जिनकी अपनी एक अलग पहचान होती थी। और जिस तरह बगीचे का एक छोटा सा टुकड़ा—जिसमें कुछ पेड़ हों और जो देहात में देखने में साधारण लगे—एवेन्यू गैब्रियल या मान लीजिए 'रू दे मोंसो' में पहुँचकर बेहद आकर्षक बन जाता है (क्योंकि वहाँ ऐसी विलासिता केवल करोड़पति ही जुटा सकते हैं), ठीक उसी तरह, पेरिस की किसी पार्टी में जो लोग गौण महत्व के माने जाते थे, वही लोग ला रास्पेलिएर में सोमवार की दोपहर को अपनी पूरी अहमियत के साथ उभरकर सामने आते थे। जैसे ही वे लाल कढ़ाई वाले कपड़े से ढकी मेज़ पर, रंगीन तस्वीरों वाले पैनलों के नीचे, रॉक केक, नॉर्मन

पफ़ पेस्ट्री, नाव के आकार के टार्टलेट जिनमें मूंगे के दानों जैसी चेरी भरी थीं, और 'डिप्लोमैटिक' केक खाने के लिए बैठे, तो खिड़की से दिखने वाले गहरे नीले रंग के विशाल कटोरे (आसमान) की नज़दीकी के कारण—जिसे आप उन्हें देखते समय नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते थे—इन मेहमानों में एक गहरा बदलाव आ गया; एक ऐसा कायापलट जिसने उन्हें पहले से कहीं ज़्यादा कीमती बना दिया। यही नहीं, उन्हें देखने से पहले ही—जब आप सोमवार को मादाम वेर्डुरिन के यहाँ आते थे—तो जिन लोगों को पेरिस में किसी बड़े घर के बाहर खड़ी शानदार गाड़ियों की कतार देखने की इतनी आदत हो चुकी थी कि वे उन्हें देखकर शायद ही अपना सिर घुमाते थे, उन्हीं लोगों के दिल ला रास्पेलियर के सामने, ऊँचे-ऊँचे फ़र के पेड़ों के नीचे खड़ी दो-तीन टूटी-फूटी डॉग-कार्ट (घोड़ा-गाड़ियों) को देखकर ज़ोरों से धड़कने लगते थे। इसमें कोई शक नहीं कि ऐसा इसलिए था क्योंकि वहाँ का देहाती माहौल अलग था, और इस बदलाव की वजह से सामाजिक अनुभवों में एक तरह की ताज़गी लौट आई थी। इसकी एक वजह यह भी थी कि मादाम वेर्डुरिन से मिलने के लिए जो टूटी-फूटी गाड़ी किराए पर ली जाती थी, उसे देखकर मन में...

एक सुखद सैर और एक कोचवान के साथ की गई एक महंगी सौदेबाजी, जिसने पूरे दिन के लिए 'बहुत ज़्यादा' पैसे मांगे थे। लेकिन नए आने वालों के बारे में थोड़ी सी जिज्ञासा, जिन्हें अभी भी पहचानना नामुमकिन था, ने हर किसी को खुद से यह सवाल पूछने पर मजबूर कर दिया: "यह कौन हो सकता है?" यह एक ऐसा सवाल था जिसका जवाब देना मुश्किल था, जब किसी को पता नहीं होता कि कैम्ब्रेमर्स या कहीं और एक हफ़्ता बिताने के लिए कौन आया होगा; लेकिन लोग हमेशा अपनी देहाती, एकाकी ज़िंदगी में खुद से ऐसे सवाल पूछने का आनंद लेते हैं—ऐसी ज़िंदगी जहाँ किसी ऐसे इंसान से मिलना जिसे लंबे समय से नहीं देखा गया हो, पेरिस की ज़िंदगी की तरह कोई उबाऊ काम नहीं रह जाता, बल्कि यह उन बहुत ज़्यादा अकेली ज़िंदगी की खाली एकरसता में एक सुखद बदलाव लाता है, जहाँ डाकिया की दस्तक भी खुशी का सबब बन जाती है। और जिस दिन हम मोटर-कार से 'ला रास्पेलियर' पहुँचे—चूँकि वह सोमवार का दिन नहीं था—तो एम. और मैडम वर्दुरिन लोगों से मिलने की उस तीव्र इच्छा से ज़रूर बेचैन हो रहे होंगे, जो अक्सर पुरुषों और महिलाओं को सताती है;

यह इच्छा उस मरीज़ में भी पैदा होती है जिसे सख़्त एकांतवास में इलाज के लिए अपने परिवार और दोस्तों से दूर बंद करके रखा गया हो, और जिसके मन में खिड़की से बाहर कूद जाने की तीव्र ललक जाग उठती है। क्योंकि वह नया और ज़्यादा फुर्तीला नौकर—जो पहले ही इन बातों से परिचित हो चुका था—ने जवाब दिया कि "अगर मैडम बाहर नहीं गई हैं, तो वे ज़रूर 'डूविल के नज़ारे' वाली जगह पर होंगी," और यह कहकर कि वह जाकर उन्हें ढूँढ़ता है, वह तुरंत वापस आकर हमें यह बताने लगा कि वे हमारा स्वागत करने के लिए आ रही हैं। हमने उन्हें थोड़ा अस्त-व्यस्त पाया, क्योंकि वे फूलों की क्यारियों, फार्मयार्ड और किचन गार्डन से आ रही थीं—जहाँ वे अपने मोरों और मुर्गियों को दाना खिलाने, अंडे ढूँढ़ने, और फल-फूल इकट्ठा करके अपनी 'टेबल-सेंटर' (मेज की सजावट) बनाने गई थीं; यह सजावट उनके पार्क का ही एक छोटा रूप लगती थी। लेकिन मेज पर इस सजावट ने एक खास गरिमा ला दी थी —यह मेज पर केवल उन्हीं चीज़ों का बोझ डालती थी जो उपयोगी थीं और खाने लायक थीं; क्योंकि बगीचे से लाए गए उन अन्य उपहारों—जैसे नाशपाती और फेंटे हुए अंडे—के चारों ओर 'बग्लॉस', 'कार्नेशन', गुलाब और 'कोरियोप्सिस' के ऊँचे-ऊँचे तने खड़े थे; और इन फूलों के बीच से—मानो वे कोई फूलों से सजे हुए सीमा-स्तंभ हों—काँच की खिड़कियों के पार, समुद्र में तैरते हुए जहाज़ एक जगह से दूसरी जगह जाते हुए दिखाई दे रहे थे। एम. और मैडम की हैरानी से... वर्दुरिन, जो मेहमानों के आने की सूचना मिलने पर उनके स्वागत के लिए फूल सजा रही थीं, जब उन्होंने देखा कि आने वाले मेहमान सिर्फ़ अल्बर्टिन और मैं ही थे, तो उनके चेहरे पर हैरानी साफ़ झलक उठी। यह समझना आसान था कि नया नौकर, जो काम के प्रति बहुत उत्साही तो था, लेकिन अभी तक मेरे नाम से परिचित नहीं था, उसने मेरा नाम गलत बताया था; और श्रीमती वर्दुरिन ने, जिन मेहमानों के नाम सुने थे उन्हें वह जानती नहीं थीं, फिर भी किसी न किसी से मिलने की अपनी चाहत में, चाहे वह कोई भी हो, नौकर को उन्हें अंदर लाने का आदेश दे दिया था। और वह नया नौकर दरवाज़े पर खड़ा होकर यह सारा नज़ारा देख रहा था, ताकि वह यह समझ सके कि इस घर-गृहस्थी में हमारी क्या भूमिका है। फिर वह तेज़ी से दौड़ता हुआ, लंबे-लंबे डग भरता हुआ वहाँ से चला गया, क्योंकि उसने तो अपनी ड्यूटी बस एक दिन पहले ही शुरू की थी। जब अल्बर्टिन ने वर्दुरिन लोगों को अपनी टोपी और घूंघट अच्छी तरह दिखा लिया, तो उसने मुझे एक चेतावनी भरी नज़र से देखा, ताकि मुझे

याद दिला सके कि जिस काम के लिए हम आए थे, उसके लिए हमारे पास अब ज़्यादा समय नहीं बचा था। श्रीमती वर्दुरिन ने हमसे चाय पर रुकने का आग्रह किया, लेकिन हमने मना कर दिया; तभी अचानक एक ऐसा प्रस्ताव सामने आया, जिसने उन तमाम खुशियों पर पानी फेर दिया, जिनकी मैंने अल्बर्टिन के साथ अपनी सैर से उम्मीद की थी: मालकिन, हमसे अलग होने के विचार को सहन न कर पाने के कारण—या शायद मनोरंजन के एक नए अवसर को हाथ से न जाने देने की चाह में—ने हमारे साथ जाने का फ़ैसला कर लिया। पिछले कई सालों से उन्हें यह अनुभव रहा था कि उनकी तरफ़ से दिए गए ऐसे प्रस्तावों का स्वागत नहीं किया जाता था; और शायद इस बात को लेकर भी वह दुविधा में थीं कि उनका यह प्रस्ताव हमें पसंद आएगा या नहीं—इसलिए उन्होंने हमसे बात करते समय अपने मन में उठ रही झिझक को, अपने अत्यधिक आत्मविश्वास के पीछे छिपा लिया। और, बिना यह ज़ाहिर किए कि हमारे जवाब को लेकर कोई संदेह हो सकता है, उन्होंने हमसे कोई सवाल नहीं पूछा; बल्कि अपने पति से, अल्बर्टिन और मेरे बारे में इस तरह बात की—मानो वह हम पर कोई बहुत बड़ा एहसान कर रही हों—कि: "मैं इन्हें खुद घर तक छोड़कर आऊँगी।" उसी समय उसके होठों पर एक ऐसी मुस्कान तैर रही थी जो उसकी अपनी नहीं थी—एक ऐसी मुस्कान जिसे मैंने पहले भी कुछ लोगों के चेहरों पर देखा था, जब वे बर्गोट से बड़े जानकार अंदाज़ में कहते थे: "मैंने तुम्हारी किताब खरीदी है, यह बुरी नहीं है।" यह उन सामूहिक, सार्वभौमिक मुस्कानों में से एक थी, जिन्हें लोग—जब उन्हें इनकी ज़रूरत महसूस होती है, ठीक वैसे ही जैसे हम रेलगाड़ियों और सामान ढोने वाली गाड़ियों का इस्तेमाल करते हैं—दूसरों से उधार ले लेते हैं; सिवाय कुछ बेहद परिष्कृत लोगों के, जैसे स्वान या एम. डी चार्लस, जिनके होठों पर मैंने कभी उस मुस्कान को ठहरते हुए नहीं देखा। उसी पल से मेरी वह मुलाक़ात ज़हर-सी हो गई। मैंने ऐसा दिखावा किया मानो मुझे कुछ समझ ही न आया हो। एक पल बाद यह साफ़ हो गया कि एम. वर्दुरिन भी उस टोली का हिस्सा बनने वाले थे। "लेकिन एम. वर्दुरिन के लिए यह सफ़र बहुत लंबा हो जाएगा," मैंने आपत्ति जताई। "बिल्कुल नहीं," एमएम. वर्दुरिन ने बड़े ही कृपालु और प्रफुल्लित अंदाज़ में जवाब दिया, "उनका कहना है कि तुम जैसे युवा लोगों के साथ उस रास्ते पर जाना उन्हें बेहद आनंद देगा, जिस पर वे न जाने कितनी बार सफ़र कर चुके हैं। अगर ज़रूरत पड़ी, तो वे इंजीनियर के बगल में बैठ जाएँगे—इससे उन्हें कोई डर नहीं लगता

—और हम एक अच्छे शादीशुदा जोड़े की तरह चुपचाप ट्रेन से वापस आ जाएँगे। ज़रा उन्हें देखो तो, वे तो मारे खुशी के फूले नहीं समा रहे हैं।" ऐसा लग रहा था मानो वह किसी बुज़ुर्ग और मशहूर चित्रकार के बारे में बात कर रही हो, जो उत्साह से लबालब हो।

endliness, जो सबसे कम उम्र के लोगों से भी छोटा है, कागज़ पर आकृतियाँ बनाकर अपने पोते-पोतियों को हँसाने में आनंद लेता है। मेरे दुख की बात यह थी कि अल्बर्टिन को इसमें कोई दुख नहीं लग रहा था, बल्कि उसे तो वर्दुरिन्स के साथ इस तरह पूरे इलाके में घूमने के विचार में कुछ मज़ा आ रहा था। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने उसके साथ जिस आनंद को पाने की कसम खाई थी, वह इतना ज़बरदस्त था कि मैंने मालकिन को उसे खराब करने की इजाज़त नहीं दी; मैंने कुछ झूठे बहाने बनाए, जिन्हें मैडम वर्दुरिन की परेशान करने वाली धमकियों ने जायज़ बना दिया था, लेकिन अफ़सोस, अल्बर्टिन ने उन बहानों को काट दिया। "लेकिन हमें एक जगह जाना है," मैंने कहा। "कहाँ जाना है?" अल्बर्टिन ने पूछा। "तुम्हें बाद में पता चल जाएगा, इससे बचा नहीं जा सकता।" "ठीक है, हम बाहर इंतज़ार कर सकते हैं," मैडम वर्दुरिन ने कहा, जो किसी भी बात के लिए तैयार थीं। आखिरी मिनट में, उस खुशी को मुझसे छिनते देखकर मुझे इतना दुख हुआ, जिसकी मैंने इतनी चाहत की थी, कि मुझमें बदतमीज़ी करने की हिम्मत आ गई। मैंने साफ-साफ मना कर दिया, और मैडम वर्दुरिन के कान में कहा कि अल्बर्टिन पर कोई मुसीबत आ गई है, जिसके बारे में वह मुझसे सलाह लेना चाहती है, इसलिए यह बहुत ज़रूरी है कि मैं उसके साथ अकेले रहूँ। मालकिन नाराज़ लग रही थीं: "ठीक है, हम नहीं आएँगे," उन्होंने गुस्से से कांपती आवाज़ में मुझसे कहा। मुझे लगा कि वह इतनी ज़्यादा नाराज़ हैं कि, थोड़ा-सा झुकने का दिखावा करने के लिए: "लेकिन शायद हम..." मैंने कहना शुरू ही किया था। "नहीं," उन्होंने जवाब दिया, पहले से भी ज़्यादा गुस्से में, "जब मैं 'नहीं' कहती हूँ, तो मेरा मतलब 'नहीं' ही होता है।" मुझे लगा कि वह मुझसे नाराज़ हो गई हैं, लेकिन उन्होंने दरवाज़े पर हमें वापस बुलाया और ज़ोर देकर कहा कि हम अगले बुधवार को 'आना न भूलें', और उस अजीब-सी गाड़ी से न आएँ, जो रात में खतरनाक होती है, बल्कि उस छोटे से ग्रुप के साथ ट्रेन से आएँ; और उन्होंने मुझसे गाड़ी रुकवाई, जो पार्क के रास्ते ढलान पर नीचे जा रही थी, क्योंकि नौकर टोकरी में टार्ट का एक टुकड़ा और शॉर्टब्रेड

रखना भूल गया था, जिसे उन्होंने हमारे लिए एक पार्सल में पैक करवाया था। हम चल पड़े, और कुछ देर तक वे छोटे-छोटे घर हमारे साथ-साथ चलते रहे, जो अपने फूलों के साथ हमसे मिलने के लिए दौड़ते हुए आ रहे थे। हमें देहात का नज़ारा पूरी तरह बदला हुआ लगा; ऐसा इसलिए है क्योंकि अलग-अलग जगहों के बारे में हम अपने मन में जो भौगोलिक तस्वीर बनाते हैं, उसमें जगह का एहसास सबसे अहम चीज़ होता है। हमने कहा है कि समय का एहसास उन्हें और भी ज़्यादा अलग कर देता है। लेकिन यह अकेला कारण नहीं है। कुछ जगहें, जिन्हें हम हमेशा अकेले में देखते हैं, हमें ऐसी लगती हैं जिनका बाकी दुनिया से कोई मेल नहीं है—मानो वे दुनिया से बिल्कुल बाहर हों; ठीक उन लोगों की तरह जिन्हें हम अपनी ज़िंदगी के कुछ खास दौर में जानते हैं—जैसे हमारी फ़ौजी नौकरी के दौरान या हमारे बचपन में—और जिनका हम किसी और चीज़ से कोई नाता नहीं जोड़ पाते। बालबेक में मेरे पहले साल के दौरान, एक ऊँची जगह थी जहाँ मैडम डी विलेपैरिसिस हमें ले जाना पसंद करती थीं; वहाँ से सिर्फ़ पानी और जंगल ही दिखाई देते थे, और उस जगह का नाम 'ब्यूमॉन्ट' था। वहाँ पहुँचने के लिए वह जिस रास्ते का इस्तेमाल करती थीं—और जिसे वह उसके पुराने पेड़ों की वजह से दूसरे रास्तों के मुकाबले ज़्यादा पसंद करती थीं—वह पूरा रास्ता ऊपर की ओर चढ़ाई वाला था; इसलिए उनकी बग्घी को बहुत धीरे-धीरे चलना पड़ता था और वहाँ पहुँचने में काफ़ी ज़्यादा समय लग जाता था। जब हम चोटी पर पहुँचते थे, तो हम बग्घी से उतरकर थोड़ी देर टहलते थे, फिर से बग्घी में बैठ जाते थे, और उसी रास्ते से वापस लौट आते थे—इस पूरे सफ़र में हमें एक भी गाँव या कोई भी देहाती घर दिखाई नहीं देता था। मुझे पता था कि 'ब्यूमॉन्ट' कोई बहुत ही खास, बहुत ही दूर और बहुत ही ऊँची जगह है; लेकिन मुझे इस बात का बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था कि वह किस दिशा में पड़ता है, क्योंकि मैंने 'ब्यूमॉन्ट' वाले रास्ते का इस्तेमाल कभी भी किसी दूसरी जगह जाने के लिए नहीं किया था; इसके अलावा, बग्घी से वहाँ पहुँचने में बहुत ज़्यादा समय भी लगता था। ज़ाहिर है कि वह जगह बालबेक वाले ही 'डिपार्टमेंट' (यानी उसी प्रांत) में पड़ती थी, लेकिन मेरे लिए वह किसी दूसरी ही दुनिया में बसी हुई थी—उसे एक तरह की 'विशेष-क्षेत्रीयता' (extra-territoriality) का खास दर्जा हासिल था। लेकिन मोटर-गाड़ी किसी भी रहस्य को नहीं मानती; 'इन्कारविले' से आगे निकलने पर—जहाँ के घर अभी भी मेरी आँखों के सामने नाच रहे थे—जब हम उस रास्ते से

नीचे उतर रहे थे जो 'पारविले' (यानी 'पैटर्नी विला') की ओर जाता है, और जब हमने एक ऊँची जगह (natural terrace) से गुज़रते हुए समुद्र को देखा, तो मैंने उस जगह का नाम पूछा। इससे पहले कि ड्राइवर मुझे जवाब दे पाता, मैंने खुद ही उस जगह को पहचान लिया—वह जगह 'ब्यूमॉन्ट' ही थी! मैं जब भी छोटी वाली ट्रेन से सफ़र करता था, तो अनजाने में ही इस जगह के बिल्कुल पास से गुज़रता था—क्योंकि यह जगह 'पारविले' से सिर्फ़ दो मिनट की दूरी पर ही थी। ठीक वैसे ही जैसे मेरी रेजिमेंट का एक अफ़सर, जो मुझे एक बिल्कुल अलग ही प्राणी लगता था—इतना दयालु और सीधा-सादा कि किसी बड़े घराने का नहीं हो सकता, और साथ ही इतना दूर और रहस्यमयी भी कि सिर्फ़ किसी बड़े घराने का सदस्य भर नहीं हो सकता—और जिसके बारे में मुझे बाद में पता चला कि वह उन्हीं लोगों का जीजा या चचेरा भाई था जिनके साथ मैं खाना खा रहा था; ठीक उसी तरह, जब ब्यूमोंट अचानक उन जगहों के संपर्क में आया जिनसे मैं उसे बिल्कुल अलग मानता था, तो उसका सारा रहस्य खत्म हो गया और वह उस ज़िले का ही एक हिस्सा बन गया। इस बात ने मुझे दहशत से भर दिया कि शायद मैडम बोवरी और सैनसेवेरिना भी मुझे बिल्कुल आम लोग ही लगतीं, अगर मैं उनसे किसी उपन्यास के घुटन भरे माहौल के बजाय कहीं और मिला होता। यह सोचा जा सकता है कि रेलगाड़ी से जादुई सफ़र करने के मेरे शौक को देखते हुए, मुझे अल्बर्टिन की उस हैरानी में शामिल नहीं होना चाहिए था जो उसे मोटर-कार को देखकर होती थी—एक ऐसी कार जो किसी बीमार व्यक्ति को भी उसकी मनचाही जगह पर पहुँचा देती है, और हमारी उस धारणा को तोड़ देती है—जिसे मैं अब तक मानता आया था—कि अंतरिक्ष में किसी की स्थिति ही उसकी अपनी पहचान होती है, उसका वह अनमोल और अद्वितीय सार होती है जिसे कोई और नहीं ले सकता।

हटाए जा सकने वाली सुंदर चीज़ें। और इसमें कोई शक नहीं कि अंतरिक्ष में यह स्थिति मोटर-कार के लिए वैसी नहीं थी, जैसी कि रेलवे ट्रेन के लिए थी—जब मैं पेरिस से बालबेक आया था। ट्रेन से यात्रा करते समय, मंज़िल एक ऐसा लक्ष्य होती है जो आम ज़िंदगी की आकस्मिकताओं से मुक्त होता है; निकलते समय यह लगभग एक आदर्श जगह लगती है, और पहुँचने पर भी वैसी ही बनी रहती है—जब हम उस विशाल इमारत में पहुँचते हैं जहाँ

कोई रहता नहीं, और जिसका नाम बस उस शहर के नाम पर होता है—यानी स्टेशन। स्टेशन ऐसा लगता है मानो वह आखिरकार शहर तक पहुँचने का वादा कर रहा हो, जैसे कि स्टेशन ही उस शहर का साकार रूप हो। नहीं, मोटर-कार ने हमें इस तरह किसी जादू से उस शहर में नहीं पहुँचाया, जिसे हम पहले-पहल उसके नाम से ही पूरी तरह जान लेते हैं—ठीक वैसे ही, जैसे थिएटर में बैठा कोई दर्शक भ्रम में रहता है। इसके बजाय, मोटर-कार हमें उस थिएटर में उसके 'पार्श्व-मार्गों' (wings) से ले गई—जो असल में शहर की गलियाँ थीं—और रास्ते का पता पूछने के लिए किसी स्थानीय निवासी के पास रुकी। लेकिन, इस तरह की जानी-पहचानी यात्रा के बदले हमें कुछ और ही अनुभव मिलते हैं: जैसे कि ड्राइवर का रास्ता भटकना और बार-बार पीछे मुड़ना; नज़ारों का वह 'उलट-फेर' (general post), जिसमें कोई किला, पहाड़ी, चर्च और समुद्र—सब एक साथ नाचते हुए से लगते हैं—भले ही वह किला अपनी पुरानी झाड़ियों के नीचे छिपने की कितनी भी नाकाम कोशिशें क्यों न करे, हम उसके और करीब पहुँचते जाते हैं। फिर वे लगातार सिकुड़ते हुए घेरे, जो मोटर-कार उस 'जादू-जकड़े' शहर के चारों ओर बनाती है—शहर जो उससे बचने के लिए हर दिशा में भागता है—और अंत में, मोटर-कार सीधे नीचे उतरकर उस घाटी के ठीक बीचों-बीच पहुँच जाती है, जहाँ वह शहर ज़मीन पर धड़कता हुआ सा पड़ा रहता है। इस तरह, अंतरिक्ष में यह स्थिति—यह अनोखा बिंदु—जिसे देखकर पहले लगता था कि मोटर-कार ने 'एक्सप्रेस ट्रेनों' वाले रहस्य से वंचित कर दिया है, असल में हमें ठीक इसका उल्टा अनुभव देती है। यह हमें यह एहसास कराती है कि हम खुद कुछ नया खोज रहे हैं—जैसे किसी कंपास की मदद से हम खुद ही दिशा तय कर रहे हों—और यह हमें एक ज़्यादा प्यार-भरे, खोजबीन करने वाले हाथ से—और ज़्यादा बारीकी से—पृथ्वी की सच्ची ज्यामिति (geometry) और उसके सही माप को महसूस करने में मदद करती है।

दुर्भाग्य से, उस समय मुझे यह बात पता नहीं थी और दो साल से भी अधिक समय बाद मुझे पता चला कि उस ड्राइवर के ग्राहकों में से एक एम. डी चार्लस थे, और मोरेल को उन्हें भुगतान करने का निर्देश दिया गया था और वह खुद भी कुछ पैसे रख लेता था (जिससे ड्राइवर को तिगुना और पांचगुना अतिरिक्त माइलेज मिलता था)। मोरेल उनसे बहुत अच्छे दोस्त बन गए

थे (जबकि दूसरों के सामने वह उन्हें न जानने का नाटक करते थे) और लंबी यात्राओं के लिए उनकी कार का इस्तेमाल करते थे। अगर मुझे उस समय यह पता होता, और यह भी कि वर्दुरिन परिवार को उस ड्राइवर पर जो भरोसा होने वाला था, वह उनकी जानकारी के बिना, उस स्रोत से आया था, तो शायद अगले साल पेरिस में मेरे जीवन के कई दुखों से, अल्बर्टाइन को लेकर मेरी कई परेशानियों से बचा जा सकता था, लेकिन मुझे इसका ज़रा भी आभास नहीं था। एम. डी चार्लस की मोरेल के साथ कार से की गई यात्राओं में मेरी कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। वे आम तौर पर समुद्र तट के किनारे किसी रेस्तरां में दोपहर या रात के खाने तक ही सीमित रहते थे, जहाँ एम. डी चार्लस को एक बूढ़ा और कंगाल नौकर समझा जाता था और मोरेल, जिसका काम बिल चुकाना था, को एक बहुत ही दयालु सज्जन माना जाता था। मैं इन्हीं में से एक भोजन के दौरान हुई बातचीत का वर्णन कर रहा हूँ, जिससे आपको अन्य भोजनों का भी अंदाजा लग जाएगा। यह सेंट-मार्स-ले-वेतु के एक लंबे आकार के रेस्तरां में हुई बातचीत थी। "क्या आप इसे हटवा नहीं सकते?" एम. डी चार्लस ने मोरेल से पूछा, मानो वे कर्मचारियों से सीधे बात किए बिना किसी मध्यस्थ से अपील कर रहे हों। 'यह चीज़' एक फूलदान था जिसमें तीन मुरझाए हुए गुलाब थे, जिन्हें एक भले आदमी ने मेज को सजाने के लिए रखा था। "जी..." मोरेल ने शर्मिंदा होकर कहा। "आपको गुलाब पसंद नहीं हैं?" "मेरी विनती से तो यह साबित होना चाहिए कि मुझे गुलाब पसंद हैं, क्योंकि यहाँ गुलाब हैं ही नहीं" (मोरेल हैरान दिखे) "लेकिन सच तो यह है कि मुझे गुलाबों से कोई खास मतलब नहीं है। मुझे नामों से थोड़ी परेशानी होती है; और जब भी कोई गुलाब सुंदर होता है, तो पता चलता है कि उसका नाम बैरोनेस डी रोथ्सचाइल्ड या मारेचेल नील है, जिससे मन ठंडा पड़ जाता है। क्या आपको नाम पसंद हैं? क्या आपने अपने छोटे-छोटे कॉन्सर्ट नंबरों के लिए कोई सुंदर नाम सोचे हैं?" "एक का नाम है पोएम ट्रिस्ट।" "यह तो बहुत बुरा है," एम. डी चार्लस ने तीखी आवाज़ में जवाब दिया, जो किसी चोट की तरह गूंजी। "लेकिन मैंने तो शैम्पेन मंगाई थी?" उन्होंने मुख्य वेटर से कहा, जिसने सोचा था कि वह खाने वालों के पास झागदार पेय के दो गिलास रखकर आदेश का पालन कर रहा है। "जी महोदय।" "उस गंदगी को हटाओ, जिसका दुनिया की सबसे घटिया शराब से कोई लेना-देना नहीं है। यह कप नाम की उल्टी लाने वाली दवा है, जिसमें आमतौर पर सिरका और सोडा-पानी के मिश्रण में तीन सड़ी हुई

स्ट्रॉबेरी तैरती रहती हैं। हाँ," वह मोरेल की ओर मुड़ते हुए बोले, "लगता है तुम्हें उपाधि का मतलब नहीं पता। और जिन चीज़ों में तुम सबसे अच्छे हो, उनकी व्याख्या में भी तुम्हें माध्यम बनने की क्षमता का एहसास नहीं है।" "आपका मतलब क्या है?" मोरेल ने पूछा, जिसे बैरन की एक भी बात समझ नहीं आई थी और उसे डर था कि कहीं वह कुछ महत्वपूर्ण चीज़, जैसे दोपहर के भोजन का निमंत्रण, न चूक जाए। एम. डी चार्लस ने "आपका मतलब क्या है?" को प्रश्न नहीं समझा, और परिणामस्वरूप मोरेल को कोई उत्तर नहीं मिला, इसलिए उसने बातचीत का रुख बदलने और उसे कामुक मोड़ देने का सोचा: "देखो, उस सुंदर लड़की को जो वे फूल बेच रही है जो तुम्हें पसंद नहीं हैं; मुझे यकीन है कि उसका एक छोटा सा प्रेमी है। और अंत में मेज पर खाना खा रही उस बूढ़ी औरत को भी।" "लेकिन आपको ये सब कैसे पता?" मोरेल की सूझबूझ पर आश्चर्यचकित होकर एम. डी चार्लस ने पूछा। "अरे! मैं उन्हें पल भर में पहचान लेता हूँ। अगर हम साथ में भीड़ में निकलें, तो आप देखेंगे कि मैं कभी कोई गलती नहीं करता।" और उस समय मोरेल को देखने वाला कोई भी व्यक्ति, जिसकी मर्दाना सुंदरता में लड़कियों जैसी मासूमियत समाई थी, उस गूढ़ ज्ञान को समझ जाता, जिसने उसे कुछ महिलाओं के लिए उतना ही स्पष्ट बना दिया था जितना कि वे उसके लिए। वह जुपियन को पीछे छोड़ना चाहता था, और अपनी नियमित आय में उस मुनाफे को जोड़ना चाहता था, जो उसके अनुमान के अनुसार दर्जी को बैरन से मिलता था। "और लड़कों के मामले में तो मैं और भी पक्का हूँ, मैं आपको किसी भी गलती से बचा सकता हूँ। बालबेक में जल्द ही मेला लगने वाला है, हमें वहाँ बहुत सी चीजें मिलेंगी। और पेरिस में भी, आप देखेंगे, आपका समय अच्छा बीतेगा।" लेकिन एक नौकर की जन्मजात सावधानी ने उसे अपने वाक्य को एक अलग मोड़ देने पर मजबूर कर दिया। इसलिए एम. डी चार्लस को लगा कि वह अभी भी लड़कियों की ही बात कर रहा है। “सुनो,” मोरेल ने बैरन को लुभाने की कोशिश करते हुए कहा, “मैं एक ऐसी लड़की ढूंढना चाहता हूँ जो बिल्कुल पवित्र हो, उसे अपने प्यार में फंसाना चाहता हूँ और उसकी पवित्रता छीन लेना चाहता हूँ।” एम. डी चार्लस ने प्यार से मोरेल का कान झपकाया, लेकिन मासूमियत से कहा, “इससे तुम्हें क्या फायदा होगा? अगर तुम उसकी पवित्रता छीन लोगे, तो तुम्हें उससे शादी करनी पड़ेगी।” “शादी?” मोरेल चिल्लाया, यह समझते हुए कि बैरन शायद भ्रमित है, या फिर उस आदमी के बारे में सोच ही नहीं रहा है, जो असल में उससे कहीं

ज्यादा ईमानदार है, जिससे वह बात कर रहा है। “शादी? धिक्कार है! मैं वादा करता, लेकिन एक बार यह काम हो जाए, तो मैं उसे छोड़कर चला जाऊंगा।” एम. डी चार्लस की आदत थी कि जब कोई काल्पनिक कहानी उन्हें क्षणिक कामुक सुख देती थी, तो वे उसे सच मान लेते थे, और सुख समाप्त होते ही एक मिनट बाद अपना विश्वास पूरी तरह से त्यागने के लिए स्वतंत्र रहते थे। "क्या तुम सचमुच ऐसा करोगे?" उन्होंने मोरेल से हंसते हुए कहा और उसे और कसकर पकड़ लिया। "और क्यों नहीं?" मोरेल ने कहा, यह देखकर कि बैरन को अपनी इच्छा के बारे में बताते रहने से उन्हें कोई झटका नहीं लग रहा था। "यह खतरनाक है," एम. डी चार्लस ने कहा। "मुझे अपना सारा सामान पैक करके तैयार रखना चाहिए, और बिना कोई पता छोड़े निकल जाना चाहिए।" "और मेरा क्या?" एम. डी चार्लस ने पूछा। "मैं तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगा, बिल्कुल," मोरेल ने जल्दी से कहा, उसने कभी सोचा भी नहीं था कि बैरन का क्या होगा, जो उसकी सबसे छोटी ज़िम्मेदारी थी। "मैं कहता हूं, एक बच्ची है जिस पर मैं यह खेल खेलना चाहूंगा, वह एक छोटी दर्जी है जो एम. ले ड्यूक के होटल में दुकान चलाती है।" "जुपियन की लड़की!" बैरन ने कमरे में शराब परोसने वाले के आते ही कहा। "अरे! कभी नहीं," उन्होंने आगे कहा, शायद इसलिए कि किसी तीसरे व्यक्ति की उपस्थिति ने उनके उत्साह को ठंडा कर दिया था, या इसलिए कि इस तरह के अपवित्र समारोह में भी, जिसमें उन्हें सबसे पवित्र चीजों को अपवित्र करने में आनंद आता था, वे उन लोगों का ज़िक्र करने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे जिनसे वे मित्रता के बंधन में बंधे थे। "जुपियन एक अच्छा आदमी है, बच्ची प्यारी है, उन्हें दुखी करना शर्म की बात होगी।" मोरेल को लगा कि वह कुछ ज़्यादा ही बोल गए हैं और चुप हो गए, लेकिन उनकी निगाहें कल्पना में उस लड़की पर टिकी रहीं, जिसके लिए उन्होंने एक बार मुझसे उन्हें 'प्रिय महान स्वामी' कहकर संबोधित करने का अनुरोध किया था और जिसके लिए उन्होंने एक जैकेट मंगवाई थी। वह बच्ची मेहनती थी और उसने कभी छुट्टी नहीं ली थी, लेकिन मुझे बाद में पता चला कि जब वायलिन वादक बालबेक के आसपास थी, तो वह उसके सुंदर चेहरे के बारे में सोचना कभी नहीं छोड़ती थी, जो इस घटना से और भी आकर्षक हो गया था कि उसने मोरेल को मेरी संगति में देखकर उसे 'सज्जन' समझ लिया था।

“मैंने चोपिन को कभी वादन करते नहीं सुना,” बैरन ने कहा, “और फिर भी मैं सुन सकता था, मैंने स्टामाटी से सबक लिए थे, लेकिन उन्होंने मुझे मेरी चाची चिमे के यहाँ जाकर नॉक्टर्न के उस्ताद को सुनने से मना कर दिया था।” “यह तो उनकी सरासर बेवकूफी थी,” मोरेल ने कहा। “इसके विपरीत,” एम. डी चार्लस ने तीखी आवाज में गर्मजोशी से जवाब दिया। “उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता दिखाई। उन्हें एहसास हो गया था कि मुझमें एक ‘स्वभाव’ है और मैं चोपिन के प्रभाव में आ जाऊँगा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि जब मैं बहुत छोटा था, तब मैंने संगीत और बाकी सब कुछ छोड़ दिया था। इसके अलावा, कोई उनकी कल्पना कर सकता है,” उन्होंने धीमी, नाक से निकलने वाली, खिंची हुई आवाज में कहा, “अभी भी ऐसे लोग हैं जिन्होंने उन्हें सुना है, जो आपको एक अंदाजा दे सकते हैं। हालाँकि, चोपिन तो बस उस माध्यमवादी पहलू पर वापस आने का बहाना थे जिसे आप नजरअंदाज कर रहे हैं।”

पाठक देखेंगे कि आम बोलचाल की भाषा के कुछ अंशों का प्रयोग करने के बाद, एम. डी चार्लस अचानक अपने भाषण में पहले की तरह ही संशयपूर्ण और अहंकारी हो गए थे। मोरेल द्वारा उस लड़की को निर्दयतापूर्वक त्याग देने का विचार, जिसका उन्होंने अपमान किया था, उन्हें अचानक पूर्ण आनंद से भर गया था। उस क्षण से उनकी कामुक इच्छाएँ कुछ समय के लिए शांत हो गईं और वह क्रूर व्यक्ति (यदि आप चाहें तो उसे एक सच्चा माध्यम कह सकते हैं) जो कुछ क्षणों के लिए एम. डी चार्लस का स्थान ले चुका था, भाग गया, और कलात्मक परिष्कार, संवेदनशीलता और अच्छाई से परिपूर्ण वास्तविक एम. डी चार्लस के लिए रास्ता साफ कर दिया। "पिछले दिनों आप पंद्रहवें क्वार्टेट का पियानो रूपांतरण बजा रहे थे, जो अपने आप में बेतुका है क्योंकि पियानोवादन के लिहाज़ से इससे कम कुछ हो ही नहीं सकता। यह उन लोगों के लिए है जिनके कान उस महान बधिर संगीतकार के अत्यधिक तनावपूर्ण सुरों से आहत होते हैं। जबकि असल में वही लगभग कड़वा रहस्यवाद दिव्य है। खैर, आपने इसे बहुत ही खराब बजाया और सभी आंदोलनों को बदल दिया। आपको इसे ऐसे बजाना चाहिए जैसे आप इसकी रचना कर रहे हों: युवा मोरेल, क्षणिक बहरेपन और एक अवास्तविक प्रतिभा से पीड़ित, एक पल के लिए स्थिर खड़ा रहता है। फिर, दिव्य उन्माद से प्रेरित होकर, वह शुरुआती धुनें बजाता है, उनकी रचना करता है। इसके बाद, इस प्रारंभिक प्रयास से थककर, वह हार मान लेता है, श्रीमती वर्दुरिन को प्रसन्न करने के लिए अपनी

आकर्षक लटों को नीचे झुका देता है, और इतना ही नहीं, वह अपने दिमाग की उस विशाल मात्रा को पुनः सृजित करने के लिए समय देता है जिसे उसने पाइथियन वस्तुनिष्ठता के लिए इस्तेमाल किया है। फिर, अपनी शक्ति पुनः प्राप्त करने के बाद, एक नए और प्रबल आवेग से प्रेरित होकर..." प्रेरणा से प्रेरित होकर, वह उस उदात्त, अविनाशी वाक्यांश पर टूट पड़ता है जिसे बर्लिन के उस्ताद (हमारा मानना है कि एम. डी. चार्लस का तात्पर्य मेंडेलसन से था) निरंतर अनुकरण करते थे। "यही एकमात्र वास्तव में उत्कृष्ट और प्रेरक शैली है जिसमें मैं तुम्हें पेरिस में वादन करवाऊंगा।" जब एम. डी. चार्लस ने उसे इस तरह की सलाह दी, तो मोरेल उससे कहीं अधिक चिंतित हो गया जितना कि तब हुआ था जब उसने मुख्य वेटर को अपने तिरस्कृत गुलाब और 'कप' हटाते देखा था, क्योंकि उसने चिंता से खुद से पूछा कि इसका उसके 'वर्ग' पर क्या प्रभाव पड़ेगा। लेकिन वह इन विचारों पर विचार नहीं कर सका, क्योंकि एम. डी. चार्लस ने उससे आदेशात्मक लहजे में कहा: "मुख्य वेटर से पूछो कि क्या उसके पास बॉन क्रिश्चियन है।" "एक अच्छा ईसाई, मैं नहीं समझता।" "क्या तुम्हें दिख नहीं रहा कि हम मिठाई पर आ गए हैं, ये तो नाशपाती है। यकीन मानो, मैडम डी कैम्ब्रेमर के बगीचे में ये हैं, क्योंकि कॉम्टेस डी एस्कार्बाग्नास, जिनकी हमशक्ल ये हैं, उन्हें भी ये पसंद थीं। एम. थिबॉडियर उन्हें ये भेजते हैं और कहते हैं: 'ये एक बढ़िया क्रेटियन नाशपाती है, जिसका स्वाद चखना चाहिए।' "नहीं, मुझे नहीं पता था।" "मैं देख सकता हूँ कि तुम्हें कुछ नहीं पता। अगर तुमने मोलियर को कभी पढ़ा भी नहीं है... खैर, क्योंकि तुम खाना ऑर्डर करने में भी उतने ही असमर्थ हो जितना किसी और चीज़ में, तो बस इस इलाके में उगने वाली नाशपाती, लुईस-बोन डी एवरेंचेस, मंगवा लो।" "ये?" "एक मिनट रुको, क्योंकि तुम इतने बेवकूफ हो, मैं खुद उनसे दूसरी नाशपाती माँग लेता हूँ, जो मुझे पसंद हैं। वेटर, क्या तुम्हारे पास कोई 'डोयेनी डेस कॉमिक्स' है? चार्ली, तुम्हें डचेस एमिली डी क्लेरमोंट-टोनरे द्वारा उस नाशपाती के बारे में लिखा गया वो शानदार अंश ज़रूर पढ़ना चाहिए।" "जी नहीं, महोदय, कोई नहीं है।" "क्या आपके पास ट्रायम्फ डी जोडोइग्ने है?" "जी नहीं, महोदय।" "क्या वर्जिनी-डालेट है? या पासे-कोल्मर? नहीं? ठीक है, चूंकि आपके पास कुछ नहीं है, तो हम चलते हैं। डचेस डी'एंगौलेम अभी फैशन में नहीं है, चलो, चार्ली।" दुर्भाग्य से एम. डी चार्लस के लिए, उनकी सामान्य बुद्धि की कमी, और शायद मोरेल के साथ उनके संबंधों की पवित्रता ने भी, उन्हें इस समय वायलिन

वादक पर अजीबोगरीब उपहार लुटाने के लिए मजबूर कर दिया, जिसे दूसरा समझ नहीं पाया, और जिसका जवाब, अपने तरीके से आवेगी, लेकिन नीच और कृतघ्न स्वभाव से, केवल कठोरता या हिंसा से दे सकता था, जो लगातार बढ़ती गई और एम. डी चार्लस को - जो पहले इतने गर्वित थे, अब बिल्कुल डरपोक - घोर निराशा में डुबो दिया। हम देखेंगे कि कैसे छोटी-छोटी बातों में भी, मोरेल, जो खुद को एम. डी चार्लस से हज़ार गुना ज़्यादा महत्वपूर्ण समझता था, ने बैरन की अभिजात वर्ग के बारे में दी गई घमंडी जानकारी को अक्षरशः लेकर पूरी तरह गलत समझा। फिलहाल, जब तक अल्बर्टीन सेंट-जीन डे ला हाइस में मेरा इंतज़ार कर रही है, तब तक हम बस इतना ही कहेंगे कि अगर कोई एक चीज़ थी जिसे मोरेल कुलीनता से ऊपर रखता था (और यह अपने आप में स्पष्ट रूप से कुलीनता थी, खासकर ऐसे व्यक्ति में जिसे ड्राइवर के साथ छुप-छुपकर छोटी लड़कियों का पीछा करने में आनंद आता था), तो वह थी उसकी कलात्मक प्रतिष्ठा और वायलिन कक्षा में दूसरों की उसके बारे में क्या राय होगी। निस्संदेह यह उसके चरित्र का एक कुरूप पहलू था कि एम. डी चार्लस को अपने प्रति पूर्णतः समर्पित समझते हुए भी वह उन्हें अस्वीकार करता हुआ, उनका मज़ाक उड़ाता हुआ प्रतीत हुआ, ठीक उसी तरह जैसे जब मैंने अपने परदादा के साथ उसके पिता के संबंध का रहस्य उजागर न करने का वादा किया था, तो उसने मेरे साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया था। लेकिन दूसरी ओर, एक प्रतिष्ठित कलाकार के रूप में उनका नाम, मोरेल, उन्हें एक साधारण नाम से कहीं अधिक श्रेष्ठ प्रतीत होता था। और जब एम. डी चार्लस ने प्लेटोवादी स्नेह के अपने सपनों में डूबे हुए, उन्हें अपने परिवार की उपाधियों में से एक को अपनाने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया, तो मोरेल ने दृढ़तापूर्वक इनकार कर दिया।

जब अल्बर्टीन को सेंट-जीन डे ला हाइस में रहकर चित्रकारी करना बेहतर लगता था, तो मैं कार लेकर चला जाता था, और मैं केवल गौर्विल और फेटेर्न तक ही नहीं जाता था, बल्कि सेंट-मार्स ले वेटू और क्रिकेतोट तक भी जाता था, जहाँ तक मैं उसे वापस लाने से पहले पहुँच पाता था। हालाँकि मैं दिखावा करता था कि मैं किसी और चीज़ में व्यस्त हूँ और उसे छोड़कर दूसरे सुखों का आनंद ले रहा हूँ, लेकिन मैं केवल उसी के बारे में सोचता था। अक्सर मैं गौर्विल के ऊपर स्थित विशाल मैदान से आगे नहीं जाता था, और चूंकि यह मैदान कॉम्ब्रे के ऊपर से शुरू होकर मेसेग्लिस की दिशा में जाने वाले मैदान से थोड़ा मिलता-जुलता था, अल्बर्टाइन से

काफी दूरी पर होने के बावजूद, मुझे यह सोचकर खुशी होती थी कि अगर मेरी निगाहें उस तक नहीं पहुंच पा रही हैं, तो भी, मेरी दृष्टि से परे जाकर, वह तेज और कोमल समुद्री हवा जो मेरे पास से बह रही थी, बिना किसी रुकावट के क्रेटेहोल्म तक नीचे की ओर बह रही होगी, जब तक कि वह सेंट-जीन डे ला हैस को अपने पत्तों में ढकने वाले पेड़ों की शाखाओं को हिलाकर मेरी प्रेमिका के चेहरे को सहला न दे, और इस प्रकार इस अनिश्चित रूप से विस्तारित, लेकिन खतरे से मुक्त एकांत में उसके और मेरे बीच एक दोहरा बंधन बना रही होगी, जैसे उन खेलों में होता है जिनमें दो बच्चे क्षण भर के लिए एक-दूसरे की दृष्टि और श्रवण सीमा से बाहर हो जाते हैं, और फिर भी, दूर होते हुए भी, साथ रहते हैं। मैं उन्हीं रास्तों से लौटा, जहाँ से समुद्र का नज़ारा दिखता था, और जिन पर पहले, पेड़ों की डालियों के बीच समुद्र के प्रकट होने से पहले, मैं आँखें बंद करके यह चिंतन किया करता था कि मैं जिसे देखने जा रहा हूँ, वह वास्तव में पृथ्वी की विलाप करती पूर्वज है, जो उन दिनों की तरह अपनी उन्मादी, अनादिकालीन बेचैनी का पीछा कर रही है जब कोई जीवित प्राणी अस्तित्व में नहीं था। अब, ये रास्ते केवल अल्बर्टीन से दोबारा मिलने का साधन नहीं रह गए थे; जब मैंने उनमें से प्रत्येक को उनकी एकरूपता में पहचाना, यह जानते हुए कि वे एक सीधी रेखा में कितनी दूर तक जाएँगी, कहाँ मुड़ेंगी, मुझे याद आया कि मैं मैडम डी स्टरमारिया के बारे में सोचते हुए इन रास्तों पर चला था, और यह भी कि अल्बर्टीन को खोजने की यही उत्सुकता मैंने पेरिस में उन गलियों में चलते हुए महसूस की थी जहाँ से मैडम डी गुएरमांटेस गुज़रती होंगी; मेरे लिए उन्होंने एक गहरी नीरसता, एक प्रकार की निर्धारित रेखा का नैतिक महत्व ग्रहण कर लिया, जिसका मेरे चरित्र को अनुसरण करना चाहिए। यह स्वाभाविक था, और फिर भी यह महत्वहीन नहीं था; उन्होंने मुझे याद दिलाया कि मेरा भाग्य केवल प्रेतों का पीछा करना था, ऐसे प्राणी जिनकी वास्तविकता काफी हद तक मेरी कल्पना में विद्यमान थी; कुछ लोग सचमुच ऐसे होते हैं—और बचपन से ही मेरे साथ भी ऐसा ही रहा है—जिनके लिए दूसरों द्वारा आकलित, निश्चित मूल्य वाली सभी चीजें, जैसे धन, सफलता, उच्च पद, कोई मायने नहीं रखतीं; उन्हें बस काल्पनिक सपने चाहिए होते हैं। वे बाकी सब कुछ त्याग देते हैं, कोई कसर नहीं छोड़ते, हर चीज को उस काल्पनिक सपने को पाने के लिए समर्पित कर देते हैं। लेकिन यह सपना जल्द ही टूट जाता है; फिर वे किसी दूसरे सपने के पीछे भागते हैं, और बाद में

पहले वाले के पास लौटने के लिए तैयार रहते हैं। यह पहली बार नहीं था जब मैं अल्बर्टीन की तलाश में निकला था, उस लड़की की जिसे मैंने पहले साल समुद्र के किनारे देखा था। यह सच है कि अल्बर्टीन, जिससे मुझे पहली बार प्यार हुआ था, और जिससे मैं इस समय लगभग अलग हो चुका था, के बीच में दूसरी महिलाएं भी आ गई थीं; खासकर डचेस डी गुएरमांटेस। लेकिन पाठक कहेंगे, गिलबर्टे के बारे में इतनी चिंता क्यों, मैडम डी गुएरमांटेस के लिए इतनी मशक्कत क्यों, जबकि उनसे दोस्ती करने के बाद आप उनके बारे में सोचना ही छोड़ देते हैं और सिर्फ अल्बर्टीन के बारे में सोचते हैं? स्वान, अपनी मृत्यु से पहले, इस प्रश्न का उत्तर दे सकते थे, क्योंकि वे प्रेतों के प्रेमी थे। ऐसे प्रेतों से भरे पड़े थे जिनका पीछा किया जाता था, भुला दिया जाता था, कभी-कभी एक मुलाकात के लिए फिर से खोजा जाता था और एक अवास्तविक जीवन से संपर्क स्थापित करने के लिए जो पल भर में हाथ से निकल जाता था। बालबेक की ये सड़कें प्रेतों से भरी पड़ी थीं। जब मैंने सोचा कि उनके पेड़, नाशपाती के पेड़, सेब के पेड़, इमली के पेड़, मुझसे भी ज़्यादा समय तक जीवित रहेंगे, तो मुझे उनसे यह चेतावनी मिली कि मुझे हमेशा के लिए आराम का समय आने से पहले आखिरकार काम पर लग जाना चाहिए।

मैं क्रेटहोलम में गाड़ी से उतरा, नीचे दबे हुए रास्ते पर दौड़ा, एक तख्ते के सहारे नाले को पार किया और अल्बर्टिन को चर्च के सामने पेंटिंग करते हुए पाया—वह चर्च जिसमें ऊँची मीनारें और सजावटी पत्थर थे, जो काँटेदार और लाल था, और एक गुलाब की झाड़ी की तरह खिला हुआ लग रहा था। केवल लालटेन ही एक अखंड रूप दिखा रही थी; और पत्थर की मुस्कुराती हुई सतह पर देवदूत खिले हुए थे, जो हमारे जैसे बीसवीं सदी के जोड़े के सामने भी, हाथों में मोमबत्तियाँ लिए, तेरहवीं सदी की रस्में मनाते जा रहे थे। अल्बर्टिन उन्हीं को अपने तैयार कैनवस पर उकेरने की कोशिश कर रही थी, और एल्स्टिर की नकल करते हुए, वह लंबे-लंबे स्ट्रोक्स में रंग लगा रही थी—उस महान लय का पालन करने की कोशिश कर रही थी, जिसके बारे में उस महान गुरु ने उसे बताया था कि वह उन देवदूतों द्वारा तय की गई है, जो उसके जाने-पहचाने किसी भी देवदूत से बिल्कुल अलग थे। फिर उसने अपना सामान समेटा। एक-दूसरे का सहारा लेते हुए हम वापस उसी दबे हुए रास्ते पर ऊपर की ओर चले, उस छोटे से

चर्च को पीछे छोड़ते हुए—जो इतना शांत था मानो उसने हमें कभी देखा ही न हो—और नाले की निरंतर बहने वाली आवाज़ सुनने लगे। थोड़ी देर बाद गाड़ी चल पड़ी, और हमें एक अलग रास्ते से घर ले जाने लगी। हम 'मारकोविल ल'ऑर्गुइल्यूज़' से गुज़रे। उसके चर्च के ऊपर—जो आधा नया और आधा मरम्मत किया हुआ था—ढलता हुआ सूरज अपनी सुनहरी चमक बिखेर रहा था, जो सदियों पुरानी चमक जैसी ही महीन थी। उस चमक के बीच से, चर्च की बड़ी-बड़ी नक्काशीदार मूर्तियाँ (bas-reliefs) ऐसी लग रही थीं मानो वे किसी तैरती हुई परत के पीछे से दिखाई दे रही हों—जो आधी तरल और आधी चमकदार थी; पवित्र कुंवारी मरियम, संत एलिज़ाबेथ और संत जोआचिम उस अमूर्त लहर में तैरते हुए से लग रहे थे—लगभग सूखी ज़मीन पर ही, या शायद पानी और सूरज की रोशनी की सतह पर। गर्म धूल के गुबार में ऊपर उठती हुई, कई आधुनिक मूर्तियाँ अपने खंभों पर खड़ी होकर, ढलते सूरज के सुनहरे जाल के बीचों-बीच तक पहुँच रही थीं। चर्च के सामने खड़ा एक लंबा सरू का पेड़ (cypress) किसी पवित्र घेरे के अंदर खड़ा हुआ सा लग रहा था। उसे देखने के लिए हम एक पल के लिए गाड़ी से उतरे और थोड़ी देर टहलते रहे। अपने शरीर के अंगों की ही तरह, अल्बर्टिन को अपनी लेघॉर्न घास-फूस की टोपी और रेशमी घूंघट का भी पूरा-पूरा एहसास था (जो उसके लिए किसी भी तरह कम संतोष का स्रोत नहीं थे), और चर्च के चारों ओर टहलते हुए, उसे उन चीज़ों से एक अलग ही तरह की ऊर्जा मिल रही थी—जो एक ऐसी संतुष्टि के रूप में ज़ाहिर हो रही थी जो निष्क्रिय तो थी, लेकिन जिसमें मुझे एक खास तरह का आकर्षण नज़र आया; घूंघट और टोपी, जो मेरी सहेली का एक नया और बाहरी हिस्सा थे, लेकिन फिर भी मुझे बहुत प्यारे थे; मैं शाम की हवा में सरू के पेड़ों के पास से गुज़रते हुए अपनी नज़रों से उनके पीछे-पीछे चल रहा था। वह खुद तो उन्हें देख नहीं सकती थी, लेकिन उसे अंदाज़ा था कि उनका असर बहुत अच्छा लग रहा है, क्योंकि उसने मेरी तरफ देखकर मुस्कुराया; उसने अपने सिर के अंदाज़ को उस टोपी के साथ पूरी तरह से मिला लिया था, जो उसके रूप को पूरा कर रही थी। "मुझे यह पसंद नहीं है, इसकी मरम्मत की गई है," उसने चर्च की तरफ इशारा करते हुए मुझसे कहा। उसे याद आ गया था कि एल्सतिर ने उससे पुराने पत्थरों की अनमोल और बेजोड़ सुंदरता के बारे में क्या कहा था। अल्बर्टिन एक नज़र में ही पहचान लेती थी कि किसी चीज़ की मरम्मत की गई है या नहीं। वास्तुकला के मामले में उसने जिस तरह का पक्का और

बेहतरीन ज़ौक़ (पसंद) हासिल कर लिया था, उसे देखकर कोई भी हैरान हुए बिना नहीं रह सकता था; खासकर तब, जब संगीत के मामले में उसका ज़ौक़ अभी भी बहुत ही खराब था। एल्सतिर की तरह मुझे भी इस चर्च में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी; इसका धूप से नहाया हुआ बाहरी हिस्सा जब मेरी आँखों के सामने आया, तो मुझे कोई खुशी नहीं हुई। मैं तो बस अल्बर्टिन का मान रखने के लिए ही कार से बाहर निकला था, ताकि मैं इसे देख सकूँ। लेकिन, मुझे लगा कि उस महान इंप्रेशनिस्ट कलाकार ने अपनी ही बात काट दी थी; भला चर्च की वास्तुकला की बाहरी कीमत को इतना बढ़ा-चढ़ाकर क्यों पेश किया जाए, और सूरज डूबने के समय चर्च में आने वाले उस जादुई बदलाव को नज़रअंदाज़ क्यों किया जाए? "नहीं, बिल्कुल नहीं," अल्बर्टिन ने कहा, "मुझे यह पसंद नहीं है; मुझे तो बस इसका नाम 'ऑर्गुइल्यूज़' (orgueilleuse) पसंद है। लेकिन मुझे ब्रिशो से यह पूछना याद रखना होगा कि 'सेंट-मार्स' को 'ले वेटू' (le Vêtu) क्यों कहा जाता है। हम अगली बार वहीं जाएँगे, है ना?" उसने अपनी काली आँखों से मेरी तरफ देखते हुए कहा। उसकी टोपी उसकी आँखों के ऊपर तक नीचे खिंची हुई थी, ठीक वैसे ही जैसे बहुत पहले उसकी छोटी-सी पोलो टोपी हुआ करती थी। उसका घूंघट उसके पीछे हवा में लहरा रहा था। मैं उसके साथ वापस कार में बैठ गया। इस बात को सोचकर मुझे बहुत खुशी हो रही थी कि अगले दिन हम 'सेंट-मार्स' जाएँगे। वहाँ, इस चिलचिलाती गर्मी में—जब इंसान को बस नहाने के मज़े के बारे में ही सोचने का मन करता है—चर्च के दो पुराने शिखर, जो हल्के गुलाबी (सैल्मन-पिंक) रंग के थे और जिन पर हीरे के आकार की टाइलें लगी थीं, हवा लेने के लिए थोड़े-से खुले हुए से लगते थे। वे देखने में बिल्कुल दो पुरानी, नुकीले मुँह वाली मछलियों जैसे लगते थे—जिनके शरीर पर शल्क (scales) जड़े हों, जो काई से ढकी हों और लाल रंग की हों—और जो बिना हिले-डुले, किसी नीले और साफ़-सुथरे पानी में ऊपर की तरफ उठ रही हों। मार्कोविल से निकलते समय, रास्ता छोटा करने के लिए, हम एक चौराहे पर मुड़ गए जहाँ एक फ़ार्म था। कभी-कभी अल्बर्टिन कार वहीं रुकवा देती और मुझसे अकेले जाकर कैल्वाडोस या साइडर की एक बोतल लाने को कहती, ताकि वह उसे कार में ही पी सके; वहाँ के लोगों ने मुझे यकीन दिलाया था कि वह बोतल फ़िज़ वाली (गैस वाली) नहीं है, लेकिन असल में उसने हमें सिर से पाँव तक भिगो दिया। हम एक-दूसरे से सटकर बैठे थे। फ़ार्म के लोग बंद कार में अल्बर्टिन को

मुश्किल से ही देख पा रहे थे; मैंने उन्हें उनकी बोतलें वापस कर दीं; और हम फिर आगे बढ़ गए—मानो हम अपनी उस निजी ज़िंदगी को, उस प्रेम-जीवन को जारी रखना चाहते हों, जिसके बारे में वे शायद सोच रहे थे कि हम जी रहे हैं, और जिसके बीच जलपान के लिए यह ठहराव बस एक मामूली सा पल था। यह अनुमान उन्हें और भी ज़्यादा सही लगता, अगर वे अल्बर्टिन के साइडर की बोतल पी लेने के बाद हमें देखते; उस समय ऐसा लग रहा था कि वह मेरे और अपने बीच ज़रा सा भी फ़ासला बर्दाश्त नहीं कर पा रही थी—एक ऐसा फ़ासला जो आम तौर पर उसे परेशान नहीं करता था; अपनी लिनन की स्कर्ट के नीचे, उसके पैर मेरे पैरों से सटे हुए थे, और वह फिर से मेरे और भी करीब आ गई।

उसने अपने गाल मेरे गालों से सटा दिए—उसके गाल जो पहले पीले पड़ गए थे, अब गालों की हड्डियों के ऊपर गर्म और लाल हो गए थे; उनमें कुछ ऐसा जोशीला और मुरझाया-सा भाव था, जैसा अक्सर झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाली लड़कियों में देखने को मिलता है। ऐसे पलों में, जितनी तेज़ी से उसकी शख्सियत बदलती थी, उतनी ही तेज़ी से उसकी आवाज़ भी बदल जाती थी; वह अपनी असली आवाज़ को छोड़कर एक दूसरी ही आवाज़ अपना लेती थी—एक कर्कश, बेबाक और लगभग बेलगाम-सी आवाज़। रात ढलने लगी थी। उसके सिर पर टोपी और चेहरे पर घूंघट के साथ, उसे अपने शरीर से टिके हुए महसूस करना कितना सुखद था; यह एहसास मुझे याद दिलाता था कि प्यार में डूबे जोड़े हमेशा इसी तरह—एक-दूसरे के बगल में बैठे हुए ही—नज़र आते हैं। शायद मैं अल्बर्टिन से प्यार करता था, लेकिन मैंने कभी अपने प्यार को उसके सामने ज़ाहिर करने की हिम्मत नहीं जुटाई—हालाँकि वह प्यार मेरे भीतर मौजूद था। इसलिए, मेरा वह प्यार किसी अमूर्त सत्य जैसा ही था—जिसका तब तक कोई मोल नहीं होता, जब तक उसे किसी प्रयोग या अनुभव की कसौटी पर कसकर परखा न जाए। जैसा कि उस वक़्त था, मेरा प्यार मुझे अवास्तविक-सा और जीवन की असलियत से कोसों दूर जान पड़ता था। जहाँ तक मेरी ईर्ष्या का सवाल था, वह मुझे इस बात के लिए उकसाती रहती थी कि मैं अल्बर्टिन से ज़्यादा से ज़्यादा समय तक जुड़ा रहूँ—हालाँकि मैं यह भी जानता था कि मेरी यह ईर्ष्या तब तक पूरी तरह से शांत नहीं होगी, जब तक मैं उससे हमेशा-हमेशा के लिए अलग नहीं हो जाता। उसकी मौजूदगी में भी मैं अपनी ईर्ष्या को महसूस

कर सकता था, लेकिन मैं इस बात का पूरा ध्यान रखता था कि वे परिस्थितियाँ दोबारा न पैदा हों, जिनके कारण मेरी ईर्ष्या भड़क उठी थी। उदाहरण के लिए, एक बार एक सुहावनी सुबह, हम दोपहर का भोजन करने के लिए 'रिवबेल' (Rivebelle) गए। भोजन-कक्ष (डाइनिंग-रूम) और उस गलियारे-नुमा हॉल के बड़े-बड़े शीशे वाले दरवाज़े खुले हुए थे—जिस हॉल में चाय परोसी जाती थी। दरवाज़ों के पार, बाहर की तरफ़ धूप से नहाया हुआ हरा-भरा लॉन दिखाई दे रहा था, और वह विशाल रेस्तरां भी उसी लॉन का एक हिस्सा जान पड़ता था। वह वेटर—जिसका चेहरा हमेशा सुर्ख़ रहता था और जिसके काले बाल आग की लपटों की तरह लहराते थे—उस विशाल जगह में एक छोर से दूसरे छोर तक तेज़ी से भागता-फिरता था; हालाँकि, अब उसकी रफ़्तार पहले जितनी तेज़ नहीं थी, क्योंकि अब वह केवल एक सहायक (assistant) नहीं रह गया था, बल्कि अब वह मेज़ों की एक पूरी कतार का इंचार्ज बन चुका था। फिर भी, अपनी स्वाभाविक फुर्ती के चलते, वह कभी दूर भोजन-कक्ष के भीतर नज़र आता था, तो कभी पास ही, लेकिन दरवाज़े के बाहर—उन मेहमानों की सेवा करते हुए, जिन्होंने बगीचे में बैठकर भोजन करना पसंद किया था। वह कभी यहाँ, तो कभी वहाँ—हर जगह नज़र आता था; ऐसा लगता था मानो कोई युवा देवता दौड़ रहा हो, और उसकी एक के बाद एक कई मूर्तियाँ अलग-अलग जगहों पर खड़ी हों—कुछ मूर्तियाँ तो उस हवेली के भीतर खड़ी हों (जहाँ काफ़ी रोशनी थी और जिसके चारों ओर हरे-भरे घास के मैदान फैले हुए थे), और कुछ मूर्तियाँ पेड़ों की छाँव में, खुले आसमान के नीचे, जीवन की उस चमकीली रोशनी में खड़ी हों। एक पल के लिए, वह हमारे बिल्कुल करीब आ गया। अल्बर्टिन ने, जो मैंने अभी उससे कहा था, उसका जवाब अनमने ढंग से दिया। वह गोल-गोल आँखों से उसे घूरे जा रही थी। एक-दो मिनट के लिए मुझे लगा कि कोई उस व्यक्ति के करीब हो सकता है जिससे वह प्यार करता है, और फिर भी वह व्यक्ति उसके साथ न हो। ऐसा लग रहा था मानो वे किसी रहस्यमयी बातचीत में मग्न हों, जो मेरी मौजूदगी से खामोश हो गई थी; शायद यह अतीत की मुलाकातों का सिलसिला था जिनके बारे में मुझे कुछ पता नहीं था, या शायद बस एक नज़र का असर था जो उसने उस पर डाली थी—जिसमें मैं एक 'तीसरा अजनबी' (terzo incomodo) था, जिससे बाकी लोग बातें छिपाने की कोशिश करते हैं। यहाँ तक कि जब उसके मालिक ने उसे ज़बरदस्ती वापस बुला लिया और वह हमसे दूर चला गया, तब भी

अल्बर्टिन खाना खाते हुए रेस्टोरेंट और उसके बगीचों को बस एक रोशन दौड़ने का रास्ता (running-track) समझ रही थी; जिस पर अलग-अलग नज़ारों के बीच, कभी यहाँ तो कभी वहाँ, काले बालों वाला वह फुर्तीला देवता नज़र आ रहा था। एक पल के लिए मैंने खुद से पूछा कि कहीं वह उठकर उसके पीछे तो नहीं चली जाएगी, और मुझे मेरी मेज़ पर अकेला तो नहीं छोड़ जाएगी? लेकिन उसके बाद के दिनों में, मैं इस तकलीफ़देह एहसास को हमेशा के लिए भूलने लगा, क्योंकि मैंने तय कर लिया था कि मैं अब कभी रिवेबेल (Rivebelle) वापस नहीं जाऊँगा। मैंने अल्बर्टिन से एक वादा ले लिया था, और उसने मुझे यकीन दिलाया था कि वह पहले कभी वहाँ नहीं गई थी और न ही कभी दोबारा वहाँ जाएगी। और मैंने इस बात से भी इनकार किया कि उस फुर्तीले वेटर की नज़रें सिर्फ़ उसी पर टिकी थीं, ताकि उसे यह न लगे कि मेरी संगति की वजह से वह किसी खुशी से महरूम रह गई। कभी-कभार ऐसा भी होता था कि मैं फिर से रिवेबेल चला जाता—लेकिन अकेला—और वहाँ ज़रूरत से ज़्यादा शराब पी लेता, जैसा कि मैं पहले भी वहाँ किया करता था। जब मैंने अपना आखिरी जाम खत्म किया, तो मैंने सफ़ेद दीवार पर बने एक गोल डिज़ाइन को घूरा, और उस पल मुझे जो खुशी महसूस हो रही थी, उसे पूरी तरह उसी पर केंद्रित कर दिया। उस पल दुनिया में सिर्फ़ उसी का मेरे लिए कोई वजूद था; मैं अपनी डगमगाती नज़रों से कभी उसका पीछा करता, कभी उसे छूता और कभी उसे खो देता; और भविष्य के प्रति पूरी तरह बेपरवाह होकर, मैं उस दीवार पर बने डिज़ाइन में ही संतोष ढूँढ़ रहा था—ठीक वैसे ही जैसे कोई तितली किसी दूसरी स्थिर तितली के चारों ओर चक्कर लगाती है, और अंत में उसी के साथ मिलकर अपने जीवन की परम परिणति को प्राप्त कर लेती है। शायद यह पल उस औरत को छोड़ने के लिए सबसे सही था —एक ऐसी औरत, जिसके कारण पैदा हुई तकलीफ़ से राहत पाने के लिए मुझे किसी मरहम की ज़रूरत नहीं थी; क्योंकि अक्सर ऐसा होता है कि जो लोग तकलीफ़ देते हैं, मरहम भी उन्हीं के पास होता है। इन्हीं सैरों से मुझे सुकून मिला; हालाँकि उस पल मैंने उन्हें आने वाले कल की बस एक झलक से ज़्यादा कुछ नहीं समझा—और वह आने वाला कल भी, भले ही उसने मुझे कितनी ही चाहत से भर दिया हो, आज से कुछ अलग नहीं होने वाला था—फिर भी उनमें एक अलग ही आकर्षण था। यह आकर्षण उन जगहों से अलग होने का था जहाँ अल्बर्टिन अब तक अक्सर जाती थी और जहाँ मैं उसके साथ कभी नहीं गया था—जैसे उसकी

मौसी का घर या उसकी सहेलियों के घर। यह आकर्षण किसी पक्की खुशी का नहीं, बल्कि सिर्फ़ एक चिंता के शांत होने का था—फिर भी यह काफ़ी गहरा था। क्योंकि कुछ दिनों के अंतराल के बाद, जब मेरे विचार उस फ़ार्म की ओर मुड़े जिसके बाहर बैठकर हमने साइडर पिया था, या बस उस सैर की ओर जो हमने 'सेंट-मार्स ले वेटू' के आस-पास की थी—और जब मुझे याद आया कि अल्बर्टिन अपनी टोपी पहने मेरे बगल में चल रही थी—तो उसकी मौजूदगी के एहसास ने अचानक ही मुझमें इतना...

आधुनिक चर्च की मामूली छवि के विपरीत, जब वह धूप से नहाया हुआ दृश्य अपनी मर्ज़ी से मेरी यादों में मेरे सामने आ खड़ा हुआ, तो वह मेरे दिल पर रखे गए एक बड़े ही सुकून देने वाले मरहम जैसा था। मैंने अल्बर्टिन को पारविल में उतार दिया, लेकिन सिर्फ़ इसलिए ताकि शाम को उससे फिर मिल सकूँ और अंधेरे में, समुद्र तट पर, उसके बगल में लेट सकूँ। बेशक मैं उससे हर दिन नहीं मिलता था, फिर भी मैं खुद से कह सकता था: "अगर उसे यह बताना पड़े कि उसने अपना समय, अपनी ज़िंदगी कैसे बिताई, तो भी उसमें सबसे बड़ा हिस्सा मेरा ही होगा;" और हमने साथ में घंटों बिताए, जिससे मेरे दिनों में एक ऐसी मीठी मदहोशी घुल गई कि जब पारविल में वह उस कार से उतरी जिसे मैं उसे लेने के लिए एक घंटे बाद भेजने वाला था, तब भी मुझे उसमें अकेलापन महसूस नहीं हुआ—ठीक वैसे ही जैसे उसने मुझे छोड़ने से पहले उस कार को फूलों से सजा दिया हो। मैं उससे हर दिन मिले बिना भी रह सकता था; जब मैं उसे छोड़कर जाता था तो मैं खुश होता था, और मुझे पता था कि उस खुशी का सुकून देने वाला असर कई दिनों तक बना रह सकता है। लेकिन उसी पल मैंने अल्बर्टिन को मुझे छोड़ते हुए अपनी मौसी या किसी सहेली से यह कहते सुना: "तो फिर कल साढ़े आठ बजे। हमें देर नहीं करनी चाहिए, बाकी लोग सवा आठ बजे तक तैयार हो जाएँगे।" जिस औरत से आप प्यार करते हैं, उसकी बातचीत उस मिट्टी जैसी होती है जो किसी ज़मीन के नीचे छिपे खतरनाक पानी को ढके रहती है; शब्दों के नीचे हर पल आपको किसी अनदेखे तालाब की मौजूदगी और उसकी तीखी ठंडक महसूस होती है; आपको यहाँ-वहाँ उस पानी का धोखेबाज़ रिसाव दिखाई देता है, लेकिन पानी खुद छिपा ही रहता है। जिस पल मैंने अल्बर्टिन के ये शब्द सुने, मेरा सारा सुकून छिन गया। मैं उससे कहना चाहता था कि वह मुझे अगली सुबह उससे मिलने दे, ताकि मैं उसे उस रहस्यमयी मुलाक़ात पर जाने से रोक सकूँ, जिसका ज़िक्र मेरे

सामने सिर्फ़ इशारों-इशारों में किया गया था। बेशक वह शुरू में मेरी बात मान लेती, भले ही उसे अपनी योजनाएँ छोड़नी पड़ रही हों; लेकिन समय के साथ उसे यह पता चल जाता कि मुझे उसकी योजनाओं को बिगाड़ने की हमेशा ज़रूरत महसूस होती है; और मैं वह इंसान बन जाता जिससे लोग सब कुछ छिपाते हैं। इसके अलावा, यह मुमकिन है कि ये जमावड़े, जिनसे मुझे बाहर रखा गया था, असल में बहुत मामूली रहे हों; और शायद इसी डर से कि कहीं मुझे वहाँ मौजूद दूसरी लड़कियों में से कोई भद्दी या उबाऊ न लग जाए, मुझे उनमें बुलाया नहीं गया। बदकिस्मती से, अल्बर्टिन के साथ इतनी गहराई से जुड़ी इस ज़िंदगी का असर सिर्फ़ मुझ पर ही नहीं पड़ा; मेरे लिए तो यह सुकून लेकर आई, लेकिन मेरी माँ के लिए यह चिंता का सबब बन गई—और जब उन्होंने अपनी यह चिंता ज़ाहिर की, तो मेरा सारा सुकून छिन गया। जब मैं अपने मन में खुश और संतुष्ट होकर होटल में दाखिल हुआ—और यह तय कर चुका था कि जल्द ही किसी दिन इस ज़िंदगी को खत्म कर दूँगा (एक ऐसी ज़िंदगी, जिसका अंत मेरे अपने फ़ैसले पर निर्भर करता है, ऐसा मैं सोचता था)—तभी मेरी माँ ने मुझसे कहा। उन्होंने मुझे ड्राइवर को यह संदेश भेजते हुए सुना था कि वह जाकर अल्बर्टिन को ले आए। माँ बोलीं: "तुम अपना पैसा कितना बर्बाद करते हो!" (फ्रांकोइस ने अपनी सीधी-सादी और असरदार भाषा में इससे भी ज़्यादा ज़ोर देकर कहा: "पैसा तो इसी तरह पानी की तरह बह जाता है।") माँ ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा: "कोशिश करो कि तुम चार्ल्स डी सेविग्ने जैसे न बन जाओ—जिनके बारे में उनकी माँ ने कहा था: 'उनका हाथ एक ऐसी भट्टी है, जिसमें पैसा पिघलकर खत्म हो जाता है।' इसके अलावा, मुझे सच में लगता है कि तुम अल्बर्टिन के साथ अब कुछ ज़्यादा ही घूमने-फिरने लगे हो। मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूँ कि तुम हद से ज़्यादा कर रहे हो; हो सकता है कि अल्बर्टिन को भी यह सब बेतुका लगे। मुझे यह सोचकर बहुत खुशी हुई थी कि तुम्हें अल्बर्टिन के साथ रहकर मन बहलाने का मौका मिलता है। मैं तुमसे यह नहीं कह रही कि तुम उससे दोबारा कभी मिलो ही नहीं; मैं तो बस इतना चाहती हूँ कि ऐसा न हो कि तुम दोनों में से किसी एक से मिलना नामुमकिन सा हो जाए—यानी तुम दोनों हमेशा साथ ही नज़र आओ।" अल्बर्टिन के साथ मेरी ज़िंदगी—एक ऐसी ज़िंदगी जिसमें किसी भी तरह के गहरे सुख या आनंद की कमी थी (यानी, ऐसे सुख जिन्हें मैं सचमुच महसूस कर पाता)—एक ऐसी ज़िंदगी जिसे मैं किसी भी पल बदलने का इरादा रखता

था (और जिसके लिए मैं किसी शांत और सही मौके का इंतज़ार कर रहा था)—वही ज़िंदगी अचानक से, और कुछ समय के लिए, मेरे लिए फिर से ज़रूरी बन गई। ऐसा तब हुआ, जब माँ की इन बातों की वजह से मुझे लगा कि मेरी वह ज़िंदगी अब खतरे में पड़ गई है। मैंने अपनी माँ से कहा कि उन्होंने अभी जो कुछ भी कहा है, उसकी वजह से शायद दो महीने की देरी हो जाएगी—उस फ़ैसले को लेने में, जिसकी वह मुझसे उम्मीद कर रही थीं। वरना, अगर उन्होंने ऐसा न कहा होता, तो मैं शायद इसी हफ़्ते के खत्म होने से पहले ही वह फ़ैसला ले चुका होता। माँ अपनी सलाह के इस 'तुरंत हुए असर' को देखकर हँसने लगीं (ताकि मैं उदास न हो जाऊँ)। उन्होंने मुझसे वादा किया कि वे इस मामले पर दोबारा कभी बात नहीं करेंगी, ताकि मेरे मन में जागे अच्छे इरादों को फिर से पनपने से रोका न जाए। लेकिन मेरी दादी की मौत के बाद से, जब भी माँ खुद को हँसने देतीं, तो वह हँसी बीच में ही रुक जाती और उसकी जगह एक बेहद दुख भरा उदास चेहरा ले लेता—चाहे ऐसा इसलिए होता कि वह एक पल के लिए भी दादी को भूल जाने के पछतावे में डूब जातीं, या फिर इसलिए कि भूलने का वह छोटा सा पल उनके उस गहरे दुख को फिर से ताज़ा कर देता। लेकिन मेरी दादी की यादों से जो विचार माँ के मन में उठते थे—जो उनके ज़हन में गहरे तक बसे थे—मुझे लगा कि इस बार उनके साथ कुछ और विचार भी जुड़ गए हैं। ये विचार मुझसे जुड़े थे, और उस बात से भी, जिसका डर माँ को अल्बर्टिन के साथ मेरी बढ़ती नज़दीकी के नतीजों को लेकर सता रहा था; एक ऐसी नज़दीकी जिसे रोकने की हिम्मत वह, मैंने उन्हें जो कुछ अभी-अभी बताया था, उसे देखते हुए, नहीं कर पा रही थीं। लेकिन उन्हें पूरी तरह यकीन नहीं हुआ कि मैं गलत नहीं था। उन्हें वे सारे साल याद थे जब मेरी दादी और उन्होंने, दोनों ने ही मुझसे मेरे काम के बारे में या ज़िंदगी के किसी ज़्यादा सेहतमंद नियम के बारे में बात करने से खुद को रोक रखा था—एक ऐसा नियम जिसके बारे में मैंने कहा था कि उनकी बातों से मेरे मन में जो बेचैनी पैदा होती थी, बस उसी वजह से मैं उसे शुरू नहीं कर पा रहा था, और जो, इसके बावजूद कि...

उनकी आज्ञाकारी चुप्पी का मैं पीछा नहीं कर पाया था। रात के खाने के बाद कार अल्बर्टिन को वापस ले आई; अभी भी दिन की थोड़ी रोशनी बाकी थी; हवा उतनी गर्म नहीं थी, लेकिन एक झुलसा देने वाले दिन के बाद हम दोनों एक अजीब और सुखद ठंडक का सपना देख रहे थे; फिर हमारी तपती आँखों को चाँद की पतली-सी फाँक पहले तो (ठीक उसी शाम की तरह

जब मैं प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के यहाँ गया था और अल्बर्टिन ने मुझे फ़ोन किया था) एक पतले, महीन छिलके जैसी लगी, और फिर एक फल के ठंडे टुकड़े जैसी, जिसे कोई अदृश्य चाकू आसमान में छीलना शुरू कर रहा हो। कभी-कभी ऐसा भी होता था कि मैं अपनी प्रेमिका की तलाश में जाता था, उस स्थिति में थोड़ा देर से; वह मेनविले के बाज़ार की मेहराबों के सामने मेरा इंतज़ार कर रही होती थी। शुरू में मैं उसे पहचान नहीं पाता था; मुझे डर लगने लगता था कि शायद वह नहीं आएगी, या उसने मुझे गलत समझ लिया है। फिर मैंने उसे उसकी सफ़ेद ब्लाउज़ में, जिस पर नीले धब्बे बने थे, कार में मेरे बगल में कूदते हुए देखा—किसी लड़की की तरह नहीं, बल्कि किसी युवा जानवर की तरह फुर्ती से। और किसी कुत्ते की तरह ही वह मुझे लगातार प्यार करने लगी। जब रात हो गई और, जैसा कि होटल के मैनेजर ने मुझसे कहा था, आसमान पूरी तरह तारों से 'सजा' हुआ था, अगर हम शैम्पेन की एक बोतल लेकर जंगल में सैर के लिए नहीं जाते थे, तो—उन अजनबियों की परवाह किए बिना जो अभी भी हल्की रोशनी वाले सामने के हिस्से में टहल रहे थे, लेकिन जो अंधेरी रेत पर एक गज दूर भी कुछ नहीं देख सकते थे—हम रेत के टीलों की ओट में लेट जाते थे; वही शरीर, जिसकी लचक में उन लड़कियों की सारी स्त्रियोचित, समुद्री और चंचल अदाएँ बसी थीं जिन्हें मैंने पहली बार लहरों के क्षितिज के सामने से गुज़रते देखा था—उसी शरीर को मैं अपने शरीर से सटाकर, एक ही कंबल के नीचे, उस शांत समुद्र के किनारे दबाए रखता था, जो रोशनी की एक कांपती हुई लकीर से दो हिस्सों में बँटा हुआ था; और हम बिना थके, और उतने ही आनंद के साथ समुद्र की आवाज़ सुनते रहते थे—चाहे वह अपनी साँस थाम लेता था (इतनी देर तक कि लगता था कि अब लहरें कभी वापस नहीं आएँगी), या जब अंत में वह हमारे पैरों के पास अपनी लंबे समय से प्रतीक्षित गड़गड़ाहट के साथ साँस छोड़ता था। अंत में मैं अल्बर्टिन को वापस पारविले ले गया। जब हम उसके घर पहुँचे, तो हमें अपने चुंबनों को बीच में ही रोकना पड़ा, इस डर से कि कहीं कोई हमें देख न ले; बिस्तर पर जाने की इच्छा न होने के कारण वह मेरे साथ बालबेक लौट आई, जहाँ से मैं उसे आखिरी बार पारविल वापस ले गया; मोटर-कार के उन शुरुआती दिनों के ड्राइवर ऐसे लोग थे जो किसी भी समय बिस्तर पर चले जाते थे। और सच कहूँ तो, मैं बालबेक केवल सुबह की पहली ओस के साथ ही लौटा—इस बार अकेला, लेकिन फिर भी अपनी प्रेमिका की मौजूदगी से घिरा हुआ, और अनगिनत चुम्बनों से

सराबोर। अपनी मेज़ पर मुझे एक टेलीग्राम या एक पोस्टकार्ड मिलता। फिर से अल्बर्टिन! उसने वे संदेश क्रेटहोलम में लिखे थे, जब मैं कार में अकेला चला गया था—यह बताने के लिए कि वह मेरे बारे में सोच रही थी। उन्हें पढ़ते हुए मैं बिस्तर पर चला गया। तभी, पर्दों के ऊपर से, मेरी नज़र दिन की रोशनी की एक चमकीली लकीर पर पड़ी, और मैंने मन ही मन कहा कि हम दोनों को एक-दूसरे से प्यार ज़रूर है—क्योंकि हमने पूरी रात एक-दूसरे की बाहों में बिताई थी। अगली सुबह जब मैंने अल्बर्टिन को 'फ्रंट' (समुद्र तट) पर देखा, तो मुझे इस बात का इतना डर था कि कहीं वह मुझसे यह न कह दे कि वह उस दिन खाली नहीं है, और मेरे इस अनुरोध को स्वीकार नहीं कर सकती कि हम साथ घूमने चलें—कि मैंने उससे यह अनुरोध करने में यथासंभव देर की। मैं और भी ज़्यादा बेचैन था, क्योंकि उसके हाव-भाव ठंडे और किसी सोच में डूबे हुए लग रहे थे; वहाँ से ऐसे लोग गुज़र रहे थे जिन्हें वह जानती थी; निस्संदेह उसने दोपहर के लिए कुछ योजनाएँ बना रखी थीं, जिनमें मेरा कोई स्थान नहीं था। मैंने उसे देखा—उस आकर्षक शरीर को, अल्बर्टिन के उस शरम से लाल होते चेहरे को देखा —जो मेरे सामने उसके इरादों की पहेली बनकर खड़ा था; वह अज्ञात निर्णय, जो मेरी दोपहर के सुख या दुख का निर्धारण करने वाला था। यह आत्मा की एक संपूर्ण अवस्था थी—एक संपूर्ण भावी अस्तित्व—जिसने मेरी आँखों के सामने एक युवती का रूप धारण कर लिया था; एक ऐसा रूप जो प्रतीकात्मक भी था और निर्णायक भी। और जब अंततः मैंने अपना मन बना लिया—जब मैंने, यथासंभव उदासीन भाव धारण करते हुए, उससे पूछा: "क्या अब हम साथ घूमने चलें? और क्या आज शाम भी?" और जब उसने उत्तर दिया: "बड़े ही हर्ष के साथ"—तब उसके उस गुलाबी चेहरे पर, मेरी लंबे समय से चली आ रही बेचैनी की जगह अचानक एक सुखद शांति का भाव उभर आया; इस अनुभव ने मेरे लिए उन शारीरिक रेखाओं को और भी अधिक कीमती बना दिया—जिनका मैं सदैव ऋणी था—क्योंकि उन्हीं के कारण मुझे वह सांत्वना और राहत मिलती थी, जो किसी तूफ़ान के गुज़र जाने के बाद महसूस होती है। मैंने मन ही मन दोहराया: "वह कितनी प्यारी है, कितनी मनमोहक!" यह उत्साह नशे से पैदा होने वाले उत्साह जितना तीव्र तो नहीं था, न ही दोस्ती से पैदा होने वाले उत्साह से बहुत गहरा था, लेकिन सामाजिक जीवन के उत्साह से कहीं ज़्यादा बेहतर था। हम कार का अपना ऑर्डर सिर्फ़ उन दिनों रद्द करते थे जब Verdurins के यहाँ डिनर-पार्टी होती थी, और उन दिनों जब

Albertine मेरे साथ बाहर जाने के लिए फ़्री नहीं होती थी; ऐसे मौकों पर मैं उन सभी लोगों को यह बताने का फ़ायदा उठाता था जो मुझसे मिलना चाहते थे कि मैं Balbec में ही रहूँगा। मैंने Saint–Loup को सिर्फ़ इन्हीं दिनों आने की इजाज़त दी थी—और सिर्फ़ इन्हीं दिनों। क्योंकि एक बार जब वह अचानक आ गया था, तो मैंने Albertine से मिलने की खुशी को छोड़ देना बेहतर समझा था, बजाय इसके कि उसके Albertine से मिलने का जोखिम उठाऊँ—यानी उस सुखद शांति को खतरे में डालूँ जिसमें मैं कुछ समय से जी रहा था, और अपनी ईर्ष्या को फिर से जागते हुए देखूँ। और मैं पूरी तरह से निश्चिंत था।

सेंट-लूप के जाने के बाद ही। और इसलिए उसने खुद से वादा किया—दुख के साथ, लेकिन पूरी ईमानदारी से—कि वह तब तक बालबेक कभी नहीं आएगा, जब तक मैं उसे खुद वहाँ न बुलाऊँ। पहले, जब मैं उन घंटों के बारे में सोचता था जो मैडम डी गुएरमांटेस उसके साथ बिताती थीं, तो उसे देखने का मौका मिलना मुझे कितना कीमती लगता था! दूसरे लोग हमारे संबंध में अपनी जगह बदलते रहते हैं। दुनिया की उस धीमी लेकिन लगातार चलने वाली चाल में, हम उन्हें एक पल के लिए स्थिर मान लेते हैं—वह पल इतना छोटा होता है कि हम उस गति को देख ही नहीं पाते जो उन्हें आगे बढ़ा रही होती है। लेकिन हमें बस अपनी यादों से उनकी दो तस्वीरें चुननी होती हैं जो अलग-अलग समय पर ली गई हों—लेकिन इतनी करीब हों कि उनमें खुद कोई खास बदलाव न आया हो—और उन दोनों तस्वीरों के बीच का अंतर ही यह बताता है कि हमारे संबंध में उनकी स्थिति में कितना बदलाव आया है। वर्दुरिन लोगों के बारे में बात करके उसने मुझे बहुत डरा दिया; मुझे डर था कि कहीं वह मुझसे उसे वहाँ ले जाने के लिए न कह दे। अगर ऐसा होता, तो मुझे हर समय जो जलन महसूस होती, उसकी वजह से वहाँ अल्बर्टिन के साथ जाने में मुझे जो भी खुशी मिलती, वह सब खत्म हो जाती। लेकिन किस्मत से रॉबर्ट ने मुझे भरोसा दिलाया कि, इसके उलट, उसकी सबसे बड़ी इच्छा तो यही थी कि वह उन लोगों को कभी न जाने। "नहीं," उसने मुझसे कहा, "मुझे वहाँ का वह 'क्लैरिकल' (मठ जैसा) माहौल बिल्कुल पसंद नहीं है—वह मुझे पागल कर देता है।" शुरू में मुझे समझ नहीं आया कि वर्दुरिन लोगों के लिए उसने 'क्लैरिकल' शब्द का इस्तेमाल क्यों किया, लेकिन सेंट-लूप की बात खत्म होने पर मुझे उसका मतलब समझ आया। उसने शब्दों के इस्तेमाल के उन नए-नए तरीकों को अपना लिया था, जिन्हें अक्सर समझदार लोग भी

अपना लेते हैं—और जिन्हें देखकर हैरानी होती है। "मेरा मतलब उन घरों से है," उसने कहा, "जहाँ लोग एक कबीले, एक धार्मिक संप्रदाय या एक छोटे से पंथ की तरह रहते हैं। तुम मुझसे यह तो नहीं कहोगे कि वे एक छोटा-सा गुट नहीं हैं? जो लोग उस गुट का हिस्सा होते हैं, उनके लिए तो वे लोग मक्खन और शहद की तरह मीठे होते हैं; लेकिन जो लोग उस गुट का हिस्सा नहीं होते, उनके लिए उनके पास बुरे से बुरे शब्द होते हैं। यहाँ सवाल हैमलेट की तरह 'होना या न होना' का नहीं है, बल्कि 'गुट का हिस्सा होना या न होना' का है। तुम उस गुट का हिस्सा हो, मेरे अंकल चार्लस भी उस गुट का हिस्सा हैं। मैं कुछ नहीं कर सकता—मैंने कभी भी इस तरह की चीज़ों में दिलचस्पी नहीं ली; इसमें मेरी कोई गलती नहीं है।"

मुझे यह कहने की शायद ही आवश्यकता है कि मैंने सेंट-लूप पर जो नियम लगाया था कि वह मेरे स्पष्ट निमंत्रण के बिना मुझसे मिलने कभी न आए, वही नियम मैंने ला रास्पेलियर, फेटेर्न, मॉन्टसुरवेंट और अन्य जगहों पर धीरे-धीरे जिन लोगों से मेरा मेल-जोल बढ़ने लगा था, उन सभी पर भी उतनी ही सख्ती से लागू किया था; और जब मैंने होटल से पारविल की चट्टानों की टेढ़ी-मेढ़ी ढलानों पर तीन बजे वाली ट्रेन का धुआँ देखा, जो अपना स्थिर धुआँ छोड़कर हरी ढलानों के किनारे पर लंबे समय तक लटका रहा, तो मुझे उस आगंतुक की पहचान को लेकर कोई संदेह नहीं हुआ जो मेरे साथ चाय पीने आ रहा था और जो अभी भी, एक प्राचीन देवता की तरह, उस छोटे से बादल में मुझसे छिपा हुआ था। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि यह आगंतुक, जिसे मैंने पहले से आने की अनुमति दी थी, शायद ही सैनिएट थी, और मैंने इस चूक के लिए अक्सर खुद को फटकारा है। लेकिन सैनीएट को खुद इस बात का एहसास था कि वह उबाऊ हैं (स्वाभाविक रूप से, जब वह मिलने आते थे तो कहानी सुनाने की तुलना में कहीं अधिक उबाऊ होते थे)। इस वजह से, हालांकि वह अधिकांश लोगों से अधिक विद्वान, बुद्धिमान और हर तरह से बेहतर इंसान थे, उनकी संगति में आनंद तो नहीं मिलता था, लेकिन एक असहनीय झुंझलाहट के अलावा कुछ भी महसूस नहीं होता था जो पूरी दोपहर को खराब कर देती थी। शायद अगर सैनीएट ने खुलकर इस उबाऊपन को स्वीकार कर लिया होता, जिससे वह डरते थे, तो लोग उनके आने से नहीं डरते। उबाऊपन उन बुराइयों में से एक है जिन्हें हमें सहना पड़ता है; उनका उबाऊपन शायद केवल दूसरों की कल्पना में ही था, या

उनके मनमोहक विनम्रता में निहित किसी सुझाव के माध्यम से दूसरों ने उनमें यह बात डाल दी थी। लेकिन वह इस बात को छिपाने के लिए इतने चिंतित थे कि लोग उन्हें पसंद नहीं करते, कि उन्होंने खुद को पेश करने की हिम्मत ही नहीं की। निश्चित रूप से वह उन लोगों की तरह व्यवहार न करके सही था जो सार्वजनिक स्थान पर सम्मान दिखाने में इतने प्रसन्न होते हैं कि जब वर्षों बाद आपको देखते हैं और अचानक आपको अनजान लोगों के बीच किसी समूह में पाते हैं, तो वे चुपके से लेकिन प्रभावशाली ढंग से आपको शुभ संध्या कहते हैं, और आपको देखकर, आपको फिर से सक्रिय देखकर, आपको स्वस्थ देखकर आदि की खुशी और भावना का बहाना ढूंढते हैं। इसके विपरीत, सैनियेट में साहस की कमी थी। वह श्रीमती वर्दुरिन के यहाँ या छोटी ट्राम में मुझसे कह सकता था कि अगर उसे मुझे परेशान करने का डर न होता, तो उसे बालबेक में मुझसे मिलने में बहुत खुशी होती। ऐसे सुझाव से मुझे कोई चिंता नहीं होती। इसके विपरीत, उसने कुछ भी नहीं कहा, लेकिन चेहरे पर पीड़ा का भाव और जले हुए एनामेल की तरह अटूट निगाहों के साथ, जिसमें किसी एक को देखने की तीव्र इच्छा भी झलक रही थी—बशर्ते उसे कोई और अधिक मनोरंजक न मिल जाए—और इस इच्छा को प्रकट न होने देने का दृढ़ निश्चय भी था। उसने मुझसे एक उदासीन भाव से कहा: "क्या आपको पता है कि आप अगले कुछ दिनों में क्या कर रहे होंगे, क्योंकि मैं शायद बालबेक के आसपास कहीं रहूंगा? वैसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, मैंने बस सोचा कि आपसे पूछ लूं।" इस भाव ने किसी को धोखा नहीं दिया, और वे विपरीत संकेत जिनसे हम अपनी भावनाओं को उनके विपरीत शब्दों से व्यक्त करते हैं, इतने स्पष्ट रूप से समझ में आते हैं कि हम खुद से पूछते हैं कि आज भी ऐसे लोग कैसे हो सकते हैं जो यह छिपाने के लिए कहते हैं, उदाहरण के लिए: "मुझे इतने निमंत्रण मिले हैं कि मुझे नहीं पता कि कहां सोऊं" जबकि वास्तव में उन्हें कहीं भी आमंत्रित नहीं किया गया है। लेकिन इससे भी बढ़कर, यह अलगाव का भाव, शायद इसमें शामिल विभिन्न तत्वों के कारण, आपको वह एहसास दिलाता था जो आप ऊब के डर से या आपसे मिलने की इच्छा को खुलकर स्वीकार करने पर कभी महसूस नहीं करते, यानी एक तरह की अरुचि, एक तरह की घृणा, जो साधारण सामाजिक शिष्टाचार के संबंधों में, प्रेम के मामले में, उस छिपे हुए प्रस्ताव के समान है जो एक महिला को उसके प्रेमी द्वारा, जिसे वह प्यार नहीं करती, अगले दिन मिलने के लिए दिया जाता है, जबकि वह कहता है कि इससे

कोई फर्क नहीं पड़ता, या वास्तव में वह प्रस्ताव नहीं बल्कि झूठी उदासीनता का रवैया होता है। सैनीएट के व्यक्तित्व से तुरंत कुछ ऐसा निकला जिसने आपको अत्यंत कोमल स्वर में उत्तर देने के लिए प्रेरित किया: "नहीं, दुर्भाग्य से, इस सप्ताह, मुझे आपको समझाना होगा..." और मैंने उन लोगों को बुलाने की अनुमति दी जो उससे कहीं अधिक निम्न स्तर के थे, लेकिन जिनकी निगाहों में उदासी नहीं थी और न ही उनके होंठ उन सभी मुलाकातों की कड़वाहट से सिकुड़े हुए थे, जिन्हें वह बिना कुछ कहे, इस व्यक्ति और उस व्यक्ति को करना चाहता था। दुर्भाग्य से, ऐसा बहुत कम ही होता था कि सैनीएट की मुलाकात मुझसे मिलने आने वाले मेहमान से न हो, अगर वास्तव में उस मेहमान ने वर्दुरिन के घर पर मुझसे यह न कहा होता: "भूलना मत, मैं तुमसे गुरुवार को मिलने आ रहा हूँ," ठीक उसी दिन जब मैंने सैनीएट को बताया था कि मैं घर पर नहीं रहूँगा। इसलिए अंततः वह जीवन को अपने पीठ पीछे आयोजित होने वाले मनोरंजनों से भरा हुआ समझने लगा, भले ही वे सीधे तौर पर उसके खर्चे पर न हों। दूसरी ओर, जैसा कि हममें से कोई भी कभी अकेला नहीं होता, यह अत्यधिक सतर्क व्यक्ति असामान्य रूप से लापरवाह था। एक बार जब वह बिना बुलाए मुझसे मिलने आया, तो मेरी मेज पर एक पत्र पड़ा हुआ था, मुझे याद नहीं कि किसने भेजा था। पहले कुछ मिनटों के बाद, मैंने देखा कि वह मेरी बातों पर नाममात्र का ध्यान दे रहा था। जिस पत्र के विषय के बारे में उसे ज़रा भी जानकारी नहीं थी, वह उसे बहुत आकर्षित कर रहा था और हर पल मुझे लग रहा था कि उसकी चमकती आँखें अपनी जगह से निकलकर उस पत्र पर टिक जाएँगी, जो अपने आप में महत्वहीन होते हुए भी उसकी जिज्ञासा के कारण चुंबक बन गया था। उसे देखकर ऐसा लग रहा था मानो कोई पक्षी साँप के जबड़े में फँसने वाला हो। आखिरकार, वह खुद को रोक नहीं पाया और उसने पत्र की जगह बदलनी शुरू कर दी, मानो वह मेरा कमरा साफ़ कर रहा हो। इससे भी संतुष्ट न होकर, उसने पत्र उठाया, उसे पलटा, फिर वापस सीधा कर दिया, मानो यंत्रवत। उसकी एक और अविवेकी आदत यह थी कि एक बार जब वह किसी से जुड़ जाता, तो उससे अलग नहीं हो पाता था। उस दिन मेरी तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए मैंने उससे आधे घंटे बाद अगली ट्रेन से वापस जाने को कहा। उसे इस बात का ज़रा भी शक नहीं था कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है, फिर भी उसने जवाब दिया: "मैं सवा घंटे रुकूँगा, फिर चला जाऊँगा।" तब से मुझे इस बात का अफ़सोस है कि जब भी मौका मिलता, मैं उससे

मिलने नहीं आती। कौन जाने? शायद मैं अपने आकर्षक अंदाज़ से उसकी बदकिस्मती को दूर कर देती, या कोई और उसे आमंत्रित कर लेता जिसके लिए वह मुझे तुरंत छोड़ देता, इस तरह मेरे निमंत्रणों से उसे खुशी भी मिलती और मैं उसकी संगति से छुटकारा पा लेती।

जिन दिनों मैं घर पर था, उसके बाद के दिनों में स्वाभाविक रूप से मुझे किसी मेहमान की उम्मीद नहीं थी और गाड़ी हमें, अल्बर्टीन और मुझे, लेने आती थी। और जब हम लौटते, तो होटल की सबसे निचली सीढ़ी पर खड़ा ऐमे, उत्सुक, ललचाई निगाहों से देखता रहता कि मैं ड्राइवर को कितनी टिप दे रहा हूँ। मेरे लिए अपने सिक्के या नोट को मुट्ठी में बंद करके टिप देना व्यर्थ था, ऐमे की निगाहें मेरी उंगलियों को चीर देती थीं। एक पल बाद ही उसने अपना सिर दूसरी तरफ घुमा लिया, क्योंकि वह समझदार, सभ्य था और वास्तव में खुद अपेक्षाकृत कम वेतन से संतुष्ट था। लेकिन दूसरे को मिलने वाली रकम ने उसके अंदर एक अनियंत्रित जिज्ञासा जगा दी और उसके मुँह में पानी आ गया। इन संक्षिप्त क्षणों के दौरान, उनके चेहरे पर एक ऐसे लड़के की तरह ध्यान और उत्साह झलक रहा था जो जूल्स वर्न की कहानियों में से एक को पढ़ रहा हो, या किसी रेस्तरां में बगल की मेज पर बैठे उस व्यक्ति की तरह जो वेटर को आपके लिए एक तीतर काटते हुए देखता है जिसे वह स्वयं या तो खरीद नहीं सकता या ऑर्डर नहीं करेगा, और एक पल के लिए अपने गंभीर विचारों को त्यागकर उस पक्षी पर एक ऐसी निगाह टिका देता है जो प्रेम और लालसा से भरी मुस्कान पैदा करती है।

और इस तरह, दिन-ब-दिन, मोटर-कार में ये सैर-सपाटे एक के बाद एक होते रहे। लेकिन एक बार, जब मुझे मेरे कमरे में ले जाया जा रहा था, तो लिफ्ट वाले ने मुझसे कहा: "वो सज्जन आए थे, उन्होंने आपके लिए एक संदेश दिया है।" लिफ्ट वाले ने ये शब्द लगभग सुनाई न देने वाली आवाज़ में कहे, और मेरे चेहरे पर खांसता और थूकता रहा। "मुझे तो आधा जुकाम हो गया है!" वह ऐसे बोलता रहा जैसे मैं इसे खुद महसूस ही न कर पाऊं। "डॉक्टर कहते हैं कि ये काली खांसी है," और वह एक बार फिर मेरे ऊपर खांसने और थूकने लगा। "बोलने की कोशिश करके खुद को थकाओ मत," मैंने उससे बनावटी दिलचस्पी भरे भाव से कहा। मुझे काली खांसी होने का डर था, जो मेरे घुटन के दौरे की प्रवृत्ति के कारण मेरे लिए एक गंभीर मामला हो सकता था। लेकिन उसने एक ऐसे कलाकार की तरह, जो खुद को अस्पताल ले जाने से मना करता है, लगातार बोलते और थूकते रहने को अपना गौरव बना लिया। “नहीं,

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता," उसने कहा ("शायद आपको फर्क न पड़ता हो," मैंने सोचा, "लेकिन मुझे पड़ता है")। "इसके अलावा, मैं जल्द ही पेरिस लौट रहा हूँ।" ("बहुत बढ़िया, बशर्ते वह मुझे पहले न दे दे।") "ऐसा लगता है," उसने आगे कहा, "कि पेरिस बहुत ही शानदार है। यह यहाँ या मोंटे-कार्लो से भी कहीं ज़्यादा शानदार होगा, हालाँकि पेज, दरअसल पर्यटक, और यहाँ तक कि मुख्य वेटर जो पूरे सीज़न के लिए मोंटे-कार्लो गए हैं, उन्होंने अक्सर मुझसे कहा है कि पेरिस मोंटे-कार्लो जितना शानदार नहीं था। शायद उन्हें धोखा दिया गया था, और फिर भी, मुख्य वेटर बनने के लिए आपको बहुत होशियार होना पड़ता है; सभी ऑर्डर लेने, टेबल रिज़र्व करने के लिए दिमाग़ चाहिए! मैंने सुना है कि यह नाटक और किताबें लिखने से भी ज़्यादा मुश्किल है।" हम लगभग मेरे लैंडिंग पर पहुँच ही गए थे कि लिफ्ट वाले ने मुझे वापस ग्राउंड फ्लोर पर उतार दिया क्योंकि उसने पाया कि बटन ठीक से काम नहीं कर रहा था, और उसने पल भर में उसे ठीक कर दिया। मैंने उससे कहा कि मैं ऊपर पैदल जाना पसंद करूँगी, यानी सीधे शब्दों में न कहते हुए, मैं काली खांसी से बचना चाहती थी। लेकिन खाँसी के एक ज़ोरदार और संक्रामक दौरे के साथ, लड़के ने मुझे वापस लिफ्ट में धकेल दिया। "अब कोई खतरा नहीं है, मैंने बटन ठीक कर दिया है।" यह देखकर कि वह बात करना बंद नहीं कर रहा था, बालबेक, पेरिस और मोंटेकार्लो की तुलनात्मक सुंदरता के बजाय मेरे आगंतुक का नाम और उसके द्वारा छोड़ा गया संदेश जानने में अधिक रुचि रखता था, मैंने उससे कहा (जैसे कोई बेंजामिन गोडार्ड के गाने सुनाते-सुनाते थक चुके गायक से कहता है, "क्या आप मुझे कुछ डेबुसी सुनाएँगे?") "लेकिन मुझसे मिलने कौन आया था?" "वही सज्जन हैं जिनके साथ आप कल बाहर गई थीं। मैं उनका कार्ड लेने जा रहा हूँ, वह मेरे कुली के पास है।" क्योंकि, एक दिन पहले, मैंने अल्बर्टीन से मिलने जाने से पहले रॉबर्ट डी सेंट-लूप को डोंसिएरेस स्टेशन पर छोड़ा था, इसलिए मुझे लगा कि लिफ्ट वाला लड़का उन्हीं की बात कर रहा है, लेकिन वह तो ड्राइवर था। और उन्हें "वह सज्जन जिनके साथ आप बाहर गई थीं" कहकर उन्होंने मुझे यह भी सिखाया कि एक आम आदमी भी उतना ही सज्जन होता है जितना कि कोई रईस। यह सिर्फ शब्दों के इस्तेमाल का सबक था। दरअसल, मैंने कभी भी वर्गों में कोई भेद नहीं किया था। और अगर ड्राइवर को सज्जन कहे जाने पर मुझे वही हैरानी हुई जो कॉम्टे X को हुई थी—जिन्हें यह पद संभाले हुए सिर्फ एक हफ्ता ही हुआ था और जिन्हें

"कॉम्टेस थकी हुई लग रही हैं" कहकर मैंने उनका सिर घुमाकर देखने पर मजबूर कर दिया था कि मैं किसकी बात कर रही हूँ—तो इसका कारण सिर्फ इतना था कि मैं उस शब्द के इस्तेमाल से परिचित नहीं थी; मैंने कभी भी आम आदमी, पेशेवर और रईसों में कोई फर्क नहीं किया था, और मैं उनमें से किसी को भी अपना दोस्त बनाने के लिए समान रूप से तैयार थी। मुझे कामगारों के प्रति विशेष स्नेह था, और उनके बाद रईसों के प्रति, इसलिए नहीं कि मैं उन्हें ज़्यादा पसंद करती थी, बल्कि इसलिए कि मैं जानती थी कि कामगारों के प्रति रईसों से पेशेवर लोगों की तुलना में अधिक शिष्टाचार की अपेक्षा की जा सकती है। चाहे इसका कारण यह हो कि रईस कामगारों को पेशेवर लोगों की तरह तुच्छ नहीं समझते, या फिर इसलिए कि वे स्वभाव से ही सबके प्रति विनम्र होते हैं, जैसे सुंदर स्त्रियाँ मुस्कुराने में प्रसन्न होती हैं, क्योंकि वे जानती हैं कि मुस्कुराहट को सहर्ष स्वीकार किया जाता है। हालाँकि, मैं यह दावा नहीं कर सकती कि समाज के उच्च वर्ग के लोगों को निम्न वर्ग के लोगों के समान मानने की मेरी यह आदत, भले ही समाज के उच्च वर्ग के लोग इसे पूरी तरह समझते थे, मेरी माँ को हमेशा संतुष्ट करती थी। वैसे, मानवीय दृष्टि से, वह किसी भी व्यक्ति में कोई भेद नहीं करती थीं, और यदि फ्रांस्वा कभी दुखी या पीड़ा में होती, तो माँ उसे उसी स्नेह से सांत्वना देतीं और उसकी देखभाल करतीं जैसे अपनी सबसे अच्छी सहेली की करती हैं। लेकिन मेरी माँ अपनी दादी की इतनी अधिक पुत्री थीं कि सामाजिक मामलों में जाति व्यवस्था के नियम को मानने से इनकार नहीं कर सकती थीं। कॉम्ब्रे के लोग भले ही दयालु और संवेदनशील स्वभाव के रहे हों, और उन्होंने मानव समानता के आदर्शों को अपनाया हो, लेकिन जब एक नौकर को स्वतंत्रता मिली और उसने मुझे तीसरे व्यक्ति में संबोधित करने की आदत छोड़ दी, तो मेरी माँ को उसके इन दुर्व्यवहारों से वैसा ही क्रोध आया जैसा सेंट-साइमन के संस्मरणों में तब आता है जब कोई रईस, जो इस उपाधि का हकदार नहीं है, किसी आधिकारिक दस्तावेज़ में 'महामहिम' की उपाधि धारण करने का बहाना ढूंढ लेता है, या ड्यूकों को वह सम्मान नहीं देता जो उसे देना चाहिए और जिसे वह धीरे-धीरे त्याग रहा है। कॉम्ब्रे की एक ऐसी जिद्दी भावना थी कि उसे पिघलाने के लिए सदियों तक अच्छे स्वभाव (मेरी माँ का स्वभाव असीम था) और समानता के सिद्धांतों की आवश्यकता होगी। मैं यह शपथ नहीं ले सकता कि मेरी माँ में इस भावना के कुछ अंश अघुलनशील नहीं रह गए थे। वह किसी नौकर को अपना हाथ देने में उतनी ही

अनिच्छुक होतीं जितनी कि उसे दस फ्रैंक देने में (जिसे वह खुशी-खुशी ग्रहण करता था)। चाहे वह माने या न माने, उसके लिए मालिक मालिक होते थे और नौकर वे लोग होते थे जो रसोई में खाना परोसते थे। जब उसने एक मोटर-कार के ड्राइवर को मेरे साथ रेस्टोरेंट में खाना खाते देखा, तो वह कुछ खास खुश नहीं हुई और मुझसे बोली, "मुझे लगता है कि तुम्हें एक मैकेनिक से ज़्यादा अच्छा दोस्त मिल सकता है," जैसा कि वह शायद मेरी शादी के मामले में कहती: "तुम्हें इससे बेहतर कोई मिल सकता है।" यह ड्राइवर (सौभाग्य से मैंने उसे कभी खाने पर बुलाने का सपना भी नहीं देखा) मुझे यह बताने आया था कि जिस मोटर-कार कंपनी ने उसे सीज़न के लिए बालबेक भेजा था, उसने उसे अगले दिन पेरिस लौटने का आदेश दिया है। यह बहाना, खासकर इसलिए कि ड्राइवर बहुत ही आकर्षक था और इतनी सरल भाषा में बोलता था कि कोई भी उसकी हर बात को सच मान लेता, हमें लगभग सच ही लगा। लेकिन यह आधा ही सच था। असल में बालबेक में उसके लिए कोई काम नहीं बचा था। और किसी भी हालत में, कंपनी युवा धर्म प्रचारक की बातों पर पूरी तरह से आश्वस्त नहीं थी, जो अपने स्टीयरिंग व्हील पर पवित्र क्रॉस के सामने झुका हुआ था, और चाहती थी कि वह जल्द से जल्द पेरिस लौट जाए। और वास्तव में, अगर युवा धर्म प्रचारक ने एम. डी चार्लस के लिए हिसाब लगाते समय अपनी माइलेज को कई गुना बढ़ा दिया था, तो कंपनी को हिसाब देते समय उसने अपनी कमाई को छह भागों में बाँट दिया था। इसके परिणामस्वरूप, कंपनी इस निष्कर्ष पर पहुँची कि या तो बालबेक में अब किसी को कार की ज़रूरत नहीं है, जो कि सीज़न के इतने बाद के समय में काफी संभव था, या फिर कार चोरी हो रही है। कंपनी ने फैसला किया कि दोनों ही स्थितियों में, सबसे अच्छा यही होगा कि उसे पेरिस वापस बुला लिया जाए, हालाँकि वहाँ उसके लिए बहुत काम नहीं था। ड्राइवर की इच्छा थी कि यदि संभव हो तो वह व्यस्त सीज़न से बच जाए। मैंने कहा था—हालाँकि उस समय मुझे इस बात का पता नहीं था, जबकि अगर मुझे पता होता तो मुझे बहुत झुंझलाहट से बचा जा सकता था—कि मोरेल के साथ उनके घनिष्ठ संबंध थे (हालाँकि उन्होंने कभी भी दूसरों के सामने अपनी जान-पहचान का कोई संकेत नहीं दिया था)। जिस दिन उन्हें वापस जाने का आदेश दिया गया, उस दिन से ही, इससे पहले कि उन्हें एहसास होता कि जाने से बचने का अभी भी एक रास्ता है, हमें अपनी सैर के लिए घोड़ागाड़ी किराए पर लेकर ही संतोष करना पड़ा, या कभी-कभी,

अल्बर्टीन के मनोरंजन के लिए और क्योंकि उसे घुड़सवारी का शौक था, घोड़ों की एक जोड़ी किराए पर लेकर। घोड़ागाड़ियाँ संतोषजनक नहीं थीं। "कितनी खटारा गाड़ी है!" अल्बर्टीन अक्सर कहती थी। अक्सर, जैसा कि होता था, मैं खुद गाड़ी चलाना पसंद करती थी। कोई तारीख तय किए बिना, मैं इस जीवन को समाप्त करने के लिए तरस रही थी, जिसके लिए मैं खुद को दोषी मानती थी क्योंकि इसने मुझे काम से ज़्यादा आनंद का त्याग करने पर मजबूर किया था। हालाँकि, ऐसा भी होता था कि मुझे बांधे रखने वाली आदतें अचानक ही टूट जाती थीं, आमतौर पर तब जब मेरा कोई पुराना रूप, एक खुशहाल जीवन जीने की इच्छा से भरा हुआ, उस क्षण के मेरे वर्तमान रूप की जगह ले लेता था। एक दिन जब मैंने अल्बर्टीन को उसकी चाची के पास छोड़ा और घोड़े पर सवार होकर वर्दुरिन परिवार से मिलने गया, तो मुझे भाग निकलने की तीव्र इच्छा हुई। उस समय मैंने जंगल के उस सुनसान रास्ते को चुना, जिसकी सुंदरता की उन्होंने मुझे बहुत प्रशंसा की थी। चट्टानों की रूपरेखा से सटा हुआ वह रास्ता कभी ऊपर चढ़ता था, तो कभी दोनों ओर घने जंगलों से घिरा हुआ, गहरी घाटियों में उतर जाता था। एक पल के लिए मेरे चारों ओर की बंजर चट्टानें, जिनमें समुद्र के ऊबड़-खाबड़ छेद दिखाई दे रहे थे, मेरी आँखों के सामने किसी दूसरे ब्रह्मांड के टुकड़ों की तरह तैर उठीं। मैंने उस पर्वतीय और समुद्री परिदृश्य को पहचान लिया, जिसे एल्स्टिर ने अपनी दो अद्भुत जलरंग कृतियों 'कवि का देवी से मिलन' और 'युवक का सेंटॉर से मिलन' में चित्रित किया था, जिन्हें मैंने डचेस डी गुएरमांटेस के यहाँ देखा था। उनके ख्यालों ने मुझे उस जगह पर पहुंचा दिया जहां मैं आज की दुनिया से इतना दूर था कि अगर एल्स्टिर द्वारा चित्रित प्रागैतिहासिक युग के युवक की तरह, मुझे भी सवारी के दौरान कोई पौराणिक पात्र दिख जाता, तो मुझे आश्चर्य नहीं होता। अचानक, मेरा घोड़ा उछल पड़ा; उसने कोई अजीब सी आवाज़ सुनी थी; बड़ी मुश्किल से मैंने उसे संभाला और काठी पर बैठा रहा, फिर मैंने उस दिशा में देखा जहां से आवाज़ आती हुई लग रही थी। मेरी आँखों में आँसू भर आए और मैंने अपने सिर से दो सौ फीट ऊपर, सूरज की रोशनी में, चमकते धातु के दो विशाल पंखों के बीच, एक प्राणी को देखा जिसका मुश्किल से दिखाई देने वाला चेहरा मुझे मनुष्य जैसा लग रहा था। मैं उतना ही भावुक हो गया जितना कोई यूनानी पहली बार किसी अर्धदेव को देखकर होता है। मैं रो भी पड़ा, क्योंकि जैसे ही मुझे एहसास हुआ कि आवाज़ मेरे सिर के ऊपर से आ रही

है—उन दिनों हवाई जहाज बहुत कम होते थे—मैं रोने ही वाला था, यह सोचकर कि मैं पहली बार एक हवाई जहाज देखने जा रहा हूँ। फिर, ठीक वैसे ही जैसे अखबार पढ़ते समय किसी मार्मिक अंश का आभास होता है, उस मशीन को देखते ही मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। इस बीच, पायलट अपने मार्ग को लेकर अनिश्चित प्रतीत हो रहा था; मुझे ऐसा लगा मानो उसके सामने—और मेरे सामने भी, अगर आदत ने मुझे कैदी न बनाया होता—अंतरिक्ष के सारे मार्ग, जीवन के सारे मार्ग खुले हों; वह उड़ता रहा, कुछ क्षणों के लिए समुद्र के ऊपर से गुजरा, फिर जल्दी से निर्णय लेते हुए, मानो किसी ऐसी शक्ति के आगे झुक गया हो जो गुरुत्वाकर्षण के विपरीत हो, मानो अपने मूल तत्व में लौट रहा हो, अपने सुनहरे पंखों को हल्के से हिलाते हुए, वह आकाश में ऊपर उठ गया।

मैकेनिक की बात पर लौटते हुए, उसने मोरेल से मांग की कि वर्दुरिन परिवार न केवल अपनी गाड़ी को मोटरगाड़ी से बदल दे (जो कि भक्तों के प्रति उनकी उदारता को देखते हुए अपेक्षाकृत आसान था), बल्कि, जो कि उतना आसान नहीं था, अपने मुख्य कोचवान, उस संवेदनशील युवक को, जो उदास विचारों में डूबा रहता था, स्वयं ड्राइवर से बदल दे। यह बदलाव कुछ ही दिनों में निम्नलिखित युक्ति द्वारा पूरा किया गया। मोरेल ने सबसे पहले यह सुनिश्चित किया कि कोचवान के पास गाड़ी के लिए आवश्यक सभी चीजें गायब थीं। कभी लगाम गायब होती थी, कभी लगाम। कभी उसकी सीट का कुशन गायब होता था, कभी उसका चाबुक, कभी उसका कंबल, कभी उसका हथौड़ा, कभी स्पंज, कभी चमड़े का कपड़ा। लेकिन वह हमेशा अपने पड़ोसी से जरूरत की चीजें उधार ले लेता था; केवल वह गाड़ी लाने में देर करता था, जिससे वह श्री वर्दुरिन की नजरों में गिर जाता था और उदासी और उदास विचारों में डूब जाता था। जल्दी में अपनी जगह लेने वाले ड्राइवर ने मोरेल से कहा कि उसे पेरिस लौटना होगा। अब कुछ कड़ा कदम उठाने का समय था। मोरेल ने एम. वर्दुरिन के नौकरों को समझाया कि उस नौजवान कोचवान ने उन सभी के लिए जाल बिछाने की धमकी दी है, और शेखी बघारते हुए कहा है कि वह उन छहों को एक साथ हरा सकता है। मोरेल ने उन्हें आश्वासन दिया कि वे इस अपमान को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। वह खुद झगड़े में शामिल नहीं हो सकता था, लेकिन उसने उन्हें आगाह कर दिया ताकि वे सतर्क रहें। यह तय किया गया कि जब एम. और मैडम वर्दुरिन और उनके मेहमान टहलने के लिए बाहर जाएंगे,

तो नौकर कोच हाउस में उस नौजवान पर टूट पड़ेंगे। मैं यह भी बताना चाहूंगा, हालांकि यह तो बस उस घटना का बहाना था जो होनी ही थी, लेकिन बाद में संबंधित लोगों के बारे में जानकर मुझे दिलचस्पी हुई, कि उस दिन वर्दुरिन के यहाँ एक दोस्त ठहरा हुआ था, जिसे उन्होंने उसी शाम जाने से पहले सैर पर ले जाने का वादा किया था।

जब हम सैर के लिए निकले तो मुझे सबसे ज़्यादा हैरानी इस बात पर हुई कि मोरेल, जो हमारे साथ आ रहा था और पेड़ों के नीचे वायलिन बजाने वाला था, मुझसे बोला: "सुनो, मेरे हाथ में दर्द है, मैं श्रीमती वर्दुरिन को इसके बारे में कुछ नहीं बताना चाहता, लेकिन तुम उनसे कह सकते हो कि वे अपने किसी नौकर को बुला लें, जैसे हॉस्लर को, वो मेरा सामान उठा सकता है।" मैंने जवाब दिया, "मुझे लगता है तुम्हें किसी और का नाम सुझाना चाहिए। रात के खाने के लिए उसकी ज़रूरत होगी।" मोरेल के चेहरे पर गुस्से का भाव आ गया। "नहीं, मैं अपना वायलिन किसी भी आम आदमी के भरोसे नहीं छोड़ूंगा।" बाद में मुझे उसके इस चुनाव का कारण समझ आया। हॉस्लर उस नौजवान कोचवान का प्रिय भाई था, और अगर उसे घर पर छोड़ दिया जाता, तो शायद वो उसकी मदद के लिए आ जाता। सैर के दौरान, बड़े हॉस्लर को सुनाई न दे इसलिए अपनी आवाज़ धीमी करते हुए मोरेल ने कहा: "कितना अच्छा आदमी है वो। उसका भाई भी, वैसे तो। अगर उसे शराब पीने की बुरी आदत न होती..." “क्या आपने शराब पीने की बात कही?” श्रीमती वर्दुरिन ने शराबी कोचवान के बारे में सोचकर पीला पड़ते हुए कहा। “आपने कभी ध्यान नहीं दिया। मैं हमेशा खुद से कहती हूँ कि यह एक चमत्कार है कि जब से वह आपको ले जा रहा है, उसका कभी कोई हादसा नहीं हुआ।” “तो क्या वह किसी और को भी ले जाता है?” “आप आसानी से देख सकती हैं कि वह कितनी बार गिरा है, आज उसका चेहरा चोट के निशानों से भरा है। मुझे नहीं पता कि वह कैसे मौत से बच गया, उसके डंडे टूट चुके हैं।” “मैंने उसे आज नहीं देखा,” श्रीमती वर्दुरिन ने अपने साथ होने वाली संभावित घटना के बारे में सोचकर कांपते हुए कहा, “आप मुझे डरा रहे हैं।” उन्होंने तुरंत वापस लौटने के लिए अपनी सैर कम करने की कोशिश की, लेकिन मोरेल ने उन्हें घर से दूर रखने के लिए बाख की एक ऐसी धुन बजाई जिसमें अनगिनत विविधताएँ थीं। जैसे ही हम वापस आए, वह अस्तबल में गईं, नया डंडा देखा और हॉस्लर खून से लथपथ था। वह उसे बिना कुछ कहे, जो उसने देखा था, यह बताने ही वाली थी कि अब उसे कोचवान की

आवश्यकता नहीं है और उसे उसका वेतन भी दे देगी, लेकिन अपने साथी नौकरों पर आरोप न लगाने की इच्छा से, जिनकी शत्रुता के कारण उसने अपने सारे साज-सामान की चोरी का आरोप लगाया था, और यह देखकर कि और अधिक धैर्य रखने से उसका अंत केवल यही होगा कि उसे मरा हुआ छोड़ दिया जाएगा, उसने तुरंत जाने की अनुमति मांग ली, जिससे सब कुछ बहुत सरल हो गया। ड्राइवर ने अगले दिन अपना काम शुरू कर दिया और बाद में, श्रीमती वर्दुरिन (जिन्हें एक और ड्राइवर नियुक्त करना पड़ा था) उससे इतनी संतुष्ट हुईं कि उन्होंने मेरी ओर से उसकी सिफारिश की, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिस पर मैं भरोसा कर सकता था। मुझे इन सब बातों की जानकारी नहीं थी, इसलिए मैं पेरिस में उसे प्रतिदिन के हिसाब से किराए पर लेता था, लेकिन मैं आगे की घटनाओं का पूर्वाभास कर रहा हूँ, मैं इन सब बातों पर अल्बर्टीन की कहानी तक पहुँचने पर आऊँगा। इस समय हम ला रास्पेलियर में हैं, जहाँ मैंने अभी-अभी अपनी प्रेमिका के साथ पहली बार भोजन किया है, और एम. डी चार्लस मोरेल के साथ भोजन कर रहे हैं, जो एक प्रसिद्ध 'एजेंट' का बेटा था, जिसे तीस हजार फ्रैंक का वार्षिक निश्चित वेतन मिलता था, उसका अपना एक वाहन था, और उसके इशारों पर कई बड़े अधिकारी, अधीनस्थ, माली, ज़मींदार और किसान काम करते थे। लेकिन, जैसा कि मैंने पहले ही बता दिया है, मैं पाठक को यह धारणा नहीं देना चाहता कि मोरेल पूरी तरह से दुष्ट था। बल्कि, वह विरोधाभासों का एक पुंज था, जो कभी-कभी वास्तव में दयालु भी हो सकता था।

मुझे स्वाभाविक रूप से कोचवान की बर्खास्तगी की खबर सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ, और उससे भी अधिक आश्चर्य तब हुआ जब मैंने उसके उत्तराधिकारी को उस ड्राइवर के रूप में पहचाना जो अल्बर्टीन और मुझे अपनी कार में ले जा रहा था। लेकिन उसने एक जटिल कहानी सुनाई, जिसके अनुसार उसने सोचा था कि उसे पेरिस वापस बुलाया गया था, जहाँ उसे वर्दुरिन्स के पास जाने का आदेश मिला था, और मुझे उसकी बात पर ज़रा भी संदेह नहीं हुआ। कोचवान की बर्खास्तगी के कारण ही मोरेल ने मुझसे कुछ मिनटों तक बात की, ताकि उस भले आदमी के जाने पर अपना खेद व्यक्त कर सके। हालाँकि, उन पलों को छोड़कर जब मैं अकेला था, और वह सचमुच खुशी से झूमता हुआ मेरी ओर दौड़ा, मोरेल ने देखा कि ला रास्पेलियर में हर कोई मेरी बहुत प्रशंसा कर रहा था और यह महसूस करते हुए कि वह

जानबूझकर उस व्यक्ति की संगति से खुद को अलग कर रहा था जो उसे किसी भी तरह से खतरे में नहीं डाल सकता था, क्योंकि उसने मुझे अपने सारे रास्ते बंद करने पर मजबूर कर दिया था और मेरे द्वारा उसके साथ किसी भी तरह का संरक्षण का भाव रखने की सारी संभावना को खत्म कर दिया था (जिसके बारे में मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था), इसलिए उसने मुझसे दूरी बनाए रखना बंद कर दिया। मैंने उसके रवैये में आए बदलाव का कारण एम. डी चार्लस के प्रभाव को माना, जिसने वास्तव में उसे कुछ मामलों में कम सीमित और अधिक कलाकार बनाया, लेकिन अन्य मामलों में, जब उसने अपने गुरु के वाक्पटु, कपटी और क्षणभंगुर सूत्रों की शाब्दिक व्याख्या की, तो वह पहले से भी अधिक मूर्ख बन गया। एम. डी चार्लस ने उससे कुछ कहा होगा, यही एकमात्र बात थी जो मेरे दिमाग में आई। मैं तब कैसे अनुमान लगा सकता था कि मुझे बाद में क्या बताया गया (और मैं इसकी सच्चाई के बारे में कभी निश्चित नहीं रहा, क्योंकि अल्बर्टीन से संबंधित हर बात पर एंड्री के दावे, विशेष रूप से बाद में, मुझे हमेशा सावधानी से स्वीकार करने योग्य लगते थे, क्योंकि जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, वह मेरी मालकिन को वास्तव में पसंद नहीं करती थी और उससे ईर्ष्या करती थी), एक ऐसी बात जो किसी भी हालत में, अगर सच भी थी, तो उन दोनों ने मुझसे बड़ी चतुराई से छिपाकर रखी थी: कि अल्बर्टीन के मोरेल के साथ बहुत अच्छे संबंध थे? कोचवान की बर्खास्तगी के समय के आसपास, मोरेल ने मेरे प्रति जो अनोखा रवैया अपनाया, उससे मेरा उसके बारे में विचार बदल गया। उसके चरित्र की वह बुरी छवि मेरे मन में बनी रही जो उस युवक की चाटुकारिता से बनी थी, जिसने मेरी सेवाओं की आवश्यकता होने पर मेरे प्रति चापलूसी दिखाई थी, और सेवा पूरी होते ही उसने तिरस्कारपूर्ण अलगाव दिखाया, मानो उसने मुझे देखा ही न हो। मुझे अभी भी एम. डी चार्लस के साथ उसके भ्रष्ट संबंधों और उसकी पशुवत और निरर्थक प्रवृत्तियों का कोई सबूत नहीं मिला था, जिनकी पूर्ति न होना (जब भी हुआ) या उनसे उत्पन्न जटिलताएँ ही उसके दुखों का कारण थीं; लेकिन उसका चरित्र इतना एक जैसा नीच नहीं था और विरोधाभासों से भरा था। वह मध्य युग की किसी पुरानी किताब की तरह था, जो गलतियों, बेतुकी परंपराओं और अश्लीलता से भरी हो; वह असाधारण रूप से मिश्रित व्यक्तित्व था। मैंने पहले सोचा था कि उसकी कला, जिसमें वह वास्तव में उस्ताद था, ने उसे एक साधारण कलाकार की निपुणता से कहीं अधिक श्रेष्ठता प्रदान की थी। एक बार

जब मैंने काम शुरू करने की अपनी इच्छा ज़ाहिर की, तो उन्होंने मुझसे कहा, "काम करो, मशहूर हो जाओ।" मैंने पूछा, "यह किसने कहा था?" उन्होंने कहा, "फोंटानेस ने शैतोब्रिएंड से।" उन्हें नेपोलियन के कुछ प्रेम पत्र भी याद थे। अच्छा, मैंने मन ही मन सोचा, वह पढ़ते हैं। लेकिन यह वाक्य, जो उन्होंने न जाने कहाँ पढ़ा था, निस्संदेह प्राचीन या आधुनिक साहित्य में एकमात्र ऐसा वाक्य था जो उन्हें याद था, क्योंकि वह हर शाम इसे मुझे दोहराते थे। एक और वाक्य, जिसे वह मुझे किसी से भी उनके बारे में एक शब्द भी कहने से रोकने के लिए अक्सर दोहराते थे, वह यह था, जिसे वह उतना ही साहित्यिक मानते थे, जबकि यह व्याकरण की दृष्टि से लगभग असंभव है, या कम से कम इसका कोई अर्थ नहीं है, सिवाय शायद किसी रहस्य-प्रेमी नौकर के लिए: "सतर्क व्यक्ति से सावधान रहो।" वास्तव में, यदि कोई इस मूर्खतापूर्ण कहावत से हटकर फोंटानेस द्वारा शैतोब्रिएंड से कहे गए शब्दों पर गौर करे, तो मोरेल के चरित्र का एक पूरा पहलू सामने आता है, जो विविध है लेकिन जितना सोचा जा सकता है उससे कम विरोधाभासी है। यह युवक, जो पैसा कमाने का मौका मिलने पर दुनिया का कुछ भी कर सकता था, और बिना किसी पछतावे के—शायद एक अजीब तरह की झुंझलाहट के साथ, जो मानसिक उत्तेजना के बराबर थी, जिसे पल भर के लिए भी पछतावा नहीं कहा जा सकता था—जो अपने फायदे के लिए पूरे परिवारों को दुख में, बल्कि मातम में डुबो देता, यह युवक जिसने पैसे को हर चीज से ऊपर रखा, निस्वार्थ दया से भी ऊपर, आम इंसानियत की सबसे स्वाभाविक भावनाओं से भी ऊपर, फिर भी इसी युवक ने पैसे से ऊपर संगीत विद्यालय में प्रथम पुरस्कार विजेता का अपना प्रमाण पत्र और बांसुरी या काउंटरपॉइंट कक्षा में अपनी बदनामी होने के जोखिम को रखा। और इसलिए उसके सबसे हिंसक क्रोध, उसके सबसे गंभीर और अनुचित गुस्से के दौरे उस चीज से उत्पन्न होते थे जिसे वह खुद (निश्चित रूप से कुछ खास मामलों से सामान्यीकरण करते हुए जिनमें वह द्वेषपूर्ण लोगों से मिला था) सार्वभौमिक विश्वासघात कहता था। वह खुद को यह कहकर तसल्ली देता था कि वह इस गलती से बच गया क्योंकि उसने कभी किसी के बारे में बात नहीं की, अपनी चालों को छिपाया, और हर किसी पर अविश्वास किया। (अफ़सोस की बात है, पेरिस लौटने के बाद जो कुछ होना था, उसे देखते हुए, बालबेक के ड्राइवर के मामले में उनका अविश्वास 'सही साबित' नहीं हुआ। उन्होंने निस्संदेह उसमें एक समकक्ष व्यक्ति को पहचाना था, यानी अपने आदर्श

के विपरीत, एक सच्चे अर्थों में सतर्क व्यक्ति को, एक ऐसा सतर्क व्यक्ति जो ईमानदार लोगों के सामने हठपूर्वक चुप रहता है और बदमाश से तुरंत समझौता कर लेता है।) उन्हें ऐसा लगता था—और वे पूरी तरह गलत भी नहीं थे—कि उनका अविश्वास उन्हें हमेशा अपनी जान बचाने में सक्षम बनाएगा, सबसे खतरनाक कारनामों से भी बिना किसी नुकसान के निकल जाएगा, और रू बर्गेरे स्थित उस संस्थान में कोई भी उनके खिलाफ कुछ भी साबित नहीं कर पाएगा, यहाँ तक कि कुछ कह भी नहीं पाएगा। वे काम करेंगे, प्रसिद्ध होंगे, और शायद एक दिन, अपनी प्रतिष्ठा बरकरार रखते हुए, उस महान और गौरवशाली संगीत विद्यालय के बोर्ड में वायलिन के परीक्षक बनेंगे।

लेकिन इन विरोधाभासों में अंतर करने का प्रयास करना शायद मोरेल के मस्तिष्क को अत्यधिक तार्किक मानना होगा। वास्तव में, उनका स्वभाव एक ऐसे कागज के पन्ने जैसा था जिसे इतनी बार मोड़ा गया हो कि उसे सीधा करना असंभव हो। वे उच्च सिद्धांतों पर चलते प्रतीत होते थे, और अपनी उत्कृष्ट लिखावट में, जिसमें वर्तनी की बुनियादी गलतियाँ भी थीं, घंटों अपने भाई को लिखते रहते थे कि उन्होंने अपनी बहनों के साथ बुरा व्यवहार किया है, कि वे उनके बड़े हैं, उनके स्वाभाविक सहारा हैं, इत्यादि, और अपनी बहनों को लिखते थे कि उन्होंने उनके प्रति अनादर दिखाया है।

अब, जैसे-जैसे गर्मी का मौसम समाप्त हो रहा था, डौविल में ट्रेन से उतरते ही, घने कोहरे के कारण धुंधला पड़ा सूरज, बैंगनी रंग से ढके आसमान में लाल रंग के एक धब्बे जैसा लग रहा था। इन दलदली खारे मैदानों पर शाम ढलते ही जो शांति छा जाती थी, जिसने कई पेरिसवासियों, जिनमें अधिकतर चित्रकार थे, को अपनी छुट्टियाँ डौविल में बिताने के लिए प्रेरित किया था, उसमें अब नमी भी जुड़ गई थी, जिसके कारण वे अपने छोटे बंगलों में जल्दी ही शरण लेने को मजबूर हो गए थे। इनमें से कई बंगलों में दीपक जल चुका था। केवल कुछ गायें ही बाहर समुद्र को निहार रही थीं और रंभा रही थीं, जबकि अन्य, मनुष्यों में अधिक रुचि रखते हुए, हमारी गाड़ियों की ओर मुड़ गईं। एक अकेला चित्रकार, जिसने अपना ईज़ल उस ऊँची ज़मीन पर लगाया था, उस शांत, उस मौन प्रकाश को चित्रित करने का प्रयास कर रहा था। शायद मवेशी अनजाने में और दयालुता से उसके लिए आदर्श बनने वाले थे, क्योंकि उनकी चिंतनशील मुद्रा और मनुष्यों के चले जाने के बाद उनकी एकाकी उपस्थिति, उस शाम

के सुकून भरे माहौल को और भी बढ़ा रही थी। और, कुछ हफ्तों बाद, यह बदलाव उतना ही सुखद था जब शरद ऋतु आगे बढ़ने के साथ, दिन वास्तव में छोटे हो गए, और हमें अंधेरे में यात्रा करनी पड़ी। अगर मैं दोपहर में कहीं बाहर होता, तो मुझे ज़्यादा से ज़्यादा पाँच बजे तक कपड़े बदलने के लिए वापस आना पड़ता, क्योंकि इस मौसम में गोल, लाल सूरज पहले ही कांच की तिरछी शीट पर आधा डूब चुका होता था, जिससे मुझे पहले नफरत थी, और एक ग्रीक आग की तरह, मेरी सभी किताबों की अलमारियों के कांच के सामने समुद्र को प्रज्वलित कर रहा था। किसी जादूगर के इशारे ने, जैसे ही मैंने अपना डिनर जैकेट पहना, मेरे अंदर उस सतर्क और चंचल स्वभाव को फिर से जगा दिया जो मुझमें तब होता था जब मैं सेंट-लूप के साथ रिवेबेल में भोजन करने जाता था और उस शाम जब मैं श्रीमती को ले जाने की प्रतीक्षा कर रहा था। जब मैं बोइस द्वीप पर डी स्टरमारिया में भोजन करने जा रहा था, तो अनजाने में ही मैं वही धुन गुनगुनाने लगा जो मैंने तब गुनगुनाई थी; और जब मुझे इसका एहसास हुआ, तभी उस धुन से मैंने उस पुनर्जीवित गायक को पहचाना, जिसे वास्तव में कोई और धुन नहीं आती थी। पहली बार जब मैंने वह धुन गाई थी, तब मैं अल्बर्टीन के प्यार में पड़ने लगा था, लेकिन मुझे लगता था कि मैं उसे कभी जान नहीं पाऊंगा। बाद में, पेरिस में, तब मैं उससे प्यार करना छोड़ चुका था और कुछ दिनों बाद मैंने पहली बार उसके साथ समय बिताया था। अब मैं उससे फिर से प्यार करने लगा था और उसके साथ रात के खाने पर जाने ही वाला था, जिससे मैनेजर को बहुत अफसोस हुआ, क्योंकि उसे लगा था कि मैं ला रास्पेलियर में ही रुक जाऊंगा और उसका होटल छोड़ दूंगा, और उसने मुझे आश्वासन दिया कि उसने सुना है कि उस इलाके में बुखार फैला हुआ है, बैक नदी के दलदल और उनके रुके हुए पानी के कारण। मैं अपने जीवन को इस तरह तीन स्तरों पर फैला हुआ देखकर बहुत खुश था; और इसके अलावा, जब कोई क्षण भर के लिए अपने पुराने स्वरूप में लौट आता है, यानी कुछ समय पहले से जो था उससे भिन्न हो जाता है, तो उसकी संवेदनशीलता, आदत से कुंद न होकर, उन तीव्र अनुभवों के हल्के झटकों को भी ग्रहण कर लेती है जो उनसे पहले के सभी अनुभवों को महत्वहीन बना देते हैं, और जिनकी तीव्रता के कारण हम एक शराबी के क्षणिक उत्साह के साथ उनसे जुड़ जाते हैं। रात हो चुकी थी जब हम उस बस या गाड़ी में बैठे जो हमें उस स्टेशन तक ले जाने वाली थी जहाँ हमें छोटी ट्रेन पकड़नी थी। और हॉल में मुख्य मजिस्ट्रेट हमसे कह

रहे थे: "अरे! तुम लोग ला रास्पेलियर जा रहे हो! सप्रिस्टी, तुम्हारी मैडम वर्दुरिन की हिम्मत तो देखो, तुम्हें अंधेरे में एक घंटे ट्रेन से यात्रा करवा रही है, सिर्फ़ उसके साथ भोजन करने के लिए। और फिर रात के दस बजे, भयंकर हवा के बीच, फिर से रवाना होना है। यह आसानी से समझा जा सकता है कि तुम्हारे पास करने के लिए और कुछ नहीं है," उन्होंने अपने हाथों को आपस में रगड़ते हुए कहा। इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्होंने आमंत्रित न किए जाने की झुंझलाहट से और साथ ही उन लोगों की संतुष्टि से ऐसा कहा होगा जो 'व्यस्त' हैं - भले ही वह सबसे मूर्खतापूर्ण काम में ही क्यों न हों - कि उनके पास वह करने का 'समय नहीं' है जो आप कर रहे हैं।

यह तो बिल्कुल सही है कि जो व्यक्ति रिपोर्ट तैयार करता है, हिसाब-किताब करता है, व्यावसायिक पत्रों का जवाब देता है, शेयर बाजार की गतिविधियों पर नज़र रखता है, वह जब आपसे व्यंग्य से कहे: "आपके लिए तो यह सब ठीक है; आपके पास करने के लिए और कुछ बेहतर नहीं है," तो उसे अपनी श्रेष्ठता का सुखद अहसास हो। लेकिन यह उतना ही अपमानजनक होता, बल्कि और भी अधिक अपमानजनक होता (क्योंकि व्यस्त व्यक्ति भी बाहर खाना खाते हैं) यदि आपका मनोरंजन हैमलेट लिखना या केवल उसे पढ़ना होता। इसमें व्यस्त व्यक्ति चिंतन की कमी दिखाते हैं। क्योंकि निस्वार्थ संस्कृति, जो उन्हें उस समय आलसी लोगों का एक हास्यास्पद शगल लगती है जब वे उन्हें इसमें लगे हुए पाते हैं, उन्हें याद रखना चाहिए कि यही संस्कृति उनके अपने पेशे में उन लोगों को आगे लाती है जो शायद उनसे बेहतर मजिस्ट्रेट या प्रशासक न हों, लेकिन जिनकी तीव्र उन्नति के सामने वे सिर झुकाते हुए कहते हैं: "लगता है वह एक महान पाठक है, एक बहुत ही विशिष्ट व्यक्ति है।" लेकिन सबसे बढ़कर, मुख्य मजिस्ट्रेट ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि ला रास्पेलियर में इन भोजों में मुझे जो बात सबसे अधिक पसंद थी, वह यह थी कि, जैसा कि उन्होंने स्वयं बिल्कुल सही कहा था (हालांकि एक आलोचना के रूप में), वे 'एक नियमित यात्रा' का प्रतीक थे, एक ऐसी यात्रा जिसका आकर्षण मुझे और भी रोमांचकारी लगता था क्योंकि यह अपने आप में कोई उद्देश्य नहीं था, और कोई भी इसमें आनंद खोजने का प्रयास नहीं करता था - वह आनंद तो उस दल के लिए आरक्षित था जिसके लिए हम जा रहे थे, और उसके चारों ओर के वातावरण से काफी प्रभावित था। अब रात हो चुकी थी जब मैंने होटल की गर्माहट - वह होटल जो मेरा

घर बन गया था - को छोड़कर रेलगाड़ी के डिब्बे में प्रवेश किया, जिसमें खिड़की पर लगी बत्ती की हल्की रोशनी, हांफती हुई छोटी ट्रेन के कुछ पड़ावों पर, यह दर्शाती थी कि हम एक स्टेशन पर पहुँच गए हैं। ताकि कॉटार्ड के हमें न देख पाने का कोई खतरा न हो, और स्टेशन का नाम न सुनने के कारण, मैंने दरवाजा खोला, लेकिन डिब्बे में जो चीज तेजी से घुस आई, वह कोई श्रद्धालु नहीं, बल्कि हवा, बारिश और ठंड थी। अंधेरे में मुझे खेत दिखाई दे रहे थे, समुद्र की आवाज़ सुनाई दे रही थी, हम खुले मैदान में थे। अल्बर्टीन ने, उस छोटे से समूह में समा जाने से पहले, अपने साथ रखे सोने के थैले से निकाले गए एक छोटे से दर्पण में खुद को देखा। दरअसल, हमारी पहली मुलाकात में, श्रीमती वर्दुरिन उन्हें रात के खाने से पहले तैयार होने के लिए ऊपर उनके ड्रेसिंग रूम में ले गई थीं। उस समय, मैं कुछ समय से जिस गहरी शांति में जी रही थी, उसके बीच मुझे सीढ़ियों के नीचे अल्बर्टीन से अलग होने पर थोड़ी बेचैनी और ईर्ष्या महसूस हुई थी। ड्राइंग रूम में अकेले, उस छोटे से समूह के बीच, मैं इतनी चिंतित हो गई थी कि सोच रही थी कि मेरी मालकिन क्या कर रही होगी। इसलिए, एम. डी चार्लस से यह पता लगाने के बाद कि उस समय क्या उचित था, मैंने अगले दिन एक टेलीग्राम भेजा और कार्टियर से एक थैला मंगवाया जो अल्बर्टीन और मेरी दोनों की जान था। यह मेरे लिए मन की शांति की गारंटी थी, और साथ ही मेरी प्रेमिका की चिंता का भी। क्योंकि उन्होंने स्पष्ट रूप से देख लिया था कि मुझे श्रीमती वर्दुरिन के यहाँ उनसे अलग रहना पसंद नहीं था, और उन्होंने भोजन से पहले काफिले में ही सभी आवश्यक श्रृंगार की व्यवस्था कर दी थी।

श्रीमती वर्दुरिन के नियमित आगंतुकों में, और उनमें सबसे वफादार माने जाने वाले, श्री डी चार्लस भी कुछ महीनों से उनके पास आते-जाते थे। नियमित रूप से, सप्ताह में तीन बार, डोनसिएरेस-ओएस्ट के प्रतीक्षाकक्षों में बैठे या प्लेटफार्म पर खड़े यात्री उस हट्टे-कट्टे सज्जन को उनके भूरे बालों, काली मूंछों और लाल होंठों के साथ गुजरते हुए देखते थे। उनके होंठ एक ऐसे मरहम से लाल होते थे जो मौसम के अंत में उतना स्पष्ट नहीं होता था जितना गर्मियों में, जब दिन के उजाले में वह अधिक स्पष्ट दिखता था और गर्मी उसे पिघला देती थी। जैसे ही वह छोटी सी ट्रेन की ओर बढ़ा, वह (केवल आदत के कारण, एक पारखी होने के नाते, क्योंकि अब उसके मन में एक ऐसी भावना थी जो उसे पवित्र रखती थी, या कम से कम, अधिकांश समय के लिए, वफादार बनाए रखती थी) मजदूरों, सैनिकों और टेनिस फ्लैनल्स पहने युवकों

पर एक दबी-दबी निगाह डालने से खुद को रोक नहीं पाया। निगाहों में एक साथ पूछताछ और भय दोनों झलक रहे थे, जिसके बाद उसने तुरंत अपनी आधी बंद आँखों पर पलकें झुका लीं, मानो कोई पादरी माला जप रहा हो, या फिर जीवन भर के प्यार के प्रति समर्पित दुल्हन या एक सभ्य लड़की की तरह विनम्रता से। वफादारों को और भी यकीन हो गया कि उसने उन्हें नहीं देखा है, क्योंकि वह उनके डिब्बे से अलग डिब्बे में चला गया (जैसा कि राजकुमारी शेरबतोफ भी अक्सर करती थीं), मानो वह व्यक्ति जिसे पता नहीं है कि लोग उसके साथ देखे जाने पर खुश होंगे या नहीं, और उन्हें यह विकल्प देता है कि यदि वे चाहें तो आकर उसके साथ शामिल हो सकते हैं। डॉक्टर ने पहले तो यह विकल्प नहीं चुना था और हमसे कहा था कि हम उन्हें उनके डिब्बे में अकेला छोड़ दें। चिकित्सा जगत में उच्च पद पर आसीन होने के कारण, उन्होंने अपनी स्वाभाविक झिझक को एक गुण समझा और मुस्कुराते हुए, सिर पीछे करके, चश्मे के ऊपर से स्की की ओर देखते हुए, या तो द्वेषवश या अपने साथियों की राय जानने की उम्मीद में कहा: "आप समझ सकते हैं कि अगर मैं अकेला होता, अविवाहित होता, लेकिन अपनी पत्नी की खातिर मैं सोच रहा हूँ कि क्या मुझे आपके द्वारा बताई गई बातों के बाद उन्हें हमारे साथ यात्रा करने की अनुमति देनी चाहिए?" डॉक्टर ने फुसफुसाते हुए कहा। "आप क्या कहना चाह रहे हैं?" श्रीमती कॉटार्ड ने पूछा। “कुछ नहीं, इससे तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं है, ये बातें महिलाओं के सुनने के लिए नहीं हैं,” डॉक्टर ने आँख मारते हुए और एक राजसी आत्मसंतुष्टि के साथ जवाब दिया। उनके चेहरे पर अपने छात्रों और रोगियों के सामने अपनाए जाने वाले उनके रूखे और द्वेषपूर्ण लहजे और वर्दुरिन परिवार पर किए जाने वाले उनके चुटकुलों के साथ आने वाली बेचैनी के बीच संतुलन बना हुआ था। उन्होंने धीमी आवाज़ में बोलना जारी रखा। श्रीमती कॉटार्ड केवल 'भाईचारे का सदस्य' और 'टैपेट' शब्द ही समझ पाईं। डॉक्टर की शब्दावली में पहला शब्द यहूदी जाति और दूसरा चुगली करने वाली ज़बान को दर्शाता था, इसलिए श्रीमती कॉटार्ड ने निष्कर्ष निकाला कि एम. डी चार्लस एक बातूनी इस्राइली होंगे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि लोग इस कारण से बैरन से दूर क्यों रहते हैं। परिवार की वरिष्ठ महिला होने के नाते उन्होंने इसे अपना कर्तव्य समझा कि उन्हें अकेला न छोड़ा जाए। इसलिए हम सब एक साथ एम. डी चार्लस के कमरे की ओर चल पड़े, कॉटार्ड, जो अभी भी असमंजस में थीं, आगे-आगे चल रही थीं। बाल्ज़ाक की एक किताब पढ़ते हुए

कोने से एम. डी चार्लस ने इस झिझक को देखा; फिर भी उन्होंने अपनी आँखें ऊपर नहीं उठाई थीं। लेकिन जैसे बहरे-गूंगा लोग, दूसरों को महसूस न होने वाली हवा की हलचल से ही जान लेते हैं कि कोई उनके पीछे खड़ा है, वैसे ही उन्हें भी दूसरों की उनके प्रति उदासीनता, एक तरह की अति संवेदनशीलता, के बारे में आगाह करना पड़ा। हर क्षेत्र में आदतन होने के कारण, एम. डी चार्लस में भी काल्पनिक पीड़ाएँ विकसित हो गई थीं। उन न्यूरोपैथिक लोगों की तरह जो तापमान में थोड़ी सी भी कमी महसूस करके यह अनुमान लगाते हैं कि ऊपर की मंजिल पर कोई खिड़की खुली होगी, और फिर उत्तेजित होकर छींकने लगते हैं, एम. डी चार्लस भी, अगर कोई व्यक्ति उनकी उपस्थिति में खोया-खोया सा दिखाई देता, तो यह निष्कर्ष निकालते कि किसी ने उस व्यक्ति को उनके बारे में कही गई कोई बात दोहरा दी है। लेकिन इसके लिए यह ज़रूरी नहीं था कि दूसरा व्यक्ति खोया-खोया, उदास या मुस्कुराता हुआ दिखे, वे ये सब बातें खुद ही गढ़ लेते थे। दूसरी ओर, सौहार्दपूर्ण व्यवहार ने उनसे उन आरोपों को पूरी तरह छिपा लिया था जिनके बारे में उन्होंने सुना भी नहीं था। कॉटार्ड की झिझक को भांपते हुए, उन्होंने अपने अनुयायियों को आश्चर्यचकित करते हुए, जिन्होंने यह नहीं सोचा था कि पाठक की झुकी हुई निगाहों ने उनकी उपस्थिति पर ध्यान दिया है, उचित दूरी पर आकर उनकी ओर हाथ बढ़ाया। फिर उन्होंने अपने पूरे शरीर को आगे की ओर झुकाकर संतोष किया, जिसे उन्होंने कॉटार्ड के लिए तुरंत पीछे खींच लिया, डॉक्टर द्वारा बढ़ाए गए हाथ को अपने दस्ताने वाले हाथ में लिए बिना। "हमें लगा कि हमें आना ही चाहिए, महोदय, और आपको अपने छोटे से कोने में अकेला नहीं छोड़ना चाहिए। यह हमारे लिए बहुत खुशी की बात है," श्रीमती कॉटार्ड ने बैरन से मैत्रीपूर्ण स्वर में कहना शुरू किया। "मैं बहुत सम्मानित महसूस कर रहा हूँ," बैरन ने ठंडे स्वर में झुकते हुए कहा। "मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि आपने अपना तम्बू स्थापित करने के लिए निश्चित रूप से इस पड़ोस को चुना है...।" वह 'तंबू' कहने ही वाली थी कि तभी उसे याद आया कि यह शब्द हिब्रू भाषा का है और किसी यहूदी के लिए असभ्य होगा, क्योंकि उसे इसमें कोई संकेत नज़र आ सकता है। इसलिए वह एक पल रुकी और अपने परिचित शब्दों में से एक दूसरा शब्द चुना, यानी एक धार्मिक शब्द: "अपने अनुष्ठान स्थापित करना, मैं कहूँगी।" (यह सच है कि ये देवता भी ईसाई धर्म से संबंधित नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे धर्म से संबंधित हैं जो इतने लंबे समय से मृत है कि अब

उसके कोई अनुयायी नहीं हैं, जिनके भावों को ठेस पहुँचाने से डरने की ज़रूरत हो।) "दुर्भाग्य से, प्रसव की शुरुआत और डॉक्टर के अस्पताल के कर्तव्यों के कारण, हम कभी भी एक जगह पर लंबे समय तक अपना निवास नहीं चुन सकते।" और एक गत्ते के डिब्बे पर नज़र डालते हुए बोली: "आप यह भी देख सकते हैं कि हम बेचारी औरतें, पुरुषों की तुलना में कितनी कम भाग्यशाली हैं, अपने दोस्तों वर्दुरिन्स के घर जैसी छोटी सी दूरी तय करने के लिए भी हमें ढेर सारा सामान ले जाना पड़ता है।" इस बीच मैं बैरन की बाल्ज़ाक की किताब देख रहा था। यह कोई कागज़ से ढकी किताब नहीं थी, जिसे किसी किताबों की दुकान से खरीदा गया हो, जैसे बर्गोट की वह किताब जो उन्होंने हमारी पहली मुलाकात में मुझे उधार दी थी। यह उनकी अपनी लाइब्रेरी की किताब थी, और इस पर लिखा था: "मैं बैरन डी चार्लस का हूँ," जिसे कभी-कभी गुएरमांटेस के अध्ययनशील शौक को दिखाने के लिए "इन प्रोएलिस नॉन सेम्पर" या एक और आदर्श वाक्य: "नॉन साइन लेबोर" से बदल दिया जाता था। लेकिन हम देखेंगे कि मोरेल को खुश करने के प्रयास में इन्हें जल्द ही दूसरे वाक्यों से बदल दिया गया। कुछ देर बाद, श्रीमती कॉटार्ड को एक ऐसा विषय सूझा जो उन्हें लगा कि बैरन के लिए अधिक व्यक्तिगत रुचिकर होगा। उन्होंने उनसे कहा, "मुझे नहीं पता कि आप मुझसे सहमत होंगे या नहीं, महोदय, लेकिन मेरे विचार बहुत व्यापक हैं, और मेरी राय में सभी धर्मों में बहुत कुछ अच्छा है। मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जिन्हें किसी प्रोटेस्टेंट को देखकर पानी से डर लगता है।" “मुझे सिखाया गया था कि मेरा धर्म ही सच्चा धर्म है,” एम. डी चार्लस ने उत्तर दिया। “वह कट्टरपंथी है,” श्रीमती कॉटार्ड ने सोचा। “स्वान, कुछ समय पहले तक अधिक सहिष्णु था; यह सच है कि उसने धर्म परिवर्तन किया था।” अब, इसके विपरीत, बैरन न केवल ईसाई थे, जैसा कि हम जानते हैं, बल्कि मध्ययुगीन उत्साह से भरे हुए थे। उनके लिए, मध्य युग के मूर्तिकारों की तरह, ईसाई गिरजाघर, शब्द के जीवंत अर्थ में, असंख्य आत्माओं से भरा हुआ था, जिन्हें वे पूर्णतः वास्तविक मानते थे - पैगंबर, प्रेरित, देवदूत, हर प्रकार के पवित्र व्यक्ति, जो ईश्वर के अवतार, उनकी माता और उनके पति, शाश्वत पिता, सभी शहीदों और चर्च के विद्वानों से घिरे हुए थे, जैसा कि उच्च राहत में उकेरा गया है, गिरजाघरों के बरामदों पर या गलियारों में उनकी मूर्तियाँ देखी जा सकती हैं। इन सभी में से एम. डी चार्लस ने अपने संरक्षक और मध्यस्थ के रूप में प्रधान देवदूत माइकल, गैब्रियल और राफेल को चुना था, जिनसे वे अक्सर

प्रार्थना करते थे कि वे उनकी प्रार्थनाओं को परमपिता परमेश्वर तक पहुंचाएं, जिनके सिंहासन के समक्ष वे विराजमान हैं। और इसलिए श्रीमती कॉटार्ड की गलती ने मुझे बहुत आनंदित किया।

धार्मिक क्षेत्र से हटकर, आइए उस डॉक्टर का ज़िक्र करें, जो एक किसान माँ की सलाह से मामूली सा सामान लेकर पेरिस आया था और फिर चिकित्सा के क्षेत्र में आगे बढ़ने की चाह रखने वालों के लिए अनिवार्य रूप से कई वर्षों तक पूरी तरह से भौतिकवादी अध्ययन में लीन रहा था। वह कभी भी सुसंस्कृत नहीं हो पाया, उसने अधिकार तो बढ़ता ही गया लेकिन उसे कभी कोई अनुभव नहीं हुआ। उसने 'सम्मानित' शब्द को उसके शाब्दिक अर्थ में लिया और एक तरफ तो वह अपनी अभिमान के कारण खुश हुआ और दूसरी तरफ अपने दयालु हृदय के कारण दुखी हुआ। उस शाम उसने अपनी पत्नी से कहा, "उस बेचारे डी चार्लस ने मुझे उसके लिए तरस दिलाया जब उसने कहा कि हमारे साथ यात्रा करना उसके लिए सम्मान की बात है। बेचारे, ऐसा लगता है जैसे वह किसी को नहीं जानता, उसे खुद को विनम्र रखना पड़ता है।"

लेकिन फिलहाल, दयालु श्रीमती कॉटार्ड के मार्गदर्शन की आवश्यकता के बिना ही, श्रद्धालु उन शंकाओं पर काबू पाने में सफल हो गए थे जो उन्होंने एम. डी चार्लस की संगति में आने पर कमोबेश महसूस की थीं। निस्संदेह, उनकी उपस्थिति में उन्हें स्की के खुलासे लगातार याद आते रहे होंगे, और वे अपने साथी में निहित यौन विकृति से अवगत थे। लेकिन यह विकृति ही उनके लिए एक प्रकार का आकर्षण थी। इसने बैरन की बातचीत को, जो अपने आप में उल्लेखनीय थी लेकिन जिसे वे शायद ही समझ पाते थे, एक ऐसा स्वाद प्रदान किया जिसने ब्रिचोट की सबसे रोचक बातचीत को भी तुलना में थोड़ा फीका बना दिया। इसके अलावा, शुरू से ही वे यह मानने को तैयार थे कि वह बुद्धिमान थे। “वह प्रतिभा जो शायद पागलपन के समान है,” डॉक्टर ने कहा, और यद्यपि ज्ञान की प्यासी राजकुमारी ने ज़ोर देकर कहा, फिर भी उसने एक शब्द भी नहीं कहा, क्योंकि प्रतिभा के बारे में वह केवल यही सिद्धांत जानता था और उसे यह टाइफाइड बुखार और गठिया के हमारे ज्ञान की तुलना में कम प्रमाणिक प्रतीत होता था। और चूंकि वह अभिमानी और असभ्य हो गया था, इसलिए उसने कहा, “कोई प्रश्न मत पूछो, राजकुमारी, मुझसे पूछताछ मत करो, मैं समुद्र तट पर आराम

करने आया हूँ। वैसे भी, तुम नहीं समझोगी, तुम्हें चिकित्सा के बारे में कुछ नहीं पता।" और राजकुमारी ने क्षमा मांगते हुए चुप रहना स्वीकार किया, यह मानते हुए कि कॉटार्ड एक आकर्षक व्यक्ति था और यह समझते हुए कि मशहूर हस्तियाँ हमेशा सुलभ नहीं होतीं। इस प्रारंभिक दौर में, उन्होंने एम. डी चार्लस को उनकी अवगुण (या जिसे आमतौर पर ऐसा कहा जाता है) के बावजूद एक सुखद व्यक्ति पाया था। अब, पूरी तरह से अनजाने में, उसी अवगुण के कारण उन्होंने उसे बाकी लोगों से अधिक बुद्धिमान पाया। मूर्तिकार या विद्वान द्वारा चतुराई से उकसाए जाने पर, एम. डी चार्लस ने प्रेम, ईर्ष्या और सौंदर्य के विषय में जो सरलतम सिद्धांत व्यक्त किए, वे उनके अनुभव पर आधारित थे - विचित्र, रहस्यमय, परिष्कृत और विकराल। इन सिद्धांतों ने श्रोताओं के लिए एक ऐसा अनभिज्ञ आकर्षण पैदा कर दिया, जैसा कि हमारे नाट्य साहित्य में हमेशा से देखने को मिलता रहा है, जब रूसी या जापानी नाटकों में देशी कलाकार अभिनय करते हैं। कोई व्यक्ति, जब वह सुन नहीं रहा होता, तो उस पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी भी कर सकता था। "ओह!" मूर्तिकार ने फुसफुसाते हुए कहा, जब उसने एक युवा रेलकर्मी को देखा जिसकी पलकें नाचती हुई लड़की जैसी थीं और जिस पर एम. डी चार्लस की निगाहें टिक गईं, "अगर बैरन कंडक्टर को घूरने लगे, तो हम कभी वहाँ नहीं पहुँच पाएँगे, ट्रेन उल्टी दिशा में चलने लगेगी। देखो तो सही, वह उसे कैसे घूर रहा है, हम किसी स्टीम ट्राम में नहीं, बल्कि फ्यूनिक्युलर में बैठे हैं।" लेकिन अंत में, अगर एम. डी चार्लस नहीं आते, तो यह लगभग निराशाजनक होता कि हम केवल आम लोगों के साथ ही यात्रा कर रहे हैं, और हमारे साथ यह सजे-धजे, तोंद वाले, कसे हुए बटन वाले व्यक्ति का न होना, जो किसी संदिग्ध और अनोखे डिब्बे की याद दिलाता हो, जिसमें से फलों की ऐसी अजीब सी सुगंध निकलती हो जिसका स्वाद लेने मात्र से ही दिल कांप उठता हो। इस दृष्टि से, पुरुषों को सेंट-मार्टिन डू शेन, जहाँ एम. डी चार्लस सवार हुए, और डोंसिएरेस, वह स्टेशन जहाँ मोरेल दल में शामिल हुए, के बीच की छोटी यात्रा में कहीं अधिक संतुष्टि मिली। जब तक वायलिन वादक वहाँ नहीं थे (और जब तक महिलाएं और अल्बर्टीन, हमारी बातचीत में बाधा न डालने के लिए, सुनाई न दे रही थीं), एम. डी चार्लस ने कुछ विषयों से बचने का कोई प्रयास नहीं किया और 'जिसे पतित नैतिकता कहा जाता है' के बारे में बोलने में संकोच नहीं किया। अल्बर्टीन उसे रोक नहीं सकती थी, क्योंकि वह हमेशा महिलाओं के साथ रहती थी, एक सभ्य लड़की की

तरह जो बड़ों की बातचीत की स्वतंत्रता को सीमित नहीं करना चाहती। और मैं उसके बिना रहने के लिए पूरी तरह तैयार था, बशर्ते वह उसी डिब्बे में रहे। क्योंकि मुझे अब उससे कोई ईर्ष्या नहीं थी और न ही कोई प्यार था, इसलिए मैंने कभी नहीं सोचा कि जिन दिनों मैं उसे नहीं देखता था, उन दिनों वह क्या कर रही होगी; दूसरी ओर, जब मैं वहाँ होता था, तो एक मामूली पर्दा, जो किसी भी परिस्थिति में किसी विश्वासघात को छुपा सकता था, मेरे लिए असहनीय था, और अगर वह कुछ देर बाद महिलाओं के साथ अगले डिब्बे में चली जाती, तो मैं अपनी सीट पर और अधिक देर तक नहीं बैठ पाता, इस डर से कि कहीं बात कर रहे किसी भी व्यक्ति, ब्रिचोट, कॉटार्ड या चार्लस को बुरा न लग जाए, जिन्हें मैं अपने जाने का कारण नहीं समझा सकता था, इसलिए मैं उठ जाता, बिना किसी औपचारिकता के उन्हें छोड़कर, यह सुनिश्चित करने के लिए कि कुछ भी असामान्य नहीं हो रहा है, गलियारे से नीचे चला जाता। और जब तक हम डोनसिएरेस नहीं पहुँचे, एम. डी चार्लस, अपने श्रोताओं को चौंकाने के किसी भी भय के बिना, कभी-कभी नैतिकता के उन सिद्धांतों पर सीधे-सादे शब्दों में बोलते थे, जिन्हें वे स्वयं न तो अच्छा मानते थे और न ही बुरा। वे ऐसा चालाकी से करते थे, अपनी बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करने के लिए, क्योंकि उन्हें पूरा विश्वास था कि उनके नैतिक मूल्यों से अनुयायियों के मन में कोई संदेह नहीं पैदा होता। वे भली-भांति जानते थे कि दुनिया में कई ऐसे लोग मौजूद हैं जो, उनके द्वारा बाद में अपनाए गए एक मुहावरे का प्रयोग करें तो, उनके बारे में 'जानकार' हैं। लेकिन उनका मानना था कि ऐसे लोग तीन या चार से अधिक नहीं हैं, और उनमें से कोई भी उस समय नॉर्मंडी के तट पर नहीं है। इतने चतुर और शंकालु व्यक्ति के लिए यह भ्रम आश्चर्यजनक लग सकता है। जिन लोगों को वह कमोबेश जानकार समझता था, उनके बारे में भी वह यह सोचकर खुद को तसल्ली देता था कि उनकी सारी जानकारी अस्पष्ट है, और किसी के बारे में यह या वह तथ्य बताकर वह उस व्यक्ति को सुनने वाले के संदेह से मुक्त करने की उम्मीद करता था, जो शिष्टाचारवश उसके कथनों को स्वीकार करने का दिखावा करता था। दरअसल, मेरे बारे में उसके ज्ञान या अनुमान के बारे में अनिश्चित होने के कारण, वह मानता था कि मेरी राय, जिसे वह वास्तविकता से कहीं अधिक पुरानी समझता था, काफी सामान्य थी, और उसके लिए इस या उस विवरण को नकारना ही विश्वास पाने के लिए पर्याप्त था, जबकि इसके विपरीत, यदि हमारा ज्ञान हमेशा विवरणों के ज्ञान से पहले आता है, तो इससे विवरणों

की जांच करना कहीं अधिक आसान हो जाता है और उसकी अदृश्यता का आवरण नष्ट हो जाने के बाद, ढोंगी अब अपने मन की बात छिपा नहीं सकता। निश्चित रूप से, जब एम. डी चार्लस को उनके किसी वफादार या मित्र द्वारा रात्रिभोज में आमंत्रित किया गया, तो उन्होंने दस लोगों के नामों में मोरेल का नाम शामिल करने के लिए अत्यंत सावधानी बरती। उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मोरेल से मिलने के निमंत्रण के लिए वे जो भी कारण बताते थे, चाहे वह अलग-अलग हों, उनके मेजबान, हालांकि ऐसा प्रतीत होता था कि वे उन पर पूर्ण विश्वास करते हैं, एक ही कारण मान लेते थे, जिसके बारे में उन्हें लगता था कि वे अनजान हैं, और वह कारण था कि मोरेल उनसे प्रेम करते हैं। इसी प्रकार, श्रीमती वर्दुरिन, जो हमेशा एम. डी चार्लस द्वारा मोरेल में दिखाई गई रुचि के लिए बताए गए आधे कलात्मक, आधे परोपकारी उद्देश्यों को पूरी तरह से स्वीकार करती प्रतीत होती थीं, वायलिन वादक के प्रति बैरन की दयालुता—जिसे वे उनकी भावपूर्ण दयालुता कहती थीं—के लिए उन्हें भावभीनी धन्यवाद देना कभी बंद नहीं करती थीं। और एम. डी चार्लस कितने आश्चर्यचकित होते, अगर एक दिन जब मोरेल और वह ट्रेन से नहीं आ पाए और उन्हें देर हो गई, तो उन्होंने मालकिन को यह कहते सुना होता: "युवतियों को छोड़कर हम सब यहाँ हैं।" बैरन और भी अधिक स्तब्ध रह जाते क्योंकि वे ला रास्पेलियर के अलावा शायद ही कहीं जाते थे, और वहाँ वे एक पारिवारिक पादरी की भूमिका निभाते थे, जैसे किसी स्टॉक कंपनी में एब्बे, और कभी-कभी (जब मोरेल को 48 घंटे की छुट्टी मिलती थी) लगातार दो रातें वहीं सोते थे। श्रीमती वर्दुरिन तब उन्हें जुड़े हुए कमरे देतीं और उन्हें सहज महसूस कराने के लिए कहतीं: "अगर आप थोड़ा संगीत सुनना चाहते हैं, तो हमारी चिंता न करें, दीवारें किले जितनी मोटी हैं, आपके कमरे में कोई और नहीं है, और मेरे पति तो गहरी नींद सोते हैं।" ऐसे दिनों में एम. डी चार्लस राजकुमारी को स्टेशन पर अजनबियों से मिलने जाने के कर्तव्य से मुक्त कर देते, और श्रीमती वर्दुरिन की ओर से माफी मांगते। वेरदुरिन की अनुपस्थिति का कारण उनकी खराब स्वास्थ्य स्थिति थी, जिसका उन्होंने इतनी सजीवता से वर्णन किया कि मेहमान गंभीर चेहरों के साथ ड्राइंग रूम में दाखिल हुए और मालकिन को उठकर काम करते और लगभग नीची पोशाक पहने देखकर आश्चर्य से चिल्ला उठे।

फिलहाल, एम. डी चार्लस, श्रीमती वर्दुरिन के लिए सबसे वफादार व्यक्ति बन गए थे, मानो दूसरी राजकुमारी शेरबातोफ़ हों। समाज में उनकी स्थिति के बारे में वे राजकुमारी की तुलना में कहीं अधिक अनिश्चित थीं, उनका मानना था कि यदि राजकुमारी अपने छोटे से समूह के बाहर किसी से मिलना नहीं चाहती थीं, तो यह अन्य लोगों के प्रति तिरस्कार और अपने समूह के प्रति लगाव के कारण था। चूंकि यह दिखावा ठीक वर्दुरिन परिवार का ही था, वे हर उस व्यक्ति को उबाऊ समझते थे जिसकी संगति में उन्हें प्रवेश नहीं मिलता था, इसलिए यह मानना अविश्वसनीय है कि मालकिन ने राजकुमारी को लोहे के दिल वाली और फैशन से नफरत करने वाली मान लिया होगा। लेकिन वे अपनी बात पर अड़ी रहीं और उन्हें विश्वास था कि महान महिला के मामले में भी, उबाऊ लोगों की संगति से बचने का उनका कारण पूरी ईमानदारी और बौद्धिक चीजों के प्रति प्रेम ही था। संयोगवश, वर्दुरिन परिवार की दृष्टि से उबाऊ लोगों की संख्या कम होती जा रही थी। समुद्र तट पर जीवन बिताने से परिचय के उन दुष्परिणामों से बचाव हो जाता था जिनका पेरिस में भय हो सकता था। बालबेक में बिना पत्नियों के आए प्रतिभाशाली पुरुषों (जिससे सब कुछ बहुत आसान हो गया था) ने ला रास्पेलियर में प्रेम प्रस्ताव रखे और उबाऊ होने के बजाय बेहद आकर्षक बन गए। प्रिंस डी गुएरमांटेस के साथ भी ऐसा ही हुआ। हालांकि, राजकुमारी की अनुपस्थिति में वेरदुरिन परिवार के पास 'कुंवारे' के रूप में जाने का उनका निर्णय शायद तब तक नहीं हुआ होता, जब तक कि ड्रेफसवाद का आकर्षण उन्हें एक ही झटके में ला रास्पेलियर की खड़ी चढ़ाई पर न ले गया होता, दुर्भाग्य से उस दिन जब उनकी पत्नी घर पर नहीं थीं। संयोग से, श्रीमती वेरदुरिन को यकीन नहीं था कि वे और एम. डी चार्लस एक ही दुनिया में रहते हैं। बैरन ने वास्तव में कहा था कि ड्यूक डी गुएरमांटेस उनके भाई हैं, लेकिन यह शायद एक साहसी व्यक्ति का झूठा दावा था। दुनियादार होने का परिचय देते हुए, वेरदुरिन परिवार के प्रति इतने मित्रवत और 'वफादार' होने के बावजूद, पत्नी उन्हें प्रिंस डी गुएरमांटेस से मिलवाने के लिए आमंत्रित करने में लगभग हिचकिचा रही थीं। उन्होंने स्की और ब्रिचोट से सलाह ली: "बैरन और प्रिंस डी गुएरमांटेस, क्या वे एक साथ ठीक रहेंगे?" "हे भगवान, महोदया, दोनों में से एक के बारे में तो मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ।" "इससे मुझे क्या लेना-देना?" श्रीमती वर्दुरिन ने चिढ़कर जवाब दिया। "मैंने आपसे पूछा था कि क्या वे एक साथ अच्छे से घुल-मिल पाएंगे।"

"अरे! महोदया, यह उन चीजों में से एक है जिनके बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।" श्रीमती वर्दुरिन के मन में कोई दुर्भावना नहीं थी। उन्हें बैरन के नैतिक मूल्यों का पूरा भरोसा था, लेकिन जब उन्होंने ये शब्द कहे, तो उन्होंने इस बारे में एक पल के लिए भी नहीं सोचा था, बल्कि वे केवल यह जानना चाहती थीं कि क्या वे राजकुमार और एम. डी चार्लस को एक ही शाम को आमंत्रित कर सकती हैं, बिना उनके बीच किसी तरह के टकराव के। इन बने-बनाए भावों का प्रयोग करते समय उनका कोई दुर्भावनापूर्ण इरादा नहीं था, जो कलात्मक 'छोटे समूहों' में प्रचलित हैं। एम. डी गुएरमांटेस का पूरा लाभ उठाने के लिए, उसने दोपहर के भोजन के बाद उन्हें एक चैरिटी कार्यक्रम में ले जाने का प्रस्ताव रखा, जहाँ आस-पास के नाविक एक जहाज के रवाना होने का प्रदर्शन करने वाले थे। लेकिन, समय की कमी के कारण, उसने अपने कर्तव्यों को सबसे वफादार व्यक्ति, बैरन को सौंप दिया। "आप समझते हैं ना, मैं नहीं चाहता कि वे चट्टान पर सीपियों की तरह सुस्त पड़े रहें, उन्हें चलते रहना चाहिए, हमें उन्हें लंगर उठाते हुए देखना चाहिए, या जो भी उसे कहते हैं। अब आप हमेशा बालबेक-प्लेज के बंदरगाह पर जाते रहते हैं, आप बिना थके आसानी से रिहर्सल कर सकते हैं। आप नाविकों से संपर्क करने के बारे में मुझसे कहीं ज्यादा जानते होंगे, श्रीमान डी चार्लस। लेकिन आखिरकार, हम श्रीमान डी गुएरमांटेस के लिए खुद को बहुत बड़ी मुसीबत में डाल रहे हैं। शायद वह जॉकी क्लब के उन बेवकूफों में से एक है। ओह! हे भगवान, मैं जॉकी क्लब के बारे में सोच रहा हूँ, और मुझे याद आ रहा है कि आप उनमें से एक हैं। अरे, बैरन, आप मुझे जवाब नहीं दे रहे हैं, क्या आप उनमें से एक हैं? क्या आप हमारे साथ बाहर नहीं आना चाहते? देखिए, यहाँ एक किताब आई है, मुझे लगता है कि आपको यह दिलचस्प लगेगी। यह रूजोन द्वारा लिखी गई है। शीर्षक आकर्षक है: पुरुषों के बीच।"

मैं तो इस बात से और भी ज़्यादा खुश थी कि एम. डी चार्लस अक्सर राजकुमारी शेरबातोफ़ की जगह लेते थे, क्योंकि मैं उनकी नज़रों में बुरी तरह से गिर चुकी थी, और इसका कारण एक साथ मामूली और गंभीर दोनों था। एक दिन जब मैं छोटी सी ट्रेन में थी, और हमेशा की तरह राजकुमारी शेरबातोफ़ पर पूरा ध्यान दे रही थी, तभी मैंने श्रीमती डी विलेपारिसिस को ट्रेन में चढ़ते देखा। दरअसल, वह लक्ज़मबर्ग की राजकुमारी के साथ कुछ सप्ताह बिताने आई थीं, लेकिन अल्बर्टीन से मिलने की रोज़ाना की ज़रूरत के चलते मैंने मार्किज़ और

उनकी शाही मेज़बान के बार-बार के निमंत्रणों का कभी जवाब नहीं दिया था। अपनी दादी की सहेली को देखकर मुझे अफ़सोस हुआ, और केवल कर्तव्य की भावना से (राजकुमारी शेरबातोफ़ का साथ छोड़े बिना), मैं कुछ देर उनसे बात करती रही। संयोग से, मुझे इस बात का बिल्कुल भी पता नहीं था कि श्रीमती डी विलेपारिसिस अच्छी तरह जानती थीं कि मेरी सहेली कौन है, लेकिन वह उनसे बात नहीं करना चाहती थीं। अगले स्टेशन पर, श्रीमती... डी विलेपारिसिस गाड़ी से उतरीं, सचमुच मुझे इस बात का बहुत अफसोस हुआ कि मैंने उन्हें प्लेटफार्म पर चढ़ने में मदद नहीं की; मैं राजकुमारी के बगल में अपनी सीट पर वापस बैठ गया। लेकिन किसी ने सोचा होगा—जो कि उन लोगों के साथ अक्सर होता है जिनकी स्थिति स्थिर नहीं होती और जो डरते हैं कि किसी ने उनके बारे में कुछ बुरा सुन लिया होगा और उन्हें नीचा दिखा रहा होगा—कि अब एक नया दृश्य सामने आ गया है। अपनी पत्रिका 'रिव्यू डेस ड्यूक्स मोंडेस' में डूबी मैडम शेरबाटोफ ने मेरे सवालों के जवाब में मुश्किल से ही अपने होंठ हिलाए और अंत में मुझसे कहा कि मैं उनका सिर दर्द कर रहा हूँ। मुझे अपने अपराध की प्रकृति का ज़रा भी अंदाजा नहीं था। जब मैंने राजकुमारी को अलविदा कहा, तो उनके चेहरे पर हमेशा वाली मुस्कान नहीं आई, उनकी ठुड्डी एक रूखेपन से झुकी हुई थी, उन्होंने मुझे अपना हाथ तक नहीं बढ़ाया और न ही उन्होंने मुझसे फिर कभी बात की। लेकिन उन्होंने वर्दुरिन परिवार से ज़रूर बात की होगी—हालाँकि उन्होंने क्या कहा, यह मैं नहीं बता सकता। जैसे ही मैंने उनसे पूछा कि क्या मुझे राजकुमारी शेरबतोफ़ से विनम्रतापूर्वक बात नहीं करनी चाहिए, उन्होंने एक स्वर में उत्तर दिया: "नहीं! नहीं! नहीं! ऐसा कुछ नहीं! उन्हें शिष्टतापूर्ण बातों की परवाह नहीं है!" उन्होंने यह हमारे बीच दरार पैदा करने के लिए नहीं कहा था, बल्कि वह उन्हें यह विश्वास दिलाने में सफल हो गई थीं कि वह शिष्टाचार से अप्रभावित हैं, कि उनका मन इस दुनिया के दिखावे से अप्रभावित है। उस राजनेता को देखना ज़रूरी है जिसे अपने कार्यकाल के दौरान सबसे दृढ़ निश्चयी, सबसे अडिग और सबसे दुर्गम माना जाता था; उसे उसके अपमान के समय में देखना ज़रूरी है, जब वह एक साधारण पत्रकार के अभिमानी अभिवादन को विनम्रतापूर्वक, एक उज्ज्वल, स्नेही मुस्कान के साथ स्वीकार कर रहा था; कॉटार्ड (जिसे उसके नए मरीज़ लोहे की छड़ मानते थे) को खुद को सीधा खड़ा करते देखना ज़रूरी है; यह जानना ज़रूरी है कि प्रेम में किन निराशाओं और घमंड के किन तिरस्कारों से

राजकुमारी शेरबतोफ़ का स्पष्ट गर्व और सर्वमान्य घमंड-विरोधी स्वभाव विकसित हुआ, तभी यह समझा जा सकता है कि मानव जाति में यह नियम है—जिसमें स्वाभाविक रूप से अपवाद भी हैं—कि कथित तौर पर कठोर लोग कमज़ोर लोग होते हैं जिन्हें कोई नहीं चाहता, और जो मज़बूत होते हैं, जिन्हें इस बात की परवाह नहीं होती कि उन्हें चाहा जाता है या नहीं, उनमें ही वह नम्रता होती है जिसे आम लोग कमज़ोरी समझ लेते हैं।

लेकिन मुझे राजकुमारी शेरबातोफ़ के बारे में इतनी कठोर राय नहीं रखनी चाहिए। उनका मामला तो बहुत आम है! एक दिन, एक गुरमांटे परिवार के अंतिम संस्कार में, मेरे बगल में खड़े एक प्रतिष्ठित व्यक्ति ने मेरा ध्यान एक दुबले-पतले, सुंदर चेहरे वाले व्यक्ति की ओर दिलाया। मेरे पड़ोसी ने मुझे बताया, "सभी गुरमांटे परिवार में, यह सबसे आश्चर्यजनक, सबसे अनोखा है। यह ड्यूक का भाई है।" मैंने बिना सोचे-समझे जवाब दिया कि वह गलत हैं, क्योंकि जिस सज्जन की बात हो रही है, उनका गुरमांटे परिवार से कोई संबंध नहीं है, उनका नाम जर्नियर-सार्लोविज़ है। उस प्रतिष्ठित व्यक्ति ने मेरी ओर पीठ फेर ली और तब से उन्होंने कभी मुझे प्रणाम भी नहीं किया।

एक महान संगीतकार, जो संस्थान के सदस्य और उच्च पदस्थ अधिकारी थे और स्की से परिचित थे, हरम्बौविले आए, जहाँ उनकी भतीजी ठहरी हुई थी, और वर्दुरिन परिवार के एक बुधवार के कार्यक्रम में शामिल हुए। एम. डी चार्लस ने (मोरेल के अनुरोध पर) उनके प्रति विशेष विनम्रता दिखाई, मुख्य रूप से इसलिए कि पेरिस लौटने पर शिक्षाविद उन्हें विभिन्न निजी संगीत कार्यक्रमों, पूर्वाभ्यासों आदि में भाग लेने की अनुमति दे सकें, जिनमें वायलिन वादक प्रस्तुति देंगे। शिक्षाविद, जो प्रसन्न हुए और स्वभाव से ही आकर्षक व्यक्ति थे, ने वादा किया और अपना वादा निभाया। बैरन उस शख्सियत (जो खुद महिलाओं के बेहद शौकीन थे) के द्वारा दिखाई गई हर तरह की तत्परता से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने मोरेल से उन आधिकारिक कक्षों में मिलने की व्यवस्था की जहाँ आम लोग नहीं जा सकते थे। उस मशहूर कलाकार ने युवा प्रतिभाशाली कलाकार को अपनी प्रतिभा दिखाने और मशहूर होने का मौका दिया, यहाँ तक कि उन्हें समान प्रतिभा वाले अन्य कलाकारों के मुकाबले उन ऑडिशन के लिए चुना गया जिनसे खास हलचल मचने की संभावना थी। लेकिन एम. डी चार्लस को कभी यह शक नहीं हुआ कि उन्हें उस्ताद के प्रति और भी अधिक आभारी होना चाहिए,

क्योंकि वह, जो दुगने योग्य थे, या कहें तो दो बार दोषी थे, युवा वायलिन वादक और उनके कुलीन संरक्षक के बीच के संबंधों से पूरी तरह वाकिफ थे। उन्होंने उनका पक्ष लिया, बेशक उनके प्रति कोई सहानुभूति नहीं दिखाई, क्योंकि वे उस महिला के प्रति प्रेम के अलावा किसी और प्रेम को समझ ही नहीं सकते थे जिसने उनके पूरे संगीत को प्रेरित किया था। यह सब नैतिक उदासीनता, पेशेवर तत्परता, सामाजिक शिष्टाचार और दिखावे के कारण था। उन रिश्तों के चरित्र को लेकर उनके संदेह इतने कम थे कि ला रास्पेलियर में अपने पहले भोज में, उन्होंने एम. डी चार्लस और मोरेल के बारे में स्की से ऐसे पूछा जैसे किसी पुरुष और उसकी प्रेमिका के बारे में पूछ रहे हों: "क्या वे लंबे समय से साथ हैं?" लेकिन, दुनियादारी की समझ रखने वाले मोरेल ने यह नहीं चाहा कि उनके मन की बात सामने आए। उन्होंने मोरेल के सहपाठियों के बीच अगर कोई अफवाह फैले तो उन्हें फटकार लगाने और मोरेल को पिता तुल्य लहजे में यह कहकर आश्वस्त करने की तैयारी कर ली थी: "आजकल तो हर किसी के बारे में ऐसी बातें सुनने को मिलती हैं।" उन्होंने बैरन से शिष्टाचार का ऐसा परिचय कराया जिसे बैरन ने आकर्षक और स्वाभाविक समझा, क्योंकि वे उस प्रतिष्ठित गुरु पर इतने दोष या इतने गुण का संदेह करने में असमर्थ थे। एम. डी चार्लस की पीठ पीछे जो बातें कही जाती थीं, मोरेल के बारे में जो बातें कही जाती थीं, उन्हें दोहराने की हिम्मत किसी में नहीं थी। फिर भी, यह सरल स्थिति यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि सर्वत्र निंदा की जाने वाली, जिसका कहीं कोई रक्षक नहीं है: बदनामी की हवा, चाहे वह हम पर लक्षित हो और इसलिए हमारे लिए विशेष रूप से अप्रिय हो जाए, या हमें किसी तीसरे व्यक्ति के बारे में कुछ ऐसी जानकारी दे जिसके बारे में हम अनजान थे, उसका अपना एक मनोवैज्ञानिक मूल्य है। यह मन को उस काल्पनिक धारणा में डूबने से रोकता है जो वह चीजों के बारे में रखता है, जबकि वास्तव में वे केवल उनका बाहरी रूप हैं। यह एक आदर्शवादी दार्शनिक की जादुई कुशलता से इस बाहरी रूप को उलट देता है और कपड़े के दूसरे पहलू के एक अनपेक्षित कोने को हमारी नज़र के सामने तेज़ी से प्रस्तुत करता है। एम. डी चार्लस ने अपने बारे में एक कोमल रिश्तेदार द्वारा की गई टिप्पणी की कल्पना कैसे की होगी: "आप यह कैसे सोच सकते हैं कि मेमे मुझसे प्यार करती है, आप भूल जाते हैं कि मैं एक महिला हूँ!" फिर भी वह वास्तव में, एम. डी चार्लस से गहराई से जुड़ी हुई थी। तो फिर हमें आश्चर्य क्यों होना चाहिए कि वर्दुरिन परिवार के मामले में, जिनसे

स्नेह और सद्भावना की उन्हें कोई अपेक्षा नहीं थी, उनके पीठ पीछे की गई टिप्पणियाँ (और जैसा कि हम आगे देखेंगे, वे केवल टिप्पणियों तक ही सीमित नहीं थीं) उनकी कल्पना से कितनी भिन्न थीं, अर्थात् उनकी उपस्थिति में सुनी गई टिप्पणियों की मात्र पुनरावृति नहीं थीं? केवल बाद वाली टिप्पणियों ने ही उस छोटे से आदर्श तम्बू को स्नेहपूर्ण शिलालेखों से सजाया था, जिसमें एम. डी चार्लस कभी-कभी एकांत में सपने देखने के लिए चले जाते थे, जब वे एक क्षण के लिए अपनी कल्पना को वर्दुरिन परिवार के उनके प्रति विचारों में पिरोते थे। उसका वातावरण इतना सुखद, इतना सौहार्दपूर्ण और उसमें मिलने वाला विश्राम इतना आरामदायक था कि जब एम. डी चार्लस सोने से पहले अपनी चिंताओं से क्षणिक राहत पाने के लिए उसमें चले जाते थे, तो वे कभी भी बिना मुस्कुराए बाहर नहीं निकलते थे। लेकिन हममें से प्रत्येक के लिए, इस प्रकार के तंबू के दो पहलू होते हैं: एक वह पहलू जिसे हम एकमात्र पहलू मानते हैं, उसके अलावा एक दूसरा पहलू भी होता है जो सामान्यतः हमें दिखाई नहीं देता, असली अग्रभाग, जो हमारे परिचित अग्रभाग के समरूप होता है, परन्तु उससे अत्यंत भिन्न होता है, जिसकी सजावट में हमें वह कुछ भी नहीं दिखाई देता जिसकी हमें अपेक्षा थी, और जो हमें भयभीत कर देती, क्योंकि वह एक अनपेक्षित शत्रुता के घृणित प्रतीकों से बनी होती। एम. डी चार्लस के लिए कितना बड़ा सदमा होता, यदि वह किसी घोटाले के माध्यम से, उन सेवा सीढ़ियों में से किसी एक से, जहाँ बिना वेतन वाले कारीगरों या बर्खास्त नौकरों द्वारा फ्लैटों के पिछले दरवाजों के बाहर अश्लील चित्र बनाए जाते हैं, किसी शत्रुतापूर्ण तंबू में प्रवेश कर जाते। लेकिन, जिस प्रकार हममें दिशा का वह ज्ञान नहीं होता जो कुछ पक्षियों में पाया जाता है, उसी प्रकार हममें अपनी दृश्यता और दूरियों का ज्ञान भी नहीं होता। हम अपने आस-पास के लोगों की उत्सुक निगाहों को बहुत करीब समझते हैं, जबकि वे लोग हमें कभी तरसते भी नहीं, और हमें यह भी एहसास नहीं होता कि हम ही दूसरों की एकमात्र चिंता हैं। और इस प्रकार एम. डी चार्लस उसी धोखे में जी रहे थे जैसे कोई मछली यह सोचती है कि जिस पानी में वह तैर रही है वह उसके मछलीघर की कांच की दीवार से परे तक फैला हुआ है, जबकि वह अपने ठीक बगल में छाया में मौजूद उस मानव आगंतुक को नहीं देख पाती जो उसकी हरकतों को देखकर आनंद ले रहा है, या उस सर्वशक्तिमान रखवाले को नहीं देख पाती जो अप्रत्याशित और घातक क्षण में (बैरन के मामले में फिलहाल स्थगित) (जिसके लिए पेरिस में

रखवाली श्रीमती वर्दुरिन करेंगी) उसे बिना किसी संकोच के उस स्थान से निकाल कर दूसरे स्थान पर फेंक देगा जहाँ वह सुख से रह रही थी। इसके अलावा, मानव जाति, जहाँ तक वे मात्र व्यक्तियों का समूह नहीं हैं, हमें इस गहन, हठी और विचलित करने वाली अंधता के अधिक व्यापक, लेकिन प्रत्येक भाग में समान उदाहरण प्रदान कर सकती हैं। अब तक, यदि यह एम. डी चार्लस के छोटे समूह से व्यर्थ की सूक्ष्मता या दुस्साहस भरी टिप्पणियों के लिए जिम्मेदार था, जिससे उनके श्रोता चुपके से उन पर मुस्कुराए, तो इसने उन्हें अभी तक कोई गंभीर असुविधा नहीं पहुँचाई थी, और न ही बालबेक में उन्हें कोई गंभीर असुविधा पहुँचाने वाला था। एल्ब्यूमिन, शर्करा, या हृदय अतालता का एक अंश उस व्यक्ति के जीवन को सामान्य बनाए रखने में बाधा नहीं डालता जो इसके प्रति सचेत भी नहीं है, जबकि केवल चिकित्सक ही इसमें आने वाली विपत्तियों की भविष्यवाणी देखता है। वर्तमान में, एम. डी चार्लस के मन में मोरेल के लिए जो स्नेह था—चाहे वह प्लेटोनिक हो या नहीं—उसने बैरन को मोरेल की अनुपस्थिति में अनायास ही यह कहने के लिए प्रेरित किया कि वह उन्हें बहुत सुंदर समझते हैं, यह सोचकर कि इसे पूरी तरह से निर्दोषता के साथ लिया जाएगा, और इस प्रकार एक चतुर व्यक्ति की तरह व्यवहार किया जो अदालत के समक्ष बयान देने के लिए बुलाए जाने पर उन विवरणों में जाने से नहीं डरता जो स्पष्ट रूप से उसके लिए प्रतिकूल प्रतीत होते हैं, लेकिन इसी कारण से वे एक मंच कलाकार के पारंपरिक दावों की तुलना में अधिक स्वाभाविक और कम भद्दे होते हैं। उसी स्वतंत्रता के साथ, हमेशा सेंट-मार्टिन डू शेन और डोंसिएरेस-ओएस्ट के बीच—या वापसी यात्रा पर इसके विपरीत—एम. डी चार्लस उन लोगों के बारे में आसानी से बात करते थे जिनके नैतिक मूल्य, प्रतीत होते थे, बहुत अजीब थे, और यहां तक कहते थे: "आखिरकार, मैं अजीब कहता हूं, मुझे नहीं पता क्यों, क्योंकि इसमें कुछ भी इतना अजीब नहीं है," यह साबित करने के लिए कि वह अपने श्रोताओं के साथ कितने सहज थे। और वास्तव में वह ऐसा ही था, बशर्ते कि पहल उसी के हाथ में हो, और वह जानता हो कि उसके दर्शक मौन और मुस्कुराते हुए हैं, जो भोलेपन या अच्छे शिष्टाचार से निहत्थे हो गए हैं।

जब एम. डी. चार्लस मोरेल की सुंदरता के प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त नहीं कर रहे होते थे, मानो इसका किसी बुरी प्रवृत्ति (जिसे अवगुण कहा जाता है) से कोई संबंध न हो, तो वे उस अवगुण

का उल्लेख करते थे, लेकिन इस तरह जैसे वे स्वयं उससे ग्रस्त न हों। कभी-कभी तो वे उसे सीधे उसके नाम से पुकारने में भी संकोच नहीं करते थे। बाल्ज़ाक की उनकी किताब की बेहतरीन जिल्दबंदी देखने के बाद जब मैंने उनसे पूछा कि कॉमेडी ह्यूमेन में उनका पसंदीदा उपन्यास कौन सा है, तो उन्होंने जवाब दिया, उनके विचार उसी विषय की ओर अनवरत रूप से आकर्षित हो रहे थे: "या तो एक या दूसरी, क्यूरे डी टूर्स और फेमे अबैंडनी जैसी एक छोटी सी लघु कृति, या इल्यूजन्स परड्यूज़ श्रृंखला जैसी महान भित्तिचित्रों में से एक। क्या! आपने इल्यूजन्स परड्यूज़ कभी नहीं पढ़ी? यह अद्भुत है। वह दृश्य जहाँ कार्लोस हेरेरा उस महल का नाम पूछता है जिसके पास से वह गाड़ी चला रहा होता है, और पता चलता है कि वह रास्टिग्नैक है, उस युवक का घर जिससे वह कभी प्यार करता था। और फिर एब्बे एक ऐसी तन्मयता में डूब जाता है जिसे स्वान ने एक बार, और बहुत ही उपयुक्त रूप से, बाल यौन शोषण की ट्रिस्टेस डी ओलंपिया कहा था। और लुसिएन की मृत्यु! मैं भूल गया कि वह कला प्रेमी कौन था जिसने, जब उससे पूछा गया कि उसके जीवन की किस घटना ने उसे सबसे अधिक दुखी किया, तो उसने उत्तर दिया: 'लुसिएन की मृत्यु'।" "स्प्लेंड्यूर्स एट मिज़ेरेस में लुसिएन डी रुबेम्प्रे।" "मुझे पता है कि इस साल बाल्ज़ाक का बोलबाला है, जैसे पिछले साल निराशावाद का था," ब्रिचोट ने बीच में ही टोक दिया। लेकिन, बाल्ज़ाक के बुखार से ग्रस्त दिलों को ठेस पहुँचाने के जोखिम पर, बिना किसी दावे के, कि मैं साहित्य का पुलिसवाला हूँ या व्याकरण के नियमों के उल्लंघन की सूची बना रहा हूँ, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि वह विपुल रचनाकार, जिसकी भयावह रचनाओं को आप मुझे असाधारण रूप से बढ़ा-चढ़ाकर आंकते प्रतीत होते हैं, मुझे हमेशा एक अपर्याप्त रूप से सावधानीपूर्वक लेखक लगा है। मैंने ये 'इल्यूजन्स परड्यूज़' पढ़े हैं जिनके बारे में आप हमें बता रहे हैं, बैरन, एक दीक्षित के उत्साह को प्राप्त करने के लिए खुद को कोड़े मारते हुए, और मैं पूरी सादगी से स्वीकार करता हूँ कि आडंबरपूर्ण बकवास की वे धारावाहिक किश्तें, जो दोहरी डच और तिहरी डच में लिखी गई हैं: एस्थर ह्यूरेउज़, ओउ मेनेंट लेस माउवैस चेमिन्स, ए कॉम्बिएन ल'अमोर रेविएंट ऑक्स विएलार्ड्स, ने मुझ पर हमेशा मिस्टेरेस डी रोकाम्बोले जैसा प्रभाव डाला है, जो एक अकथनीय वरीयता से ऊंचा है। एक उत्कृष्ट कृति की नाजुक स्थिति।" "तुम ऐसा इसलिए कहते हो क्योंकि तुम्हें जीवन का कुछ भी ज्ञान नहीं है," बैरन ने दोगुनी झुंझलाहट के साथ कहा, क्योंकि

उन्हें लगा कि ब्रिचोट न तो उनके सौंदर्य संबंधी कारणों को समझेंगे और न ही दूसरे प्रकार के कारणों को। "मैं अच्छी तरह समझता हूँ," ब्रिचोट ने उत्तर दिया, "कि, मास्टर फ्रांस्वा रैबेले की तरह बोलने के लिए, आपका मतलब है कि मैं मोल्ट सोरबोनाग्रे, सोरबोनिकोल एट सोरबोनिफॉर्म हूँ। और फिर भी, बाकी साथियों की तरह, मुझे भी ऐसी किताबें पसंद हैं जो ईमानदारी और वास्तविक जीवन का आभास देती हों, मैं उन क्लर्कों में से नहीं हूँ..." "द क्वार्ट डी'ह्यूर डे रैबेले," डॉक्टर ने बीच में ही टोकते हुए कहा, अब उनके लहजे में अनिश्चितता नहीं बल्कि अपने स्वयं के विवेक पर पूरा भरोसा था। "...जो अब्बे-ऑक्स-बोइस के नियम का पालन करते हुए साहित्य की प्रतिज्ञा लेते हैं, और मानवतावादियों के सख्त नियम के अनुसार सामान्य रूप के ग्रैंड मास्टर एम. ले विस्काउंट डी चेटोब्रियांड के प्रति आज्ञाकारी रहते हैं। एम. ले विस्काउंट डी चेटोब्रियांड की गलती..." "तले हुए आलू के साथ?" डॉ. कॉटार्ड ने पूछा। "वह बिरादरी के संरक्षक संत हैं," ब्रिचोट ने डॉक्टर की चतुराई को अनदेखा करते हुए कहा, जो दूसरी ओर, प्रोफेसर के इस वाक्य से चिंतित होकर एम. डी चार्लस की ओर चिंता से देखने लगे। कॉटार्ड को ब्रिचोट में शिष्टाचार की कमी दिखी, जिसके व्यंग्य ने राजकुमारी शेरबतोफ के होठों पर एक हल्की सी मुस्कान ला दी। "प्रोफेसर के साथ, पूर्ण संशयवादी का तीखा व्यंग्य कभी अपना अधिकार नहीं खोता," उन्होंने विनम्रता से कहा, यह दिखाने के लिए कि वैज्ञानिक की चतुराई उनकी समझ से नहीं छूटी थी। "ऋषि का संशयवादी होना स्वाभाविक है," डॉक्टर ने उत्तर दिया। "यह मेरी गलती नहीं है। ग्नोथी सेउटन," सुकरात ने कहा था। वे बिल्कुल सही थे, किसी भी चीज़ की अति एक गलती होती है। लेकिन मैं यह सोचकर दंग रह जाता हूँ कि इन शब्दों ने सुकरात के नाम को इतने समय तक जीवित रखने के लिए पर्याप्त काम किया है। उनके दर्शन में वास्तव में क्या है, सब कुछ कहने पर बहुत कम। जब हम यह सोचते हैं कि चारकोट और अन्य लोगों ने हज़ार गुना अधिक उल्लेखनीय काम किया है, ऐसा काम जो कम से कम किसी आधार पर तो है, जैसे कि सामान्य पक्षाघात के एक लक्षण के रूप में पुतली की प्रतिक्रिया को दबाना, और फिर भी उन्हें लगभग भुला दिया गया है। आखिरकार, सुकरात कोई असाधारण व्यक्ति नहीं थे। वे ऐसे लोग थे जिनके पास करने के लिए कुछ बेहतर नहीं था, और वे अपना समय इधर-उधर घूमने और छोटी-छोटी बातों पर बहस करने में बिताते थे। जैसे यीशु मसीह: 'एक दूसरे से प्रेम करो!' यह सब बहुत सुंदर लगता है।" "मेरे प्रिय," श्रीमती

कॉटार्ड ने विनती की। "स्वाभाविक रूप से मेरी पत्नी विरोध करती है, सभी महिलाएं विक्षिप्त होती हैं।" "लेकिन, मेरे प्रिय डॉक्टर, मैं विक्षिप्त नहीं हूँ," श्रीमती कॉटार्ड ने धीरे से कहा। "क्या, वह मनोरोगी नहीं है! जब उसका बेटा बीमार होता है, तो उसे अनिद्रा के लक्षण दिखाई देते हैं। फिर भी, मैं पूरी तरह मानता हूँ कि सुकरात और बाकी सभी सुकरात एक श्रेष्ठ संस्कृति के लिए, व्याख्या की प्रतिभा प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं। मैं हमेशा अपने विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम की शुरुआत में उनका 'ग्नोथी सेउटन' सुनाता हूँ। जब पेरे बुशार्ड ने इसके बारे में सुना, तो उन्होंने मुझे बधाई दी।" "मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो केवल दिखावे के लिए दिखावे को महत्व देते हैं, ठीक वैसे ही जैसे मैं कविता में तुकबंदी को अनमोल नहीं मानता," ब्रिचोट ने उत्तर दिया। लेकिन फिर भी, कॉमेडी ह्यूमेन—जो मानवीयता से बहुत दूर है—उन रचनाओं के बिल्कुल विपरीत है जिनमें कला विषयवस्तु से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होती है, जैसा कि उस प्रख्यात लेखक ओविड ने कहा है। और एक मध्य मार्ग चुनना उचित है, जो मेउडॉन के प्रेस्बिटरी या फर्नी के आश्रम की ओर ले जाता है, जो वुल्प्स की घाटी से समान दूरी पर स्थित हैं, जहाँ रेने ने एक निर्दयी पोप के कर्तव्यों का कुशलतापूर्वक निर्दयतापूर्वक निर्वहन किया, और लेस जार्डीज़ से भी, जहाँ ऑनरे डी बाल्ज़ाक, ज़मींदारों द्वारा धमकाए जाने पर, एक पोलिश महिला को प्रसन्न करने के लिए कागज़ पर बेतुकी बातें लिखने से कभी नहीं रुके, मानो वे बकवास के एक उत्साही अनुयायी हों।

"शैटोब्रिएंड आज भी आपकी सोच से कहीं अधिक जीवंत हैं, और बाल्ज़ाक तो आखिरकार एक महान लेखक हैं," एम. डी चार्लस ने उत्तर दिया, जो स्वान के विचारों से अभी भी इतने प्रभावित थे कि ब्रिचोट की बातों से चिढ़ गए, "और बाल्ज़ाक उन भावनाओं से भी परिचित थे जिन्हें बाकी दुनिया अनदेखा करती है, या केवल उनकी निंदा करने के लिए उनका अध्ययन करती है। अमर रचना 'इल्यूजन्स परड्यूज़' का फिर से उल्लेख किए बिना; 'साराज़ीन', 'ला फ़िल ऑक्स येक्स डी'ओर', 'उने पैशन डान्स ले डेज़र्ट', यहाँ तक कि स्पष्ट रूप से रहस्यमय 'फ़ॉसे मैत्रेसे' को भी मेरे तर्क के समर्थन में प्रस्तुत किया जा सकता है। जब मैंने स्वान से बाल्ज़ाक के इस 'अस्वाभाविक' पहलू के बारे में बात की, तो उन्होंने मुझसे कहा: 'आपकी राय टैने जैसी ही है।'" "मुझे कभी महाशय टेन को जानने का सौभाग्य नहीं मिला," एम. डी चार्लस ने अपनी बात जारी रखी, समाज में लोगों की उस चिड़चिड़ी आदत के साथ जिसमें वे

अनावश्यक 'महाशय' जोड़ देते हैं, मानो उन्हें लगता हो कि किसी महान लेखक को 'महाशय' कहकर वे उनका सम्मान कर रहे हैं, शायद उनसे उचित दूरी बनाए रख रहे हैं, और यह स्पष्ट कर रहे हैं कि वे उन्हें व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते। "मैं कभी महाशय टेन को नहीं जानता था, लेकिन उनके साथ एकमत होने पर मुझे बहुत गर्व महसूस हुआ।" हालांकि, इन हास्यास्पद सामाजिक दिखावों के बावजूद, एम. डी चार्लस अत्यंत बुद्धिमान थे, और यह संभव है कि यदि किसी दूर के वैवाहिक संबंध ने उनके परिवार और बाल्ज़ाक के परिवार के बीच संबंध स्थापित किया होता, तो उन्हें (स्वयं बाल्ज़ाक की तरह ही) ऐसी संतुष्टि का अनुभव होता जिसे वे विनम्रता के प्रशंसनीय संकेत के रूप में प्रदर्शित करने से खुद को रोक नहीं पाते।

कभी-कभी, सेंट-मार्टिन डू शेन के बाद वाले स्टेशन पर, कुछ युवक ट्रेन में चढ़ते थे। एम. डी चार्लस उन्हें देखने से खुद को रोक नहीं पाते थे, लेकिन जैसे ही वे अपनी नज़रें उन पर टिकाते और छिपाते, वे ऐसा जताते थे मानो कोई राज़ छुपा रहे हों, जो उनके असली राज़ से भी ज़्यादा निजी था; ऐसा लगता था मानो वे उन्हें जानते हों, और अपनी जान-पहचान को अनजाने में ज़ाहिर होने देते हों, बलिदान स्वीकार करने के बाद, फिर हमारी ओर मुड़ जाते हों, ठीक वैसे ही जैसे बच्चे अपने माता-पिता के झगड़े के कारण अपने कुछ सहपाठियों से बात करने से मना किए जाने पर, उनसे मिलने पर अपना सिर उठाने के प्रलोभन को रोक नहीं पाते, और फिर अपने शिक्षक की डरावनी छड़ी के सामने उसे नीचे कर लेते हैं।

एम. डी. चार्लस ने बाल्ज़ाक के बारे में बात करते हुए ट्रिस्टेस डी ओलंपियो और स्प्लेंडर्स एट मिज़ेरेस की तुलना समाप्त करने के लिए जिस ग्रीक शब्द का प्रयोग किया था, उस पर स्की, ब्रिचोट और कॉटार्ड ने एक-दूसरे की ओर मुस्कुराते हुए देखा। शायद उनकी मुस्कान व्यंग्य से कहीं अधिक उस संतुष्टि से भरी थी जो किसी रात्रिभोज में उन लोगों में होती है जो ड्रेफस को उनके अपने मामले के बारे में या महारानी यूजेनी को उनके शासनकाल के बारे में बात करने में सफल हो जाते हैं। वे इस विषय पर उनसे कुछ और प्रश्न पूछने की उम्मीद कर रहे थे, लेकिन हम पहले ही डोंसिएरेस पहुँच चुके थे, जहाँ मोरेल हमसे आकर मिले। उनकी उपस्थिति में, एम. डी. चार्लस ने अपनी बातचीत पर सावधानीपूर्वक नियंत्रण रखा और जब स्की ने कार्लोस हेरेरा के लुसिएन डी रुबेम्प्रे के प्रति प्रेम के विषय पर बात करने की कोशिश की, तो बैरन ने एक ऐसे पिता का व्यथित, रहस्यमय और अंततः (यह देखकर कि कोई उनकी

बात नहीं सुन रहा है) कठोर और न्यायप्रिय भाव धारण कर लिया, जो अपनी बेटी के सामने किसी को अभद्र बात करते हुए सुनकर विचलित हो जाता है। स्की ने इस विषय पर कुछ दृढ़ निश्चय दिखाया, तो एम. डी चार्लस, आँखें फाड़कर, ऊँची आवाज़ में अल्बर्टीन की ओर देखते हुए बोले, "मुझे लगता है कि अब समय आ गया है कि हम उन विषयों पर बात करें जिनमें इस युवती की रुचि हो।" दरअसल, अल्बर्टीन श्रीमती कॉटार्ड और राजकुमारी शेरबाटोफ़ के साथ बातचीत में व्यस्त थीं। उनके लहजे में एक ऐसे व्यक्ति का दोहरा अर्थ झलक रहा था जो असभ्य लोगों को सबक सिखाना चाहता हो। उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि अब समय आ गया है कि हम उन विषयों पर बात करें जिनमें इस युवती की रुचि हो।" लेकिन मैं अच्छी तरह समझ गया था कि उनके लिए वह युवती अल्बर्टीन नहीं बल्कि मोरेल थी; बाद में, उन्होंने मोरेल के सामने इस तरह की बातचीत न करने की विनती करते हुए मेरे अनुमान की सत्यता को सिद्ध कर दिया। उन्होंने वायलिन वादक के बारे में बात करते हुए मुझसे कहा, "आप जानते हैं कि वह बिल्कुल वैसा नहीं है जैसा आप सोचते हैं, वह एक बहुत ही सम्मानित युवक है जिसने हमेशा अच्छा व्यवहार किया है, वह बहुत गंभीर है।" इन शब्दों से यह स्पष्ट हुआ कि एम. डी. चार्लस यौन विकृति को उतना ही खतरनाक मानते थे जितना वेश्यावृत्ति महिलाओं के लिए, और यदि उन्होंने मोरेल के लिए 'सम्मानजनक' विशेषण का प्रयोग किया था, तो उस अर्थ में किया था जो किसी युवा दुकानदार के लिए प्रयोग किया जाता है। फिर ब्रिचोट ने बातचीत का रुख मोड़ते हुए मुझसे पूछा कि क्या मैं इनकार्विल में और अधिक समय तक रुकने का इरादा रखता हूँ। मैंने उन्हें एक से अधिक बार बताया, लेकिन व्यर्थ, कि मैं इनकार्विल में नहीं बल्कि बालबेक में रह रहा हूँ, फिर भी वे हमेशा वही गलती दोहराते रहे, क्योंकि वे तट के इस हिस्से का वर्णन इनकार्विल या बालबेक-इनकार्विल के नाम से ही करते थे। ऐसे लोग भी होते हैं, जो उन्हीं चीजों के बारे में बात करते हैं जिनके बारे में हम बात करते हैं, लेकिन उन्हें थोड़े अलग नाम से पुकारते हैं। फाउबर्ग सेंट-जर्मेन की एक महिला मुझसे अक्सर पूछती थीं, जब उनका इशारा डचेस डी गुएरमांटेस की ओर होता था, कि क्या मैंने हाल ही में ज़ेनाइड को देखा है, या ओरियान-ज़ेनाइड को, जिसका नतीजा यह होता था कि पहले तो मैं उनकी बात समझ ही नहीं पाता था। शायद एक समय ऐसा भी रहा होगा जब श्रीमती डी गुएरमांटेस के किसी रिश्तेदार का नाम ओरियान रहा होगा, और भ्रम से बचने के

लिए उन्हें खुद ओरियान-ज़ेनाइड के नाम से जाना जाता था। शायद पहले इनकार्विल में ही एक स्टेशन रहा होगा, जहाँ से बैलगाड़ी से बालबेक जाया जाता था। "अरे, आप किस बारे में बात कर रहे हैं?" अल्बर्टीन ने श्री डी चार्लस के अचानक अपनाए गए गंभीर, पितृवत लहजे को देखकर आश्चर्यचकित होकर कहा। "बाल्ज़ाक के बारे में," बैरन ने जल्दी से जवाब दिया, "और आज शाम आपने वही कपड़े पहने हैं जो प्रिंसेस डी कैडिगन ने पहने हैं, उनका पहला गाउन नहीं, जो उन्होंने डिनर पार्टी में पहना था, बल्कि दूसरा वाला।" यह संयोग इसलिए हुआ क्योंकि अल्बर्टीन के कपड़े चुनते समय मैंने उस रुचि से प्रेरणा ली जो उसने एल्स्टिर से सीखी थी। एल्स्टिर उस सादगी की बहुत सराहना करता था जिसे अगर फ्रांसीसी कोमलता और प्रवाह से भरपूर न किया गया होता तो ब्रिटिश कहा जा सकता था। आमतौर पर, उसके द्वारा चुने गए वस्त्रों में डायना डी कैडिगन की पोशाक की तरह ही धूसर रंगों का सामंजस्यपूर्ण संयोजन दिखाई देता था। एम. डी चार्लस लगभग एकमात्र व्यक्ति थे जो अल्बर्टीन के कपड़ों की असली कीमत समझ पाते थे; एक नज़र में ही उनकी नज़र उनकी दुर्लभता को पहचान लेती थी और उनकी कीमत को सही ठहराती थी; वे कभी भी एक कपड़े के बजाय दूसरे कपड़े का नाम नहीं लेते थे और हमेशा बता सकते थे कि उन्हें किसने बनाया है। केवल वे महिलाओं में एल्स्टिर की अनुमति से थोड़ी अधिक चमक और रंग पसंद करते थे। और इसलिए आज शाम उसने मेरी ओर आधा मुस्कुराते हुए, आधा परेशान होकर देखा और अपनी छोटी गुलाबी बिल्ली जैसी नाक सिकोड़ ली। दरअसल, ग्रे क्रेप डी चाइन की स्कर्ट और ग्रे शेवियोट जैकेट के ऊपर से देखने पर ऐसा लग रहा था मानो अल्बर्टीन ने पूरी तरह से ग्रे रंग के कपड़े पहने हों। लेकिन, अपनी जैकेट उतारने या पहनने के लिए अपनी फूली हुई आस्तीनों को ठीक करने या ऊपर खींचने की ज़रूरत होने पर, उन्होंने मुझे मदद के लिए इशारा किया और जैकेट उतार दी। उनकी आस्तीनें स्कॉटिश प्लेड की थीं, जिनमें गुलाबी, हल्का नीला, मटमैला हरा और कबूतर की छाती जैसे मुलायम रंग थे, जिससे ऐसा लग रहा था मानो ग्रे आसमान में अचानक इंद्रधनुष प्रकट हो गया हो। और उन्होंने मन ही मन सोचा कि क्या यह एम. डी चार्लस को पसंद आएगा। "आह!" उन्होंने खुशी से कहा, "अब तो हमारे पास रंगों की एक किरण, एक इंद्रधनुष है। मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ।" "लेकिन यह तो इस सज्जन ने अर्जित किया है," अल्बर्टीन ने विनम्रता से उत्तर दिया और मेरी ओर इशारा किया,

क्योंकि उन्हें मुझसे मिली हुई चीज़ों को दिखाना अच्छा लगता था। "केवल वे महिलाएं जो कपड़े पहनना नहीं जानतीं, रंगों से डरती हैं," एम. डी चार्लस ने आगे कहा। "एक पोशाक बिना भद्दापन के भी शानदार हो सकती है और बिना नीरस हुए भी शांत हो सकती है। इसके अलावा, जीवन से अलग दिखने की आपकी वजहें मैडम डी कैडिगन जैसी नहीं हैं, क्योंकि यही वह विचार था जो वह अपने भूरे गाउन के माध्यम से डी'आर्थेज़ में पैदा करना चाहती थीं।" कपड़ों की इस मूक भाषा में रुचि रखने वाली अल्बर्टीन ने एम. डी चार्लस से राजकुमारी डी कैडिगन के बारे में पूछा। "ओह! यह एक मनमोहक कहानी है," बैरन ने स्वप्निल स्वर में कहा। "मैं उस छोटे से बगीचे को जानता हूँ जिसमें डायने डी कैडिगन एम. डी'एस्पार्ड के साथ टहला करती थीं। यह मेरे एक चचेरे भाई का है।" "उनके चचेरे भाई के बगीचे के बारे में यह सारी बातें," ब्रिचोट ने कॉटार्ड से धीरे से कहा, "शायद, उनकी वंशावली की तरह, इस सम्मानित बैरन के लिए कुछ महत्व रखती हों। लेकिन हमारे लिए इसमें क्या रुचि हो सकती है, जिन्हें इसमें घूमने का सौभाग्य नहीं है, जो उस महिला को नहीं जानते और जिनके पास कोई कुलीन उपाधि नहीं है?" ब्रिचोट को ज़रा भी शक नहीं था कि कोई गाउन और बगीचे को कलाकृति के रूप में देख सकता है, और यह बाल्ज़ाक की रचनाओं में ही था कि एम. डी चार्लस ने अपने मन में मैडम डी कैडिगन के बगीचे के रास्तों की कल्पना की थी। बैरन ने आगे कहा: "लेकिन आप उसे जानते हैं," उन्होंने अपनी इस चचेरी बहन के बारे में बात करते हुए मुझसे कहा, और मेरी चापलूसी करते हुए, मुझसे ऐसे बात की जैसे मैं उस छोटे से परिवार में निर्वासित होकर एम. डी चार्लस के लिए, अगर उनकी दुनिया का नागरिक नहीं तो कम से कम एक आगंतुक तो था। "खैर, आपने उसे मैडम डी विलेपारिसिस के यहाँ ज़रूर देखा होगा।" "क्या यह वही मार्किज़ डी विलेपारिसिस हैं जो बाउक्रूक्स में महल की मालकिन हैं?" ब्रिचोट ने उत्सुकता से पूछा। "हाँ, क्या आप उन्हें जानते हैं?" एम. डी चार्लस ने रूखेपन से पूछा। “नहीं, बिलकुल नहीं,” ब्रिचोट ने उत्तर दिया, “लेकिन हमारे सहकर्मी नॉरपोइस हर साल अपनी छुट्टियों का कुछ हिस्सा बाउक्रू में बिताते हैं। मुझे वहाँ उन्हें पत्र लिखने का अवसर मिला है।” मैंने मोरेल को यह बात बताई, यह सोचकर कि शायद उसे इसमें दिलचस्पी हो, कि श्री डी नॉरपोइस मेरे पिता के मित्र थे। लेकिन उनके चेहरे के किसी भी भाव से यह नहीं लगा कि उन्होंने मेरी बात सुनी है, क्योंकि वे मेरे माता-पिता के बारे में बहुत कम सोचते थे, और मेरे

परदादा, जिन्होंने मोरेल के पिता को अपना नौकर रखा था, उनके प्रति उनकी नज़र में मेरे माता-पिता का सम्मान बहुत कम था। वास्तव में, परिवार के बाकी सदस्यों के विपरीत, वे किसी को परेशान नहीं करते थे, और अपने नौकरों के बीच एक सुनहरी छवि छोड़ गए थे। "ऐसा लगता है कि श्रीमती डी विलेपारिसिस एक श्रेष्ठ महिला हैं; लेकिन मुझे स्वयं इसका आकलन करने का अवसर कभी नहीं मिला, न ही मेरे किसी सहकर्मी को। क्योंकि नॉरपोइस, जो संस्थान में शिष्टाचार और सौहार्द की मूर्ति हैं, ने हममें से किसी को भी मार्क्विज़ से नहीं मिलवाया। मैं किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानता जिसे उन्होंने आमंत्रित किया हो, सिवाय हमारे मित्र थुरो-डांगिन के, जिनका उनसे पुराना पारिवारिक संबंध था, और गैस्टन बोइसियर के, जिनसे वह एक निबंध के कारण विशेष रूप से मिलने के लिए उत्सुक थीं। उन्होंने एक बार उनके साथ भोजन किया और उनके आकर्षण से पूरी तरह मुग्ध होकर लौटे। हालाँकि, श्रीमती बोइसियर को आमंत्रित नहीं किया गया था।" इन नामों को सुनकर मोरेल के चेहरे पर मुस्कान आ गई। "आह! थुरो-डांगिन," उन्होंने मुझसे उतनी ही उत्सुकता से कहा, जितनी उदासीनता उन्होंने तब दिखाई थी जब मैंने मार्क्विज़ डी नॉरपोइस और अपने पिता के बारे में बात की थी। "थुरो-डांगिन; अरे वाह, वो और आपके चाचा तो पक्के दोस्त थे। जब भी कोई महिला अकादमी में किसी स्वागत समारोह में आगे की सीट चाहती, आपके चाचा कहते: 'मैं थुरो-डांगिन को लिख देता।' और ज़ाहिर है, उन्हें तुरंत टिकट मिल जाता, क्योंकि आप समझ सकते हैं कि श्री थुरो-डांगिन आपके चाचा को मना करने की हिम्मत ही नहीं करते, वरना बाद में उन्हें इसका खामियाजा भुगतना ही पड़ता। बोइसियर का नाम सुनते ही मेरे चेहरे पर मुस्कान आ जाती है, क्योंकि वहीं से आपके चाचा नए साल पर महिलाओं को दिए जाने वाले सारे तोहफे मंगवाते थे। मुझे इसके बारे में सब पता है, क्योंकि मैं उस व्यक्ति को जानता था जिससे वो तोहफे मंगवाते थे।" वो न सिर्फ उन्हें जानते थे, बल्कि वो व्यक्ति उनके पिता थे। मोरेल द्वारा मेरे चाचा की याद में किए गए इन स्नेहपूर्ण उल्लेखों का एक कारण यह भी था कि हम होटल डी गुएरमांटेस में स्थायी रूप से रहने का इरादा नहीं रखते थे, जहाँ हमने मेरी दादी के कारण ही एक अपार्टमेंट लिया था। कभी-कभी कहीं और जाने की बात होती रहती थी। अब, इस संदर्भ में चार्ली मोरेल ने मुझे जो सलाह दी, उसे समझने के लिए पाठक को यह जानना होगा कि मेरे परदादा अपने समय में 40bis बुलेवार्ड मालेशेर्ब्स में रहते थे। इसका

परिणाम यह हुआ कि परिवार में, चूंकि हम अक्सर अपने चाचा एडोल्फ़ के घर जाया करते थे, जब तक कि उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन मैंने अपने माता-पिता को गुलाबी पोशाक वाली महिला की कहानी सुनाकर उनके साथ मनमुटाव पैदा नहीं कर दिया, तब हम 'आपके चाचा के घर' कहने के बजाय '40bis' कहने लगे थे। यदि मैं किसी रिश्तेदार से मिलने जा रहा होता, तो मुझे पहले '40bis' जाने की सलाह दी जाती, ताकि मेरे चाचा को बुरा न लगे कि मैंने उनसे सीधे मुलाकात शुरू नहीं की। वे घर के मालिक थे और, मुझे कहना होगा, अपने किरायेदारों के चयन में बहुत सतर्क थे, जिनमें से सभी या तो उनके निजी मित्र थे या बन गए थे। कर्नल बैरन डी वैट्री हर दिन उनसे मिलने जाते थे और उनके साथ सिगार पीते थे, इस उम्मीद में कि वे मरम्मत का खर्च उठाने के लिए राजी हो जाएं। गाड़ी का प्रवेश द्वार हमेशा बंद रहता था। अगर मेरे चाचा की नज़र किसी खिड़की की चौखट से लटकते हुए कपड़े या गलीचे पर पड़ती, तो वे तुरंत कमरे में जाकर उसे इतनी जल्दी हटवा देते कि आजकल पुलिस को भी इतना समय नहीं लगता। फिर भी, उन्होंने घर का कुछ हिस्सा किराए पर दे रखा था, केवल दो मंजिलें और अस्तबल अपने लिए रखे थे। इसके बावजूद, यह जानते हुए कि घर की तारीफ सुनकर उन्हें खुशी होती थी, हम हमेशा उस 'छोटे से महल' के आराम की बात ऐसे करते थे मानो मेरे चाचा ही उसमें अकेले रहते हों, और वे हमें बोलने देते थे, बिना किसी औपचारिक विरोध के, जैसा कि उम्मीद की जा सकती थी। वह 'छोटा सा महल' वाकई आरामदायक था (मेरे चाचा ने उसमें सभी आधुनिक साजो-सामान लगवा रखे थे)। लेकिन उसमें कुछ भी असाधारण नहीं था। मेरे चाचा, बनावटी विनम्रता से 'मेरी छोटी सी झोपड़ी' कहते हुए, इस बात से पूरी तरह आश्वस्त थे, या कम से कम उन्होंने अपने नौकर, उसकी पत्नी, कोचवान और रसोइए के मन में यह बात बिठा दी थी कि आराम, विलासिता और समग्र आकर्षण के मामले में पेरिस में उस छोटे से महल की कोई बराबरी नहीं कर सकता। चार्ल्स मोरेल इसी विश्वास में पले-बढ़े थे। और यह विश्वास उनके मन में आज भी कायम है। इसलिए, यहाँ तक कि उन दिनों में भी जब वे मुझसे बात नहीं कर रहे होते थे, अगर ट्रेन में मैं किसी और से हमारे घर बदलने की संभावना का ज़िक्र करता, तो वे तुरंत मेरी तरफ मुस्कुराते और मिलीभगत भरी मुस्कान के साथ कहते: "अरे! आपको तो 40bis जैसी कोई जगह चाहिए! वह जगह तो

आपके लिए एकदम सही रहेगी! आपके चाचा को इस बारे में पूरी जानकारी थी। मुझे पूरा यकीन है कि पूरे पेरिस में 40bis की कोई बराबरी नहीं कर सकता।"

प्रिंसेस डी कैडिगन के बारे में बात करते समय एम. डी चार्लस के चेहरे पर जो उदासी छाई हुई थी, उससे मुझे कोई संदेह नहीं रहा कि यह कहानी उन्हें केवल अपने एक चचेरे भाई के छोटे से बगीचे की याद नहीं दिला रही थी, जिससे उनका कोई खास लगाव नहीं था। वे चिंतन में लीन हो गए और मानो स्वयं से ही बात कर रहे हों: "प्रिंसेस डी कैडिगन के रहस्य!" उन्होंने कहा, "क्या उत्कृष्ट रचना है! डायने की बदनामी कितनी गहरी और कितनी हृदयविदारक है, जिसे डर है कि कहीं उसके प्रेमी को इसके बारे में पता न चल जाए। यह कितना शाश्वत सत्य है, और जितना दिखता है उससे कहीं अधिक व्यापक है, कितना दूर तक फैला हुआ है!" उन्होंने ये शब्द ऐसी उदासी के साथ कहे जिसमें फिर भी एक आकर्षण सा महसूस हुआ। निश्चित रूप से एम. डी चार्लस, इस बात से अनभिज्ञ थे कि उनकी आदतें कितनी हद तक ज्ञात थीं या नहीं, और वे कुछ समय से इस विचार से कांप रहे थे कि जब वे पेरिस लौटेंगे और वहां मोरेल की संगति में देखे जाएंगे, तो मोरेल का परिवार हस्तक्षेप कर सकता है और इस तरह उनका भविष्य का सुख खतरे में पड़ सकता है। यह संभावित घटना शायद अब तक उनके लिए अत्यंत अप्रिय और पीड़ादायक ही प्रतीत हुई थी। परन्तु बैरन एक कुशल कलाकार थे। और अब जब उन्होंने अपनी स्थिति को बाल्ज़ाक द्वारा वर्णित स्थिति से जोड़ना शुरू कर दिया था, तो एक प्रकार से उन्होंने कहानी में शरण ली, और उस विपत्ति के लिए जो शायद उनके लिए आने वाली थी और जिसने उन्हें किसी भी तरह से भयभीत करना बंद नहीं किया था, उन्हें अपनी चिंता में वह बात पाकर सांत्वना मिली जिसे स्वान और सेंट-लूप 'बिल्कुल बाल्ज़ाकीय' कहते। एम. डी चार्लस के लिए स्वयं को प्रिंसेस डी कैडिगन से जोड़ना उस मानसिक रूपांतरण के कारण आसान हो गया था जो उनके लिए अभ्यस्त हो रहा था और जिसके वे पहले ही कई उदाहरण दे चुके थे। इसके अलावा, केवल एक महिला का, प्रेमिका के रूप में, एक युवक में परिवर्तित होना ही उनके चारों ओर सामाजिक जटिलताओं की पूरी श्रृंखला को गतिमान करने के लिए पर्याप्त था जो एक सामान्य प्रेम प्रसंग के इर्द-गिर्द विकसित होती हैं। जब किसी भी कारण से हम कैलेंडर या दैनिक समय सारणी में कोई स्थायी परिवर्तन करते हैं, चाहे हम वर्ष की शुरुआत कुछ सप्ताह आगे कर दें या आधी रात को पंद्रह मिनट पहले कर

दें, तो भी दिन चौबीस घंटे के और महीने तीस दिनों के ही रहेंगे, समय के माप पर निर्भर सभी चीजें अपरिवर्तित रहेंगी। सब कुछ बदल जाने से कोई व्यवधान नहीं होगा, क्योंकि अंकों का अनुपात अभी भी वही है। मध्य यूरोपीय समय या पूर्वी कैलेंडर अपनाने वाले जीवन में भी यही स्थिति है। ऐसा लगता है कि किसी अभिनेत्री को अपने पास रखने से मिलने वाली संतुष्टि ने भी इन संबंधों में भूमिका निभाई है। अपनी पहली मुलाकात के बाद जब एम. डी चार्लस ने मोरेल की वास्तविक स्थिति के बारे में पूछताछ की, तो उन्हें निश्चित रूप से पता चला होगा कि वह साधारण परिवार से थे, लेकिन जिस लड़की से हमें प्यार होता है, वह गरीब माता-पिता की संतान होने के कारण हमारा सम्मान नहीं खो देती। दूसरी ओर, जिन जाने-माने संगीतकारों से उन्होंने पूछताछ की थी, उन्होंने—और वह भी किसी निजी स्वार्थ से नहीं, उन दोस्तों के विपरीत जिन्होंने स्वान को ओडेट से मिलवाते समय उसे असलियत से कहीं अधिक कठिन और प्रतिष्ठित बताया था—बस एक प्रतिष्ठित पद पर बैठे पुरुषों की तरह एक नौसिखिए की अति-प्रशंसा करने के रूढ़िवादी अंदाज़ में—बैरन को जवाब दिया: "आह! महान प्रतिभा है, नाम कमा चुका है, बेशक अभी काफी युवा है, विशेषज्ञों द्वारा बहुत सम्मानित है, बहुत आगे जाएगा।" और, उस उन्माद के साथ जो भोले-भाले लोगों को मर्दाना सुंदरता की बात करने के लिए प्रेरित करता है: "इसके अलावा, उसे बजाते देखना मनमोहक है; वह संगीत समारोह में सबसे अच्छा दिखता है; उसके बाल सुंदर हैं, वह खुद को बहुत अच्छे से संभालता है; उसका सिर बेहद खूबसूरत है, वह किसी चित्र में वायलिन वादक की याद दिलाता है।" और इसलिए एम. डी चार्लस, मोरेल द्वारा खुद दिए गए प्रोत्साहन से और भी अधिक उत्साहित हो गए, जिन्होंने उन्हें यह बताना नहीं भूला कि उन्हें कितने प्रस्ताव मिले हैं। मोरेल को अपने साथ घर ले जाने और उनके लिए एक छोटा सा आशियाना बनाने की संभावना से वे बहुत खुश हुए, जहाँ वे अक्सर लौटते रहेंगे। क्योंकि वे चाहते थे कि मोरेल अपने करियर के लिए आवश्यक स्वतंत्रता का आनंद लें, जिसे एम. डी चार्लस, चाहे उन्हें कितना भी पैसा देना पड़े, जारी रखें। इसका कारण या तो पूरी तरह से 'गुएरमांटेस' का विचार था कि मनुष्य को कुछ न कुछ करना चाहिए, कि व्यक्ति को योग्यता केवल अपनी प्रतिभा से ही मिलती है, और कुलीनता या पैसा केवल एक अतिरिक्त तत्व है जो किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा को बढ़ाता है, या फिर उन्हें डर था कि कुछ न करने और हमेशा उनके साथ रहने से वायलिन वादक ऊब न जाए। इसके

अलावा, वे उस आनंद से खुद को वंचित नहीं करना चाहते थे जो उन्हें कुछ महत्वपूर्ण संगीत कार्यक्रमों में यह कहते हुए मिलता था: "जिस व्यक्ति के लिए इस समय तालियाँ बज रही हैं, वह आज रात मेरे साथ घर जा रहा है।" फैशनपरस्त लोग, जब वे प्यार में होते हैं और उनके प्यार का स्वरूप चाहे जो भी हो, अपने अहंकार को किसी भी ऐसी चीज पर लागू करते हैं जो उन पूर्व लाभों को नष्ट कर सकती है जिनसे उनके अहंकार को संतुष्टि मिलती थी।
मोरेल को लगा कि मैं उससे कोई द्वेष नहीं रखता, क्योंकि मैं एम. डी चार्लस से पूरी तरह से जुड़ा हुआ था और साथ ही शारीरिक रूप से हम दोनों के प्रति बिल्कुल उदासीन था। इसलिए उसने मेरे साथ उसी तरह का गर्मजोशी भरा मित्रतापूर्ण व्यवहार किया, जैसे कोई वेश्या करती है जिसे पता हो कि आप उसे नहीं चाहते और उसके प्रेमी को आपमें एक सच्चा मित्र मिल गया है जो उसे उससे अलग करने की कोशिश नहीं करेगा। उसने न केवल मुझसे ठीक वैसे ही बात की जैसे सेंट-लूप की प्रेमिका राहेल ने बहुत पहले मुझसे की थी, बल्कि एम. डी चार्लस द्वारा मुझे बताई गई बातों से यह भी पता चलता है कि वह मेरी अनुपस्थिति में मेरे बारे में उससे वही बातें कहता था जो राहेल ने रॉबर्ट से मेरे बारे में कही थीं। वास्तव में एम. डी चार्लस ने मुझसे कहा: "वह तुम्हें बहुत पसंद करता है," जैसे रॉबर्ट ने कहा था: "वह तुम्हें बहुत पसंद करती है।" और जिस तरह भतीजा अपनी प्रेमिका की ओर से करता है, उसी तरह मोरेल का चाचा अक्सर मुझे उनके साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित करता था। वैसे, उनके बीच भी उतने ही झगड़े होते थे जितने रॉबर्ट और राहेल के बीच होते थे। यह सच है कि चार्ली (मोरेल) के चले जाने के बाद, एम. डी चार्लस लगातार उनकी प्रशंसा करते रहते थे, और बार-बार कहते थे—यह सोचकर उन्हें अच्छा लगता था—कि वायलिन वादक उनके प्रति कितना दयालु था। लेकिन यह स्पष्ट था कि चार्ली अक्सर, सभी वफादारों के सामने भी, चिड़चिड़ा सा चेहरा बनाए रखता था, जबकि बैरन हमेशा खुश और विनम्र रहना चाहते थे। समय के साथ यह चिड़चिड़ाहट इतनी बढ़ गई, क्योंकि एम. डी चार्लस ने मोरेल की असभ्यता को माफ कर दिया था, कि वायलिन वादक ने इसे छिपाने की कोशिश भी नहीं की, बल्कि जानबूझकर ऐसा किया। मैंने एम. डी चार्लस को एक रेलगाड़ी के डिब्बे में प्रवेश करते देखा है, जिसमें मोरेल अपने कुछ सैनिक मित्रों के साथ बैठे थे, और संगीतकार ने कंधे उचकाकर और अपने साथियों की ओर आँख मारकर उनका अभिवादन किया। या फिर वह सोने का नाटक करते,

मानो यह सब उन्हें हद से ज्यादा उबाऊ लग रहा हो। या फिर वह खांसने लगता, और दूसरे लोग हंसते, एम. डी चार्लस जैसे लोगों के बनावटी लहजे की नकल करते; चार्ली को एक कोने में खींच ले जाते, जहाँ से वह मजबूरी में लौटकर एम. डी चार्लस के पास बैठ जाता, जिनका दिल इन सभी क्रूरताओं से छलनी हो गया था। यह समझना मुश्किल है कि वह इन्हें कैसे सहन कर पाते थे; और पीड़ा के इन बदलते रूपों ने एम. डी चार्लस के लिए सुख की समस्या को नए सिरे से पेश किया, उन्हें न केवल और अधिक की मांग करने के लिए मजबूर किया, बल्कि कुछ और चाहने के लिए भी, क्योंकि पिछली स्थिति एक भयानक स्मृति से दूषित हो गई थी। फिर भी, ये दृश्य कितने भी दर्दनाक क्यों न हों, यह मानना पड़ेगा कि शुरुआत में मोरेल के लिए चुने गए फ्रांस के इस विनम्र पुत्र की प्रतिभा ने उन्हें सादगी, स्पष्टवादिता और यहाँ तक कि निस्वार्थता से प्रेरित प्रतीत होने वाले स्वतंत्र गौरव के आकर्षक रूप धारण करने के लिए प्रेरित किया। ऐसा नहीं था, लेकिन इस रवैये का फायदा मोरेल को कहीं ज़्यादा मिला, क्योंकि जहाँ प्रेम में डूबा व्यक्ति लगातार प्रयास करता रहता है, अपने प्रयासों को बढ़ाता रहता है, वहीं प्रेम में न डूबा व्यक्ति सरल, स्थिर और शालीनता से एक सीधी रेखा पर चलता रहता है। यह विशेषाधिकार मोरेल के खुले चेहरे में झलकता था, जिसका हृदय तो बंद था, लेकिन चेहरा नव-यूनानी सौंदर्य से ओतप्रोत था, जो शैम्पेन के गिरजाघरों में खिलता है। अपने दिखावटी गर्व के बावजूद, अक्सर जब वह एम. डी चार्लस को अचानक देख लेता, तो उस छोटे से परिवार की उपस्थिति से शर्मिंदा हो जाता, शरमा जाता, नज़रें झुका लेता, जिससे बैरन को बहुत प्रसन्नता होती, क्योंकि उसे इसमें एक पूरा रोमांस नज़र आता था। यह बस झुंझलाहट और शर्मिंदगी का संकेत था। हालाँकि झुंझलाहट कभी-कभी प्रकट हो जाती थी; क्योंकि मोरेल का रवैया आम तौर पर शांत और शालीन होता था, फिर भी उसमें अक्सर विरोधाभास भी होते थे। कभी-कभी, बैरन की किसी बात पर, मोरेल बड़े ही कठोर स्वर में, उद्दंडतापूर्ण जवाब देता था, जिससे सब चौंक जाते थे। एम. डी चार्लस उदास भाव से अपना सिर झुका लेते, कोई उत्तर नहीं देते, और उस सहजता के साथ जो स्नेही पिताओं में होती है कि वे अपने बच्चों की शीतलता और असभ्यता को अनदेखा कर देते हैं, वायलिन वादक की प्रशंसा करते रहते। एम. डी चार्लस हमेशा इतने विनम्र नहीं थे, लेकिन आमतौर पर उनके विद्रोह के प्रयास विफल रहते थे, मुख्यतः इसलिए कि समाज में रहने के कारण, वे संभावित प्रतिक्रियाओं का आकलन

करते समय लोगों की नीच प्रवृत्तियों, चाहे वे जन्मजात हों या अर्जित, को ध्यान में रखते थे। अब, इन प्रवृत्तियों के बजाय, उन्हें मोरेल में उदासीनता की एक सामान्य प्रवृत्ति मिली। दुर्भाग्य से एम. डी चार्लस यह नहीं समझ पाए कि मोरेल के मामले में, जब संगीत विद्यालय (और उसकी प्रतिष्ठा, हालांकि यह एक अधिक गंभीर मुद्दा है, इसलिए हम अभी इस पर चर्चा नहीं कर रहे हैं) दांव पर लगी हो, तो बाकी सब कुछ पीछे छूट जाता है। उदाहरण के लिए, मध्यम वर्ग के लोग गर्व के कारण आसानी से अपना उपनाम बदल लेते हैं, जबकि कुलीन लोग निजी लाभ के लिए ऐसा करते हैं। इसके विपरीत, युवा वायलिन वादक मोरेल के लिए, मोरेल नाम वायलिन के लिए मिले उनके प्रथम पुरस्कार से अटूट रूप से जुड़ा हुआ था, और इसलिए इसे बदलना असंभव था। एम. डी चार्लस चाहते थे कि मोरेल उनसे सब कुछ छीन लें, यहां तक कि अपना नाम भी। मोरेल का दूसरा नाम चार्ल्स था, जो चार्लस से मिलता-जुलता था, और जिस जगह वे अक्सर मिलते थे, उसका नाम लेस चार्म्स था। इन तथ्यों का हवाला देते हुए, उन्होंने मोरेल को समझाने की कोशिश की कि कलात्मक प्रसिद्धि पाने के लिए एक सुखद और आसानी से उच्चारित होने वाला नाम ही काफी होता है, इसलिए उस गुणी कलाकार को बिना किसी झिझक के चार्मेल नाम अपना लेना चाहिए, जो उनकी घनिष्ठता के स्थान का एक सूक्ष्म संकेत था। मोरेल ने कंधे उचका दिए। निर्णायक तर्क के रूप में, दुर्भाग्यवश एम. डी चार्लस ने यह भी जोड़ दिया कि उनके यहाँ एक नौकर का नाम भी यही था। वे केवल उस युवक के भयंकर आक्रोश को भड़काने में सफल हुए। "एक समय था जब मेरे पूर्वज राजा के सेवक, यानी नौकर कहलाने पर गर्व करते थे।" मोरेल ने अभिमानी स्वर में उत्तर दिया, "एक समय ऐसा भी था जब मेरे पूर्वजों ने तुम्हारे पूर्वजों के सिर काट दिए थे।" एम. डी चार्लस को बहुत आश्चर्य होता यदि उन्हें बताया जाता कि यदि वे 'चैनल' का विचार त्यागकर भी मोरेल को गोद लेने और उन्हें गुएरमांटेस परिवार की उन उपाधियों में से एक देने का निश्चय कर लें, जो उनके अधिकार में थीं, लेकिन जैसा कि हम आगे देखेंगे, परिस्थितियों के कारण वे वायलिन वादक को वह उपाधि नहीं दे पा रहे थे, तो भी मोरेल नाम से जुड़ी कलात्मक प्रतिष्ठा और 'क्लास' में उनके बारे में कही जाने वाली बातों के कारण मोरेल इसे अस्वीकार कर देंगे। उन्होंने रू बर्गेरे को फाउबर्ग सेंट-जर्मेन से काफी ऊपर बनाया था। इसलिए एम. डी चार्लस को मोरेल के लिए प्रतीकात्मक अंगूठियां बनवाकर ही संतोष करना पड़ा, जिन पर प्राचीन चिह्न अंकित

था: PLVS VLTRA CAR'LVS। निश्चित रूप से, एक ऐसे प्रतिद्वंद्वी का सामना करते हुए, जिससे वे अपरिचित थे, एम. डी चार्लस को अपनी रणनीति बदलनी चाहिए थी। लेकिन हममें से कौन ऐसा कर सकता है? इसके अलावा, यदि एम. डी चार्लस ने गलतियां कीं, तो मोरेल भी उनसे अछूते नहीं थे। उनके बीच दरार पैदा करने वाली वास्तविक परिस्थिति से कहीं अधिक, जो बात कम से कम अस्थायी रूप से (लेकिन यह अस्थायी स्थिति अंततः अंतिम साबित हुई) एम. डी चार्लस के साथ उनके रिश्ते को बर्बाद करने के लिए नियत थी, वह यह थी कि उनके स्वभाव में न केवल वह नीचता शामिल थी जिसके कारण वे कठोर व्यवहार में भी दब्बू बने रहते थे और दयालुता का जवाब भी धृष्टता से देते थे। इस जन्मजात नीचता के समानांतर, उनमें बदतमीज़ी का एक जटिल तंत्रिका विकार भी था, जो हर बार तब सक्रिय हो जाता था जब वे गलत होते थे या उपद्रव पैदा कर रहे होते थे। इसका मतलब यह था कि ठीक उसी क्षण जब उन्हें बैरन को शांत करने के लिए अपनी सारी विनम्रता, कोमलता और प्रसन्नता की आवश्यकता होती थी, वे गंभीर और चिड़चिड़े हो जाते थे, उन मामलों पर बहस छेड़ने की कोशिश करते थे जहाँ वे जानते थे कि दूसरा उनसे सहमत नहीं है, और अपने तर्क की कमजोरी और उस कमजोरी को और भी बढ़ा देने वाली हिंसक आक्रामकता के साथ अपना शत्रुतापूर्ण रवैया बनाए रखते थे। क्योंकि, बहुत जल्द ही उनके पास तर्क कम पड़ जाते थे, तो वे नए-नए तर्क गढ़ लेते थे, जिनमें वे अपनी अज्ञानता और मूर्खता का पूरा प्रदर्शन करते थे। जब वह दोस्ताना मूड में होता और सिर्फ खुश करने की कोशिश करता, तो ये बातें मुश्किल से ही नज़र आती थीं। इसके विपरीत, उसके गंभीर हास्य के दौर में कुछ भी दिखाई नहीं देता था, जब उसकी बातें हानिरहित होने के बजाय घृणित हो जाती थीं। तब एम. डी चार्लस को लगा कि वह अब और सहन नहीं कर सकता, उसकी एकमात्र आशा एक बेहतर भविष्य में है, जबकि मोरेल, यह भूलकर कि बैरन उसे विलासितापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बना रहा है, दया भरी व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ बोला: "मैंने कभी किसी से कुछ नहीं लिया। इसका मतलब है कि ऐसा कोई नहीं है जिसका मैं आभारी रहूँ।"

इस बीच, मानो किसी अनुभवी व्यक्ति से बात कर रहे हों, एम. डी चार्लस अपना क्रोध प्रकट करते रहे, चाहे वह वास्तविक हो या बनावटी, लेकिन दोनों ही मामलों में वह अप्रभावी रहा। हालाँकि, हमेशा ऐसा नहीं था। एक दिन (जो वास्तव में इस प्रारंभिक अवधि के बाद का है)

जब बैरन, चार्ली और मेरे साथ वर्दुरिन्स के यहाँ दोपहर के भोजन से लौट रहे थे और दोपहर और शाम का शेष समय डोंसिएरेस में वायलिन वादक के साथ बिताने की उम्मीद कर रहे थे, तो ट्रेन से उतरते ही वायलिन वादक ने उन्हें यह कहकर मना कर दिया: "नहीं, मेरा एक कार्यक्रम है।" इससे एम. डी चार्लस को इतनी गहरी निराशा हुई कि विपत्ति का बहादुरी से सामना करने के उनके तमाम प्रयासों के बावजूद, मैंने देखा कि उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे और उनकी आँखों के नीचे का रंग पिघल रहा था, जब वह असहाय होकर गाड़ी के दरवाजे पर खड़े थे। उनका दुख इतना गहरा था कि, चूंकि हम अल्बर्टीन और मैं दिन का बाकी समय डोनसिएरेस में बिताने वाले थे, इसलिए मैंने उससे धीरे से कहा कि मैं चाहूंगी कि हम एम. डी चार्लस को अकेला न छोड़ें, क्योंकि वे दुखी लग रहे थे, मैं कह नहीं सकती क्यों। प्यारी लड़की तुरंत मान गई। फिर मैंने एम. डी चार्लस से पूछा कि क्या वह मुझे थोड़ी देर के लिए अपने साथ चलने देना चाहेंगे। वे भी मान गए, लेकिन मेरी 'चचेरी बहन' को किसी भी तरह की परेशानी में नहीं डालना चाहते थे। मुझे उससे धीरे से, मानो वह मेरी पत्नी हो, यह कहने में एक खास आकर्षण महसूस हुआ (और यह आकर्षण, निस्संदेह, दोबारा नहीं मिलेगा, क्योंकि मैंने उससे रिश्ता तोड़ने का मन बना लिया था): "तुम अकेले घर वापस जाओ, मैं तुमसे आज शाम मिलूंगी," और उसे एक पत्नी की तरह यह कहते हुए सुनना कि मैं जो चाहूं कर सकती हूं, वह कर सकती हूं, और मुझे यह अधिकार देना कि अगर एम. डी चार्लस, जिनसे वह बहुत लगाव रखती थी, को मेरी संगति की आवश्यकता हो, तो मैं उनकी सेवा में हाज़िर रहूं। हम आगे बढ़े, बैरन और मैं; वह भारी-भरकम शरीर के साथ लड़खड़ाते हुए चल रहे थे, उनकी मासूमियत भरी नज़रें झुकी हुई थीं, और मैं उनके पीछे-पीछे चल रहा था। हम एक कैफ़े में पहुँचे जहाँ हमें बीयर दी गई। मुझे महसूस हुआ कि एम. डी चार्लस की नज़रें किसी योजना को अंजाम देने की ओर बेचैनी से घूम रही हैं। अचानक उन्होंने कागज़ और स्याही मंगवाई और आश्चर्यजनक गति से लिखना शुरू कर दिया। जैसे-जैसे वह एक के बाद एक पन्ने भरते गए, उनकी आँखें उग्र कल्पनाओं से चमक उठती रहीं। जब उन्होंने आठ पन्ने लिख लिए, तो उन्होंने मुझसे कहा, "क्या मैं आपसे एक बड़ी सेवा करने का अनुरोध कर सकता हूँ?" "मुझे इस नोट को सील करने के लिए क्षमा करें। मैं ऐसा करने के लिए बाध्य हूँ। आप वहाँ जितनी जल्दी हो सके पहुँचने के लिए एक घोड़ागाड़ी, अगर मिल सके तो मोटरकार, ले लें। आपको

यकीन है कि मोरेल अपने कमरे में मिल जाएगा, जहाँ वह कपड़े बदलने गया है। बेचारा, जब हम बिछड़े तो उसने थोड़ा अकड़ दिखाने की कोशिश की, लेकिन आप यकीन मानिए कि उसका दिल मुझसे कहीं ज़्यादा भरा हुआ है। आप उसे यह नोट दे दें, और अगर वह आपसे पूछे कि आप मुझसे कहाँ मिले थे, तो आप उसे बताएँ कि आप रॉबर्ट से मिलने के लिए डोंसिएरेस में रुके थे (जो कि सच है), जो शायद पूरी तरह सच नहीं है, बल्कि यह कि आप मुझसे एक ऐसे व्यक्ति के साथ मिले जिसे आप नहीं जानते, कि मैं बहुत गुस्से में लग रहा था, कि आपको लगा कि आपने सहायक भेजने के बारे में कुछ सुना है (दरअसल, मैं कल द्वंद्वयुद्ध लड़ रहा हूँ)। आप जो भी करें, यह न कहें कि मैं उसे बुला रहा हूँ, उसे यहाँ लाने की कोई कोशिश न करें, लेकिन अगर वह आपके साथ आना चाहता है, तो उसे न रोकें। जाओ, मेरे बच्चे, यह उसके भले के लिए, आप एक बड़ी त्रासदी को टालने का माध्यम बन सकते हैं। जब आप अनुपस्थित हों, मैं अपने सहायकों को पत्र लिखूंगा। मैंने आपको अपनी चचेरी बहन के साथ दोपहर बिताने से रोक दिया है। मुझे आशा है कि वह इसके लिए मुझसे कोई दुर्भावना नहीं रखेगी, वास्तव में मुझे इसका पूरा विश्वास है। क्योंकि उसका दिल बहुत नेक है, और मैं जानता हूं कि वह उन लोगों में से एक है जो परिस्थितियों की विशालता का विरोध न करने के लिए काफी मजबूत हैं। आपको मेरी ओर से उसे धन्यवाद देना चाहिए। मैं व्यक्तिगत रूप से उसका ऋणी हूं, और मुझे खुशी है कि ऐसा है। मुझे एम. डी चार्लस के लिए बहुत दुख हुआ; मुझे लगा कि चार्ली इस द्वंद्वयुद्ध को रोक सकता था, जिसका शायद वही कारण था, और अगर ऐसा था, तो मुझे इस बात से घृणा हुई कि वह अपने संरक्षक की मदद करने के बजाय इतनी उदासीनता से चला गया। मोरेल जिस घर में ठहरे थे, वहाँ पहुँचकर मेरी नाराज़गी और बढ़ गई जब मैंने वायलिन वादक की आवाज़ पहचानी, जो अपनी खुशी को ज़ाहिर करने के लिए ज़ोर-ज़ोर से गा रहा था: "किसी रविवार की सुबह, जब शादी की घंटियाँ बजेंगी!" बेचारे एम. डी चार्लस ने अगर उसे सुना होता, जो मुझे यह यकीन दिलाना चाहते थे, और शायद खुद भी मानते थे, कि उस पल मोरेल का दिल खुशी से भरा हुआ था! चार्ली मुझे देखते ही खुशी से नाचने लगे। "हैलो, दोस्त! (माफ़ करना, तुम्हें इस तरह संबोधित कर रहा हूँ; इस बदकिस्मत सैन्य जीवन में बुरी आदतें लग जाती हैं) तुम्हें देखकर कितनी खुशी हुई। आज शाम मेरे पास करने को कुछ नहीं है। चलो कहीं चलते हैं। अगर तुम चाहो तो हम यहीं रुक सकते हैं, या

अगर तुम चाहो तो नाव से जा सकते हैं, या हम संगीत का आनंद ले सकते हैं, मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।" मैंने उन्हें बताया कि मुझे बालबेक में भोजन करना है, वे चाहते थे कि मैं उन्हें भी वहाँ भोजन करने के लिए आमंत्रित करूँ, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। "लेकिन अगर आपको इतनी जल्दी है, तो आप यहाँ क्यों आए हैं?" "मैं आपके लिए एम. डी चार्लस का एक पत्र लाया हूँ।" उसी क्षण उसकी सारी खुशी गायब हो गई; उसका चेहरा सिकुड़ गया। "क्या! वह मुझे यहाँ भी अकेला नहीं छोड़ सकता। तो क्या मैं उसका गुलाम हूँ? अरे यार, मज़ाक मत करो। मैं उसका पत्र नहीं खोलने वाला। तुम उसे बता देना कि तुम मुझे ढूंढ नहीं पाए।" "क्या इसे खोलना बेहतर नहीं होगा, मुझे लगता है इसमें कुछ गंभीर बात है।" "नहीं, बिल्कुल नहीं, तुम उस बूढ़े बदमाश के सारे झूठ, उसकी सारी चालें नहीं जानते। यह मुझे उससे मिलने भेजने का एक बहाना है। ठीक है! मैं नहीं जा रहा, मैं शांति से एक शाम बिताना चाहता हूँ।" "लेकिन क्या कल द्वंद्वयुद्ध नहीं होने वाला है?" मैंने मोरेल से पूछा, जिसे मैं उतना ही जानकार समझता था। "द्वंद्वयुद्ध?" उसने अचंभित होकर दोहराया। "मैंने इसके बारे में कभी कुछ नहीं सुना। आख़िरकार, मुझे इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, वो बूढ़ा गंदा जानवर चाहे तो जाकर अपनी जान गंवा दे। लेकिन ज़रा रुको, ये तो दिलचस्प है, मैं उसका पत्र देख ही लेता हूँ। तुम उसे बता देना कि तुमने ये मेरे लिए यहाँ छोड़ दिया है, अगर मैं कभी आऊँ तो।" जब मोरेल मुझसे बात कर रहा था, मैं एम. डी चार्लस द्वारा उसे दी गई खूबसूरत किताबों को हैरानी से देख रहा था, जो उसके कमरे में बिखरी पड़ी थीं। वायलिन वादक ने "मैं बैरन का हूँ" आदि लिखे हुए पत्रों को लेने से इनकार कर दिया था, क्योंकि उसे लगता था कि ये उसके लिए अपमानजनक है, एक तरह से अधीनता का प्रतीक है। बैरन ने अपनी अभागी प्रेमिका की भावुक चतुराई से, उनके पूर्वजों द्वारा लिखी गई दूसरी किताबें रखवा दी थीं, लेकिन एक उदास दोस्ती की परिस्थितियों के अनुसार उन्हें जिल्दसाज़ से लिखवाया था। कभी-कभी वे संक्षिप्त और आत्मविश्वास से भरी होती थीं, जैसे "Spes mea" या "Expectata non eludet"। कभी-कभी तो केवल त्याग का भाव होता था, जैसे कि J'attendrai। कुछ अन्य वीरतापूर्ण थे: Mesme plaisir du mestre, या पवित्रता का परामर्श देते थे, जैसे कि सिमिआने परिवार से लिया गया, नीले मीनारों और लिली से सजा हुआ, और एक नया अर्थ दिया गया: Sustendan lilia turres। अंत में, कुछ अन्य निराश थे, और उन्होंने स्वर्ग में उस व्यक्ति से मिलने का निश्चय

किया जिसने पृथ्वी पर दाता को ठुकरा दिया था: Manet ultima caelo, और (जिन अंगूरों तक वह नहीं पहुँच पाया था, उन्हें बहुत खट्टा पाकर, जो उसे प्राप्त नहीं हुआ था उसे न चाहने का दिखावा करते हुए) एम. डी चार्लस ने एक में कहा: Non mortale quod opto। लेकिन मेरे पास उन सभी का अध्ययन करने का समय नहीं था।

अगर श्री डी चार्लस ने कागज पर यह पत्र लिखते समय मानो किसी शैतान के वश में होकर कलम चलाई हो, तो मोरेल ने मुहर (लाल गुलाबों के बीच एक तेंदुआ, जिस पर आदर्श वाक्य था: अतविस एट आर्मिस) तोड़ते ही पत्र को उतनी ही तेज़ी से पढ़ना शुरू कर दिया, जितनी तेज़ी से श्री डी चार्लस ने लिखा था। पन्नों पर उनकी नज़रें बैरन की कलम से कम तेज़ नहीं दौड़ रही थीं। "हे भगवान!" उन्होंने कहा, "यह तो हद हो गई! लेकिन मैं उसे कहाँ ढूँढूँ? भगवान ही जाने वह अब कहाँ है।" मैंने सुझाव दिया कि अगर वह जल्दी करे तो शायद वह उसे किसी सराय में पा सके जहाँ उसने तरोताज़ा होने के लिए बीयर मंगाई हो। "मुझे नहीं पता कि मैं वापस आऊँगा या नहीं," उन्होंने अपनी मालकिन से कहा और धीरे से कहा, "यह तो किस्मत पर निर्भर करेगा।" कुछ मिनट बाद हम कैफ़े पहुँचे। मैंने श्री डी चार्लस के चेहरे के भावों को उस क्षण देखा जब उन्होंने मुझे देखा। जब उसने देखा कि मैं अकेला नहीं लौटा, तो मुझे ऐसा लगा जैसे उसकी साँसें और जीवन शक्ति उसे वापस मिल गई हो। मोरेल के बिना उस शाम काम न चल पाने की आशंका से उसने बहाना बनाया कि किसी ने उसे बताया है कि रेजिमेंट के दो अधिकारियों ने वायलिन वादक के संबंध में उसके बारे में बुरा-भला कहा है और वह अपने सहायकों को उनसे मिलने भेजने वाला है। मोरेल को इस बदनामी का पूर्वाभास था, रेजिमेंट में उसका जीवन असंभव हो गया था, और वह तुरंत मौके पर पहुँच गया। ऐसा करने में वह पूरी तरह गलत नहीं था। अपने झूठ को और अधिक विश्वसनीय बनाने के लिए, एम. डी चार्लस ने पहले ही अपने दो मित्रों (जिनमें से एक कॉटार्ड था) को पत्र लिखकर उनसे अपना सहायक बनने का अनुरोध किया था। और, यदि वायलिन वादक प्रकट नहीं होता, तो हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि एम. डी चार्लस उस समय जिस उन्मादी अवस्था में था (और अपने दुख को क्रोध में बदलने के लिए), वह उन्हें किसी ऐसे अधिकारी के पास चुनौती देकर भेज देता जिससे लड़ना उसके लिए राहत की बात होती। इस अंतराल के दौरान, एम. डी चार्लस को याद आया कि वह फ्रांस के राजघराने से भी अधिक शुद्ध वंश से थे, और उन्होंने

मन ही मन सोचा कि एक ऐसे बटलर के बेटे के लिए इतनी मेहनत करना वाकई बहुत अच्छा था, जिसके मालिक को जानना भी उनके लिए उचित नहीं होता। दूसरी ओर, यदि अब उनका एकमात्र मनोरंजन बदनाम लोगों की संगति में ही था, तो ऐसे लोगों की चिट्ठी का जवाब न देने, बिना पूर्व सूचना दिए मुलाकात न निभाने और बाद में माफी न मांगने की गहरी आदत ने, क्योंकि उनका दिल अक्सर इसमें उलझा रहता था, उनमें भावनाओं का इतना सैलाब ला दिया और बाकी समय उन्हें इतना चिड़चिड़ापन, असुविधा और गुस्सा दिलाया कि कभी-कभी उन्हें छोटी-छोटी बातों पर लिखी गई अंतहीन चिट्ठियों, राजदूतों और राजकुमारों की अत्यधिक सटीकता पर पछतावा होने लगता था, जो दुर्भाग्य से भले ही उनके व्यक्तिगत आकर्षण से प्रभावित न होते हों, फिर भी उन्हें किसी न किसी रूप में मन की शांति तो देते थे। मोरेल के तौर-तरीकों से वाकिफ और यह जानते हुए कि उस पर उसका कितना कम प्रभाव था, और यह जानते हुए कि वह उस जीवन में अपनी पैठ बनाने में कितना असमर्थ था, जिसमें साधारण लेकिन आदत के बल पर कायम दोस्ती इतनी जगह और समय घेर लेती थी कि बेदखल, अभिमानी और व्यर्थ ही गिड़गिड़ाते उस महान रईस के लिए एक घंटा भी नहीं बचता था, एम. डी चार्लस को इतना यकीन था कि संगीतकार नहीं आएगा, उसे इतना डर था कि अगर वह हद से आगे बढ़ गया तो उसे हमेशा के लिए खो देगा, कि जब उसने उसे प्रकट होते देखा तो वह खुशी से चिल्ला उठा। लेकिन खुद को विजेता मानते हुए, उसने शांति की शर्तें तय करने और उनसे यथासंभव लाभ उठाने को अपना कर्तव्य समझा। "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" उसने उससे कहा। "और तुम?" उसने मेरी ओर देखते हुए कहा, "मैंने तुमसे कहा था, चाहे कुछ भी करो, उसे अपने साथ वापस मत लाना।" "वह मुझे लाना नहीं चाहते थे," मोरेल ने एम. डी चार्लस की ओर मुड़ते हुए, अपनी सरल नज़ाकत भरी अदा से कहा। उनकी नज़रें पारंपरिक रूप से उदास और पुराने ज़माने की सुस्ती से भरी थीं, और उनके भाव में बैरन को चूमने और फूट-फूट कर रोने की ऐसी इच्छा थी जिसे वह शायद रोकना नहीं चाहते थे। "मैंने उनकी इच्छा के विरुद्ध आने की ज़िद की। मैं अपनी मित्रता के नाम पर आपसे घुटने टेककर विनती करने आया हूँ कि आप यह जल्दबाज़ी वाला कदम न उठाएँ।" एम. डी चार्लस खुशी से झूम उठे। उनकी प्रतिक्रिया इतनी ज़बरदस्त थी कि वे खुद को संभाल नहीं पाए; फिर भी उन्होंने किसी तरह खुद पर काबू पा लिया। "जिस मित्रता का सहारा तुम इस अनुचित समय

पर ले रहे हो," उसने रूखे स्वर में उत्तर दिया, "इसके विपरीत, तुम्हें मेरा समर्थन करना चाहिए था जब मैंने यह निर्णय लिया कि मैं एक मूर्ख की गुस्ताखी को अनदेखा नहीं कर सकता। हालांकि, अगर मैं उस स्नेह की प्रार्थनाओं को स्वीकार भी कर लेता, जिसे मैंने बेहतर ढंग से प्रेरित होते देखा है, तो अब मैं ऐसा करने की स्थिति में नहीं हूँ, मेरे सहायकों को लिखे पत्र भेज दिए गए हैं और मुझे उनकी सहमति का कोई संदेह नहीं है। तुमने हमेशा मेरे साथ एक छोटे मूर्ख जैसा व्यवहार किया है और, तुम्हें जो गर्व करने का पूरा अधिकार था, उस पर गर्व करने के बजाय, जो मैंने तुम्हारे प्रति दिखाया था, उन सर्जेंटों या नौकरों की भीड़ को, जिनके बीच सैन्य सेवा का कानून तुम्हें रहने के लिए बाध्य करता है, यह बताने के बजाय कि मेरे जैसी मित्रता तुम्हारे लिए कितनी अतुलनीय संतुष्टि का स्रोत थी, तुमने अपने लिए बहाने बनाने की कोशिश की है, लगभग इस बात को एक मूर्खतापूर्ण गुण साबित करने की कोशिश की है कि तुम पर्याप्त कृतज्ञ नहीं हो। मुझे पता है कि ऐसा करने में," उसने आगे कहा, ताकि यह न लगे कि कैसे कुछ दृश्यों ने उन्हें बेहद अपमानित किया था, "तुम सिर्फ दूसरों की ईर्ष्या में बह जाने के दोषी हो। लेकिन तुम्हारी उम्र में तुम इतने बचकाने (और इतने बदतमीज़) कैसे हो सकते हो कि तुम्हें यह तुरंत समझ नहीं आया कि मेरे द्वारा तुम्हारा चुनाव और उससे मिलने वाले सभी लाभ ईर्ष्या को जन्म देंगे, और तुम्हारे सभी साथी तुम्हें मुझसे झगड़ा करने के लिए उकसाते हुए तुम्हारी जगह लेने की साजिश रच रहे थे? मैंने तुम्हें उन पत्रों के बारे में बताना ज़रूरी नहीं समझा जो मुझे इस संबंध में उन सभी लोगों से मिले हैं जिन पर तुम सबसे ज़्यादा भरोसा करते हो। मैं उन चापलूसों के प्रस्तावों को उसी तरह तुच्छ समझता हूँ जैसे उनके बेअसर मज़ाक को। मुझे सिर्फ तुम्हारी परवाह है, क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता हूँ, लेकिन स्नेह की भी सीमा होती है और तुम्हें यह समझ लेना चाहिए था।" मोरेल के कानों में चापलूस शब्द भले ही कठोर लगे, क्योंकि उनके पिता स्वयं एक चापलूस थे, लेकिन ठीक इसी कारण से कि उनके पिता एक चापलूस थे, सामाजिक बदहाली का कारण 'ईर्ष्या' बताया जाता था। यह स्पष्टीकरण बेतुका और हास्यास्पद तो था, लेकिन इसका महत्व असीमित था, और एक खास वर्ग के लोगों में यह हमेशा उतना ही प्रभावी होता था जितना कि रंगमंच के पुराने करतब या संसद में पादरी के खतरे का डर। मोरेल में इस बात के प्रति उतनी ही दृढ़ता थी जितनी फ्रांस्वा या श्रीमती डी गुएरमांटेस के नौकरों में थी, जिनके लिए ईर्ष्या ही मानवता पर

आने वाली विपत्तियों का एकमात्र कारण थी। उन्हें इसमें कोई संदेह नहीं था कि उनके साथियों ने उन्हें उनके पद से हटाने की कोशिश की थी और इस भयानक, हालांकि काल्पनिक द्वंद्वयुद्ध के विचार से वे और भी दुखी थे। "ओह! कितना भयानक!" चार्ली ने कहा। "मैं अब कभी सिर नहीं उठा पाऊंगा। लेकिन क्या उन्हें इस अधिकारी से मिलने जाने से पहले आपसे नहीं मिलना चाहिए?" "मुझे नहीं पता, शायद उन्हें ऐसा करना चाहिए। मैंने उनमें से एक को संदेश भेज दिया है कि मैं पूरी शाम यहीं रहूंगा और उसे निर्देश दे सकता हूं।" "मुझे उम्मीद है कि उसके आने से पहले मैं आपको समझा पाऊंगा; आप मुझे किसी भी हालत में अपने साथ रहने देंगे," मोरेल ने उनसे कोमल स्वर में पूछा। एम. डी चार्लस बस यही चाहते थे। हालांकि, वे तुरंत नहीं माने। "इस मामले में 'जो प्रेम करता है, उसे दंड मिलता है' वाली कहावत को लागू करना गलत होगा, क्योंकि मैंने आपसे प्रेम किया है, और मैं उन लोगों को हमारे बिछड़ने के बाद भी दंडित करने का इरादा रखता हूं जिन्होंने नीचता से आपको नुकसान पहुंचाने की कोशिश की है। अब तक, जब उन्होंने मुझसे यह पूछने की हिम्मत की कि मुझ जैसा आदमी तुम्हारे जैसे घटिया लड़के के साथ कैसे घुलमिल सकता है, तो मैंने उनके जिज्ञासु इशारों का जवाब केवल अपने ला रोशेफौकॉल्ड चचेरे भाइयों के आदर्श वाक्य में दिया है: 'यह मेरी खुशी है।'" मैंने आपको एक से अधिक बार यह बताया है कि यह आनंद मेरा सबसे बड़ा आनंद बन सकता था, और आपके मनमाने उत्थान से मेरा कोई अपमान नहीं होता। और लगभग पागलपन भरे गर्व में उसने अपनी बाहें हवा में उठाते हुए कहा: "टैंटस अब उनो स्प्लेंडर! नीचा दिखाना नीचा दिखाना नहीं है," गर्व और खुशी के इस उन्मादपूर्ण विस्फोट के बाद उसने शांत स्वर में कहा। "मुझे कम से कम यह आशा है कि मेरे दोनों प्रतिद्वंद्वी, भले ही उनकी पदवी मुझसे कम हो, ऐसे वंश के हैं जिन्हें मैं निःसंकोच मार सकता हूँ। मैंने इस संबंध में कुछ गुप्त जाँच-पड़ताल की है जिससे मुझे तसल्ली मिली है। यदि आपमें मेरे प्रति थोड़ी भी कृतज्ञता बची है, तो इसके विपरीत आपको इस बात पर गर्व होना चाहिए कि आपके लिए मैं अपने पूर्वजों के युद्धप्रिय स्वभाव को पुनर्जीवित कर रहा हूँ, और उनकी तरह ही घातक परिणाम की स्थिति में कह रहा हूँ, अब जब मुझे पता चल गया है कि आप कितने बड़े बदमाश हैं: 'मेरे लिए मृत्यु ही जीवन है।'" और एम. डी चार्लस ने यह बात पूरी ईमानदारी से कही, न केवल मोरेल के प्रति अपने प्रेम के कारण, बल्कि इसलिए भी कि उनके

भीतर एक युद्धप्रिय प्रवृत्ति थी, जिसे वे विचित्र रूप से अपने पूर्वजों से विरासत में मिली मानते थे, और युद्ध के विचार मात्र से ही उनमें इतनी खुशी भर जाती थी कि यह द्वंद्वयुद्ध, जिसे उन्होंने मूल रूप से मोरेल को अपने पास बुलाने के एकमात्र उद्देश्य से रचा था, अब वे बिना पछतावे के नहीं छोड़ सकते थे। वह इस तरह के किसी भी मामले में बिना खुद को विजेता समझे और खुद को महान कॉन्स्टेबल डी गुएरमेंटेस के समान मानते हुए कभी शामिल नहीं हुए थे, जबकि किसी और के मामले में मैदान में उतरने की यही क्रिया उन्हें अत्यंत तुच्छ लगती थी। "मुझे यकीन है कि यह एक शानदार नजारा होगा," उन्होंने पूरी ईमानदारी से हमसे कहा, हर शब्द पर जोर देते हुए। "सारा बर्नहार्ट को 'ल'एग्लॉन' में देखना, क्या बकवास है? मौनेट-सुली को 'ओडिपस' में देखना, बकवास! ज़्यादा से ज़्यादा यह नीम्स के अखाड़े में प्रदर्शन करते समय एक फीके रूपांतरण का रूप धारण कर लेता है। लेकिन उस अकल्पनीय दृश्य की तुलना में यह क्या है, कॉन्स्टेबल के वंशज का युद्ध में उतरना?" और इस बात के ख्याल मात्र से ही, एम. डी चार्लस खुशी से बेकाबू हो गए और हवा में ऐसे इशारे करने लगे जो मोलियर की याद दिलाते थे। इससे हमें अपने चश्मे और पास खींचने की सावधानी बरतनी पड़ी और डर लगने लगा कि जब तलवारें टकराएंगी तो योद्धा, डॉक्टर और सहायक तुरंत घायल हो जाएंगे। उन्होंने मुझसे कहा, "एक चित्रकार के लिए यह कितना लुभावना दृश्य होगा! आप जो श्रीमान एल्स्टिर को जानते हैं, आपको उन्हें लाना चाहिए।" मैंने जवाब दिया कि वे आस-पास नहीं हैं। एम. डी चार्लस ने सुझाव दिया कि उन्हें टेलीग्राम द्वारा बुलाया जा सकता है। मेरी चुप्पी पर उन्होंने आगे कहा, "ओह! मैं यह उनके हित में कह रहा हूँ। एक उस्ताद के लिए - जो मेरी राय में वे हैं - नस्लीय अस्तित्व के ऐसे उदाहरण को दर्ज करना हमेशा दिलचस्प होता है। और ऐसी घटनाएं शायद एक सदी में एक बार ही होती हैं।"

लेकिन अगर एम. डी चार्लस उस द्वंद्वयुद्ध के विचार से मंत्रमुग्ध थे, जिसे उन्होंने पहले पूरी तरह काल्पनिक माना था, तो मोरेल को इस बात का डर सता रहा था कि रेजिमेंटल बैंड द्वारा कौन-कौन सी कहानियां फैलाई जा सकती हैं और इस द्वंद्वयुद्ध से मचे बवाल के कारण वे रू बर्गेरे के सबसे पवित्र स्थान तक भी पहुंच सकती हैं। अपने मन में उस 'वर्ग' को पूरी तरह से सूचित देखकर, वह एम. डी चार्लस पर और अधिक ज़ोर देने लगे, जो द्वंद्वयुद्ध के मादक विचार से उत्तेजित होकर हावभाव करते रहे। उन्होंने बैरन से विनती की कि उन्हें अगले दिन

के बाद तक, यानी द्वंद्वयुद्ध के कथित दिन तक, उन्हें न छोड़ने की अनुमति दी जाए, ताकि वह उन्हें अपनी नज़र में रख सकें और उन्हें समझाने की कोशिश कर सकें। इस कोमल प्रस्ताव ने एम. डी चार्लस की अंतिम हिचकिचाहट को दूर कर दिया। उन्होंने कहा कि वह इससे बचने का कोई रास्ता निकालेंगे, और अपना अंतिम निर्णय दो दिनों के लिए टाल देंगे। इस तरह, तुरंत कोई निश्चित व्यवस्था न करके, एम. डी चार्लस को पता था कि वह चार्ली को कम से कम दो दिनों तक अपने पास रख सकता है और इस समय का उपयोग द्वंद्वयुद्ध छोड़ने के बदले में उससे भविष्य की योजनाओं को तय करने के लिए कर सकता है। चार्ली ने कहा कि यह अभ्यास उसे अपने आप में आनंद देता था और वह इसे बिना पछतावे के नहीं छोड़ेगा। और यह कहते हुए वह पूरी तरह ईमानदार था, क्योंकि जब भी किसी प्रतिद्वंद्वी से तलवारबाजी या गोलीबारी की बात आती थी, तो उसे हमेशा मैदान में उतरने में आनंद आता था। कॉटार्ड अंततः पहुंचा, हालांकि बहुत देर हो चुकी थी, क्योंकि सहायक की भूमिका निभाने से प्रसन्न होने के साथ-साथ इस संभावना से और भी अधिक परेशान होकर, उसे रास्ते में पड़ने वाले सभी कैफे या खेतों पर रुकना पड़ा और वहां के मालिकों से 'नंबर 100' या 'किसी विशेष स्थान' का रास्ता दिखाने की कृपा करने के लिए कहना पड़ा। जैसे ही वह पहुंचा, बैरन उसे दूसरे कमरे में ले गया, क्योंकि उसे लगा कि चार्ली और मेरा साक्षात्कार में उपस्थित न होना अधिक उचित होगा, और उसने एक साधारण से कमरे को भी अस्थायी रूप से सिंहासन कक्ष या परिषद कक्ष के रूप में इस्तेमाल करने में महारत हासिल कर ली। जब वह कॉटार्ड के साथ अकेला था, तो उसने उसका हार्दिक धन्यवाद किया, लेकिन उसे बताया कि ऐसा प्रतीत होता है कि जो बात उसे दोहराई गई थी, वह वास्तव में कभी कही ही नहीं गई थी, और अनुरोध किया कि इसे देखते हुए, डॉक्टर कृपया दूसरे प्रतिनिधि को बता दें कि संभावित जटिलताओं को छोड़कर, इस घटना को समाप्त माना जा सकता है। अब जब खतरे की आशंका टल गई थी, तो कॉटार्ड निराश हो गया। वास्तव में, एक क्षण के लिए उसे क्रोध प्रकट करने का मन हुआ, लेकिन उसे याद आया कि उसके एक गुरु, जिन्होंने अपनी पीढ़ी में सबसे सफल चिकित्सा करियर का आनंद लिया था, अपने पहले चुनाव में केवल दो वोटों से अकादमी में प्रवेश पाने में असफल होने के बावजूद, उन्होंने साहस दिखाया और जाकर अपने सफल प्रतिद्वंद्वी से हाथ मिलाया था। और इसलिए डॉक्टर ने किसी भी प्रकार की

नाराजगी व्यक्त करने से परहेज किया, जिससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उन्होंने अत्यंत संकोची स्वभाव से बुदबुदाते हुए कहा कि कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, और फिर आगे कहा कि यही बेहतर है, क्योंकि इस समाधान से उन्हें प्रसन्नता हुई। डॉक्टर के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए, ठीक उसी प्रकार जैसे उनके भाई ड्यूक उनके पिता के ओवरकोट का कॉलर सीधा करते या जैसे कोई डचेस किसी आम महिला की कमर में हाथ डालती, एम. डी चार्लस ने डॉक्टर के प्रति अपनी नापसंदगी के बावजूद अपनी कुर्सी उनके पास खींच ली। और, न केवल किसी शारीरिक सुख के बिना, बल्कि शारीरिक घृणा को दूर करते हुए, एक समलैंगिक की तरह, न कि किसी समलैंगिक की तरह, डॉक्टर से विदा लेते समय, उन्होंने उनका हाथ थाम लिया और एक पल के लिए उसे उसी स्नेह से सहलाया जैसे कोई सवार अपने घोड़े की नाक सहलाता है और उसे चीनी का टुकड़ा खिलाता है। लेकिन कॉटार्ड, जिसने बैरन को कभी यह नहीं दिखाया था कि उसने उसके नैतिक आचरण के बारे में कुछ भी सुना है, फिर भी अपने निजी मन में उसे 'असामान्य' लोगों की श्रेणी में रखता था (दरअसल, शब्दों के चयन में अपनी आदतन अशुद्धि के साथ और अत्यंत गंभीर लहजे में, उसने एम. वर्दुरिन के एक नौकर के बारे में कहा: "क्या वह बैरन का रखैल नहीं है?"), ऐसे लोग जिनसे उसका कोई व्यक्तिगत परिचय नहीं था; उसने कल्पना की कि उसके हाथ को सहलाना किसी हिंसक कृत्य की तत्काल शुरुआत थी, जिसके पूर्वाभास में, द्वंद्वयुद्ध को मात्र एक बहाना बनाकर, उसे एक जाल में फंसाया गया था और बैरन द्वारा इस एकांत कक्ष में लाया गया था जहाँ उसके साथ जबरदस्ती दुर्व्यवहार किया जाने वाला था। भय से जकड़ी अपनी कुर्सी से हिलने की हिम्मत न करते हुए, उसने डर से अपनी आँखें घुमाईं, मानो वह किसी ऐसे बर्बर के हाथों में पड़ गया हो जो, जहाँ तक उसे पता था, मानव मांस खाता हो। अंततः एम. डी चार्लस ने अपना हाथ छोड़ते हुए और अंत तक आतिथ्य सत्कार करते हुए कहा: "क्या आप हमारे साथ कुछ लेना नहीं चाहेंगे, जैसा कि कहावत है, जिसे पुराने जमाने में मजाग्रान या ग्लोरिया कहा जाता था, ऐसे पेय जो अब कहीं नहीं मिलते, पुरातात्विक जिज्ञासाओं की तरह, केवल लैबिचे के नाटकों और डोनसिएरेस के कैफे में ही पाए जाते हैं। ग्लोरिया इस जगह और इस अवसर के लिए बिल्कुल उपयुक्त रहेगा, है ना?" कॉटार्ड ने उत्तर दिया, "मैं शराब-विरोधी लीग का अध्यक्ष हूँ। किसी देहाती डॉक्टर को यहाँ से गुजरना ही

होगा, और यह कहा जाएगा कि मैं जो कहता हूँ, वह करता नहीं। Os homini sublime dedit coelumque tueri," उन्होंने आगे कहा, हालांकि इसका मामले से कोई लेना-देना नहीं था, लेकिन इसलिए कि उनके पास लैटिन उद्धरणों का भंडार अत्यंत सीमित था, फिर भी उनके छात्रों को चकित करने के लिए पर्याप्त था। एम. डी चार्लस ने कंधे उचकाए और कॉटार्ड को वापस वहीं ले आए जहाँ हम थे। उन्होंने कॉटार्ड से गोपनीयता का वादा लिया, जो उनके लिए और भी महत्वपूर्ण था क्योंकि असफल द्वंद्वयुद्ध का मकसद पूरी तरह से काल्पनिक था। किसी भी कीमत पर यह बात उस अधिकारी के कानों तक नहीं पहुँचनी चाहिए थी जिसे उन्होंने मनमाने ढंग से अपना प्रतिद्वंद्वी चुना था। जब हम चारों वहाँ बैठकर शराब पी रहे थे, श्रीमती कॉटार्ड, जो अपने पति का बाहर इंतज़ार कर रही थीं, जहाँ एम. डी चार्लस उन्हें अच्छी तरह देख सकते थे, हालाँकि उन्होंने उन्हें बुलाने की कोई कोशिश नहीं की थी, अंदर आईं और बैरन का अभिवादन किया। बैरन ने अपनी कुर्सी से उठे बिना, मानो किसी नौकरानी से हाथ मिला रहे हों, उनका अभिवादन कुछ इस तरह था जैसे कोई राजा सम्मान स्वीकार कर रहा हो, कुछ इस तरह जैसे कोई घमंडी व्यक्ति किसी साधारण दिखने वाली महिला को अपने साथ बैठने देना नहीं चाहता हो, और कुछ इस तरह जैसे कोई अहंकारी व्यक्ति अपने दोस्तों के साथ अकेले रहना पसंद करता हो और परेशान नहीं होना चाहता हो। इसलिए श्रीमती कॉटार्ड एम. डी चार्लस और अपने पति से बात करते हुए खड़ी रहीं। लेकिन, शायद इसलिए कि शिष्टाचार, यानी 'क्या किया जाना चाहिए' का ज्ञान, केवल गुएरमांटे परिवार का विशेषाधिकार नहीं है, और यह अचानक सबसे अनिश्चित दिमागों को भी रोशन और मार्गदर्शन कर सकता है, या फिर इसलिए कि स्वयं अपनी पत्नी के प्रति लगातार बेवफा रहने के कारण, कॉटार्ड को कभी-कभी, एक तरह के मुआवजे के रूप में, उसे किसी ऐसे व्यक्ति से बचाने की आवश्यकता महसूस होती थी जो उसके प्रति अपने कर्तव्य में विफल रहा हो, डॉक्टर ने तुरंत भौंहें चढ़ाईं, ऐसा मैंने उन्हें पहले कभी करते नहीं देखा था, और एम. डी चार्लस से सलाह लिए बिना, अधिकारपूर्ण स्वर में कहा: "आइए, लियोन्टाइन, ऐसे मत खड़ी रहो, बैठ जाओ।" "लेकिन क्या आपको यकीन है कि मैं आपको परेशान नहीं कर रही हूँ?" श्रीमती कॉटार्ड ने एम. डी चार्लस से संकोचपूर्वक पूछा, जो डॉक्टर के लहजे से आश्चर्यचकित होकर

कुछ भी नहीं कह पाए थे। इस पर, उन्हें दूसरा मौका दिए बिना, कॉटार्ड ने अधिकारपूर्वक दोहराया: "मैंने आपको बैठने के लिए कहा था।"

कुछ देर बाद सभा समाप्त हो गई, और फिर एम. डी चार्लस ने मोरेल से कहा: "इस पूरे मामले से, जो आपकी अपेक्षा से कहीं अधिक सुखद रूप से समाप्त हुआ है, मैं यह निष्कर्ष निकालता हूँ कि आप अपना ख्याल रखने में असमर्थ हैं और आपकी सैन्य सेवा समाप्त होने पर, मुझे आपको स्वयं आपके पिता के पास वापस ले जाना होगा, ठीक उसी तरह जैसे ईश्वर ने युवा टोबियास के पास भेजे गए महादूत राफेल को ले गया था।" और बैरन ने शान से मुस्कुराते हुए एक ऐसी खुशी का इजहार किया, जिसे मोरेल, जिसे इस तरह घर ले जाए जाने की संभावना से कोई आनंद नहीं मिला, साझा करता हुआ प्रतीत नहीं हुआ। स्वयं की तुलना महादूत से और मोरेल की तुलना टोबिट के पुत्र से करने के उत्साह में, एम. डी चार्लस अपने भाषण के उद्देश्य को भूल गए, जो कि केवल यह पता लगाना था कि क्या मोरेल, जैसा कि उन्हें उम्मीद थी, उनके साथ पेरिस जाने के लिए सहमत होंगे। अपने प्रेम या आत्म-प्रेम में मदहोश बैरन ने वायलिन वादक के चेहरे पर आई उस अजीब सी मुस्कान को न तो देखा और न ही देखने का नाटक किया। उसे कैफे में अकेला छोड़कर उसने मुझसे गर्व भरी मुस्कान के साथ कहा: "क्या तुमने ध्यान दिया कि जब मैंने उसकी तुलना टोबिट के पुत्र से की, तो वह खुशी से झूम उठा? ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वह अत्यंत बुद्धिमान था और उसने तुरंत समझ लिया कि जिस पिता की संगति में उसे अब से रहना है, वह उसका सांसारिक पिता नहीं है, जो मूंछों वाला कोई भयानक नौकर ही होगा, बल्कि उसका आध्यात्मिक पिता है, अर्थात् मैं स्वयं। उसके लिए यह कितनी बड़ी जीत थी! उसने कितना गर्व से अपना सिर उठाया! मुझे समझकर उसे कितना आनंद हुआ। मुझे यकीन है कि वह अब प्रतिदिन यही दोहराएगा: 'हे ईश्वर, जिसने अपने सेवक टोबियास को लंबी यात्रा पर मार्गदर्शन के लिए धन्य महादूत राफेल को भेजा, हमें, अपने सेवकों को, यह वरदान दो कि हम सदा उसकी रक्षा में रहें और उसकी सहायता से परिपूर्ण हों।'" बैरन ने दृढ़ता से आश्वस्त होकर कहा, “मुझे तो उन्हें यह बताने की भी आवश्यकता नहीं थी कि मैं स्वर्गदूत हूँ; उन्होंने स्वयं यह अनुभव किया और खुशी से अवाक रह गए!” और एम. डी चार्लस (जिन्हें उनकी खुशी ने बोलने से नहीं रोका), राहगीरों

की परवाह किए बिना, जो उन्हें पागल समझकर घूर रहे थे, अकेले ही ज़ोर से चिल्लाए और अपने हाथ हवा में उठाए: “हल्लेलुया!”

इस सुलह से एम. डी चार्लस की पीड़ाओं में कुछ समय के लिए ही राहत मिली; अक्सर, जब मोरेल प्रशिक्षण के लिए इतनी दूर चला जाता था कि एम. डी चार्लस उससे मिलने या मुझे उससे बात करने के लिए भेजने में असमर्थ होता था, तो वह बैरन को हताश और स्नेहपूर्ण पत्र लिखता था, जिनमें वह उन्हें आश्वस्त करता था कि वह एक भयानक घटना के कारण अपनी जान देने जा रहा है, क्योंकि उसे पच्चीस हजार फ्रैंक की आवश्यकता है। उसने यह नहीं बताया कि वह भयानक घटना क्या थी, और यदि वह बताता भी, तो निस्संदेह वह एक मनगढ़ंत कहानी होती। जहाँ तक पैसों की बात थी, एम. डी चार्लस उसे खुशी-खुशी पैसे भेज देते, यदि उन्हें यह न लगता कि इससे चार्ली उनसे स्वतंत्र हो जाएगा और किसी और से कृपा प्राप्त करने के लिए स्वतंत्र हो जाएगा। इसलिए उन्होंने इनकार कर दिया, और उनके टेलीग्रामों में उनकी आवाज का वही रूखा, तीखा लहजा था। जब उसे उनके प्रभाव का पूरा यकीन हो गया, तो उसने आशा की कि मोरेल उसे कभी माफ नहीं करेगा, क्योंकि वह भली-भांति जानता था कि इसके विपरीत ही होगा, फिर भी वह इस अपरिहार्य बंधन से उत्पन्न होने वाली तमाम परेशानियों के बारे में सोचने से खुद को रोक नहीं पा रहा था। लेकिन, अगर मोरेल की ओर से कोई जवाब नहीं आता, तो वह पूरी रात जागता रहता, एक पल भी चैन नहीं पाता, क्योंकि हम अनगिनत चीजों से अनभिज्ञ रहते हैं, और अनगिनत आंतरिक और गहन सत्य हमसे छिपे रहते हैं। और इसलिए वह उस भयावह घटना के बारे में हर संभव अनुमान लगाता, जिसके कारण मोरेल को पच्चीस हजार फ्रैंक की आवश्यकता पड़ी, उसे हर संभव रूप देता, और उसे एक के बाद एक कई नाम देता। मेरा मानना है कि ऐसे क्षणों में एम. डी चार्लस (इस तथ्य के बावजूद कि उनका अभिमान, जो अब कम हो रहा था, निम्न वर्गों के तौर-तरीकों के प्रति उनकी बढ़ती जिज्ञासा से कहीं अधिक बढ़ गया था, यदि पूरी तरह से उससे आगे नहीं निकल पाया था) को उन फैशनेबल समारोहों की मनमोहक, रंगीन हलचल की एक निश्चित लालसा के साथ याद आई होगी, जहाँ सबसे आकर्षक पुरुष और महिलाएं केवल निस्वार्थ आनंद के लिए उनकी संगति चाहते थे, जहाँ कोई भी उन्हें 'नीचा दिखाने' या 'भयानक मामला' गढ़ने का सपना भी नहीं देखता था, जिसके आधार पर कोई व्यक्ति पच्चीस हजार

फ्रैंक न मिलने पर अपनी जान देने को तैयार हो जाए। मेरा मानना है कि उस समय, और शायद इसलिए कि वह दिल से मुझसे कहीं अधिक 'कॉम्ब्रे' ही रहे थे, और उन्होंने अपने जर्मन गौरव पर सामंती गरिमा का आवरण चढ़ा लिया था, उन्हें अवश्य ही यह महसूस हुआ होगा कि कोई भी बिना किसी दंड के किसी नौकर के प्रति अपना दिल नहीं हार सकता, कि निचले तबके के लोग समाज के समान नहीं होते, और संक्षेप में कहें तो, निचले तबके के लोगों के साथ उनका वैसा तालमेल नहीं था जैसा कि हमेशा से रहा है।

छोटी रेलगाड़ी का अगला स्टेशन, मेनविले, मुझे एक घटना की याद दिलाता है जिसमें मोरेल और एम. डी चार्लस शामिल थे। इससे पहले कि मैं इसके बारे में बात करूं, मुझे यह उल्लेख करना चाहिए कि मेनविले में ट्रेन का रुकना (जब कोई एक फैशनेबल अजनबी को बालबेक ले जा रहा था, जो परेशानी से बचने के लिए ला रास्पेलियर में नहीं रुकना चाहता था) उस दृश्य का कारण बना जो मैं अभी वर्णन करने वाला हूं उससे कहीं कम कष्टदायक था। अजनबी, अपने हल्के सामान के साथ ट्रेन में होने के कारण, आमतौर पर पाता था कि ग्रैंड होटल बहुत दूर है, लेकिन चूंकि बालबेक पहुंचने तक असुविधाजनक विला वाले छोटे स्नानघरों के अलावा कुछ भी नहीं था, इसलिए आरामदायक परिवेश की प्राथमिकता के कारण उसने लंबी यात्रा के लिए खुद को तैयार कर लिया था। जब ट्रेन मेनविले में रुकी, तो उसने महल को अपने सामने देखा, और उसे जरा भी संदेह नहीं हुआ कि यह एक बदनाम जगह है। "लेकिन हमें और आगे नहीं जाना चाहिए," वह हमेशा मैडम से कहता था। कॉटार्ड, एक ऐसी महिला जो अपने व्यावहारिक निर्णय और सटीक सलाह के लिए जानी जाती थीं। "यही तो मुझे चाहिए। बालबेक जाने का क्या फायदा, जहाँ मुझे इससे बेहतर कुछ नहीं मिलेगा। एक नज़र में ही पता चल जाता है कि यहाँ सारी आधुनिक सुविधाएँ हैं; मैं श्रीमती वर्दुरिन को वहाँ आमंत्रित कर सकती हूँ, क्योंकि मैं उनके आतिथ्य सत्कार के बदले उनके सम्मान में कुछ छोटी-मोटी पार्टियाँ देने का इरादा रखती हूँ। अगर मैं बालबेक में रुकती हूँ तो उन्हें इतनी दूर नहीं आना पड़ेगा। मुझे लगता है कि यह जगह उनके और आपकी पत्नी, मेरे प्रिय प्रोफेसर, के लिए बिल्कुल सही है। यहाँ बैठने के कमरे तो होंगे ही, हम महिलाओं को वहाँ बैठा सकते हैं। सच कहूँ तो, मुझे समझ नहीं आता कि श्रीमती वर्दुरिन ने ला रास्पेलियर में रहने के बजाय यहाँ आकर क्यों नहीं बस गईं। यह ला रास्पेलियर जैसे पुराने घर से कहीं ज़्यादा सेहतमंद है, जो

कि सीलन भरा और गंदा ज़रूर होगा, वहाँ गर्म पानी की व्यवस्था नहीं है, वहाँ कभी नहाने की सुविधा नहीं मिलती। अब, मेनविले मुझे कहीं ज़्यादा आकर्षक लगता है। श्रीमती वर्दुरिन यहाँ एक आदर्श मेज़बान होतीं। हालाँकि, पसंद अलग-अलग होती है; फिर भी, मेरा इरादा यहीं रहने का है। श्रीमती कॉटार्ड, क्या आप मेरे साथ चलेंगी? हमें जल्दी करनी होगी, क्योंकि ट्रेन एक मिनट में फिर से चलने वाली है। आप मुझे उस घर में घुमा सकती हैं, जिसे आप अच्छी तरह जानती होंगी, क्योंकि आप अक्सर वहाँ जाती होंगी। वह आपके लिए एकदम सही जगह है।" बाकी लोगों को उस बेचारे अजनबी को चुप कराने में बड़ी मुश्किल हो रही थी, और उससे भी ज़्यादा उसे ट्रेन से उतरने से रोकने में, क्योंकि वह अपनी ज़िद पर अड़ा हुआ था, अपना सामान समेटे हुए था और तब तक एक शब्द भी सुनने को तैयार नहीं था जब तक कि उन्हें यह यकीन न दिला दिया जाए कि न तो श्रीमती वर्दुरिन और न ही श्रीमती कॉटार्ड कभी उससे मिलने वहाँ आएंगी। "खैर, मैं वहीं अपना ठिकाना बनाने जा रहा हूँ। अगर श्रीमती वर्दुरिन मुझसे मिलना चाहें, तो उन्हें बस लिखना है।"

मोरेल से संबंधित घटना कुछ अधिक विशिष्ट थी। अन्य घटनाएँ भी थीं, लेकिन फिलहाल, जब ट्रेन रुकती है और कुली 'डोंसिएरेस', 'ग्रैटवास्ट', 'मेनविले' आदि पुकारता है, तो मैं उस विशेष स्मृति को नोट करने तक ही सीमित रहता हूँ जो उस जल-स्थल या छावनी कस्बे से जुड़ी है। मैं पहले ही मेनविले (मीडिया विला) और उस विलासितापूर्ण महिला आश्रम के कारण उसे प्राप्त महत्व का उल्लेख कर चुका हूँ, जिसे हाल ही में वहाँ बनाया गया था, और जिसके कारण परिवारों की माताओं ने व्यर्थ विरोध किया था। लेकिन इससे पहले कि मैं यह बताऊँ कि मेनविले मेरी स्मृति में मोरेल और एम. डी चार्लस से क्यों जुड़ा है, मुझे उस असंतुलन पर ध्यान देना होगा (जिसकी मैं बाद में और अधिक विस्तार से जाँच करूँगा) जो मोरेल द्वारा कुछ घंटे खाली रखने को दिए गए महत्व और उन कामों की तुच्छता के बीच था, जिन्हें वह उन घंटों के लिए समर्पित करने का दिखावा करता था। यही असंतुलन एम. डी चार्लस को दिए गए उसके अन्य प्रकार के स्पष्टीकरणों में भी बार-बार दिखाई देता है। वह व्यक्ति, जो बैरन के लाभ के लिए एक निस्वार्थ कलाकार की भूमिका निभाता था (और अपने संरक्षक की उदारता को देखते हुए बिना किसी जोखिम के ऐसा कर सकता था), जब वह शाम को अकेले समय बिताना चाहता था, ताकि वह कोई पाठ पढ़ा सके, आदि, तो वह अपने बहाने में लालच भरी

मुस्कान के साथ ये शब्द जोड़ना कभी नहीं भूलता था: "इसके अलावा, इससे चालीस फ्रैंक भी मिल सकते हैं। ये तो कुछ भी नहीं है। आप मुझे जाने देंगे, क्योंकि क्या आपको नहीं लगता कि इसमें मेरा ही फायदा है? धिक्कार है, मेरे पास आपकी तरह कोई नियमित आय नहीं है, मुझे दुनिया में अपना रास्ता खुद बनाना है, ये थोड़ा पैसा कमाने का एक मौका है।" मोरेल, अपने पाठ को पढ़ाने की अपनी उत्सुकता जताते हुए, पूरी तरह से बेईमान नहीं था। एक बात तो ये है कि ये कहना गलत है कि पैसे का कोई रंग नहीं होता। उन्हें कमाने का एक नया तरीका इस्तेमाल से फीके पड़ चुके सिक्कों को नई चमक देता है। अगर वह सचमुच वायलिन सिखाने के लिए बाहर गया होता, तो शायद घर से निकलते समय किसी छात्रा द्वारा दिए गए दो-चार लुई का उस पर अलग ही असर होता, बजाय इसके कि वही दो-चार लुई एम. डी. चार्लस के हाथों से मिलते। इसके अलावा, दो-चार लुई के लिए तो सबसे अमीर आदमी भी मीलों का सफर तय कर लेता, जो किसी नौकर के बेटे के लिए मीलों के बराबर होता है। लेकिन अक्सर एम. डी. चार्लस को वायलिन सिखाने की वास्तविकता पर संदेह होता था, और यह संदेह इस तथ्य से और बढ़ जाता था कि अक्सर संगीतकार दूसरे तरह के बहाने बनाता था, जो भौतिक दृष्टि से पूरी तरह निस्वार्थ और साथ ही बेतुके भी होते थे। इस तरह मोरेल ने उसके जीवन की एक छवि प्रस्तुत की, लेकिन जानबूझकर और अनजाने में भी, जिसे उसने इतना धुंधला कर दिया कि उसके केवल कुछ हिस्से ही समझ में आ सके। पूरे एक महीने तक उसने खुद को एम. डी. चार्लस की सेवा में इस शर्त पर रखा कि वह अपनी शामें खाली रख सके, क्योंकि वह बीजगणित के पाठ्यक्रम में नियमित रूप से उपस्थित होना चाहता था। क्लास के बाद एम. डी चार्लस से मिलने आओगे? ओह, यह तो नामुमकिन था, क्लासें चलती रहती थीं, कभी-कभी तो बहुत देर तक। "दो बजे के बाद भी?" बैरन ने पूछा। "कभी-कभी।" "लेकिन तुम बीजगणित तो किताब से भी उतनी ही आसानी से सीख सकते हो।" "ज़्यादा आसानी से, क्योंकि मुझे लेक्चर से कुछ खास समझ नहीं आता।" "बहुत खूब! वैसे भी, बीजगणित तुम्हारे किसी काम का नहीं होगा।" "मुझे पसंद है। इससे मेरा मन शांत होता है।" "यह बीजगणित तो नहीं हो सकता जिसकी वजह से वह रात में बाहर जाने की इजाज़त मांग रहा है," एम. डी चार्लस ने मन ही मन सोचा। "क्या वह पुलिस में काम करता है?" खैर, चाहे कितनी भी आपत्ति क्यों न हो, मोरेल शाम के कुछ घंटे बीजगणित या वायलिन के लिए ज़रूर रखता था। एक बार यह

घटना न तो किसी के लिए हुई, न ही किसी के लिए, बल्कि प्रिंस डी गुएरमांटेस के लिए हुई, जो कुछ दिनों के लिए तट के उस हिस्से में लक्ज़मबर्ग की राजकुमारी से मिलने आए थे। उन्होंने संगीतकार को बिना जाने-समझे, या उसके द्वारा पहचाने जाने के डर से, अपने साथ ले लिया और उसे मेनविले के वेश्यालय में रात बिताने के लिए पचास फ्रैंक की पेशकश की। मोरेल के लिए यह दोहरी खुशी थी - एक तो एम. डी गुएरमांटेस से प्राप्त लाभ और दूसरा उन महिलाओं से घिरे होने का आनंद जिनकी धूप से झुलसी हुई छातियाँ नग्न आँखों से दिखाई देंगी। किसी न किसी तरह एम. डी चार्लस को घटना और तय स्थान की भनक लग गई, लेकिन उन्हें उस व्यक्ति का नाम पता नहीं चला जिसने उन्हें बहकाया था। ईर्ष्या से पागल होकर और यह जानने की उम्मीद में कि वह कौन है, उसने जुपियन को तार भेजा, जो दो दिन बाद आया। अगले सप्ताह की शुरुआत में जब मोरेल ने घोषणा की कि वह फिर से अनुपस्थित रहेगा, तो बैरन ने जुपियन से पूछा कि क्या वह प्रतिष्ठान की देखभाल करने वाली महिला को रिश्वत देने का जिम्मा लेगा और उससे वादा करवाएगा कि वह बैरन और उसे किसी ऐसी जगह छिपा देगी जहाँ वे सब कुछ देख सकें। "ठीक है। मैं इसका ध्यान रखूँगा, प्रिय," जुपियन ने बैरन को आश्वासन दिया। यह कल्पना करना कठिन है कि इस चिंता ने एम. डी चार्लस के मन को किस हद तक विचलित किया होगा और क्षण भर के लिए उसे कितना समृद्ध किया होगा। प्रेम इस तरह मन में नियमित रूप से ज्वालामुखी जैसी उथल-पुथल का कारण बनता है। कुछ दिन पहले तक उसका मैदान इतना समतल था कि दूर-दूर तक उस समतल सतह से ऊपर कुछ भी उभरता हुआ दिखाई नहीं देता था, लेकिन अचानक वहाँ पत्थर की तरह कठोर पर्वतों की एक श्रृंखला प्रकट हो उठी, लेकिन इतनी बारीकी से तराशी हुई कि मानो किसी मूर्तिकार ने संगमरमर को खदानों से लादकर लाने के बजाय वहीं पर तराशा हो, जिसमें क्रोध, ईर्ष्या, जिज्ञासा, द्वेष, घृणा, पीड़ा, अभिमान, आतंक और प्रेम जैसे भाव विशाल समूहों में उमड़ रहे थे।

इसी बीच, वह शाम आ गई जब मोरेल को अनुपस्थित रहना था। जुपियन का मिशन सफल सिद्ध हो चुका था। उसे और बैरन को लगभग ग्यारह बजे वहाँ पहुँचना था और उन्हें एक गुप्त स्थान पर रखा जाना था। जब वे उस भव्य वेश्यालय से तीन गलियाँ दूर थे (जहाँ आस-पास के सभी फैशनेबल रिसॉर्ट्स से लोग आते थे), तब एम. डी चार्लस दबे पांव चलने लगा, अपनी

आवाज़ को छुपाते हुए, जुपियन से विनती करने लगा कि वह इतनी ज़ोर से न बोले, कहीं मोरेल उन्हें अंदर से सुन न ले। जबकि, चुपके से प्रवेश कक्ष में घुसते ही, एम. डी चार्लस, जो इस तरह के स्थानों का आदी नहीं था, ने अपने भय और आश्चर्य के साथ खुद को एक ऐसी भीड़ में पाया जो स्टॉक एक्सचेंज या नीलामी कक्ष से भी अधिक शोरगुल वाली थी। उसके चारों ओर जमा हुई लड़कियों से अपनी आवाज़ धीमी करने की उसकी विनती व्यर्थ थी; दरअसल, उनकी आवाजें एक बूढ़ी 'सहायक मैट्रन' द्वारा की जा रही घोषणाओं और पुरस्कारों की बौछार में डूब गईं, जिसने गहरे भूरे रंग की विग पहन रखी थी। उसका चेहरा किसी स्पेनिश वकील या पादरी की गंभीरता से भरा हुआ था, जो हर मिनट गरजती हुई आवाज में चिल्लाती रहती थी, और एक पुलिसकर्मी की तरह यातायात को नियंत्रित करते हुए बारी-बारी से दरवाजे खोलने और बंद करने का आदेश देती रहती थी: "इस सज्जन को अट्ठाईसवें कमरे में ले जाइए, स्पेनिश कमरा।" "और किसी को अंदर मत आने दीजिए।" "दरवाजा फिर से खोलिए, ये सज्जन मैडमोजेल नोएमी से मिलना चाहते हैं। वह फारसी बैठक में उनका इंतजार कर रही हैं।" एम. डी चार्लस उतना ही भयभीत था जितना कोई देहाती व्यक्ति जिसे सड़कों को पार करना पड़ता है; वहीं, कोर्लेविले के पुराने चर्च के बरामदे के स्तंभों पर चित्रित विषय की तुलना में कहीं कम अपवित्र उपमा लें तो, युवा दासियों की आवाज़ें धीमी स्वर में, लगातार, सहायक मैट्रन के आदेशों को दोहरा रही थीं, ठीक वैसे ही जैसे ग्रामीण इलाकों के किसी गिरजाघर की गूंजती छत के नीचे स्कूली बच्चे धार्मिक शिक्षाओं का पाठ करते हैं। एम. डी चार्लस, जो सड़क पर इस डर से कांप रहे थे कि कहीं उनकी आवाज़ सुनाई न दे, क्योंकि उन्हें पूरा यकीन था कि मोरेल खिड़की पर है, शायद उन विशाल सीढ़ियों के शोर में उतने भयभीत नहीं थे, जिनसे कमरों के बाहर से कुछ भी दिखाई नहीं देता था। अंततः अपनी इस कठिन यात्रा के अंत तक पहुँचकर, उन्होंने मैडम नोएमी को पाया, जिन्हें जुपियन के साथ उन्हें छुपाना था, लेकिन उन्होंने पहले उन्हें एक भव्य रूप से सुसज्जित फ़ारसी बैठक कक्ष में बंद कर दिया, जहाँ से उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं देता था। उसने उसे बताया कि मोरेल ने संतरे का रस माँगा था, और जैसे ही उसे परोसा जाएगा, दोनों मेहमानों को एक पारदर्शी पैनल वाले कमरे में ले जाया जाएगा। इसी बीच, क्योंकि कोई उसे बुला रहा था, उसने एक परी की तरह उनसे वादा किया कि समय बिताने में उनकी मदद करने के लिए वह उनके पास

एक 'चतुर छोटी महिला' भेजेगी। क्योंकि उसे खुद कहीं जाना था। चतुर छोटी महिला ने एक फ़ारसी लबादा पहना हुआ था, जिसे वह उतारने की पेशकश कर रही थी। एम. डी चार्लस ने उससे ऐसा न करने की विनती की, और उसने 40 फ्रैंक प्रति बोतल की कीमत वाली शैंपेन मंगवाई। दरअसल, मोरेल इस दौरान प्रिंस डी गुएरमांटेस के साथ था; उसने दिखावे के लिए गलती से गलत कमरे में जाने का नाटक किया था, और एक ऐसे कमरे में प्रवेश कर गया था जिसमें दो महिलाएं थीं, जो दोनों सज्जनों को परेशान किए बिना जल्दी से चली गई थीं। एम. डी चार्लस को इस बारे में कुछ भी पता नहीं था, लेकिन वह गुस्से से बेचैन था, दरवाजे खोलने की कोशिश कर रहा था, और उसने मैडम को बुलवाया। नोएमी ने जब उस चतुर महिला को एम. डी चार्लस को मोरेल के बारे में कुछ ऐसी जानकारी देते हुए सुना जो उसने खुद जुपियन को बताई थी उससे मेल नहीं खाती थी, तो उसने उसे तुरंत वहाँ से निकाल दिया और उसकी जगह एक 'प्यारी महिला' को भेज दिया, जिसने केवल इतना ही बताया कि घर कितना प्रतिष्ठित है और अपनी पूर्ववर्ती की तरह ही शैम्पेन मंगाई। बैरन क्रोध से आग बबूला हो गया और उसने फिर से मैडम नोएमी को बुलवाया, जिसने उनसे कहा: "हाँ, इसमें कुछ ज़्यादा ही समय लग रहा है, महिलाएँ दिखावटी बातें कर रही हैं, ऐसा नहीं लगता कि वह कुछ करना चाहता है।" अंततः, बैरन के वादों और धमकियों के आगे झुकते हुए, मैडम नोएमी चिड़चिड़ेपन के साथ चली गई और उन्हें आश्वासन दिया कि उन्हें पाँच मिनट से ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ेगा। पांच मिनट एक घंटे में बदल गए, जिसके बाद नोएमी आई और गुस्से से बेकाबू होकर एम. डी चार्लस के सामने दबे पांव खड़ी हो गई, और जुपियन दुख से कराहते हुए एक खुले दरवाजे के पास जाकर बोला: "यहाँ से सब कुछ बहुत अच्छा दिखेगा। हालांकि, अभी यह उतना दिलचस्प नहीं है, वह तीन महिलाओं के साथ हैं, वह उन्हें अपनी रेजिमेंट के बारे में बता रहे हैं।" आखिरकार बैरन दरवाजे के खुले हिस्से से और उसके पार लगे दर्पणों में अपना प्रतिबिंब देख पाए। लेकिन एक भयानक भय ने उन्हें दीवार से टिकने पर मजबूर कर दिया। उसके सामने सचमुच मोरेल ही था, लेकिन मानो मूर्तिपूजा के रहस्य और जादू-टोने अभी भी कायम हों, बल्कि मोरेल की परछाईं थी, मानो उसे संरक्षित किया गया हो, मोरेल लाजरस की तरह पुनर्जीवित नहीं हुआ था, बल्कि मोरेल का एक प्रेत, मोरेल का एक भूत, मोरेल उस कमरे में 'चल रहा' या 'बुलाया गया' था (जिसकी दीवारों और पलंगों पर हर जगह

जादू-टोने के प्रतीक बने हुए थे), जो उससे कुछ ही फीट दूर, एक तरफ से दिखाई दे रहा था। मोरेल मानो मर चुका था, उसका सारा रंग उड़ गया था; इन महिलाओं के बीच, जिनके साथ उससे आनंद मनाने की उम्मीद की जा सकती थी, वह पीला पड़ा रहा, बनावटी गतिहीनता में स्थिर; उसके सामने रखे शैंपेन के गिलास को पीने के लिए, उसकी शक्तिहीन बांह व्यर्थ ही आगे बढ़ने की कोशिश करती रही और फिर वापस गिर जाती थी। ऐसा प्रतीत होता था मानो उस धर्म की अस्पष्ट स्थिति हो जो अनैतिकता की बात करता है लेकिन उससे कुछ ऐसा तात्पर्य निकालता है जिसमें विनाश भी शामिल है। महिलाएं उनसे सवालों की बौछार कर रही थीं। "देखिए," मैडम नोएमी ने बैरन से फुसफुसाते हुए कहा, "वे उनसे रेजिमेंट में उनके जीवन के बारे में बात कर रही हैं, यह मजेदार है, है ना?" - फिर वह हंस पड़ीं - "आपको खुशी है कि आप आ गए? वह शांत हैं, है ना?" उन्होंने आगे कहा, मानो वह किसी मरते हुए व्यक्ति के बारे में बात कर रही हों। महिलाओं के सवाल लगातार आते रहे, लेकिन मोरेल, जो निर्जीव थे, उनमें जवाब देने की शक्ति नहीं थी। यहां तक कि फुसफुसाकर एक शब्द भी कहना उनके लिए चमत्कारिक साबित नहीं हुआ। एम. डी चार्लस को यह समझने में बस एक पल का ही संकोच हुआ कि वास्तव में क्या हुआ था, अर्थात्, चाहे जुपियन की ओर से व्यवस्था करने के लिए फोन करते समय हुई नासमझी के कारण हो, या किसी के भी दिल में छिपे किसी रहस्य की अपार शक्ति के कारण, जिसका अर्थ है कि कोई भी रहस्य कभी छिपा नहीं रहता, या इन महिलाओं की स्वाभाविक असावधानी के कारण, या पुलिस के डर के कारण, मोरेल को बताया गया था कि दो सज्जनों ने उस पर जासूसी करने की अनुमति पाने के लिए एक बड़ी रकम का भुगतान किया था, अदृश्य हाथों ने राजकुमार डी गुएरमांटेस को तीन महिलाओं में रूपांतरित करके गायब कर दिया था, और कांपते हुए, भय से लकवाग्रस्त, बेचारे मोरेल को ऐसी स्थिति में रख दिया था कि यदि एम. डी चार्लस को उसका धुंधला सा भी दृश्य दिखाई दे रहा था, तो वह, भयभीत, अवाक, अपने गिलास को गिरने के डर से उठाने की हिम्मत न करते हुए, बैरन का पूर्ण दृश्य देख पा रहा था।

इसके अलावा, प्रिंस डी गुएरमांटेस के लिए कहानी का अंत सुखद नहीं था। जब उन्हें एम. डी चार्लस से छिपाकर दूर भेज दिया गया, तो अपनी निराशा से क्रोधित होकर, बिना यह जाने कि इसके लिए कौन जिम्मेदार है, उन्होंने मोरेल से, बिना उन्हें बताए कि वह कौन है, अगली रात

उस छोटे से विला में मिलने का समय तय करने की विनती की, जिसे उन्होंने किराए पर लिया था। हालांकि उनका वहां रहने का समय कम था, फिर भी उन्होंने, श्रीमती डी विलेपारिसिस की तरह ही, उस विला को कई पारिवारिक स्मृति चिन्हों से सजाया था, ताकि उन्हें घर जैसा महसूस हो। और इस तरह, अगले दिन, मोरेल, एम. डी चार्लस द्वारा पीछा किए जाने और जासूसी किए जाने के डर से कांपते हुए, हर पल अपना सिर घुमाते हुए, अंततः किसी भी संदिग्ध राहगीर को न देख पाने के कारण विला में प्रवेश कर गए। एक नौकर उसे बैठक कक्ष में ले गया और कहा कि वह 'महाशय' को सूचित कर देगा (उसके स्वामी ने उसे संदेह पैदा होने के डर से 'राजकुमार' शब्द का उच्चारण न करने की चेतावनी दी थी)। लेकिन जब मोरेल ने खुद को अकेला पाया और यह देखने के लिए दर्पण के पास गया कि उसकी लटें बिखरी हुई तो नहीं हैं, तो उसे लगा जैसे वह किसी मतिभ्रम का शिकार हो गया हो। मेंटलपीस पर रखी तस्वीरें (जिन्हें वायलिन वादक ने पहचान लिया था, क्योंकि उसने उन्हें एम. डी चार्लस के कमरे में देखा था) जिनमें प्रिंसेस डी गुएरमांटेस, डचेस डी लक्ज़मबर्ग और मैडम डी विलेपारिसिस थीं, उन्हें देखकर वह पहले तो भयभीत हो गया। उसी क्षण उसकी नज़र एम. डी चार्लस की तस्वीर पर पड़ी, जो बाकी तस्वीरों से थोड़ी पीछे रखी थी। बैरन मोरेल को एक अजीब, स्थिर निगाहों से घूर रहा था। आतंक से पागल मोरेल, अपने पहले सदमे से उबरते हुए, इस बात को लेकर जरा भी संशय में नहीं था कि यह एम. डी चार्लस द्वारा उसकी वफादारी की परीक्षा लेने के लिए बिछाया गया एक जाल था। वह एक ही छलांग में विला की सीढ़ियों से नीचे उतरा और जितनी तेज़ी से उसके पैर उसे ले जा सकते थे, सड़क पर दौड़ पड़ा। जब राजकुमार (यह सोचकर कि उसने एक परिचित को काफी देर तक इंतजार कराया है, और यह सोचे बिना नहीं कि क्या यह उचित था और कहीं वह व्यक्ति खतरनाक तो नहीं था) कमरे में दाखिल हुआ, तो उसे वहाँ कोई नहीं मिला। चोरी के डर से, रिवॉल्वरों से लैस राजकुमार और उसका नौकर, पूरे घर (जो बड़ा नहीं था), बगीचे के हर कोने, तहखाने तक, व्यर्थ ही तलाशी लेते रहे; जिस साथी के होने का उसे पूरा यकीन था, वह पूरी तरह गायब हो चुका था। अगले सप्ताह के दौरान उसकी उससे कई बार मुलाकात हुई। लेकिन हर बार मोरेल, वह खतरनाक व्यक्ति, दुम दबाकर भाग जाता था, मानो राजकुमार उससे भी ज्यादा खतरनाक हो। अपने संदेहों पर अडिग रहते हुए, मोरेल कभी उनसे उबर नहीं पाया, और

पेरिस में भी राजकुमार डी गुएरमांटेस को देखते ही वह भागने पर मजबूर हो जाता था। इस प्रकार एम. डी चार्लस उस विश्वासघात से बच गया जिसने उसे घोर निराशा से भर दिया था, और उसने बिना कल्पना किए ही बदला ले लिया, और यह भी नहीं सोचा था कि ऐसा कैसे होगा।

लेकिन इन सब बातों के बारे में मुझे जो कुछ बताया गया है, उसकी यादें अब दूसरी यादों में तब्दील हो रही हैं, क्योंकि बी.ए.जी. अपनी धीमी गति को फिर से शुरू करते हुए, निम्नलिखित स्टेशनों पर यात्रियों को उतारना या चढ़ाना जारी रखती है।

ग्रैट्टेवास्ट में, जहाँ उनकी बहन रहती थीं और जिनके साथ उन्होंने दोपहर बिताई थी, कभी-कभी एम. पियरे डी वर्जस, कॉम्टे डी क्रेसी (जिन्हें केवल कॉम्टे डी क्रेसी कहा जाता था) दिखाई देते थे। वे एक साधारण लेकिन उच्च कुलीन व्यक्ति थे, जिनसे मेरी जान-पहचान कैम्ब्रेमर परिवार के माध्यम से हुई थी, हालाँकि उनके साथ उनका कोई घनिष्ठ संबंध नहीं था। चूंकि उनका जीवन अत्यंत साधारण, लगभग दरिद्र सा हो गया था, मुझे लगता था कि सिगार और शराब उन्हें इतना आनंद देते थे कि मैंने अल्बर्टीन से न मिल पाने वाले दिनों में उन्हें बालबेक आमंत्रित करने की आदत बना ली थी। वे अत्यंत परिष्कृत, अद्भुत आत्म-अभिव्यक्ति क्षमता से संपन्न, बर्फ जैसे सफेद बालों वाले और आकर्षक नीली आँखों वाले व्यक्ति थे। वे आम तौर पर धीमी, मंद और कोमल आवाज़ में, एक ग्रामीण घर में जीवन के सुख-सुविधाओं के बारे में बात करते थे, जिनका उन्हें स्पष्ट रूप से अनुभव था, और साथ ही अपने वंश के बारे में भी। जब मैंने उनसे पूछा कि उनकी अंगूठी पर कौन सा चिन्ह खुदा हुआ है, तो उन्होंने विनम्रता से मुस्कुराते हुए कहा: "यह वर्जूइस की एक शाखा है।" और उन्होंने बड़े चाव से कहा, मानो कोई पुरानी शराब पी रहे हों: "हमारा प्रतीक वर्जूइस की एक शाखा है—प्रतीकात्मक, क्योंकि मेरा नाम वर्जस है—जो फिसलकर हरी पत्तियों में बदल गया है।" लेकिन मुझे लगता है कि अगर बालबेक में मैंने उन्हें वर्जूइस के अलावा कुछ और पीने को नहीं दिया होता, तो वे निराश हो जाते। उन्हें सबसे महंगी शराब पसंद थी, क्योंकि उन्हें उनके बिना रहना पड़ा था, क्योंकि उन्हें इस बात का गहरा ज्ञान था कि वे किन चीजों से वंचित रह रहे हैं, क्योंकि उनकी स्वाद परख अच्छी थी, और शायद इसलिए भी क्योंकि उन्हें बहुत प्यास लगती थी। इसलिए जब मैंने उन्हें बालबेक में भोजन के लिए आमंत्रित किया, तो उन्होंने बड़ी

कुशलता से भोजन का ऑर्डर दिया, लेकिन थोड़ा ज्यादा खा लिया और खूब शराब पी, जो शराब गर्म करने की जरूरत थी उसे गर्म करवाया और जो ठंडी करने की जरूरत थी उसे बर्फ पर रख दिया। खाने से पहले और बाद में वह पोर्ट वाइन या पुरानी ब्रांडी के लिए सही तारीख या संख्या बताता था, ठीक वैसे ही जैसे वह किसी मार्क्विस पद की स्थापना की तारीख बताता था, जो आम तौर पर ज्ञात नहीं थी, लेकिन जिससे वह उतना ही परिचित था।

ऐमे की नज़रों में मैं एक खास ग्राहक था, इसलिए उन्हें बहुत खुशी होती थी कि मैं उन्हें ये खास डिनर देता था। वे वेटरों को चिल्लाकर कहते थे: "जल्दी करो, नंबर 25 लगाओ"; वे 'लगाओ' नहीं कहते थे, बल्कि 'मुझे लगाओ' कहते थे, मानो मेज उन्हीं के लिए हो। और, चूंकि मुख्य वेटरों की भाषा उप-वेटरों, सहायकों, लड़कों आदि से बिल्कुल अलग होती है, इसलिए जब बिल मांगने का समय आता था, तो वे हमें खाना परोसने वाले वेटर से, हाथ के पिछले हिस्से से लगातार शांत करने का इशारा करते हुए कहते थे, मानो वे किसी ऐसे घोड़े को शांत करने की कोशिश कर रहे हों जो लगाम खींचने को तैयार हो: "बिल जोड़ते समय जल्दी मत करो", "धीरे-धीरे करो, बहुत धीरे-धीरे।" फिर, जब वेटर यह सलाह देकर जाने लगता था, तो ऐमे, इस डर से कि कहीं उनकी सलाह पूरी तरह से न मानी जाए, उसे वापस बुलाते थे: "लो, मैं बिल बना देता हूँ।" और जैसा कि मैंने उनसे कहा कि परेशान न हों: "यह मेरा एक सिद्धांत है कि हमें कभी भी, जैसा कि कहावत है, ग्राहक को धोखा नहीं देना चाहिए।" जहाँ तक प्रबंधक की बात है, चूंकि मेरा अतिथि सादे कपड़े पहने रहता था, हमेशा एक ही कपड़े में, जो काफी फटे-पुराने थे (हालाँकि अगर किसी के पास साधन होते तो वह बाल्ज़ाक के शौकीनों की तरह महंगे कपड़े पहनने की कला में इतना माहिर नहीं होता), इसलिए उन्होंने मेरे सम्मान में दूर से ही सब कुछ देखते रहने का प्रयास किया और एक नज़र से मेज के एक पैर के नीचे कील लगाने का आदेश दिया जो स्थिर नहीं था। इसका मतलब यह नहीं था कि वह दूसरों की तरह मदद करने में सक्षम नहीं थे, हालांकि उन्होंने अपने शुरुआती संघर्षों को छिपाया था। फिर भी, किसी असाधारण परिस्थिति के कारण ही उन्होंने एक दिन खुद टर्की के चूजों को काटा। मैं बाहर था, लेकिन बाद में सुना कि उन्होंने बड़े ही सजगता से टर्की के चूजों को काटा। वे सर्विस टेबल से थोड़ी दूरी पर खड़े थे और उनके चारों ओर वेटरों का एक घेरा था, जो न सिर्फ कला सीखने की कोशिश कर रहे थे, बल्कि खुद को सबके सामने दिखाने की भी कोशिश कर

रहे थे। वे सब खुले मुँह से प्रशंसा करते हुए देख रहे थे। मैनेजर को तो वे बिल्कुल भी दिखाई नहीं दे रहे थे (क्योंकि वह अपने शिकारों के बगलों पर धीरे-धीरे नज़र गड़ाए हुए था और अपनी महान ज़िम्मेदारी के एहसास से भरी आँखों को उनसे हटा ही नहीं रहा था, मानो उनसे कोई शगुन जानने की उम्मीद की जा रही हो)। उस पुजारी को मेरी गैरमौजूदगी का भी एहसास नहीं था। जब उसे पता चला, तो वह परेशान हो गया: "क्या, तुमने मुझे खुद टर्की के चूजों को काटते हुए नहीं देखा?" मैंने जवाब दिया कि रोम, वेनिस, सिएना, प्राडो, ड्रेसडेन गैलरी, इंडीज़, फ़ेद्रे में साराह को देखने में अब तक असफल रहने के बाद, मैंने हार मान ली थी, और मैं अपनी सूची में टर्की के चूजों को तराशने की उनकी कला को भी जोड़ लूँगा। नाटकीय कला (फ़ेद्रे में साराह) से तुलना ही एकमात्र ऐसी थी जो उन्हें समझ में आई, क्योंकि मैंने उन्हें पहले ही बताया था कि भव्य प्रदर्शनों के दिनों में बड़े कोक्वेलिन एक नौसिखिया की भूमिकाएँ भी स्वीकार कर लेते थे, यहाँ तक कि एक ऐसे किरदार की भी जो केवल एक पंक्ति बोलता है या कुछ भी नहीं बोलता। "कोई बात नहीं, मुझे आपके लिए खेद है। मैं फिर कब नक्काशी करूँगा? इसके लिए किसी बड़ी घटना की आवश्यकता होगी, इसके लिए युद्ध की आवश्यकता होगी।" (वास्तव में, इसके लिए युद्धविराम की आवश्यकता थी।) उस दिन से, कैलेंडर बदल गया, समय की गणना इस प्रकार की जाने लगी: "वह उस दिन के बाद का दिन था जब मैंने खुद टर्की तराशी थीं।" "बिल्कुल सही, प्रबंधक द्वारा खुद टर्की तराशने के एक सप्ताह बाद।" और इस प्रकार, ईसा मसीह के जन्म या हिजरा की तरह, इस प्रोसेक्टोमी ने बाकी कैलेंडरों से अलग एक कैलेंडर के लिए प्रारंभिक बिंदु प्रदान किया, लेकिन न तो इसे इतने व्यापक रूप से अपनाया गया और न ही इतने लंबे समय तक इसका पालन किया गया। एम. डी क्रेसी के जीवन का दुख केवल उनके घोड़ों और लजीज भोजन के अभाव तक ही सीमित नहीं था, बल्कि इसलिए भी था कि वे केवल उन्हीं लोगों के साथ उठते-बैठते थे जो कैम्ब्रेमर और गुएरमांटे को एक ही समझते थे। जब उन्होंने देखा कि मैं जानता हूँ कि लेग्रैंडिन, जिसने अब खुद को लेग्रैंड डी मेसेग्लिस कहना शुरू कर दिया था, उस नाम का बिल्कुल भी हकदार नहीं था, क्योंकि वह शराब के नशे में चूर था, तो वे खुशी से झूम उठे। उनकी बहन ने मुझे समझते हुए कहा, "मेरा भाई आपसे बात करने का मौका मिलते ही सबसे ज्यादा खुश होता है।" उन्हें सचमुच ऐसा लगा जैसे अब वे जीवित हैं, क्योंकि उन्हें कोई ऐसा मिल गया था

जो कैम्ब्रेमर के महत्वहीन होने और गुएरमांटे की महानता को जानता था, कोई ऐसा जिसके लिए सामाजिक जगत अस्तित्व में था। तो, जब दुनिया भर के सारे पुस्तकालय जलकर राख हो गए और एक बिल्कुल अनपढ़ पीढ़ी का उदय हुआ, तब एक पुराने लैटिन विद्वान को होरेस की कोई पंक्ति सुनकर ही जीवन में फिर से आत्मविश्वास आ जाता था। और इसलिए, अगर वह मुझसे पूछे बिना कभी ट्रेन से नहीं उतरते थे: "हमारी अगली छोटी सी सभा कब है?", तो यह किसी परजीवी की भूख से ज़्यादा एक विद्वान के लालच से होता था, और इसलिए भी क्योंकि वह बालबेक में होने वाले हमारे सम्मेलनों को उन विषयों पर चर्चा करने का अवसर मानते थे जो उनके लिए अनमोल थे और जिनके बारे में वह कभी किसी और से बात नहीं कर पाते थे, और इस तरह यह उन भोजों के समान था जिनमें वह निश्चित तिथियों पर यूनियन क्लब, यानी पुस्तक प्रेमियों के समाज के विशेष रूप से स्वादिष्ट भोज के आसपास इकट्ठा होते थे। वह अपने परिवार के बारे में बेहद विनम्र थे, और मुझे यह बात एम. डी क्रेसी से नहीं पता चली कि उनका परिवार वास्तव में बहुत बड़ा था, और क्रेसी उपाधि धारण करने वाले अंग्रेजी परिवार की एक वास्तविक शाखा थी जो फ्रांस में आकर बसी थी। जब मुझे पता चला कि वह सचमुच एक क्रेसी हैं, तो मैंने उनसे कहा कि श्रीमती डी गुएरमांटेस की एक भतीजी ने चार्ल्स क्रेसी नाम के एक अमेरिकी से शादी की थी, और कहा कि मुझे नहीं लगता कि उनके बीच कोई संबंध है। "बिल्कुल नहीं," उन्होंने कहा। "मेरा परिवार इतना प्रतिष्ठित तो नहीं है, लेकिन बहुत से अमेरिकी जो खुद को मोंटगोमरी, बेरी, चांडोस या कैपेल कहते हैं, उनका पेम्ब्रोक, बकिंघम या एसेक्स के परिवारों या ड्यूक डी बेरी से कोई संबंध नहीं है।" मैंने कई बार सोचा कि मजाक में उनसे कहूँ कि मैं श्रीमती स्वान को जानती हूँ, जो एक समय में ओडेट डी क्रेसी के नाम से जानी जाती थीं; लेकिन भले ही ड्यूक डी एलेनकॉन ने एमिलिएन डी एलेनकॉन का नाम सुनकर कोई नाराजगी नहीं दिखाई, फिर भी मुझे नहीं लगता कि मैं श्री डी क्रेसी के साथ इतनी घनिष्ठ संबंध रखती थी कि मजाक को इतना आगे ले जा सकूँ। “वह एक बहुत ही प्रतिष्ठित परिवार से आते हैं,” एम. डी मॉन्टसुरवेंट ने एक दिन मुझसे कहा। “उनका पारिवारिक नाम सायलर है।” और उन्होंने आगे बताया कि इनकार्विल के ऊपर स्थित उनके पुराने महल की दीवार पर, जो अब लगभग निर्जन था और जिसकी मरम्मत कराने के लिए वे, हालांकि एक बड़े धनवान परिवार में पैदा हुए थे, अब इतने गरीब हो चुके थे, आज भी परिवार

का पुराना आदर्श वाक्य लिखा हुआ था। मुझे यह आदर्श वाक्य बहुत अच्छा लगा, चाहे इसे उस शिकारी जाति की अधीरता पर लागू किया जाए जो उस ऊँचे स्थान में छिपी हुई है जहाँ से उसके सदस्य अतीत में झपट्टा मारते रहे होंगे, या वर्तमान समय में, उस ऊँचे, भयावह एकांत स्थान में मृत्यु के आगमन की प्रतीक्षा करते हुए अपने पतन पर विचार करने पर। वास्तव में, इसी दोहरे अर्थ में यह आदर्श वाक्य सायलर नाम पर लागू होता है, इन शब्दों में: “Ne sçais l'heure.”

हरमेनोनविले में कभी-कभी एम. डी शेवरेग्नी आते थे, जिनका नाम, ब्रिचोट के अनुसार, मोनसिग्नोर डी कैब्रिएरेस की तरह, बकरियों के जमावड़े की जगह को दर्शाता था। वे कैम्ब्रेमर परिवार से संबंधित थे, और इसी कारण, और फैशन के बारे में गलत धारणा के चलते, कैम्ब्रेमर परिवार उन्हें अक्सर फेटेर्न आमंत्रित करता था, लेकिन केवल तभी जब उनके पास प्रभावित करने के लिए कोई अन्य मेहमान न हों। पूरे साल ब्यूसोलेल में रहने के कारण, एम. डी शेवरेग्नी उनसे कहीं अधिक देहाती थे। इसलिए जब वे कुछ हफ्तों के लिए पेरिस गए, तो उनके पास समय में 'सब कुछ देखने' के लिए एक पल भी बर्बाद करने का समय नहीं था; इतना कि कभी-कभी, बहुत सारे नाटकों को जल्दी-जल्दी देखने के कारण, जब उनसे पूछा जाता कि क्या उन्होंने कोई विशेष नाटक देखा है, तो वे खुद भी निश्चित नहीं होते थे। लेकिन यह अनिश्चितता दुर्लभ थी, क्योंकि पेरिस के बारे में उन्हें वह विस्तृत ज्ञान था जो केवल उन लोगों में पाया जाता है जो शायद ही कभी वहां जाते हैं। उन्होंने मुझे सलाह दी कि मुझे कौन-सी 'नई चीज़ें' देखनी चाहिए ("यह आपके लिए फ़ायदेमंद होगा"), हालाँकि वे उन्हें केवल एक सुखद शाम बिताने के नज़रिए से देखते थे, और कलात्मक दृष्टिकोण को पूरी तरह से अनदेखा करते हुए, इस बात का ज़रा भी आख़िरकार अंदाज़ा नहीं लगाते थे कि कला के इतिहास में वे कभी-कभी 'नई' चीज़ें भी हो सकती हैं। इसी तरह, हर बात पर एक ही लहजे में बोलते हुए, उन्होंने हमसे कहा: "हम एक बार ओपेरा-कॉमिक गए थे, लेकिन वहाँ का शो कुछ खास नहीं है। उसका नाम 'पेलियास एट मेलिसांडे' है। वह बकवास है। पेरिएर हमेशा अच्छा अभिनय करते हैं, लेकिन उन्हें किसी और नाटक में देखना बेहतर होगा। दूसरी ओर, जिम्नाज़ में 'ला चैटेलिन' का मंचन हो रहा है। हम इसे दो बार देखने गए; चाहे कुछ भी हो जाए, इसे देखना न भूलें, यह देखने लायक है; इसके अलावा, इसका प्रदर्शन बेहतरीन है; इसमें फ़्रेवेल्स, मैरी

मैग्निएर, बैरन फ़िल हैं"; और उन्होंने उन अभिनेताओं के नाम उद्धृत किए जिनके बारे में मैंने कभी नहीं सुना था, और ड्यूक डी गुएरमांटेस की तरह, जिन्होंने 'मैडम यवेट गिलबर्ट के गीतों' और 'मिस्टर चारकोट के प्रयोगों' के बारे में उसी औपचारिक तिरस्कारपूर्ण लहजे में बात की थी, उन्होंने 'मॉर्नग्लिया और डेहेली' का यह तरीका नहीं अपनाया, जैसे वे 'वोल्टेयर और मोंटेस्क्यू' का नाम लेते। क्योंकि उनमें, अभिनेताओं के संबंध में और पेरिस से जुड़ी हर चीज़ के संबंध में, अभिजात वर्ग की अपनी अवमानना दिखाने की इच्छा पर प्रांतीय लोगों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करने की इच्छा हावी हो जाती थी।

ला रास्पेलियर में जिस पहली डिनर-पार्टी में मैं शामिल हुआ था—जिसमें फ़ेटर्न में अभी भी 'युवा जोड़ा' कहे जाने वाले लोग मौजूद थे, हालाँकि M. और Mme. de Cambremer अब किसी भी तरह से अपनी पहली जवानी में नहीं थे—उसके तुरंत बाद, बूढ़ी मार्कीज़ ने मुझे उन ख़ास तरह के पत्रों में से एक लिखा, जिन्हें कोई भी उनकी लिखावट देखकर हज़ारों पत्रों के बीच से पहचान सकता है। उन्होंने मुझसे कहा: "अपने उस प्यारे—मनमोहक—अच्छे कज़िन को भी साथ लाना। यह बहुत ही आनंददायक और सुखद अनुभव होगा।" वह हमेशा उस क्रम से बचती थीं—और कितनी अचूक कुशलता से बचती थीं—जिसकी उम्मीद उनके पत्र को पढ़ने वाला स्वाभाविक रूप से करता; इस बात ने मुझे इन 'घटते क्रम' (diminuendoes) वाली बातों के स्वभाव के बारे में अपना विचार बदलने पर मजबूर कर दिया। मैंने तय किया कि यह सब जान-बूझकर किया जाता था, और मुझे इसमें वही 'स्वाद की विकृति' नज़र आई —जो सामाजिक संदर्भ में ढल गई थी—जिसने Sainte-Beuve को शब्दों के बीच के सभी सामान्य संबंधों को बिगाड़ने और किसी भी ऐसे भाव को बदलने के लिए प्रेरित किया था जो थोड़ा भी पारंपरिक या घिसा-पिटा लगता हो। इस पत्र-लेखन शैली में दो अलग-अलग तरीके —जो शायद अलग-अलग गुरुओं से सीखे गए थे—आपस में टकराते थे; दूसरा तरीका Mme. de Cambremer को अपने कई विशेषणों की एकरसता को तोड़ने का अवसर देता था, जिसके लिए वह उन्हें घटते क्रम में इस्तेमाल करती थीं और किसी 'पूर्ण ताल' (perfect

chord) पर वाक्य को खत्म करने से बचती थीं। दूसरी ओर, मैं इन 'उल्टे क्रम' वाली बातों में कोई अतिरिक्त बारीकी या नज़ाकत देखने के बजाय—जैसा कि मैं Dowager Marquise के पत्रों में देखता था—एक अतिरिक्त भद्दापन देखता था, खासकर तब जब इनका इस्तेमाल उनके बेटे Marquis या उनकी महिला कज़िन द्वारा किया जाता था। क्योंकि पूरे परिवार में—दूर के रिश्तेदारों तक में भी, और अपनी बुआ Zélia की तारीफ़ भरी नक़ल करते हुए—'तीन विशेषणों के नियम' का बहुत सम्मान किया जाता था; ठीक उसी तरह, बात करते समय साँस को बीच में रोक लेने के एक ख़ास जोशीले अंदाज़ का भी बहुत चलन था। यह एक ऐसी नक़ल थी जो अब उनके ख़ून में ही उतर चुकी थी; और जब भी, पारिवारिक दायरे में, कोई छोटी बच्ची—जो अभी नर्सरी में ही पढ़ रही होती—बात करते-करते अपनी लार निगलने के लिए अचानक रुक जाती, तो उसके माता-पिता कहते: "यह तो बिल्कुल अपनी बुआ Zélia पर गई है।" उन्हें यह महसूस होने लगता कि जैसे-जैसे वह बड़ी होगी, उसका ऊपरी होंठ जल्द ही एक हल्की-सी मूँछ के नीचे छिपने लगेगा, और वे उसके इस 'पुश्तैनी संगीत-प्रतिभा' को निखारने का मन बना लेते। ज़्यादा समय नहीं बीता था कि Cambremer परिवार के Mme. Verdurin के साथ संबंध उतने दोस्ताना नहीं रह गए थे जितने मेरे साथ थे—हालाँकि इसके कारण अलग-अलग थे। उन्हें लगा कि उन्हें उसे खाने पर ज़रूर बुलाना चाहिए। 'युवा' मार्कीज़ ने मुझसे तिरस्कार भरे लहजे में कहा: "मुझे समझ नहीं आता कि हम उस औरत को क्यों न बुलाएँ? गाँव-देहात में तो किसी से भी मुलाक़ात हो जाती है; इससे कोई उलझन पैदा होने की ज़रूरत नहीं है।" लेकिन मन ही मन उससे काफ़ी प्रभावित होने के कारण, वे मुझसे यह सलाह लेना कभी नहीं भूले कि वे अपनी शिष्टता दिखाने की इच्छा को किस तरह पूरा करें। मैंने सोचा कि चूँकि उन्होंने अल्बर्टाइन और मुझे सेंट-लूप के कुछ दोस्तों के साथ खाने पर बुलाया था—जो आस-पड़ोस के संभ्रांत लोग थे, जिनके पास गौरविल का किला था, और जो नॉर्मन समाज की 'क्रीम' (सबसे ऊँची श्रेणी) से भी कुछ बढ़कर थे—और जिनके लिए मैडम वर्दुरिन, भले ही दिखावा करती थीं कि वे उनकी तरफ़ देखती भी नहीं हैं, पर मन ही मन तरसती थीं—इसलिए मैंने कैम्ब्रेमर दंपत्ति को सलाह दी कि वे उस 'मालकिन' को भी उनसे मिलवाने के लिए बुला लें। लेकिन फ़ेटर्न के स्वामी और स्वामिनी ने—अपने कुलीन दोस्तों को नाराज़ करने के डर से (वे इतने डरपोक थे), या इस सोच से (वे इतने सीधे-सादे थे) कि मिस्टर

और मैडम वर्दुरिन शायद उन लोगों से ऊब जाएँ जो बौद्धिक नहीं थे, या फिर इस डर से (क्योंकि वे पुरानी रीतियों में इतने डूबे हुए थे कि अनुभव ने भी उन्हें नहीं बदला था) कि अलग-अलग तरह के लोगों को मिलाने से कोई सामाजिक भूल हो सकती है—यह साफ़ कह दिया कि यह विचार सफल नहीं होगा, और यह कहीं बेहतर होगा कि मैडम वर्दुरिन (जिन्हें वे उनके पूरे छोटे से समूह के साथ बुलाने वाले थे) को किसी और शाम के लिए बचाकर रखा जाए। इस आने वाली शाम के लिए—जो कि एक 'खास' शाम थी, जिसमें सेंट-लूप के दोस्तों से मिलना था —उन्होंने उस छोटे से समूह में से मोरेल के अलावा किसी को नहीं बुलाया; ऐसा उन्होंने इसलिए किया ताकि मिस्टर डी चार्लस को परोक्ष रूप से यह पता चल जाए कि उनके घर में कितने शानदार लोग आए हुए हैं, और साथ ही इसलिए भी कि वह संगीतकार उनके मेहमानों का मनोरंजन करने में उनकी मदद कर सके, क्योंकि उससे अपनी वायलिन साथ लाने के लिए कहा जाने वाला था। उन्होंने कोटार्ड को भी साथ में बुला लिया, क्योंकि मिस्टर डी कैम्ब्रेमर का कहना था कि उसमें 'काफ़ी जोश' है, और वह खाने की मेज़ पर सबका मन मोह लेगा; इसके अलावा, किसी डॉक्टर से दोस्ती रखना भविष्य में काम भी आ सकता है, अगर कभी घर में कोई बीमार पड़ जाए। लेकिन उन्होंने उसे अकेले ही बुलाया, ताकि 'उसकी पत्नी के साथ कोई नई उलझन खड़ी न हो जाए।' मैडम... Verdurin यह सुनकर आग-बबूला हो गई कि उसके छोटे से ग्रुप के दो सदस्यों को, उसे छोड़कर, Féterne में 'बड़ी ही खामोशी से' रात के खाने पर बुलाया गया था। उसने डॉक्टर को, जिसका पहला मन तो न्योता स्वीकार करने का था, एक कड़ा जवाब लिखवाया जिसमें उसने कहा: "हम उस शाम Mme. Verdurin के साथ खाना खा रहे हैं।" यह 'हम' शब्द Cambremers को एक सबक सिखाने और उन्हें यह दिखाने के लिए था कि वह Mme. Cottard से अलग नहीं है। जहाँ तक Morel की बात है, Mme. Verdurin को उसे बदतमीज़ी भरा बर्ताव करने का कोई तरीका बताने की ज़रूरत नहीं पड़ी; उसने खुद ही एक तरीका ढूँढ़ लिया, और उसका कारण यह था। अगर वह M. de Charlus के मामले में—जहाँ तक उसकी अपनी मौज-मस्ती का सवाल था—एक ऐसी आज़ादी बनाए रखता था जिससे Baron को तकलीफ़ होती थी, तो हमने यह भी देखा है कि Baron का असर दूसरे मामलों में धीरे-धीरे और ज़्यादा बढ़ता जा रहा था, और उदाहरण के लिए, उसने उस नौजवान के...

...संगीत के माहिर की जानकारी ने उसकी शैली को और भी निखार दिया। लेकिन हमारी कहानी के इस मोड़ पर, कम-से-कम, यह अभी भी महज़ एक प्रभाव ही था। साथ ही, एक ऐसा विषय भी था जिस पर M. de Charlus जो कुछ भी कहते, Morel उसे आँख मूँदकर मान लेता और अमल में लाता। आँख मूँदकर और बेवकूफ़ी भरे ढंग से—क्योंकि M. de Charlus के निर्देश न सिर्फ़ ग़लत थे, बल्कि अगर वे किसी बड़े रईस के लिए सही भी होते, तो भी जब Morel उन्हें शब्दशः अपनाता, तो वे बेहद भद्दे और बेतुके लगने लगते। जिस विषय को लेकर Morel इतना भोला और अंधविश्वासी बनता जा रहा था, और जिस पर वह अपने मालिक की इतनी आज्ञाकारिता से बात मानता था, वह था 'सामाजिक प्रतिष्ठा' (social distinction) का विषय। वह वायलिन-वादक, जिसे M. de Charlus से मुलाक़ात से पहले 'समाज' के बारे में कोई अंदाज़ा ही नहीं था, उसने Baron द्वारा समाज का जो संक्षिप्त और घमंड भरा खाका उसके सामने पेश किया था, उसे उसने अक्षरशः सच मान लिया था। "कुछ ऐसी खास परिवारें हैं," एम. डी चार्लस ने उसे बताया था, "सबसे पहले और सबसे ज़रूरी, गुएरमांटेस परिवार। इनका दावा है कि फ्रांस के शाही परिवार के साथ इनके चौदह रिश्ते हैं। अगर देखा जाए तो यह बात फ्रांस के शाही परिवार के लिए ही गर्व की बात है, क्योंकि फ्रांस का सिंहासन असल में एल्डोंस डी गुएरमांटेस को मिलना चाहिए था, न कि लुई द फैट को—जो उसका सगा भाई तो था, पर उम्र में छोटा था। लुई XIV के ज़माने में, जब 'मोंसियर' (राजा के भाई) की मौत हुई थी, तो हमने भी शोक मनाया था (जिसे 'ड्रेपिंग' कहते हैं), क्योंकि हमारी और राजा की दादी एक ही थीं। गुएरमांटेस परिवार से काफी नीचे, फिर भी कुछ और परिवारों का ज़िक्र किया जा सकता है: ला ट्रेमोइल परिवार—जो नेपल्स के राजाओं और पोइटियर्स के काउंट्स के वंशज हैं; डी'उज़ेस परिवार—जो परिवार के तौर पर बहुत पुराना तो नहीं है, पर 'प्रीमियर पीयर्स' (सबसे ऊँचे दर्जे के रईस) माने जाते हैं; लुइन्स परिवार—जो बिल्कुल नए हैं, पर अच्छी शादियाँ करके उन्होंने अपना नाम बनाया है; और चोइसुल, हारकोर्ट, ला रोशेफौकॉल्ड परिवार। इनके अलावा नोएल्स परिवार (भले ही काउंट डी टूलूज़ का मामला हो), मोंटेस्क्यू और कैस्टेलन परिवार को भी इसमें जोड़ लें। मेरा मानना है कि बस यही कुछ खास परिवार हैं। जहाँ तक उन छोटे-मोटे लोगों की बात है जो खुद को 'मार्क्विस डी कैम्ब्रेमर्ड' या 'डी वाटेफेयरफिश' कहलाते हैं, तो उनमें और तुम्हारी रेजिमेंट के सबसे मामूली सिपाही में कोई

फर्क नहीं है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम जाकर 'काउंटेस S—t' के यहाँ पेशाब करते हो या 'बैरोनेस P—' के यहाँ शौच करते हो—बात बिल्कुल एक ही है। ऐसा करके तुम खुद को ही नीचा दिखाओगे, और टॉयलेट पेपर की जगह एक गंदा-सा चिथड़ा इस्तेमाल करने जैसा काम करोगे। जो कि बिल्कुल भी अच्छा नहीं है।" मोरेल ने इस इतिहास के पाठ को—जो शायद थोड़ा-बहुत सरसरी तौर पर बताया गया था—बड़े ही श्रद्धा भाव से सुना। वह इन बातों को ऐसे देखने लगा, मानो वह खुद भी गुएरमांटेस परिवार का ही कोई सदस्य हो। उसे उम्मीद थी कि शायद कभी उसे उन 'नकली ला टूर डी'ऑवर्न' लोगों से मिलने का मौका मिलेगा, ताकि वह उनसे हाथ मिलाते समय अपने तिरस्कार भरे अंदाज़ से उन्हें यह दिखा सके कि वह उन्हें बिल्कुल भी गंभीरता से नहीं लेता। जहाँ तक कैम्ब्रेमर्स परिवार की बात थी, तो उन्हें यह साबित करने का मौका उसे ठीक इसी समय मिल गया था कि वे उसकी रेजिमेंट के 'सबसे मामूली सिपाही' से ज़रा भी बेहतर नहीं हैं। उन्होंने उनके न्योते का कोई जवाब नहीं दिया, और जिस शाम दावत थी, उसी शाम आखिरी पल में टेलीग्राम भेजकर मना कर दिया; वे खुद से इतने खुश थे, मानो उन्होंने किसी राजघराने के राजकुमार जैसा बर्ताव किया हो। यहाँ यह भी बताना ज़रूरी है कि यह कल्पना करना भी मुश्किल है कि M. de Charlus आम तौर पर कितने असहनीय और दखल देने वाले हो सकते थे—और यहाँ तक कि, जो इतने होशियार थे, वे उन सभी मौकों पर कितने बेवकूफ़ बन जाते थे, जब उनके चरित्र की कमियाँ सामने आती थीं। हम सचमुच कह सकते हैं कि ये कमियाँ मन की किसी रुक-रुककर होने वाली बीमारी जैसी हैं। किसने महिलाओं और यहाँ तक कि पुरुषों में भी यह बात नहीं देखी है—जिनमें असाधारण बुद्धि होती है, लेकिन जो नसों की कमज़ोरी से पीड़ित होते हैं—कि जब वे खुश, शांत और अपने आस-पास के माहौल से संतुष्ट होते हैं, तो हम उनकी अनमोल खूबियों की तारीफ़ किए बिना नहीं रह पाते; उनके मुँह से निकलने वाले शब्द एकदम सच होते हैं। सिरदर्द का हल्का-सा एहसास, या उनके आत्म-सम्मान को ज़रा-सी भी ठेस पहुँचना, सब कुछ बदलने के लिए काफी होता है। वह चमकती हुई बुद्धि अचानक तीखी, उग्र और संकीर्ण हो जाती है; वह अपने चिड़चिड़े, शक्की और छेड़ने वाले रूप के अलावा कुछ भी ज़ाहिर नहीं करती—ऐसा रूप जो दूसरों को तकलीफ़ देने के लिए हर मुमकिन कोशिश करता है। Cambremers बहुत ज़्यादा नाराज़ थे; और इसी बीच, कुछ और घटनाओं की वजह से उस

छोटे से समूह के साथ उनके रिश्तों में कुछ तनाव पैदा हो गया। जब हम—Cottards, Charlus, Brichot, Morel और मैं—एक शाम la Raspelière में दावत से लौट रहे थे (Cambremers, जो Harambouville में दोस्तों के साथ दोपहर का खाना खाने गए थे, हमारे साथ वापसी के रास्ते में कुछ दूर तक आए थे), तो मैंने M. de Charlus से कहा: "आप, जिन्हें Balzac इतने पसंद हैं, और जो आज के समाज में भी उनके किरदारों के उदाहरण ढूँढ़ लेते हैं —आपको ज़रूर यह महसूस होता होगा कि ये Cambremers सीधे 'Scènes de la Vie de Province' से निकलकर आए हैं।" लेकिन M. de Charlus ने—ठीक वैसे ही, जैसे वे उनके कोई करीबी दोस्त हों और मेरी बात से उन्हें ठेस पहुँची हो—मुझे तुरंत बीच में ही टोक दिया: "आप ऐसा इसलिए कह रहे हैं, क्योंकि पत्नी अपने पति से ज़्यादा काबिल है," उन्होंने मुझे रूखे स्वर में बताया। "ओह, मैं यह नहीं कह रहा था कि वह 'Muse du département' या Mme. de Bargeton जैसी है—हालाँकि..." M. de Charlus ने मुझे फिर बीच में ही टोक दिया: "इसके बजाय, आप कहिए—Mme. de Mortsauf।" ट्रेन रुकी और Brichot नीचे उतर गए। "क्या तुमने हमें तुम्हें इशारे करते हुए नहीं देखा? तुम तो सुधरने वाले ही नहीं हो।" "तुम्हारा क्या मतलब है?" "अरे, क्या तुमने कभी यह गौर नहीं किया कि ब्रिशो, मैडम डी कैम्ब्रेमर के प्यार में पूरी तरह पागल है?" मैं कॉटार्ड और चार्ली के हाव-भाव से यह देख सकता था कि इसमें ज़रा भी...

इस छोटे से ग्रुप में इस बात पर शक था। मुझे लगा कि इससे उनकी तरफ से थोड़ी-बहुत बदनीयती झलकती है। "क्या, तुमने कभी ध्यान नहीं दिया कि जब तुम उसका ज़िक्र करते हो तो वह कितना परेशान हो जाता है?" एम. डी चार्लस ने आगे कहा। उन्हें यह दिखाना पसंद था कि उन्हें औरतों का अनुभव है, और वे उस भावना के बारे में, जो औरतें जगाती हैं, बहुत ही स्वाभाविक अंदाज़ में बात करते थे—जैसे कि यह वही भावना हो जिसे वे खुद हमेशा महसूस करते हों। लेकिन सभी नौजवानों से बात करते समय उनका एक अजीब-सा, पिता जैसा लहजा—भले ही मोरेल के लिए उनके दिल में खास प्यार था—उनकी उस छवि को झूठा साबित कर देता था जो वे एक औरत-पसंद करने वाले आदमी के तौर पर पेश करते थे। "ओह! ये बच्चे," उन्होंने एक तीखी, नखरे वाली, गाते हुए जैसी आवाज़ में कहा, "इन्हें तो सब कुछ सिखाना पड़ता है; ये तो बिल्कुल नवजात शिशु की तरह भोले होते हैं। इन्हें तो यह भी

समझ नहीं आता कि कोई आदमी किसी औरत के प्यार में है या नहीं। तुम्हारी उम्र में मैं इतना भोला नहीं था," उन्होंने आगे जोड़ा। उन्हें 'अंडरवर्ल्ड' (अपराधियों की दुनिया) के मुहावरे इस्तेमाल करना पसंद था—शायद इसलिए क्योंकि वे उन्हें अच्छे लगते थे, या शायद इसलिए ताकि उन मुहावरों से बचकर वे यह न मान लें कि वे ऐसे लोगों के साथ उठते-बैठते हैं जिनकी रोज़मर्रा की बोलचाल में ये शब्द शामिल हैं। कुछ दिनों बाद, मुझे सबूतों के आगे झुकना पड़ा और यह मानना पड़ा कि ब्रिशो, मार्कीज़ के प्यार में पागल था। बदकिस्मती से, उसने मार्कीज़ के साथ दोपहर के खाने के कई न्योते मान लिए थे। मैडम वर्दुरिन ने तय किया कि अब इन सब चीज़ों पर रोक लगाने का समय आ गया है। इस छोटे से ग्रुप पर अपना दबदबा बनाए रखने की उनकी नीति के लिए इस तरह के दखल की अहमियत तो थी ही, साथ ही इस तरह की सफाइयाँ और उनसे पैदा होने वाले ड्रामे उन्हें बहुत ज़्यादा मज़ा देते थे—ऐसा मज़ा जो खालीपन की वजह से पैदा होता है, और जो ऊँचे तबके के लोगों की तरह ही मध्यम वर्ग के लोगों में भी पाया जाता है। 'ला रास्पेलियर' में वह दिन बहुत ही जज़्बाती था, जब मैडम वर्दुरिन को ब्रिशो के साथ पूरे एक घंटे के लिए गायब होते देखा गया। (जैसा कि सबको पता था) उन्होंने ब्रिशो को बताया कि मैडम डी कैम्ब्रेमर उसका मज़ाक उड़ा रही हैं; कि वह उनके ड्राइंग-रूम में हँसी का पात्र बन गया है; और कि वह अपनी ज़िंदगी बहुत ही बेइज़्ज़ती के साथ खत्म करेगा, क्योंकि वह अब टीचिंग की दुनिया में अपनी इज़्ज़त और जगह खो चुका है। उन्होंने तो यहाँ तक कह दिया कि वह पेरिस में जिस धोबिन के साथ रह रहा था, और उनकी छोटी बेटी के बारे में भी उन्होंने बहुत ही हमदर्दी भरे शब्दों में बात की। आखिरकार जीत उसी की हुई; ब्रिशो ने फेतेर्न जाना बंद कर दिया। लेकिन उसका दुख इतना गहरा था कि दो दिनों तक तो यही लगा कि उसकी आँखों की रोशनी पूरी तरह चली जाएगी। वैसे भी, उसकी बीमारी अचानक बहुत बढ़ गई थी और उसने अपनी पकड़ और मज़बूत कर ली थी। इसी बीच, कैम्ब्रेमर परिवार—जो मोरेल से बहुत नाराज़ था—ने एक बार जान-बूझकर मोरेल को छोड़कर, सिर्फ़ एम. डी शार्लस को खाने पर बुलाया। बैरन की तरफ़ से कोई जवाब न मिलने पर, उन्हें डर लगने लगा कि शायद उन्होंने कोई बड़ी गलती कर दी है। यह सोचकर कि बदले की भावना से काम लेना ठीक नहीं होता, उन्होंने थोड़ी देर से ही सही, मोरेल को भी न्योता भेज दिया। यह हरकत एम. डी शार्स को देखकर थोड़ी हास्यास्पद लगी, क्योंकि इससे उसे

अपनी ताकत का अंदाज़ा हो गया था। उसने मोरेल से कहा, "तुम हम दोनों की तरफ़ से उन्हें बता देना कि मैंने उनका न्योता स्वीकार कर लिया है।" जब खाने की शाम आई, तो सभी मेहमान फेतेर्न के बड़े से ड्राइंग-रूम में इकट्ठा हुए। असल में, कैम्ब्रेमर परिवार ने यह दावत फैशन की दुनिया के दो बड़े सितारों—एम. और मैडम फेरे—के सम्मान में रखी थी। लेकिन वे एम. डी शार्लस को नाराज़ करने से इतना डरते थे कि, भले ही मैडम फेरे से उनकी जान-पहचान एम. डी शेव्रेग्नी के ज़रिए हुई थी, फिर भी जब खाने से ठीक पहले वाली दोपहर को एम. डी शेव्रेग्नी उनसे मिलने फेतेर्न पहुँचे, तो मैडम डी कैम्ब्रेमर घबराहट के मारे काँपने लगीं। उन्होंने एम. डी शेव्रेग्नी को जल्द-से-जल्द वापस बेऔसोलेल भेजने के लिए हर मुमकिन बहाना बनाया। हालाँकि, उन्होंने उन्हें इतनी भी जल्दी वापस नहीं भेजा कि वे फेतेर्न के आँगन में फेरे दंपति से न मिल पाते। फेरे दंपति को यह देखकर उतना ही झटका लगा कि एम. डी शेव्रेग्नी को इस तरह बेइज़्ज़त करके वापस भेजा जा रहा है, जितना कि खुद एम. डी शेव्रेग्नी को शर्मिंदगी महसूस हुई थी। लेकिन, चाहे कुछ भी हो जाए, कैम्ब्रेमर परिवार एम. डी शार्लस को एम. डी शेव्रेग्नी की झलक तक नहीं दिखाना चाहता था। उनकी नज़र में एम. डी शेव्रेग्नी एक 'गँवार' किस्म के इंसान थे—कुछ ऐसी छोटी-छोटी बातों की वजह से, जिन्हें परिवार के लोगों के बीच तो नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है, लेकिन अजनबियों के सामने वे ही बातें बहुत अहम बन जाती हैं (हालाँकि अजनबी लोग अक्सर ऐसी बातों पर सबसे कम ध्यान देते हैं)। हममें से कोई भी अपने उन रिश्तेदारों को अजनबियों के सामने पेश करना पसंद नहीं करता, जो अभी भी उसी पुराने ढर्रे पर चल रहे हों, जिससे हम खुद बड़ी मुश्किल से बाहर निकल पाए हैं। जहाँ तक एम. और मैडम फेरे की बात है, तो वे सचमुच में ऐसे लोग थे जिन्हें 'बहुत ही अच्छे इंसान' कहा जा सकता है। जिन लोगों ने उन्हें इस तरह परिभाषित किया था, उनकी नज़र में, इसमें कोई शक नहीं कि गुएरमांटेस, रोहान्स और कई दूसरे लोग भी सचमुच बहुत अच्छे लोग थे, लेकिन उनके नाम की वजह से यह कहने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती थी। चूंकि हर कोई मैडम फेरे की ऊँची पैदाइश और उस बेहद खास दायरे के बारे में नहीं जानता था जिसमें वह और उनके पति उठते-बैठते थे, इसलिए जब आप उनका नाम लेते थे, तो आप हमेशा यह समझाने के लिए साथ में यह भी जोड़ देते थे कि वे 'सबसे बेहतरीन किस्म के लोग' हैं। क्या उनके साधारण से नाम ने उन्हें एक तरह का घमंडी और अलग-थलग रवैया अपनाने पर मजबूर कर

दिया था? बात चाहे जो भी हो, सच तो यह है कि फेरे उन लोगों से जान-पहचान रखने से मना कर देते थे, जिनसे ला ट्रेमोइल जैसे लोग भी मिलने चले जाते। फेरे को हर साल अपनी किसी एक दोपहर की महफ़िल में आने के लिए राज़ी करने के लिए, उस बूढ़ी मार्कीज़ डी कैम्ब्रेमर जैसी ऊँची हैसियत की ज़रूरत पड़ती थी, जो मान्चे के उस खास तटीय इलाके की 'रानी' मानी जाती थीं। कैम्ब्रेमर परिवार ने उन्हें रात के खाने पर बुलाया था और उन्हें पूरी उम्मीद थी कि एम. डी चार्लस का उन पर गहरा असर पड़ेगा। यह बात बड़े ही सलीके से बताई गई थी कि वह भी इस महफ़िल में शामिल होने वाले मेहमानों में से एक होंगे।

y. जैसा कि हुआ, Mme. Féré उनसे कभी मिली ही नहीं थीं। Mme. de Cambremer को जब यह पता चला, तो उन्हें बहुत संतोष हुआ; उनके चेहरे पर वैसी ही मुस्कान तैर गई, जैसी किसी रसायनशास्त्री के चेहरे पर तब आती है, जब वह पहली बार दो बेहद महत्वपूर्ण पदार्थों को एक-दूसरे के संपर्क में लाने वाला होता है। दरवाज़ा खुला, और जब Mme. de Cambremer ने Morel को कमरे में अकेले आते देखा, तो वे लगभग बेहोश ही हो गईं। ठीक वैसे ही, जैसे कोई निजी सचिव अपने मंत्री की ओर से माफ़ी माँगता है; या जैसे कोई 'मॉरगैनेटिक' (अवैधानिक) पत्नी राजकुमार की ओर से यह अफ़सोस ज़ाहिर करती है कि उनकी तबीयत ठीक नहीं है (Mme. de Clinchamp भी Duc d'Aumale की ओर से अक्सर इसी तरह माफ़ी माँगा करती थीं); Morel ने बेहद हल्के-फुल्के अंदाज़ में कहा: "Baron नहीं आ पाएँगे। उनकी तबीयत कुछ ठीक नहीं है—कम-से-कम मुझे तो यही लगता है, क्योंकि इस हफ़्ते मेरी उनसे मुलाक़ात ही नहीं हुई है।" उनके ये आख़िरी शब्द सुनकर Mme. de Cambremer की निराशा की कोई सीमा न रही; क्योंकि उन्होंने M. और Mme. Féré से यह कह रखा था कि Morel की मुलाक़ात M. de Charlus से दिन में कई बार होती रहती है। Cambremer दंपत्ति ने ऐसा दिखावा किया, मानो Baron की अनुपस्थिति से उनकी पार्टी का आकर्षण और भी बढ़ गया हो; और Morel को कुछ भी सुनाई न दे—इस बात का पूरा ध्यान रखते हुए—उन्होंने अपने अन्य मेहमानों से कहा: "हम उनके बिना भी अपना काम बखूबी चला सकते हैं, है ना? बल्कि, यह तो और भी बेहतर रहेगा।" लेकिन वे अंदर ही अंदर गुस्से से उबल रहे थे; उन्हें शक था कि यह सब Mme. Verdurin की कोई सोची-समझी साज़िश है।

लिहाज़ा, 'जैसे को तैसा' वाली नीति अपनाते हुए, जब Mme. Verdurin ने उन्हें दोबारा 'la Raspelière' में आमंत्रित किया, तो M. de Cambremer—अपने घर को दोबारा देखने और उस छोटे से समूह के साथ घुलने-मिलने के लोभ को संवरण न कर पाने के कारण—वहाँ पहुँचे तो सही, लेकिन अकेले ही। उन्होंने बताया कि Marquise को इस बात का बेहद अफ़सोस है, लेकिन उनके डॉक्टर ने उन्हें अपने कमरे से बाहर न निकलने की सख़्त हिदायत दी है। Cambremer दंपत्ति को उम्मीद थी कि इस तरह 'आंशिक रूप से उपस्थित' होकर वे एक ही तीर से दो शिकार कर लेंगे—एक तो M. de Charlus को सबक सिखा देंगे, और दूसरे Verdurin दंपत्ति को यह जता देंगे कि वे उनके साथ 'सीमित शिष्टाचार' से अधिक कुछ भी बरतने के लिए बाध्य नहीं हैं; ठीक वैसे ही, जैसे पुराने ज़माने में 'शाही ख़ानदान की राजकुमारियाँ' (Princesses of the Blood) किसी 'डचेस' को विदा करते समय उसे दरवाज़े तक नहीं, बल्कि केवल 'दूसरे दीवानख़ाने के बीच तक' ही छोड़ने जाया करती थीं। कुछ ही हफ़्तों के भीतर, उनके बीच बातचीत का सिलसिला भी लगभग पूरी तरह से बंद हो गया। M. de Cambremer ने मुझे यह इस तरह समझाया: "मुझे आपको बताना होगा कि M. de Charlus के साथ यह थोड़ा मुश्किल था। वह एक कट्टर Dreyfusard हैं..." "ओह, नहीं!" "हाँ... खैर, उनके चचेरे भाई Prince de Guermantes तो हैं ही; इस बात पर उन्हें बहुत बुरा-भला सुनना पड़ा है। मेरे कुछ रिश्तेदार ऐसे हैं जो इस तरह की बातों को लेकर बहुत ज़्यादा सख़्त हैं। मैं ऐसे लोगों के साथ मेल-जोल नहीं बढ़ा सकता, वरना मेरा अपने पूरे परिवार से झगड़ा हो जाएगा।" "चूँकि Prince de Guermantes एक Dreyfusard हैं, तो इससे सब कुछ और भी आसान हो जाएगा," Mme. de Cambremer ने कहा, "क्योंकि Saint–Loup, जिसके बारे में कहा जा रहा है कि वह उनकी भतीजी से शादी करने वाला है, वह भी एक Dreyfusard ही है। असल में, शायद इसीलिए वह उससे शादी कर रहा है।" "अरे, मेरी प्यारी, तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए कि Saint–Loup, जो हमारा बहुत अच्छा दोस्त है, एक Dreyfusard है। किसी पर भी ऐसे आरोप इतनी आसानी से नहीं लगाने चाहिए," M. de Cambremer ने कहा। "तुम तो उसे सेना में बहुत लोकप्रिय बना दोगी!" "वह एक ज़माने में था, लेकिन अब नहीं है," मैंने M. de Cambremer को समझाया। "जहाँ तक उसकी Mlle. de Guermantes–Ambresac से शादी की बात है—क्या इसमें कोई सच्चाई है?" "लोग और

किसी चीज़ की बात ही नहीं कर रहे, लेकिन आपको तो इस बारे में पता होना चाहिए।" "लेकिन मैं फिर दोहराती हूँ कि उसने खुद मुझे बताया था कि वह एक Dreyfusard है," Mme. de Cambremer ने कहा। "ऐसा नहीं है कि उसके पास कोई बहाना नहीं है—Guermantes लोग आधे जर्मन हैं।" "Rue de Varenne वाले Guermantes तो, आप कह सकते हैं, पूरी तरह से जर्मन हैं," Cancan ने कहा। "लेकिन सेंट-लूप की बात ही कुछ और है; भले ही उसके खून में जर्मन अंश कितना भी हो, उसके पिता ने हमेशा फ्रांस के एक महान रईस के तौर पर अपनी उपाधि बनाए रखने पर ज़ोर दिया। वह 1871 में दोबारा सेना में शामिल हुआ और युद्ध में अत्यंत वीरता के साथ लड़ते हुए शहीद हो गया। हो सकता है कि इन मामलों पर मेरा नज़रिया थोड़ा सख़्त हो, लेकिन किसी भी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना ठीक नहीं है। 'इन मेडियो... वर्टस'—अरे, मैं इसके ठीक-ठीक शब्द भूल गई। यह बात डॉक्टर कोटार्ड ने कही थी। वह एक ऐसे इंसान हैं जो हमेशा सही मौके पर सही बात कहते हैं। तुम्हें अपने घर में एक छोटी 'लारूस' (शब्दकोश) ज़रूर रखनी चाहिए।" उस लैटिन उद्धरण पर अपनी राय देने से बचने के लिए, और सेंट-लूप के विषय से पीछा छुड़ाने के लिए —जिसके बारे में उसके पति को लगता था कि वह सही ढंग से बात नहीं कर पाई थी—श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने 'मिस्ट्रेस' (मालकिन) का ज़िक्र छेड़ दिया, जिनके साथ उनका झगड़ा और भी ज़्यादा स्पष्टीकरण की मांग कर रहा था। "हमें श्रीमती वर्दुरिन को 'ला रास्पेलियर' किराए पर देकर बहुत खुशी हुई," मार्कीज़ ने कहा। "बस एक ही दिक्कत है: उन्हें ऐसा लगता है कि घर के साथ-साथ—और जो कुछ भी उन्होंने घर के साथ जोड़ लिया है, जैसे कि घास के मैदान का इस्तेमाल, पुराने पर्दे, और न जाने क्या-क्या—ऐसी तमाम चीज़ें जो किराए के समझौते (lease) में शामिल ही नहीं थीं—उन्हें हमारे साथ दोस्ती करने का भी अधिकार मिल गया है। ये दोनों बातें बिल्कुल अलग हैं। हमारी गलती यह थी कि हमने यह सारा काम किसी वकील या एजेंसी के ज़रिए सीधे-सीधे नहीं करवाया। 'फेटर्न' में तो इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, लेकिन मैं सोच सकती हूँ कि मेरी मौसी 'डी श्नोविल' का चेहरा कैसा हो जाएगा, अगर वह किसी दिन मेरे यहाँ होने वाली महफ़िल में उस बुढ़िया वर्दुरिन को खुले बालों में इतराती हुई चली आते देख लें। जहाँ तक श्री डी चार्लस की बात है, तो बेशक वह कुछ बहुत अच्छे लोगों को जानते हैं, लेकिन वह कुछ बहुत ही घटिया लोगों को भी जानते हैं।" मैंने उनसे और विस्तार से बताने को कहा।

जब श्रीमती डी कैम्ब्रेमर को चारों ओर से घेर लिया गया, तो आखिरकार उन्होंने मान ही लिया: "लोग कहते हैं कि वही एक 'श्री मोरो' (या शायद 'मोरिल' या 'मोरू'—मुझे ठीक से नाम याद नहीं) का ख़र्च उठाते थे। बेशक, इसका किसी और चीज़ से कोई लेना-देना नहीं है..."
"मोरेल के साथ, जो वायलिन बजाते हैं," उसने शरमाते हुए आगे कहा। "जब मुझे एहसास हुआ कि मैडम वेरडुरिन को यह गलतफ़हमी है कि सिर्फ़ इसलिए कि वह मांश में हमारी किराएदार थीं, उन्हें पेरिस आकर मुझसे मिलने का अधिकार मिल गया है, तो मुझे समझ आ गया कि अब उनसे रिश्ता तोड़ लेने का समय आ गया है।"

मालकिन के साथ इस झगड़े के बावजूद, कैम्ब्रेमर परिवार के वफादारों के साथ अच्छे संबंध थे, और जब वे ट्रेन से यात्रा कर रहे होते थे तो वे खुशी-खुशी हमारी गाड़ी में बैठ जाते थे। डौविल पहुँचने से ठीक पहले, अल्बर्टीन, आखिरी बार अपना दर्पण निकालते हुए, कभी-कभी अपने दस्ताने बदलने या एक पल के लिए अपनी टोपी उतारने के लिए मजबूर हो जाती थी, और मेरे द्वारा दी गई और बालों में लगी कछुए की खोल की कंघी से, चोटियों को संवारती, बालों की लटों को खोलती, और यदि आवश्यक हो, तो गर्दन के पिछले हिस्से तक नियमित घाटियों में उतरती लहरों पर अपने जूड़े को ऊपर उठाती। एक बार जब हम उन गाड़ियों में बैठ गए जो हमें लेने आई थीं, तो हमें पता ही नहीं चल रहा था कि हम कहाँ हैं; सड़कें रोशन नहीं थीं; पहियों की तेज़ आवाज़ से हमें पता चल गया था कि हम एक गाँव से गुज़र रहे हैं, हमें लगा कि हम पहुँच गए हैं, लेकिन हम फिर से खुले मैदान में आ गए, दूर से घंटियों की आवाज़ सुनाई दी, हम भूल गए कि हमने शाम की पोशाक पहनी हुई है, और लगभग सो ही गए थे कि अंधेरे की इस विस्तृत सीमा के अंत में, जो कि तय की गई दूरी और सभी रेल यात्राओं की विशेषता वाली घटनाओं के कारण हमें रात के काफी देर तक और लगभग पेरिस के आधे रास्ते तक ले आई थी, अचानक महीन बजरी पर गाड़ी के पहियों की चरमराहट से पता चला कि हम पार्क में मुड़ गए हैं, और फिर अचानक ड्राइंग रूम की चकाचौंध भरी रोशनी ने हमें सामाजिक जीवन में वापस ला दिया, फिर डाइनिंग रूम की, जहाँ आठ बजने की आवाज़ सुनकर हम अचानक चौंक गए, वह समय जो हमें लगा था कि बहुत पहले बीत चुका है, जबकि अंतहीन व्यंजन और पुरानी शराबें एक के बाद एक परोसी जा रही थीं, काले कपड़े

पहने पुरुषों और नंगी बाहों वाली महिलाओं के बीच, एक डिनर पार्टी में जो किसी भी असली डिनर पार्टी की तरह रोशनी से जगमगा रही थी, केवल दोहरे घेरे से घिरी हुई थी, और इस प्रकार अपना स्वरूप बदल रही थी। उस अंधेरे, उदास और विचित्र पर्दे को बुनकर, जो इस सामाजिक उद्देश्य के लिए बुना गया था, यात्रा के दौरान रात के ग्रामीण और समुद्रतटीय समय में, उनकी प्रारंभिक गंभीरता का त्याग कर दिया गया था। वास्तव में, इस वजह से हमें रोशन ड्राइंग रूम की दीप्तिमान और जल्द ही भुला दी जाने वाली भव्यता को छोड़कर उन गाड़ियों में जाना पड़ा, जिनमें मैंने अल्बर्टीन के बगल में बैठने की व्यवस्था की थी ताकि मेरी अनुपस्थिति में मेरी प्रेमिका को अन्य लोगों के साथ न रहना पड़े, और अक्सर एक और कारण भी था, जो यह था कि हम दोनों एक अंधेरी गाड़ी में कई काम कर सकते थे, जिसमें नीचे की ओर जाते समय लगने वाले झटके हमें एक बहाना दे देते थे, अगर अचानक प्रकाश की किरण हम पर पड़ती, तो एक-दूसरे से लिपट जाने का। जब एम. डी कैम्ब्रेमर अभी भी वर्दुरिन परिवार के साथ मुलाकात करते थे, तो वे मुझसे पूछते थे: "तुम्हें नहीं लगता कि इस कोहरे से तुम्हें घुटन के दौरे पड़ेंगे? मेरी बहन की आज सुबह बहुत बुरी हालत थी। आह! तुम्हें भी ऐसा ही हो रहा है," उन्होंने संतुष्टि से कहा। "मैं उसे आज रात बता दूँगा। मुझे पता है कि घर पहुँचते ही वो सबसे पहले यही पूछेगी कि क्या तुम्हें हाल ही में कुछ हुआ है।" उसने मेरी तकलीफों का ज़िक्र सिर्फ़ अपनी बहन की तकलीफों की ओर इशारा करने के लिए किया, और मुझसे मेरी तकलीफों का विस्तार से वर्णन करवाया ताकि वो उनमें और उसकी बहन की तकलीफों में अंतर बता सके। लेकिन इन अंतरों के बावजूद, जैसा कि उसे लगता था कि उसकी बहन के घुटन भरे दौरे उसे अधिकारपूर्वक बोलने का हक देते हैं, उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि जो उपाय उसकी बहन के लिए कारगर साबित हुआ, वो मेरे लिए इलाज के तौर पर क्यों नहीं बताया गया, और उसे इस बात से चिढ़ हो रही थी कि मैं इन उपायों को आज़माना नहीं चाहता, क्योंकि किसी नियम का पालन करने से ज़्यादा मुश्किल काम है उसे दूसरों पर थोपने से रोकना। "वैसे मुझे बोलने की ज़रूरत नहीं है, मैं तो बस एक बाहरी व्यक्ति हूँ, जब आप यहाँ ज्ञान के स्रोत, यानी एरिओपैगस के सामने हैं। प्रोफ़ेसर कॉटार्ड इनके बारे में क्या सोचते हैं?" दरअसल, मैंने उसकी पत्नी को एक बार फिर देखा, क्योंकि उसने कहा था कि मेरी 'चचेरी बहन' की कुछ अजीब आदतें हैं, और मैं जानना चाहता था कि उसका क्या मतलब था।

उसने ऐसा कहने से इनकार किया, लेकिन अंत में मान लिया कि वह एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बात कर रही थी जिसे उसने मेरे चचेरे भाई के साथ देखा था। वह उस व्यक्ति का नाम नहीं जानती थी और धीरे से बोली कि, अगर उसे गलतफहमी नहीं है, तो वह एक बैंकर की पत्नी थी, जिसका नाम लीना, लिनेट, लिसेट, लिया, या इसी तरह का कुछ था। मुझे लगा कि 'बैंकर की पत्नी' शब्द उसने मुझे गुमराह करने के लिए जोड़ा था। मैंने अल्बर्टीन से पूछने का फैसला किया कि क्या यह सच है। लेकिन मैंने उससे जिज्ञासा के बजाय ज्ञान का भाव दिखाना बेहतर समझा। वैसे भी, अल्बर्टीन मुझे जवाब ही नहीं देती, या केवल 'नहीं' कहती, जिसमें 'नहीं' बहुत हिचकिचाहट भरा और 'नहीं' बहुत ज़ोरदार होता। अल्बर्टीन कभी भी ऐसी बातें नहीं बताती थी जिनसे उसे नुकसान हो सकता था, बल्कि हमेशा ऐसी बातें बताती थी जिन्हें केवल उसी के द्वारा समझाया जा सकता था, क्योंकि सच्चाई तो लोगों द्वारा कही गई बातों से उत्पन्न होने वाली एक धारा है, जिसे हम, चाहे वह अदृश्य ही क्यों न हो, समझ लेते हैं, न कि वे वास्तव में क्या कहते हैं। और इसलिए जब मैंने उसे आश्वस्त किया कि विची में उसकी जान-पहचान वाली एक महिला की बदनामी थी, तो उसने कसम खाकर मुझसे कहा कि वह महिला वैसी बिल्कुल नहीं थी जैसा मैंने सोचा था, और उसने कभी भी उसे कुछ भी अनुचित करने के लिए उकसाने की कोशिश नहीं की थी। लेकिन उसने एक और दिन, जब मैं उस तरह के लोगों के बारे में अपनी जिज्ञासा व्यक्त कर रहा था, तो कहा कि विची की उस महिला की एक सहेली थी, जिसे वह, अल्बर्टीन, नहीं जानती थी, लेकिन उस महिला ने उससे मिलवाने का वादा किया था। उसका ऐसा वादा करना केवल यही संकेत दे सकता है कि अल्बर्टीन ऐसा चाहती थी, या उस महिला को पता था कि परिचय करवाकर वह उसे प्रसन्न कर रही है। लेकिन अगर मैंने यह बात अल्बर्टीन को बता दी होती, तो ऐसा लगता कि मैं अपनी जानकारी के लिए उस पर निर्भर हूँ, मैं तुरंत इस मामले को खत्म कर देता, मुझे फिर कभी कुछ पता नहीं चलता, और मैं लोगों के लिए खौफ का कारण बनना बंद कर देता। इसके अलावा, हम बालबेक में थे, विची की वह महिला और उसकी सहेली मेंटन में रहती थीं; दूरी और खतरे की संभावना न होने के कारण मेरे संदेह तुरंत दूर हो गए। अक्सर जब एम. डी कैम्ब्रेमर स्टेशन से मुझे पुकारते थे, तब मैं अल्बर्टीन के साथ अंधेरे का पूरा फायदा उठा रहा होता था, और यह सब और भी मुश्किल होता था क्योंकि वह विरोध करने को तैयार रहती थी, उसे डर होता था कि अंधेरा काफी नहीं

है। "तुम्हें पता है, मुझे यकीन है कि कॉटार्ड ने हमें देख लिया होगा, अगर नहीं भी देखा, तो उसने हमारी आवाज़ों से ज़रूर देखा होगा कि हम कितने हांफ रहे थे, ठीक उसी समय जब वे तुम्हारी दूसरी तरह की हांफने की बात कर रहे थे," अल्बर्टीन ने मुझसे कहा जब हम डौविल स्टेशन पहुंचे जहां से हमें घर जाने वाली छोटी ट्रेन पकड़नी थी। लेकिन यह घर वापसी की यात्रा, आने-जाने की यात्रा की तरह ही, अगर मुझे एक खास काव्यात्मक भावना देकर, मेरे अंदर यात्रा करने, एक नया जीवन जीने की इच्छा जगाती थी, और इसलिए मुझे अल्बर्टीन से शादी करने का कोई भी इरादा छोड़ने और यहां तक कि हमारे संबंधों को हमेशा के लिए तोड़ने का फैसला करने के लिए मजबूर करती थी, तो उनके विरोधाभासी स्वभाव के कारण ही यह प्रक्रिया और भी आसान हो गई। क्योंकि, घर वापसी की यात्रा में भी, ठीक वैसे ही जैसे दूसरी यात्रा में, हर स्टेशन पर ट्रेन में हमारे साथ लोग शामिल होते थे या प्लेटफार्म से हमारा अभिवादन करते थे; कल्पना के गुप्त सुख उन अन्य, निरंतर सामाजिक सुखों के आगे फीके पड़ गए जो इतने सुखदायक और नींद लाने वाले थे। स्टेशनों से पहले ही, उनके नाम (जिन्होंने मुझे उस दिन से ही कई कल्पनाएँ दी थीं जब मैंने उन्हें पहली बार सुना था, उस शाम जब मैं अपनी दादी के साथ बालबेक गया था), मानवीय हो गए थे, उनकी विचित्रता खो गई थी, उस शाम से जब ब्रिचोट ने अल्बर्टीन के अनुरोध पर हमें उनकी व्युत्पत्ति का अधिक विस्तृत विवरण दिया था। मैं कुछ नामों के अंत में आने वाले 'फूल' से मोहित हो गया था, जैसे कि फिक्वेफ्लूर, होन्फ्लूर, फ्लेर्स, बारफ्लूर, हार्फ्लूर, आदि, और ब्रिक्वेबोफ के अंत में आने वाले 'बीफ' से आनंदित हो गया था। लेकिन फूल और मांस दोनों गायब हो गए, जब ब्रिचोट (और यह बात उसने मुझे ट्रेन में पहले दिन ही बताई थी) ने हमें बताया कि फ्लेउर का अर्थ बंदरगाह (फियोर्ड की तरह) होता है, और बोउफ, नॉर्मन भाषा में बुध, का अर्थ झोपड़ी होता है। जैसे ही उसने कई उदाहरण दिए, जो मुझे एक विशिष्ट उदाहरण लग रहा था, वह सामान्य हो गया, ब्रिकेबोउफ ने एल्बेउफ के साथ अपना स्थान ले लिया, और वास्तव में एक ऐसे नाम में जो पहली नज़र में उस स्थान की तरह ही विशिष्ट था, जैसे कि पेनेडेपी नाम, जिसमें दिमाग के लिए स्पष्ट करना लगभग असंभव अस्पष्टताएँ मुझे अनादि काल से एक ऐसे शब्द में समाहित प्रतीत होती थीं जो एक विशेष नॉर्मन पनीर की तरह खुरदुरा, स्वादिष्ट और कठोर था। मुझे गैलिक शब्द पेन को देखकर निराशा हुई जिसका अर्थ पर्वत होता है और जो पेनमार्क में

उतना ही पहचाना जाता है जितना कि एपिनेन्स में। ट्रेन के हर पड़ाव पर मुझे ऐसा महसूस होता था कि अगर हमारे डिब्बे में कोई मेहमान न भी आए तो कम से कम किसी से हाथ मिलाना तो बनता है। इसलिए मैंने अल्बर्टीन से कहा, "जल्दी करो और ब्रिचोट से उन नामों के बारे में पूछो जो तुम जानना चाहती हो। तुमने ही मुझे मार्कोविल ल'ऑर्गुइल्यूज़ के बारे में बताया था।" अल्बर्टीन ने कहा, "हाँ, मुझे वह ऑर्ग्यूइल बहुत पसंद है, वह एक गौरवशाली गाँव है।" ब्रिचोट ने उत्तर दिया, "आपको यह और भी गौरवपूर्ण लगेगा यदि आप इसे फ्रेंच में बदलने या निम्न लैटिन रूप धारण करने के बजाय, जैसा कि हमें बायक्स के बिशप के कार्टुलरी में मिलता है, मार्कोविला सुपरबा, पुराने रूप को अपनाते, जो नॉर्मन के अधिक निकट है, मार्कुलप्लिनविला सुपरबा, यानी मर्कुलफ का गाँव, डोमेन। लगभग उन सभी नामों में जो विले में समाप्त होते हैं, आप इस तट पर अभी भी असभ्य नॉर्मन आक्रमणकारियों के भूत देख सकते हैं। हर्मेनोनविले में, गाड़ी के दरवाजे पर केवल हमारे उत्कृष्ट डॉक्टर खड़े थे, जिनमें स्पष्ट रूप से नॉर्डिक सरदार का कोई अंश नहीं था। लेकिन, अपनी आँखें बंद करके, आप प्रतिष्ठित हेरिमुंड (हेरिमुंडीविला) को देख सकते थे। हालाँकि मैं कभी नहीं समझ पाता कि लोग लोइग्नी और बालबेक-प्लेज के बीच उन सड़कों को क्यों चुनते हैं, बजाय लोइग्नी से ओल्ड बालबेक तक जाने वाली बेहद सुरम्य सड़कों के, श्रीमती वर्दुरिन शायद आपको अपनी गाड़ी में उस रास्ते से ले गई हों। यदि ऐसा है, तो..." आपने इनकारविले या विस्कर गाँव देखा होगा; और मैडम वर्दुरिन के घर आने से पहले, टूरविले में टुरोल्ड गाँव है। इसके अलावा, यहाँ केवल नॉर्मन ही नहीं थे। ऐसा लगता है कि जर्मन (एलेमानी) भी यहाँ तक आए थे: औमेननकोर्ट, एलेमानिकर्टिस—उस नौजवान अधिकारी से इसके बारे में बात न करें जिसे मैं वहाँ देख रहा हूँ; वह अपने चचेरे भाइयों से मिलने जाने से मना कर सकता है। सैक्सन भी थे, जैसा कि सिस्सोन के झरनों से सिद्ध होता है (जो मैडम वर्दुरिन के पसंदीदा भ्रमणों में से एक का लक्ष्य था, और बिल्कुल सही), "जैसे इंग्लैंड में मिडलसेक्स, वेसेक्स हैं। और जो बात समझ से परे है, ऐसा लगता है कि गोथ, जिन्हें दयनीय और दुष्ट कहा जाता है, यहाँ तक आए थे, और यहाँ तक कि मूर भी, क्योंकि मोर्टाग्ने मॉरिटानिया से आया है। उनके निशान गौरविले—गोथोरुनविला में मिलते हैं। लैटिन लोगों के भी कुछ अवशेष बचे हैं, लैग्नी (लैटिनियाकम)।" "मैं थोरपेहोम की व्याख्या जानना चाहता हूँ," एम. डी चार्लस ने कहा। "मैं होम समझता हूँ,"

उन्होंने आगे कहा, जिस पर मूर्तिकार और कॉटार्ड ने एक-दूसरे को इशारे से देखा। "लेकिन थोरपे?" "होम का मतलब वह बिल्कुल नहीं है जो आप स्वाभाविक रूप से मान रहे हैं, बैरन," ब्रिचोट ने कॉटार्ड और मूर्तिकार की ओर शरारती नज़र से देखते हुए उत्तर दिया। "होम का इस संदर्भ में उस लिंग से कोई लेना-देना नहीं है जिससे मुझे मेरी माँ नहीं मिली। होम, होल्म है जिसका अर्थ है एक छोटा द्वीप, इत्यादि... जहाँ तक थोरपे, या गाँव की बात है, तो हम इसे सौ शब्दों में पा सकते हैं जिनसे मैं पहले ही अपने युवा मित्र को ऊब चुका हूँ। इस प्रकार थोरपेहोम में किसी नॉर्मन सरदार का नाम नहीं है, बल्कि नॉर्मन भाषा के शब्द हैं। आप देख सकते हैं कि कैसे इस पूरे देश का जर्मनीकरण हो गया है।" "मुझे लगता है कि यह अतिशयोक्ति है," एम. डी चार्लस ने कहा। "कल मैं ओर्गेविले में था।" "इस बार मैं आपको वह आदमी वापस दे रहा हूँ जिसे मैंने थोरपेहोम में आपसे छीना था, बैरन। मैं ज्यादा ज्ञान बघारना नहीं चाहता, लेकिन रॉबर्ट प्रथम के एक चार्टर के अनुसार, ओर्गेविले, ओटगेरविला के लिए ओटगेर का क्षेत्र है। ये सभी नाम प्राचीन सामंतों के हैं। ऑक्टेविले ला वेनेल, ल'एवेनेल का बिगड़ा हुआ रूप है। एवेनेल मध्य युग में एक प्रतिष्ठित परिवार था। बोर्गुएनॉल्स, जहाँ श्रीमती वर्दुरिन हमें कुछ दिन पहले ले गई थीं, पहले बोर्ग डे मोल्स लिखा जाता था, क्योंकि वह गाँव ग्यारहवीं शताब्दी में बौडॉइन डे मोल्स का था, जैसा कि ला चेज़-बौडॉइन भी था, लेकिन हम यहाँ डोनसिएरेस में हैं।" "हे भगवान, देखो ये सभी अधीनस्थ अंदर आने की कोशिश कर रहे हैं," एम. डे चार्लस ने बनावटी घबराहट के साथ कहा। "मैं तुम्हारे बारे में सोच रहा हूँ, क्योंकि इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, मैं यहाँ से निकल रहा हूँ।" "सुना आपने, डॉक्टर?" ब्रिचोट ने कहा। "बैरन को अपने शव के ऊपर से गुजरने वाले अधिकारियों से डर लगता है। फिर भी, उन्हें यहाँ अपनी पूरी ताकत के साथ आने का पूरा अधिकार है, क्योंकि डोंसिएरेस ठीक वही है जो सेंट-साइर, डोमिनस साइरियाकस है। ऐसे कई शहरों के नाम हैं जिनमें सैंक्टस और सैंक्टा को डोमिनस और डोमिना से बदल दिया गया है। इसके अलावा, इस शांत सैन्य शहर में कभी-कभी सेंट-साइर, वर्साय और यहाँ तक कि फॉन्टेनब्लू जैसी झूठी आभा होती है।"

घर वापसी की इन यात्राओं के दौरान (और वापसी की यात्राओं के दौरान भी) मैं अल्बर्टीन से अपने कपड़े पहनने को कहता था, क्योंकि मुझे अच्छी तरह पता था कि औमेननकोर्ट, डोंसिएरेस, एप्रेविल और सेंट-वास्ट में हमें दोस्तों से संक्षिप्त मुलाकातें मिलेंगी। और मुझे इन

मुलाकातों से कोई आपत्ति नहीं थी, जब वे (हेरिमुंड के क्षेत्र हरमेनोनविले में) एम. डी शेवरेग्नी के आने का रूप लेती थीं, जो अन्य मेहमानों से मिलने के दौरान मुझे अगले दिन ब्यूसोलेल में दोपहर के भोजन पर आमंत्रित करने का अवसर पाते थे, या (डोंसिएरेस में) सेंट-लूप के किसी आकर्षक मित्र का अचानक आ जाना, जिसे वह (यदि स्वयं खाली न हो) कोक-हार्डी के अधिकारियों के भोजनालय या फैसन डोरे के सार्जेंट के भोजनालय से कैप्टन डी बोरोडिनो का निमंत्रण देने के लिए भेजता था। यदि सेंट-लूप अक्सर स्वयं आते थे, तो उनके वहाँ तैनात रहने के पूरे समय के दौरान, मैंने बिना किसी का ध्यान आकर्षित किए अल्बर्टीन को अपनी निगरानी में बंदी बनाकर रखा, हालाँकि मेरी सतर्कता किसी काम की नहीं थी। हालाँकि, एक बार मेरी निगरानी भंग हो गई। जब ट्रेन लंबे समय तक रुकी, तो ब्लोच ने हमें नमस्कार करने के बाद तुरंत अपने पिता से मिलने के लिए प्रस्थान किया, जिन्होंने हाल ही में अपने चाचा की संपत्ति विरासत में पाई थी और ला कमांडरी नाम का एक ग्रामीण घर किराए पर लिया था। उनका मानना था कि एक ग्रामीण सज्जन के लिए वर्दीधारी पोस्टिलियन के साथ हमेशा एक पोस्ट चेज़ में घूमना उचित है। ब्लोच ने मुझसे गाड़ी तक साथ चलने का अनुरोध किया। "पर जल्दी करो, क्योंकि ये चौपाए अधीर हैं, आओ, हे देवताओं के प्रिय, तुम मेरे पिता को प्रसन्न करोगे।" लेकिन मैं अल्बर्टीन को सेंट-लूप के साथ ट्रेन में नहीं छोड़ सकता था; मेरी पीठ पीछे वे बातचीत शुरू कर सकते थे, दूसरे डिब्बे में जा सकते थे, एक-दूसरे को देखकर मुस्कुरा सकते थे, एक-दूसरे को छू सकते थे; जब तक सेंट-लूप वहाँ था, मेरी आँखें अल्बर्टीन पर टिकी हुई थीं और उससे हट ही नहीं रही थीं। अब मैं अच्छी तरह समझ गया था कि ब्लोच, जिसने मुझसे एक एहसान के तौर पर अपने पिता को हालचाल पूछने जाने को कहा था, उसे सबसे पहले तो यह बात अच्छी नहीं लगी कि मैंने मना कर दिया, जबकि ऐसा करने में कोई रोक नहीं थी। कुलियों ने हमें बताया था कि ट्रेन कम से कम पंद्रह मिनट स्टेशन पर ही रहेगी और लगभग सभी यात्री, जिनके बिना ट्रेन नहीं चल सकती थी, उतर चुके थे; और तो और, उसे इस बात में ज़रा भी शक नहीं था कि ऐसा इसलिए था क्योंकि मैं एक घमंडी व्यक्ति था—इस मौके पर मेरे व्यवहार ने उसे इसका पक्का सबूत दे दिया था। क्योंकि वह उन लोगों के नाम अच्छी तरह जानता था जिनके साथ मैं था। दरअसल, एम. डी चार्लस ने कुछ समय पहले मुझसे कहा था, और उन्हें याद भी नहीं था कि परिचय बहुत पहले हो चुका था: "लेकिन आपको अपने

दोस्त का मुझसे परिचय कराना ही होगा, आप मेरे प्रति अनादर दिखा रहे हैं।" उन्होंने ब्लोच से बात की थी, जो उन्हें बेहद प्रसन्न कर रहे थे, इतना कि उन्होंने उनसे कहा था, "मुझे उम्मीद है आपसे फिर मुलाकात होगी।" ब्लोच ने मुझसे कहा, "तो फिर यह अटल है, आप मेरे पिता से हालचाल पूछने के लिए सौ कदम भी नहीं चलेंगे, जो बहुत प्रसन्न होंगे।" मुझे इस बात का दुख हुआ कि मैं सौहार्दपूर्ण व्यवहार नहीं कर पा रहा था, और उससे भी अधिक उस कारण से जिसके बारे में ब्लोच ने सोचा था, और मुझे लगा कि वह यह कल्पना कर रहे थे कि मैं अपने मध्यमवर्गीय मित्रों के प्रति वैसा व्यवहार नहीं करता जैसा मैं उच्च वर्ग के लोगों के साथ करता हूँ। उस दिन से उन्होंने मेरे प्रति वही मैत्रीपूर्ण भाव दिखाना बंद कर दिया और, जो बात मुझे और भी अधिक दुखी करती थी, वह यह थी कि अब वे मेरे चरित्र का उतना सम्मान नहीं करते थे। लेकिन, मुझे गाड़ी में रुकने के पीछे के अपने मकसद को लेकर उसे सच्चाई बताने के लिए, मुझे उसे कुछ बताना पड़ता—यानी कि मैं अल्बर्टीन से ईर्ष्या करती थी—जो उसे यह सोचने देने से भी ज़्यादा दुखदायी होता कि मैं दुनियादारी में नासमझ हूँ। इसलिए, सैद्धांतिक रूप से हम पाते हैं कि गलतफहमियों से बचने के लिए हमें हमेशा खुलकर अपनी बात कहनी चाहिए। लेकिन अक्सर जीवन इन्हें इस तरह से मोड़ देता है कि, उन दुर्लभ परिस्थितियों में जब ऐसा करना संभव हो, तो उन्हें दूर करने के लिए हमें या तो—जो यहाँ नहीं था—कुछ ऐसा बताना पड़ता है जो हमारे मित्र को उस अन्याय से भी ज़्यादा नाराज़ कर दे जो वह हम पर थोपता है, या कोई ऐसा रहस्य जिसका खुलासा—और यही मेरी दुविधा थी—हमें गलतफहमी से भी बदतर लगता है। इसके अलावा, ब्लोच को अपने साथ न जाने का कारण बताए बिना भी, क्योंकि मैं बता नहीं सकती थी, अगर मैं उससे नाराज़ न होने की विनती करती, तो मैं उसे यह दिखाकर उसकी नाराज़गी ही बढ़ा देती कि मैंने इसे देख लिया था। भाग्य के उस फरमान के आगे झुकने के अलावा कोई चारा नहीं था, जिसने अल्बर्टाइन की उपस्थिति को मेरे उसके साथ जाने से रोक दिया था, और उसे यह सोचने पर मजबूर कर दिया था कि यह तो विशिष्ट लोगों की उपस्थिति है, जिनका प्रभाव, यदि वे सौ गुना अधिक विशिष्ट होते, तो भी यही होता कि मैं अपना सारा ध्यान ब्लोच पर ही केंद्रित कर देता और अपनी सारी शिष्टता उसी के लिए बचा कर रखता। यह पर्याप्त है कि संयोगवश, बेतुके ढंग से, एक घटना (इस मामले में अल्बर्टाइन और सेंट-लूप का एक साथ आना) दो नियतियों के बीच आ जाए, जिनकी रेखाएँ

एक-दूसरे की ओर अभिसरित हो रही थीं, और फिर वे विचलित हो जाएँ, एक-दूसरे से दूर होती जाएँ, और फिर कभी न मिलें। और मेरे लिए ब्लोच की मित्रता से भी अधिक अनमोल मित्रताएँ हैं जो नष्ट हो गईं, बिना उस अनजाने अपराधी को कोई अवसर दिए, जो पीड़ित पक्ष को समझा सकता था, जिससे निस्संदेह उसके आत्मसम्मान को ठेस पहुँची थी और उसका क्षणिक स्नेह वापस आ जाता।

ब्लोच की दोस्ती से कहीं अधिक अनमोल दोस्ती कहना भी कोई बड़ी बात नहीं है। उसमें वे सभी कमियाँ थीं जिनसे मुझे सबसे ज़्यादा चिढ़ होती थी। संयोगवश, अल्बर्टीन के प्रति मेरे स्नेह ने उन कमियों को बिल्कुल असहनीय बना दिया था। इस प्रकार, उस संक्षिप्त क्षण में जब मैं रॉबर्ट पर नज़र रखते हुए उससे बात कर रहा था, ब्लोच ने मुझे बताया कि वह श्रीमती बोंटेम्प्स के साथ दोपहर के भोजन पर गया था और 'हेलियोस के पतन' तक सभी ने मेरी बहुत प्रशंसा की थी। “अच्छा,” मैंने सोचा, “चूँकि श्रीमती बोंटेम्प्स ब्लोच को एक प्रतिभाशाली मानती हैं, इसलिए उन्होंने मुझे जो उत्साहपूर्वक समर्थन दिया होगा, वह दूसरों की कही बातों से कहीं अधिक असरदार होगा, यह अल्बर्टीन तक ज़रूर पहुँचेगा। किसी भी दिन उसे पता चल जाएगा, और मुझे आश्चर्य है कि उसकी चाची ने उसे अभी तक यह बात क्यों नहीं बताई, कि मैं एक ‘श्रेष्ठ व्यक्ति’ हूँ।” “हाँ,” ब्लोच आगे बोले, “सबने तुम्हारी प्रशंसा की। मैं अकेला ही इतनी गहरी चुप्पी साधे रहा जैसे मैंने अपने सामने परोसे गए भोजन (जो कि घटिया था) के स्थान पर अफीम के फूल खा लिए हों, जो थेनाटोस और लेथे के परम पूज्य भाई, दिव्य हिप्नोस को प्रिय हैं, जो शरीर और जीभ को सुखद बंधनों में बाँधते हैं। ऐसा नहीं है कि मैं उन भूखे कुत्तों के झुंड से कम तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ जिन्हें मुझे खिलाने का आदेश दिया गया था। बल्कि मैं तुम्हारी प्रशंसा इसलिए करता हूँ क्योंकि मैं तुम्हें समझता हूँ, और वे तुम्हें बिना समझे तुम्हारी प्रशंसा करते हैं। सच कहूँ तो, मैं तुम्हारी इतनी अधिक प्रशंसा करता हूँ कि तुम्हारे बारे में इस तरह सार्वजनिक रूप से बोलना मेरे लिए अनुचित होता, यह मुझे अनुचित लगता।” मेरे हृदय की गहराइयों में छिपी बातों की खुलेआम प्रशंसा करना अपवित्रता है। वे व्यर्थ ही तुमसे मेरे बारे में प्रश्न करें, हे पवित्र पुडोर, क्रोनियन की पुत्री, तुमने मुझे मौन रहने को मजबूर कर दिया। मैंने नाराज़गी दिखाने की शिष्टता नहीं दिखाई, परन्तु यह पुडोर मुझे क्रोनियन से कहीं अधिक, उस विनम्रता के समान प्रतीत हुआ जो एक ऐसे आलोचक को, जो आपकी प्रशंसा करता है,

आपके बारे में बोलने से रोकती है क्योंकि जिस गुप्त मंदिर में आप विराजमान हैं, उस पर अज्ञानी पाठकों और पत्रकारों की भीड़ टूट पड़ेगी; उस राजनेता की विनम्रता के समान जो आपको किसी सम्मान के लिए नामांकित नहीं करता क्योंकि आप उन लोगों की भीड़ में खो जाएँगे जो आपके समकक्ष नहीं हैं; उस शिक्षाविद की विनम्रता के समान जो आपको X—जो प्रतिभाहीन है—के सहकर्मी होने की शर्म से बचाने के लिए आपके लिए मतदान करने से परहेज करता है; संक्षेप में, अधिक सम्मानजनक और साथ ही अधिक आपराधिक, उस विनम्रता के समान, जो उन पुत्रों की होती है जो हमसे अपने गुणवान मृत पिता के बारे में न लिखने की विनती करते हैं, ताकि हम उनके जीवन को लंबा न खींचे और उस निर्धन दिवंगत के चारों ओर महिमा का प्रभामंडल न बनाएँ जो यह पसंद करेगा कि उसका नाम लोगों के होठों पर हो, न कि उन पुष्पमालाओं पर, जो भले ही श्रद्धापूर्वक हाथों से उसकी समाधि पर चढ़ाई गई हों।

यदि ब्लोच ने मुझे अपने पिता से बात करने जाने से रोकने वाले कारण को समझने में असमर्थता दिखाकर मुझे परेशान किया था, और साथ ही मैडम बोंटेम्प्स के यहाँ मेरे बारे में अपमानजनक टिप्पणी करने की बात स्वीकार करके मुझे और भी क्रोधित किया था (अब मुझे समझ में आया कि अल्बर्टीन ने इस दोपहर के भोजन के बारे में कभी कोई ज़िक्र क्यों नहीं किया था और जब मैंने उससे ब्लोच के मेरे प्रति स्नेह के बारे में बात की थी तो वह चुप क्यों रही थी), तो उस युवा इस्राइली ने एम. डी चार्लस पर झुंझलाहट के बिल्कुल विपरीत प्रभाव डाला था।

निश्चित रूप से ब्लोक को अब न केवल यह विश्वास हो गया था कि मैं एक पल भी समझदार लोगों की संगति के बिना नहीं रह सकता, बल्कि यह भी कि, उन लोगों की प्रगति से जलकर जो वे उसके साथ कर सकते थे (उदाहरण के लिए, एम. डी चार्लस), मैं उसके काम में अड़ंगा डालने और उसे उन लोगों से दोस्ती करने से रोकने की कोशिश कर रहा था; लेकिन अपनी तरफ से बैरन को इस बात का अफ़सोस था कि उसने मेरे दोस्त को और ज़्यादा नहीं देखा था। अपनी आदत के अनुसार, उसने इस भावना को ज़ाहिर न होने देने का पूरा ध्यान रखा। उसने मुझसे ब्लोक के बारे में कई सवाल पूछकर बात शुरू की, लेकिन इतने बेपरवाह लहजे में, और इतनी बनावटी दिलचस्पी के साथ, कि किसी को भी यही लगता कि उसने जवाब सुने

ही नहीं। एक तरह की उदासीनता के साथ, एक ऐसे स्वर में जो न केवल बेरुखी, बल्कि पूरी तरह से ध्यान भटकाव को व्यक्त करता था, और मानो केवल मेरे प्रति शिष्टाचारवश: "वह बुद्धिमान लगता है, उसने कहा था कि वह लिखता है, क्या उसमें कोई प्रतिभा है?" मैंने एम. डी चार्लस से कहा कि यह उनकी बहुत मेहरबानी थी कि उन्होंने यह उम्मीद ज़ाहिर की कि वह ब्लोक से फिर मिलेंगे। बैरन ने मेरी बात सुनने का ज़रा भी संकेत नहीं दिया, और जब मैंने चार बार अपनी बात दोहराई और कोई जवाब नहीं मिला, तो मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि कहीं मैं किसी 'ध्वनिक मृगतृष्णा' (acoustic mirage) का शिकार तो नहीं हो गया था, जब मुझे लगा था कि मैंने एम. डी चार्लस को वे शब्द कहते हुए सुना था। "वह बालबेक में रहता है?" बैरन ने एक ऐसे स्वर में कहा जो सवाल पूछने से इतना दूर था कि यह एक परेशानी की बात है कि लिखित भाषा में प्रश्नवाचक चिह्न के अलावा कोई और चिह्न नहीं है, जिससे ऐसे वाक्यों को समाप्त किया जा सके जो देखने में तो सवाल जैसे लगते हैं, लेकिन असल में होते नहीं। यह सच है कि ऐसा कोई चिह्न एम. डी चार्लस के लिए शायद ही काम आता। "नहीं, उन्होंने यहाँ पास में ही एक जगह ली है, 'ला कमांडरी'।" जो कुछ वह जानना चाहता था, वह जान लेने के बाद, एम. डी चार्लस ने ब्लोक के प्रति तिरस्कार महसूस करने का नाटक किया। "कितना भयानक!" उसने ज़ोर से कहा, और उसकी आवाज़ में फिर से वही ज़ोरदार गूंज लौट आई। "जिन जगहों या प्रॉपर्टीज़ को 'ला कमांडरी' कहा जाता है, उन्हें 'ऑर्डर ऑफ़ माल्टा' के नाइट्स ने बनवाया था या वे उनके मालिकाना हक में थीं (जिनमें से मैं भी एक हूँ), ठीक वैसे ही जैसे 'टेम्पल' या 'कैवलेरी' कही जाने वाली जगहें 'टेम्पलर्स' की थीं। मेरा 'ला कमांडरी' में रहना दुनिया की सबसे स्वाभाविक बात होगी। लेकिन एक यहूदी! फिर भी, मुझे हैरानी नहीं हुई; यह अपवित्रता के प्रति एक अजीब सी सहज प्रवृत्ति से आता है, जो उस नस्ल की खासियत है। जैसे ही किसी यहूदी के पास गाँव में कोई जगह खरीदने के लिए काफी पैसे आ जाते हैं, वह हमेशा ऐसी जगह चुनता है जिसे 'प्रायरी', 'एबे', 'मिनस्टर' या 'चैंट्री' कहा जाता हो। एक बार मेरा एक यहूदी अधिकारी के साथ कुछ काम पड़ा था, अंदाज़ा लगाइए वह कहाँ रहता था: 'पॉन्ट-ल'एवेक' में। जब वह मुश्किल में फँसा, तो उसने अपना तबादला 'ब्रिटनी' में, 'पॉन्ट-ल'एबे' करवा लिया। जब वे 'पवित्र सप्ताह' (Holy Week) में वे अश्लील नाटक दिखाते हैं जिन्हें 'द पैशन' कहा जाता है, तो आधे दर्शक यहूदी होते हैं, जो इस सोच में मगन होते हैं कि

वे ईसा मसीह को दूसरी बार सूली पर चढ़ाने जा रहे हैं—कम से कम उनकी प्रतिमा को ही सही। 'लामोरू' के एक कॉन्सर्ट में, मेरे बगल में एक अमीर यहूदी बैंकर बैठा था। उन्होंने 'बर्लियोज़' का 'बॉयहुड ऑफ़ क्राइस्ट' बजाया, तो वह काफी हैरान रह गया। लेकिन जब उसने 'गुड फ्राइडे' का संगीत सुना, तो वह जल्द ही अपने हमेशा वाले आनंदित भाव में लौट आया। तो तुम्हारा दोस्त 'कमांडरी' में रहता है—वह नीच! कितनी क्रूरता है! तुम मुझे वहाँ का रास्ता दिखाओगे," उसने अपनी उदासीनता का भाव फिर से अपनाते हुए कहा, "ताकि मैं किसी दिन वहाँ जाकर देख सकूँ कि हमारी पुरानी जागीरें ऐसी अपवित्रता को कैसे सहन करती हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है, क्योंकि उसके तौर-तरीके अच्छे हैं; ऐसा लगता है कि उसकी परवरिश अच्छी हुई है। अगली बात जो मैं सुनूँगा, वह यह होगी कि पेरिस में उसका पता 'रू डू टेम्पल' है!" इन शब्दों से, एम. डी. चार्लस ने यह आभास दिया कि वह अपनी थ्योरी के समर्थन में बस एक नया उदाहरण ढूँढ़ रहा था; असल में, वह एक तीर से दो निशाने साध रहा था—उसका मुख्य मकसद 'ब्लॉच' का पता जानना था। "तुम बिल्कुल सही कह रहे हो," ब्रिचोट ने बीच में टोकते हुए कहा, "'रू डू टेम्पल' को पहले 'रू डे ला शेवलेरी-डू-टेम्पल' कहा जाता था। और इस सिलसिले में, क्या आप मुझे एक बात कहने की इजाज़त देंगे, बैरन?" उस विद्वान ने कहा। "क्या? क्या बात है?" एम. डी चार्लस ने तीखे स्वर में कहा; उस बीच में की गई टिप्पणी ने उन्हें अपनी जानकारी हासिल करने से रोक दिया था। "नहीं, कुछ नहीं," ब्रिशो ने घबराकर जवाब दिया। "यह बालबेक की व्युत्पत्ति (शब्द की उत्पत्ति) के बारे में है, जिसके बारे में वे मुझसे पूछ रहे थे। 'रू डू टेम्पल' को पहले 'रू बैरे-डू-बैक' के नाम से जाना जाता था, क्योंकि नॉरमैंडी में स्थित 'बैक एबे' (मठ) का 'न्याय-बार' (Bar of Justice) पेरिस में यहीं पर स्थित था।" एम. डी चार्लस ने कोई जवाब नहीं दिया और ऐसा दिखाया मानो उन्होंने कुछ सुना ही न हो—जो कि उनकी बदतमीज़ी के पसंदीदा तरीकों में से एक था। "तुम्हारा दोस्त पेरिस में कहाँ रहता है? चूंकि चार में से तीन सड़कों के नाम किसी चर्च या एबे के नाम पर रखे गए हैं, इसलिए वहाँ और अधिक अपवित्रता होने की पूरी संभावना है। कोई भी यहूदियों को 'बुलेवार्ड डी ला मैडलीन', 'फौबर्ग सेंट-होनोरे' या 'प्लेस सेंट-ऑगस्टिन' जैसी जगहों पर रहने से रोक नहीं सकता। जब तक वे अपनी धूर्तता को एक कदम और आगे नहीं बढ़ाते—और 'प्लेस डू पार्विस नोट्रे-डेम', 'क्काई डी ल'आर्कवेचे', 'रू कैनोइनेस' या 'रू डी ल'एवेमारिया' जैसी पवित्र

जगहों पर अपने डेरे नहीं जमा लेते—तब तक हमें उनकी मजबूरियों को नज़रअंदाज़ करना चाहिए।" हम एम. डी चार्लस को इस बारे में कोई जानकारी नहीं दे सके, क्योंकि उस समय हमें ब्लोक का पता मालूम नहीं था। लेकिन मुझे पता था कि उसके पिता का दफ़्तर 'रू डेस ब्लैंक्स-मैन्टेक्स' में था। "ओह! क्या यह विकृति की पराकाष्ठा नहीं है?" एम. डी चार्लस ने हैरानी से कहा; ऐसा लग रहा था मानो उन्हें इस बात से गहरी संतुष्टि मिल रही हो।

...और फिर व्यंग्यपूर्ण रोष से भरी अपनी ही चीख में। "रू डेस ब्लैंक्स-मैंटॉक्स!" उसने दोहराया—हर शब्दांश पर ज़ोर देते हुए, और बोलते समय हँसते हुए। "कितना बड़ा अपमान है! ज़रा सोचिए कि ये 'व्हाइट मेंटल्स' (सफेद चोगे), जिन्हें मिस्टर ब्लोच ने अपवित्र कर दिया है, असल में उन भिक्षु भाइयों के थे, जिन्हें 'धन्य वर्जिन के सेवक' कहा जाता था, और जिन्हें सेंट लुइस ने वहाँ बसाया था। और इस गली में हमेशा से कोई न कोई धार्मिक संप्रदाय रहता आया है। यह अपवित्रीकरण और भी ज़्यादा शैतानी हरकत लगती है, क्योंकि 'रू डेस ब्लैंक्स-मेंटो' से बस एक पत्थर फेंकने की दूरी पर एक और गली है—जिसका नाम मुझे अभी याद नहीं आ रहा—जो पूरी तरह से यहूदियों के लिए ही है; वहाँ दुकानों के ऊपर हिब्रू अक्षर लिखे हैं, बिना खमीर वाली रोटी की बेकरियाँ हैं, 'कोशर' कसाईखाने हैं—यह तो सचमुच पेरिस का 'जुडेंगासे' (यहूदी बस्ती) ही है। मिस्टर ब्लोच को तो असल में वहीं रहना चाहिए था। बेशक," उन्होंने कलात्मक विषयों पर चर्चा के लिए उपयुक्त एक ज़ोरदार और घमंडी लहजे में अपनी बात जारी रखी—और अपनी वंशानुगत प्रवृत्ति के चलते, उनका सिर थोड़ा पीछे की ओर झुका हुआ था, जिससे उनके चेहरे पर लुइस तेरहवें के ज़माने के किसी पुराने 'मस्किटियर' (सैनिक) जैसा अंदाज़ झलक रहा था—"मैं इन सब चीज़ों में दिलचस्पी सिर्फ़ कला के नज़रिए से ही लेता हूँ। राजनीति मेरे बस की बात नहीं है, और मैं किसी पूरे राष्ट्र को सिर्फ़ इसलिए बुरा नहीं कह सकता, क्योंकि ब्लोच उस राष्ट्र से ताल्लुक रखता है—एक ऐसा राष्ट्र जिसने स्पिनोज़ा जैसे महान विद्वान को जन्म दिया है। और मैं रेम्ब्रांट का इतना बड़ा प्रशंसक हूँ कि मैं उस सुंदरता को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता, जो किसी 'सिनगॉग' (यहूदी प्रार्थना-स्थल) में जाने से महसूस होती है। लेकिन, आखिरकार, कोई भी 'घेटो' (बस्ती) उतनी ही ज़्यादा बेहतरीन होती है, जितनी वह ज़्यादा एकरूप और पूर्ण हो। इसके अलावा, आप इस बात का भी यकीन

रख सकते हैं कि—चूँकि उस नस्ल के लोगों में व्यापारिक प्रवृत्ति और लालच के साथ-साथ 'सैडिज़्म' (दूसरों को तकलीफ़ देकर मज़ा लेने की प्रवृत्ति) भी इस कदर घुली-मिली होती है—कि जिस हिब्रू गली के बारे में मैं आपको बता रहा था, उसकी नज़दीकी और 'इज़राइल के पकवानों' (यहूदी खान-पान) की सुविधा ने ही आपके दोस्त को 'रू डेस ब्लैंक्स-मेंटो' में रहने के लिए मजबूर किया होगा। यह सब कितना अजीब है! वैसे, यह वही जगह थी जहाँ एक बड़ा ही विचित्र यहूदी रहता था; वह 'होस्ट' (पवित्र रोटी) को उबालता था—और उसके बाद, मेरा मानना है कि लोगों ने उसे ही उबाल दिया था! यह बात तो और भी ज़्यादा अजीब है, क्योंकि इससे तो ऐसा लगता है कि किसी यहूदी का शरीर भी 'हमारे प्रभु के शरीर' के बराबर हो सकता है। शायद आपके दोस्त से बात करके, हम 'व्हाइट मेंटल्स' वाले चर्च को देखने का कोई इंतज़ाम कर सकें। ज़रा सोचिए कि यह वही जगह थी जहाँ लुइस डी'ऑरलियन्स की हत्या के बाद—जिसे 'जीन सैन्स प्यूर' ने अंजाम दिया था—उनके शव को रखा गया था; हालाँकि, बदकिस्मती से, इस हत्या से हमें 'ऑरलियन्स' परिवार से छुटकारा नहीं मिल पाया। जहाँ तक मेरी अपनी बात है, तो मैं हमेशा से ही सबसे बेहतरीन..." ...मेरे चचेरे भाई, ड्यूक डी चार्ट्रेस के साथ शर्तों पर; फिर भी, आखिरकार, वे हड़पने वालों की एक नस्ल हैं जिन्होंने लुई XVI की हत्या करवाई और चार्ल्स X तथा हेनरी V को गद्दी से हटा दिया। कोई भी देख सकता है कि उन्हें यह सब कहाँ से मिला, जब उनके पूर्वजों में 'मोंसियर' शामिल हैं—जिन्हें निस्संदेह यह उपाधि इसलिए दी गई थी क्योंकि वे सबसे अद्‌भुत 'बुढ़िया' थे—और साथ ही रीजेंट और बाकी लोग भी। कैसा परिवार है!" यह भाषण—यहूदी-विरोधी था या यहूदी-समर्थक, यह इस बात पर निर्भर करता है कि कोई इसके वाक्यांशों के बाहरी अर्थ को देखता है या उन इरादों को जो उनमें छिपे थे—मेरे लिए एक ऐसी टिप्पणी के कारण हास्यास्पद रूप से बाधित हो गया, जो मोरेल ने मेरे कान में फुसफुसाई थी; इस बात से एम. डी शार्लस को बहुत गुस्सा आया। मोरेल, जिसने यह बात बखूबी नोटिस की थी कि ब्लोक ने कैसा प्रभाव डाला है, उसने मेरे कान में फुसफुसाते हुए मुझे धन्यवाद दिया कि मैंने उसे 'वहाँ से चलता कर दिया'; और फिर उसने व्यंग्य करते हुए कहा: "वह तो वहीं रुकना चाहता था; यह सब ईर्ष्या की वजह से है, वह मेरी जगह लेना चाहता है। बिल्कुल एक यहूदी की तरह!" "हम इस ठहराव का—जो अभी भी जारी है—फायदा उठाकर आपके दोस्त से उसके रीति-रिवाजों के बारे में कुछ

स्पष्टीकरण क्यों नहीं माँग लेते? क्या आप उसे वापस नहीं बुला सकते?" एम. डी शार्लस ने अनिश्चितता की चिंता के साथ मुझसे पूछा। "नहीं, यह असंभव है; वह एक बग्घी में बैठकर जा चुका है, और इसके अलावा, वह मुझसे नाराज़ भी है।" "धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद," मोरेल ने राहत की साँस लेते हुए कहा। "आपका बहाना बिल्कुल बेतुका है; कोई भी बग्घी का पीछा करके उसे पकड़ सकता है, आपको मोटर-कार लेने से भला कौन रोक सकता है?" एम. डी शार्लस ने उस लहजे में जवाब दिया, जो ऐसे व्यक्ति का होता है जिसे हर किसी को अपने सामने झुकते देखने की आदत हो। लेकिन, जब उन्होंने देखा कि मैं चुप हूँ, तो उन्होंने मुझसे बड़े ही ढिठाई भरे अंदाज़ में—और साथ ही उम्मीद की एक आखिरी किरण के साथ—पूछा: "यह कमोबेश काल्पनिक बग्घी आखिर है क्या?" "यह एक खुली हुई 'पोस्ट-शेज़' (बग्घी) है, जो अब तक तो ज़रूर 'ला कमांडरी' तक पहुँच चुकी होगी।" जब उन्हें लगा कि अब कुछ भी करना असंभव है, तो एम. डी शार्लस ने हार मान ली और मज़ाकिया होने का दिखावा किया। "मैं समझ सकता हूँ कि वे एक नई 'ब्रूहम' (बंद बग्घी) लेने के विचार से क्यों कतरा रहे होंगे। हो सकता है कि उसे खरीदने में उनका सारा पैसा ही साफ हो जाता।" आखिरकार, हमें सूचित किया गया कि ट्रेन चलने ही वाली है, और सेंट-लूप हमसे विदा लेकर चले गए। लेकिन यह एकमात्र ऐसा दिन था जब हमारी गाड़ी में चढ़कर उसने, अनजाने में ही सही, मुझे तकलीफ़ पहुँचाई—जब मैंने एक पल के लिए सोचा कि मैं उसे अल्बर्टिन के साथ छोड़कर ब्लोक के साथ चला जाऊँ। बाकी समय उसकी मौजूदगी मुझे परेशान नहीं करती थी। क्योंकि अल्बर्टिन खुद ही, मुझे किसी भी बेचैनी से बचाने के लिए, किसी न किसी बहाने से खुद को ऐसी स्थिति में बिठा लेती थी कि वह रॉबर्ट से अनजाने में भी छू न सके—वह इतनी दूर बैठती थी कि उसे रॉबर्ट की तरफ हाथ भी नहीं बढ़ाना पड़ता था; और जैसे ही रॉबर्ट आता, वह उससे नज़रें फेरकर, दूसरे यात्रियों में से किसी के साथ दिखावटी और लगभग बनावटी बातचीत में मग्न हो जाती—और यह नाटक तब तक जारी रखती जब तक कि सेंट-लूप चला नहीं जाता। इस तरह, डोनसिएर्स में वह हमसे मिलने जो आता था, उससे मुझे न कोई तकलीफ़ होती थी और न ही कोई असुविधा; ये मुलाकातें बाकी मुलाकातों से किसी भी तरह से अलग या बेमेल नहीं थीं, और मुझे वे सभी...

...और वे मुझे इसलिए भी सुखद लगे क्योंकि, एक तरह से कहूँ तो, वे मेरे लिए इस धरती की श्रद्धा और निमंत्रण लेकर आए थे। गर्मियों के बीतते ही, बालबेक से डोविल की हमारी यात्रा के दौरान, जब मैंने दूर सेंट-पियरे डेस इफ़्स का वह जल-स्थल देखा—जहाँ शाम के एक पल के लिए, चट्टानों की चोटियाँ गुलाबी रंग में दमक उठती थीं, ठीक वैसे ही जैसे सूर्यास्त के समय पहाड़ों पर जमी बर्फ़ चमकती है—तो अब उसे देखकर मेरे मन में वह उदासी नहीं उमड़ती थी (मैं उस उदासी की बात नहीं कर रहा जो पहली शाम को, उसकी अजीब और अचानक ऊँचाई को देखकर मेरे मन में जागी थी—जब उसे देखकर मेरे मन में बालबेक जाने के बजाय ट्रेन पकड़कर वापस पेरिस लौट जाने की इतनी तीव्र इच्छा जागी थी)—बल्कि अब मुझे वह नज़ारा याद आता था जिसके बारे में एल्स्टिर ने सुबह मुझे बताया था कि वहाँ से सूर्योदय से ठीक पहले के समय में उसका आनंद लिया जा सकता है; वह समय जब चट्टानों से टकराकर इंद्रधनुष के सारे रंग बिखर जाते हैं, और जब एल्stि र ने अक्सर उस छोटे लड़के को जगाया था—जिसने एक साल तक उनके लिए 'मॉडल' का काम किया था—ताकि वे उसे रेत पर नग्न अवस्था में चित्रित कर सकें। सेंट-पियरे डेस इफ़्स नाम सुनते ही अब मेरे मन में बस यही विचार आता था कि अभी कुछ ही देर में वहाँ एक अजीब, बुद्धिमान और सजे-धजे पचास वर्षीय व्यक्ति का आगमन होगा, जिसके साथ मैं शैटोब्रियांड और बाल्ज़ाक के बारे में बातें कर सकूँगा। और अब, शाम की धुंध में—इनकारविल की उस चट्टान के पीछे, जिसने अतीत में मेरे मन को अनगिनत सपनों से भर दिया था—मुझे जो कुछ दिखाई दिया (मानो उसकी पुरानी बलुआ पत्थर की दीवार पारदर्शी हो गई हो), वह था एम. डे कैम्ब्रेमर के एक चाचा का आरामदायक घर; एक ऐसा घर जिसके बारे में मैं जानता था कि यदि मैं 'ला रास्पेलियर' में भोजन नहीं करना चाहूँ या बालबेक वापस नहीं लौटना चाहूँ, तो वहाँ मेरा सदैव ही गर्मजोशी से स्वागत किया जाएगा। इस प्रकार, केवल इस क्षेत्र के स्थानों के नाम ही अपना प्रारंभिक रहस्य नहीं खो चुके थे, बल्कि वे स्थान स्वयं भी अपना रहस्य गँवा बैठे थे। वे नाम—जिनका रहस्य पहले ही आधा समाप्त हो चुका था और जिसे 'शब्द-व्युत्पत्ति' (etymology) ने तर्क-बुद्धि से प्रतिस्थापित कर दिया था—अब एक और पायदान नीचे उतर आए थे। घर लौटते समय, हर्मेनोनविल, इनकारविल और हरम्बोविल में, जब ट्रेन रुकती थी, तो हमें कुछ धुंधली आकृतियाँ दिखाई देती थीं जिन्हें हम शुरू में पहचान नहीं पाते थे; और ब्रिशो, जिसे कुछ भी

दिखाई नहीं देता था, शायद अँधेरे में उन्हें हेरीमुंड, विस्कर और हेरीम्बाल्ड के भूत समझ बैठता। लेकिन वे हमारी बोगी तक आ गए। वे और कोई नहीं, बल्कि एम. डी कैम्ब्रेमर थे—जिनका अब वर्दुरिन लोगों से कोई संपर्क नहीं रह गया था—जो अपने मेहमानों को विदा करने आए थे; और अपनी पत्नी तथा माँ के दूत के तौर पर, मुझसे यह पूछने आए थे कि क्या मैं उन्हें 'अपने साथ ले जाने' दूँगा, ताकि वे मुझे कुछ दिनों के लिए फ़ेटर्न में रोक सकें। वहाँ मुझे बारी-बारी से दो लोग मिलते: एक अत्यंत प्रतिभाशाली गायिका, जो मुझे ग्लक के सारे गीत सुनाती; और एक मशहूर शतरंज खिलाड़ी, जिसके साथ मैं शतरंज के शानदार मुकाबले खेल सकता। इन सब से मछली पकड़ने या खाड़ी में नौका-विहार (yachting) के मेरे कार्यक्रमों में कोई बाधा नहीं पड़ती, और न ही वर्दुरिन लोगों की दावतों में कोई रुकावट आती; क्योंकि मार्किस ने मुझे वचन दिया था कि वे मुझे उन दावतों के लिए 'उधार' दे देंगे—यानी मुझे वहाँ भेज देंगे और फिर वापस ले आएँगे—ताकि मुझे ज़्यादा सुविधा हो और यह भी पक्का हो जाए कि मैं वापस ज़रूर आऊँगा। "लेकिन मुझे यकीन नहीं होता कि इतनी ऊँचाई पर जाना आपके लिए अच्छा होगा। मुझे पता है कि मेरी बहन तो इसे बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं कर पाती। वह तो बहुत ही बुरी हालत में वापस लौटती! वैसे भी, आजकल उसकी तबीयत बिल्कुल ठीक नहीं है। सच कहूँ तो, आपकी हालत भी कुछ वैसी ही हो गई है! कल तो आप शायद अपने पैरों पर खड़े भी नहीं हो पाएँगे!" और यह कहते हुए वह हँसी से लोटपोट हो गया—उसकी हँसी में कोई द्वेष नहीं था, बल्कि वह उसी वजह से हँस रहा था जिस वजह से वह अक्सर तब हँसता था जब वह सड़क पर किसी लँगड़े आदमी को लँगड़ाते हुए चलते देखता था, या जब उसे किसी बहरे व्यक्ति से बात करनी पड़ती थी। "और इससे पहले? क्या? आपको तो पिछले पंद्रह दिनों से कोई दौरा ही नहीं पड़ा? जानते हैं, यह तो सचमुच कमाल की बात है। सच में, आपको फ़ेटर्न आकर कुछ दिन रुकना चाहिए; वहाँ आप अपनी बीमारी के दौरों के बारे में मेरी बहन से खुलकर बात कर पाएँगे।" Incarville में Marquis de Montpeyroux थे, जो Féterne नहीं जा पाए थे क्योंकि वे शिकार पर गए हुए थे; वे 'ट्रेन से मिलने' के लिए ऊँचे बूट पहने और अपनी टोपी में तीतर का पंख लगाए आए थे, ताकि जाने वाले मेहमानों से और साथ ही मुझसे हाथ मिला सकें। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं हफ़्ते के जिस भी दिन चाहूँ, उनके बेटे के आने की उम्मीद करूँ—जिसको बुलाने के लिए उन्होंने मेरा शुक्रिया अदा किया—और यह भी जोड़ा

कि अगर मैं उस लड़के को थोड़ा-बहुत पढ़ा दूँ तो उन्हें बहुत खुशी होगी। या फिर M. de Crécy थे, जो अपना खाना पचाने के लिए बाहर आए थे—जैसा कि उन्होंने अपनी पाइप पीते हुए बताया—और जिन्होंने एक सिगार, या शायद एक से ज़्यादा सिगार भी लिए, और मुझसे कहा: "अच्छा, आपने हमारी अगली 'Lucullus शाम' के लिए कोई दिन तय नहीं किया? क्या हमारे पास चर्चा करने के लिए कुछ नहीं है? मुझे आपको याद दिलाने की इजाज़त दें कि हमने Montgomery के दो परिवारों वाला सवाल अभी तक हल नहीं किया है। हमें सच में इसे हल करना ही होगा। मैं आप पर ही भरोसा कर रहा हूँ।" कुछ लोग तो बस अख़बार खरीदने आए थे। और भी कई लोग आए और हमसे बातचीत की—जिनके बारे में मुझे अक्सर शक होता था कि वे अपने छोटे से घर के सबसे नज़दीकी स्टेशन के प्लेटफ़ॉर्म पर सिर्फ़ इसलिए मौजूद थे क्योंकि उनके पास अपने जान-पहचान के लोगों से थोड़ी देर बात करने के अलावा और कोई बेहतर काम नहीं था। असल में, इस छोटी रेलगाड़ी के ये ठहराव सामाजिक जीवन के किसी भी दूसरे दृश्य की तरह ही थे। ट्रेन भी शायद उस भूमिका के प्रति सचेत थी जो उसे निभानी थी; उसमें एक तरह की मानवीय दयालुता आ गई थी। वह धैर्यवान और शांत स्वभाव की थी; वह पीछे रह जाने वाले लोगों का तब तक इंतज़ार करती थी जब तक वे चाहते थे, और यहाँ तक कि चलने के बाद भी वह उन लोगों को लेने के लिए रुक जाती थी...

जो उसे इशारा करते थे; फिर वे हाँफते हुए उसके पीछे दौड़ते थे, जिसमें वे खुद उसी की तरह लगते थे, लेकिन उससे इस बात में अलग थे कि वे उसे पूरी रफ़्तार से पकड़ने के लिए दौड़ रहे थे, जबकि वह सिर्फ़ एक समझदारी भरी धीमी गति से चल रहा था। और इसलिए हर्मेनोनविल, हरमबोविल, इनकारविल अब मुझे नॉर्मन विजय की ऊबड़-खाबड़ भव्यता की भी याद नहीं दिलाते थे; वे उस अजीब उदासी से पूरी तरह छुटकारा पाकर ही संतुष्ट नहीं थे, जिसमें मैंने उन्हें बहुत पहले नम शाम की हवा में डूबा हुआ देखा था। डोंसिएरेस! मेरे लिए, इसे जानने और अपने सपने से जागने के बाद भी, उस नाम में कितनी सारी चीज़ें लंबे समय तक ज़िंदा रहीं—सुहावनी, ठंडी सड़कें, रोशन खिड़कियाँ, और पक्षियों का रसीला मांस। डोंसिएरेस! अब यह उस स्टेशन से ज़्यादा कुछ नहीं था जहाँ मोरेल ट्रेन में चढ़ता था; एगलेविल (एक्विला विला) वह स्टेशन था जहाँ हमें अक्सर राजकुमारी शेरबाटोफ़ हमारा इंतज़ार करती मिलती

थीं; और मेनविल वह स्टेशन था जहाँ अल्बर्टाइन अच्छी शामों में ट्रेन से उतरती थी—जब, अगर वह ज़्यादा थकी हुई नहीं होती थी, तो वह मेरे साथ एक पल और बिताना चाहती थी; अगर वह पगडंडी से जाती, तो उसे पारविल (पैटर्नी विला) पर उतरने की तुलना में ज़्यादा दूर नहीं चलना पड़ता था। न केवल मुझे अब उस अकेलेपन का बेचैन करने वाला डर महसूस नहीं होता था जिसने पहली शाम मेरे दिल को जकड़ लिया था, बल्कि मुझे अब उसके फिर से जागने का भी कोई डर नहीं था; न ही मुझे इस ज़मीन पर खुद को अजनबी या अकेला महसूस करने की ज़रूरत थी—यह ज़मीन न केवल शाहबलूत और टैमरिक्स के पेड़ों के लिए मशहूर थी, बल्कि ऐसी दोस्ती के लिए भी जानी जाती थी जो सफ़र की शुरुआत से लेकर आखिर तक एक लंबी ज़ंजीर बनाती थी। यह ज़ंजीर नीली पहाड़ियों की तरह बीच-बीच में टूटती रहती थी—कहीं चट्टानों की दरारों में छिपी होती, तो कहीं सड़क के किनारे लगे चूने के पेड़ों के पीछे; लेकिन हर पड़ाव पर कोई न कोई मिलनसार सज्जन मेरा स्वागत करने के लिए मौजूद होता था। वह गर्मजोशी से हाथ मिलाकर मेरा रास्ता रोकता था, ताकि मुझे सफ़र बहुत लंबा न लगे, और ज़रूरत पड़ने पर मेरे साथ आगे का सफ़र तय करने की पेशकश भी करता था। अगले स्टेशन पर कोई और व्यक्ति इंतज़ार कर रहा होता था—इस तरह, छोटी सी ट्राम की सीटी हमें एक दोस्त से अलग करती थी, ताकि हम दूसरे दोस्तों से मिल सकें। सबसे अलग-थलग घरों और रेलवे लाइन के बीच, जो उनके बगल से लगभग उतनी ही तेज़ी से गुज़रती थी जितनी तेज़ी से कोई व्यक्ति पैदल चलता है, दूरी इतनी कम थी कि जिस पल, वेटिंग-रूम के बाहर बने प्लेटफ़ॉर्म से, उन घरों के मालिकों ने हमें आवाज़ दी, तो हमें लगभग ऐसा लगा मानो वे अपने ही दरवाज़े की चौखट से या अपने बेडरूम की खिड़की से हमें बुला रहे हों; जैसे कि वह छोटी सी स्थानीय रेल लाइन किसी गाँव के कस्बे की एक आम सड़क हो और वह अलग-थलग खड़ा आलीशान घर किसी परिवार का शहरी निवास हो। और यहाँ तक कि उन कुछ स्टेशनों पर भी जहाँ कोई 'शुभ संध्या' (good evening) सुनाई नहीं देती थी, वहाँ की खामोशी में भी एक सुकून देने वाली और मन को शांत करने वाली गहराई थी; क्योंकि मैं जानता था कि यह खामोशी उन दोस्तों की नींद से बनी थी जो पास के ही किसी बड़े घर में जल्दी सो गए थे—जहाँ अगर मुझे किसी मदद के लिए उन्हें जगाना भी पड़ता, तो मेरे आने का स्वागत वे खुशी-खुशी करते। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि अपनापन और जान-पहचान का एहसास हमारे

समय को इस कदर भर देता है कि कुछ ही महीनों बाद, हमारे पास उस शहर में एक भी खाली पल नहीं बचता—जबकि पहली बार वहाँ पहुँचने पर, दिन के पूरे बारह घंटे हमारे अपने थे और हम उन्हें अपनी मर्ज़ी से इस्तेमाल कर सकते थे। अगर संयोगवश उन बारह घंटों में से कोई एक घंटा खाली भी बच जाता, तो अब मेरे मन में यह विचार बिल्कुल नहीं आता कि मैं उसे किसी चर्च को देखने में बिताऊँ—जिस चर्च को देखने के लिए ही मैं पहले बालबेक आया था—या फिर एल्सटिर (Elstir) द्वारा बनाई गई किसी पेंटिंग की तुलना उस स्केच से करूँ जो मैंने उसके स्टूडियो में देखा था; बल्कि अब तो मेरा मन यही करता कि मैं जाकर M. Féré के साथ शतरंज का एक और दाँव खेलूँ। सच कहूँ तो, बालबेक के आस-पास के इस इलाके का यही एक अजीब सा प्रभाव—और साथ ही इसका आकर्षण भी—था कि यह जगह मेरे लिए सही मायनों में एक 'दोस्ताना जगह' बन गई थी। हालाँकि इस इलाके की बनावट और समुद्र तट के पूरे विस्तार में फैली खेती-बाड़ी के अलग-अलग तरीकों की वजह से, इन अलग-अलग दोस्तों से मिलने के लिए मुझे जो यात्राएँ करनी पड़ती थीं, उन्हें अनिवार्य रूप से एक 'सफ़र' का रूप मिल जाता था; लेकिन साथ ही, उन यात्राओं का असली स्वरूप घटकर बस एक सामाजिक मेल-जोल और मुलाकातों की एक श्रृंखला तक ही सीमित रह गया था। वही जगहों के नाम—जो पहले मुझे इतने परेशान करते थे कि 'कंट्री हाउस ईयर बुक' का वह चैप्टर, जिसमें 'डिपार्टमेंट ऑफ़ द मांच' के बारे में लिखा था, जब मैं पलटता था, तो मुझे वैसी ही गहरी भावना महसूस होती थी जैसी रेलवे टाइम-टेबल देखकर होती थी—अब मेरे लिए इतने जाने-पहचाने हो गए थे कि, खुद टाइम-टेबल में भी, मैं उस पेज को देख सकता था जिसका शीर्षक था: 'बाल्बेक से डोविल, डोनसिएरेस होते हुए', और मुझे वैसी ही सुखद शांति मिलती थी जैसी पतों की डायरेक्टरी देखकर मिलती है। इस बेहद सामाजिक घाटी में, जिसके किनारों पर मुझे लगता था कि दोस्तों की एक बड़ी टोली जमा है—चाहे वे दिखाई दें या न दें—शाम की काव्यात्मक पुकार अब उल्लू या मेंढक की नहीं थी, बल्कि मि. डी क्रिक्केटोट का 'क्या हाल है?' या ब्रिकोट का 'ज़ैरे!' [ग्रीक] थी। इसका माहौल अब मेरे मन में कोई बेचैनी पैदा नहीं करता था, और, पूरी तरह से इंसानी महक से भरा होने के कारण, इसमें सांस लेना आसान था—बल्कि, यह ज़रूरत से ज़्यादा सुकून देने वाला था। इससे मुझे कम से कम एक फ़ायदा तो

हुआ ही, और वह यह कि मैं चीज़ों को केवल व्यावहारिक नज़रिए से देखने लगा। अल्बर्टिन से शादी करने का विचार मुझे पूरी तरह से पागलपन जैसा लगा।

अध्याय IV

अल्बर्टीन के प्रति अचानक घृणा का भाव जागा। सूर्योदय के समय तीव्र पीड़ा हुई। मैं तुरंत अल्बर्टीन के साथ पेरिस के लिए रवाना हो गया।

मैं तो बस एक आखिरी बार रिश्ता तोड़ने के मौके का इंतज़ार कर रहा था। और, एक शाम, जब माँ अगले दिन कॉम्ब्रे के लिए निकलने वाली थीं—जहाँ उन्हें अपनी माँ की एक बहन के आखिरी पलों में उनके पास रहना था—और मुझे पीछे छोड़ रही थीं ताकि मैं समुद्र की ताज़ी हवा का फ़ायदा उठा सकूँ (जैसा कि मेरी दादी चाहती थीं), तो मैंने उन्हें बताया कि मैंने पक्का फ़ैसला कर लिया है कि मैं अल्बर्टिन से शादी नहीं करूँगा और बहुत जल्द ही उससे मिलना-जुलना बंद कर दूँगा। मुझे इस बात की खुशी थी कि इन शब्दों के ज़रिए, मैं माँ के जाने से ठीक पहले उन्हें कुछ हद तक तसल्ली दे पाया। उन्होंने मुझसे यह बात छिपाई नहीं कि उन्हें सचमुच बहुत ज़्यादा तसल्ली मिली थी। मुझे अल्बर्टिन से भी इस बारे में बात करनी थी। जब मैं उसके साथ 'ला रास्पेलियर' से वापस लौट रहा था—और बाकी लोग गाड़ी से उतर चुके थे, कुछ 'सेंट-मार्स ले वेटू' पर, कुछ 'सेंट-पियरे डेस इफ़्स' पर, और कुछ 'डॉनसिएरेस' पर—तो मैं खुद को बहुत खुश और उससे पूरी तरह से अलग महसूस कर रहा था; अब जब गाड़ी में सिर्फ़ हम दोनों ही बचे थे, तो मैंने आखिरकार इस विषय पर बात शुरू करने का फ़ैसला किया। सच तो यह है कि 'बालबेक' ग्रुप की जिस लड़की से मैं सचमुच प्यार करता था—भले ही उस वक़्त वह वहाँ मौजूद नहीं थी, ठीक वैसे ही जैसे उसके बाकी दोस्त भी नहीं थे, लेकिन वह जल्द ही वहाँ वापस आने वाली थी (मुझे उन सभी के साथ वक़्त बिताना अच्छा लगता था, क्योंकि उनमें से हर एक में मुझे—ठीक वैसे ही जैसे उस दिन लगा था जब मैंने उन्हें पहली बार देखा था—बाकी सभी की कुछ न कुछ खास झलक दिखाई देती थी, मानो वे किसी बिल्कुल ही अलग नस्ल के लोग हों)—वह लड़की 'एंड्री' थी। चूँकि वह कुछ ही दिनों में फिर से बालबेक वापस आने वाली थी, तो यह तय था कि वह आते ही मुझसे मिलने आएगी। और फिर—ताकि अगर मैं उससे शादी न करना चाहूँ तो मैं आज़ाद रहूँ, वेनिस जा सकूँ, लेकिन साथ ही जब वह बालबेक में हो, तो वह पूरी तरह से मेरी हो—इसके लिए मैंने जो योजना

बनाई, वह यह थी कि मैं उससे मिलने के लिए बिल्कुल भी उत्सुक न दिखूँ। और जैसे ही वह पहुँचेगी, जब हम आपस में बात कर रहे होंगे, तो मैं उससे कहूँगा: "कितनी अफ़सोस की बात है कि मैं तुमसे कुछ हफ़्ते पहले नहीं मिला। अगर मिला होता, तो मुझे तुमसे प्यार हो जाता; लेकिन अब मेरा दिल किसी और का हो चुका है। पर इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, हम अक्सर मिलते रहेंगे, क्योंकि मैं अपने दूसरे प्यार को लेकर दुखी हूँ, और तुम मुझे सांत्वना देने में मदद करोगी।" इस बातचीत के बारे में सोचते हुए मैं मन ही मन मुस्कुराया; इस चाल से मैं एंड्री को यह एहसास दिलाऊँगा कि मुझे उससे सच में प्यार नहीं है; और इस तरह वह मुझसे ऊबेगी नहीं, और मैं उसके स्नेह का आनंद और सुखद लाभ उठा सकूँगा। लेकिन इन सब बातों ने इस बात को और भी ज़रूरी बना दिया कि मैं आखिरकार अल्बर्टिन से गंभीरता से बात करूँ—ताकि मेरा व्यवहार अभद्र न लगे—और चूँकि मैंने खुद को उसकी सहेली के लिए समर्पित करने का फ़ैसला कर लिया था, इसलिए अल्बर्टिन को भी यह साफ़-साफ़ समझा देना ज़रूरी था कि मुझे उससे प्यार नहीं है। मुझे उसे यह बात तुरंत बता देनी चाहिए थी, क्योंकि एंड्री किसी भी दिन आ सकती थी। लेकिन जैसे ही हम पारविल के करीब पहुँचे, मुझे लगा कि उस शाम हमारे पास समय नहीं होगा, और बेहतर यही होगा कि जो बात अब पक्के तौर पर तय हो चुकी थी, उसे अगले दिन के लिए टाल दिया जाए। इसलिए, मैंने खुद को उस शाम वर्दुरिन्स के यहाँ होने वाले हमारे डिनर के बारे में बात करने तक ही सीमित रखा। जब वह अपना लबादा पहन रही थी—और ट्रेन अभी-अभी इनकारविल (पारविल से ठीक पहले वाला स्टेशन) से निकली ही थी—तो उसने मुझसे कहा: "तो फिर कल, एक बार फिर वर्दुरिन्स के यहाँ; तुम यह मत भूलना कि तुम मुझे लेने आओगे।" मैं थोड़ा तीखेपन से जवाब देने से खुद को रोक नहीं पाया: "हाँ, यह तभी होगा जब मैं उन्हें 'फेल' न कर दूँ, क्योंकि मुझे अब इस तरह की ज़िंदगी सचमुच बेवकूफी भरी लगने लगी है। खैर, अगर हम वहाँ जाते हैं, ताकि ला रास्पेलियर में मेरा समय पूरी तरह से बर्बाद न हो, तो मुझे मैडम वेर्दुरिन से किसी ऐसी चीज़ के बारे में पूछना याद रखना होगा जो मेरे लिए बहुत दिलचस्प साबित हो सकती है, मुझे अध्ययन के लिए एक विषय दे सकती है, और मुझे खुशी भी दे सकती है, क्योंकि इस साल बालबेक में मुझे सचमुच बहुत कम खुशी मिली है।" "तुम मेरे साथ बहुत विनम्र नहीं हो, लेकिन मैं तुम्हें माफ करती हूँ, क्योंकि मैं देख सकती हूँ कि तुम्हारे नर्व्स खराब हैं। यह खुशी

क्या है?" "यह कि मैडम वेर्डुरिन मुझे एक ऐसे संगीतकार की कुछ रचनाएँ सुनने दें, जिसका काम वह बहुत अच्छी तरह जानती हैं। मैं उसकी एक रचना खुद जानती हूँ, लेकिन लगता है कि उसकी और भी रचनाएँ हैं और मैं जानना चाहूँगी कि उसका बाकी काम छपा है या नहीं, और क्या वह उससे अलग है जो मैं जानती हूँ।" "कौन सा संगीतकार?" "मेरे प्यारे बच्चे, जब मैं तुम्हें बता दूँगी कि उसका नाम विंटुइल है, तो क्या तुम्हें कुछ ज़्यादा समझ में आ जाएगा?" हमने अपने मन में हर संभव विचार पर सोचा होगा, और फिर भी सच हमारे दिमाग में कभी नहीं आया होगा, और यह बाहर से आता है, जब हम इसकी बिल्कुल भी उम्मीद नहीं कर रहे होते, तभी यह हमें अपना क्रूर वार देता है और हमें हमेशा के लिए घायल कर देता है। "तुम सोच भी नहीं सकते कि तुम मुझे कितना हँसाते हो," अल्बर्टिन ने जवाब दिया, जब वह खड़ी हुई, क्योंकि ट्रेन धीमी हो रही थी। "इसका मतलब मेरे लिए तुम्हारी सोच से कहीं ज़्यादा है, और मैडम वेर्डुरिन के बिना भी मैं तुम्हें वह सारी जानकारी दे सकती हूँ जिसकी तुम्हें ज़रूरत है। तुम्हें याद है जब मैंने तुम्हें अपनी एक दोस्त के बारे में बताया था जो मुझसे उम्र में बड़ी है, जो मेरे लिए माँ और बहन जैसी रही है, जिसके साथ मैंने ट्रिएस्ट में अपनी ज़िंदगी के सबसे खुशी भरे साल बिताए थे, और जिससे मैं कुछ ही हफ्तों में चेरबर्ग में मिलने की उम्मीद कर रही हूँ, जब हम साथ मिलकर अपनी यात्रा शुरू करेंगे (यह थोड़ा अजीब लगता है, लेकिन तुम जानते हो कि मुझे समुद्र कितना पसंद है), ठीक है, यही दोस्त (ओह! बिल्कुल भी उस तरह की औरत नहीं जैसी तुम सोच रहे हो!), वह है..."

क्या यह कमाल की बात नहीं है? वह तुम्हारे विंटुइल की बेटी की सबसे प्यारी और सबसे करीबी दोस्त है, और मैं विंटुइल की बेटी को भी लगभग उतना ही अच्छी तरह जानता हूँ, जितना उसे जानता हूँ। मैं हमेशा उन्हें अपनी दो बड़ी बहनें कहकर बुलाता हूँ। "मुझे इस बात का ज़रा भी अफ़सोस नहीं है कि मैं तुम्हें यह दिखा पा रही हूँ कि संगीत के इस मामले में तुम्हारी छोटी अल्बर्टिन तुम्हारे काम आ सकती है—जिसके बारे में तुम कहते हो, और बिल्कुल सही कहते हो, कि मुझे इस बारे में कुछ भी पता नहीं है।" जब हम पारविल स्टेशन में प्रवेश कर रहे थे—जो कोम्ब्रे और मोंटजूवेन से इतनी दूर था, और विंटुइल की मृत्यु के इतने लंबे समय बाद का समय था—तब कहे गए इन शब्दों को सुनकर मेरे दिल में एक छवि हिल उठी; एक ऐसी छवि जिसे मैंने इतने सालों से अपने भीतर सँजोकर रखा था कि अगर मैं बहुत

पहले, जब मैंने इसे पहली बार सँजोया था, यह अंदाज़ा भी लगा पाती कि इसमें कोई घातक शक्ति छिपी है, तो भी मैं यही मान लेती कि समय बीतने के साथ-साथ यह शक्ति पूरी तरह से खत्म हो गई होगी। यह छवि मेरे अस्तित्व की गहराइयों में जीवित बनी रही—ठीक ओरेस्टेस की तरह, जिसकी मृत्यु को देवताओं ने इसलिए रोक दिया था ताकि वह तय दिन पर अपनी मातृभूमि लौटकर एगमेमनन के हत्यारे को सज़ा दे सके—शायद एक सज़ा के तौर पर, या एक प्रतिशोध के तौर पर (कौन कह सकता है?)—इस बात की सज़ा कि मैंने अपनी दादी को मरने दिया था। यह छवि उस घने अंधेरे से अचानक ऊपर उठकर सामने आई, जिसमें यह हमेशा के लिए दफ़न हो चुकी लगती थी; और एक 'बदला लेने वाले' की तरह मुझ पर वार किया—शायद इसलिए ताकि मेरे लिए एक नए, भयानक और मेरे कर्मों के अनुरूप जीवन की शुरुआत हो सके; और शायद इसलिए भी ताकि मेरी आँखों के सामने उन घातक परिणामों को पूरी तरह से स्पष्ट कर सके, जिन्हें बुरे कर्म अनिश्चित काल तक जन्म देते रहते हैं—न केवल उन लोगों के लिए जिन्होंने वे बुरे कर्म किए हैं, बल्कि उन लोगों के लिए भी जिन्होंने और कुछ नहीं किया—जिन्होंने बस यही सोचा कि वे तो बस एक कौतूहल भरे और मनोरंजक तमाशे को देख रहे हैं—ठीक मेरी ही तरह, अफ़सोस, उस दोपहर बहुत पहले मोंटजूवेन में—जब मैं एक झाड़ी के पीछे छिपा हुआ था; जहाँ (ठीक वैसे ही जैसे मैं स्वान के प्रेम-प्रसंगों के किस्से बड़े चाव से सुनता था) मैंने अपने भीतर 'ज्ञान' के उस घातक मार्ग को—जो मुझे अंततः दुख देने वाला था—खतरनाक हद तक फैलने दिया था। और ठीक उसी समय, अपने सबसे गहरे दुख से मुझे लगभग गर्व का, और लगभग खुशी का भी एहसास हुआ—ठीक उस इंसान की तरह जिसे अभी-अभी लगा ज़ोरदार झटका, एक ही छलांग में उस मुकाम तक पहुँचा देता है, जहाँ कोई भी अपनी मर्ज़ी से किए गए प्रयासों से कभी नहीं पहुँच सकता था। अल्बर्टिन—जो मिस विंटुइल और उनकी सहेली की मित्र थी, और खुद भी एक सक्रिय तथा पेशेवर 'सैफिस्ट' (समलैंगिक स्त्री) थी—वह, मेरी उस कल्पना की तुलना में, जो मैंने उसके बारे में तब की थी जब मुझे उस पर सबसे ज़्यादा शक था, ठीक वैसी ही थी—जैसे 1889 की प्रदर्शनी का वह छोटा-सा 'अकूस्टिकॉन' (श्रवण-यंत्र) जिसकी तुलना... जिनसे घर के एक छोर से दूसरे छोर तक आवाज़ पहुँचाने की उम्मीद भी मुश्किल से की जाती थी—वे ही टेलीफ़ोन आज सड़कों, शहरों, खेतों और समुद्रों के ऊपर से गुज़रते हुए एक देश को दूसरे देश से जोड़ रहे

हैं। यह एक भयानक 'अज्ञात क्षेत्र' (terra incognita) था, जहाँ मैं अभी-अभी पहुँचा था—दुखों का एक ऐसा नया दौर जो मैंने कभी सपनों में भी नहीं सोचा था, और जो अब मेरे सामने खुल रहा था। और फिर भी, वास्तविकता की यह बाढ़ जो हमें पूरी तरह से अपनी चपेट में ले लेती है—भले ही यह हमारी दबी-सहमी और छोटी-सी कल्पनाओं की तुलना में कितनी ही विशाल क्यों न हो—उसकी आशंका उन्हें पहले से ही थी। निस्संदेह, यह कुछ-कुछ वैसा ही था जैसा मैंने अभी-अभी जाना था; कुछ-कुछ वैसा ही जैसा अल्बर्टिन और मैडम विन्तेउइल की दोस्ती में था—कुछ ऐसा जिसे मेरा मन कभी खुद से गढ़ नहीं सकता था, लेकिन जिसकी एक धुंधली-सी झलक मुझे तब मिली थी, जब मैंने अल्बर्टिन और आंद्रे को एक साथ देखकर बेचैनी महसूस की थी। अक्सर, रचनात्मक भावना की कमी के कारण ही हम दुखों की पूरी गहराई तक नहीं पहुँच पाते। और सबसे भयानक वास्तविकता भी, अपने साथ दुखों के अलावा, हमें एक महान खोज का आनंद भी देती है—क्योंकि यह बस उस बात को एक नया और स्पष्ट रूप दे देती है, जिस पर हम लंबे समय से बिना किसी भनक के मन ही मन विचार करते आ रहे थे। ट्रेन 'पारविल' स्टेशन पर रुक चुकी थी। चूँकि उस डिब्बे में हम ही अकेले यात्री थे, इसलिए कुली ने—अपने काम की निरर्थकता के एहसास से दबी हुई आवाज़ में, और फिर भी आदत के वशीभूत होकर—ज़ोर से आवाज़ लगाई: "पारविल!" अल्बर्टिन, जो मेरे ठीक सामने खड़ी थी, यह देखकर कि वह अपनी मंज़िल पर पहुँच चुकी है, हमारे डिब्बे में आगे बढ़ी और दरवाज़ा खोल दिया। लेकिन उतरने के लिए उसने जो हरकत की, उससे मेरा दिल असहनीय पीड़ा से भर गया। ऐसा लगा, मानो—भले ही अल्बर्टिन का शरीर मुझसे एक गज़ की दूरी पर, मेरे शरीर से पूरी तरह स्वतंत्र स्थिति में खड़ा दिखाई दे रहा था—फिर भी हमारे बीच की यह 'स्थानिक दूरी' (space separation)—जिसे कोई कुशल चित्रकार अपने चित्र में ज़रूर दिखाता—केवल एक भ्रम मात्र थी। ऐसा लगा कि यदि कोई व्यक्ति चीज़ों का एक नया और यथार्थ चित्र बनाना चाहे, तो उसे अब अल्बर्टिन को मुझसे कुछ दूरी पर नहीं, बल्कि मेरे ही भीतर चित्रित करना होगा। उसके इस तरह दूर जाने से मुझे इतनी ज़्यादा मानसिक पीड़ा हुई कि, उसके पास पहुँचकर, मैंने बड़ी बेताबी से उसका हाथ थाम लिया। मैंने उससे पूछा: "क्या यह बिल्कुल ही असंभव होगा... "बाल्बेक में रात?" "वैसे तो नहीं। लेकिन मुझे बहुत ज़ोर की नींद आ रही है।" "तुम मेरी बहुत बड़ी मदद करोगी..." "ठीक है, तो फिर, हालाँकि मुझे ज़रा

भी समझ नहीं आ रहा; तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? फिर भी, मैं आऊँगी।" मेरी माँ सो रही थीं, जब अल्बर्टिन के लिए दूसरी मंज़िल पर एक कमरा बुक करने के बाद, मैं अपने कमरे में दाखिल हुआ। मैं खिड़की के पास बैठ गया, अपनी सिसकियों को दबाते हुए, ताकि मेरी माँ —जो मुझसे बस एक पतली-सी दीवार से अलग थीं—मुझे सुन न लें। मैंने नहीं...

मुझे खिड़कियों के शटर बंद करने की भी याद रही, क्योंकि एक पल के लिए, जब मैंने अपनी नज़र ऊपर उठाई, तो आसमान में अपने सामने मुझे वही हल्की-सी चमक दिखाई दी—ठीक वैसी ही जैसे कोई आग बुझ रही हो—जैसी मैंने रिवेबेल के एक रेस्टोरेंट में देखी थी; यह चमक एल्स्टिर की बनाई एक पेंटिंग में थी, जिसमें उन्होंने डूबते सूरज के असर को दिखाया था। मुझे याद आया कि जब मैं पहली बार बालबेक पहुँचा था, उस दिन ट्रेन से मैंने शाम का यही नज़ारा देखा था, तो मैं कितना रोमांचित हो उठा था—एक ऐसी शाम जो रात की नहीं, बल्कि एक नए दिन की शुरुआत थी। लेकिन अब मेरे लिए कोई भी दिन नया नहीं रहा था; कोई भी दिन अब मेरे मन में किसी अनजान खुशी की चाह नहीं जगाता था। अब तो हर दिन बस मेरी तकलीफ़ों को ही और लंबा खींचता था—तब तक, जब तक कि मुझमें उन तकलीफ़ों को सहने की हिम्मत पूरी तरह खत्म न हो जाए। पारविल के कसीनो में कोटार्ड ने मुझसे जो बात कही थी, अब वह बात बिना किसी शक के पूरी तरह सच साबित हो चुकी थी। जिस बात का डर मुझे लंबे समय से सता रहा था—जिसके बारे में अल्बर्टिन को लेकर मेरे मन में धुंधला-सा शक था—जिस बात का इशारा मेरी अंतरात्मा को अल्बर्टिन के पूरे व्यक्तित्व में दिखाई देता था, लेकिन जिसे मेरे मन की चाहत से प्रभावित मेरी बुद्धि मानने से लगातार इनकार करती रही थी—वह बात अब सच साबित हो चुकी थी! अब अल्बर्टिन के पीछे मुझे समुद्र के नीले पहाड़ नहीं दिखाई देते थे, बल्कि मुझे मोंटजूवेन का वह कमरा दिखाई देता था, जहाँ वह मैडम विंटुइल की बाहों में समा रही थी—और उस पल उसके होंठों से जो हंसी फूट रही थी, उसमें उसकी उस अजीबोगरीब खुशी की गूंज साफ सुनाई दे रही थी। आखिर, अल्बर्टिन जैसी खूबसूरत लड़की के साथ भला यह कैसे मुमकिन था कि मैडम विंटुइल—जिनके मन में वैसी ही इच्छाएँ थीं—उन्होंने अल्बर्टिन से उन इच्छाओं को पूरा करने के लिए न कहा हो? और इस बात का पक्का सबूत कि अल्बर्टिन को मैडम विंटुइल के इस प्रस्ताव से कोई झटका नहीं लगा था, बल्कि उसने खुशी-खुशी अपनी सहमति दे दी थी—यह था कि उन दोनों के बीच

कभी कोई झगड़ा नहीं हुआ; बल्कि इसके विपरीत, उन दोनों की नज़दीकियां लगातार बढ़ती ही चली गईं। और अल्बर्टिन का वह नज़ाकत भरा अंदाज़—जिसमें वह अपनी ठुड्डी रोज़मोंड के कंधे पर टिकाकर, मुस्कुराते हुए उसकी ओर देखती थी, और फिर उसके गले पर एक प्यार भरा चुंबन अंकित कर देती थी—वही अंदाज़ जिसने मुझे मैडम विंटुइल की याद दिला दी थी। उस समय, जब मैं इस अंदाज़ का मतलब समझने की कोशिश कर रहा था, तो मैं यह मानने में हिचकिचा रहा था कि किसी हाव-भाव से बनने वाली कोई खास आकृति या रेखा—अगर हूबहू वैसी ही हो—तो उसका कारण भी ज़रूर वही खास तरह की इच्छा या प्रवृत्ति ही होगी; क्योंकि जहाँ तक मुझे पता था, हो सकता है कि अल्बर्टिन ने बस मैडम विंटुइल को देखकर ही यह अंदाज़ सीख लिया हो। धीरे-धीरे, वह बेजान-सा आसमान अब आग की तरह दहकने लगा। मैं, जो तब तक छोटी-छोटी चीज़ों—कॉफ़ी और दूध का प्याला, बारिश की आवाज़, हवा का शोर—को देखकर हमेशा मुस्कुराते हुए ही जागता था, मुझे लगा कि जो दिन बस एक पल में शुरू होने वाला था, और उसके बाद आने वाले सभी दिन, अब मेरे लिए किसी अनजान खुशी की कोई उम्मीद नहीं लाएँगे; वे तो बस मेरे दुख-दर्द को और लंबा ही खींचेंगे। मैं फिर भी ज़िंदगी से चिपका रहा; मैं जानता था कि अब ज़िंदगी से उम्मीद करने लायक कुछ भी नहीं बचा था, सिवाय क्रूरता के। मैं समय की परवाह किए बिना लिफ़्ट की तरफ़ भागा, ताकि लिफ़्ट-बॉय को बुला सकूँ—जो रात में चौकीदार का भी काम करता था—और उससे कह सकूँ कि वह अल्बर्टिन के कमरे में जाए और उसे बताए कि मुझे उससे कुछ बहुत ज़रूरी बात करनी है, अगर वह वहीं मुझसे मिल सके। "मैडमोज़ेल कहती हैं कि वह खुद आपके पास आना ज़्यादा पसंद करेंगी," उसने जवाब दिया। "वह बस एक पल में यहाँ पहुँच जाएँगी।" और सचमुच, कुछ ही देर में अल्बर्टिन अपनी ड्रेसिंग-गाउन पहने हुए अंदर आ गई। "अल्बर्टिन," मैंने उससे फुसफुसाते हुए कहा—उसे आगाह करते हुए कि वह अपनी आवाज़ ऊँची न करे, ताकि मेरी माँ न जाग जाएँ; हम दोनों के बीच बस एक पतली-सी दीवार का ही फ़ासला था। यह दीवार, जो आज हमारे लिए एक परेशानी बन गई थी—क्योंकि इसकी वजह से हमें फुसफुसाकर ही बात करनी पड़ रही थी—वही दीवार, बीते दिनों में, जब यह मेरी दादी की भावनाओं को इतनी साफ़-साफ़ ज़ाहिर करती थी, तब किसी मधुर संगीत जैसी पारदर्शी लगती थी। "मुझे शर्म आ रही है कि मैंने तुम्हें परेशान किया। सुनो। तुम्हें बात समझाने के

लिए, मुझे तुम्हें कुछ ऐसा बताना होगा जो तुम नहीं जानती। जब मैं यहाँ आया था, तो मैं एक ऐसी औरत को पीछे छोड़ आया था जिससे मुझे शादी कर लेनी चाहिए थी—एक ऐसी औरत जो मेरे लिए अपना सब कुछ कुर्बान करने को तैयार थी। उसे आज सुबह ही एक सफ़र पर निकलना था, और पिछले एक हफ़्ते से, हर रोज़ मैं इसी उधेड़बुन में था कि क्या मुझमें इतनी हिम्मत होगी कि मैं उसे यह तार (telegram) न भेजूँ कि मैं वापस आ रहा हूँ। मुझमें वह हिम्मत तो आ गई, लेकिन इस बात ने मुझे इतना दुखी कर दिया कि मैंने सोचा कि मैं खुदकुशी कर लूँ। इसीलिए कल रात मैंने तुमसे पूछा था कि क्या तुम बालबेक आकर मेरे साथ सो सकती हो। अगर मुझे मरना ही था, तो मैं मरने से पहले तुमसे विदा लेना चाहता था।" और मैंने अपने आँसुओं को खुलकर बहने दिया—वे आँसू, जो मेरी इस मनगढ़ंत कहानी की वजह से बिल्कुल स्वाभाविक लग रहे थे। "मेरे प्यारे बच्चे, काश मुझे पता होता, तो मैं पूरी रात तुम्हारे पास ही बिताती," अल्बर्टिन रोते हुए बोली। उसे यह खयाल कभी आया ही नहीं कि शायद मैं इस औरत से शादी कर लूँ, और इस तरह 'अच्छी शादी' करने का उसका अपना मौका हाथ से निकल जाए; वह उस दुख से इतनी सच्ची तरह से हिल गई थी, जिसका कारण तो मैं उससे छिपा सका था, लेकिन उस दुख की असलियत और उसकी तीव्रता नहीं। "इसके अलावा," उसने मुझसे कहा, "कल रात, जब हम ला रास्पेलियर से आ रहे थे, तो मैंने देखा कि तुम बहुत बेचैन और दुखी थे; मुझे डर था कि ज़रूर कुछ न कुछ गड़बड़ है।" असल में, मेरा दुख तो पारविल पहुँचने पर ही शुरू हुआ था, और मेरी घबराहट—जो कि दुख से बिल्कुल अलग थी, लेकिन खुशकिस्मती से अल्बर्टिन ने उसे दुख ही समझ लिया था—इस बात से पैदा हुई थी कि मुझे उसके साथ कुछ और दिन बिताने पड़ेंगे। उसने आगे कहा: "अब मैं तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी; मैं अपना सारा समय यहीं तुम्हारे साथ बिताऊँगी।" असल में, वह मुझे उस ज़हर का एकमात्र इलाज दे रही थी—और सिर्फ़ वही मुझे यह इलाज दे सकती थी—जो मुझे अंदर ही अंदर जला रहा था। यह इलाज, इत्तेफ़ाक से, उस ज़हर जैसा ही था; क्योंकि, भले ही एक मीठा था और दूसरा कड़वा, लेकिन दोनों ही अल्बर्टिन से ही पैदा हुए थे। ठीक उसी पल, अल्बर्टिन—जो मेरी बीमारी थी—मुझे तकलीफ़ देना बंद करके, मुझे छोड़कर चली गई—वही अल्बर्टिन।

...इलाज—जो एक बीमार व्यक्ति की तरह ही कमज़ोर था। लेकिन मैंने सोचा कि वह जल्द ही बालबेक छोड़कर चेरबर्ग चली जाएगी, और वहाँ से ट्रिएस्ट जाएगी। उसकी पुरानी आदतें फिर से ज़ोर पकड़ने लगेंगी। मेरी सबसे बड़ी इच्छा यह थी कि मैं अल्बर्टिन को जहाज़ पर चढ़ने से रोकूँ, और उसे अपने साथ पेरिस ले जाने की कोशिश करूँ। यह सच था कि पेरिस से, बालबेक के मुकाबले कहीं ज़्यादा आसानी से, अगर वह चाहे तो ट्रिएस्ट जा सकती थी; लेकिन पेरिस में हम देखेंगे—शायद मैं मैडम डी गुएरमांटेस से कह सकूँ कि वह मिस विंटुइल की सहेली पर परोक्ष रूप से अपना प्रभाव डालें, ताकि वह ट्रिएस्ट में न रुके, और कहीं और कोई काम स्वीकार कर ले—शायद प्रिंस डी —— के यहाँ, जिनसे मैं मैडम डी विलेपैरिसिस के यहाँ और सच कहूँ तो मैडम डी गुएरमांटेस के यहाँ भी मिला था। और वह प्रिंस—भले ही अल्बर्टिन अपनी सहेली से मिलने उसके घर जाना चाहे—मैडम डी गुएरमांटेस की चेतावनी पर, उन दोनों को मिलने से रोक सकता था। बेशक, मैं खुद को यह याद दिला सकता था कि पेरिस में, अगर अल्बर्टिन की वैसी ही रुचियाँ थीं, तो उसे अपनी उन रुचियों को पूरा करने के लिए और भी बहुत से लोग मिल जाएँगे। लेकिन ईर्ष्या की हर भावना अपने आप में अनोखी होती है, और उस व्यक्ति—इस मामले में मिस विंटुइल की सहेली—की छाप उस पर होती है, जिसने उस भावना को जगाया हो। मिस विंटुइल की सहेली ही मेरे मन में सबसे ज़्यादा छाई हुई थी। वह रहस्यमयी जुनून, जिसके साथ मैं पहले ऑस्ट्रिया के बारे में सोचा करता था—क्योंकि वह वह देश था जहाँ से अल्बर्टिन आई थी (उसके चाचा वहाँ दूतावास में काउंसलर थे), क्योंकि उसकी भौगोलिक विशेषताएँ, वहाँ रहने वाली जाति, उसकी ऐतिहासिक इमारतें और वहाँ के नज़ारे—इन सबका अध्ययन मैं एक एटलस की तरह, या तस्वीरों के एक एल्बम की तरह—अल्बर्टिन की मुस्कान और उसके तौर-तरीकों में कर सकता था; वह रहस्यमयी जुनून मुझे अब भी महसूस हो रहा था, लेकिन प्रतीकों के उलट जाने के कारण, अब वह जुनून भय और आतंक के रूप में बदल गया था। हाँ, अल्बर्टिन वहीं से आई थी। और वहीं—हर घर में—उसे यह पक्का भरोसा हो सकता था कि अगर मिस विंटुइल की सहेली नहीं भी मिली, तो भी उसी तरह के दूसरे लोग उसे ज़रूर मिल जाएँगे। उसके बचपन की आदतें फिर से ताज़ा हो जातीं; वे तीन महीने बाद क्रिसमस पर मिलते, फिर नए साल पर—ये वो तारीखें थीं जो मेरे लिए अपने आप में ही तकलीफ़देह थीं। इसकी वजह थी उन दिनों की एक गहरी, सहज याद

—उन दिनों की जब बहुत पहले, क्रिसमस की पूरी छुट्टियों के दौरान, उन्होंने मुझे गिल्बर्ट से अलग कर दिया था। लंबे डिनर-पार्टियों और आधी रात की मौज-मस्ती के बाद—जब हर कोई खुश और जोश से भरा होता—अल्बर्टिन अपने दोस्तों के साथ ठीक वैसा ही बर्ताव करती जैसा मैंने उसे एंड्री के साथ करते देखा था। हालाँकि एंड्री के लिए उसकी दोस्ती मासूम थी, फिर भी उसका बर्ताव वैसा ही था—शायद ठीक वैसा ही जैसा मैंने मोंटजूवेन में मैडमोइसेल विंटुइल को अपनी सहेली के साथ करते देखा था, जब उसकी सहेली उसे लुभा रही होती थी। मैडमोइसेल विंटुइल की जगह—जब उसकी सहेली उसे पूरी तरह से अपने आगोश में लेने से पहले उसकी इच्छाओं को जगा रही होती थी—अब मुझे अल्बर्टिन का चेहरा दिखाई देता था। अल्बर्टिन का वह चेहरा, जिसे मैंने भागते हुए और फिर खुद को पूरी तरह से सौंपते हुए, एक अजीब और गहरी हँसी हँसते हुए सुना था। अब मैं जिस गहरी पीड़ा से गुज़र रहा था, उसकी तुलना में वह ईर्ष्या क्या थी—वह ईर्ष्या जो मुझे उस दिन महसूस हुई थी जब सेंट-लूप मुझसे और अल्बर्टिन से डोंसिएरेस में मिला था और अल्बर्टिन ने उसके साथ छेड़छाड़ भरे इशारे किए थे? या वह ईर्ष्या जो मुझे तब महसूस हुई थी जब मैंने उस अनजान व्यक्ति के बारे में सोचा था, जिसका मैं ऋणी था—जिसकी वजह से अल्बर्टिन ने मुझे पेरिस में अपने पहले चुंबन दिए थे, ठीक उसी दिन जब मैं मैडम डी स्टरमारिया के खत का इंतज़ार कर रहा था? सेंट-लूप या किसी भी दूसरे नौजवान की वजह से पैदा होने वाली उस दूसरी तरह की ईर्ष्या का कोई मोल नहीं था। उस स्थिति में, ज़्यादा से ज़्यादा मुझे बस एक प्रतिद्वंद्वी से डरने की ज़रूरत पड़ती—एक ऐसा प्रतिद्वंद्वी जिसे मैं हराने की कोशिश कर सकता था। लेकिन यहाँ मेरा प्रतिद्वंद्वी मेरे जैसा नहीं था; उसके हथियार अलग थे। मैं उसके साथ एक ही मैदान पर मुकाबला नहीं कर सकता था, न ही अल्बर्टिन को वैसी ही खुशियाँ दे सकता था—और सच कहूँ तो, मैं यह सोच भी नहीं सकता था कि वे खुशियाँ आखिर कैसी होंगी। हमारी ज़िंदगी के कई पलों में, हम अपने पूरे भविष्य को दाँव पर लगा देते हैं—सिर्फ़ एक ऐसी शक्ति के लिए जो अपने आप में बेहद मामूली होती है। एक ज़माना था जब मैं मैडम ब्लैटिन से जान-पहचान बनाने के लिए अपनी ज़िंदगी की सारी अच्छी चीज़ें छोड़ने को तैयार हो जाता—सिर्फ़ इसलिए क्योंकि वह मैडम स्वान की सहेली थी। आज, सिर्फ़ इसलिए कि अल्बर्टिन ट्रिएस्ट न जाए, मैं हर मुमकिन तकलीफ़ सह लेता; और अगर वह भी काफ़ी न होती, तो मैं उसे खुद

तकलीफ़ देता—उसे सबसे अलग कर देता, ताले में बंद करके रखता, और उसके पास जो थोड़ा-बहुत पैसा था, वह भी उससे छीन लेता, ताकि उसके लिए सफ़र करना भौतिक रूप से नामुमकिन हो जाए। ठीक वैसे ही, जैसे बहुत पहले, जब मैं बालबेक जाने के लिए बेचैन था, तो मुझे वहाँ जाने के लिए जिस चीज़ ने उकसाया था, वह थी एक फ़ारसी चर्च को देखने की चाहत, और सुबह-सवेरे तूफ़ानी समुद्र को देखने की ललक; ठीक वैसे ही, अब जब मैं यह सोच रहा था कि शायद अल्बर्टिन ट्रिएस्ट जा रही है, तो जिस बात से मेरा दिल टुकड़े-टुकड़े हो रहा था, वह यह थी कि वह क्रिसमस की रात वहाँ Mlle. Vinteuil की सहेली के साथ बिताएगी—क्योंकि कल्पना, जब अपना स्वभाव बदलकर संवेदनशीलता का रूप ले लेती है, तो इसका मतलब यह नहीं होता कि वह एक ही समय में ज़्यादा तस्वीरों पर अपना नियंत्रण जमा लेती है। अगर कोई मुझसे कहता कि इस पल वह न तो चेरबर्ग में है और न ही ट्रिएस्ट में, और यह भी कि उसके अल्बर्टिन से मिलने की कोई गुंजाइश ही नहीं है, तो मैं खुशी के मारे कितना रोता! मेरी पूरी ज़िंदगी और मेरा भविष्य कितना बदल गया होता! और फिर भी, मैं यह बात अच्छी तरह जानता था कि मेरी ईर्ष्या का यह किसी एक जगह पर टिक जाना...

यह बात मनमानी लग सकती है कि अगर अल्बर्टिन की ऐसी इच्छाएँ थीं, तो वह उन्हें दूसरी लड़कियों के साथ पूरा कर सकती थी। और शायद यही लड़कियाँ भी, अगर उन्हें अल्बर्टिन कहीं और दिखाई देती, तो मेरे दिल को इतनी बुरी तरह से न तड़पातीं। यह ट्रिएस्ट था—वह अनजान दुनिया जिसमें मुझे लगता था कि अल्बर्टिन को मज़ा आता है; जहाँ उसकी यादें, उसकी दोस्ती, उसके बचपन के प्यार बसे थे—वही दुनिया एक अजीब और समझ से परे माहौल पैदा करती थी। यह माहौल ठीक वैसा ही था जैसा कॉम्ब्रे में मेरे बेडरूम तक पहुँचता था—नीचे डाइनिंग-रूम से, जहाँ मुझे अजनबियों के साथ बातचीत और हँसी-मज़ाक की आवाज़ें सुनाई देती थीं, और जहाँ चाकू-काँटों की खनखनाहट के बीच मेरी माँ होती थीं, जो मुझे 'गुड-नाइट' कहने के लिए ऊपर मेरे कमरे में नहीं आती थीं। यह माहौल ठीक वैसा ही था जैसा स्वान के लिए उन घरों में भर जाता था, जहाँ ओडेट रात को कुछ ऐसी खुशियों की तलाश में जाती थी जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। अब मैं ट्रिएस्ट के बारे में यह नहीं सोचता था कि वह कोई प्यारी जगह है जहाँ लोग गहरे विचारों में डूबे रहते हैं, जहाँ सूरज डूबते समय आसमान सुनहरा हो जाता है, और जहाँ चर्च की घंटियों की आवाज़ में एक

उदासी घुली होती है; बल्कि अब मैं उसे एक 'शापित शहर' मानता था—एक ऐसा शहर जिसे मैं जलकर राख होते देखना चाहता था, और जिसे मैं इस असली दुनिया से पूरी तरह मिटा देना चाहता था। वह शहर मेरे दिल में एक पक्की और हमेशा रहने वाली जगह बनाकर बस गया था। यह सोचकर ही मेरा दिल दहल जाता था कि अल्बर्टिन जल्द ही चेरबर्ग और ट्रिएस्ट के लिए रवाना हो जाएगी; और बालबेक में ही रुके रहने का विचार भी मुझे उतना ही डरावना लगता था। क्योंकि अब जब मेरी प्रेमिका (अल्बर्टिन) और मैडम विंटुइल के बीच गहरी नज़दीकी का सच लगभग पक्का हो चुका था, तो मुझे ऐसा लगता था कि जिस भी पल अल्बर्टिन मेरे साथ नहीं होती (और कई-कई दिन तो ऐसे बीतते थे जब उसकी मौसी की वजह से मैं उससे मिल भी नहीं पाता था), वह अपना समय ब्लॉक की बहन और उसकी चचेरी बहन के साथ बिता रही होती—और शायद दूसरी लड़कियों के साथ भी। यह सोचकर ही मैं पागल-सा हो जाता था कि शायद आज शाम ही वह ब्लॉक की उन लड़कियों से मिल रही होगी। और इसलिए, जब उसने मुझसे कहा कि अगले कुछ दिनों तक वह हर पल मेरे साथ ही रहेगी, तो मैंने जवाब दिया: "लेकिन असल बात तो यह है कि मैं वापस पेरिस जाना चाहता हूँ। क्या तुम मेरे साथ नहीं चलोगी? और क्या तुम पेरिस में हमारे साथ कुछ दिनों के लिए आकर रहना पसंद नहीं करोगी?" किसी भी कीमत पर मुझे उसे अकेला होने से रोकना था—कम-से-कम कुछ दिनों के लिए तो उसे अपने साथ ही रखना था—ताकि मुझे यह पक्का यकीन हो जाए कि वह मैडम विंटुइल से मिल नहीं सकती। विंतेउइल की सहेली। असल में, वह घर में मेरे साथ अकेली ही होती, क्योंकि मेरी माँ ने—मेरे पिता के एक निरीक्षण दौरे पर जाने का मौका पाकर—मेरी दादी की इच्छाओं का पालन करते हुए, इसे अपना फ़र्ज़ मान लिया था कि वह कोम्ब्रे जाएँ और वहाँ मेरी दादी की बहनों में से एक के साथ कुछ दिन बिताएँ। माँ को अपनी मौसी से कोई प्यार नहीं था, क्योंकि वह मेरी दादी के प्रति—जो उनके लिए इतनी प्यार करने वाली थीं—वैसी बहन नहीं बन पाई थीं, जैसी एक बहन को होना चाहिए। इसलिए, जब बच्चे बड़े होते हैं, तो वे उन लोगों को नाराज़गी के साथ याद करते हैं जिन्होंने उनके साथ बुरा बर्ताव किया हो। लेकिन माँ, अब खुद दादी बन चुकी थीं, इसलिए उनमें नाराज़गी की भावना नहीं बची थी; अपनी माँ का जीवन उनके लिए एक शुद्ध और मासूम बचपन जैसा था, जिससे वह उन यादों को चुनती थीं जिनकी मिठास या कड़वाहट ही दूसरे लोगों के प्रति उनके व्यवहार को तय

करती थी। हमारी मौसी शायद माँ को कुछ अनमोल बातें बता सकती थीं, लेकिन अब उन्हें वे बातें जानने में मुश्किल होती, क्योंकि उनकी मौसी बहुत बीमार थीं (लोग उन्हें कैंसर होने की बात कर रहे थे), और माँ खुद को कोस रही थीं कि वह पहले क्यों नहीं गईं—मेरे पिता का साथ देने के लिए—और उन्हें ऐसा करने का एक और कारण मिल गया, ठीक वैसे ही जैसे वह मेरी दादी के पिता की पुण्यतिथि पर उनकी कब्र पर फूल चढ़ाने जाती थीं—जो कि एक बहुत बुरे पिता रहे थे—और वही फूल ले जाती थीं जिन्हें मेरी दादी वहाँ ले जाया करती थीं। और इस तरह, उस कब्र के पास—जो अब खुलने ही वाली थी—मेरी माँ उन प्यार भरे शब्दों को पहुँचाना चाहती थीं, जो मेरी मौसी ने मेरी दादी को कभी नहीं कहे थे। जब माँ कोम्ब्रे में थीं, तो वह कुछ ऐसे कामों में खुद को व्यस्त रखती थीं जिन्हें मेरी दादी हमेशा करवाना चाहती थीं, लेकिन सिर्फ़ तभी जब वे काम उनकी बेटी की देखरेख में किए जाएँ। इसलिए वे काम अभी तक शुरू भी नहीं हुए थे; माँ नहीं चाहती थीं कि मेरे पिता से पहले पेरिस छोड़कर जाने से, उन्हें उस दुख का बोझ बहुत ज़्यादा महसूस हो—जिसमें वह भी शामिल थे—लेकिन जो उन्हें उतना परेशान नहीं कर सकता था, जितना कि वह माँ को कर रहा था। "आह! अभी तो यह मुमकिन नहीं होगा," अल्बर्टिन ने मुझे भरोसा दिलाया। "इसके अलावा, अगर वह महिला चली गई हैं, तो तुम्हें इतनी जल्दी पेरिस वापस जाने की क्या ज़रूरत है?" "क्योंकि बालबेक की तुलना में, जहाँ उसने कभी कदम नहीं रखा और जिससे मुझे अब नफ़रत होने लगी है, मैं उस जगह पर ज़्यादा सहज महसूस करूँगा जहाँ मैंने उसे जाना है।" क्या अल्बर्टिन को बाद में यह एहसास हुआ कि उस दूसरी औरत का कभी कोई वजूद ही नहीं था, और अगर उस रात मैंने सचमुच मौत की कामना की थी, तो उसकी वजह यह थी कि उसने नासमझी में मुझे यह बता दिया था कि मैडम विंटुइल की सहेली के साथ उसके बहुत गहरे संबंध थे? यह मुमकिन है। कुछ पल ऐसे आते हैं जब मुझे यह बात सच लगती है। बहरहाल, उस सुबह, उसे उस दूसरी औरत के वजूद पर पूरा यकीन था। "लेकिन तुम्हें इस औरत से शादी कर लेनी चाहिए," उसने मुझसे कहा, "मेरे प्यारे दोस्त, इससे तुम्हें खुशी मिलेगी, और मुझे पूरा यकीन है कि इससे उसे भी खुशी मिलेगी।" मैंने जवाब दिया कि यह सोचकर कि मैं उस दूसरी औरत को खुशी दे सकता हूँ, मैं लगभग शादी का फ़ैसला कर ही चुका था; तभी, कुछ ही समय पहले, मुझे विरासत में एक बड़ी दौलत मिली थी, जिससे...

अपनी पत्नी को भरपूर ऐशो-आराम और खुशियाँ देने के लिए, मैं उस इंसान की कुर्बानी देने को तैयार हो गया था जिससे मैं प्यार करता था। अल्बर्टिन की मेहरबानी के लिए जो एहसानमंदी मुझे महसूस हुई, उसके नशे में चूर होकर—खासकर उस भयानक तकलीफ़ के ठीक बाद जो उसने मुझे दी थी—ठीक वैसे ही जैसे कोई उस वेटर को दौलत का वादा करने में ज़रा भी नहीं हिचकिचाता जो उसे ब्रांडी का छठा जाम परोसता है, मैंने उससे कहा कि मेरी पत्नी के पास एक मोटर-कार होगी, एक यॉट होगी; और इस नज़रिए से, चूँकि अल्बर्टिन को मोटरिंग और यॉटिंग का इतना शौक़ था, यह अफ़सोस की बात थी कि वह वह औरत नहीं थी जिससे मैं प्यार करता था; कि मैं उसके लिए एक बेहतरीन पति साबित होता; लेकिन हम देखेंगे, हम यकीनन दोस्ताना शर्तों पर मिल पाएँगे। आखिरकार, जैसे नशे में होने पर भी हम राहगीरों से बात करने से परहेज़ करते हैं—मार-पीट के डर से—वैसे ही मैंने वह नासमझी (अगर इसे नासमझी कहा जाए तो) नहीं की, जो मैंने गिल्बर्ट के ज़माने में की होती—यानी उसे यह बताना कि वह, अल्बर्टिन ही थी, जिससे मैं प्यार करता था। "तुम देखो, मैं उससे शादी करने के बहुत करीब पहुँच गया था। लेकिन मैंने ऐसा करने की हिम्मत नहीं की; आखिरकार, मैं किसी भी जवान औरत को अपने जैसे बीमार और परेशान करने वाले इंसान के साथ रहने पर मजबूर नहीं करना चाहूँगा।" "लेकिन तुम ज़रूर पागल हो; कोई भी तुम्हारे साथ रहने में खुशी महसूस करेगा; ज़रा देखो तो लोग तुम्हारे पीछे कैसे भागते हैं। Mme. Verdurin के यहाँ लोग हमेशा तुम्हारे बारे में ही बातें करते रहते हैं, और मुझे बताया गया है कि ऊँची सोसायटी में भी। वह औरत तुम्हारे साथ बिल्कुल भी अच्छी नहीं रही होगी, तभी तो उसने तुम्हारा आत्मविश्वास इस तरह तोड़ दिया है। मैं समझ सकती हूँ कि वह कैसी है; वह एक दुष्ट औरत है; मैं उससे नफ़रत करती हूँ। मुझे यकीन है, अगर मैं उसकी जगह होती तो...!" "बिल्कुल नहीं, वह बहुत दयालु है, बहुत ज़्यादा दयालु। जहाँ तक वर्दुरिन्स और उन सब लोगों की बात है, मुझे उनकी ज़रा भी परवाह नहीं है। जिस औरत से मैं प्यार करता हूँ—जिसे मैंने छोड़ भी दिया है—उसके अलावा, मुझे सिर्फ़ अपनी छोटी अल्बर्टिन की परवाह है; वह दुनिया में अकेली ऐसी इंसान है जो मुझे अपना ज़्यादातर साथ देकर—यानी, शुरुआती कुछ दिनों में," मैंने यह बात इसलिए जोड़ी ताकि उसे घबराहट न हो और मैं उन दिनों में उससे कुछ भी माँग सकूँ, "—मुझे थोड़ा सुकून दे सकती है।" मैंने शादी की संभावना का सिर्फ़ हल्का-सा ज़िक्र

किया, और साथ में यह भी कहा कि यह बिल्कुल मुमकिन नहीं है क्योंकि हम कभी एक-दूसरे से सहमत नहीं हो पाएँगे। अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ भी, सेंट-लूप के 'रैचल, व्हेन फ्रॉम द लॉर्ड' के साथ और स्वान के ओडेट के साथ रिश्तों की यादें मेरी जलन को और बढ़ा रही थीं; इसलिए मेरा यह मानने की तरफ़ ज़्यादा झुकाव था कि जिस पल से मैं किसी के प्यार में पड़ता हूँ, मुझे बदले में प्यार नहीं मिल सकता, और यह कि सिर्फ़ पैसों का लालच ही किसी औरत को मुझसे जोड़ सकता है। इसमें कोई शक नहीं कि अल्बर्टिन को ओडेट और रैचल के तराज़ू में तौलना बेवकूफ़ी थी। लेकिन यह उसकी गलती नहीं थी; यह मेरी अपनी गलती थी; यह वे भावनाएँ थीं जिन्हें जगाने की मुझमें काबिलियत थी, लेकिन मेरी जलन ने मुझे उन्हें कम आँकने पर मजबूर कर दिया। और इसी सोच से—जो शायद गलत थी—निश्चित रूप से वे कई मुसीबतें पैदा हुईं जिन्होंने बाद में हमें पूरी तरह से घेर लिया। "तो क्या तुम पेरिस आने का मेरा न्योता ठुकरा रही हो?" "मेरी मौसी को यह बिल्कुल पसंद नहीं आएगा कि मैं अभी इस वक़्त उन्हें छोड़कर चली जाऊँ। इसके अलावा, अगर मैं बाद में आ भी पाई, तो भी तुम्हारे साथ इस तरह रहना क्या थोड़ा अजीब नहीं लगेगा? पेरिस में हर कोई जान जाएगा कि मैं तुम्हारी चचेरी बहन नहीं हूँ।" "ठीक है, तो फिर। हम यह कह सकते हैं कि हमारी लगभग सगाई हो चुकी है। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा, क्योंकि तुम जानती हो कि यह सच नहीं है।" अल्बर्टिन की गर्दन, जो उसके नाइटगाउन से पूरी तरह बाहर निकली हुई थी, मज़बूत बनावट वाली, धूप से सांवली और थोड़ी खुरदरी थी। मैंने उसे इतनी पवित्रता से चूमा, मानो मैं अपनी माँ को चूम रहा होऊँ —किसी बचपन के उस दुख को दूर करने के लिए, जिसके बारे में बचपन में मुझे लगता था कि मैं उसे अपने दिल से कभी मिटा नहीं पाऊँगा। अल्बर्टिन मुझे छोड़कर कपड़े बदलने चली गई। उसकी वफ़ादारी में अभी से ही थोड़ी-बहुत कमी आने लगी थी; अभी कुछ देर पहले ही उसने मुझसे कहा था कि वह मुझे एक पल के लिए भी अकेला नहीं छोड़ेगी। (और मुझे पूरा यकीन था कि उसका यह इरादा ज़्यादा देर तक नहीं टिकेगा, क्योंकि मुझे डर था कि अगर हम बालबेक में ही रहे, तो वह उसी शाम, मेरी गैर-मौजूदगी में, ब्लोच लड़कियों से मिलने चली जाएगी।) अब, उसने अभी-अभी मुझसे कहा था कि वह मेनविले जाना चाहती है और दोपहर में वापस आकर मुझसे मिलेगी। पिछली शाम वह वहाँ नहीं गई थी; हो सकता है वहाँ उसके लिए कुछ चिट्ठियाँ पड़ी हों; इसके अलावा, उसकी मौसी भी उसके बारे में परेशान हो सकती

हैं। मैंने जवाब दिया: "अगर बात बस इतनी ही है, तो हम लिफ़्ट-बॉय को भेजकर तुम्हारी मौसी को बता सकते हैं कि तुम यहीं हो और उससे तुम्हारी चिट्ठियाँ लाने के लिए कह सकते हैं।" और, खुद को मददगार दिखाने की चाहत में, लेकिन एक जगह बंधे रहने से चिढ़कर, उसने अपनी भौंहें सिकोड़ीं; फिर, तुरंत ही, बहुत प्यार से कहा: "ठीक है," और लिफ़्ट-बॉय को भेज दिया। अल्बर्टिन अभी कमरे से बाहर निकली ही थी कि लड़का आ गया और उसने मेरे दरवाज़े पर धीरे से दस्तक दी। मुझे अंदाज़ा ही नहीं हुआ था कि, जब मैं अल्बर्टिन से बात कर रहा था, तब तक उसे मेनविले जाकर वापस आने का समय मिल गया था। वह अब मुझे यह बताने आया था कि अल्बर्टिन ने अपनी मौसी के लिए एक चिट्ठी लिखी है और अगर मैं चाहूँ, तो वह आज ही पेरिस आ सकती है। यह दुर्भाग्यपूर्ण था कि उसने उसे यह संदेश ज़बानी तौर पर दिया था, क्योंकि इतनी सुबह होने के बावजूद, मैनेजर पहले से ही वहाँ मौजूद था; वह बहुत घबराई हुई हालत में मेरे पास आया और मुझसे पूछा कि क्या सब ठीक है, क्या मैं सचमुच जा रहा हूँ; क्या मैं कुछ दिन और नहीं रुक सकता, क्योंकि उस दिन हवा काफ़ी 'थकाने वाली' (परेशान करने वाली) थी। मैं उसे यह समझाना नहीं चाहता था कि असल बात तो यह थी कि...

मेरे लिए जो बात सबसे ज़्यादा मायने रखती थी, वह यह थी कि अल्बर्टिन को उस समय से पहले बालबेक छोड़ देना चाहिए था, जिस समय ब्लोच लड़कियाँ सैर के लिए निकलती थीं—खासकर इसलिए क्योंकि एंड्री, जो अकेली उसकी रक्षा कर सकती थी, वहाँ मौजूद नहीं थी; और बालबेक उन जगहों में से एक जैसा था, जहाँ साँस लेने में तकलीफ़ महसूस करने वाला कोई बीमार आदमी यह तय कर लेता है कि अगर सफ़र के दौरान उसकी जान भी चली जाए, तो भी वह वहाँ एक और रात नहीं बिताएगा। मुझे भी ऐसी ही मिन्नतों का सामना करना पड़ा—सबसे पहले तो होटल में, जहाँ मैरी जिनेस्ट और सेलेस्ट अल्बारेट की आँखें रो-रोकर लाल हो गई थीं। (इसके अलावा, मैरी तो किसी पहाड़ी झरने की तरह तेज़ी से सिसकियाँ भर रही थी। सेलेस्ट, जो ज़्यादा शांत स्वभाव की थी, उसे धीरज रखने के लिए कह रही थी; लेकिन जब मैरी ने वह एकमात्र कविता बुदबुदाई जो उसे याद थी: "यहाँ नीचे, लिलैक के फूल मुरझा जाते हैं," तो सेलेस्ट भी खुद को और रोक न सकी, और उसके लिलैक-रंग के चेहरे पर आँसुओं का

सैलाब उमड़ पड़ा; मुझे लगता है कि उस शाम तक वे दोनों मेरी मौजूदगी को पूरी तरह भूल चुकी थीं।) इसके बाद, छोटी-सी स्थानीय रेलगाड़ी में—इस बात की पूरी सावधानी बरतने के बावजूद कि कोई मुझे देख न ले—मेरी मुलाक़ात एम. डे कैम्ब्रेमर से हो गई। मेरे सामान के बक्सों को देखते ही उनका चेहरा पीला पड़ गया, क्योंकि वे अगले दिन के बाद वाले दिन के लिए मुझ पर ही निर्भर थे; उन्होंने मुझे यह कहकर और भी ज़्यादा गुस्सा दिला दिया कि मेरी साँस रुकने की तकलीफ़ मौसम में आए बदलाव की वजह से हो रही है, और यह कि अक्टूबर का महीना मेरे लिए बहुत फ़ायदेमंद साबित होगा। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं 'अपनी रवानगी को एक हफ़्ते के लिए टाल नहीं सकता?'—यह बात इतनी बेतुकी थी कि मुझे उस पर और भी ज़्यादा गुस्सा आ गया; शायद इसलिए क्योंकि उनके इस सुझाव को सुनकर ही मुझे अपनी तबीयत और भी ज़्यादा खराब महसूस होने लगी थी। और जब वे रेलगाड़ी के डिब्बे में मुझसे बातें कर रहे थे, तो हर स्टेशन पर मुझे इस बात का डर सता रहा था कि कहीं मुझे कोई ऐसा व्यक्ति न दिख जाए जो हेरिबाल्ड या गिसकार्ड से भी ज़्यादा भयानक हो—जैसे कि एम. डे क्रेसी, जो मुझसे उन्हें अपने साथ बुलाने की मिन्नतें कर रहे हों; या उससे भी ज़्यादा डरावना नज़ारा—मैडम वर्दुरिन, जो मुझे अपने यहाँ बुलाने पर अड़ी हुई हों। लेकिन ऐसा होने में अभी कुछ और घंटे बाकी थे। मैं अभी उस पड़ाव तक पहुँचा नहीं था। मुझे अभी सिर्फ़ होटल के मैनेजर की हताशा भरी मिन्नतों का ही सामना करना था। मैंने उनके मुँह पर दरवाज़ा बंद कर दिया, क्योंकि मुझे डर था कि—भले ही वे अपनी आवाज़ धीमी रखे हुए थे—लेकिन कहीं उनकी बातों से माँ की नींद में खलल न पड़ जाए। मैं अपने कमरे में अकेला रहा—वह कमरा जिसकी छत बहुत ऊँची थी, जहाँ पहली बार आने पर मैं बहुत दुखी था; जहाँ मैंने Mme. de Stermaria को कितनी चाहत से याद किया था; जहाँ मैंने Albertine और उसकी सहेलियों के आने का इंतज़ार किया था, ठीक वैसे ही जैसे प्रवासी पक्षी समुद्र तट पर उतरते हैं; जहाँ लिफ़्ट-बॉय को उसे बुलाने भेजने के बाद, जब वह आई तो मैं उसके साथ बहुत कम आनंद ले पाया था; जहाँ मैंने अपनी दादी की ममता महसूस की थी, और फिर जाना था कि अब वे इस दुनिया में नहीं रहीं; वे खिड़कियाँ जिनके नीचे सुबह की रोशनी पड़ती थी—जिन्हें मैंने पहली बार खोला था ताकि समुद्र की पहली लहरों को देख सकूँ (वही खिड़कियाँ जिन्हें Albertine मुझसे बंद करवा देती थी, इस डर से कि कहीं कोई हमें किस करते हुए देख न ले)। जब मैंने

अपने आस-पास के माहौल की पहचान से अपनी तुलना की, तो मुझे अपने अंदर आए बदलावों का एहसास हुआ। हम इन चीज़ों के भी वैसे ही आदी हो जाते हैं जैसे हम लोगों के होते हैं; और जब अचानक हमें वह अलग अर्थ याद आता है जो ये चीज़ें पहले हमारे लिए रखती थीं—जब वे अपना सारा अर्थ खो चुकी होती हैं—तो वे घटनाएँ जो आज की घटनाओं से बिल्कुल अलग थीं और जिन्हें ये चीज़ें अपने अंदर समेटे थीं; एक ही छत के नीचे, एक जैसी काँच वाली किताबों की अलमारियों के बीच किए गए अलग-अलग तरह के काम; और हमारे दिल व हमारी ज़िंदगी में आया वह बदलाव जो इन विविधताओं से ज़ाहिर होता है—ये सब उस जगह की न बदलने वाली स्थिरता के कारण और भी ज़्यादा गहरे और प्रभावशाली लगने लगते हैं, और उस दृश्य की एकरूपता से उन्हें और भी बल मिलता है।

दो-तीन बार मुझे क्षण भर के लिए यह ख्याल आया कि जिस दुनिया में यह कमरा और ये किताबों की अलमारियाँ स्थित थीं और जिसमें अल्बर्टाइन का कोई महत्व नहीं था, शायद वह एक बौद्धिक दुनिया थी, जो एकमात्र वास्तविकता थी, और मेरा दुःख कुछ वैसा ही था जैसा उपन्यास पढ़ते समय होता है, एक ऐसी चीज जिसके लिए केवल एक पागल ही जीवन भर के लिए स्थायी दुःख बना सकता है; कि मेरी इच्छाशक्ति का एक छोटा सा प्रयास ही शायद उस वास्तविक दुनिया तक पहुँचने, उसमें पुनः प्रवेश करने, अपने दुःख से गुजरने के लिए पर्याप्त होगा, जैसे कोई कागज के घेरे को तोड़ता है, और अल्बर्टाइन ने जो किया था उसके बारे में उतना ही सोचना बंद कर देना जितना हम उपन्यास पढ़ने के बाद उसकी काल्पनिक नायिका के कार्यों के बारे में सोचते हैं। वैसे भी, जिन प्रेमिकाओं से मैंने सबसे अधिक प्रेम किया है, उनका प्रेम मेरे प्रेम से कभी मेल नहीं खाता था। वह प्रेम सच्चा था, क्योंकि मैंने उन्हें देखने, उन्हें अपने पास रखने की आवश्यकता के आगे सब कुछ त्याग दिया था, और अगर एक शाम मैं उनका व्यर्थ इंतजार करता तो मैं जोर-जोर से रोता। लेकिन यह इसलिए नहीं था कि वे प्रेम की छवि थीं, बल्कि इसलिए कि उनमें उस प्रेम को जगाने, उसे चरम सीमा तक ले जाने की क्षमता थी। जब मैंने उन्हें देखा, जब मैंने उनकी आवाज़ें सुनीं, तो मुझे उनमें ऐसा कुछ भी नहीं मिला जो मेरे प्रेम से मिलता-जुलता हो और उसे समझा सके। फिर भी मेरी एकमात्र खुशी उन्हें देखने में थी, मेरी एकमात्र बेचैनी उनके आने की प्रतीक्षा में थी। कोई कह सकता था कि

प्रकृति ने कृत्रिम रूप से उनमें एक ऐसा गुण जोड़ दिया था जिसका उनसे कोई संबंध नहीं था, और इस गुण, इस अर्ध-विद्युत शक्ति का मुझ पर यह प्रभाव था कि वह मेरे प्रेम को जगाती थी, यानी मेरे सभी कार्यों को नियंत्रित करती थी और मेरे सभी कष्टों का कारण बनती थी। लेकिन इससे इन महिलाओं की सुंदरता, बुद्धिमत्ता या दयालुता पूरी तरह अलग थी। जैसे बिजली का झटका हमें झकझोर देता है, वैसे ही मेरे प्रेम प्रसंगों ने मुझे झकझोर दिया है, मैंने उन्हें जिया है, मैंने उन्हें महसूस किया है: मैं कभी भी उन्हें देखने या उनके बारे में सोचने की अवस्था तक नहीं पहुँच पाया हूँ। वास्तव में, मेरा मानना है कि इन प्रेम प्रसंगों में (मैं शारीरिक सुख को छोड़ रहा हूँ, जो इनका नियमित साथी तो है, लेकिन अपने आप में प्रेम प्रसंग का आधार नहीं है), स्त्री के रूप के भीतर, हम उन अदृश्य शक्तियों को संबोधित करते हैं जो उससे जुड़ी हुई हैं, मानो किसी रहस्यमयी देवी-देवता की पूजा कर रहे हों। उन्हीं की सद्भावना हमारे लिए आवश्यक है, जिनसे हम संपर्क स्थापित करने का प्रयास करते हैं, लेकिन उसमें हमें कोई सकारात्मक सुख नहीं मिलता। इन देवियों के साथ, स्त्री हमारे मिलन के दौरान हमारा संपर्क कराती है और इससे अधिक कुछ नहीं करती। हम भेंट के रूप में गहनों, यात्राओं का वादा करते हैं, ऐसे सूत्र बोलते हैं जिनका अर्थ है कि हम उनकी पूजा करते हैं और साथ ही ऐसे सूत्र भी बोलते हैं जिनका अर्थ है कि हम उदासीन हैं। हमने एक और मिलन पाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी है, लेकिन इस शर्त पर कि कोई परेशानी न हो। अब, यदि स्त्री इन रहस्यमयी शक्तियों से परिपूर्ण न होती, तो क्या वह हमें इतनी परेशानी उठाने के लिए प्रेरित करती, जब उसके चले जाने के बाद, हम यह भी नहीं बता पाते कि उसने क्या पहना था और यह महसूस करते हैं कि हमने उसे देखा तक नहीं?

क्योंकि हमारी दृष्टि एक भ्रामक इंद्रिय है, इसलिए मानव शरीर, भले ही उसे अल्बर्टीन की तरह प्यार किया जाता हो, हमें कुछ गज या कुछ इंच की दूरी पर ही प्रतीत होता है। और यही बात उसमें निवास करने वाली आत्मा पर भी लागू होती है। लेकिन उस आत्मा की हमारे सापेक्ष स्थिति में एक ज़बरदस्त परिवर्तन लाने के लिए, जो हमें यह दर्शाता है कि वह दूसरों से प्रेम करती है, हमसे नहीं, तब हमारे टूटे हुए दिल की धड़कन से हम महसूस करते हैं कि वह प्रिय प्राणी हमसे एक गज दूर नहीं, बल्कि हमारे भीतर ही थी। हमारे भीतर, लगभग सतही क्षेत्रों में। लेकिन 'वह मित्र श्रीमती विंटेउइल हैं' ये शब्द मेरे लिए एक ऐसा रहस्य थे जिसे मैं

स्वयं नहीं खोज पाता, जिन्होंने अल्बर्टीन को मेरे टूटे हुए दिल की गहराई तक पहुँचा दिया। और जो दरवाज़ा उसके पीछे बंद हो गया था, उसे खोलने का तरीका मैं सौ साल तक खोजता रहूँ, फिर भी मुझे पता नहीं चलेगा।

अभी जब अल्बर्टीन मेरे साथ थी, तब एक पल के लिए मेरे कानों में गूंजते ये शब्द थम गए थे। जब मैं उसे चूम रही थी, ठीक वैसे ही जैसे मैं कॉम्ब्रे में अपनी माँ को चूमती थी, अपने दुख को शांत करने के लिए, तब मुझे लगभग अल्बर्टीन की बेगुनाही पर यकीन हो गया था, या कम से कम उसके दुराचार के बारे में लगातार नहीं सोच रही थी। लेकिन अब जब मैं अकेली थी, तो ये शब्द फिर से गूंजने लगे, ठीक वैसे ही जैसे कान में वो आवाज़ें आती हैं जो दूसरे के बोलना बंद करते ही सुनाई देती हैं। अब मुझे उसका दुराचार पूरी तरह से सिद्ध लग रहा था। ढलते सूरज की रोशनी ने मेरे आस-पास की चीजों का रूप बदलकर मुझे एक बार फिर, मानो एक पल के लिए मेरी स्थिति बदल दी हो, मेरे दुख के प्रति और भी अधिक पीड़ादायक रूप से सचेत कर दिया। मैंने कभी इतनी खूबसूरत और इतनी पीड़ादायक सुबह नहीं देखी थी। और उन सभी साधारण दृश्यों के बारे में सोचते हुए, जो रोशन होने वाले थे, ऐसे दृश्य जिन्हें देखने की इच्छा ही मुझे कल तक तरसती रहती थी, मैं अपने सिसकने को रोक नहीं पाई जब एक यंत्रवत ढंग से किए गए बलिदान के इशारे से, जो मुझे ऐसा लगा मानो वह उस रक्तमय बलिदान का प्रतीक हो जो मुझे हर सुबह, अपने जीवन के अंत तक, सारी खुशियों का त्याग करना होगा, एक गंभीर नवीनीकरण, हर दिन की शुरुआत के साथ मनाया जाने वाला, मेरे दैनिक दुख और मेरे घाव से निकले खून का, सूर्य का सुनहरा अंडा, मानो घनत्व में परिवर्तन से जमाव के क्षण में उत्पन्न असंतुलन से प्रेरित होकर, किसी चित्र में ज्वाला की लपटों से युक्त, उस पर्दे से छलांग लगाता हुआ आया जिसके पीछे ऐसा लग रहा था मानो वह अधीरता से कांप रहा हो, दृश्य पर प्रकट होने और ऊपर उठने के लिए तैयार, जिसका रहस्यमय, अंतर्निहित बैंगनी रंग प्रकाश की लहरों से भर गया। मैंने अपने रोने की आवाज़ सुनी। लेकिन उसी क्षण, मेरे आश्चर्य के बीच, दरवाजा खुला और धड़कते दिल के साथ, मुझे ऐसा लगा जैसे मेरी दादी मेरे सामने खड़ी हों, ठीक वैसे ही जैसे पहले भी मुझे सपने में दिखाई देती थीं। क्या यह सब महज़ एक सपना था? अफसोस, मैं पूरी तरह जाग चुकी थी। "तुम्हें अपनी बेचारी दादी की झलक दिख रही है," माँ ने कहा, क्योंकि वह वही थीं, मेरे डर को शांत करने के लिए

धीरे से बोल रही थीं, और साथ ही उस समानता को स्वीकार भी कर रही थीं, एक प्यारी सी मुस्कान के साथ जिसमें विनम्रता और गर्व झलक रहा था, जो हमेशा से ही बनावटीपन से रहित था। उनके बिखरे बाल, जिनमें छिपे हुए भूरे बाल उनकी परेशान आँखों के आसपास बिखरे हुए थे, उनके उम्रदराज गाल, मेरी दादी का ही पहना हुआ गाउन, इन सबने एक पल के लिए मुझे उन्हें पहचानने से रोक दिया था और मुझे इस बात को लेकर असमंजस में डाल दिया था कि मैं अभी भी सो रही हूँ या मेरी दादी फिर से जीवित हो उठी हैं। बहुत समय से मेरी माँ मेरी दादी से बहुत मिलती-जुलती थीं, उस युवा और मुस्कुराती हुई माँ से कहीं ज़्यादा, जिसे मैंने अपने बचपन में देखा था। लेकिन मैंने इस समानता के बारे में सोचना बंद कर दिया था। इसलिए, जब हम लंबे समय तक पढ़ते हुए बैठे रहते हैं, हमारा मन मग्न रहता है, हमें समय बीतने का पता ही नहीं चलता, और अचानक हम अपने चारों ओर वही सूरज देखते हैं जो कल ठीक उसी समय चमका था, वही सामंजस्य, वही रंग प्रभाव जो सूर्यास्त से पहले दिखाई देते हैं। मेरी माँ ने मुस्कुराते हुए मुझे मेरी गलती का एहसास कराया, क्योंकि उन्हें यह देखकर खुशी होती थी कि वह अपनी माँ से इतनी मिलती-जुलती हैं। "मैं आई हूँ," मेरी माँ ने कहा, "क्योंकि जब मैं सो रही थी तो मुझे लगा कि कोई रो रहा है। इससे मेरी नींद खुल गई। लेकिन तुम बिस्तर पर क्यों नहीं हो? और तुम्हारी आँखें आँसुओं से भरी हैं। क्या बात है?" मैंने उनका सिर अपनी बाहों में लिया: "माँ, सुनो, मुझे डर है कि आप मुझे बहुत अस्थिर समझेंगी। लेकिन सबसे पहले, कल मैंने अल्बर्टीन के बारे में आपसे बिल्कुल भी अच्छी बातें नहीं कीं; मैंने जो कहा वह अनुचित था।" "लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है?" मेरी माँ ने कहा, और उगते सूरज को देखकर, अपनी माँ को याद करके उदास होकर मुस्कुराईं। ताकि मैं उस नज़ारे को देखने से वंचित न रह जाऊँ जिसे मेरी दादी को हमेशा अफ़सोस रहता था कि मैं कभी नहीं देख पाती थी, उन्होंने खिड़की की ओर इशारा किया। लेकिन बालबेक के समुद्र तट, समुद्र, सूर्योदय के उस पार, जिसे माँ मुझे दिखा रही थीं, मैंने निराशा भरी मुद्रा में, जो उनकी नज़र से नहीं बच पाई, मोंटजोवेन का वह कमरा देखा जहाँ अल्बर्टीन, एक बड़ी बिल्ली की तरह गुलाबी और गोल-मटोल, अपनी विद्रोही नाक के साथ, मैडम विंटेइल की सहेली की जगह ले चुकी थी और अपनी मदहोश कर देने वाली हँसी के बीच कह रही थी: "अच्छा! अगर वे हमें देख भी लें, तो और भी अच्छा होगा। मैं? मैं उस बुढ़िया पर थूकने की हिम्मत भी नहीं करूँगी?" यही वह दृश्य

था जो मैंने देखा, उस दृश्य के पार जो खुली खिड़की में दिखाई दे रहा था और दूसरे पर एक धुंधले पर्दे की तरह छाया हुआ था, मानो प्रतिबिंब हो। यह सचमुच लगभग अवास्तविक लग रहा था, मानो कोई चित्रित दृश्य हो। हमारे सामने, जहाँ पारविल की चट्टान उभरी हुई थी, वह छोटा सा जंगल जिसमें हम 'नेवला' का खेल खेलते थे, समुद्र के किनारे तक फैला हुआ था, पानी की सुनहरी चमक के नीचे, उसकी हरियाली का चित्र, ठीक उसी समय जैसा कि अक्सर दिन ढलने पर, जब मैं अल्बर्टीन के साथ वहाँ छाया में आराम करने जाता था, हम उठते थे जब हम सूरज को आकाश में डूबते हुए देखते थे। रात के धुंध के उस भ्रम में, जो अब भी गुलाबी और नीले रंग के चिथड़ों की तरह पानी पर छाया हुआ था, जहाँ भोर के मोती जैसे टुकड़े बिखरे हुए थे, नावें तिरछी रोशनी में मुस्कुराती हुई गुजर रही थीं, जो उनके पालों और धनुषाकार हिस्सों को सुनहरी चमका रही थी, मानो वे शाम को घर लौट रही हों: एक काल्पनिक, भयावह और सुनसान दृश्य, सूर्यास्त का एक शुद्ध आह्वान जो शाम की तरह, दिन के उन घंटों के क्रम पर नहीं टिका था जिन्हें मैं उससे पहले देखने का आदी था, अलग-थलग, अंतर्विभाजित, मोंटजोवेन की उस भयानक छवि से भी अधिक सारहीन जिसे वह मिटाने, ढकने, छिपाने में सफल नहीं हुआ - स्मृति और सपनों की एक काव्यात्मक, व्यर्थ छवि। “लेकिन सुनो,” मेरी माँ कह रही थीं, “तुमने उसके बारे में कुछ भी बुरा नहीं कहा, तुमने मुझे बताया कि वह तुम्हें थोड़ी ऊब देती है, और तुम्हें खुशी है कि तुमने उससे शादी करने का विचार छोड़ दिया। तुम्हें इस तरह रोने की कोई ज़रूरत नहीं है। याद रखो, तुम्हारी माँ आज जा रही हैं और अपने बड़े बच्चे को इस हालत में छोड़कर नहीं जा सकतीं। खासकर, मेरे बेचारे बेटे, क्योंकि मेरे पास तुम्हें दिलासा देने का समय नहीं है। भले ही मेरा सामान पैक हो, यात्रा की सुबह किसी के पास समय नहीं होता।” “ऐसी बात नहीं है।” और फिर, भविष्य का हिसाब लगाते हुए, अपनी इच्छाओं को अच्छी तरह तौलते हुए, यह महसूस करते हुए कि अल्बर्टीन का मैडम के प्रति ऐसा स्नेह... विंटेइल की इतनी पुरानी दोस्त निर्दोष नहीं हो सकती थी, अल्बर्टीन को दीक्षा मिल चुकी थी, और जैसा कि उसके हर सहज कार्य से मुझे स्पष्ट हो रहा था, वह उस दुर्गुण की ओर जन्मजात प्रवृत्ति के साथ पैदा हुई थी जिससे मैं अपनी बेचैनी में अक्सर डरता था, जिसमें वह लिप्त रहना कभी नहीं छोड़ सकती थी (शायद उस क्षण वह उसमें लिप्त थी, उस पल का फायदा उठाते हुए जब मैं वहां मौजूद नहीं था)। मैंने अपनी माँ से

कहा, यह जानते हुए कि मैं उन्हें कितना दुख पहुँचा रहा हूँ, जो उन्होंने दिखाया नहीं, और जो केवल उस गंभीर चिंता के भाव से प्रकट हुआ जो वह तब धारण करती थीं जब वह मुझे दुखी करने या बीमार करने की गंभीरता पर विचार कर रही होती थीं, वह भाव जो उन्होंने पहली बार कॉम्ब्रे में तब अपनाया था जब उन्होंने मेरे कमरे में रात बिताने का फैसला किया था, वह भाव जो इस समय मेरी दादी के भाव जैसा था जब वह मुझे ब्रांडी पीने देती थीं। मैंने अपनी माँ से कहा: "मैं जानता हूँ कि मैं जो कहने जा रहा हूँ उससे आपको कितना दुख होगा। सबसे पहले, यहाँ रहने के बजाय, जैसा कि आप काश, मैं भी तुम्हारे साथ उसी ट्रेन से जा पाती। पर ऐसा नहीं है। मुझे यहाँ अच्छा नहीं लग रहा, मैं घर जाना चाहती हूँ। पर मेरी बात सुनो, ज़्यादा परेशान मत हो। मैं बस यही कहना चाहती हूँ। मैं खुद को धोखा दे रही थी, मैंने कल तुम्हें भी अच्छे इरादे से धोखा दिया, मैं पूरी रात इसी बारे में सोचती रही। यह बहुत ज़रूरी है, और चलो इस मामले का फैसला तुरंत कर लेते हैं, क्योंकि अब मैं अपने मन में इस बारे में पूरी तरह स्पष्ट हूँ, क्योंकि मैं अब और नहीं बदलूँगी, और इसके बिना मैं जी नहीं सकती, मेरे लिए अल्बर्टीन से शादी करना बिल्कुल ज़रूरी है।

समाप्त

sjeet